Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

१९८०

C. K. V.
LIB
HARIDWAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111468

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

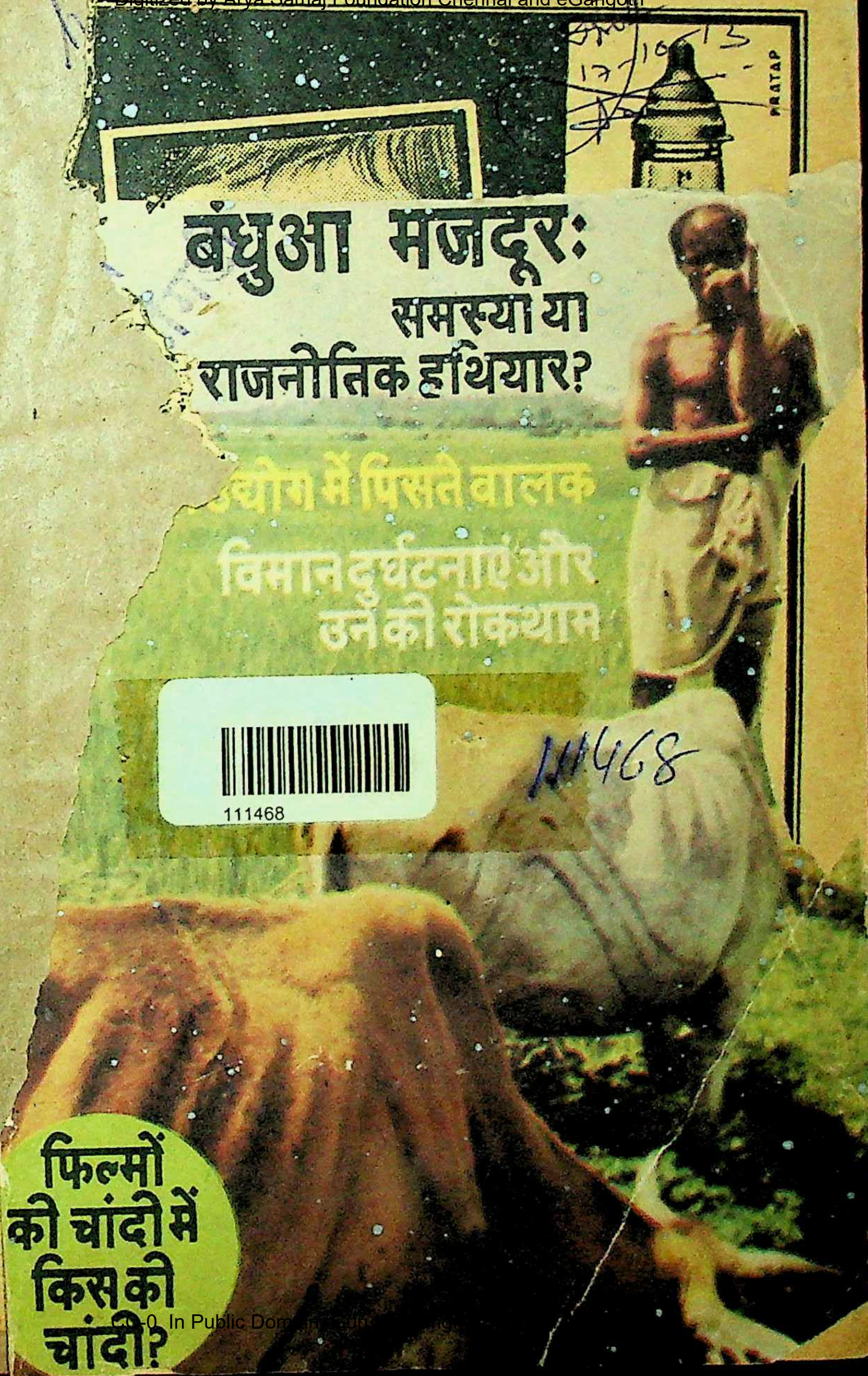

111468

111468

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ़ एक

सेरिडॉन से

ट्रेडमार्क 'रोश'

शक्तिशाली
सुरक्षित
सिर्फ़ एक काफ़ी है

RP. 5934

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

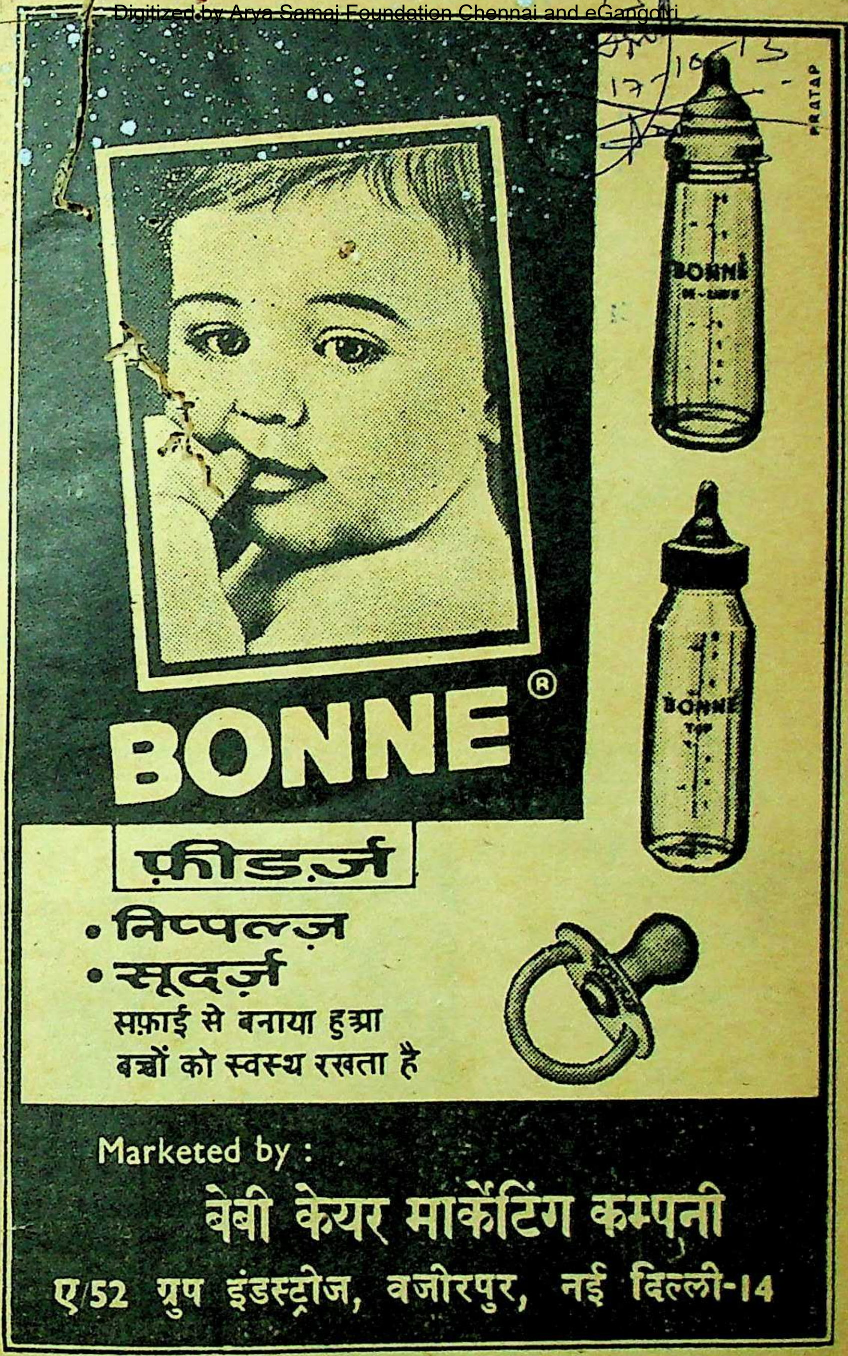

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी सौन्दर्य के निखार के लिये

नाइसलुक ब्रा

नाईसलुक ब्रा पहनने में सुखद क्वालिटी में बेजोड़। आप के कोमल तन के अनुरूप ही ढल जाती है। तरह तरह के डिजाईनो में व सम्पूर्ण वाजिब दामों पर उपलब्ध है।

हर बड़ी दुकान पर मिलती है

Trade Enquiry **KAPOOR TRADERS**
20/51 Shakti Nagar, Delhi-110007
Phones: 742239 Res: 714757

मधुर सुगन्धित लम्बे चमकीले और काले बालों के लिए

सिमको शिकाकाई केश तेल

मधुर सुगन्धित शिकाकाई केश तेल बालों को लम्बा, चमकीला तथा काला करता है। यह बालों को मुलायम तथा घना रखता है। इसका प्रयोग बालों में सीकरी पैदा होने से तथा गिरने से बचाता है। शिकाकाई बालों की लम्बाई बढाने के लिए सबसे पुराना तथा माना हुआ नुसखा है।

A QUALITY PRODUCT FROM THE Manufacturers of SIMCO HAIR FIXER

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

बंधुआ मजदूर	16	खान भारती
तंबाकू और सिगरेट	21	डा. जायसवाल
विमान दुर्घटनाएं और...	26	विमल श्रीवास्तव
नैतिक पतन का मूल कारण	43	नौटमलाल तेजपाल
वीडियो	63	सरला जैन
खूंखार डकैतों की घाटी	66	विशेष प्रतिनिधि
मुश्ताक [illegible]	85	स. खान
फिल्मों की चांदी में...	91	श्रीशचंद्र मिश्र
कालीन उद्योग में पिसते...	99	महर उद्दीन खान
साबुन के बदले...	113	उत्सव चतुर्वेदी
गढ़वाल मंडल विकास...	133	सिंधु गोयल
मुखबिर	148	वा. कृ. श्रीवास्तव
हार्मोन	154	अ. कु. दास गुप्ता

कथा साहित्य

चयन	36	सत्यकुमार
प्रलोभन	50	निरंजन
धर्म का सार	83	रोशनलाल
सीमाओं का सुख	104	चंद्रमोहन प्रधान
अपना जीवन	122	उर्मिला पांडेय
परिणाम	142	शफीक अहमद

कविताएं

कैसे होती है सहर	35	हरिश्चंद्र पाठक
मेरे समीप	75	वनिता श्रीवास्तव
गीत गाओ	82	डा. इसाक 'अश्क'

स्तंभ

संपादक के नाम	7	94	चित्रावली
मुक्त विचार	12	103	ये लड़के
सावधान	48	117	मैं क्या करूं?
शाबाश	59	131	ये शिक्षक
नेताजी	78	140	धूपछांव
पिछले छः महीने	88	147	ये लड़कियां

पसंद अपनीअपनी 162

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

दिसंबर (प्रथम) 1980
अंक : 345

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. द्वारा सुरक्षित हैं.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. 1980.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.50 रुपए, एक वर्ष : 50.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 120.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजागरण की पत्रिका

भूभारती

दिसंबर (प्रथम) के मुख्य आकर्षण:

- **प्रभुदास पटवारी की बरखास्तगी**
  राज्यपाल के पद से जिस तरीके से श्री पटवारी को हटाया गया है वह आने वाले खतरे की ओर इशारा करता है. आखिर उन का कसूर क्या था? क्या यही कि उन्हें जनता सरकार ने राज्यपाल बनाया था?

- **रेल दुर्घटनाएं क्यों होती हैं?**
  रेल दुर्घटनाएं होने के बाद रेल मंत्री के इस्तीफा देने से न तो मरने वाले जिंदा हो जाते हैं और न ही रेलवे के आलसी कर्मचारियों में काम करने की भावना पनपती है. फिर किस तरह रेल दुर्घटनाओं पर काबू पाया जा सकता है?

- **उत्तर प्रदेश में राजनीतिक हत्याओं का दौर**
  राजनीति में अपराधवृत्त लोगों के शामिल हो जाने से हिंसा, मारकाट और हत्याओं का दौर चल पड़ा है. जहां राजनेताओं की जिंदगी को खतरा हो वहां आम आदमी की सुरक्षा कैसे होगी?

- **भजनलाल का इंदिरा भजन**
  गद्दी पर बैठने के बाद से ही मुख्य मंत्री भजनलाल पर संकट के बादल छाने लगे थे, लेकिन अपनी सुरक्षा के लिए उन्होंने कैसेकैसे भजन गाए?

- **खडेश्वरी बाबा हत्याकांड**
  पायलेट बाबा ने खडेश्वरी बाबा को जिंदा समाधि दिलवा कर धर्म के नाम पर उस की हत्या का कैसे षड्यंत्र रचा और प्रशासन के अधिकारी इस तमाशे को चमत्कार बता कर किस प्रकार सहयोग देते रहे.

इन के अलावा कहानी एवं सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

अक्तूबर (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में 'नए गठबंधन का प्रयास क्यों?' शीर्षक टिप्पणी के अंतर्गत व्यक्त आप के इस विचार से मैं सहमत हूं कि 'जब यह साबित हो गया है कि हमारे देश में राजनीति नेता की छवि व लोकप्रियता के हिसाब से चलेगी, दल के अनुसार नहीं, तो गठबंधनों का लाभ ही क्या है? जब भी कोई ऐसा विरोधी सामने आएगा जो व्यक्तित्व व लोकप्रियता में श्रीमती गांधी से बड़ा हो तो सभी दल अपने आप एक हो जाएंगे.'

—महावीरसिंह बलाल

अक्तूबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'काम निबटाएं, मगर कौन सा?' शीर्षक टिप्पणी विचारोत्तेजक और साहसपूर्ण लगी. इस से दफ्तरों में चल रहे कामकाज का परदाफाश हुआ है, जो स्वागत योग्य है.

देश की हालत इतनी बिगड़ने का एक बड़ा कारण सरकारी दफ्तरों में काम करने का दोषपूर्ण तरीका है. इस में बहुत बड़ा हाथ हमारे नेताओं का भी है क्योंकि घर में बच्चे अपने मांबाप का अनुकरण करते हैं और प्रशासन में अधिकारी तथा अन्य कर्मचारी देश के नेताओं को देख कर ही अपना व्यवहार बनाते हैं. हमारे जननेताओं को सरकारी कामों में रुचि नहीं होती. वे सब काम सचिवों पर छोड़ कर अपना बहुमूल्य समय दुकानों के उद्‌घाटनों, भाषणबाजी आदि में या अपनी कुरसी मजबूत करने में ही व्यतीत करते हैं.

दूसरी तरफ नागरिक संस्थाओं का कार्य कितना सुचारुरूप से चलता है—कारण? वहां कर्मचारी को भय होता है कि काम न करने पर उसे दंडित किया जा सकता है.

—बि. कु. देवरस

अक्तूबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'हमारे राष्ट्रपति का चिंतन?' शीर्षक टिप्पणी में यह लिखा है कि देश का संवैधानिक अध्यक्ष होते हुए भी राष्ट्रपति किसी संस्था या किसी क्षेत्र के लिए कुछ करने में अक्षम होता है. मैं इन विचारों से सहमत नहीं हूं. वास्तव में राष्ट्रपति इन अधिकारों का उपयोग कर सकता है बशर्ते कि वह मेधावी, कुशाग्रबुद्धि (चतुर) हो.

—नृसिंहदेव अरोड़ा

सितंबर (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में 'अमरीका का अगला राष्ट्रपति?' टिप्पणी में आप ने लिखा है कि अमरीका की जनता ने एडवर्ड कैनेडी को उन की एक गलती के लिए 11 वर्ष बाद भी माफ नहीं किया. और हम हैं जो हर

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

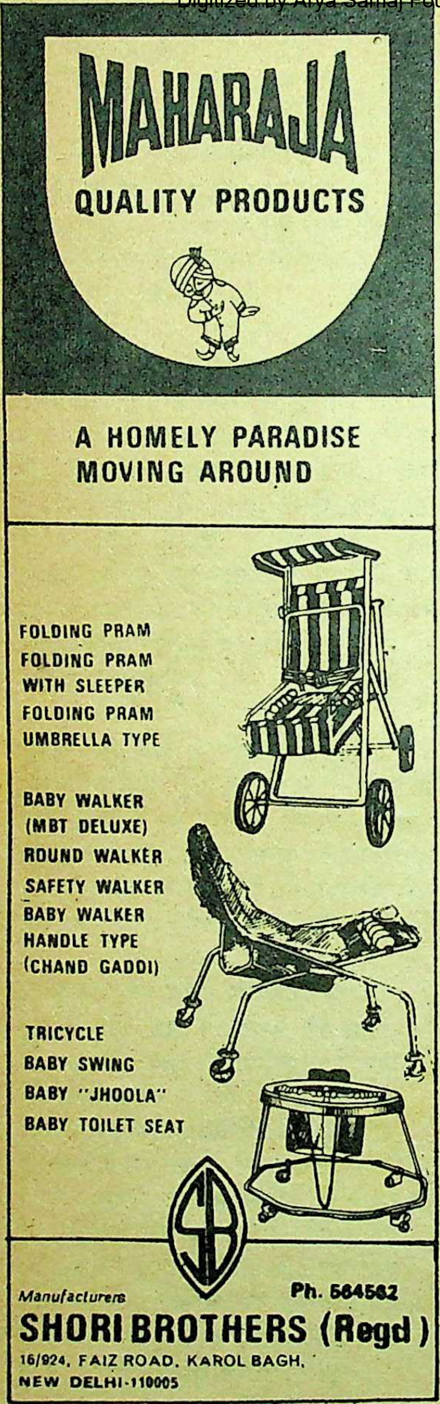

प्रकार के पाप किए हुए व्यक्तियों को पूजते हैं.

यह हमारी मजबूरी भी है. हम मजबूर हैं उन्हीं पापी व्यक्तियों को चुनने के लिए क्योंकि हमारे सामने दो चोर खड़े होते हैं और हमें उन्हीं में से किसी एक को चुनना पड़ता है. भारतीय जनता के सामने एक तरफ कुआं होता है तो दूसरी तरफ खाई. वैसे सन 1977 के चुनावों में कांग्रेसी सरकार को गिरा कर और सन 1980 के चुनावों में जनता सरकार को गिरा कर भारतीय जनता ने जागरूकता का परिचय दिया है. —अज्ञात

✦

अक्तूबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'क्या आप भी पीएच. डी. करना चाहते हैं?' (लेख : डा. अनिलकुमार मिश्र) के संदर्भ में मेरा कहना है कि यह जरूरी नहीं कि एम. ए. प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी ही शोध कार्य में सफल होगा. द्वितीय श्रेणी का विद्यार्थी भी शोध कार्य में सफल हो सकता है. असल बात है मौलिक चिंतन की ओर स्वाभाविक रुझान का होना. अत: शोध कार्य के लिए केवल उन छात्रों का चयन करना चाहिए जिन का मौलिक चिंतन की ओर रुझान हो.

चूंकि इस रुझान का पता लगाना एक कठिन (असंभव नहीं) कार्य है, इसलिए उस कठिनाई से बचने के लिए प्रथम श्रेणी एम. ए. की शर्त लगा दी गई है. नौकरशाही की बुद्धि कठिनाई से अपना बचाव करने के तौरतरीके खोजती रहती है. समाज को समयानुसार तरोताजा बनाए रखने के लिए प्रगतिशील शोध काय का होते रहना अनिवार्य है, इस के अभाव में समाज बूढ़ा और जजर होने लगता है —रा. मू. अग्रवाल

✦

अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित

मुख पृष्ठ
निज छायाकार द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अधिकारी : एक : एक घुटता व्यक्तित्व' (लेख : इ. मधुचंद्र जैन) में लेखक ने दफ्तरीय जीवन का जीताजागता चित्रण किया है. आज अधिकारी जितनी घुटन व कुंठाओं के शिकार हो रहे हैं, उतने शायद अन्य श्रेणी के कर्मचारी नहीं हो रहे हैं.

अधिकारी एक प्रकार के ढोल की तरह है जिसे दोनों तरफ से कर्मचारी एवं उच्च कर्मचारी अधिकारी बजाते रहते हैं. वह बेचारा यह सब सहने के लिए बाध्य है. 'करे तो मरे और न करे तो मरे' वाली कहावत के बीच वह झुलसता रहता है.

विशेषकर औद्योगिक संस्थानों में जहां विभिन्न यूनियनें होती हैं, उन की हालत और भी खराब होती है. वैसे भी आजकल उच्छृंखल किस्म के गैरजिम्मेदार एवं अनुशासनहीन कर्मचारियों की कहीं भी कमी नहीं है, जो न स्वयं काम करेंगे न दूसरों को करने देंगे. ऐसे में अच्छे अधिकारी भी व्यर्थ में बदनाम कर दिए जाते हैं.

ऐसे वातावरण में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है. इस लेख के लिए लेखक को बधाई.

—ब. कु. नीमा 'सुभाष'

अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'अधिकारी : एक घुटता व्यक्तित्व' पढ़ा. पढ़ कर ऐसा प्रतीत हुआ कि लेखक भी अधिकारी है. इसलिए वह अधिकारी पद की परेशानियों का चित्रण करने में सफल रहा है. लेकिन अपने एक पक्षीय रवैये के कारण वह कर्मचारियों के साथ न्याय नहीं कर पाया है.

लेखक ने 'अधिकारी' बेहद असहाय एवं दीनहीन बताया है, जब कि वास्तविकता यह है कि नौकरशाही में अधिकारी की मर्जी के खिलाफ एक पत्ता भी नहीं हिल सकता. अधिकारियों को तो इतने अधिकार मिले हुए हैं कि किसी भी

सौंदर्य में निखार के लिये
सुप्रीम ब्रेज़री

सुखद स्पर्श और बढ़िया बनावट हर दृष्टि से आकर्षक व आधुनिक डिजाइनों से निर्मित सुप्रीम ब्रा बेहतरीन मर्सराइज्ड कपड़े व इम्पोर्टेड रबर इलास्टिक से तैयार की जाती है। सुप्रीम ब्रा आपको पूर्ण सन्तोष देने के लिये वचनबद्ध है।

निर्माता :
सुप्रीम हौजरी इन्डस्ट्रीज (रजि.)
298 [illegible]
दिल्ली-110006. फोन : 524758

impressed

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन की योजनाएं, नियम एवं कानून आदि बिना अधिकारियों की कृपादृष्टि के कार्यान्वित ही नहीं हो सकते.

कर्मचारी जानता है कि यदि उस ने अपने अधिकारी के खिलाफ एक भी शब्द कहा तो उस की वार्षिक रिपोर्ट खराब कर दी जाएगी एवं उसे अवकाश आदि भी समय पर मिलना मुशकिल हो जाएगा.

फिर यदि कोई काम समय पर हो जाता है तो उस का सारा श्रेय अधिकारी को जाता है और यदि काम समय पर नहीं हो पाता तो उस की सारी जिम्मेदारी कर्मचारियों पर थोप कर अधिकारी चैन की नींद सोते हैं.

अधिकारियों को तबादला होने पर भी दफ्तर की ओर से जीप या कार, बंगला एवं नौकरचाकर मिल जाते हैं जब कि एक अल्प वेतनभोगी कर्मचारी को जिस का तबादला अपने अधिकारी के कोपभाजन के कारण होता है, कितनी आर्थिक एवं मानसिक परेशानियों में से गुजरना पड़ता है, इस की केवल कल्पना ही की जा सकती है.

अधिकारियों द्वारा इधरउधर घूमने के लिए सरकारी वाहनों का खुलेआम दुरुपयोग देखा जा सकता है. यही नहीं, सरकारी दौरों के नाम पर अधिकारी खानेपीने एवं सैरसपाटों पर भी बेरहमी के साथ सरकारी पैसे का दुरुपयोग करते हैं.

—अशोककुमार तिवारी

अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'मैदे का मारा' (व्यंग्य :तरशचंद्र जैन)

मुक्ता के लेखक

वनिता श्रीवास्तव

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कविता 'मेरे समीप' की रचयिता वनिता श्रीवास्तव इंदौर (मध्य प्रदेश) निवासी हैं. रंगों, उमंगों भरी मनभावन कविताएं लिखने के अतिरिक्त आप गायन, गृहसज्जा, कढ़ाईबुनाई और स्वादिष्ट भोजन बनाने में भी रुचि रखती हैं.

बिमलकुमार

इस अंक के लेख 'विमान दुर्घटनाएं और उन की रोकथाम' के लेखक बंबई निवासी बिमलकुमार श्रीवास्तव वायु सुरक्षा अधिकारी (अभियंता) हैं. विमान तथा वैमानिकी संबंधी अन्य विषयों पर आप खोजपूर्ण लेख लिखते हैं और केवल वायुयानों में ही आप की रुचि है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में तथ्यों को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया है. मास्टर को कभी भी पीठासीन अधिकारी नहीं बनाया जाता. ऐसा कदापि नहीं होता कि मतदान केंद्र पर पटवारी, चौकीदार इत्यादि न मिलें क्योंकि इन की उपस्थिति के लिए जिलाध्यक्ष द्वारा कड़े आदेश दिए जाते हैं. न उपस्थित होने पर उन्हें मुअत्तल तक किया जा सकता है.

मतदान का तरीका बताने वाले तथा सामग्री बांटने वाले अधिकारी विनम्र होते हैं. उन के आनेजाने के लिए जीपें व अच्छी बसों का प्रबंध रहता है. एक थानेदार की पोलिंग पार्टी को मतदान स्थल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी रहती है. इस के अतिरिक्त एक पीठासीन अधिकारी के साथ तीन पोलिंग अधिकारी, चार सिपाही व एक पटवारी रहता है. आवश्यक हो तो पीठासीन अधिकारी अन्य व्यक्तियों को भी नियुक्त कर सकता है.

पिछले विधान सभा चुनावों के समय शिक्षकों को मुख्यालय न छोड़ने का आदेश था. इस के एवज में उन्हें 15 दिन का अर्जित अवकाश या वेतन दिया गया है. उन्हें आनेजाने के लिए यात्रा भत्ता अलग से दिया जाता है.

—राकेशकुमार जैन

NOW BIGGER & BRIGHTER

Woman's era

Your favourite magazine WOMAN'S ERA now comes in bigger size, with a brighter and more colourful look, more vivid pictures and a new attractive visual display.

Combined with the NEW LOOK come more entertaining and enlightening stories, articles, that help you solve your social and family problems, features that will make you better equipped to face the challenging world.

PLUS latest fashions, new cooking recipes, housekeeping hints.

Buy Your Copy Today

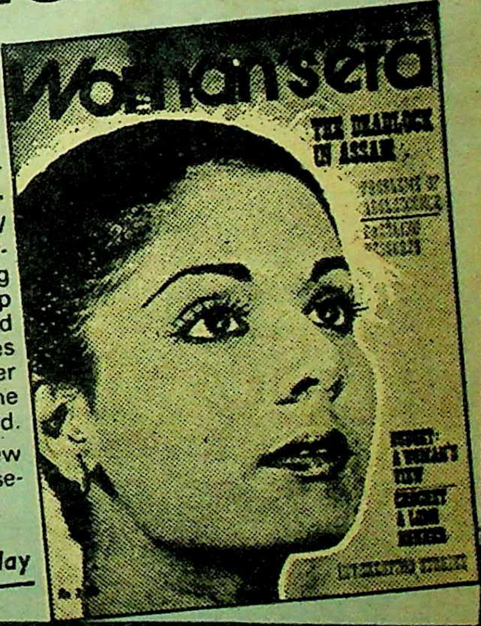

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

नेता नहीं पिछलग्गू चाहिए

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने वरिष्ठतम सहयोगी व पुराने वफादार श्री कमलापति त्रिपाठी को केंद्रीय मंत्रिमंडल से निकाल फेंका है. प्रत्यक्ष रूप में यह उन की रेलों को चलाने में असफलता के परिणामस्वरूप है. पर कहा जाता है कि श्री त्रिपाठी का परिवार उत्तर प्रदेश की राजनीति में अपना हक मांगने लगा था, अतः श्रीमती इंदिरा गांधी ने उन सब को निकालने का फैसला कर लिया है.

यदि असफलता ही मंत्रिमंडल से निकालने की वजह होती तो गृह मंत्री, वित्त मंत्री, ऊर्जा मंत्री और उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री आदि को भी विदा किया जाना चाहिए था, जो न तो अपनेअपने मंत्रालयों को सही ढंग से चला पा रहे हैं और न ही अपनी जिम्मेदारियों को ठीक ढंग से निभा रहे हैं. देश में न कहीं कानून व्यवस्था की स्थिति सुधरी है, न असम समस्या सुलझी है. न मूल्यों पर नियंत्रण हुआ है, न कोयले, बिजली और डीजल की पूर्ति बढ़ी है और न सांप्रदायिक दंगों पर ही प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण हुआ है. फिर बेचारे रेल मंत्री ही बलि का बकरा क्यों?

वास्तव में यह श्रीमती इंदिरा गांधी का काम करने का पुराना ढंग है. जैसे ही कोई व्यक्ति समझने लगता है कि इंदिराजी की गद्दी उन की मदद के बल पर चल रही है और उस के बिना इंदिराजी का काम नहीं चलेगा, इंदिराजी उस की जड़ें काटना शुरू कर देती हैं. मोरारजी देसाई, चंद्रशेखर, जगजीवनराम, ब्रह्मानंद रेड्डी, चेन्ना रेड्डी, देवराज अर्स, बंसीलाल, बहुगुणा आदि के साथ यही कुछ हुआ है.

जैसे ही इन लोगों ने सोचा कि वे इंदिराजी के बराबर हैं और राजनीति में उन की भी कोई हस्ती है, इंदिराजी ने उन्हें निकाल फेंका. यह अवश्य सही है कि वास्तव में ये सब नेता कागजी नेता थे और इंदिराजी की लोकप्रियता की खपच्चियों के सहारे खड़े थे. सिवा दोचार के सभी निकाले जाने के बाद न घर के रहे, न घाट के.

इसलिए कमलापति त्रिपाठी के साथ जो कुछ हुआ है, उस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. यह तो एकएक कर के उन के दल के हर महत्वाकांक्षी व्यक्ति के साथ होगा ही. आश्चर्य तो इस पर होना चाहिए कि इंदिराजी के काम करने के इस तरीके को जानते हुए भी उन के दल में इतने नेता व कार्यकर्त्ता कहां से आ जाते हैं.

मूल्यवृद्धि का नया दौर

सरकार ने राशन में मिलने वाली चीनी, चावल और मोटे अनाज के दाम बढ़ाने की घोषणा की है. चीनी जो अब तक 2.85 रुपए प्रति किलो की दर से मिलती थी, 1 दिसंबर से 3.50 रुपए की दर से मिलेगी. चावल और मोटे अनाजों के मूल्यों में 10 पैसे प्रति किलो की वृद्धि की गई है. मगर इन चीजों के दामों में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि 1 जनवरी, 1981 से अमल में आएगी.

चावल और मोटे अनाजों के मूल्यों में इस वृद्धि से सरकार ने इस मद में दी जाने वाली सरकारी सहायता में लगभग 80 करोड़ रुपए की कटौती की है. चीनी की मूल्यवृद्धि से मिलों को भी खासा लाभ पहुंचेगा, क्योंकि मिलों के 65 प्रतिशत उत्पादन का मूल्य इस प्रकार बढ़ गया है.

इस वृद्धि से चीजों की कीमतों में और तेजी आएगी. आम घरेलू बजट डगमगा जाएंगे क्योंकि यह वृद्धि मूलभूत आवश्यकताओं में की गई है. इस का असर यह होगा कि लगभग हर वर्ग अधिक वेतन की मांग करेगा, महंगाई भत्ता बढ़ेगा, उत्पादन का खर्च बढ़ेगा और शीघ्र ही बाकी सब वस्तुओं के दाम भी बढ़ेंगे.

मूल्यवृद्धि की गति, जो इस वर्ष 20 से 25 प्रतिशत रही है, इस से और अधिक बढ़ सकती है.

फिर भी इन वस्तुओं की मूल्यवृद्धि से बचा नहीं जा सकता था. चीनी, कागज, गेहूं, चावल आदि के उत्पादन का खर्च निरंतर बढ़ रहा है. सरकार करों से इन बढ़ते दामों की पूर्ति करे या सीधे जनता से वसूल करके, बात एक ही है. यदि इस की पूर्ति सीधे जनता करती है तो कम से कम कर एकत्र करने के व्यर्थ के खर्च से बचा जा सकता है. इस नजरिए से यह वृद्धि व्यावहारिक है.

राजनीतिक तौर पर यह वृद्धि श्रीमती इंदिरा गांधी की हार है. श्रीमती गांधी महंगाई और कानून व्यवस्था ठीक करने के नाम पर चुनाव जीत कर सत्ता में आई थीं. इस सरकारी वृद्धि से उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि मूल्यवृद्धि व्यापारियों या मिलमालिकों की वजह से ही नहीं है, इस के लिए तो सरकारी नीतियां ही दोषी हैं.

इंदिराजी के बाद कौन?

श्रीमती इंदिरा गांधी सरकार चलाने में जनता पार्टी से भी अधिक अक्षम साबित हो रही है. जनता पार्टी के विभिन्न घटकों के मतभेदों, उस से उत्पन्न अस्थिरता की भावना और जनता पार्टी के अधिकांश नेताओं की प्रशासन के बारे में अनुभवहीनता के बावजूद 1977 और 1979 के मध्य खासा काम चला.

श्रीमती इंदिरा गांधी का अनुभव, उन की प्रशासन पर पकड़, दल में उन के एकछत्र शासन के बावजूद आम जनता को उस सब का लाभ नहीं मिल पा रहा है. कांग्रेस सरकार आर्थिक, प्रशासनिक और व्यवस्था जैसे मोर्चों पर असफल हो रही है.

इस सब के बावजूद इंदिराजी की सरकार को कोई खतरा नहीं है. मतदाता सोच रहा है, ठीक है इंदिराजी का शासन खराब है, पर उन के अलावा है भी कौन? मोरारजी देसाई, जगजीवनराम, चरणसिंह तीनों इस कदर बेनकाब हो गए हैं कि जनता उन्हें नहीं चाहती. जनता तो एक ऐसे व्यक्ति की खोज में है जो इंदिराजी का स्थान ले सके.

यहीं पर हम भारतवासी सब से अधिक गलती पर हैं. हम इंदिराजी के स्थान पर किसी और का इंतजार कर रहे हैं जो मसीहा बन कर आए और देश का उद्धार करे. जब तक कोई और मसीहा न हो, पुराने मसीहा से ही काम चलाओ.

यह विचारधारा हमारे मस्तिष्क में सैकड़ों वर्षों से कूटकूट कर भरी गई है. हमें बारबार बताया गया है कि आम जनता किसी काम की नहीं है. उसे यदि कष्ट हो रहे हैं तो वे उस के पापों का फल हैं. पानी नहीं है तो कुआं खोदने के स्थान पर हमें देवताओं की पूजा करने का उपाय बताया गया है. शत्रु का आक्रमण हो तो हथियार उठा कर उस से लड़ने की आवश्यकता नहीं, राजा या देवीदेवताओं को बुला कर, उन की पूजा कर के अपनी रक्षा का उपाय करना चाहिए, भगवान से अवतार ले कर जनता का उद्धार करने की प्रार्थना करनी चाहिए.

यदि राजा अत्याचारी है, निरंकुश है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उस के विरुद्ध विद्रोह करने की नहीं बल्कि संयम बरतने की सलाह दी गई और कहा गया कि पाप का घड़ा अपने आप फूट जाएगा. निष्क्रियता, लाचारी और स्वयं पर अविश्वास की भावना इस तरह कूटकूट कर भर दी गई है कि हम प्रजातंत्र के बावजूद एक सुंदर, सलोने, आकर्षक व्यक्तित्व वाले मसीहा या अवतार की खोज में रहते हैं जिस की तसवीरें घरघर में लग सकें, चाहे उसे प्रशासन चलाना आता हो या नहीं.

श्रीमती इंदिरा गांधी असफल हैं तो हम उन के स्थान पर वैसी ही प्रतिभा चाहते हैं, ऐसी प्रशासन प्रणाली नहीं जो आम जनता को काम करने के अवसर दे, उसे प्रोत्साहित करे.

जनता पार्टी की सरकार की सफलताएं उस के नेताओं की प्रतिभा, विलक्षणता या दूरदर्शिता के कारण नहीं, जनसाधारण को काम करने की छूट के अवसर देने के कारण थीं.

जनता पार्टी के नेताओं को न सरकारी नियंत्रणों में आस्था थी, न उन्हें उन के दुरुपयोग के तरीके आते थे. अतः उन्होंने एकएक कर के बहुत से सरकारी नियंत्रण समाप्त कर दिए. चीनी और गेहूं के मूल्यों में कमी इन नियंत्रणों के हटने से ही हुई. उन्होंने अपने शासन काल में कम से कम अध्यादेश जारी किए, कम से कम कानून बनाए.

उन की यह कमजोरी ही देश की सब से बड़ी उपलब्धि थी. आज हमें ऐसे ही शासक चाहिए जो आम जनता के दैनिक कामों में कम से कम सरकारी हस्तक्षेप करें. इस के लिए जरूरी है कि हम ऐसे शासकों को ढूंढ़ें जो आम व्यक्ति के बराबर हों, उस से ऊंचे नहीं. जो आम व्यक्ति की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और कठिनाइयों को समझते हों. जो इतने शक्तिशाली न हों कि उन्हें अपने हटाए जाने का डर ही न हो.

श्रीमती इंदिरा गांधी पांच वर्ष के लिए चुनी गई हैं और उन्हें अपना समय पूरा करने का अधिकार है. पर इस दौरान आम जनता को यह सोच कर चुप नहीं बैठना चाहिए कि और कोई देवता या देवी दिखाई नहीं पड़ रही है तो हम कुछ कहें ही नहीं, चुपचाप धांधलियां सहते रहें.

न करेंगे, न करने देंगे

दिल्ली पुलिस ने हाल ही में कुछ अपराधियों की गिरफ्तारी पर अपनी पीठ जरा जोर से थपथपाई थी. क्या ये अपराधी महिलाओं के गलों से चेन खींचने वाले थे? जी नहीं. क्या ये निरंकारी संत गुरुबचनसिंह के हत्यारे थे? जी नहीं. क्या यह राहजनी करने वाले युवकों का गिरोह था? जी नहीं. ये थे समानांतर डाक घर चलाने वाले कुछ व्यक्ति.

ये लोग दिल्ली में निजी डाक सेवा चला रहे थे और शहर के कुछ व्यापारियों के पत्र, बंडल, पार्सल आदि दूसरे शहरों से लाते व ले जाते थे. इन बंडलों में धनराशि, सैंपल आदि ही होते थे, बम या जहर नहीं. जो सामान उन को दिया जाता था, उस की वे पूरी जिम्मेदारी लेते थे और उस को ठीक समय पर पहुंचाते थ. इन से न किसी नागरिक को शिकायत थी, न व्यापारी को. फिर भी इन्हें गिरफ्तार किया गया.

ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि डाक व टेलीग्राफ कानून के अंतर्गत भारत सरकार ने भारतीय डाक विभाग को डाक सेवा का एकाधिकार दे रखा है. अब चाहे डाक घर आप के पत्रों का मलीदा बना कर यमुना में डाले या मनीआर्डर की राशि हड़प ले, आप चुप रहिए. आप की चहेती पत्रिकाएं डाकिए के घरों में सुशोभित हों या डाकिया आप को पार्सल देने से पहले बख्शीश मांगे, आप मुंह बंद रखिए.

भारतीय डाक व्यवस्था दिन प्रति दिन खराब हो रही है. कर्मचारी अनुशासनहीन हो रहे हैं. डाक विभाग हर जगह मनमानी करता है. लिफाफों, टिकटों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभाव हो रहा है. तुरंत सेवाएं समाप्त हो रही हैं. फिर भी डाक विभाग को अपने प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करने की ज्यादा चिंता है.

गिरफ्तार किए गए व्यक्ति तो पुरस्कार के अधिकारी हैं कि उन्होंने जनता की कठिनाइयों को समझते हुए एक ऐसी सेवा की है जिस के बिना इतने बड़े देश में रहना कठिन है. जनता को तो मांग करनी चाहिए कि सरकारी डाक विभाग का एकाधिकार तुरंत समाप्त किया जाए और नागरिकों तथा व्यापारियों को भी यह सेवा सही मूल्य पर चलाने और प्राप्त करने का मौका दिया जाए.

पिछड़ी जातियों को आरक्षण

हाल में मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य के मेडिकल कालिजों में प्रवेश के लिए अनुसूचित जातियों के छात्रों के लिए न्यूनतम अंकों की शर्त हटाई थी. इस का अर्थ यह था कि प्रिमेडिकल टेस्ट में शून्य अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को भी 20 प्रतिशत सुरक्षित स्थानों पर प्रवेश मिल जाता, जब कि असुरक्षित स्थानों के लिए 60 से 70 प्रतिशत तक के अंकों की आवश्यकता थी.

इस पर राज्य भर में ही नहीं, देश भर में बड़ा शोर मचाया गया कि श्री अर्जुनसिंह सस्ती लोकप्रियता व पिछड़ी जातियों के मतों के लिए शिक्षा के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं और सवर्णों के साथ भेदभाव बरत रहे हैं. भारतीय चिकित्सा परिषद ने इस तरह प्राप्त की गई डिगरियों की मान्यता वापस लेने की धमकी दी.

श्री अर्जुनसिंह बड़े पशोपेश में थे कि क्या करें, पर मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने इस तरह के प्रवेशों पर रोक लगा कर उन्हें उबार लिया है.

आम तौर पर इस घटना पर सवर्णों के प्रति सहानुभूति दर्शाई गई है कि उन्हें बिना बात के जातिगत भेदभावों का सामना करना पड़ रहा है. जहां मेधावी छात्र प्रवेश से वंचित रह रहे हैं, वहां निकम्मे लोग जाति के बल पर प्रवेश पा रहे हैं.

लेकिन सहानुभूति उल्टे पिछड़ी जातियों से ही होनी चाहिए. श्री अर्जुनसिंह ने यदि यह कदम मत बटोरने के लिए उठाया है तो स्पष्ट ही है कि पिछड़ी जातियों के लोगों की संख्या राज्य में काफी है. इस का अर्थ है कि इतनी बड़ी संख्या में से 20 प्रतिशत स्थान भरने लायक छात्र प्रिमेडिकल टेस्ट में सफल नहीं हो पाते. तभी तो प्रिमेडिकल टेस्ट में न्यूनतम अंकों की शर्त हटानी पड़ी.

शिक्षा अब भी सवर्णों के हाथों में है. अधिकांश अधिकारी, प्रिंसिपल, अध्यापक सवर्ण ही हैं. उन्हें अच्छा वेतन भी मिलता है और सुविधाएं भी. फिर वे क्यों नहीं इतनी विशाल पिछड़ी जातियों में से 100-200 छात्र भी चिकित्सा की शिक्षा के लिए तैयार कर पाते? यदि पिछड़ी जातियों के छात्र पढ़ने में कमजोर हैं तो क्या सवर्ण अतिरिक्त श्रम से उन्हें पढ़ा भी नहीं सकते? क्या वे अपनी असफलता का कोई बहाना बना सकते हैं?

वास्तव में हमारे रगरग में जाति भेद घुला हुआ है. हर रोज हमें तुलसी और मनु के व्याख्यान सुनाए जाते हैं कि छोटी जातियों के लोग अस्पृश्य हैं. जो थोड़े-बहुत पिछड़ी जातियों के लोग आरक्षण के बल पर पैसा कमाने लगे हैं, सवर्ण उन्हें हिकारत की नजर से देखते हैं और प्रशासन की कमजोरी उन्हीं पर थोपते हैं.

यही वजह है कि स्कूलों में प्रवेश पाने, सस्ती शिक्षा और मुफ्त पुस्तकों के बावजूद वे हीनभावना से मुक्त नहीं हो पाते और सवर्ण छात्रों से पिछड़ जाते हैं.

मध्य प्रदेश सरकार को चाहिए कि वह यदि कम अंक पाने वालों को कानूनी अड़चनों से चिकित्सा विद्यालयों में प्रवेश नहीं दिला सकती तो कम से कम उन शिक्षकों से जवाबतलब करे जिन्होंने इन छात्रों को पढ़ाया था. और उन्हें लापरवाही का दंड दे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहरी चाल चलने वाले राजनीतिबाजों के रहते बंधुआ मजदूरों का उद्धार होना संभव नहीं है. फिर भी बारबार बंधुआ मजदूरों की मुक्ति की सरकारी दुहाई क्यों दी जाती है?

बंधुआ मजदूर:

समस्या या राजनीतिक हथियार?

लेख • खान भारती

सरकारी कामों के साथ सब से बड़ी गड़बड़ यह होती है कि इन का प्रचार ज्यादा होता है और काम कम. इस पर भी सरकार चलाने वाले नेता और अफसर जनता को काम अधिक और बातें कम करने का उपदेश देते रहते हैं. 1975 में 'काम ज्यादा, बातें कम' का नारा जगहजगह लगाया गया.

उसी समय 20 सूत्री कार्यक्रम लोगों के सामने लाया गया जो सरकारी आदर्श 'शोर अधिक, काम कम' का एक अच्छा नमूना साबित हुआ.

इसी कार्यक्रम में बंधुआ मजदूरों को मुक्ति दिलाने का भी बड़े जोरों से प्रचार किया गया. सरकार की ओर से बढ़ाचढ़ा कर आंकड़े पेश किए गए कि

बंधुआ मजदूरों का मुद्दा क्या केवल राजनीतिक शोशा बन कर नहीं रह गया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने ला[illegible] दिए गए हैं. मगर उस समय हकीकत में हुआ क्या था, इस की एक झलक यहां पेश है :

मजदूरों की मुक्ति या तमाशा?

मध्य प्रदेश के एक आदिवासी इलाके में सत्तारूढ़ दल के छुटभैये नेताओं ने बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का एक समारोह किया. एक बड़े राजनीतिबाज को इस समारोह में बुलाया गया. बंधुआ लोगों की आजादी का समारोह शुरू हुआ, एकएक कर के बंधुआ मजदूर आते गए और नेताजी उन्हें उन की गिरवी रखी चीजें तथा कुछ रकम भेंट करते गए.

इतना सब पा कर भी मजदूर के चेहरे पर खुशी का कोई निशान नहीं था, क्योंकि उसे पता था कि जो कुछ उसे मिला है, वह शामियाने के पीछे बैठे लोगों को उसे तत्काल सौंप देना है. [illegible] मजदूरों को '[illegible]' कर के मंत्रीजी राजधानी लौट गए और बंधुआ वैसे के वैसे ही रहे. अखबार वालों को इस खबर का पता चल गया था, मगर उस समय आपात स्थिति में खबर छप न सकी. हां, बाद में जरूर छप गई.

अब केंद्र तथा नौ राज्यों में चुनावों के बाद फिर 20 सूत्री कार्यक्रम वाली सरकारें बन गई हैं. इंदिरा कांग्रेस का हर मुख्य मंत्री 20 सूत्री कार्यक्रम की दुहाई देने लगा है. अंधेरे गोदामों में पड़े 20 सूत्री कार्यक्रम के पुराने बोर्डों की रंगाईधुलाई शुरू हो गई है. इसी सिलसिले में बंधुआ मजदूरों की मुक्ति की बात फिर सामने आने लगी है.

उस में इतना और जुड़ गया है कि जनता सरकार ने 28 महीनों में बंधुआ मजदूरों को आजाद करने की दिशा में गौर ही नहीं किया था. इस तरह से अब बंधुआ मजदूरों को आजाद करना किसी कार्यक्रम का हिस्सा न रह कर एक राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतिक हथियार बन गया है.

हालांकि बंधुआ मजदूरों को आजादी करने का अध्यादेश अक्तूबर, 1975 में जारी किया गया था. बाद में संसद ने इस संबंध में कानून भी बना दिया था, मगर पांच साल बीतने पर भी नतीजा वही ढाक के तीन पात है. सच पूछा जाए तो आज तक सरकार के पास इस बात की ही सही जानकारी नहीं है कि देश में बंधुआ मजदूरों की कुल तादाद कितनी है. अलगअलग एजेंसियों द्वारा की गई बंधुआ मजदूरों की गिनती एक दूसरे से बिलकुल मेल नहीं खाती, जब कि इस बारे में सरकारी पैसा खूब धड़ल्ले से खर्च किया जाता रहा है.

बंधुआ मजदूरों की आजादी की बात जब 20 सूत्री कार्यक्रम में शामिल की गई तो उस समय सिर्फ 10 राज्यों ने अपने यहां बंधुआ मजदूर बताए. इन में भी गुजरात सरकार को अपने यहां सिर्फ 42 बंधुआ मजदूर मिले. उड़ीसा ने सिर्फ 311 बंधुआ मजदूर अपने यहां बताए. बाद की रिपोर्टों से पता चला कि ये आंकड़े बहुत कम बताए गए थे. इन 10 राज्यों में कुल बंधुआ मजदूरों की तादाद एक लाख 20 हजार बताई गई.

इस के बाद सरकारी मशीनरी इन्हें आजाद कराने के काम में लग गई. जैसा कि अकसर सरकारी कामों में होता है, बंधुआ मजदूर कागजों पर आजाद होने लगे. अब उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु सरकारों ने दावा किया है कि उन्होंने अपने यहां बंधुआ मजदूरों को न सिर्फ 'आजाद' करा दिया है, बल्कि उन्हें फिर से बसा भी दिया गया है. यह सभी जानते हैं कि अपनी तरक्की के आंकड़े बढ़ाचढ़ा कर पेश करना इन सरकारों के लिए एक आम बात है.

बंधुआ मजदूर हैं कौन?

कुछ समय पहले किए गए 32वें राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण में देश में बंधुआ मजदूरों की कुल तादाद 3.40 लाख से ज्यादा होने का अनुमान किया गया. परिगणित एवं जनजाति आयोग का कहना है कि अब तक गांवों में ही बंधुआ मजदूरों को खोजा गया है. गैर कृषि क्षेत्र जैसे घरेलू काम, होटल, बुनाई वगैरा के काम में भी बहुत सारे बंधुआ मजदूर हैं.

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण से बंधुआ मजदूरों की तादाद का सही पता चल गया, यह समझना भूल होगी, क्योंकि गांधी शांति प्रतिष्ठान ने राष्ट्रीय श्रम संस्थान के सहयोग से देश के बहुत से इलाकों में जो जांचपड़ताल की है, उस के मुताबिक देश में बंधुआ मजदूरों की तादाद 22 लाख 20 हजार तक होने का

सरकार द्वारा बेशुमार धन खर्च करने के बावजूद परिणाम वही ढाक के तीन पात. (एक राजस्थानी बंधुआ मजदूर कार्य करते हुए.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदाजा है. उड़ीसा, जहां पहले केवल 311 बंधुआ मजदूर बताए गए थे, वहां बाद में सरकार ने एक लाख लोगों को बसाने का दावा किया. ऐसा विश्वास किया जाता है कि उड़ीसा में बंधक मजदूर प्रथा का काफी जोर है.

बंधुआ मजदूर बनाम राजनीतिक शोशा

ऊपर दिए गए सारे आंकड़े इस बात की पोल खोलते हैं कि सरकारी मशीनरी कितनी कमजोर है व बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का दावा महज एक राजनीतिक शोशा है. ऐसा भी सुनने में आया है कि बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के नाम पर कई अफसर व नेताओं ने खूब चांदी बनाई.

अब तनिक यह भी देख लिया जाए कि इस योजना पर सरकार कितना खर्च करती रही है. 1977-78 तक बंधुआ मुक्ति 20 सूत्री कार्यक्रम का एक हिस्सा रही, मगर 1978-79 में इसे केंद्र द्वारा जारी की गई योजना बना दिया गया. इस योजना के तहत बंधुआ मजदूरों की मुक्ति और उन के पुनर्वास पर होने वाले खर्च का 50 प्रतिशत केंद्र सरकार और 50 प्रतिशत राज्य सरकार को देना था. केंद्रीय योजना होने के बावजूद इस में कुछ खास प्रगति नहीं हो पाई. श्रम मंत्रालय ने स्वयं प्रगति को 'असंतोषजनक' बताया है, जब कि इस योजना पर खूब धन खर्च हो रहा है.

कर्नाटक ने 5.07 लाख रुपए खर्च कर के 1978-79 में केवल 378 बंधुआ मजदूरों को 'आजाद' कराया. बिहार ने 2.69 लाख रुपए में कुल 388 लोगों को मुक्ति दिलाई. मध्य प्रदेश में 2.37 लाख रुपए में 121 बंधुआ मजदूरों, उड़ीसा में 2.13 लाख रुपए में 308 को, राजस्थान में 14 लाख रुपए की लागत पर कुल 700 को, उत्तर प्रदेश में 10 लाख रुपए में 495 को, तथा आंध्र प्रदेश में 18.01 लाख रुपए के खर्च पर 2,920 बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराया गया.

मध्य प्रदेश सरकार की जानकारी में प्रदेश में कुल 121 ही बंधुआ मजदूर थे जिन का उद्धार हो चुका है. अब इन मजदूरों को क्या नाम दें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना आयोग ने 1978 से 1983 की योजनाओं में बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिए 25 करोड़ रुपए का प्रबंध करने की बात कही है. लेकिन जिस रफ्तार से सरकारें इस दिशा में काम कर रही हैं, उसे देख कर तो ऐसा लगता है कि बंधुआ मजदूर एक पंचवर्षीय योजना में 'आजाद' नहीं हो पाएंगे. सब बंधुआ लोगों को मुक्त कराने के लिए ऐसी कई पंचवर्षीय योजनाओं की जरूरत पड़ेगी.

हो सकता है समस्या तब भी बनी रहे, क्योंकि यदि समस्या समाप्त हो गई तो राजनीतिबाजों के लिए एक शोशा कम जो हो जाएगा. ऐसा वे क्यों पसंद करने लगे?

अब आंध्र प्रदेश व राजस्थान सरकारों का कहना है कि बंधुआ मजदूरों को 'आजाद' कर के पुनः बसाने पर होने वाला तमाम खर्च केंद्र सरकार को ही देना चाहिए. योजना आयोग ने भी कुछ समय पहले ऐसा ही सुझाव दिया था. केंद्र सरकार भी पूरा खर्च सहन करने के लिए तैयार है, मगर देखना यह है कि सरकार द्वारा बंधुआ मजदूरों का यह तथाकथित आजाद व पुनर्वास क्या सचमुच लोगों को आत्मनिर्भर बना देता है.

केंद्र की मौजूदा योजना के मुताबिक एक बंधुआ मजदूर के पुनर्वास के लिए 4,000 रुपए पर्याप्त हैं, जब कि भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के एक सर्वेक्षण के अनुसार एक बंधुआ मजदूर को फिर से बसाने के लिए पांच साल में 14,000 से 21,000 रुपए तक की जरूरत होगी. बिना इतनी रकम खर्च किए उसे पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ा नहीं किया जा सकता. इन आंकड़ों के फर्क से ही बंधुआ मजदूरों के बारे में सरकारी 'हमदर्दी' की पोल खुल जाती है.

अब समस्या का दूसरा पहलू आता है. सरकार किसी काम में खर्च का जो भी अनुमान लगाती है, उस का एक बड़ा भाग योजना के संचालन यानी सरकारी मशीनरी पर खर्च हो जाता है. मूल कार्य के लिए जो रकम बचती है, वह ऊंट के मुंह में जीरा ही साबित होती है. यही बंधुआ मजदूरों की मुक्ति योजना की भी कहानी है.

इतने प्रचार व भारी रकम खर्च करने के बाद बंधुआ लोगों के दिन फिरें या न फिरें मगर इस बहाने से सरकारी अमले के और उन के सरपरस्त राजनीतिबाजों की पांचों उंगलियां घी में अवश्य हो रही हैं. ●

अब तक क्यों नहीं पनप पाए?

आरक्षण एवं अनेक सुविधाएं उपलब्ध होने पर भी अनसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों ने पर्याप्त प्रगति क्यों नहीं की. इस पर हाल ही की एक घटना से काफी प्रकाश पड़ा है.

पिछले दिनों कर्नाटक के बीदर जिले के कुछ सरकारी अधिकारियों, प्रधानाचार्यों तथा निजी छात्रावासों के प्रबंधकों ने मिल कर लगभग 14 लाख रुपए हड़प लिए. यह धन अनुसूचित जाति तथा जनजाति के छात्रों को छात्रवृत्ति देने तथा उन के भोजन एवं आवास की व्यवस्था के लिए निर्धारित कोष से हड़पा गया. लिपिकों, शिक्षकों आदि ने अधिकारियों से मिलीभगत कर के जाली प्रमाणपत्रों के आधार पर इन सुविधाओं के तहत मिलने वाला धन स्वयं वसूल कर लिया. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111478 गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

लेख • डा. त. ब. ल. जायसवाल

तंबाकू और सिगरेट

कितना लाभप्रद, कितना हानिकारक?

सिगरेट और तंबाकू के प्रयोग से होने वाले संकड़ों तरह के रोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही नहीं जानलेवा तक हैं. फिर भी इन का प्रयोग करना क्या अपने ही स्वास्थ्य और जीवन से खिलवाड़ करना नहीं है?

धूम्रपान वैसे तो भारत में शताब्दियों पुराना है पर सिगरेट का प्रचलन सर्वप्रथम अमरीका से प्रारंभ हुआ. धीरेधीरे यह सिगरेट की आंधी यूरोप से होती हुई सारे विश्व में छा गई. पुरुषों में ही यह आदत नहीं आई बल्कि महिलाएं भी इसे अपनाने लगीं.

अब तो सिगरेट पीना इस कदर आम हो गया है कि स्वास्थ्य पर इस का क्या प्रभाव पड़ता है लोग इस पर ध्यान ही नहीं देते. इसी कारण सिगरेट के शौकीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तरहतरह की बीमारियां होने लगीं. अब तो यह तथ्य भी सिगरेट पीने की तरह आम हो गया है कि सिगरेट पीने से अनेक प्रकार के रोग हो सकते हैं. इसी से प्रेरित हो कर चिकित्साशास्त्रियों ने 1980 को 'धूम्रपान तथा स्वास्थ्य : चुनाव आप का' वर्ष के रूप में चुना है.

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है. सिगरेट का धुआं शरीर के अंदर जिसजिस भाग से गुजरता है उन सभी को प्रभावित करता है. सिगरेट पीने का कुप्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य तथा धूम्रपान की मात्रा पर निर्भर करता है. शरीर में जितनी अधिक प्रतिरोधक शक्ति रहेगी, उतनी ही रोग उत्पन्न होने की आशंका कम रहती है.

तंबाकू तथा उस के जलने से लगभग 500 से अधिक रासायनिक पदार्थ निकलते हैं जो कण तथा गैस के रूप में होते हैं. ये पदार्थ पाइरीडीन, नाइट्रोजन, आइसोप्रेनाइड पदार्थ अम्ल, क्षार एवं फिनोलिक पदार्थ होते हैं जो श्वास प्रक्रिया तथा पाचन अंगों के अंदर प्रवेश कर अनेक प्रकार की खराबियां पैदा करते हैं. इस के अतिरिक्त पोलोनियम 210 तथा निकल आदि भी निकलते हैं, जो फेफड़े में कैंसर की आशंका पैदा करते हैं.

इन के अलावा तंबाकू में मुख्य पदार्थ निकोटीन तथा कार्बन मोनोआक्साइड होता है. इस में कार्बन मोनोआक्साइड रक्त के हीमोग्लोबिन से मिल कर कारबाक्सी हीमोग्लोबिन बनाता है जो शरीर के लिए अत्यंत घातक है.

तंबाकू से प्रभावित होने वाले अंग

श्वास प्रणाली तथा पाचन के अंगों के अतिरिक्त तंबाकू से प्रभावित होने वाला अन्य अंग हृदय है. हृदय पर तंबाकू का प्रभाव कैटेकोलामीन के कारण होता है. सिगरेट का धुआं रक्त में मिल जाने से ऐड्रिनाल ग्रंथि से कैटेकोलामीन निकलता है. इस के रक्त में मिल जाने से रक्त का प्रवाह शिथिल हो जाता है. उस से हृदय को रक्त मिलने की गति धीमी पड़ जाती है. इस धीमी गति से रक्त प्रवाह से पूर्ण आक्सीजन न मिलने के कारण मायोकार्डियल इंफारक्शन अर्थात दिल के दौरा की बीमारी की आशंका हो जाती है. इसी लिए आजकल इस रोग के रोगियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है.

श्वास प्रणाली के अंगों में तंबाकू से सर्वाधिक प्रभावित होने वाला अंग फेफड़ा है. फेफड़ों की झिल्लियों के ऊपर जले हुए सिगरेट से उत्पन्न रासायनिक पदार्थ ठीक उसी प्रकार की प्रतिक्रिया करते हैं, जैसी

पुरुषों की देखादेखी इस घातक शौक को अब महिलाएं भी अपनाने लगी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंख के अंदर कोई धूल या कण चले जाने के कारण होती है. यदि ऐसी अवस्था में सिगरेट के पीने पर रोकथाम न लगाई जाए तो रोग अत्यंत गंभीर स्थिति धारण कर जाता है. यह एक रासायनिक पदार्थ बेंजीपायरीन के कारण होता है जो कैंसर के रोग की उत्पत्ति में सहायक होता है.

फेफड़े के कैंसर के प्रारंभ में खांसी, बलगम के साथ अथवा बिना बलगम के खांसी होती है. जैसेजैसे रोग की गंभीरता बढ़ती जाती है वैसेवैसे अन्य लक्षण जैसे सीने में दर्द, बलगम में खून का आना तथा श्वास का फूलना आदि सामने आने लगते हैं. श्वास प्रणाली के दूसरे अंगों में तंबाकू से प्रभावित होने वाला स्वर यंत्र भी है. इस के प्रभावित होने पर गले में खराश, आवाज का भारी होना और श्वास फूलने के लक्षण सामने आते हैं.

पाचन प्रणाली के अंगों में तंबाकू का सब से पहले होंठों और मुंह पर प्रभाव पड़ता है. फिर ग्रास नलिका, भोजन नलिका तथा आमाशय इस से प्रभावित होते हैं. इन में भी उसी प्रकार की प्रतिक्रियाएं होती हैं, जैसी श्वास प्रणाली के अंगों के प्रभावित होने पर होती हैं. लेकिन इन के प्रभावित होने पर खानेपीने तथा निगलने में कठिनाई का महसूस होना अथवा पेट का दर्द, जो खाने के बाद कम हो जाता है, आदि लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं.

महिलाओं को सिगरेट अधिक घातक

सिगरेट पीने की आदत महिलाओं में बढ़ने के कारण रोगों के आंकड़े बढ़ते जा रहे हैं. महिलाएं इसे फैशन समझ कर अपना रही हैं. बाद में यह एक आदत बन जाती है. यह आदत महिलाओं के स्वास्थ्य पर गर्भावस्था के दिनों में ज्यादा बुरा प्रभाव डालती है. गर्भपात हो जाना, गर्भ में ही शिशु की मृत्यु होना, जन्म के बाद शिशु की मृत्यु होना अथवा शिशु का जन्म के समय कमजोर होना इस के दुष्परिणाम हैं.

सिगरेट के सेवन से रोग की उत्पत्ति इन बातों पर निर्भर करती है :

- सिगरेट पीने की आदत कब से पड़ी?
- कितनी संख्या में सिगरेट पी जाती है?
- किस प्रकार की सिगरेट पी जाती है?
- सिगरेट का कितना धुआं वह अंदर लेता है?
- क्या सिगरेट बुझा कर उस का पुनः सेवन किया जाता है?
- कितनी अवधि तक सिगरेट मुंह में रहता है?
- सिगरेट सेवन करने वाला किस वातावरण में रहता है?

सिगरेट पीने की आदत एक विशेष

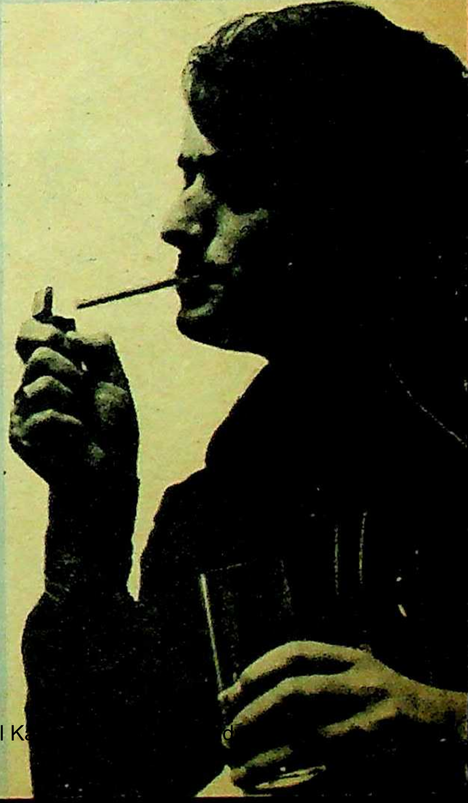

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है. ऐसे में 'धूम्रपान या स्वास्थ्य' आप जो चाहे चुनिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Ka

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था में पड़ती है. अधिकतर देखा गया है कि विद्यार्थी जीवन में लोगों में सिगरेट पीने की आदत बन जाती है. उसी समय से कई रोगों के होने की आशंका हो जाती है. जितनी जल्दी सिगरेट पीने की आदत बनेगी, रोग होने की आशंका भी उतनी ही ज्यादा रहेगी. यदि इस आदत को बीच में छोड़ दिया जाए तो रोगी के रोग से मुक्त होने तथा रोग न होने की संभावना 60 प्रशित बढ़ जाती है.

ज्यादा सिगरेट पीने से कैंसर की आशंका

सिगरेट पीने की भी सीमा होती है. कुछ लोग दिन में एक या दो बार सिगरेट पीते हैं. पर कितनों में यह आदत होती है कि एक सिगरेट बुझने भी नहीं पाती कि दूसरी जला लेते हैं. जितनी अधिक सिगरेट पी जाएगी, अन्य रोगों के अलावा कैंसर की भी आशंका उतनी ही अधिक रहेगी.

आम तौर पर बाजार में दो प्रकार के सिगरेट मिलते हैं—फिल्टर और नानफिल्टर. फिल्टर सिगरेट नानफिल्टर सिगरेट की तुलना में कम हानिकारक है, क्योंकि इस से धुआं छन कर शरीर के अंदर प्रवेश करता है, जिस के कारण कुछ विनाशकारी पदार्थ शरीर के अंदर प्रवेश नहीं करने पाते. इन दोनों सिगरेटों के अतिरिक्त बाजार में सिगार व पाइप भी मिलते हैं. ये दोनों और भी हानिकारक हैं तथा उन से कैंसर जैसे रोग की अधिक आशंका रहती है.

अकसर देखा गया है कि लोग काम करते समय सिगरेट को मुंह में ही दबाए रहते हैं और अधिक से अधिक धुआं

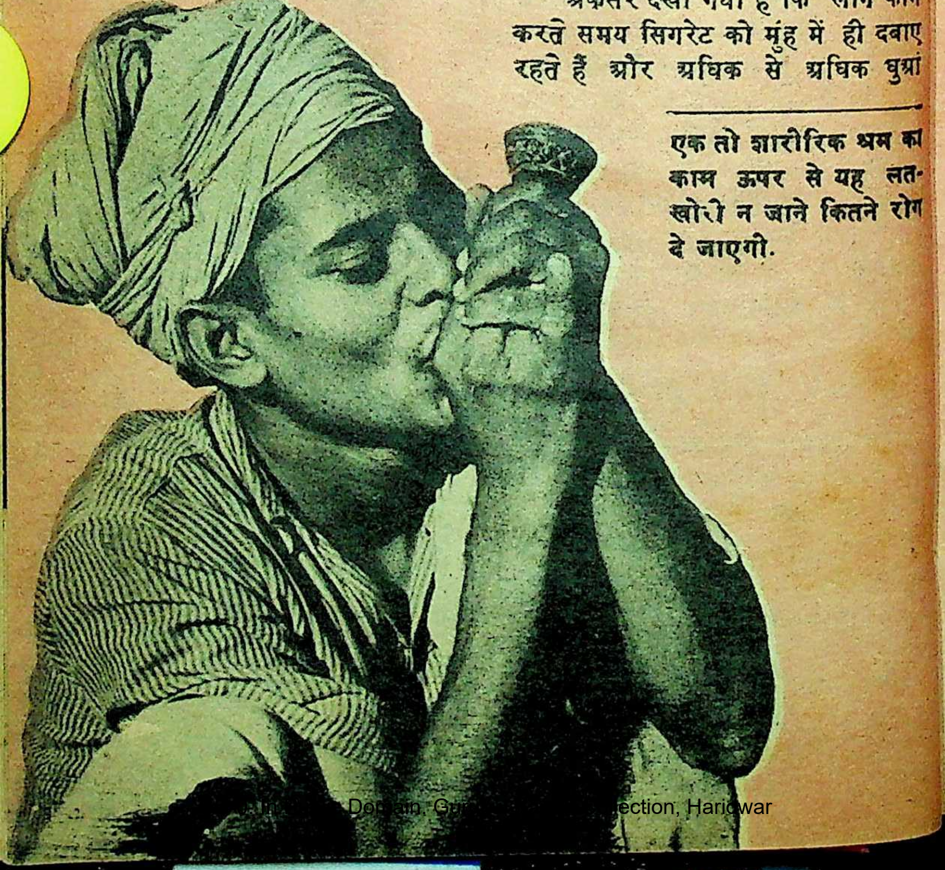

एक तो शारीरिक श्रम का काम ऊपर से यह लतखोरी न जाने कितने रोग दे जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदर खींचते रहते हैं. इस से होंठों तथा फेफड़े दोनों का कैंसर होने की आशंका रहती है, जितना अधिक धुआं अंदर प्रवेश करेगा उतने ही अधिक रासायनिक पदार्थ फेफड़ों की सतहों पर जमा होंगे और अपनी प्रतिक्रिया द्वारा विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देंगे. जैसा कि बताया जा चुका है. यही बाद में कैंसर जैसे रोग में परिवर्तित हो सकता है.

मैकेनिक अथवा मजदूरों को अकसर यह आदत पड़ जाती है कि वह सिगरेट का कुछ हिस्सा पी कर उसे बुझा कर रख देते हैं, फिर कुछ समय बाद उसी सिगरेट को जला कर पीने लगते हैं. ऐसा वे आर्थिक

परिश्रम कर के कमाए पैसे को इस तरह धुएं के रूप उड़ाने में कैसा बड़प्पन है?

बचत की दृष्टि से करते हैं. लेकिन बार-बार सिगरेट जला कर पीना अत्यंत हानिकारक है. इस प्रकार सिगरेट पीने वालों को फेफड़ों का कैंसर और स्वरयंत्र क कैंसर औरों की तुलना में ज्यादा होता है.

हर व्यक्ति का अलग वातावरण होता है. गांवों और शहरों में भी बड़ा अंतर है. एक तरफ खुली शुद्ध वायु का वातावरण तथा दूसरी ओर मोटरों, गाड़ियों की धूलधक्कड़ तथा फैक्टरियों का दूषित करने वाला वातावरण, जिस में रहने में एक घुटन सी महसूस होती है. लेकिन फिर भी रहना तो पड़ता ही है और वह रहने का आदी भी हो जाता है. ऐसे वातावरण में रहने पर शरीर के अंदर की प्रतिरोधक शक्ति धीरेधीरे क्षीण हो जाती है और इनसान तरहतरह के रोगों का शिकार हो. जाता है. तपेदिक, दमा आदि तो आम हैं ही. ऐसे वातावरण में रहने वाला व्यक्ति यदि सिगरेट पीने का आदी है तो अन्य रोगों के साथ वह कैंसर जैसे रोग का भी शिकार हो सकता है.

इन सब से यह बात स्पष्ट हो जाती

है कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए कितना हानिकारक है. अब निर्णय आप को लेना है कि आप को इस आदत से बचने के लिए क्या करना है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान दुर्घटनाएं और उन की रोकथाम

लेख • बिमल श्रीवास्तव

विमानों को उड़ान भरने से पहले अच्छी तरह देखापरखा जाता है. प्रशिक्षित और अनुभवी कर्मचारियों की ही नियुक्ति की जाती है, फिर भी विमान दुर्घटनाएं हो जाती हैं. इन की रोकथाम के लिए कैसे-कैसे उपाय अपनाए जा रहे हैं?

हम लोग अक्सर विमान दुर्घटनाओं की बातें करते रहते हैं. विश्व के किसी भी भाग में होने वाली दुर्घटना की चर्चा समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और रेडियो आदि में एक आम विषय बन जाती है. वास्तव में दुर्घटनाग्रस्त विमान एक कारुणिक और भयानक दृश्य उत्पन्न कर देता है जिस से कठोर से कठोर हृदय भी द्रवित हो उठता है.

इसी सिलसिले में 1 जनवरी, 1978 को बंबई के पास भीषण विमान दुर्घटना का भी जिक्र किया जा सकता है, जिस में विमान कर्मचारियों सहित सभी 213 यात्रियों की मृत्यु हो गई थी. बंबई से दुबई जाने वाला एअर इंडिया का यह जंबो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेट (बोइंग 747) विमान रात को लगभग 8 बजे सांताक्रूज हवाई अड्डे से रवाना हुआ था. नए वर्ष के उल्लास की झलक विमान में बैठे हर यात्री के चेहरे पर झलक रही थी. लेकिन कौन जानता था कि यह यात्रा उन की अंतिम यात्रा होगी. उड़ान के लगभग डेढ़ मिनट बाद ही 'सम्राट अशोक' नामक वह आलीशान विमान बांद्रा के पास समुद्र में गिर गया. तीव्र गति और भार के कारण वायुयान समुद्र की तलहटी में लगभग पूरी तरह से धंस गया था और उस के मलबे का पता दुर्घटना के लगभग एक हफ्ते बाद ही चल पाया. 4 अगस्त, 1979 को पुणे से बंबई जाने वाले इंडियन एअर लाइंस के एवेरा विमान की दुर्घटना और 23 जून, 1980 को सफदरजंग एअरपोर्ट पर पिट्स एस-2ए की दुर्घटना (जिस में श्री संजय गांधी की मृत्यु हो गई) की दुखद स्मृतियां भी लोगों के दिलों में ताजी हैं.

वैसे बहुत कम लोगों को यह बात मालूम है कि आधुनिक परिवहन विमान सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत सक्षम और शक्तिशाली वाहन है. बहुत से लोग यह भी नहीं जानते कि दुर्घटनाओं का नंबर मोटरगाड़ियों तथा रेलगाड़ियों की दुर्घटनाओं के बाद ही आता है.

इस युग के आधुनिकतम विमान जैसे बोइंग 747 या जंबो जेट, डी. सी. 10, लाकहीड ट्राई स्टार, एयर बस इत्यादि तरहतरह के शक्तिशाली तथा स्वचालित उपकरणों से सुसज्जित होते हैं जिन से विमान यात्रा अत्यंत सुरक्षित हो जाती है. इस संबंध में उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित साधनों का उल्लेख किया

कृषि उपयोगी एक दुर्घटनाग्रस्त विमान.

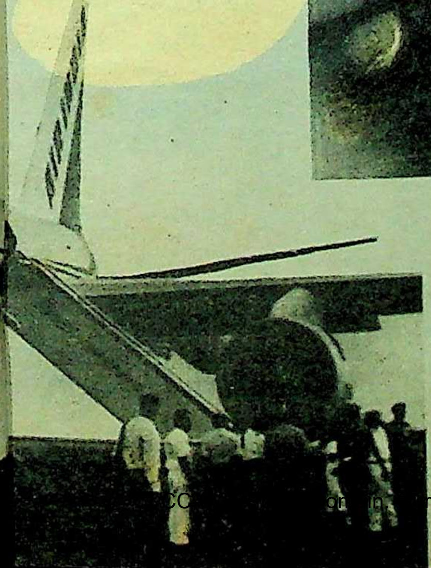

जा सकता है :

इनशियल नेवीगेशन सिस्टम : इस से वायुयान की स्थिति, वेगवृद्धि, गति, दिशा इत्यादि बिना किसी बाहरी साधन के अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक और सही तरीके से जानी जा सकती है.

इंस्ट्रूमेंटस लैंडिंग सिस्टम : इस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और दुर्घटनाग्रस्त विमान.

सहायता से विमान खराब मौसम में भी रेडिओ बीम के सहारे हवाई पट्टी पर सुरक्षित उतर सकता है.

डिस्टेंस मेजरिंग इक्विपमेंट : इस से विमान की दूरी मालूम की जाती है.

आटो पायलट : इस उपकरण की सहायता से पायलट के हाथ लगाए बगैर भी विमान स्वचालित रूप से नियंत्रित होता रहता है.

फायर वार्निंग सिस्टम : वायुयान के किसी हिस्से में आग लगने पर काकपिट में हार्न, घंटी, लाइट या बजर के रूप में चेतावनी आ जाती है और पायलट अपनी सीट पर बैठे ही बैठे बटन दबा कर विमान में लगी आग को बुझा सकता है.

इंस्ट्रूमेंट्स वार्निंग सिस्टम : विमान के उपकरणों में खराबी आ जाने पर पायलाट को बजर, फ्लैग या लाइट के रूप में चेतावनी मिल जाती है और वह खराब वाले उपकरण को बंद कर सकता है.

विमान के नियंत्रण के उपयोग में आने वाले सभी यंत्र दो या तीन विकल्पों जैसे—इलैक्ट्रिकल, हाइड्रालिक, वायु के दबाव द्वारा या हाथ के प्रयोग से संचालित होते हैं. किसी प्रणाली के काम न करने पर दूसरी प्रणाली का प्रयोग विमान संचालन के लिए किया जा सकता है. उदाहरण के तौर पर बोइंग 707 के ब्रेक हाइड्रालिक प्रणाली द्वारा नियंत्रित होते हैं, लेकिन हाइड्रालिक प्रणाली के फेल हो जाने पर उन्हीं ब्रेकों को वायु के दबाव द्वारा भी नियंत्रित किया जा सकता है.

साधारणतया यात्री विमान दो या अधिक इंजनों से सुसज्जित रहते हैं. अन्य इंजनों के बंद हो जाने पर वायुयान सिर्फ एक ही इंजन के सहारे भी सुरक्षित उतर सकता है.

विमानों में आपातकालिक सुविधाएं

विमानों में आक्सीजन की बोतलें, पानी में तैरने वाली नौकाएं, प्राथमिक उपचार की दवाएं इत्यादि रहती हैं, जो जरूरत पड़ने पर यात्रियों को उपलब्ध हो जाती हैं.

वायुयान का रेडियो द्वारा हवाई अड्डे से हर समय संपर्क बना रहता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो के जरिए ही विमानचालक विमान की स्थिति, ऊंचाई, गंतव्य स्थान पर पहुंचने के समय इत्यादि के बारे में सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं एअर ट्रैफिक कंट्रोल को देता रहता है. इस के उत्तर में भूमि नियंत्रण कक्ष से राडार या अन्य साधनों द्वारा विमान की ऊंचाई, पथ, दिशा आदि को नियंत्रित किया जाता है. राडार पर विमान का बिंब भी दिखता है, जिसे एअर ट्रैफिक कंट्रोलर भूमि नियंत्रण कक्ष में बैठे हुए रेडियो द्वारा निरंतर निर्देश देता रहता है. इस तरह से खराब से खराब मौसम तथा भारी हवाई यातायात के बावजूद वायुयान को सुरक्षित रूप से हवाई अड्डे पर उतरने में सहायता मिलती है.

इस के अलावा उड़ान कर्मचारियों—जैसे पायलट, फ्लाइट इंजीनियर, नेवीगेटोर, विमान परिचारिका इत्यादि को विमान से संबंधित विभिन्न विषयों की

विमान के मलबे में पाए गए उपकरणों की जांचपरख अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दे सकती है.

चालक कक्ष : वायुयान चालक का रेडियो द्वारा हवाई अड्डे से हर समय संपर्क बना रहता है.

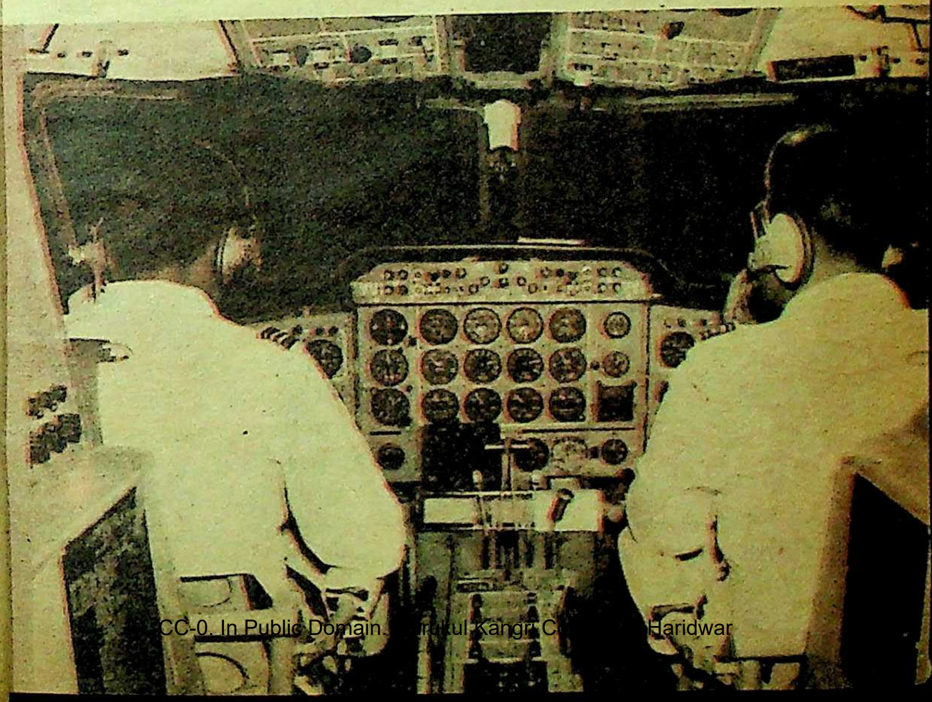

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

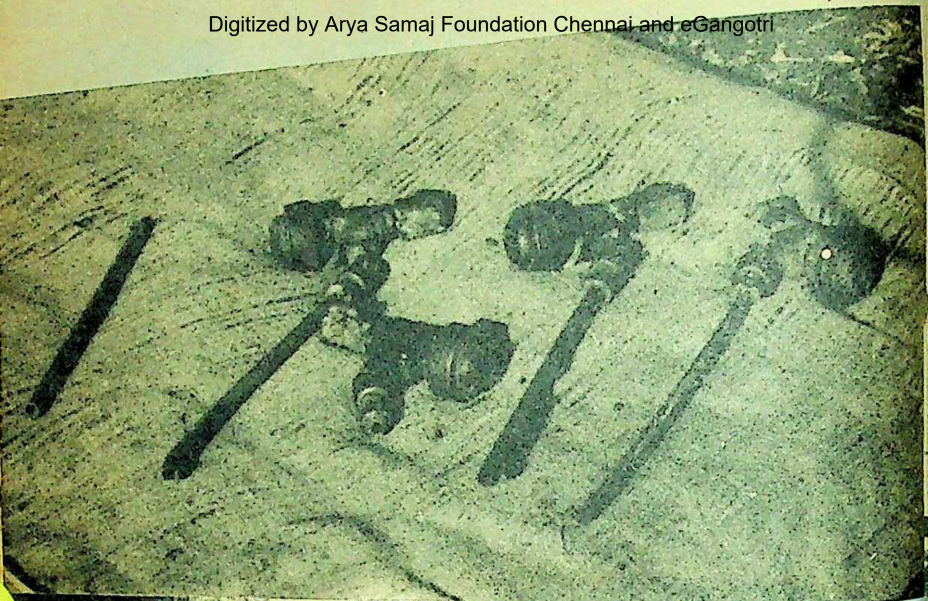

विशिष्ट परीक्षणों के लिए सुरक्षित दुर्घटनाग्रस्त विमान के कुछ उपकरण.

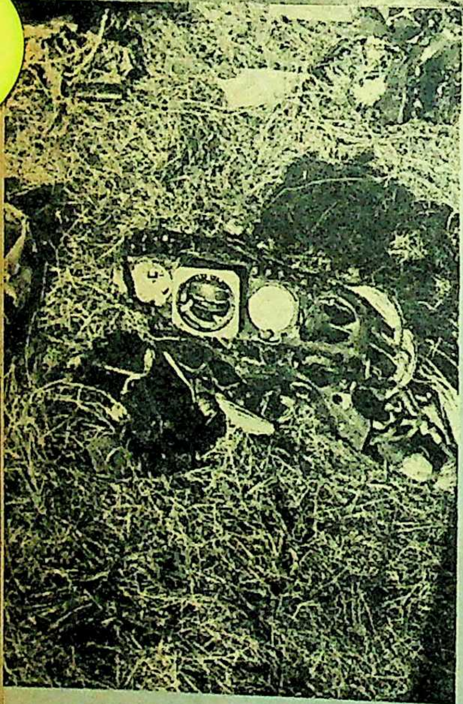

विमान के मलबे में पाए गए उपकरण जो अब केवल भविष्य में दुर्घटनाएं कैसे रोकी जा सकती हैं, इस अनुसंधान में सहायक सिद्ध हो सकते हैं.

तथा आपातस्थिति से संबंधित हर घटना की पूरी तरह जानकारी दी जाती है तथा उन से निबटने के लिए हर संभव तरीके बताए जाते हैं. अत्यंत कठिन परीक्षण के बाद ही उन्हें विमान को उड़ाने की अनुमति दी जाती है.

विमान दुर्घटनाएं क्यों होती हैं?

अब यह प्रश्न उठता है कि इतने उत्तम साधन होने के बावजूद कभीकभी विमान दुर्घटनाएं क्यों हो जाती हैं. इस के कई कारण हो सकते हैं. जैसे—यांत्रिक खराबी, मानवीय गलतियां (पायलट, इंजीनियर, एअर ट्रैफिक कंट्रोलर या अन्य संबंधित अधिकारियों की गलतियां), मौसम की खराबी, किसी विमान में सुरक्षा के साधनों का अभाव, इत्यादि. कभीकभी विध्वंसक तत्वों द्वारा तोड़फोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की काररवाई के फलस्वरूप भी विमान दुर्घटनाएं हो जाती हैं.

लेकिन इन विमान दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए विश्व में अथक प्रयत्न किए जाते रहे हैं, जिन का मुख्य उद्देश्य विमानों को और अधिक सुरक्षित बनाना है. हर विमान बनाने वाली कंपनी के अनुसंधान और विकास विभाग दिनरात नएनए प्रयोग करते रहते हैं, जिन से विमानों को नए साधनों द्वारा अधिक विकसित और सुरक्षित बनाया जा सके.

मौसम में, जंगल, नदी, समुद्र, पहाड़ या किसी भी स्थान पर तीव्रतम साधनों द्वारा उन्हें पहुंचना होता है. अपनी सहायता के लिए उन के पास नापने का फीता, कैमरा, बरसाती जूते, टार्च, रस्सी, आदि विभिन्न साधन मौजूद रहते हैं.

दुर्घटना के स्थान पर पहुंच कर इन का पहला काम तो पुलिस, फायर ब्रिगेड आदि की सहायता से घायलों की प्राथमिक सहायता करना तथा विमान को और अधिक नुकसान से बचाना होता है.

मलबे में बिखरे हुए ध्वस्त विमान के कुछ भाग.

इसी सिलसिले में विमानों से संबंधित पिछली घटनाओं और दुर्घटनाओं की जांच की जाती है, जिस से फिर उन्हीं कारणों से दोबारा दुर्घटना होने की संभावना को रोका जा सके. दुर्घटनाओं की जांच का कार्य इनवेस्टीगेटर के जिम्मे होता है. किसी भी समय, किसी भी

इस के बाद दुर्घटना की जांच का असली काम प्रारंभ होता है. पहले क्षेत्र का सामान्य निरीक्षण किया जाता है. इस के बाद विमान के हिस्सों के विभिन्न कोणों से फोटो लिए जाते हैं. इस के बाद विमान के उपकरणों, स्विचों, रेडियो फ्रीक्वेंसी, कंट्रोल, सरफेस आदि की रीडिंग होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

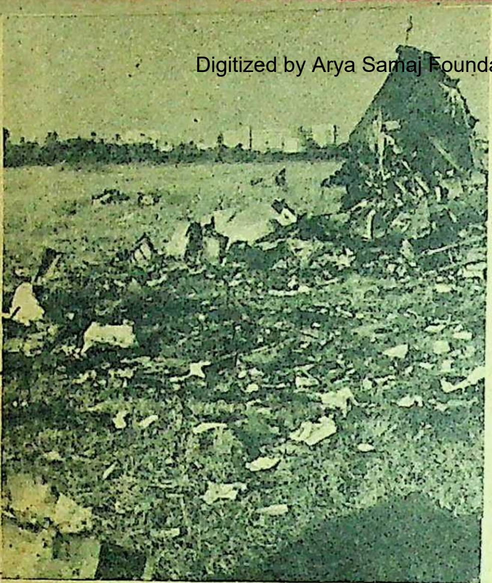

मलबे में बिखरे हुए ध्वस्त विमान के कुछ और हिस्से व पुरजे.

इस के अलावा आग या विस्फोट के चिह्न, वायुयान के टूटे हिस्सों में कुछ असामान्यता के निशान, भूमि पर या आसपास के वृक्षों और पौधों पर विमान के टकराने से उत्पन्न निशान आदि भी देखे जाते हैं. वायुयान के अन्य महत्वपूर्ण भागों—जैसे इंजन, प्रोपेलर, काकपिट आदि की भी स्थिति का निरीक्षण किया जाता है. यदि आवश्यक समझा जाता है तो उन में से कुछ उपकरणों आदि को मलबे से अलग कर के अधिक जांच के लिए आगे भेजा जाता है. विमान के दस्तावेजों जैसे यात्रा लाग बुक, फ्लाइट रिपोर्ट, माल लदान के कागज आदि का भी अध्ययन किया जाता है.

दुर्घटना की जांच के दौरान सब से अधिक सहायता ब्लैक बाक्सों से मिलती है. ये ब्लैक बाक्स दो विशेष प्रकार के रिकार्डर होते हैं, जो फ्लाइट डेरा रिकार्डर (एफ.डी.आर.) और काकपिट वायस रिकार्डर (सी.वी.आर.) कहलाते हैं. सी. वी. आर. काकपिट में विमान के कप्तान, उपकप्तान या अन्य कर्मचारियों द्वारा की गई बातचीत तथा रेडियो सूचना आदि को रिकार्ड करता रहता है. वास्तव में यह विशेष प्रकार का चार चैनलों वाला टेपरिकार्डर होता है. एफ. डी. आर. विमान की उड़ान से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां जैसे—विमान की गति, ऊंचाई, दिशा आदि रिकार्ड करता है.

सी. वी. आर. तथा एफ. डी. आर. अत्यंत मजबूत किस्म के अग्नि निरोधक तथा जल निरोधक बक्सों में बंद रहते हैं जो विमान दुर्घटना के भयंकर आघात तथा कठोर ताप को सह सकने में सक्षम होते हैं. ब्लैक बाक्सों की सहायता से विमान संबंधी, दुर्घटना से पहले की बहुत सारी जानकारियां मिल जाती हैं.

जांच में सहयोगी

जांच के दौरान प्रत्यक्षदर्शियों और साथियों की गवाहियां भी बहुत महत्त्व रखती हैं. इन में मुख्यतः इंजीनियर, ट्रैफिक दल के सदस्य, फ्लाइट डिस्पैचर, पुलिस और फायर ब्रिगेड के सदस्य, एअर ट्रैफिक कंट्रोलर, संचार तथा मौसम विभाग के सदस्य तथा आम जनता के लोग जिन्होंने अपनी आंखों से दुर्घटना को देखा हो, होते हैं. इन के द्वारा ही दुर्घटना से पहले ही सारी कड़ियों का पता चलता है. अन्य बहुमूल्य प्रमाणों में एअर ट्रैफिक कंट्रोल टेप, लाग बुक, मौसम विभाग की रिपोर्ट, विमान के इंजीनियरिंग संबंधी कागजपत्र इत्यादि होते हैं.

हमारे देश में विमान दुर्घटनाओं की जांच का कार्य भारत सरकार के नागरिक विमानन विभाग के जिम्मे है. इस के लिए विमान सुरक्षा अधिकारियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है और वे विमान दुर्घटनाओं की जांच में मुख्य भूमिका निभाते हैं.

जांच के सिलसिले में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर विभिन्न तथ्यों का क्रमपूर्वक विश्लेषण किया जाता है. यह काम ऐसा है जिस में अत्यधिक दक्षता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान परिचारिकाएं केवल यात्रियों को सुविधाएं जुटाने का ही काम नहीं करतीं, उन्हें विमान से संबंधित विभिन्न विषयों की तथा आपात स्थिति से संबंधित हर घटना की जानकारी रहती है और उस से निबटने के तरीके भी मालूम रहते हैं.

और निपुणता की आवश्यकता होती है. इस के बाद जांच की रिपोर्ट सरकार को सौंप दी जाती है. रिपोर्ट में दुर्घटना से संबंधित जानकारी, उस का विश्लेषण, दुर्घटना का कारण, भविष्य में निवारण के उपाय इत्यादि होते हैं. सरकार उन रिपोर्टों का अध्ययन करती है और यदि उचित समझती है तो उन के आधार पर कुछ नियम भी बनाती है या आदेश जारी करती है ताकि उन का पालन कर के भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके.

इस के अलावा जांच के दौरान विमान परिचालन, एअर ट्रैफिक कंट्रोल, विमान संरचना इत्यादि के विभिन्न पहलुओं का गहराई से अध्ययन किया जाता है और इस बीच अगर कहीं कोई कमी पाई गई हो तो उस के सुधार के लिए भी आवश्यक कदम उठाए जाते हैं.

पिछले कई वर्षों में विमान दुर्घटनाओं की जांच के दौरान कई ऐसी बातें पाई गई हैं, जिन में सुधार के बाद विमान सुरक्षा में वृद्धि हुई. पहला उदाहरण कामेट जहाज का है. यह विमान पहला कमर्शियल जेट था जो कि सन 1950 के आरंभ में विश्व की विभिन्न हवाई कंपनियों द्वारा व्यावसायिक उड़ान के लिए प्रयोग में लाया गया था. लेकिन इस से संबंधित कई दुर्घटनाएं हो चुकी थीं. जांच के बाद यह पता लगा कि इस विमान की बनावट में कोई कमी थी, जिस के कारण यह एक विशेष ऊंचाई और गति पर पहुंच कर दुर्घटनाग्रस्त हो जाता था. इसलिए तुरंत विमान के ढांचे को और अधिक सुदृढ़ बनाया गया. उस के बाद कोई और कामेट विमान अपनी बनावट के कारण दुर्घटनाग्रस्त नहीं हुआ.

दूसरा उदाहरण डी. सी. 10 विमान का दिया जा सकता है. तुर्की की एअर लाइन का एक डी. सी. 10 विमान पेरिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

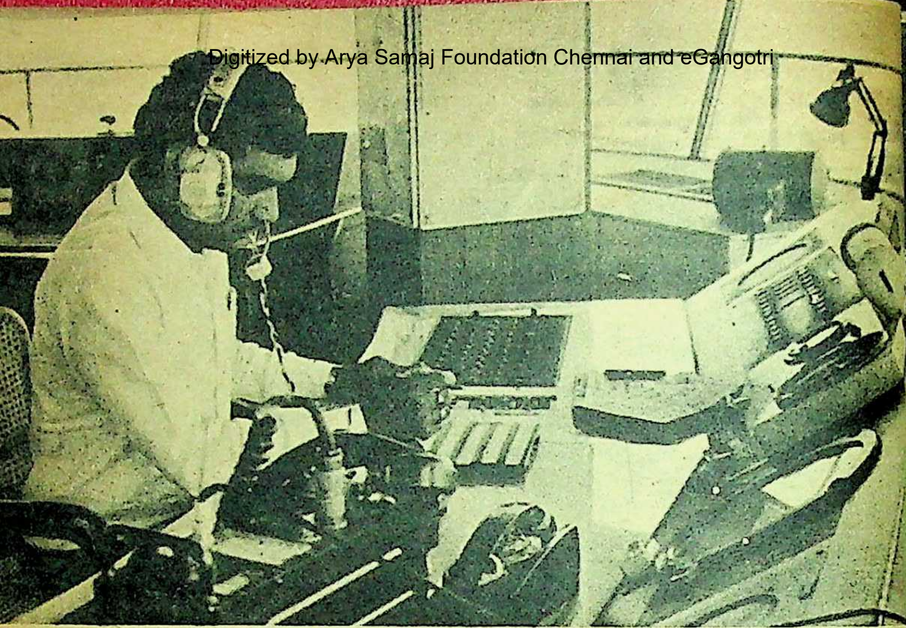

एअर ट्रैफिक कंट्रोल का संपर्क वायुयान चालक से हमेशा बना रहता है. उस की सूचनाओं के आधार पर ही भूमि नियंत्रण कक्ष से राडार या अन्य साधनों द्वारा विमान की ऊंचाई, पथ, दिशा आदि को नियंत्रित किया जाता है.

धुएं से बचाव करने वाला मखौटा.

के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया था. जांच से मालूम हुआ कि इन वायुयानों का दरवाजा कमजोर था और वह उड़ान के दौरान खुल जाता था. इस कारण विमान का अंदरूनी दबाव कम हो जाता था और वह दुर्घटनाग्रस्त हो जाता था. फलस्वरूप डी. सी. 10 विमानों के माल लादने के दरवाजे में परिवर्तन कर के उसे और अधिक मजबूत बनाया गया और फिर उस तरह की दुर्घटनाएं दोबारा नहीं हुईं.

जाहिर है कि यदि इन दुर्घटनाओं की जांच न की जाती तो संभवतः कुछ और दुर्घटनाएं हो गई होतीं. इस से पता चलता है कि दुर्घटनाओं की जांच का कितना महत्त्व है. लेकिन अभी इन पद्धतियों में और भी सुधार की आवश्यकता है. निरंतर नई शोध और अनुसंधान के सहारे ही विमान दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकती है. और तभी हम पूर्णतया सुरक्षित विमान यात्रा की कल्पना कर सकते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत की बात सुन कर खजांची बोला, "मेरा हिसाब सही है. मैं ने तुम्हें सौ रुपए फालतू नहीं दिए हैं.

के दो बजे था. सभी उम्मीदवारों को एक बजे तक बंगलौर रेलवे स्टेशन के बाहर मोनका होटल में पहुंच जाना था. जो व्यक्ति समय से पहले या पूर्वसंध्या को पहुंचे, उन के ठहरनेखाने की व्यवस्था उसी होटल में थी. आनेजाने का द्वितीय श्रेणी का मार्ग व्यय भी कंपनी की ओर से ही दिया जाना था.

कंपनी का नाम इसलिए गुप्त रखा गया था कि उम्मीदवार सिफारिश के चक्कर में न पड़ें. इधरउधर से अधिकारियों के नाम उन के परिचितों के या संबंधियों के पत्र न लाएं. सरकारी तंत्र या नेता लोगों से दबाव न डलवाएं. प्रबंधकों का अनुभव था कि इंटरव्यू से पहले दोतीन दिन वे कुछ भी काम नहीं कर पाते थे. हर समय फोन खटकता रहता था तथा कोई न कोई मिलने को बैठा रहता था. घर पर भी चैन नहीं मिलता था. वहां भी तांता लगा रहता था. बीवीबच्चों के माध्यम से भी सिफारिशें आती थीं. अनेक संबंधी घर आ कर डेरा डाल देते थे. एकएक आदमी की कईकई सिफारिशें आती थीं.

14 सितंबर को एक बजे तक सात उम्मीदवार मोनका होटल पहुंचे. व्यवस्था से सब बहुत प्रसन्न थे. तीन 13 सितंबर की रात को आ गए थे, दो सुबह पहुंचे और ट्रेन लेट होने के कारण शेष दो ग्यारह बजे पहुंचे. एक बजे तक सब

इंटरव्यू देने आए सभी उम्मीदवार समझ रहे थे कि उन का इंटरव्यू अच्छा रहा. पर जब प्रशांत को नौकरी के लिए चुना गया तो बाकी उम्मीदवारों की समझ में यह न आया कि प्रशांत को ही क्यों चुना गया और न ही प्रशांत समझ सका कि ऐसा कैसे हो गया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खापी कर तैयार हो गए. बाहर गाड़ी खड़ी थी. गाड़ी नगर के बाहर दौड़ी जा रही थी. किसी उम्मीदवार को पता नहीं था कि उन्हें कहां ले जाया जा रहा है. जब गाड़ी एक फैक्टरी के बड़े फाटक में घुसी तब कहीं उम्मीदवारों को पता चला कि वे नट, बोल्ट तथा छोटे पुर्जे बनाने के लिए विख्यात नटराज कंपनी में इंटरव्यू देने आए हैं. आवभगत से उन्हें यह तो आभास हो गया था कि कंपनी कोई बड़ी अवश्य है, पर उस का नाम नहीं पता चल पाया था. पिछली रात आ गए उम्मीदवारों ने होटल के प्रबंधक से काफी पूछताछ की थी पर उस ने नकारात्मक उत्तर दे कर अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर दी थी.

दो बजे इंटरव्यू प्रारंभ हुआ. चयनकर्ता समिति में पांच व्यक्ति थे. प्रत्येक उम्मीदवार से 15-15 मिनट सवालजवाब हुए. उन की अर्जी में लिखे तथ्यों के संबंध में ठोंकबजा कर जानकारी ली गई. यदि किसी ने खेलकूद में अपनी रुचि का उल्लेख किया था तो खेल विशेष में उस की पूरी परीक्षा ली गई. यदि विश्वविद्यालय स्तर पर स्वयं को क्रिकेट का खिलाड़ी बताने वाला व्यक्ति 'गुगली गेंद' के संबंध में बता नहीं सकता तो स्पष्ट है कि उस ने अर्जी में झूठा दावा किया है.

विषय के संबंध में अनेक सवाल किए गए. हिसाबकिताब, बहीखाता, यहां तक कि साधारण जोड़ करने में कोई कितना समय लेता है, यह भी नोट किया गया. हिंदी व अंगरेजी में पत्र लिखवा कर देखे गए. हिज्जों की गलतियां नोट की गईं.

वेशभूषा आदि पर ध्यान दिया गया. बहुत मूल्यवान कपड़े पहनने वाला व्यक्ति कैसे क्लर्की के वेतन में गुजारा कर लेगा? पूछा गया, "यदि आप का चयन नहीं हुआ तो आप को कैसा लगेगा?"

एक ने कहा, "कोई बात नहीं. इस बहाने बंगलौर की सैर ही सही."

दूसरे ने कहा, "बंबई घूमने की बहुत दिनों से तमन्ना थी. अब आराम से घूमता जाऊंगा."

किसी ने कहा, "मैसूर में मामा रहते हैं. कभी आना नहीं हुआ था. आप ने यह अवसर प्रदान कर दिया."

प्रशांत ने ठंडी सांस छोड़ते हुए कहा था, "नौकरी तो देरसवेर से कहीं न कहीं, किसी न किसी छोटी बड़ी कंपनी में मिल ही जाएगी, पर इतनी प्रतिष्ठित कंपनी में सेवा न कर पाने का सदा मलाल रहेगा."

प्रत्येक उम्मीदवार से ईमानदारी का प्रमाण देने को कहा गया. डायरेक्टर उत्तमकुमार ने बड़ी शालीनता से कहा, "इस पद पर नियुक्त व्यक्ति का नकदी से संबंध रहेगा. थोड़ेबहुत हेरफेर का तो पता ही चलना मुशकिल है. इसी लिए हम ने विज्ञापन में ईमानदार शब्द का उल्लेख किया था."

मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) से आया एक उम्मीदवार बोला, "आप चाहें तो 10-20 हजार रुपया जमानत का जमा कराया जा सकता है."

चयनकर्ता समिति के एक सदस्य ने मन ही मन कहा, 'तब फिर आप 20 हजार की पूंजी से कोई धंधा क्यों नहीं प्रारंभ कर देते?'

रीवां, (मध्य प्रदेश) से आया एक उम्मीदवार बोला, "हमारे तो पूर्वज सदा से नौकरी करते आए हैं. कायस्थों से बढ़िया स्वामिभक्त कर्मचारी कोई होता ही नहीं."

चयन समिति के कई सदस्य अनुमोदन की मुद्रा में सिर हिलाते हुए मुसकरा पड़े.

केरल के जैकब ने कहा, "दो साल पहले मैं ऊटी घूमने गया था. वहां माल [illegible] सौ के नोटों से भरा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेडीज पर्स पड़ा मिला. मैं ने उसे तुरंत ले जा कर पुलिस स्टेशन में जमा करा दिया. बाद में पता चला कि वह एक स्विस टूरिस्ट महिला का था."

चयन समिति के एक सदस्य ने गंभीर मुद्रा में पूछा, "आप ने गिने तो होंगे कि उस में कितने रुपए थे?"

जैकब इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था. सचाई तत्काल मुंह से निकल पड़ी, "श्रीमान, वास्तव में जब मैं सड़क के एक ओर खड़े हो कर रुपए गिन रहा था तो एक पुलिस वाले ने आ कर टोक दिया कि 'आप के हाथ में यह लेडीज पर्स कैसे है?' इसलिए मैं पूरे गिन नहीं पाया."

पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु और उड़ीसा से आए उम्मीदवारों ने भी ऐसे

प्रशांत बोला, "चरित्र तो व्यवहार से पता चलता है, झूठे प्रमाणपत्र से नहीं."

डायरेक्टर उत्तमकुमार बोला, "तुम कहना क्या चाहते हो?"

प्रशांत ने कहा, "श्रीमान, मैं एक छोटे कसबे में रहता हूं. वह तहसील हैडक्वार्टर भी नहीं है. मजिस्ट्रेट से प्रमाणपत्र लेने तहसील जाना पड़ा. बारह मील आनाजाना, तीन दिन तक यही क्रम चला. कहीं कोई सुनता ही नहीं था. चपरासी पांच रुपए का इशारा करता था. चौथे दिन मैं ने पेशकार से शिकायत की तो वह बोला, 'तीन दिन से आनेजाने में किराया और समय खराब कर रहे हो. बड़े मूर्ख हो. पांच रुपए दे कर हस्ताक्षर क्यों नहीं करा लेते?' मैं ने बहुत नैतिकता

सभी उम्मीदवारों ने अपनेअपने चरित्र प्रमाणपत्र और अपने ईमानदार होने का प्रमाणपत्र दिखाया था. मगर जब प्रशांत से ईमानदारी का प्रमाणपत्र दिखाने को कहा गया तो वह बड़ी देर तक चुप रहने के बाद बोला, "श्रीमान, ईमानदारी का तो नहीं पर बेईमानी का प्रमाणपत्र मेरे पास अवश्य है." उस की बात सुन कर सारे सदस्य सतर्क हो कर बैठ गए...

ही मनगढ़ंत किस्से सुनाए. प्रशांत के पास अपनी ईमानदारी का ढोल पीटने को कुछ नहीं था. उस ने मस्तिष्क पर जोर डाला, पर कुछ ध्यान ही नहीं आया. कुछ देर बाद वह बोला, "श्रीमान, ईमानदारी का तो नहीं पर बेईमानी का प्रमाणपत्र मेरे पास अवश्य है."

सारे सदस्य सतर्क हो कर बैठ गए. डायरेक्टर उत्तमकुमार ने चौंक कर पूछा, "बेईमानी का!"

प्रशांत बोला, "जी हां, आप ने जो अर्जी के साथ सच्चरित्रता का प्रमाणपत्र मांगा था वह मेरा बेईमानी का प्रमाणपत्र है."

एक सदस्य बोला, "तो चरित्रवान नहीं हो?"

बघारी पर दाल नहीं गली. उस ने साफ कह दिया कि मजिस्ट्रेट के पास बेकार के इन कामों के लिए समय नहीं है. झक मार कर मुझे चपरासी को पांच रुपए देने पड़े. पांच मिनट में उस ने प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करा के मुहर लगवा कर मुझे दे दिया."

डायरेक्टर उत्तमकुमार बोला, "तो तुम्हारा प्रमाणपत्र झूठा है?"

प्रशांत बोला, "झूठा तो नहीं है पर वह मैं ने पांच रुपए रिश्वत दे कर बनवाया है."

कोई भी उम्मीदवार जैसे ही इंटरव्यू दे कर आता था, एक क्लर्क उसे यात्रा भत्ते का बिल बनवाने एक अलग कमरे में ले जाता था. वह उसे यात्रा भत्ते के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति
शंबूक वध
अतीत का मोह
पुरोहितवाद
गौपूजा
हमारी धार्मिक सहिष्णुता
कृष्णनीति : हमारा नैतिक पतन
ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
राम का अंतर्द्वंद्व
राम का अंतर्द्वंद्व : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
भारत में संस्कृति का ब्राह्मण नियंत्रित विस्तार
हिंदू धर्म
संस्कृत
भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
कर्ण
भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
तुलसी और वेद
रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
भ्रष्टाचार
रामचरितमानस में नारी
सत्यनारायण व्रत कथा
क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
गांधीजी का बलिदान
यज्ञोपवीत
जंत्र तंत्र मंत्र
कर्मयोग
गरुड़ पुराण
ईश्वर
आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म
सरिता और हिंदू समाज.

मूल्य- 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.

बारे में कंपनी के नियम बताता था. पहले वह उम्मीदवार से पूछ लेता था कि यात्रा में उस का कुल कितना खर्चा हुआ है. फिर कुछ जोड़तोड़ की बातें बता कर स्वयं हिसाब कर के बता देता था कि वह चाहे तो इतने का बिल बना कर दे सकता है.

अधिकांश उम्मीदवारों ने वास्तविक व्यय की गई राशि से अधिक के बिल बना दिए. उन सब का कच्चा चिट्ठा उस क्लर्क के पास था. केवल दो उम्मीदवारों कमल और प्रशांत ने बिल में हेरफेर नहीं किया. कमल ने तो कहा भी, "अरे बाबा, आज के जमाने में कौन सी कंपनी किराया देती है? अर्जी के साथ दसपांच रुपए फीस मांगती है और फिर पहले से ही तयशुदा फर्जी व्यक्ति को भरती कर लेती है."

प्रशांत तो एक मित्र से दो सौ रुपए उधार ले कर आया था. कंपनी से किराया मिलने की उम्मीद न होती तो वह इंटरव्यू में आने का खर्चा उठा न पाने के कारण आता ही नहीं.

पौने चार बजे इंटरव्यू समाप्त हुए. साढ़े चार बजे तक चयन समिति के सदस्यों को निर्णय ले लेना था. उस के बाद हाल में चयनकर्ता समिति के सदस्यों और उम्मीदवारों के लिए चाय का आयोजन था. वहीं चयन की घोषणा होनी थी.

पौने चार से चार बजे के मध्य सभी उम्मीदवारों को 'कैश काउंटर' से अपने यात्रा भत्ते का नकद भुगतान ले लेना था. रुपए हाथ में आते ही उम्मीदवार मुसकरा उठता. मन में सोचता, 'चुनाव हो न हो. किराया तो मिला.'

सब उम्मीदवार नकदी ले कर हाल की ओर चले, पर प्रशांत बारबार नोटों को गिने जा रहा था. कमल ने आंख दबा कर उसे कुछ इशारा भी किया, पर वह गिनता रहा. थोड़ी देर में उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने काउंटर क्लर्क से कहा, "महाशय, आप ने मुझे सौ रुपए अधिक दे दिए हैं." वह सौ का नोट भीतर बढ़ाने लगा.

गंजा खजांची तिजोरी का हैंडिल घुमाता हुआ बोला, "कम तो नहीं दिए, अधिक ही तो दिए हैं. फिर क्या परेशानी है? चले आते हैं ऐरेगैरे नत्थूखैरे. गिनती तक नहीं आती, इतनी बड़ी कंपनी की नौकरी करेंगे..."

वह कुछ और बोलता पर प्रशांत ने टोकते हुए कहा, "सुनिए तो, वास्तव में आप से कहीं भूल हुई है."

खजांची अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर कर, अपने लंबे अनुभव की घोषणा करता हुआ बोला, "मेरा लेजर ठीक है, पाई-पाई हिसाब मिल गया है."

प्रशांत कुछ कहता उस से पहले ही क्लर्क काउंटर के पिछवाड़े से भीतर कहीं लोप हो गया.

प्रशांत को फिर कुछ नहीं सूझा. वह सीधा इंटरव्यू वाले कमरे की ओर दौड़ा. चयन समिति के सदस्य अपनीअपनी टिप्पणियां कर रहे थे. उस ने भीतर जाने की आज्ञा मांगी और हांफते हुए सौ का नोट मेज के बीच में पटक दिया.

फिर उस ने पूरी बात बता दी और लौट गया.

डायरेक्टर उत्तमकुमार ने उस से केवल इतना पूछा था, "तुम्हें पूरा विश्वास है कि यह नोट तुम्हारा नहीं है?" इस का उत्तर उस ने 'हां,' में दिया था.

चाय पर डायरेक्टर उत्तमकुमार को यह घोषणा करने में तनिक भी संकोच नहीं हुआ कि उन्होंने सही व्यक्ति का चयन कर लिया है. स्टेशन से कैश काउंटर तक प्रत्येक व्यक्ति को परखा गया था.

अपने नाम की घोषणा सुन कर प्रशांत के हाथ से चाय का प्याला छूटते-छूटते बचा. ●

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 2

कितना महंगा धर्म : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
कितना महंगा धर्म (निर्णय)
राम कथा व सीता चरित्र
सरिता और हिंदू समाज
तुलसी साहित्य : अनुवादों की सफल नुमाइश के सिवा क्या है ?
तुलसी साहित्य : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?
रावण
रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग
रामचरितमानस के कुछ असंगत स्थल
श्रीकृष्ण
गीता
कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्म प्रचार
क्या कौमार्यरक्षा दकियानूसी है?
कृष्ण और राधा
श्रीमद्भागवत
भागवत और भूगोल
समाजवाद बनाम स्वतंत्रता
कामायनी
हिंदू विवाह पद्धति
पुत्रेष्टि यज्ञ
तुलसीदास और हिंदू समाज
हिंदी साहित्य का गलत इतिहास
धनुषयज्ञ
कृष्ण और गोपियां
हमारे देव मंदिर
क्या समाजवाद अनिवार्य है?
विवाह पूर्व यौन संबंध
श्रीकृष्ण : अपने जीवन की संध्या में
सताई गई नारी
कृष्ण और कुब्जा

मूल्य- 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट, रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं-
विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधो की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमान-जनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

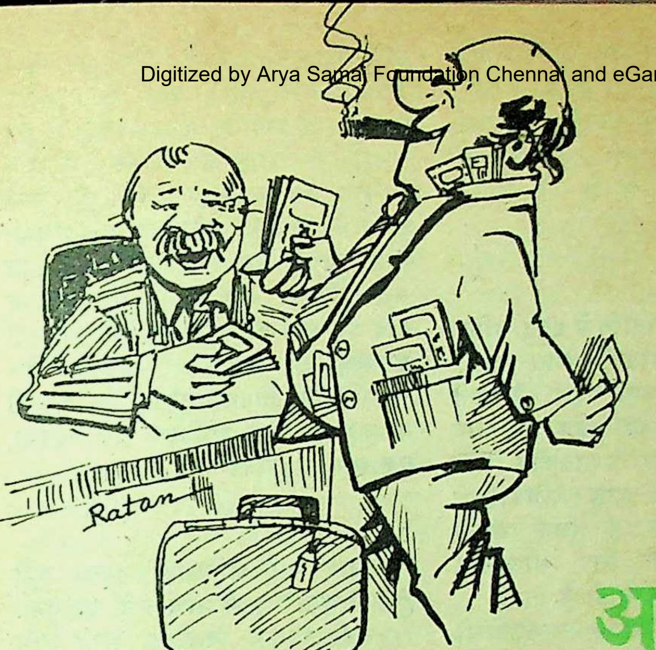

नैतिक पतन का मूल कारण: अधिक कर

देश में फैले भ्रष्टाचार, काले धन, अभाव और कीमतों में वृद्धि इत्यादि बुराइयों का मूल कारण क्या सोशलिज्म या समाजवाद के नाम पर थोपे गए ऊंचे कर, परमिट, कंट्रोल और कोटा प्रणाली ही नहीं हैं?

लेख • नौटम लाल तेजपाल

आज हमारा राष्ट्र सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, जमाखोरी और करों की चोरी से पीड़ित है. इस सारे नैतिक पतन का मूल कारण आवश्यकता से अधिक कर लगाया जाना है. एक ऐसे अधिकारी के मामले पर विचार करना चाहिए जिसे काफी अच्छा वेतन मिलता हो अर्थात 5,000 रुपए प्रति मास. उसे प्रति मास 1,595 रुपए आय कर के रूप में देने पड़ते हैं, कम से कम 800 रुपए मकान के किराए के रूप में अदा करने पड़ते हैं. इस प्रकार उस की आय में से 2,395 रुपए कम हो जाते हैं और उस के पास 2,605 रुपए ही शेष रह जाते हैं. 1,600 रुपये से अधिक वेतन होने पर भी यदि उसे भविष्य निधि (प्राविडेंट फंड) की सुविधा प्राप्त हो तो उस की 2,605 रुपए की इस रकम में से 500 रुपए और कम हो जाएंगे.

वह अपने और अपने परिवार के सदस्यों के लिए बीमे की किस्त भी अदा करता होगा. इस के अतिरिक्त, वह अपने पुराने घर पर स्थित अपने मातापिता, भाइयों और बहनों का भी भरणपोषण करता होगा और अपने बच्चों को भी अच्छे स्कूलों में पढ़ाता होगा. स्वभावतः वस्तुओं की कीमतें बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण उस के लिए अपना खर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलाना अत्यंत कठिन रहता है परिणामतः वह रिश्वत लेने लगता है. वह सरकार को कंट्रोल लगाने और लाइसेंस, परमिट, कोटा देने की प्रणाली अपनाने तथा व्यापार अपने हाथ में ले लेने इत्यादि का परामर्श देता है.

राजनीतिबाजों की लाचारी

हमारे मंत्री राजनीति में बहुत अधिक उलझे हुए हैं और उन्हें केवल पद पर बने रहने की ही चिंता रहती है. उन्हें गूढ़ आर्थिक बातों का बहुत कम ज्ञान होता है. इस प्रकार प्रशासकीय और आर्थिक मामले पूरी तरह अधिकारियों के हाथों में आ जाते हैं, जिन्हें अपनी जेबें गरम करने के लिए सोशलिस्ट व्यवस्था अधिक पसंद आती है.

कम्यूनिस्ट देशों में यह प्रणाली किसी तरह चल रही है, क्योंकि वहां पर हथियारबंद दस्तों और नजरबंद शिविरों (कंसेनट्रेशन कैंप) का खुल कर प्रयोग किया जाता है. हमारे देश में अधिकारियों तथा मंत्रियों को बहुत आजादी रहती है, वे खूब रिश्वतें लेते हैं क्योंकि हमारे यहां न तो हथियारबंद दस्ते हैं और न नजरबंद शिविर. डाक्टर, वकील तथा अन्य लोग, जो प्रति मास 5,000 रुपए से अधिक कमाते हैं, यदि ईमानदारी के साथ पूरे कर अदा करें तो अपना खर्चा कभी नहीं चला सकते.

किसी व्यापारी या उद्योगपति को, जिस की आय, उसे प्रति वर्ष 20 लाख रुपए होती है, उसे आय कर के रूप में 13,40,160 रुपए अदा करने पड़ते हैं. जो आदमी 20 लाख रुपए कमाता है, उस के पास कम से कम 20 लाख रुपए की संपत्ति भी अवश्य होनी चाहिए, जिस पर उसे 51,190 रुपए संपत्ति कर के रूप में देने पड़ते हैं. इस प्रकार उसे प्रति वर्ष केवल 6,08,650 रुपए की ही आय हो पाती है.

इस के अतिरिक्त, जिस व्यक्ति की आय 20 लाख रुपए वार्षिक होती है, उसे सत्तारूढ़ दल के कोष में अपार राशि दान में देनी पड़ती है. हड़तालों और घेराव इत्यादि की धमकी दे कर कम्यूनिस्ट पार्टियों को भी उस की आय का कुछ भाग प्राप्त हो जाता है. फिर सरकारी कंट्रोलों और लालफीताशाही में से गुजरते हुए उसे पगपग पर बहुत अधिक रिश्वतें देनी पड़ती हैं. इसलिए यदि वह करों की चोरी न करे तो उस का खर्चा नहीं चल सकता. और एक ऐसे देश में गरीब होना, जहां पर बेरोजगारों या वृद्ध लोगों को कोई भत्ता नहीं मिलता, एक अत्यंत भयानक बात है.

करों की चोरी क्यों होती है?

आय कर अधिकारी देवता नहीं होते. वे हमारे भ्रष्ट मंत्रियों के पदचिह्नों पर चलते हैं. कर निर्धारण करने वाले उस के हिसाबकिताब की इस प्रकार जांच करते हैं कि उसे आय कर, बिक्री कर, उत्पादन शुल्क इत्यादि के लगभग आधे की बचत हो जाती है, दूसरे आधे भाग में से सरकार को कर तथा अधिकारियों को रिश्वतें दी जाती हैं. और क्योंकि रिश्वत के रूप में करोड़ों रुपए देने पड़ते हैं, इसलिए अधिकारी भी उतना ही ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं जितना कि हमारे मंत्री. करों की चोरी करने वाले भी खूब विलासिता का जीवन व्यतीत करते हैं. इसलिए इस खेल में भाग लेने वाले सब सुखी रहते हैं.

व्यापारी द्वारा करों की चोरी से बचाया जाने वाला धन, किसी अधिकारी द्वारा रिश्वत के रूप में प्राप्त धन, अथवा किसी राजनीतिक दल द्वारा प्राप्त धन, अथवा किसी राजनीतिक दल द्वारा प्राप्त दान—यह सब काला धन होता है. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से केवल 1977 के चुनावों को छोड़ कर सत्तारूढ़ दल ही चुनाव जीतता रहा है क्योंकि उस में काले धन में से सब से अधिक हिस्सा खींचने की शक्ति होती है. इस हिस्से के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले व्यापारी परमिट, कोटे आदि प्राप्त करता है और अधिकारी दान देने वालों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की ऊंची-ऊंची कीमतें निर्धारित करते हैं. इस प्रकार धनी और अधिक धनी होते जा रहे हैं तथा गरीब और अधिक गरीब, क्योंकि उन्हें अपने रोजमर्रा के काम में आने वाली वस्तुओं के बदले ऊंची कीमतें अदा करनी पड़ती हैं.

कोई भी व्यापारी या उद्योगपति अपने पास काला धन नकदी के रूप में नहीं रखता, क्योंकि वह यह जानता है कि सरकार की अनिष्टकारी आर्थिक नीतियों के कारण रुपए की कीमत नित्य-प्रति कम होती जा रही है. इसलिए जैसे ही उस के हाथों में काला धन आता है, वह उस को विभिन्न प्रकार की नष्ट न होने वाली वस्तुओं में लगाना आरंभ कर देता है. इस से भी वस्तुओं का अभाव होने लगता है और कीमतें अधिक होने लगती हैं.

राजनीतिबाजों का एकमात्र उद्देश्य

हम यह भली प्रकार जानते हैं कि हमारे राजनीतिबाज किसी न किसी प्रकार अपने पद पर बने रहना चाहते हैं.

वे अशिक्षित मतदाताओं से झूठे वादे करते हैं और विपक्ष द्वारा खड़े किए गए उम्मीदवारों को रिश्वत देते हैं.

इसलिए यदि व्यापारी, उद्योगपति और अधिकारी अपना जीवन स्तर ऊंचा बनाए रखने के लिए सब संभव उपायों

हमारे राजनीतिबाजों द्वारा कर चोरों की निंदा करना क्या केवल जनता से वाहवाही लूटने के लिए किया गया नाटक ही नहीं है, क्योंकि इन का अपना अस्तित्व भी व्यापारियों से मिले काले धन पर निर्भर रहता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 3

सिपाही क्यों लड़ता है
प्रेम पत्र न लिखिए
डायरी न लिखिए
इसलाम और स्त्री
योगी अरविंद
गीता में अंतर्विरोध
गायत्री मंत्र
गायत्री मंत्र : आलोचना व आपत्तियों के उत्तर
ट्रेड यूनियन
संसद सदस्य श्री चादर वाला केस :
मुकदमे की काररवाई
सेशन जज का निर्णय
उच्च न्यायालय का निर्णय
सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय
घाटे वाले बालाजी
आखिरत की अटकलें
हिंदी साहित्य की बपौती
भीष्म
मुसलिम विवाह
भगवान श्री रजनीचर
महाभारत की ऐतिहासिकता
महाभारत की ऐतिहासिकता : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
रेंट कंट्रोल एक्ट एक विफल कानून
आप की लड़की प्रेम करती है
यूनियन
सौंदर्य प्रतियोगिता
वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
पूंजीपति
नियोग
सरिता और हिंदू समाज

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट, रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

का आश्रय लेते हैं तो हम उन को दोष नहीं दे सकते.

सब बुराइयों की जड़

इन सब बातों से यह सिद्ध होता है कि भ्रष्टाचार, काले धन, अभाव और कीमतों में वृद्धि इत्यादि बुराइयों का मूल कारण सोशलिज्म या समाजवाद के नाम पर थोपे गए आवश्यकता से अधिक ऊंचे कर, परमिट, कंट्रोल और कोटा प्रणाली आदि हैं.

करों की चोरी और भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि हमारे पास कानून का उल्लंघन करने वालों को पकड़ने के लिए न तो पर्याप्त पुलिस है और न उन्हें बंदी बनाने के लिए पर्याप्त जेलें हैं. और कानून, जिस का ज्यादातर लोग आदर नहीं करते, कानून तोड़ने वालों की संख्या में वृद्धि करने में इतनी अधिक सहायता करते हैं कि कानून बनाने वाले भी लोगों का आदर खो बैठते हैं.

कभीकभी हम भ्रष्ट अधिकारियों को पुलिस की अपराध शाखा द्वारा पकड़ लिए जाने के बारे में भी सुनते हैं. लेकिन ऐसे मामले केवल कुछ सौ या कुछ हजार रुपयों के ही होते हैं. लाखों रुपयों की रिश्वत विदेशी बैंकों में अधिकारियों या मंत्रियों के खातों में आसानी से विदेशी मुद्रा में सीधे चढ़ा ली जाती है. हमारे मंत्री और उच्च अधिकारी अपने धन को केवल एक देश से दूसरे देश में ले जाने और एक नाम से दूसरे नाम चढ़ाने के लिए ही नियमित रूप से यूरोप की यात्रा पर जाते हैं. उन में से अधिकांश के बच्चे अपनी शिक्षा विदेशों में प्राप्त कर रहे हैं जिस के लिए उन्हें काफी अधिक 'फ्री' विदेशी मुद्रा की आवश्यकता पड़ती है.

औसतन हम लोग उतने ही अच्छे या बुरे हैं जितने कि किसी अन्य देश के नागरिक. नैतिक पतन के वास्तविक कारण सामाजिक न्याय के नाम पर अधिक कर, कंट्रोल, कोटा और परमिट प्रणाली हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संदर्भ में एक ऐसे देश का उदाहरण दिया जा सकता है जिस ने कठोर तानाशाही द्वारा और प्रत्येक धनी व्यक्ति की भूमि और चलअचल संपत्ति को जब्त कर के पूर्ण समाजवाद की स्थापना की है.

इस देश के सर्वेसर्वा ने स्विटजरलैंड की सरकार से वहां के बैंकों में अपने देशवासियों के गुप्त खातों के बारे में जानकरी देने के लिए कहा था. स्विस बैंकर्स एसोसिएशन ने इस सर्वेसर्वा को लिखा कि वह उन के देशवासियों के नाम प्रकट करने के लिए तैयार है और उन की सूची उस देश के एक दैनिक समाचारपत्र में प्रकाशित कर दी जाएगी. सर्वेसर्वा ने अपने सैनिक सहयोगियों की एक आवश्यक बैठक बुलाई. कुछ ही मिनटों में स्विस बैंकरों से यह प्रार्थना करने का निश्चय कर लिया गया कि वे गुप्त खातों को हमेशा के लिए गुप्त ही रखें. उक्त सर्वेसर्वा को अपना निर्णय बदलने के लिए बैंकरों से खुशामद तक करनी पड़ी.

इस का कारण कहीं दूर खोजने की आवश्यकता नहीं. सर्वेसर्वा के रिश्तेदारों सहित उस देश के प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति का इन बैंकों में गुप्त खाता था. यदि उन के नाम समाचारपत्र में प्रकाशित कर दिए जाते तो उस से सब ओर तहलका मच जाता.

हमारे देश की स्थिति भी अधिक भिन्न नहीं है. यदि काले धन को समाप्त कर दिया जाए तो सत्तारूढ़ दल अपने-आप समाप्त हो जाएगा. सत्तारूढ़ दल का अस्तित्व ही काले धन पर निर्भर है. इसलिए हमारे मंत्रियों द्वारा चोरबाजारी करने वालों की शाब्दिक आलोचना केवल निर्धन और अशिक्षित लोगों के बहकाने के लिए होती है. लाइसेंस, कंट्रोल, परमिट और कोटे पार्टी फंड और रिश्वतों के लिए काले धन का निर्माण करने के लिए जान-बूझ कर लागू किए जाते हैं. ●

विश्व के सब से प्राचीन व हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार प्रकाशित

ऋग्वेद

(ऋग्वेद की संपूर्ण 'शाकल संहिता' का हिंदी भाषांतर)

भाषांतरकार :

डा. गंगासहाय शर्मा एम. ए. (संस्कृत), पीएच. डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए. यह वही वेद है जो आज तक एक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए.

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

मूल्य 65/- डाक व्यय 10/- अतिरिक्त

पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए.

प्राप्य : **दिल्ली बुक कंपनी,** एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कतरनें भेजिए. कतरन के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लखें : सर्वोत्तम पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

सब इंस्पेक्टर बन कर ठगी

सतना में एक दर्जी की दुकान पर रणजीतसिंह नामक व्यक्ति ने उत्तर प्रदेश पुलिस के सब इंस्पेक्टर की वर्दी सीने का ग्रार्डर दिया था. दर्जी को उस पर कुछ शक हुग्रा तो उस ने चुपके से पुलिस को इस की सूचना दी. जैसे ही वह व्यक्ति वर्दी ले कर रवाना हुग्रा, पुलिस ने उसे पकड़ लिया.

बताया जाता है कि रणजीतसिंह पिछले छःसात महीनों से एक गुरुद्वारे में ग्रंथी था. कुछ समय से उस की एक परिवार से घनिष्ठता बढ़ गई थी. उस परिवार की एक युवती के सामने उस ने विवाह का प्रस्ताव रखा. उस परिवार पर रोब डालने के लिए उस के कहा कि वह उत्तर प्रदेश पुलिस में सब इंस्पेक्टर है ग्रौर एक मामले में उसे मुग्रत्तल कर दिया गया था. वह शीघ्र ही बहाल हो कर नौकरी पर जाने वाला है. **—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषिका : एनी गंगराड़े)**

✦

पाठकों की आंखें खराब न करें

भारतीय चिकित्सा ग्रनुसंधान परिषद ने समाचारपत्रों, पाठ्यपुस्तकों तथा ग्रन्य पाठ्य सामग्री के प्रकाशकों से कहा है कि वे छोटा टाइप इस्तेमाल न करें. इस से पाठकों की ग्रांखें जल्दी ही खराब हो जाती हैं. इस बात पर चिंता व्यक्त की गई है कि ग्राजकल छोटे टाइप में पुस्तकें तथा समाचारपत्र व पत्रिकाएं छापने का चलन बढ़ता जा रहा है. **—सांध्य टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : विजयकुमार सैनी)**

✦

✦ ढोंगी ने महिला को लूटा

लखनऊ में एक महिला को रास्ते में एक साधु मिला. उस ने महिला को कुछ पैसे देते हुए कहा कि उन्हें वह उस के लिए 'भगवान के खजाने' से लाया है.

उस ने कुछ झूठे चमत्कार दिखा कर उस महिला को ग्रपने विश्वास में ले लिया। इसी कारण उस महिला ने उस के निर्देश के ग्रनुसार ग्रपनी सोने की चूड़ियां तथा नकदी उस के पास रख दी ग्रौर 'हरिग्रोम हरिग्रोम' का जाप करने लगी. जाप के बाद उस की ग्रांखें खुली की खुली रह गईं, क्योंकि वह साधु रफूचक्कर हो चुका था. **—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषिका : संतोष निगम) (सर्वोत्तम)**

✦

नकलची मजिस्ट्रेट

पिछले दिनों एक मजिस्ट्रेट, जो ग्रलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय में कानून की परीक्षा दे रहा था, नकल करता हुग्रा रंगेहाथ पकड़ा गया. उसे तुरंत परीक्षाभवन से बाहर निकाल दिया गया. **—सिंहभूमि एकता, चाईबासा (प्रेषक : कृष्णकुमार)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठग ने वकील को फंसा दिया

छपरा में एक ठग ने एक सर्राफ की दुकान से 12 हजार रुपए मूल्य के ग्राभूषण ठगे और उसी ठगी में एक वकील को फंसा दिया.

उस ठग ने एक वकील से अपने अदालती विवाह के कागजात तैयार करवाए और फिर दुलहन के लिए ग्राभूषण और कपड़े खरीदने के बहाने वह उस वकील को ले कर ग्राभूषण की दुकान पर पहुंचा. उस ने 12 हजार रुपए मूल्य के ग्राभूषण ले कर वकील से कहा कि वह इन गहनों को अपनी होने वाली पत्नी को दिखा कर तुरंत आ रहा है. तब तक वह उस की रुपयों की पोटली पकड़े हुए यहीं बैठा रहे. इस तरह वकील को रुपयों की थैली थमा कर वह चलता बना.

जब उस के आने में काफी देर हो गई तो वकील एवं दुकानदार को संदेह हुआ. उस वकील ने रुपयों की थैली खोल कर देखी तो उस में बजाए रुपयों के कागज के टुकड़े मिले.

इस पर दुकानदार ने तुरंत इस की सूचना पुलिस को दी. पुलिस ने वहां पहुंच कर उस वकील को हिरासत में ले लिया.—**आज, पटना (प्रेषक : प. चावला)**

✦

लाइनमैन बन कर ठगा

दिल्ली दूरभाष के मुख्यालय ईस्टर्न कोर्ट में एक अज्ञात व्यक्ति ने नया टेलीफोन यंत्र दिलाने का झांसा दे कर सुभाष कपूर नामक व्यक्ति से 700 रुपए ठग लिए. वह ठग सुभाष कपूर की दुकान में लाइनमैन बन कर फोन की जांच करने आया और उसे सलाह देने लगा कि वह हाल में आए नए किस्म का फोन ले ले. तरकीब बताते हुए उस ने कहा, "ईस्टर्न कोर्ट जा कर आप 675 रुपए जमा करा दें. उस की रसीद आप को मिल जाएगी जिसे दिखा कर स्टोर से नया बढ़िया फोन ले लें. मैं उसी विभाग का आदमी होने के कारण आप का काम जल्दी करा दूंगा."

उस की बात का भरोसा कर के वह 700 रुपए ले कर उस के साथ ईस्टर्न कोर्ट आ गया. वहां चौकीदार ने उस व्यक्ति को तो अंदर जाने की इजाजत दे दी मगर सुभाष कपूर को रोक दिया. तब सुभाष कपूर ने उस अज्ञात 'लाइनमैन' को 700 रुपए दे दिए. जल्दी ही वापस आने की कह कर वह अंदर चला गया और चकमा दे कर कहीं गायब हो गया. —**हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : नरेश चंद्रा)**

✦

बिना अंकों की अंकसूची

राजस्थान विश्वविद्यालय की एम. ए. (इतिहास) की अंतिम वर्ष की छात्रा कुमारी उषा शर्मा को जब उस की अंकसूची मिली तो वह और उस के परिवार के लोग हैरान रह गए.

उस अंकसूची में किसी भी प्रश्नपत्र के अंक नहीं चढ़ाए गए थे और न ही कोई श्रेणी उस में लिखी गई थी. इस तरह उस अंकसूची के सभी खाने खाली थे. पर उस पर कुलसचिव वी. डी. कामरा के हस्ताक्षर की मुहर लगी हुई थी. मजे की बात यह है कि जिस कर्मचारी ने यह सूची तैयार की है तथा जिस ने इस की जांच की है, उन के भी दस्तखत उस पर मौजूद हैं.

हस्ताक्षर कर के किसी छात्र को रिक्त अंकसूची भेजने का शायद यह पहला उदाहरण है. ऐसी स्थिति में यह भी संभव है कि जिन छात्रों को ऐसी अंकसूचियां मिली हों, वे अपनी मर्जी से उस में अंक और श्रेणी भर लें.

—**राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : घनश्याम अग्रवाल)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कुछ वर्ष पूर्व की घटना है. भारतीय रेलवे स्टेशनों में मद्रास सेंट्रल ने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है. दक्षिण में बड़ी लाइन का सब से बड़ा स्टेशन मद्रास सेंट्रल अधिकतर समय बहुत ही व्यस्त रहता है. आरक्षण यदि काफी समय पूर्व ही नहीं करा लिया जाता तो ऐसी कठिनाइयां आ सकती हैं जिन्हें दूर करना अकसर असंभव होता है. दिल्ली जाने वाली गाड़ियों के बारे में यह बात विशेष रूप से सही है. अंतिम क्षण परेशानी से बचने के लिए मैं ने दो बार इस बात की जांच कर ली थी कि शयन यान में मेरा आरक्षण हो गया है या नहीं. इस के बावजूद स्वभाव से ही अत्यंत सतर्क रहने के कारण मैं स्टेशन पर गाड़ी के चलने के निर्धारित समय से आधा घंटा पहले ही पहुंच गया था.

मैं ने अपना डब्बा ढूंढ़ा, उस में सामान रखा और उस बुक स्टाल पर गया जो मेरी राय में समूचे देश में सब से अच्छा रेलवे बुक स्टाल है. पढ़ने की काफी सामग्री खरीदने के बाद मैं वापस

प्रलोभन

कहानी • निरंजन

आ गया और आराम करने लगा.

पहले योजना यह थी कि मेरे साथ मेरी बहन भी दिल्ली जाएगी. उस के पति रेलवे में एक बड़े अधिकारी हैं और उन की वजह से ही हमें गाड़ी में बहुत ही आरामदेह जगह मिल गई थी. लेकिन बहन की तबीयत अचानक खराब हो जाने से उस का जाना रद्द हो गया और मुझे अकेले ही आना पड़ा.

मैं अपना सामान खोलने ही वाला था कि दरवाजे पर खटखट की आवाज हुई. मैं ने देखा कि मेरे सामने गैलरी में काफी सामान के साथ ज्ञान और उस की पत्नी अरुणा खड़े हैं. "क्षमा करना, साहब," ज्ञान ने एक सांस में कहा, "मेरी पत्नी को आगरा जाना है. आप के डब्बे में इस अकेली बर्थ के अतिरिक्त पूरी गाड़ी में ऐसी कोई सीट नहीं है जो किसी के लिए आरक्षित हो और वह न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आया हो. अरुणा का भाई थोड़े दिन की छुट्टी ले कर अमरीका से आया है. उस के मांबाप चाहते हैं कि जाने से पहले उस की शादी हो जाए और उस की पत्नी भी जल्दी से जल्दी अमरीका पहुंच जाए. सब कुछ इतनी जल्दी में तय हुआ है कि मेरा जाना संभव नहीं. क्या आप मेरी पत्नी को अपने साथ इस कूपे में ले जा सकेंगे?"

ज्ञान मुसकरा कर आगे बोला, "अगर आप ऐसा कर सकें तो मेरे दिमाग से एक बोझ उतर जाएगा."

ज्ञान अपनी पत्नी को मेरे ही कूपे की खाली बर्थ पर बिठा कर और साथ न चल पाने की अपनी लाचारी जाहिर कर चला गया था. मगर सफर के दौरान अरुणा से ऐसा करने का ज्ञान का घृणित उद्देश्य जानकर मैं आश्चर्यचकित रह गया!

ज्ञान मेरे ही विभाग में एक फुरतीला और योग्य युवा अधिकारी था. अपने साथियों और जानपहचान वालों में वह बहुत लोकप्रिय था और उस के रहनसहन का स्तर भी उस की आय से काफी ऊंचा था. पतिपत्नी दोनों ही अकसर काफी धन खर्च कर दिया करते थे. लोगों का खयाल था कि पतिपत्नी दोनों ही समृद्ध परिवारों के हैं.

पिछले कुछ महीनों से ज्ञान के विरुद्ध ऐसे अनेक गुमनाम पत्र आ चुके थे, जिन में उस के चरित्र पर विभिन्न प्रकार के लांछन लगाए गए थे. हाल ही में नई दिल्ली से केंद्रीय उत्पादन और सीमा शुल्क बोर्ड से भी एक पत्र प्राप्त हुआ था जिस में कलक्टर से इस मामले में आरंभिक गुप्त जांचपड़ताल करने के लिए कहा गया था. आगे काररवाई करने के लिए कलक्टर ने मुझे ही विभिन्न फाइलों और मामलों का अध्ययन करने और उन्हें यह बताने के लिए कहा था कि क्या पूरी जांच करने के लिए पर्याप्त आधार विद्यमान हैं. इस से पूर्व कि मैं यह काम शुरू कर पाता, मुझे एक आवश्यक पारिवारिक काम से मेरे पिता ने दिल्ली बुला लिया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कोई व्यक्ति 'मैं' बन कर कुछ बात कहता है तो उस के कुछ लाभ भी हैं और हानियां भी. पाठक केवल वही जान पाता है जो उस में कहा जाता है. शेष ब्योरे की वह केवल कल्पना ही कर सकता है. इसलिए आगे बढ़ने से पूर्व मुझे पाठकों को यह बता देना चाहिए कि मैं स्यालकोट (अब पाकिस्तान में) का रहने वाला हूं.

जब यूरोप में तथा अन्य मोर्चों पर द्वितीय विश्व युद्ध तेजी के साथ चल रहा था, तब मेरी कालिज की पढ़ाई पूरी होने वाली थी. सिगनल अफसर के रूप में मुझे भारतीय वायु सेना में इमरजेंसी कमीशन प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई. युद्ध के शेष वर्षों में मैं ने बर्मा के मोर्चे पर सुदूर क्षेत्रों में स्थित रेडार पर काम किया. युद्ध में की गई इस सेवा के पुरस्कार स्वरूप जिस में मैं ने प्रशिक्षण संबंधी अभ्यासों को छोड़ कर एक भी गोली नहीं चलाई थी, उदार सरकार ने मुझे एक ऐसे विभाग में काम पर लगा दिया जिसे बाद में भारतीय राजस्व सेवा का नाम दिया गया.

यद्यपि भारतीय वायु सेना को छोड़ते समय मैं केवल फ्लाइंग अफसर के छोटे से पद पर था, पर राजस्व सेवा में आने पर मुझे 'कैप्टन' कहा जाने लगा और अब भी मुझे यही कहा जाता है.

यद्यपि मेरी आयु चालीस को पार करने लगी थी लेकिन अभी तक मैं अविवाहित ही था. विवाह करने के लिए मैं पता नहीं क्यों पर्याप्त साहस ही नहीं बटोर पाया. स्वभाव से मैं शरमीला था. मैं ने जानबूझ कर अपना व्यवहार स्वतंत्र और सीधासादा बना लिया था. लोगों का खयाल था कि मैं अविवाहित हो कर भी बहुत सुखी हूं.

वास्तव में बात ऐसी नहीं थी. संभव है कि अनजाने में मेरी आंखें किसी ऐसी आंतरिक भूख को शांत करने के लिए व्याकुल हों जिसे मैं अपने ब्रह्मचर्यपूर्ण जीवन के कारण ही अभी तक शांत नहीं कर पाया होऊं. मेरी नाट्यशास्त्र तथा उर्दू शायरी में विशेष रुचि रही है कालिदास और गालिब दोनों ही मेरे प्रिय कवि रहे हैं.

ज्ञान की पत्नी के उसी कूपे में साथ चलने में मुझे क्या आपत्ति हो सकती थी. फिर भी मैं इस बात से कोई विशेष प्रसन्न नहीं हुआ था. कूपे में किसी महिला के होने का अर्थ है कुछ ऐसी स्वतंत्रताओं पर पाबंदी जिन का उस के न होने पर उपभोग संभव है. खैर, मैं ने औपचारिक नम्रता दिखाई और ज्ञान को विश्वास दिला दिया कि उसे इस लंबे सफर में अपनी पत्नी के बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है. ज्ञान ने धन्यवाद दिया, जोरों से हाथ मिला कर अपनी पत्नी को विदाई दी और गाड़ी से उतर गया.

उसी समय घड़ी ने पांच बजाए और ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस अत्यंत शान के साथ मद्रास सेंट्रल से रवाना हो गई. जब गाड़ी काफी तेज हो गई तब मुझे यह ध्यान आया कि मैं ने तीसरे पहर की चाय ही नहीं पी है. मेरे बारे में कहा जाता है कि मैं चाय पीने का बहुत शौकीन हूं. सच बात तो यह है कि चाय पीने से मेरा मन प्रसन्न हो उठता है. मैं ने गाड़ी के जलपान डब्बे में जा कर चाय पीने की सोची, लेकिन अचानक ज्ञान की पत्नी मुझ से बोली, "आप चाय पिएंगे न?"

लगता है, उस ने मेरी इच्छा को भांप लिया था. मैं कोई जवाब देता इस से पहले ही उस ने सीट पर खानेपीने का सामान लगाना शुरू कर दिया. मुझे यह देख कर अत्यंत आश्चर्य और आनंद हुआ कि केवल कुछ ही मिनटों में उस ने जलपान की व्यवस्था कर दी और वहां एक छोटी सी चाय पार्टी नजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने ऊपर की बर्थ पर जाने में अरुणा की सहायता की. ऊपर चढ़ते समय वह कुछ फिसल गई और लगभग पूरी तरह मेरी भुजाओं में आ गई.

आने लगी. सीट पर समोसे और भुने मांस के कटलेट रख दिए गए जो अभी तक काफी गरम थे. गोले की चटनी के साथ बड़े और कुछ अन्य वस्तुएं भी थीं. एक बड़े थरमस में से उस ने प्लास्टिक के मगों में गरमगरम चाय पलटी. सारी चीजें बहुत अच्छी थीं.

सामान्यतः में थरमस में पड़ी चाय पसंद नहीं करता, लेकिन यह चाय ऐसी थी, जिसे मैं बहुत पसंद करता था. लिप्टन ग्रीन और ब्रुक ब्रांड रेड लेबल को मिला कर तैयार की गई इलायची की गंध वाली चाय. पहली बार मुझे महसूस हुआ कि विवाहित होने के क्या लाभ हैं. मैं ने इस स्वादिष्ट जलपान के लिए अरुणा को बारबार धन्यवाद दिया और उस के बाद उस से सिगरेट सुलगाने की अनुमति मांगी.

अब मुझे पाठकों को यह भी बता देना चाहिए कि ज्ञान की पत्नी हमारे विभाग के अधिकारी वर्ग में एक सुंदर और आधुनिक महिला के रूप में प्रसिद्ध थी. व्यवहार में वह अनुपम थी और यद्यपि पोशाक तथा हावभाव से वह अत्यंत फैशनेबल नजर आती थी, लेकिन फिर भी वह कुछ शरमीली और संयमित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी थी. वह कभी भड़कीली बन जाती थी और कभी सीधीसादी. उस का विवाह हुए तीन वर्ष से अधिक हो गए थे, लेकिन अभी तक उस का कोई बच्चा नहीं हुआ था. वह दिल्ली के सुविख्यात मिरांडा हाउस की स्नातिका थी. बातचीत से वह बुद्धिमान तो काफी नजर आई लेकिन उत्तेजक नहीं. रोजमर्रा की घटनाओं के बारे में उसे अधिक ज्ञान नहीं था, इसलिए देश की हालत पर विचारविमर्श के कुछ प्रयासों के बाद हमारा वार्तालाप मंद पड़ गया. उस ने एक पत्रिका उठा ली और मैं ने दैनिक समाचारपत्र पढ़ना आरंभ कर दिया.

जलपान डब्बे का बैरा खाने के लिए हमारा आर्डर लेने के लिए आया. अरुणा ने उसे यह कह कर चलता कर दिया कि रात के लिए तो काफी है लेकिन सुबह के समय वह दोनों के नाश्ते के लिए इडली, वड़े ले आए. उस के इस कथन पर जब मैं ने उस की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा तो उस ने संकेत से मेरा ध्यान सीट के एक ओर रखे टिफिन कैरियर की ओर दिलाया.

तेजी से दौड़ती गाड़ी की ठकठक की आवाज से थोड़ा वाकशून्य हो कर हम दोनों ने शायद कुछ समय के लिए एक झपकी ले ली. जब गाड़ी अचानक रुकी तो मैं झटके के साथ जाग पड़ा. गाड़ी शायद सिगनल की प्रतीक्षा कर रही थी. अंधेरा हो चुका था. जब मैं ने बत्तियां जलाईं तो ज्ञान की पत्नी ने भी अपनी आंखें खोल दीं.

"कैप्टन साहब, लगता है आप को भूख लगने लगी है," वह बोली.

"नहीं, मिसेज ज्ञान, अभी थोड़ी देर पहले ही तो इतना भारी नाश्ता किया है," मैं ने उत्तर दिया.

"मेरी एक प्रार्थना है," उस ने कहा. मैं ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उस की ओर देखा. "कृपया यह औपचारिकता छोड़िए. मुझे सिर्फ अरुणा कहिए."

मैं मुसकराया और उस की बात मान ली, "ठीक है, इस में मुझे भी मजा आएगा."

इसी प्रकार छोटीछोटी बातों में कुछ और समय गुजरा. आठ बज चुके थे लेकिन आंध्र प्रदेश का गरम तट जिस के सहारेसहारे हम आगे बढ़ रहे थे, अब भी गरमी उगलता प्रतीत हो रहा था. अरुणा से जब गरमी और सही न गई तो वह बोली कि वह ताजा होने के लिए नहाने जा रही है. जब वह लौटी तो मैं भी नहाने के लिए जाने को तैयार बैठा था. "कैप्टन साहब, अब आप भी नहा लीजिए," उस ने कहा, "मुझे भी थोड़ा तैयार होना है, जिस में कुछ समय लगेगा."

मुझे उस की बात पर कुछ आश्चर्य हुआ. थोड़ी देर बाद ही सो जाना होगा, फिर यह तैयारी कैसी. मेरी समझ में नहीं आया.

खैर, गरमी की वजह से मैं ने भी नहा लेना अच्छा समझा. गाड़ी का बाथ शावर बिलकुल ठीक हालत में था और सिर के ऊपर लगा टैंक पूरी तरह भरा हुआ था. पहले मैं ने हजामत बनाई. शाम के समय मैं ऐसा बहुत कम करता हूं. लगभग आधे घंटे तक मैं आराम से ठंडक पाने के लिए फुहारे के नीचे बैठा रहा और फिर अनजाने में मैं ने स्वयं को अधिक आकर्षक बनाने के लिए थोड़ा अतिरिक्त प्रयास किया, शायद यह सोच कर कि मेरे साथ एक महिला सफर कर रही है. कूपे में वापस लौटने तक लगभग पौन घंटा बीत चुका था.

कूपे का दरवाजा अंदर से बंद था, इसलिए मुझे खटखटाना पड़ा. अरुणा ने दरवाजा खोला तो उसे देख कर मैं हैरान रह गया. जिस समय मैं फुहारे के नीचे बैठा हुआ था, उस दौरान मेरी सहयात्री में बहुत अधिक अंतर आ गया था. उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

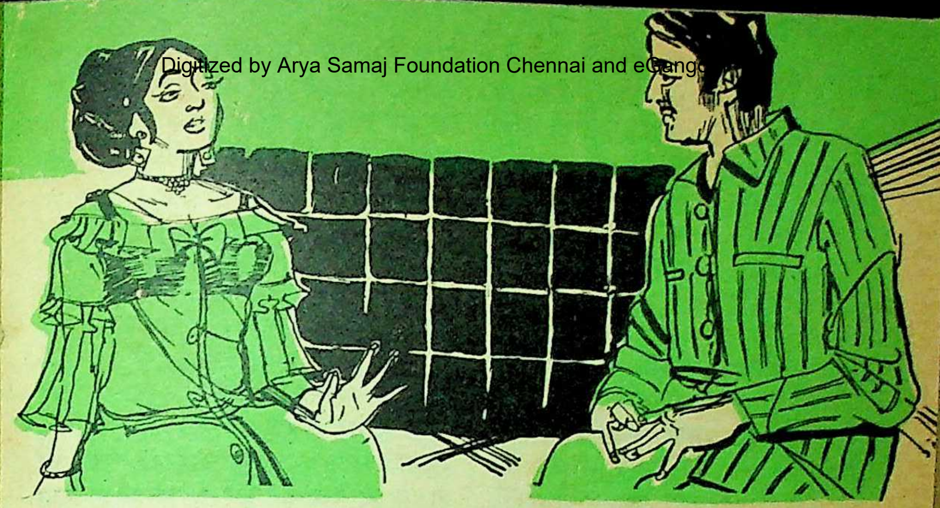

अरुणा ने कहा, "कैप्टन साहब, कृपया इस बार उन्हें क्षमा कर दीजिए."

की शक्ल ही बदल गई थी. लगा मेरे कूपे में कोई परी उतर आई है. बाल अत्यंत सीधेसादे मगर आकर्षक ढंग से सजे थे. जूड़ा बहुत बड़ा बनाया गया था. चेहरे का मेकअप बहुत मनमोहक था. ब्लाउज चोली जितना बहुत छोटा था. एक कंधा पूरी तरह खुला था. पेट के काफी अधिक खुले भाग के नीचे सिल्क का पेटीकोट था. नाभि स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी जो अत्यंत भली लग रही थी.

सारा शरीर भड़कीले रंग के एक आकर्षक गाउन से ढका था, जिस में से शरीर की गोरी त्वचा बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रही थी. मैं विस्मित रह गया. मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि मेरी आंखें खुली की खुली रह गईं.

"अंदर आइए न. और हां, दरवाजा बंद कर लीजिए," अरुणा ने कुछकुछ मुसकराते हुए कहा, "यह सब के देखने की चीज नहीं है."

मुझ से जैसा कहा गया, मैं ने वैसा ही किया, लेकिन बात को ठीक प्रकार न समझ पाने के कारण मैं एकटक उस को निहार रहा था. उसे शायद इस बात का आभास हो गया था कि मुझ पर उस के सौंदर्य का जादू असर कर गया है. वह बोली, "कहिए, कैप्टन साहब, इस रूप में तो आप मुझे पहले भी देख चुके हैं."

तभी मुझे याद आया कि लगभग एक वर्ष पूर्व विभागीय ड्रामेटिक सोसायटी ने एक नाटक किया था जिस में अरुणा शकुंतला बनी थी. मैं उस से इतना अधिक प्रभावित हुआ था कि नाटक के बाद मैं ने उस के पास जा कर उस की प्रशंसा की झड़ी लगा दी थी.

धीरेधीरे मेरा दिमाग कुछ संतुलित हुआ. मैं ने कहा, "यह ठीक नहीं है. मैं अभी तक कुछ समझ नहीं पाया हूं."

"कुछ खाने के बाद शायद समझ में आ जाए," उस ने लापरवाही के साथ कहा और खाने की उस सामग्री पर से कपड़ा उठाया जो उस ने सीट पर फैला रखा था.

वह बहुत स्वादिष्ट खाना था. तंदूरी चिकन, नरगिसी कोफ्ता करी, मटर-पनीर, दम आलू तथा चटनी और अचार के साथ दो मिठाइयां थीं—शाही टुकड़ा और बादाम का हलवा. लगभग छः मास पूर्व मैं नें क्लब में एक रात्रि भोज दिया था. मुझे ऐसा लगा जैसे वे ही चीजें यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी परोसी गई हैं. कैसा अद्भुत संयोग था. हम खाना खाने में संलग्न रहे और अरुणा को खाने के बरतन साफ करने तक 10 बज गए.

"मैं ऊपर सोऊंगा," मैं ने अरुणा से कहा, "मैं आप का बिस्तर निचली बर्थ पर बिछा देता हूं."

"नहींनहीं, ऊपर की बर्थ पर मैं सोऊंगी. क्या आप यह नहीं सोचते कि मुझे वहां पर अधिक आराम रहेगा?" उस ने अपनी आंखों में चमक ला कर मुसकराते हुए कहा.

"जैसी आप की मर्जी," मैं ने कहा और उस को अपना बिस्तर खोलने में सहायता करने लगा. वह इतनी अधिक सुंदर थी और उस का शरीर इतना अधिक उघड़ा हुआ था कि लगभग पूरे समय मेरी आंखें उस पर ही लगी रहीं. बिस्तर बिछ जाने पर मैं ने उस की ऊपर की बर्थ पर जाने में सहायता की. ऊपर चढ़ते समय वह कुछ फिसल गई और लगभग पूरी तरह मेरी भुजाओं में आ गई.

मैं एक क्षण के लिए अपने होश-हवास खो बैठा. उसे कस कर पकड़ लिया और उस के होंठों को चूमने का प्रयास करने लगा.

अब वह चौंकी. उस ने मुझे एक ओर ढकेल दिया और जोरजोर से सिसकने लगी. "नहींनहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती.

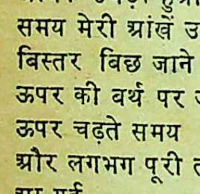

कृपया मुझे छोड़ दीजिए, कैप्टन साहब, मुझे मत छुइए. जब मेरे पति ने मुझ से यह कहा था कि मैं आप को जीतने का प्रयत्न करूं, उस समय मैं ने इसे केवल मजाक समझा था. लेकिन मैं ने उन से अधिक हीलहुज्जत नहीं की. मुझे मेरे पति के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने आज तक स्पर्श नहीं किया. मैं इसी तरह रहना चाहती हूं," वह बोली.

जब से ज्ञान ने मद्रास सेंट्रल स्टेशन पर अपनी पत्नी को मेरे पास छोड़ा था, मैं किसी काल्पनिक संसार में जी रहा था. यह सब कुछ अजीब ढंग से हो गया. ज्ञान का अचानक स्टेशन पर आना, मेरे डब्बे में मेरे अकेले होने का उस को पता होना, गाड़ी के चलते ही मेरी चाय की तलब को देख कर अरुणा का फौरन चाय की व्यवस्था करना, लगभग नग्न अवस्था में मेरे सामने आना, कीमती भोजन—यह सब केवल संयोग मात्र नहीं हो सकता. यह सब षड्यंत्र प्रतीत होने लगा. इस सब के पीछे कोई बड़ी योजना नजर आने लगी. वास्तविक जीवन में इस प्रकार नहीं होता. अचानक की गई रेल यात्रा हमेशा कष्टकर ही होती है, उस में बिलकुल भी आराम नहीं मिलता. सुंदर स्त्रियां बिना थोड़ी जानपहचान के अपने सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं करतीं. जब अरुणा ने मुझ से दरवाजा बंद करने के लिए कहा था, तभी उस ने बहुत कुछ कह दिया था. इस सब के पीछे क्या था?

और अब सब कुछ स्पष्ट हो गया था. कुछ भी शेष नहीं रहा था. मुझे याद आया कि मुझे ज्ञान के विरुद्ध आरोपों की जांच करनी थी. उसें शायद इस बात का पता चल गया था और इसी लिए उस ने यह नाटक रचा था. ज्ञान अपनी सुंदर पत्नी का प्रलोभन के रूप में प्रयोग करना चाहता था. अभिनय में उस की कुशलता ने उस की सहायता की और वह आधे मन से मुझे प्रलोभित करने के लिए तैयार हो गई. इतनी सफाई और विस्तार के साथ जो काल्पनिक संसार खड़ा किया गया था वह टुकड़ेटुकड़े हो गया था और अब स्थिति का सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंदाजा लगाना संभव हो गया था.

मैं ने अरुणा को अपने सामने बैठाया और उस से सब कुछ साफसाफ बताने को कहा. सिसकियों के बीच उस ने शुरू से सारी कहानी सुना दी. ज्ञान सरकारी लाभ पहुंचाने के बदले लोगों से उपहार स्वीकार कर रहा था. उस के अनुसार इस से उस के चरित्र पर कोई लांछन नहीं आता था. जहां तक उसे पता था, उस ने रिश्वत कभी नकदी में नहीं ली थी. उसे उन सारे पत्रों के बारे में पता था जो गुमनाम लोगों की ओर से आए थे. उसे आरंभिक जांच के बारे में दिए गए आदेश के बारे में भी पता था. मेरे साथ अरुणा द्वारा यह सब नाटक खेलने की सारी योजना उसी ने बनाई थी. उस ने अरुणा की नाटकीय सामर्थ्य को चुनौती दी थी और उस से मुझ को अपने वश में कर लेने को कहा था.

उस ने अरुणा को विश्वास दिलाया कि मैं इतना नीचे नहीं गिर सकता कि उस से बलात्कार करूं. अरुणा को हर कीमत पर इस बात के लिए प्रयत्न करना था कि मैं पूरी जांच कराने का सुझाव न दूं. उस ने अरुणा से वादा किया था कि भविष्य में वह पूरी ईमानदारी के साथ काम करेगा. उस ने अपनी पत्नी से कहा था कि वह कभीकभी प्राप्त होने वाले उपहारों से अपने दफ्तरी जीवन को कहीं अधिक महत्त्व देता है. इसी लिए अरुणा ने मुझ से कहा, "कैप्टन साहब, कृपया इस बार उन्हें क्षमा कर दीजिए. मैं इस बात की गारंटी देती हूं कि भविष्य में वह ऐसा कोई अनुचित काम नहीं करेंगे."

अपने साथ किए गए इस तरह के मजाक से मैं न केवल निराश हुआ बल्कि क्रुद्ध भी. सोचने लगा, 'अगर लोगों को यह पता चल गया कि उन के डिपुटी कलक्टर ने इस तरह का काम किया है तो वे मेरा कितना मजाक उड़ाएंगे?'

फिर भी मैं अरुणा के आंसुओं को बिलकुल नजरअंदाज नहीं कर पाया. मैं ने उस पर अपना यह भाव प्रकट नहीं किया बल्कि कुछ रोब जतलाते हुए कहा, "मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूं जिसे किसी तरह के प्रलोभन से खरीदा जा सके. मैं आप के पति के बारे में विभिन्न फाइलों और कागजों की जांचपड़ताल अत्यंत सावधानी से करूंगा. यदि मेरे निष्कर्षों के आधार पर उसे दंड दिया जाना चाहिए तो मैं इस बारे में ज्यादा मदद नहीं कर पाऊंगा. मैं आप को केवल इतना ही आश्वासन दे सकता हूं कि उसे अकारण परेशान नहीं किया जाएगा."

मैं ने थोड़ा रुक कर फिर कहा, "अब आप सो जाइए. और अगर आप को डर लग रहा हो तो मैं किसी और

डब्बे में जा कर बर्थ ढूंढ़ने का प्रयत्न करता हूं. आप भी सोने से पहले ढंग के कपड़े पहन लीजिए."

एक अनहोनी घटना घट गई थी और मैं बहुत परेशानी का अनुभव कर रहा था. मैं बाहर गया और अपने शरीर व मस्तिष्क को शांत करने के लिए गैलरी में खड़ा हो गया. लगभग आधा घंटे के बाद जब मैं अंदर आया तो उस समय तक अरुणा सो चुकी थी. इस से पूर्व कि मैं भी सो जाता, मैं काफी समय तक बैठेबैठे सिगरेट पीता रहा. मैं ने लोगों को नौकरी में अपनी पदोन्नति के लिए अपनी पत्नियां दूसरों को पेश करते सुना था, लेकिन मेरे साथ इस प्रकार का अनुभव प्रथम बार हुआ था. मैं ने भी इस दिशा में प्रथम बार ही कदम बढ़ाए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन सुबह वातावरण में अस्वाभाविक तनाव रहा. अरुणा और मैं एक-दूसरे के प्रति अत्यंत नम्र थे, लेकिन अब हम में घनिष्ठता नहीं थी, कम से कम मेरी ओर से. जब हम नागपुर पहुंचे तो मैं दूसरे डब्बे में चला गया. मेरे वहां से जाने से पहले अरुणा मुझ से केवल यह वादा करा लेने में सफल हुई कि मैं विरोधी रुख नहीं अपनाऊंगा और मेरा निर्णय पूर्णतया मामले की सचाई पर निर्भर करेगा.

कुछ दिन बाद मद्रास लौटने पर मैं ने ज्ञान के विरुद्ध उपलब्ध प्रमाणों का अध्ययन किया. ऐसी पर्याप्त सामग्री थी जिस से उसे काफी नुकसान पहुंच सकता था. लेकिन अरुणा का परी जैसा शरीर और आंसुओं से भरा चेहरा मेरे दिमाग में घूमने लगा. अपने निष्कर्षों को लेखबद्ध करने में मुझे अनेक दिन लग गए. इस बात से मैं आज भी अपने को शर्मिंदा महसूस करता हूं कि मैं ने यह लिख दिया कि ज्ञान के विरुद्ध लगाए गए आरोप गलत और निराधार हैं और उन के समर्थन में पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं. इसलिए गुमनाम पत्रों पर कोई ध्यान न दिया जाए और न ही इस बारे में और अधिक जांच कराए जाने की आवश्यकता है.

कलक्टर ने मेरी सिफारिशें मान लीं और दिल्ली स्थित अधिकारियों को वैसा ही लिख भेजा. ज्ञान सुरक्षित हो गया, कम से कम कुछ समय के लिए. कुछ मास बाद उस का बंबई को तबादला हो गया.

पिछले दिनों मैं ने सुना कि विशेष पुलिस विभाग ने जो काफी समय से ज्ञान के पीछे था, अपनी जांचपड़ताल पूरी कर ली है और उसे उस के विरुद्ध भ्रष्टाचार के काफी प्रमाण मिले हैं. उसे अपने पद से मुअत्तल कर दिया गया. उस पर मुकदमा चला, जिस में उस की ओर से काफी प्रसिद्ध वकीलों ने पैरवी की. फिर भी उस के विरुद्ध इतने प्रबल प्रमाण थे कि उस को जेल हो गई. उच्च न्यायालय में अपील करने से भी कोई लाभ नहीं हुआ. इस से अरुणा को बड़ा सदमा पहुंचा और उस की सारी सुंदरता गायब हो गई और अब वह एक वृद्धा सी नजर आने लगी है. •

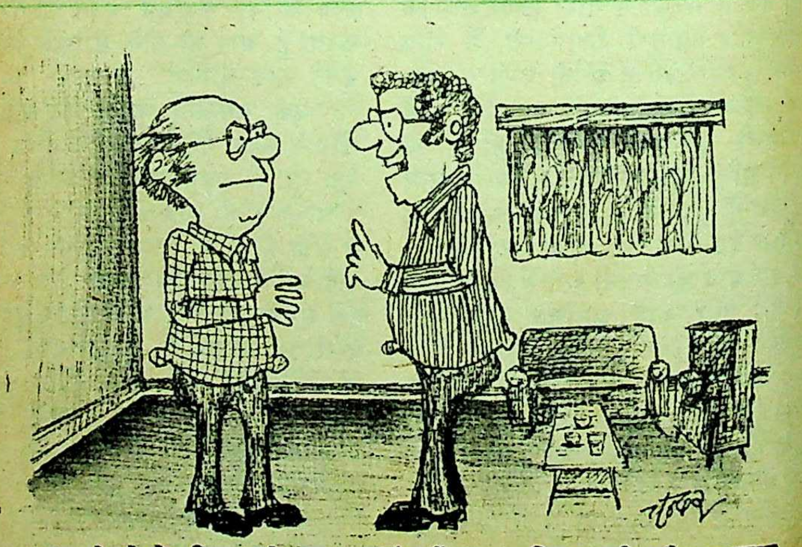

"हम बोलने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं बस, पुलिस पत्नी और पत्रकार आसपास न हों."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

डाकतार विभाग की सूझबूझ का नमूना

अजमेर में डाक व तार विभाग की कार्यकुशलता से बहन के स्नेह की प्रतीक राखी आखिर भाई के पास पहुंच ही गई, हालांकि बहन ने जल्दबाजी में लिफाफे पर शहर का नाम भी नहीं लिखा था.

हुआ यह कि अलवर के एक कवि को अजमेर से उस की बहन ने डाक से राखी भेजी थी. जिस लिफाफे में राखी थी, उस पर नाम व महल्ला तो लिखा था लेकिन शहर का नाम नहीं था. डाक विभाग कर्मचारी ने कवि का नाम पढ़ कर उस के नामधाम से परिचित होने के कारण उस पर अलवर लिखा दिया और वह राखी दूसरे दिन ही पहुंच गई. **—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : जयंत चटर्जी)**

✦

✦ सद्भाव इस को कहते हैं

इंदौर के एक हिस्से में पिछले दिनों जहां एक ओर दो संप्रदायों के बीच तनाव चल रहा था. वहीं दूसरी ओर भाट महल्ले में हुई एक शादी के समय सांप्रदायिक सद्भाव का एक अनुकरणीय उदाहरण देखने को मिला.

एक मुसलिम परिवार के यहां शादी थी. जूना रिसाला से बरात आने वाली थी. इसी बीच तनाव बढ़ गया और शरारती लोग पत्थरबाजी करने पर उतारू हो गए. जब इसी क्षेत्र के हिंदू युवकों को इस बात का पता चला तो वे वहां तुरंत पहुंचे और उन्होंने असामाजिक तत्वों को पत्थर फेंकने नहीं दिए, इस तरह शादी निर्विघ्नता से संपन्न हो गई. **—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : इशरत अली) (सर्वोत्तम)**

✦

पटवारी छठी बार पुरस्कृत

सूरतगढ़ तहसील के पटवारी प्रभुदायल को राजस्व वसूली में सर्व श्रेष्ठ रहने के कारण जिलाधीश ने 250 रुपए पुरस्कार स्वरूप दिए.

प्रभुदयाल पटवारी अपनी योग्यता के कारण छठी बार पुरस्कृत हुआ है. 1962 में जनगणना कार्य में उसे राष्ट्रपति पदक प्रदान किया गया था. इस के पूर्व 1951 में भी जनगणना कार्य में वह पुरस्कृत किया गया था. 1977 में उसे परिवार नियोजन कार्य में राजस्थान सरकार ने पुरस्कृत किया था और सन 1978 में भूमि सुधार आयुक्त एवं राजस्व सचिव ने श्रेष्ठ कार्य के लिए उसे पुरस्कृत किया था. सन 1979 में भी अपने क्षेत्र में रिकार्ड वसूली करने पर उसे पुरस्कार से मिला.

चालू वर्ष में जब कि वसूली मार्च 1981 तक करनी थी, प्रभुदयाल ने अपने क्षेत्र की शतप्रतिशत वसूली 16 अगस्त तक ही पूरी कर दी.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : मनोजकुमार जैन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखद वैवाहिक जीवन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3 50

युवतियों से
एक युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा रु 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 101

पूरा सैट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट.रुपए अग्रिम आने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं ने दुकान लूटी

हरिजन महिलाओं के एक दल ने शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में शराब की एक दुकान को लूट लिया, जो उन की बरबादी का कारण बन रही थी.

इन महिलाओं के पति उस दुकान के नियमित ग्राहक थे. महिलाओं ने पहले कई बार उस दुकानदार को समझाया भी था कि वह उन्हें शराब न दिया करे. पर उस के न मानने पर उन्होंने दल बना कर यह दुकान घेर ली और उसे लूट लिया.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : राकेश गुप्ता)

✦

पुत्र ने पिता की दुकान बंद करवा दी

आम आदमी को खुले बाजार में चीनी न मिलने से क्षुब्ध एक युवक ने अधिकारियों से शिकायत कर के अपने पिता की सस्ते गल्ले की दुकान बंद करवा दी.

मिर्जापुर के पसरहट्टा बाजार के इस युवक ने अधिकारियों से शिकायत की थी कि उस के पिता की दुकान में चीनी बांटने की धांधली की जा रही है. इतना ही नहीं वह अधिकारियों को अपने पिता की दुकान पर भी ले गया और अपने पिता के काले कारनामे उन्हें प्रत्यक्ष दिखा दिए.

—गांडीव, काशी (प्रेषक : शैलेंद्रकुमार सिंह)

✦

मृत्युभोज के बदले निर्धन छात्रों की मदद

श्री माहेश्वरी मेवाड़ महासभा के मंत्री श्री बाबूलाल कासट ने अपनी मां के निधन पर मृत्युभोज का आयोजन रद्द कर दिया. उन्होंने इस के बदले 10 हजार रुपए की राशि का सुरक्षित कोष कायम किया. इस निधि की आय से समाज के गरीब और असहाय छात्रों को सहायता दी जाएगी.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : इशरत अली कादरी)

✦

शराबी प्रधानाचार्य की छात्रों ने गत बनाई

पिछले दिनों बालाघाट के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शराब के नशे में धुत्त प्रधानाचार्य की छात्रों ने खूब गत बनाई.

बताया जाता है कि वह प्रधानाचार्य शराब के नशे में झूमते हुए विद्यालय में आए तो छात्रों ने उन को घेर लिया. फिर उन का जलूस निकाल कर उन्हें कलक्टर के सामने पेश कर दिया.

—नवभारत, भोपाल (प्रेषिका : शकुंतला गुप्ता)

✦

125 खनिकों की जान बचाई

दो खनिकों की सूझबूझ और सतर्कता से पिछले दिनों धनबाद में लगभग 125 खान मजदूर अकाल मौत के मुंह में जाने से बच गए.

हुआ यों कि एक दिन रात को भारत कोकिंग कोल की कुसुंदा खान में दो खनिकों ने एक अजीब सी गंध महसूस की. उन्होंने देखा कि खान के अंदर काम कर रहे कुछ मजदूरों में बेहोशी सी छाने लगी है. उन्होंने तुरंत शोर मचा कर तथा पकड़-पकड़ कर सब को बाहर निकालना शुरू कर दिया.

बाद में पता चला कि इस खान में एक बेहद जहरीली किस्म की गैस निकल रही थी, जिस से थोड़ी ही देर में उन मजदूरों की मृत्यु हो सकती थी.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : अनिलकुमार चौधरी) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

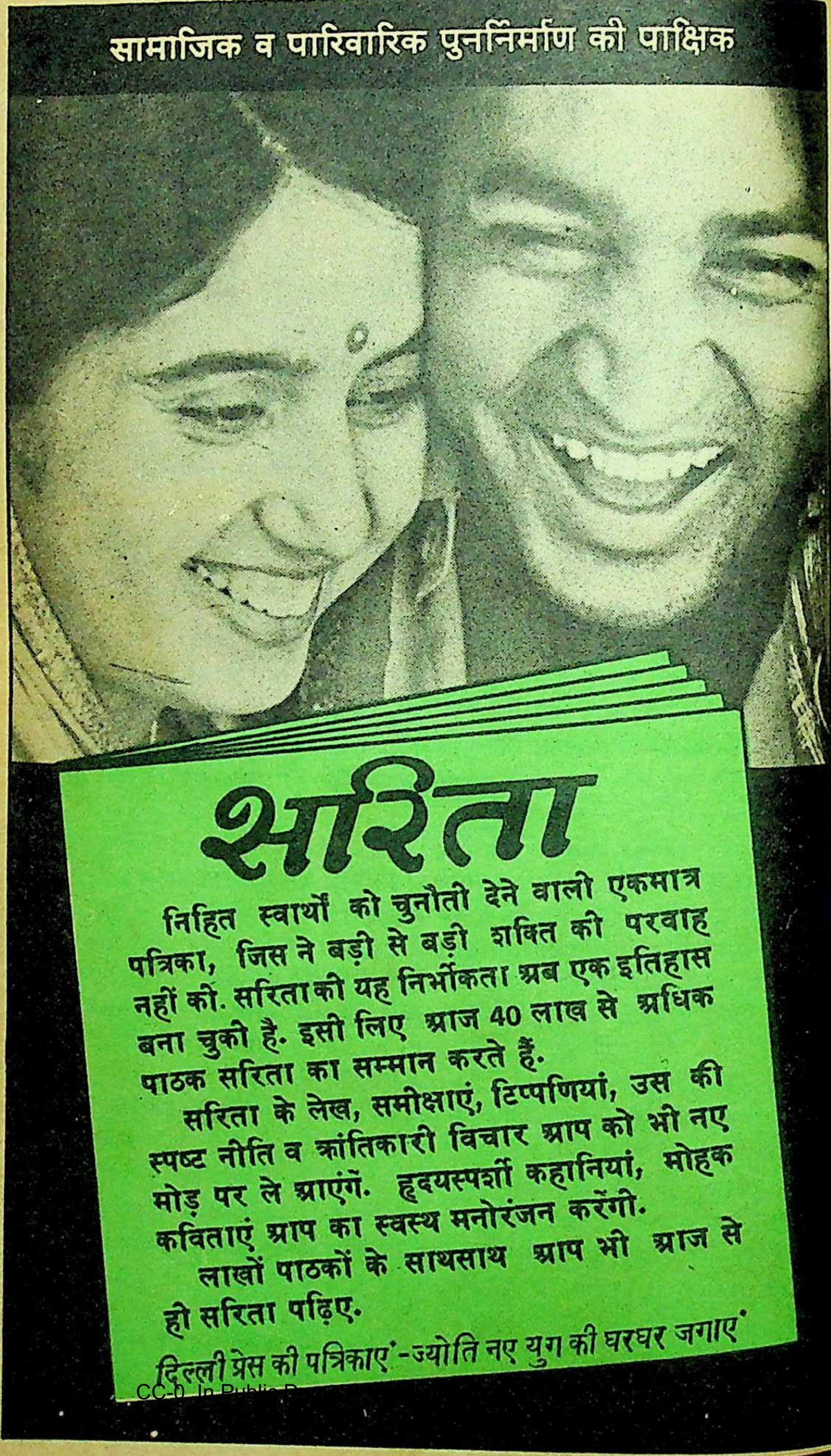

CC-0. In Public D

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिष्ठा और महंगे मनोरंजन का नया प्रतीक वीडियो

लेख • सरला जैन

वीडियो आज भले ही मनोरंजन का सब से महंगा साधन है, पर इस की उपयोगिता और बढ़ती लोकप्रियता को देख कर लगता है वह दिन दूर नहीं जब खलिहान में बैठे किसान भी वीडियो पर मनचाही फिल्में देख सकेंगे.

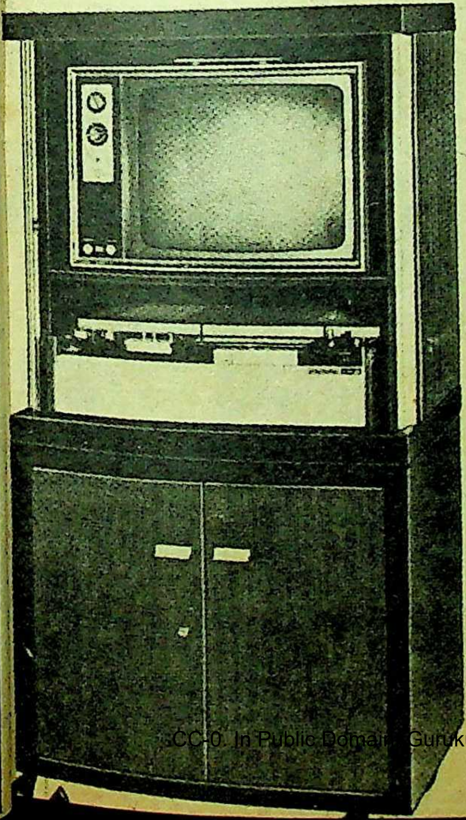

विदेशी वीडियो सेट का एक नमूना.

दोस्तों और परिचितों में अपने आप को विशिष्ट दिखाने की भावना से खरीदी जाने वाली चीजों में बहुत पहले रेडियो का नाम आता था. धीरेधीरे उस की जगह लेने के लिए नई-नई चीजें आती गईं. रेडियो के बाद टेपरिकार्डर, स्टीरियो और टी. वी. सेट प्रतिष्ठा के प्रतीक बन कर धनिकों के ड्राइंग रूम में सजने लगे. आजकल इन सब को पीछे छोड़ कर 'वीडियो' प्रतिष्ठा का प्रतीक बन चुका है. महानगरों में रहने वाले पुराने खानदानी रईसों और नवधनाढ्य वर्ग की वर्तमान खब्त है 'वीडियो'. विदेशों से तस्करी के जरिए चोरीछिपे बिकने वाले 'वीडियो' लोग खरीद तो लेते थे पर उन का प्रदर्शन सहम कर ही कर पाते थे. अब तो भारत की एक कंपनी ने 'वीडियो' बनाना शुरू कर दिया है और 30 हजार रुपए में बिकने वाले वीडियो की खपत तेजी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

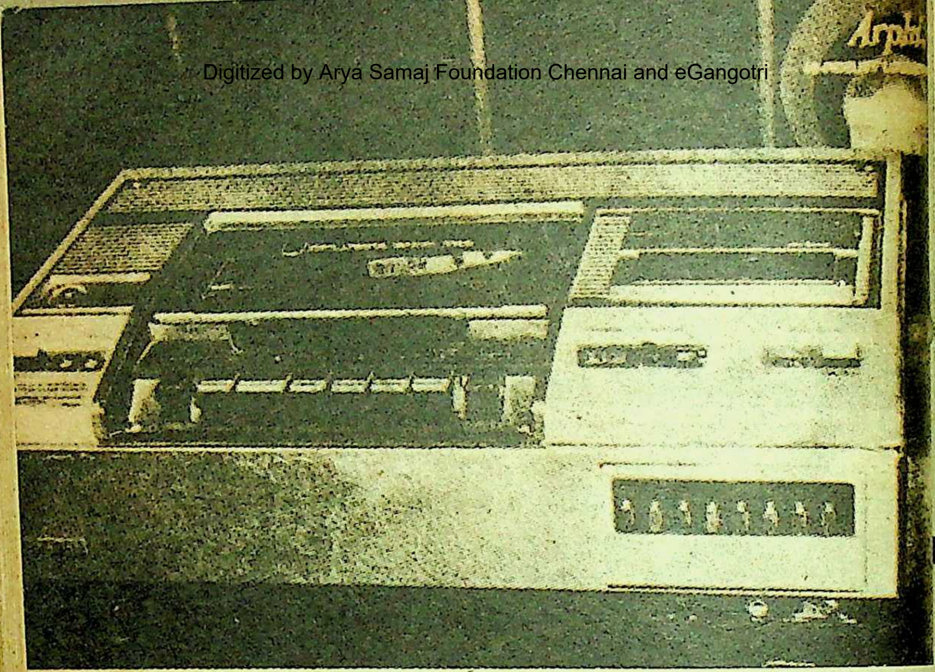

भारत में बना वीडियो सेट : लोकप्रियता का नया मानदंड—सिर्फ बंबई में जिस के हर महीने डेढ़ हजार सेट बिक रहे हैं.

बढ़ रही है. सिर्फ बंबई में हर महीने 1,200 से 1,500 तक वीडियो बिक जाते हैं.

वीडियो का शाब्दिक अर्थ

वीडियो शब्द आडोविजुअल का लघु रूप है. आडो का मतलब है सुनना और विजुअल का दिखाई पड़ना. इस प्रकार जिस में देखने और सुनने दोनों की सुविधाएं एक साथ हों वह वीडियो है. जिस तरह घरेलू टेप रिकार्डर पर हम मनचाहे प्रोग्राम रेडियो और ग्रामोफोन रिकार्ड से सीधे रिकार्ड कर सकते हैं और इच्छित समय या स्थान पर उन्हें सुन सकते हैं, इसी तरह वीडियो पर टी. वी. या सिनेमा के कार्यक्रम 'वीडियो कैसेट' पर सीधे उतार कर जहां चाहे और जब चाहे देखसुन सकते हैं.

विदेशों से चोरीछिपे आने वाले वीडियो सेट भी दो तरह के होते हैं. एक तो सादे (सफेदकाले) और दूसरे रंगीन. रंगीन वीडियो के कैसेट में रिकार्ड कार्यक्रम रंगीन सिनेमा की तरह होते हैं. बंबई में तस्करी कर के लाए वीडियो सेट 30 से 50 हजार रुपए में बिक रहे हैं और उन के कैसेट का भाव 1,500 से 5,000 रुपए तक है. विदेशों से आने वाले कैसेट कोरे नहीं होते. उन में पहले से ही कोई न कोई चीज भरी होती है. या तो हालीवुड की कोई 'हिट' फिलम भरी होगी या किसी रंगीन नाइट क्लब में होने वाला प्रोग्राम होगा या फिर बहुचर्चित टेनिस मैच भी हो सकता है. ऐयाश रईसों के लिए 'नंगी-फिल्म' भी वीडियो कैसेट में मिल सकती है.

कितना महंगा मनोरंजन?

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि 50 हजार का सेट खरीद कर हर माह 15 हजार रुपए खर्च करने की हैसियत रखने वाले रईस ही वीडियो सेट का शौक पाल सकते हैं. और इतना खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर सकने वाले निश्चित ही दो नंबर के पैसे का ही प्रयोग करेंगे.

पहले से ही रिकार्ड कार्यक्रम और टी. वी. से आने वाले कार्यक्रम तो आप अपने वीडियो पर सीधे उतार सकते हैं. पर अगर आप यह चाहें कि किसी घरेलू शादी या मनचाहे मैच को खुद रिकार्ड कर लें तो॰ इस के लिए वीडियो कैमरा खरीदना जरूरी होगा. 70 हजार से एक लाख रुपए की कीमत के इस कैमरे से आप मनचाहे कार्यक्रमों की ध्वनियां और तसवीरों को कैमरे में बंद कर सकते हैं और फिर अपने वीडियो सेट पर उन्हें देख-सुन सकते हैं. इस तरह विदेशी वीडियो का पूरा सेट खरीदने वालों को डेढ़ से दो लाख रुपए तक का खर्चा करना पड़ता है.

विदेशी वीडियो सेट का एक और नमूना.

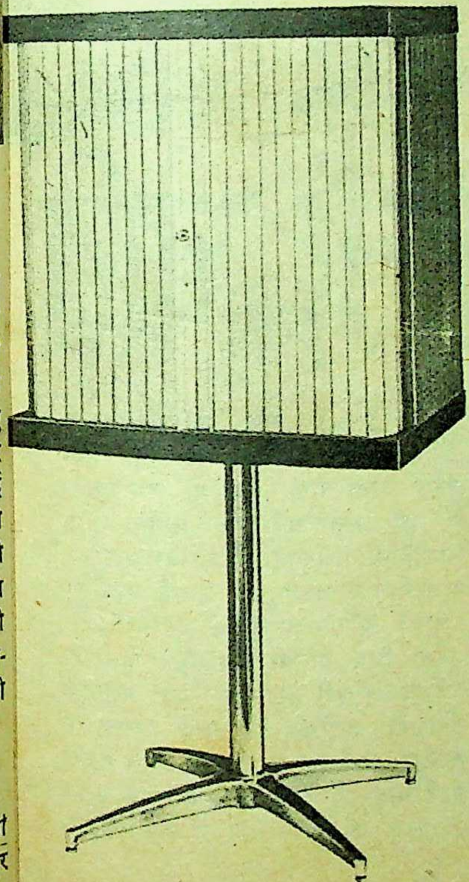

पहला भारतीय वीडियो सेट

वेस्टन इलेक्ट्रानिक्स नामक भारतीय फर्म ने अभी हाल ही में पहला भारतीय वीडियो सेट बाजार में प्रस्तुत किया है. इस सेट में आप 15-20 रील वाली पूरी लंबाई की भारतीय फिल्म या मनचाहा टी. वी. कार्यक्रम रिकार्ड कर सकते हैं और अपने कमरे में बैठ कर जब चाहे इच्छित फिल्म या कार्यक्रम को देख सकते हैं. इस देसी वीडियो सेट की कीमत 30 हजार रुपए है और अतिरिक्त कोरा कैसेट 600 रुपए में मिलता है. लोकप्रिय फिल्मों वाले कैसेट की कीमत एक हजार रुपए के आसपास है.

चूंकि देसी वीडियो सस्ते पड़ते हैं और इन का रखना कानूनी जुर्म भी नहीं है, इसलिए इन की लोकप्रियता और बिक्री लगातार बढ़ रही है. बाजार में आने के कुछ ही हफ्तों में सिर्फ बंबई के बाजार में 300 वीडियो सेट प्रति सप्ताह बिकने लगे हैं.

वीडियो की बढ़ती लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि जिन नगरों में टी. वी. की सुविधा नहीं है वहां के रईस वीडियो की मदद से अपने घर में ही फिल्म देखने का शौक पूरा कर सकते हैं और उन विदेशी फिल्मों को भी देख सकते हैं जिन को भारत के सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने में काफी दिन लग जाते हैं.

वीडियो की बढ़ती लोकप्रियता देख कर लगता है कि जिस तरह आज के हल चलाते हुए किसान अपने कंधों पर ट्रांजिस्टर लटकाए फिल्मी गीतों का मजा लूटते हैं, उसी तरह कुछ समय बाद खलिहान में बैठे वे वीडियो पर मनचाही फिल्में भी देख सकेंगे. ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूंखार डकैतों की घाटी

चंबल घाटी कई सदियों से डाकुओं से आतंकित रही है. पिछले कुछ वर्षों में सैकड़ों डाकुओं ने आत्मसमर्पण भी किया पर समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है—वजह? यही जानने के लिए हमारे प्रतिनिधि ने इस क्षेत्र का भ्रमण कर कई भूतपूर्व डाकुओं से और इस क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण लोगों से जो बातचीत की उस का ब्योरा यहां प्रस्तुत है.

अरावली और विंध्याचल पहाड़ियों का मुख्य द्वार चंबल घाटी खूंखार डाकुओं का अड्डा है. यह उत्तर प्रदेश के आगरा एटा, शिकोहाबाद, मैनपुरी व इटावा इलाकों, राजस्थान के भरतपुर व सवाई माधोपुर इलाकों और मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया इलाकों में फैली है.

चंबल नदी यमुना की एक सहायक नदी है. अंगरेजी के 'आई' अक्षर के आकार वाली इस घाटी में बहुत गहरे-गहरे बीहड़ हैं. अगर कोई घाटी के ऊपर से नीचे की ओर देखे तो उसे यकीनन

लेख • विशेष प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चक्कर आए बि... न रहेंगे ... छोटे रियासती राजाओं का विश्वास था कि मुगल या मराठा शासकों की परवाह न कर के वे अपनी बहादुरी साबित कर सकते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मध्य युग में उत्तर इलाके और दिल्ली के मुसलिम बादशाहों और राजपूताना के राजपूतों के बीच इस घाटी में अकसर भयंकर लड़ाइयां लड़ी गईं. बाद में देशनिकाला की सजा पाए या भागे हुए लोगों और बदमाशों ने इसे अपना अड्डा बनाया. सदियों तक यह घाटी किसी मजबूत शासक की वजह से ऐसे लोगों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बनी रही.

इतिहास में इस बात की भी चर्चा मिलती है कि चंबल के बीहड़ उस चंद्रगुप्त मौर्य की सेनाओं का प्रशिक्षण केंद्र रहे हैं, जिस ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस को हराया था.

क्या चंबल के लोग हर झगड़े को बंदूक की नोक पर सुलझाने के आदी हो गए हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल, 1979 में जय प्रकाश नारायण के समक्ष 511 डकैतों ने आत्म समर्पण तो कर दिया पर अब इन के सुधार के लिए क्या किया जा रहा है?

बाबर को भी चंबल के गूजरों और जाटों से लोहा लेना पड़ा था. चंबल घाटी के 'विद्रोही' हमेशा मुसलिम शासकों के लिए सिरदर्द बने रहे.

भिंड और मुरैना के भदौरिया व आसपास के इलाकों के तोमर इसी घाटी के कारण हमेशा शेरशाह सूरी और अकबर की पकड़ से दूर रहे. इस इलाके में अपना प्रभाव जमाने के लिए एक मुसलिम बादशाह ने एक भदौरिया राजा को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया था. इस के बावजूद इन 'बागियों' पर काबू नहीं पाया जा सका और आखिर अकबर को अपनी नई राजधानी फतहपुर सीकरी छोड़नी पड़ी. चंबल के इन्हीं बागियों के बारबार के हमलों से परेशान हो कर अकबर के वारिसों को आगरा से अपनी राजधानी दिल्ली ले जानी पड़ी.

एक समय ऐसा आया, जब ये 'बा[illegible] अपनी निर्वासिता की सी जिंदगी से [illegible] आ गए और उन के लिए अपने इलाके [illegible] मातहत लोगों पर काबू रखना मुश्कि[illegible] हो गया. इस कारण उन्होंने अपने [illegible] हिमायतियों को लुटेरों का रूप दे [illegible] अपने दुश्मनों के इलाके में लूटमार [illegible] कर दी. ऐसा कर के वह दहशत फैलाने [illegible] साथसाथ अपनी आजादी को भी जा[illegible] करने लगे.

सिंधिया ने तोमर राजपूतों [illegible] हटा कर ग्वालियर में अपना राज का[illegible] किया. सिंधियाओं की हकूमत को स्वीक[illegible] करना राजपूतों के स्वभाव के खिल[illegible] था, जिस का नतीजा यह हुआ कि दो[illegible] में दुश्मनी कायम हो गई और तो[illegible] राजपूत लूटमार कर के सिंधियाओं को [illegible] करने लगे.

उन दिनों डकैती राजाओं के खिला[illegible] बगावत मानी जाती थी. इस बात [illegible] लिखित प्रमाण हैं कि 1857 में [illegible] प्रमुख गिरोहों ने सशस्त्र क्रांति में रा[illegible] झांसी का साथ दिया था. निज्वा, पंच[illegible] सिंह और डूंगर बटोही जैसे डाकुओं [illegible] तात्यां टोपे और उन के साथियों [illegible] शरण दी थी. राजनीतिक बागियों [illegible] लुटेरों द्वारा मदद देने की इस परंपरा [illegible] लुटेरों को एक प्रकार की प्रतिष्ठा मि[illegible] थी. शायद तभी से इन डाकुओं [illegible] अकसर डकैत के स्थान पर 'बागी' क[illegible] जाने लगा था.

पिंडारी और ठग

एक प्रसिद्ध इतिहासकार के अनुस[illegible] डाकू, ठग और पिंडारी एक ही अर्थ [illegible] जाहिर करते थे. फीरोजशाह तुगलक [illegible] राज में चंबल के बीहड़ों में ठगों के ब[illegible] बड़े गिरोह सरगरम थे.

अकबर के राज में भी सैकड़ों ठ[illegible] को फांसी दी गई थी. पिंडारी और ठ[illegible] न केवल मुसलिम शासकों, बल्कि अंग्रे[illegible] के लिए भी हमेशा परेशानी का कारण [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

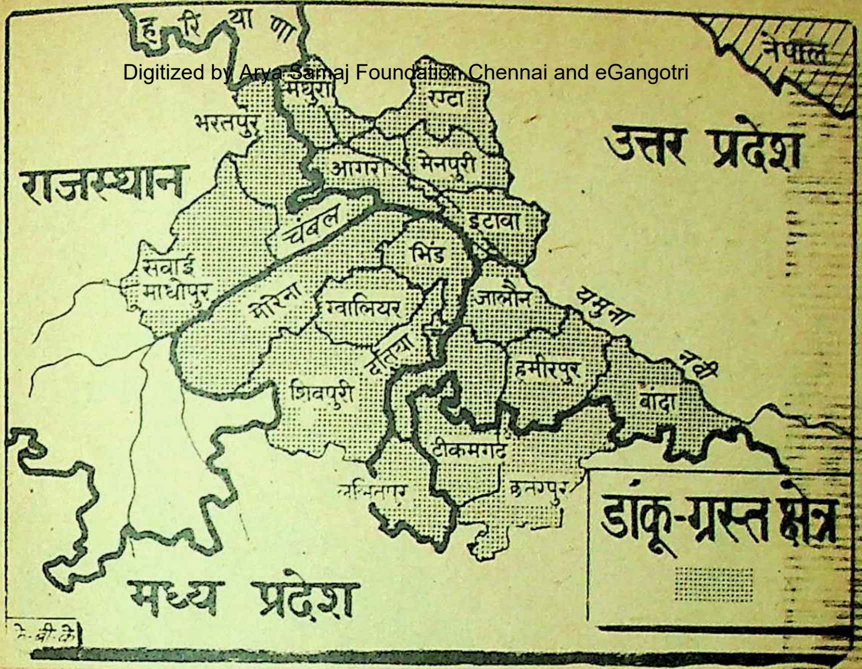

हत्याओं, ठगी और डकैती का यह पेशा धीरेधीरे पुश्तैनी पेशा बन गया. बाप बेटे को प्रशिक्षण दे कर इस पेशे में हुनरमंद बनाने लगा. सदियों तक ये पिंडारी और ठग लोगों में दहशत फैलाते रहे. मौत के इन 'सौदागरों' के लिए कानून और व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं था.

अंगरेजों के शासन के दौरान लार्ड वारेन हेस्टिंग्स पिंडारियों से इतना परेशान था कि उस ने हुक्म दे रखा था कि हर डकैत या पिंडारी को उसी के गांव में फांसी दे दी जाए.

डाकुओं का बदलता रूप

आजादी मिलने के बाद भी इस घाटी के बीहड़ों में सुलताना और मानसिंह के गिरोह बहुत सरगरम रहे. आजादी मिलने के बाद अब 'बागी' शब्द का कोई अर्थ नहीं रहा था, इसलिए समझदार डाकुओं ने अपने पेशे को बेहतर रूप देने के लिए कुछ नई बातें सोची. पहलेपहल मानसिंह ने भारत का रोबिन-हुड बनने की कोशिश की. उस के गिरोह के लोग यह प्रचार करने लगे कि मानसिंह अपनी आमदनी का 10 प्रतिशत गरीबों में बांटेगा. अकेला मानसिंह सौ से अधिक हत्याओं और एक हजार से अधिक डकैतियों के लिए जिम्मेदार था. 1955 में उस के दल का सफाया कर दिया गया.

आर्थिक पहलू

इतिहास में मिलने वाली मिसालों से भी इस बात के संकेत मिलते हैं कि सामंती राज के लंबे दौर ने भी डाकुओं के इस पेशे को बढ़ावा दिया. उन दिनों में 'ताकतवर' द्वारा की गई हिंसा और केवल अपनी खुशी के लिए किए गए अपराधों को अपराध नहीं समझा जाता था. हो सकता है कि खबर भेजने के साधनों की कमी या बदले के डर से ऐसा होता रहा हो.

पर यह पक्की बात है कि गरीब किसानों को सरकार की तरफ से कोई सुरक्षा हासिल नहीं थी. जमींदार मनमानी करते थे. जमींदार अकसर किसानों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदियों की उपेक्षा और [illegible] ने चंबल के लोगों में निराशा भर दी है, यही वजह है कि आज भी लोग कोई भी अपराध कर के बीहड़ों में चले जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दबाते रहते थे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मजेदार बात यह भी है कि प्रमुख गिरोहों के सरगना जमींदार और ऊंची जाति के ही लोग थे. उन दिनों जमीन का बंटवारा 'जमींदारी' या 'जागीरदारी' तरीके से किया जाता था. ये जमींदार किराया तय किए बिना ही जमीन जोतदारों को बोने के लिए दे देते थे. बाद में सालाना पैदावार का तीन चौथाई तक अपने हिस्से के रूप में वसूल कर लेते थे.

जमीन के दस्तावेजों में भी गड़बड़ी की जाती थी. आज भी ऊंची जाति के लोगों द्वारा भूमि सुधारों को अपने हित में इस्तेमाल किया जा रहा है. चूंकि भूमि के एकदम सही दस्तावेज हासिल नहीं थे, इसलिए भूमि के कटाव के कारण जमीन की सही हदबंदी न हो पाने की वजह से अकसर झगड़े होते थे.

इस समूचे इलाके में चंबल घाटी की आबादी सब से अधिक है. खेती लायक भूमि बंटवारों, बीहड़ों के निर्माण से

कोई भी अपराध करने के बाद चंबल के बीहड़ों को अपने लिए सब से सुरक्षित जगह समझने वाले ये व्यक्ति एक के बाद एक अपराध करते चले जाते हैं और देखते ही देखते एक सीधासादा आदमी बागी, लुटेरा या डकैत बन जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

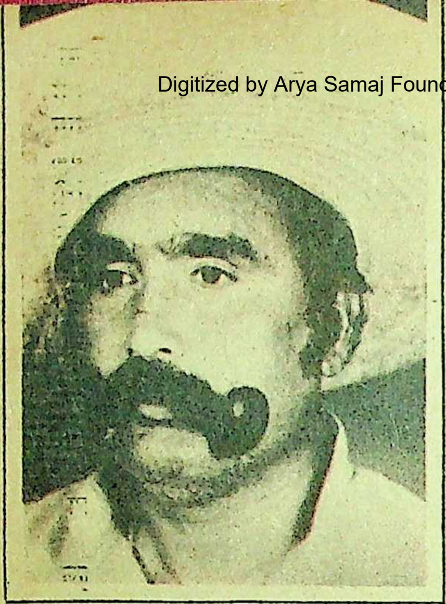

दिनोंदिन कम होती जा रही है. कहा जाता है कि हर वर्ष ये बीहड़ 2,500 से 3,000 एकड़ उपजाऊ भूमि को लीलते जा रहे हैं.

डाकू समस्या के कुछ कारण

इस इलाके में खेती लायक जमीन की इस कदर कमी है कि इस के बारे में इस इलाके में यह कहावत मशहूर है कि अगर एक परिवार में तीन बेटे हैं तो एक खेती करेगा, दूसरा नौकरी में जाएगा और तीसरे को बीहड़ों में जा कर डाकू बनना होगा.

इस इलाके में गरीबी भी बहुत है. यहां बहुत कम उद्योग हैं, जो हैं वे भी एक छोटे से इलाके में केंद्रित हैं. चूंकि 75 प्रतिशत मजदूर परंपरागत पेशे यानी खेती में लगे हुए हैं; चूंकि मजदूरों की मांग कम है, इसलिए मजदूरी भी कम है. बाहरी लोग भी इन का शोषण खूब करते हैं. पंजाब के बहुत से धनी किसानों ने शिवपुरी, शिवपुरी पौड़ी और दूसरे इलाकों में बड़ेबड़े फार्म खरीद लिए हैं जिन से वे लाखों रुपए कमाते हैं.

इसलिए इन इलाकों में जमीन को ले कर अनगिनत झगड़े व आदिवासियों के झगड़े होते हैं. मजदूरों का शोषण और ब्राह्मणों, ठाकुरों, जाटों और अहीरों के बीच दुश्मनी तो आम बात है. साथ ही हरिजनों की हालत सुधरने से सवर्णों और उन में भी वैर बढ़ा है.

भूतपूर्व कुख्यात डकैत मोहरसिंह : आत्मसमर्पण के बाद अब फिल्म क्षेत्र की ओर रुख.

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में दूरदूर तक फैले ये बीहड़ और चंबल नदी के कारण घने जंगल लुटेरों के लिए अच्छे पनाहगाह हैं. भौगोलिक स्थिति के अलावा जमींदारों के झगड़ों, जातिवाद, कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था, निरक्षरता, अज्ञानता तथा कानून और व्यवस्था के मामले में लापरवाही के कारण भी बहुत लोगों को डाकू बनने का जोश पैदा होता है.

विरासत में मिला मसला

ब्रिटिश हकूमत में इस बुराई को खत्म करने की कोशिश की गई थी, लेकिन उस समय मौजूद डाकुओं में से दोचार को भी खत्म नहीं किया जा सका. नतीजा यह हुआ कि आजादी मिलने के बाद दूसरे मसलों के साथ डाकुओं का मसला भी हमें विरासत में मिला.

एक बार यह साबित हो जाने पर भी कि ताकत के इस्तेमाल से चंबल घाटी को डकैतों से मुक्त नहीं कराया जा सकता, हमारी पुलिस व कानून और व्यवस्था बनाए रखने वाले दूसरे महकमों ने इस बारे में विदेशी शासकों के लंबे तजरबे का 1972 तक कोई लाभ नहीं उठाया.

सदियों की उपेक्षा और शिक्षा की कमी ने इस इलाके के लोगों के मन में निराशा भर दी है. वे हर झगड़े को बंदूक की नीक पर सुलझाना चाहते हैं. दलीलों का उन के जीवन में कोई महत्त्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है. वे भावनाओं में आ कर काम करते हैं. कोई भी गलत काम कर के वे बीहड़ों में चले जाते हैं जो उन के लिए सब से सुरक्षित जगह है. एक अपराध के बाद अपराधों का सिलसिला शुरू हो जाता है और एक सीधासादा आदमी बागी, लुटेरा, डकैत या मुजरिम बन जाता है.

सुधारात्मक दृष्टिकोण

मानसिंह के कुख्यात गिरोह का 1955 में सफाया हो गया. मई 1960 में विनोबा भावे के नेतृत्व में सर्वोदय कार्यकर्ता उस इलाके में गए और उन्होंने डकैतों से अपील की कि वे अपना अपराधपूर्ण जीवन त्याग दें. करीब 20 डकैतों ने कुछ प्रतिज्ञाओं के बाद अपने आप को पुलिस के सुपुर्द कर दिया. यह एक अच्छी शुरुआत थी, लेकिन डाकुओं की पूरी समस्या पर इस का असर नहीं के बराबर पड़ा. 1969 के बाद डकैतों की तादाद और बढ़ी.

1972 तक ये डकैत बुरी तरह लूटमार में लगे रहे. चंबल के बीहड़ों में इन्हीं कानून विरोधियों का बोलबाला था. इन इलाकों की सरकारें उन को दबाने के लिए जोरदार काररवाई कर रही थीं, पर उस का कोई खास नतीजा नहीं निकल रहा था. इधर जयप्रकाश नारायण समाज की इस सदियों पुरानी बीमारी को दूर करने के लिए इलाज ढूंढ़ने में लगे हुए थे.

अप्रैल, 1972 में 511 डकैतों ने अपनी इच्छा से श्री जयप्रकाश नारायण के सामने हथियारों समेत अपने आप को सौंप दिया. इस 'हृदय परिवर्तन' ने भारत ही नहीं विश्व के लोगों को भी चकित कर दिया. दुनिया वालों ने यही सोचा कि इस प्रकार के चमत्कार केवल महात्मा गांधी के देश में ही हो सकते हैं.

खूंखार लोगों के 'हृदय परिवर्तन' और उन के आगे से सभ्य लोगों का सा जीवन जीने के संकल्प से चंबल घाटी के वातावरण में शांति की उम्मीद बढ़ी. शुरू में सरकारी क्षेत्रों और स्वयंसेवी संस्थाओं में फिर से कामधंधों पर लगाने के लिए कार्य करने का बहुत अधिक उत्साह था. जावरा (मुरैना) के गांधी सेवा आश्रम (इसी संगठन ने डकैतों के हथियार डालने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी) के संचालक श्री सुब्बा राव का कहना है कि मध्य प्रदेश के 450 डाकुओं में से 300 जेल से छूटने के बाद अपने नए जीवन की शुरुआत कर चुके हैं. (लेकिन उत्तर प्रदेश के 100 डकैतों में से केवल 40 ही आंशिक रूप से नया जीवन शुरू कर सके हैं) उन्हें कुछ गायभैंसे दी गई हैं.

राजस्थान ने अपना वादा बिलकुल नहीं निभाया है और उस क्षेत्र के 50 डाकुओं में से एक को भी फिर से कामधंधे पर नहीं लगाया गया है. इसलिए उन में अधिकतर फिर बीहड़ों में भाग गए हैं.

यह संवाददाता उन में से कइयों से मिला तो वे बहुत अधिक निराश नजर आए.

जब यह पता चला कि बाद की काररवाई के बिना इस खामोश 'क्रांति' का उद्देश्य नष्ट हो जाएगा तो एक परोपकारी संस्था ने आर्थिक विकास का एक कार्यक्रम तैयार किया, जिस को उसी गांधीवादी संगठन ने अमल में लाना था, जिस ने डकैतों के हथियार डालने की योजना को संभव बनाया था.

इस दिशा में बहुत सी संस्थाओं ने डकैतों की दशा सुधारने के लिए सहायता की पेशकश की. जावरा (मुरैना) के गांधी सेवा आश्रम को अपनी एक ऐसी ही योजना के लिए 1977 में पश्चिम जरमनी की नेशनल एजेंसी व दूसरी एजेंसियों से लगभग 44 लाख रुपए की मदद मिली.

आश्रम के संचालक और दूसरे अन्य

(शेष पृष्ठ 80 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

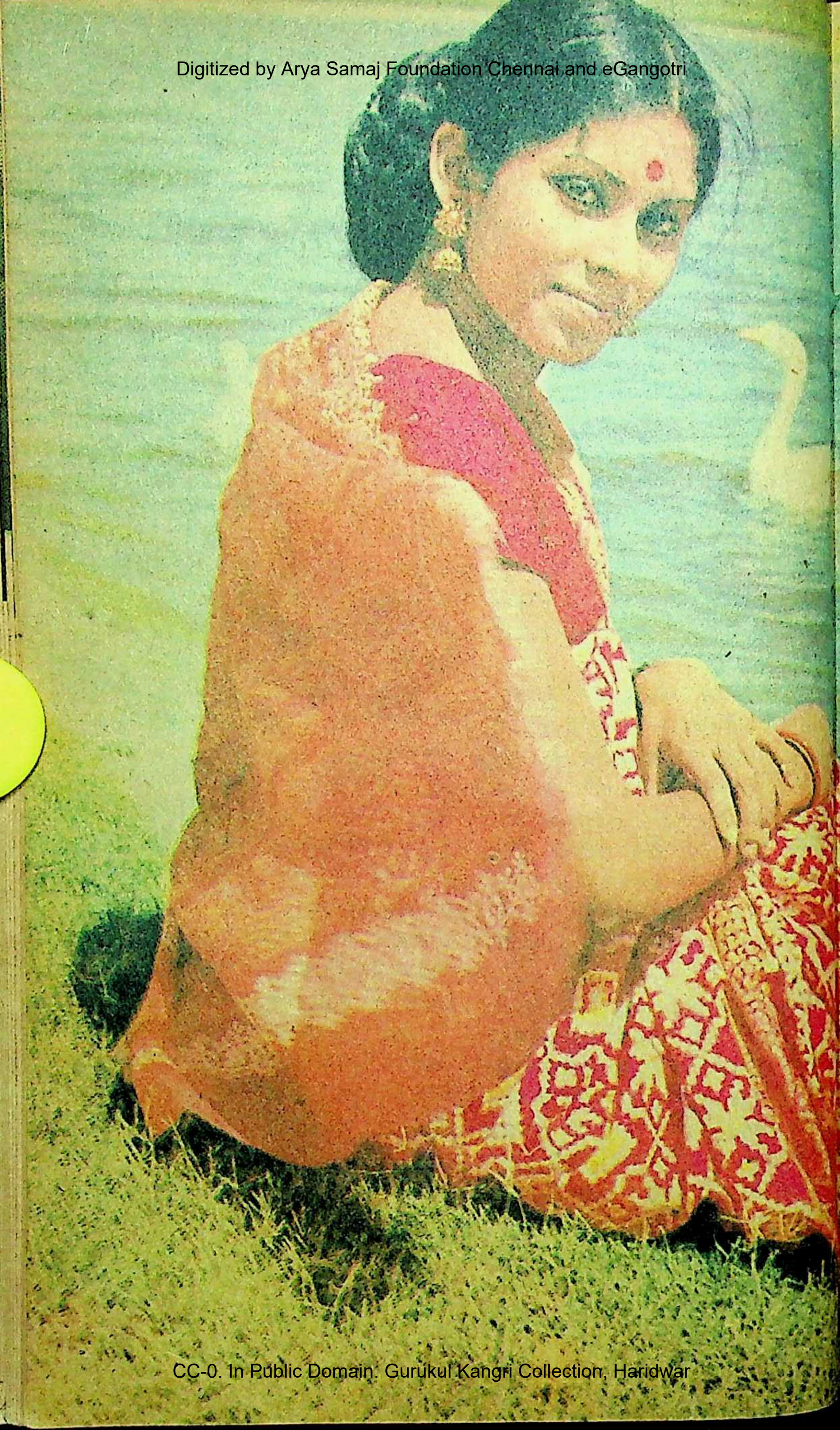

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे समीप

हवाओं में खुशबू घुली,
गुलमोहर में नई टहनी उगी,
बादल में बिजली चमकी
और फिजाओं में गीत की
मिठास रमी,
तुम जबजब मुस्करा कर आईं
मेरे समीप.
जब भी तुम मुझ से
दूर होती हो, लगता है
जैसे मैं बिना चांद वाली
रात हूं,
या एकदम सूखी और उजाड़
बरसात हूं.
और लगता है, मैं हूं
बिना मोती वाली सीप.
तुम्हारी मुस्कान मेरा
जीवन है
और तुम्हारा शृंगार
मेरी सांसें हैं.
और जब तुम कहती हो,
'तुम मेरे माथे का कुंकुम हो,
मेरी कलाई की चूड़ियां हो'.
तब जी चाहता है
मांग लूं तुम्हीं से तुम्हारी मुस्कान,
तुम्हारा शृंगार,
तुम्हारी चूड़ियों का शोर और
यह सांवली देह.
और कहूं बन जाओ तुम
मेरे घर का दीप.

—वनिता श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देश वासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साज-सज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसे लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्र-पत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है : आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों की 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार को इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा :

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंत से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार

सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर या चेक इस पते पर भेजें

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीत गाओ

गंधों से
प्राण मन जुड़ाओ,
तोड़ो यह मौन
गीत गाओ.

फुनगीफुनगी छितरा
तांबई उजाला,
शाखशाख पहने है
एक फूलमाला.

प्रिय पराग
स्वर का छलकाओ,
तोड़ो यह मौन
गीत गाओ.

रहरह कर लगी पुनः
पुरवाई बहने,
कानों में रस प्रसंग
रुकरुक कर कहने.

चंदन वन
जैसा मुस्काओ,
तोड़ो यह मौन
गीत गाओ.

—डा. इसाक 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म का सार

लघु कथा • रोशनलाल सुरीरवाला

दूसरों को सदाचार का पाठ पढ़ाने वाले न्यायाधीश के निजी जीवन में सदाचार का स्थान देख कर आगंतुक को दांतों तले उंगली दबानी पड़ी.

अवकाश प्राप्त न्यायाधीश ने द्वार खोला तो ग्रागंतुक श्रद्धा से भर उठा, "ग्राप! कैसा संयोग ग्रौर सौभाग्य है मेरा. मैं ग्राप के प्रवचन सुनने रोज रामलीला मैदान जाता हूं. कल रात ग्राप ने जिन छोटीछोटी नैतिकता की बातों की चर्चा की, उन से मैं बड़ा प्रभावित हुग्रा हूं. कितना सही कहा था ग्राप ने कि 'दैनिक सदाचरण ही धर्म का सार है. यदि भूल से हमें किसी का पत्र मिले तो उसे तुरंत डाक में छोड़ देना चाहिए या दूसरे दिन डाकिए को वापस कर देना चाहिए. कूड़ा नियत स्थान पर ही डालना चाहिए. कभी कोई क्यू (पंक्ति) नहीं तोड़नी चाहिए. टिकट में छूट पाने के लिए बच्चे की उम्र कम नहीं बतानी चाहिए. ब्लैक में टिकट खरीद कर सिनेमा नही देखना चाहिए.

" 'यही नहीं, खोटा सिक्का कहीं से ग्रा जाए तो उसे फिर नहीं चलाना चाहिए. किसी को मिलने का वचन दिया है तो उसे निभाना चाहिए. मांगी हुई वस्तु सावधानी से प्रयोग कर ज्यों की त्यों वापस करनी चाहिए.' कितना उपयोगी था ग्राप का यह कहना कि 'कानून की छोटीछोटी बातों का पालन करने में हमें स्वयं पहल करनी चाहिए.' ग्राप के इतने निकट से दर्शन पा कर मैं कृतार्थ हो गया."

"सदाचार समितिं के प्रधान के नाते मैं ने यह व्रत लिया है कि ग्राम ग्रादमी को छोटीछोटी नैतिक पगडंडियों द्वारा सर्वोच्च चरित्र शिखर पर ले जाऊं," न्यायाधीश ग्रत्यधिक विनम्र हो उठे, "कहिए, कैसे ग्राना हुग्रा, कौन हैं ग्राप?"

"जी, मैं राशनिंग इंस्पेक्टर हूं. राशनकार्डों को घरों पर ही चैक करने ग्रौर ग्रावश्यक परिवर्तन करने का ग्रधिकार है मुझे." ग्रागंतुक के दोनों हाथ ग्रभी भी जुड़े हुए थे, "ग्राप के पिताजी की मृत्यु हुए सात साल हो गए हैं किंतु राशनकार्ड में उन का यूनिट ग्रभी तक चलता ग्रा रहा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व विजय प्रकाशन

का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

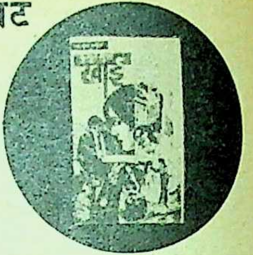

● **खाई** — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास. **2.50**

● **ये पति**

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है. **2.50**

● **मेहंदी का पौधा** — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा. **2.50**

विश्व पाकेट बुक्स

● **प्रतिहिंसा** — जनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है. **2.50**

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● **आधी रात को दिन** — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है. क्या था उन खिलौने में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था. **2.50**

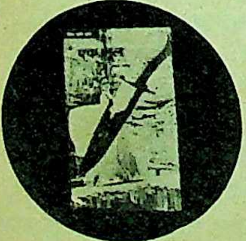

● **एक भूल** — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास. **2.00**

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

विश्वविजय प्रकाशन एम 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्ताक मर्चंट

भेंटवार्ता • स. खान

हिंदी फिल्मों में हास्य कलाकारों के लिए एक बंधाबंधाया ढर्रा है. उस के रहते क्या मुश्ताक अपनी अलग पहचान कायम कर सकेगा?

एक बार हमारे एक फिल्म निर्माता दोस्त ने हमें अपनी एक नई फिल्म का ट्रायल शो देखने की दावत दी ताकि मैं उस फिल्म के बारे में पत्रिकाओं में कुछ लिख सकूं. यह ट्रायल शो संगीतकार कल्याणजी आनंदजी के लिए रखा गया था. जब शो खत्म हुआ तो मैं ने कल्याणजी से फिल्म के बारे में जानना चाहा. उन्होंने मुसकराते हुए कहा, "दोनों फिल्में अच्छी हैं."

"दोनों फिल्में!" मैं ने आश्चर्य से पूछा, "फिल्म तो हम ने सिर्फ एक ही देखी है."

"जी हां, फिल्म तो एक है लेकिन कहानियां दो हैं, एक हीरो की और एक कामेडियन की."

कल्याणजी की बात सुन कर मैं अपनी हंसी नहीं रोक सका. उन्होंने बिलकुल सही बात कही थी. हमारी फिल्मों में हीरो की कहानी अलग चल रही है तो थोड़ी-थोड़ी देर बाद कामेडियन साहब भी हाथपांव मारते नजर आते हैं. लेकिन यह भी सही है कि आज का उभरता नया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्ताक मर्चंट (बीच में) फिल्म 'मजबूत' के एक सेट पर : मेरी नजर में सिनेमा से स्टेज की अहमियत ज्यादा है.

कामेडियन मुश्ताक मर्चंट जब भी किसी फिल्म में आया वह खुद कहानी का ही एक हिस्सा लगता है. उस का रोल भरती का रोल नहीं लगता. उस ने अपनी छोटी से छोटी भूमिका में भी अपनी अभिनय क्षमता से जान डाल दी. फिल्म 'सीता और गीता' और 'टैक्सीटैक्सी' का पारसी बाबा आप आज तक नहीं भूले होंगे.

मुश्ताक से सवालजवाब

फिल्म 'मजबूत' की शूटिंग के दौरान जब मुश्ताक मर्चंट से मुलाकात हुई तो मैं ने उन से उन के बारे में कुछ जानना चाहा.

मुश्ताक मर्चंट ने बताया, "फिल्मों में आने से पहले मैं स्टेज पर नाटकों में भाग लिया करता था. नरेंद्र बेदी की फिल्म 'जवानी दीवानी' मेरी पहली फिल्म रही. उस के बाद से अब तक मैं 'हाथ की सफाई,' 'धर्म कर्म,' 'दिल दीवाना,' 'गरीबी हटाओ,' 'बंडलबाज,' 'शोले,' 'कसमे वादे,' 'जाने बहार,' 'दामाद,' 'हमारे तुम्हारे,' 'सरकारी मेहमान,' 'झूठा कहीं का,' 'भयानक,' 'सांच को आंच नहीं' और 'सिनेमा सिनेमा' में काम कर चुका हूं."

"आप स्टेज से फिल्मों में आए हैं इसलिए अब आप फिल्मों को अहमियत देंगे या स्टेज को भी?" मैं ने पूछा.

"दोनों को ही. मगर फिल्मों की तुलना में स्टेज को, क्योंकि स्टेज पर गुंजाइश ज्यादा होती है और स्टेज पर एक्टिंग करने से दिल को तसल्ली मिलती है. साथ ही दर्शकों से दाद भी, जिस से काम करने में जोश पैदा होता है. इसलिए मेरी नजर में स्टेज की अहमियत ज्यादा है.

फिल्मों के प्रति दृष्टिकोण

"आप फिल्में बिजनेस के हिसाब से साइन करते हैं या अपनी भूमिकाओं के हिसाब से?"

"बिजनेसमैन हर चीज को बिजनेस की नजर से देखता है और मैं बिजनेसमैन नहीं, एक एक्टर हूं. मेरी नजर में अच्छी भूमिकाएं ही दौलत के बराबर हैं. मेरे कहने का अर्थ यही है कि अच्छी भूमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामों से एक्टर दर्शकों में लोकप्रिय होता है और लोकप्रिय होने का नतीजा होता है घर पर निर्माताओं की भीड़ लगना."

"क्या आप की जात से कभी किसी दूसरे कामेडियन को नुकसान पहुंचा?"

"जी नहीं, मैं ने कभी किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाने के बारे में नहीं सोचा."

"आप के साथ आप के साथी कलाकारों का व्यवहार कैसा रहता है?"

"सब ही दोस्त हैं और किसी ने कभी मेरे साथ कोई गलत हरकत नहीं की, चूंकि मेरा अपना व्यवहार भी सब के साथ अच्छा रहा है और इनसान यदि खुद अच्छा हो तो लोगों का व्यवहार भी उस के साथ अच्छा ही रहेगा."

"फिल्म 'भयानक' में आप का प्रेस फोटोग्राफर एवं जर्नलिस्ट का रोल लोगों ने बेहद पसंद किया और यह रोल 'शोले' के [illegible] की तरह मशहूर हो गया था. फिर क्या बात है कि आप अब तक उसी स्थान पर हैं जहां पहले थे?"

"यह सब संयोग की बात है. 'शोले' को जो सफलता मिली है वह अब तक किसी भी हिंदी फिल्म को नहीं मिली. यदि 'भयानक' भी चल गई होती तो मैं भी चल गया होता और कामेडियनों में मेरा भी अपना एक अलग स्थान होता."

मुश्ताक मर्चंट बहुत ही साफ ढंग से बातें करते हैं और उतनी ही बातें करते हैं जितना वह उपयोगी समझते हैं. मुश्ताक मर्चंट के व्यक्तित्व का यह रंग भी सभी हास्य कलाकारों से बिलकुल अलग है. कार्य और लगन को समर्पित मुश्ताक मर्चंट से बहुत सी आशाएं हैं. यदि यह लगन यूं ही निरंतर बनी रही तो निश्चय ही एक दिन वह फिल्मी आकाश में एक सितारा बन कर चमकेंगे. ●

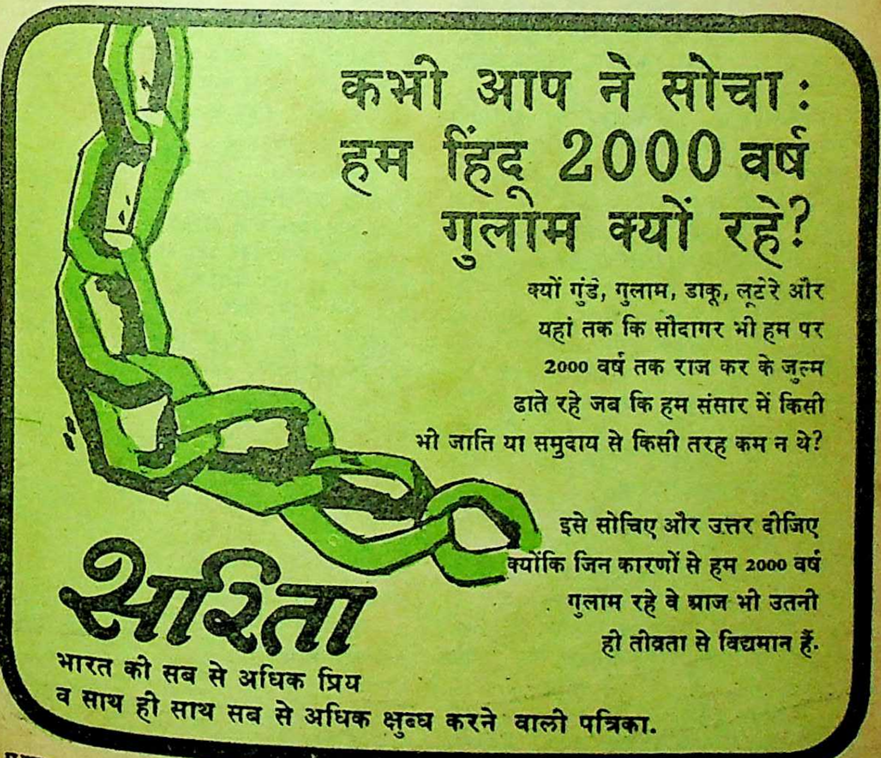

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए
स. : समय काटिए/चलताऊ
म. : मनोरंजक/देख लें
अ. : अपव्यय/समय की बरबादी
नि. : निर्देशक
मु. पा. : मुख्य पात्र

दोस्ताना : दो नायकों और एक नायिका के त्रिकोण की वही जानीपहचानी कहानी. नामी लोगों के बावजूद फिल्म कहीं भी सामान्य स्तर से ऊपर नहीं उठी है. **नि. :** राज खोसला, **मु. पा. :** अमिताभ, जीनत, शत्रुघ्न. **स.**

खूनखराबा : राजा और राणा पहले पक्के दोस्त होते हैं फिर एकदूसरे के दुश्मन बन जाते हैं. अपहरण, बलात्कार और खूनखराबे की कहानी. घिसीपिटी फिल्म. **नि. :** दीपक बाहरी, **मु. पा. :** विनोद मेहरा, बिंदिया, अमजद. **अ.**

प्यारा दुश्मन : अमजद को ले कर बनाई गई फिल्म. बचपन में बिछुड़े दो भाई और एक बहन के मिलन की कहानी, बीच में मारपीट, हिंसा और लूटमार के सभी पुराने फार्मूले. **नि.:** आनंद सागर, **मु. पा. :** अमजद, विनोद मेहरा, योगिता, विद्या. **स.**

काला पानी : एक स्मगलर का बेटा बड़ा हो कर पुलिस इंस्पेक्टर बनता है और अपने ही पिता को पकड़वाता है. कहींकहीं फिल्म का संपर्कसूत्र टूटा सा नजर आता है. **नि. :** शिबु मित्रा, **मु. पा. :** शशि कपूर, नीतू, अजीत. **अ.**

निशाना : प्रताप की पत्नी जानकी का हार लेने के लिए ठाकुर उस का अपहरण करता है, लेकिन हार उस के हाथ नहीं लगता. ठाकुर की लड़की कविता राजा से प्यार करती है. तभी पता चलता है कि राजा जानकी के हत्यारे का बेटा है. अंत में राजा सब रहस्य खोलता है. अपराधी पकड़ा जाता है. **नि. :** के. राघवेंद्रा राव बी. ए., **मु. पा. :** जितेंद्र, पूनम ढिल्लों, प्रेम चोपड़ा, उत्पल दत्त. **अ.**

फिर वही रात : दौलत के लालच में खलनायक द्वारा नायिका को डराडरा कर मार डालने के षड्यंत्र की कहानी. निर्देशक के रूप में डैनी की पहली फिल्म, लेकिन निर्देशन के साथसाथ अभिनय में भी वह इस फिल्म में शून्य रहा. **नि. :** डैनी, **मु. पा. :** राजेश खन्ना, किम, अरुणा ईरानी, डैनी. **स.**

किस्मत : जीवन दो छोटे बच्चे श्यामा और मोती का अपहरण करना चाहता है लेकिन गलती से वह यशोदा की लड़की गंगा को उठा ले जाता है. बड़ा होने पर मोती जीवन से लड़ता है और अंत में उसे मारने में सफल होता है. मोती और गंगा का विवाह हो जाता है. निर्देशक ने बीच में वेश्या से नायक के विवाह का भी चित्रण किया है. **नि. :** भीष्म कोहली, **मु. पा. :** मिथुन, रंजीता, शक्ति कपूर, उर्मिला भट्ट. **अ.**

लूटमार : विक्रम विंग कमांडर भारत के पिता और पत्नी की हत्या कर के भाग जाता है. भारत उस की तलाश करता है. पुलिस और सैनिकों की मदद से भारत विक्रम को मारने में सफल होता है. **नि. :** देव आनंद, **मु. पा. :** देव आनंद, टीना, राखी, अमजद, शक्ति कपूर. **अ.**

अब्दुल्लाह : खलील रेगिस्तान में लोगों को लूटता है और उन के बच्चों को उठा ले जाता है. खलील एक हिंदू औरत को मार देता है. उस के बच्चे को अब्दुल्लाह पालता है. खलील को पता चलता है कि एक दिन बच्चे के कारण उस की मौत होगी. वह बच्चे को मारने की कोशिश करता है और अंत में नायक के हाथों स्वयं मारा जाता है. **नि. :** संजय खान, **मु. पा. :** संजय, जीनत, राज कपूर. **अ.**

अपने पराए : बड़ा भाई अपने चचेरे भाई को काम के लिए बारबार पैसा देता है और छोटा भाई व्यापार में खराब कर देता है. लेकिन मंझली बहू और भैया उसे घर से निकलवा देते हैं. एक दिन बड़े भैया और भाभी को मंझली बहू और मंझले देवर की चालाकी का पता चलता है तो वह जा कर छोटे भाई और उस की पत्नी, बच्चों को फिर घर ले आते हैं. **नि. :** बासु चटर्जी, **मु. पा. :** शबाना, अमोल, उत्पल दत्त, आशा लता. **उ.**

सलाम मेम साहब : सड़कों पर नाचनेगाने वाले की कहानी जो सुखी जीवन की तलाश में इधरउधर भटकने के बाद अपने भीतर की खुशी तलाश कर लेता है. सामान्य फिल्म में सामान्य गीत संगीत. **नि. :** असरानी, **मु. पा. :** असरानी, जरीना बहाव, मंजु, रंजीत. **स.**

बिन मां के बच्चे : अपने पिता से बिछुड़े दो बच्चों की कहानी जो लंबीचौड़ी नाटकीयता के बाद अंत में मिल जाते हैं. सामान्य स्तर पर बनी सामाजिक फिल्म में गीत और संगीत भी सामान्य ही रहा. **नि. :** सत्येन बोस, **मु. पा. :** श्रीराम लागू, तनुजा, बिंदु. **स.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेरहम : एक पुलिस अधिकारी द्वारा अपने ही वरिष्ठ अधिकारी को पकड़ने की एक आदर्शवादी कहानी, जिस में मनोरंजन के नाम पर सभी किस्म के फार्मूले भर दिए गए हैं. निर्देशक की पकड़ की वजह से फिल्म रोचक हो गई है. **नि. :** रघुनाथ झालानी, **मु. पा. :** संजीवकुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, रीना राय. **अ.**

हम नहीं सुधरेंगे : तीन हमशक्ल आदमियों की कहानी. एक बदमाश चांद, एक रिश्वत लेने वाला चपरासी मदनलाल और एक जासूस पी. के.. चांद पी. के. को पकड़ कर उस की शक्ल का फायदा उठाना चाहता है, लेकिन अंत में पुलिस मदनलाल की मदद से उस तक पहुंच जाती है. चांद मारा जाता है. **नि. :** असरानी, **मु. पा. :** असरानी, मंजु बंसल, रीता भादुड़ी, योगिता बाली. **स.**

एक गुनाह और सही : वर्मा शंकर को बैंक लूटने के लिए मजबूर कर देता है. वर्मा शंकर की पत्नी पारो से बलात्कार करता है, पारो वर्मा को गोली मार देती है. पुलिस से बचने के लिए शंकर और पारो को भागना पड़ता है. अंत में शंकर वर्मा को मारने में सफल होता है. **नि. :** योगी कथूरिया, **मु. पा. :** सुनील दत्त, परवीन बाबी, मदन पुरी. **अ.**

जुदाई : पतिपत्नी के बीच अहं की लड़ाई को ले कर उठे पारिवारिक मतभेद की जानी पहचानी कहानी, जिस में वास्तविकता कम और अविश्वसनीय फार्मूले ज्यादा हैं. **नि. :** टी. रामाराव, **मु. पा. :** अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा. **स.**

नीयत : तीन दोस्तों और एक ही लड़की को ले कर बनाए गए प्रेम संबंधों की कहानी, जिस में स्मगलर पिता का पुत्र एक दोस्त मारा जाता है, एक रास्ते से हट जाता है और नायकनायिका का मिलन हो जाता है. हर किस्म के फार्मूलों का समावेश. **नि. :** अनिल गांगुली, **मु. पा. :** शशि कपूर, रेखा, जितेंद्र. **स.**

लहू पुकारेगा : सत्यजीत और संदीप दो अनाथ लड़के हैं. संदीप को एक धनी आदमी गोद ले कर पढ़ालिखा कर वकील बनाता है और सत्यजीत एक बदमाश बनता है. परिस्थितियां सत्यजीत को डाकू बना देती हैं और अंत में वह अपने भाई को बचाने के लिए दूसरे बदमाश की गोली का शिकार बन जाता है. **नि. :** अख्तर उल इमान, **मु. पा. :** सुनील दत्त, सायरा बानो, फिरोज खान, अमजद. **अ.**

यारी दुश्मनी : शंकर और बिरजू दो दोस्त हैं, लेकिन एक बार 10 लाख रुपए के हीरे हाथ लगने पर बिरजू शंकर को पकड़वा कर स्वयं धनी बन जाता है. जेल से छूटने पर शंकर को जब इस बात का पता चलता है तो वह बिरजू को मारने की कोशिश करता है. लेकिन एक डाकू से रुपयों को बचाने के लिए दोनों मिल कर लड़ते हैं. अंत में डाकू मारा जाता है. **नि. :** सिकंदर खन्ना, **मु. पा. :** सुनील दत्त, अमजद, रीना राय. **अ.**

कुरबानी : राजेश और अमर दो प्रसिद्ध चोर हैं. बदमाशों का एक गिरोह राजेश से किसी दूसरे बदमाश के घर चोरी करने के लिए कहता है, लेकिन उस के मना कर देने पर मारपीट करता है. एक मुठभेड़ में बदमाशों से लड़ते हुए राजेश को बचाने के लिए अमर अपनी कुरबानी दे देता है. **नि. :** फिरोज खान, **मु. पा. :** विनोद खन्ना, फिरोज खान, जीनत, अमजद. **स.**

थोड़ी सी बेवफाई : नीमा का विवाह एक धनी परिवार में अरुण से होता है, लेकिन अरुण से व्यापार में कुछ गलती हो जाने पर वे गरीब हो जाते हैं. जैसेतैसे अरुण घर को संभालने की कोशिश करता है, लेकिन नीमा अपने पति पर शक कर के अपने मायके चली जाती है. अंत में बहुत देर के बाद एक नाटकीय घटना के सहारे पतिपत्नी का मिलन होता है. **नि. :** इस्माइल श्रोफ, **मु. पा. :** शबाना, राजेश खन्ना, श्रीराम लागू, देवेन वर्मा. **स.**

बंबई का महाराजा : गांव का एक सीधासादा किसान जमींदार के जुल्म से तंग आ कर डाकू बन जाता है और फिर बंबई में पहुंच कर वहां की अपराध दुनिया का महाराजा बन जाता है. सामान्य ढंग से निर्देशित फिल्म जिस में नयापन कुछ भी नहीं है. **नि.:** शिबू मित्रा, **मु. पा. :** अमजद, विद्या सिन्हा, गायत्री, राजकिरण. **स.**

चेहरे पे चेहरा : एक वैज्ञानिक की कहानी जो ऐसी दवा बनाना चाहता है जो आदमी की बुराई को खत्म कर दे, लेकिन दवा ऐसी बन जाती है जो अच्छाई को खत्म कर आदमी को शैतान बना देती है. नया विषय लेकिन प्रस्तुतीकरण उबाऊ. **नि.:** राज तिलक, **मु. पा. :** संजीव, सुलक्षणा, रेखा, शत्रु. **स.**

सौ दिन सास के : भवानी देवी अपने बड़े बेटे की बहू शीला पर बहुत अत्याचार करती है लेकिन उस के छोटे बेटे की बहू दुर्गा उस को ठीक कर देती है. अंत में सब का सुखद मिलन होता है. **नि. :** विजय साढ़ाना, **मु. पा. :** आशा पारिख, रीना राय, राज बब्बर, ललिता पवार, [illegible] **स.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.

प्रमोद भटनागर मूल्य : 3.00

कार में हत्या :

कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?

जनमित्र मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :

देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :

इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी. द्वारा.

विश्वविजय प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मों की चांदी में किस की चांदी

लाखों और करोड़ों रुपया एकएक फिल्म बनाने में खर्च करने वाले निर्माताओं व प्रयोगशालाओं के बीच कुछ हजार रुपयों की चांदी के लिए उठा विवाद—जो दिन ब दिन तूल पकड़ता जा रहा है...

लेख : श्रीशचंद्र मिश्र

बात सोने या हीरों को ले कर हो तो लड़ाई की वजह समझ में आ सकती है. लेकिन चांदी जैसी मामूली चीज के लिए बड़ा विवाद खड़ा हो जाना सचमुच ताज्जुब की बात है. खास तौर से जब लड़ाई उस फिल्म उद्योग में हो जहां हर किस्म के लड़ाईझगड़ों को आपसी बातचीत के जरिए ही सुलझा लिया जाता है.

यह झगड़ा है निर्माताओं व उन प्रयोगशालाओं के बीच, जो फिल्मों को धोने के साथसाथ उन के प्रिंट भी तैयार करती हैं. निर्माताओं का कहना है कि फिल्मों को धोने व प्रिंट बनाने के समय जो चांदी बचती है उस के मालिक वे हैं. जब कि प्रयोगशालाओं के प्रबंधकों की दलील है कि फिल्मों को धोने के बाद बच रहे कूड़ाकरकट को शुरू से ही वे खपाते रहे हैं, इसलिए उस कूड़ाकरकट में मौजूद चांदी भी उन की अपनी है.

इस झगड़े को अच्छी तरह समझने के लिए पहले मोटे तौर पर यह समझना जरूरी है कि फिल्म और चांदी का रिश्ता क्या है.

फिल्म जब बनती है तो सारे दृश्यों की शूटिंग कच्ची फिल्म पर की जाती है. इस कच्ची फिल्म पर चांदी की परतें होती हैं. शूटिंग करते समय कई ऐसे दृश्यों को भी ले लिया जाता है जो बाद में गैरजरूरी लगने लगते हैं. ऐसा भी होता है कि एक ही दृश्य को कई कोणों से शूट कर लिया जाता है. ताकि संपादन के समय बढ़िया शाट को फिल्म में रख दिया जाए. बहरहाल, एक सामान्य फिल्म को जो दो या सवा दो घंटे की होती है, फिल्माने में 50 हजार फुट कच्ची फिल्म लग जाती है.

इस कच्ची फिल्म के नेगेटिव को जब विभिन्न रसायनों से धोया जाता है तो फिल्म पर चढ़ी चांदी की परत रसायनों के उस घोल में मिल जाती है. इस घोल से चांदी को अलग किया जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. शुरू में लगता है कि बहुत कम चांदी ही कच्ची फिल्म से निकल पाती होगी. लेकिन जब इस का हिसाब लगाया तो परिणाम काफी चौंका देने वाले थे.

ईस्टमैन कलर यानी रंगीन फिल्म के 1,000 फुट नेगेटिव से 60 ग्राम चांदी मिल जाती है. इसी के पाजीटिव से जब फिल्म का प्रिंट बनाया जाता है तो उस में हर 1,000 फुट पर 25 ग्राम चांदी मिलती है. यानी यदि कच्ची फिल्म 50 हजार फुट है तो उस के नेगेटिव की धुलाई से तीन किलो चांदी मिल सकती है. फिल्म का एक प्रिंट यदि 14 रील का हो तो उस में से 350 ग्राम चांदी मिलती है. इस प्रकार यदि किसी फिल्म के 100 प्रिंट निकाले जाएं तो चांदी की कुल मात्रा बैठती है 35 किलो.

फिरोज खान की 'कुरबानी' के एक विज्ञापन में कहा जाता है—"फिल्म के 175 प्रिंट पूरी दुनिया में तहलका मचा रहे हैं." इतने प्रिंटों का मतलब है—61 किलो 250 ग्राम चांदी. चांदी की कीमत इस समय लगभग ढाई हजार रुपए प्रति किलो है. इस हिसाब से वह डेढ़ लाख रुपए से भी ज्यादा लागत की बैठती है.

निर्माता, निर्देशक, अभिनेता देव आनंद : प्रयोगशालाओं को नेगेटिव रील की धुलाई का पूरा भुगतान देने के बाद धुलाई की कीमत का 40 प्रतिशत से भी ज्यादा रकम की चांदी प्रयोगशाला के पास यूं ही भला कौन निर्माता छोड़ना चाहेगा?

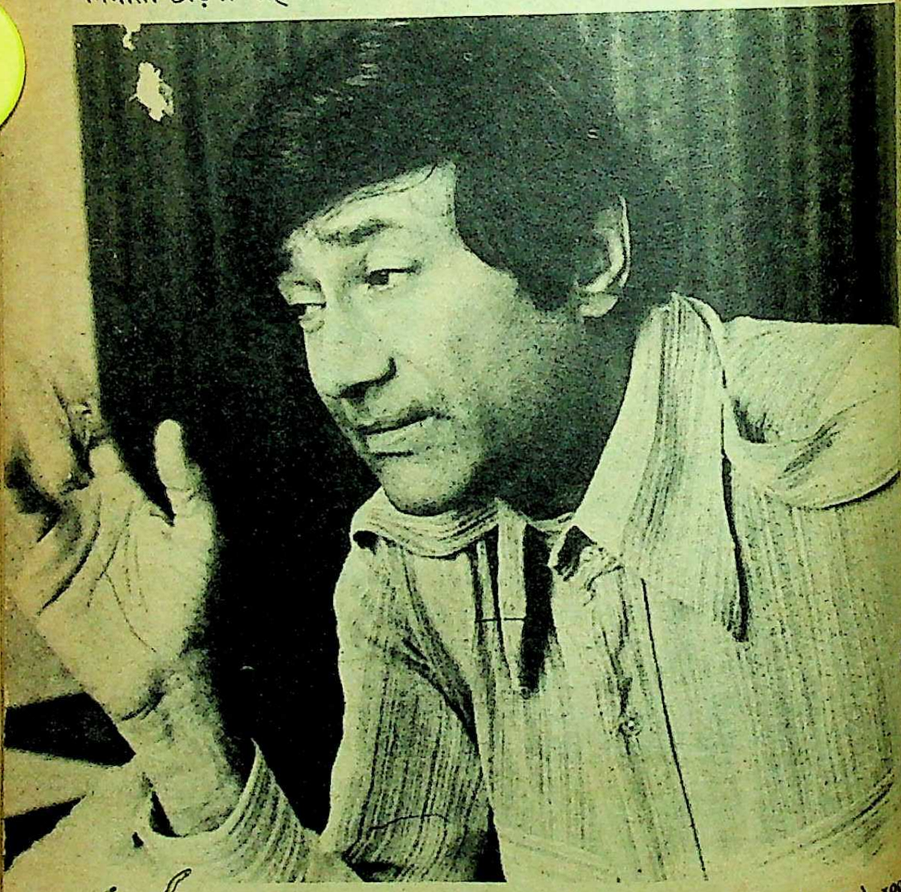

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरह [illegible] बची चांदी शुरू से ही प्रयोगशालाओं की संपत्ति रही है. बड़ी प्रयोगशालाएं रसायनों के घोल से चांदी निकाल कर उसे दोबारा इस्तेमाल कर लेती हैं. जब की छोटी प्रयोगशालाएं इस घोल को बेच देती हैं.

पैंतीस मिलीमीटर की कालीसफेद फिल्म के नेगेटिव से हर हजार फुट पर 45 ग्राम व पाजीटिव पर 30 ग्राम चांदी प्राप्त होती है. लेकिन कालीसफेद फिल्म की चांदी को रसायनों के घोल से पूरी मात्रा में नहीं निकाला जा पाता. उस में 40 से 60 प्रतिशत तक चांदी ही मिल पाती है. वैसे भी हमारे यहां अब कालीसफेद फिल्में बनती ही कितनी हैं.

विवाद अब क्यों उठा?

सवाल यह है कि निर्माताओं को इस चांदी का मालिक बनने का फितूर अब क्यों सवार हुआ? पहले उन्होंने इस बारे में क्यों नहीं सोचा?

निर्माताओं की अखिल भारतीय परिषद के अध्यक्ष श्रीराम वोहरा कहते हैं, "हम ने शुरू में इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि हम विवाद के नए मोर्चे नहीं खोलना चाहते थे." लड़ाई का यह नया मोर्चा उन्होंने अब इसलिए खोला है क्योंकि चांदी अब पहले जैसी मामूली धातु नहीं रह गई है बल्कि अपना महत्त्व जताने लगी है. 1966 में चांदी की जो कीमत थी उस में अब तक 15 गुना वृद्धि हो चुकी है.

पचास रोल नेगेटिव की धुलाई का प्रयोगशालाएं 340 रुपए प्रति रोल के के हिसाब से 17,000 रुपए वसूल करती हैं, जब कि इस में मिलने वाली चांदी की कीमत आज की दर से बैठती है—7,500 रुपए यानी धुलाई की कीमत का 40 प्रतिशत से भी ज्यादा हिस्सा. जाहिर है कि कौन निर्माता इस रकम को हाथ से जाने देगा.

चौदह रील की फिल्म का रिलीज

अखिल भारतीय फिल्म निर्माता परिषद के अध्यक्ष श्रीराम वोहरा : "हम ने शुरू में इस चांदी के बारे में इसलिए कुछ नहीं कहा क्योंकि हम विवाद के नए मोर्चे नहीं खोलना चाहते थे."

प्रिंट 265 रुपए प्रति 1,000 फुट के हिसाब से 3,710 रुपए में बनता है. इस में 900 ग्राम चांदी होती है, जो दो हजार रुपए से अधिक की कीमत पर बिक सकती है. 'आर. वो.' कलर की फिल्म से तो ज्यादा चांदी भी मिल सकती है.

चांदी की कीमतें पिछले दिनों चांदी की किल्लत की वजह से बढ़ी हैं. विश्व में चांदी का उत्पादन 8,200 मैट्रिक टन है जब कि मांग 13,200 मैट्रिक टन की है. इस में से 1,900 मैट्रिक टन चांदी अकेले अमरीका में ही खप जाती है. एक तिहाई से ले कर एक चौथाई चांदी फिल्म या फोटोग्राफी में इस्तेमाल होती है.

इस समय मूल विवाद तो निर्माताओं व प्रयोगशालाओं के बीच है. फिल्मों की चांदी से किस की चांदी हो पाती है, यह देखने की बात है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावली

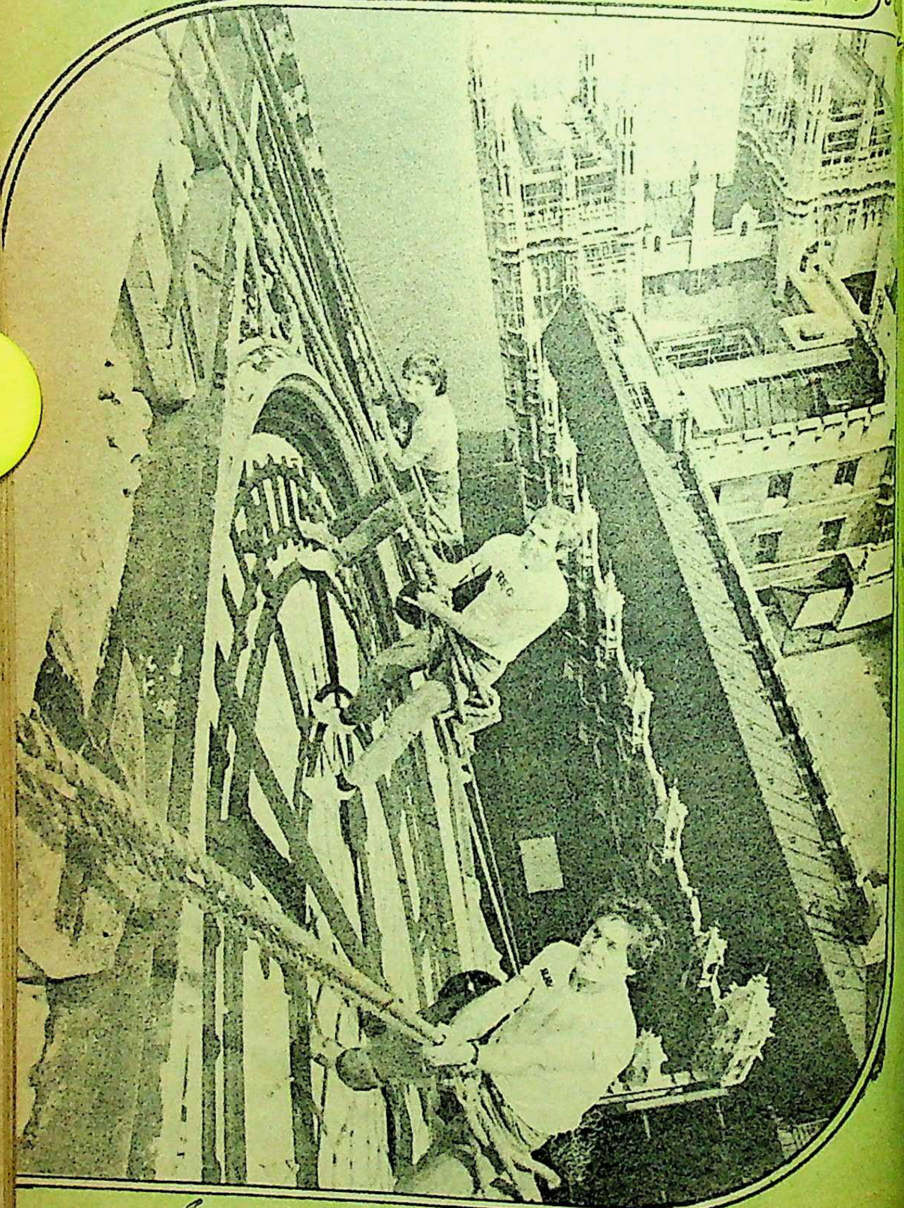

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेग व टैरी डोसेल जब इंगलैंड की विश्वविख्यात घड़ी बिग बेन की सफाई करने गए तो वे अपने साथ अपनी विवाहित बहन लिडा वार्ड को भी ले गए. आखिर 80 फुट ऊंची घड़ी पर चढ़ने का अपना एक अलग ही रोमांच होता है. बिग बेन की हर तीसरे साल में सफाई की जाती है जिसे चार आदमी पांच दिन में कर पाते हैं.

जीते जी भले ही नरक भुगतना पड़े लेकिन स्वर्ग जाने के मोह में लोग अपनी तमाम जमा पूंजी खर्च कर तीर्थयात्रा करने से नहीं चूकते. दिल्ली के लाल किला के पास के मैदान में ऐसे ही तीर्थ यात्री भोजन का मजा ले रहे हैं. लेकिन क्या सचमुच ऐसी यात्रा का कोई सुख है?

भारतीय राजनीति में तोड़फोड़ के हिमायती राजनारायण ने पिछले दिनों विरोधी पार्टियों को एक करने की जितनी भी कोशिशें कीं, सभी असफल रहीं. क्यों? चूंकि काठ की हांडी आंच पर बारबार थोड़े ही चढ़ती है.

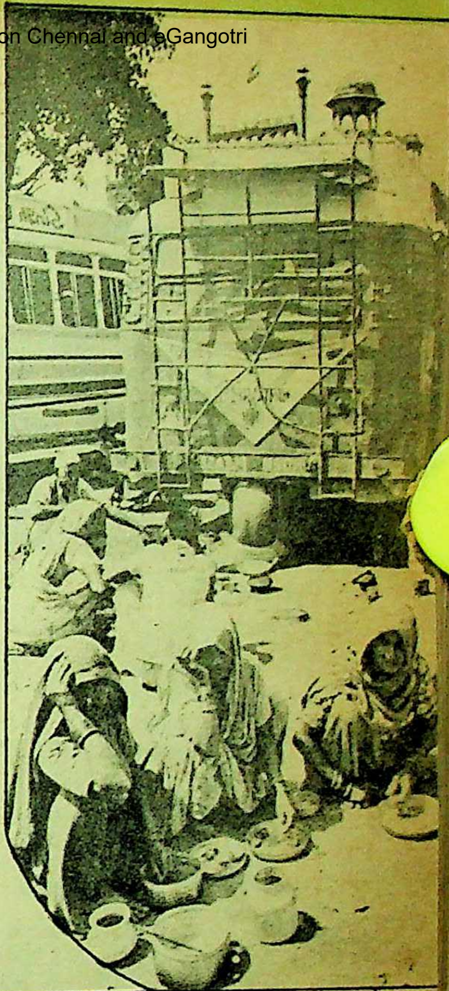

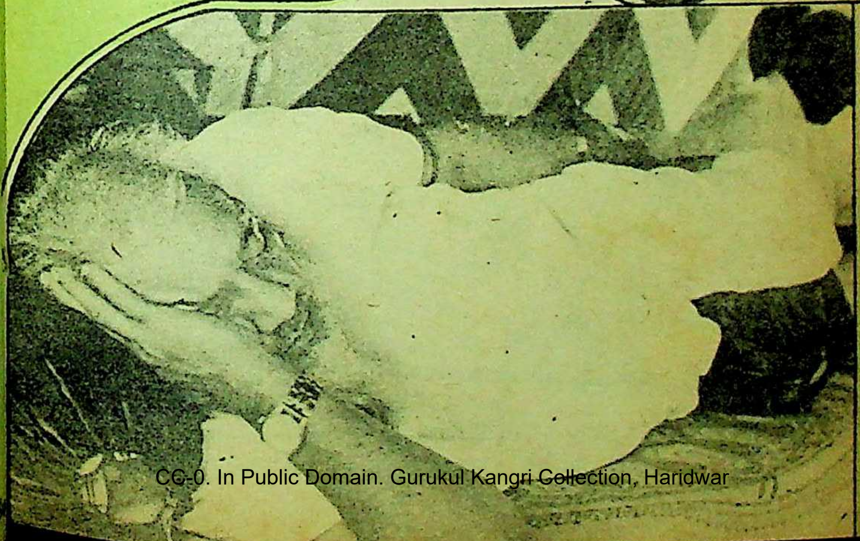

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ छोटे हुए तो क्या? उत्साह और लगन तो छोटी नहीं है. यह है बर्मिंघम (इंगलैंड) का 19 वर्षीय डग्न. बचपन से ही इस के दोनों हाथ काफी छोटे हैं, लेकिन निराश होने की बजाए इस ने हवाई जहाज उड़ाने का सिलसिला शुरू कर दिया है. इस का कहना है. "हवाई जहाज उड़ाना मोजे पहनने स ज्यादा मुश्किल नहीं है."

किसी व्यक्ति को महान साबित करने के लिए सरकारी पैसे का किस तरह दुरुपयोग किया जा सकता है, इस का सब से बड़ा उदाहरण है 'सन आफ इंडिया' प्रदर्शनी, जिस में संजय गांधी के चित्रों को ऐसे सजाया गया है मानो वह कोई महान विभूति रहे हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुपिंगन (जरमनी) के आरनल्फ ड्यूमल ने हैंडबाल के मैच में कलाबाजी क्या खाई कि प्रसिद्ध छायाकार एरिक वाडमैन ने इस करतब को कैमरे में उतार लिया. खेल लेखकों को अंतरराष्ट्रीय समिति की यही चित्र 1979 के सर्वश्रेष्ठ चित्र के रूप में भाया.

वेस्टइंडीज के बैंड ने मधुरधुन क्या छेड़ी, लोग सुधबुध खो कर सड़कों पर नाचने लगे. पुलिस कर्मचारी भी भला क्यों पीछे रहते? अपने कसेकसाए वदन को ढीला कर वे भी संगीत की मादक लहरों पर थिरकने लगे

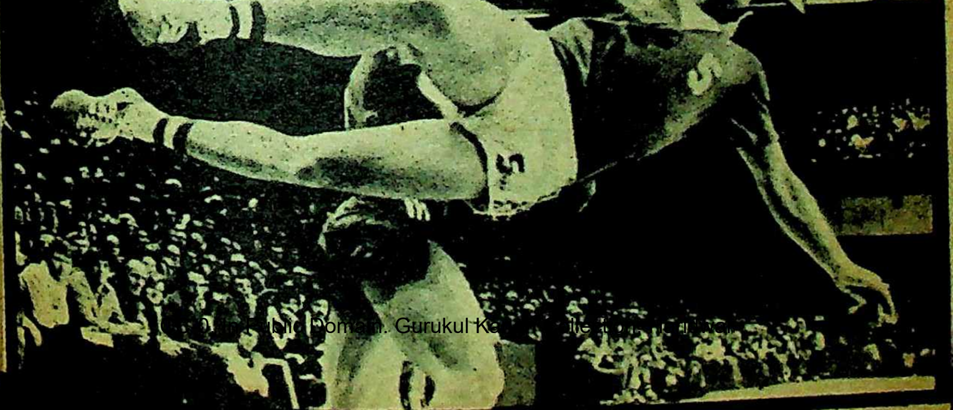

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

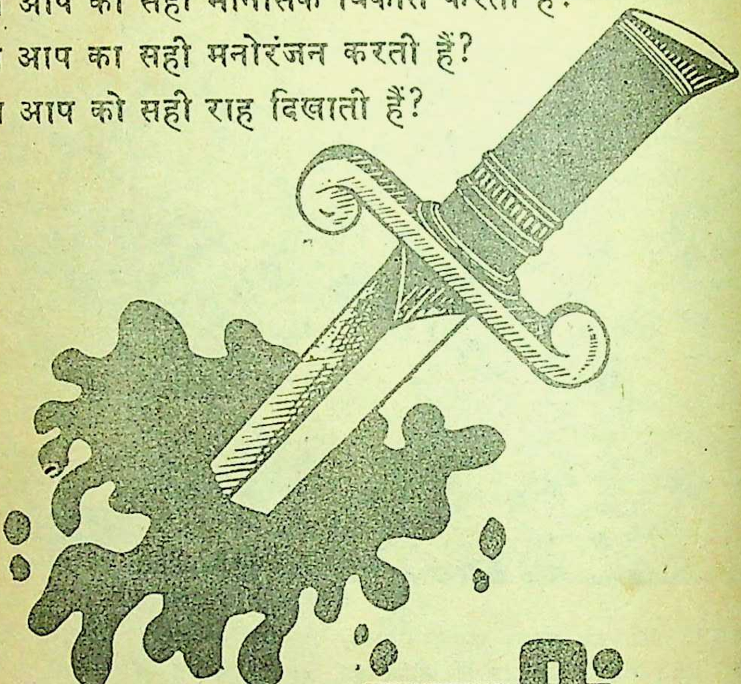

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं

ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कशमीर में कालीन उद्योग में पिसते बालक

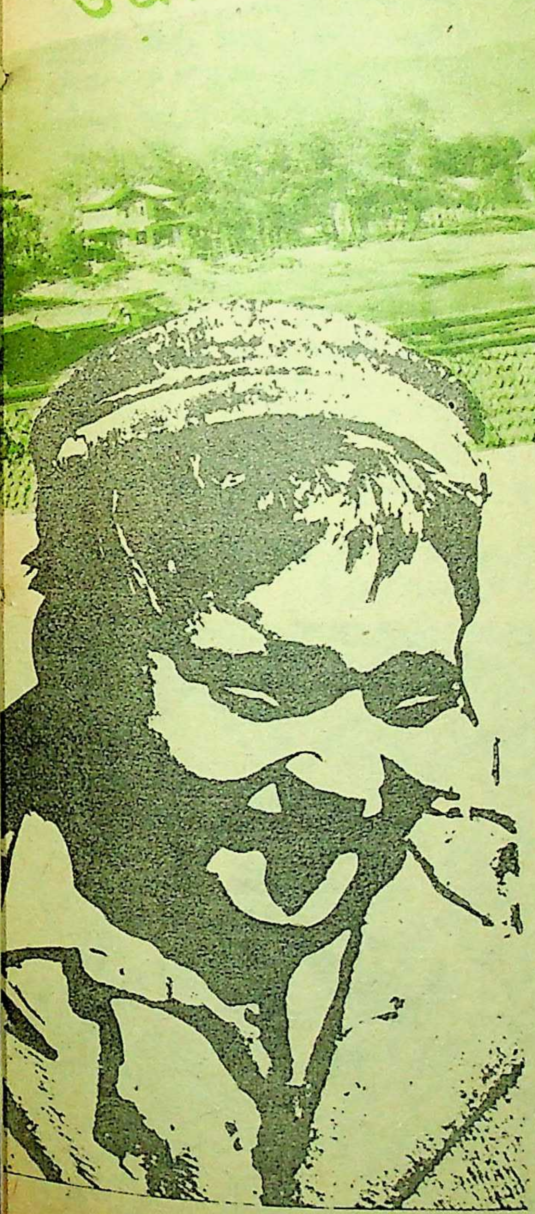

लेख • महर उद्दीन खान

जिन बच्चों को स्कूल जाना चाहिए वे गंदे सीलन भरे कमरों में कालीन के करघे पर आठ से 12 घंटे तक काम कर रहे हैं. इन बच्चों का भविष्य अंधकारमय होने से बचाने का दायित्व आखिर किस पर है?

कालीन उद्योग कशमीर में बड़ी तेजी से पनप रहा है. इस का सबूत इस बात से मिलता है कि वर्ष 1979-80 में यहां से 25 करोड़ रुपए के कालीनों का निर्यात किया गया, जब कि इस से पिछले साल सिर्फ 12 करोड़ रुपए के कालीनों का निर्यात किया गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य में कालीन उद्योग में इस समय लगभग एक लाख लोग रोजगार पर लगे हुए हैं. इन में से करीब आधे ऐसे बच्चे हैं, जिन की उम्र स्कूल जाने लायक है. सरकारी आंकड़े हालांकि बच्चों की संख्या कम कर के दिखाते हैं. मगर उन के अनुसार भी 26,000 बच्चे कालीन बुनने के काम में लगे हुए हैं.

राज्य सरकार की बेरुखी

यह हाल तो तब है, जब राज्य में बच्चों से कोई धंधा कराने पर पाबंदी है. मगर राज्य सरकार इस पाबंदी को लागू नहीं करती. उस का कहना है कि इस पाबंदी पर अमल करने से राज्य को आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी. कालीन का उद्योग चलाने वालों की भी दलील है कि छोटे बच्चे जिन की उंगलियां कोमल होती हैं, कालीन अच्छा बुनते हैं. अगर इन की जगह बड़ी उम्र के लोगों को लगा दिया गया तो कालीन उद्योग बरबाद हो जाएगा.

इस स्थिति में सरकार ने गरीब और यतीम बच्चों के नाम पर कालीन उद्योग मालिकों को अपने यहां बच्चे रखने की इजाजत दे रखी है. ट्रेनिंग स्कूलों में आठ व 10 साल की उम्र के बच्चों को दाखिल किया जाता है, जब कि कानूनन यह उम्र 14 साल से ऊपर होनी चाहिए. कुछ ज्यादा लालची लोग तो आठ साल से कम उम्र के बच्चों से भी काम लेते हैं.

इस का नतीजा यह होता है कि जिन बच्चों को स्कूल जाना चाहिए वे गंदे सीलन भरे कमरों में कालीन के करघे पर आठ से 12 घंटे तक काम करते हैं. आठ साल के बच्चों से मालिक यह उम्मीद करते हैं कि वह चार रुपए रोज पर सवेरे आठ बजे से रात आठ बजे तक काम करें. जरा सा आलस दिखाने पर इन बच्चों की पिटाई भी की जाती है.

कालीन बनाने के इन कारखानों में

एक ओर सरकार की ओर से बच्चों से काम कराने पर पाबंदी है मगर दूसरी ओर सरकार इस पाबंदी को लागू करने से कतराती भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करने की परिस्थितियां भी काफी खराब हैं. अधिकतर कारखाने बिना किसी पाबंदी के काम करते हैं. छोटे उद्योगों के बारे में जो कानून हैं उन का वे बिलकुल पालन नहीं करते. कानूनी उलझनों से बचने के लिए बहुत से कारखानों के मालिक ठेकेदारों को काम सौंप देते हैं. ये ठेकेदार अपने घर में एक या दो करघे लगाए रखते हैं और अपने प्रभाव और रिश्वत देदिला कर फैक्टरी एक्ट से संबंधित सब कानूनों से बचे रहते हैं. बच्चों के बारे में कानूनी पकड़ से बचने का इन का दूसरा तरीका यह है कि ये लोग बच्चों को अपने यहां नौकरी पर न दिखा कर प्रशिक्षण पर रखना बताते हैं.

पिछले कुछ सालों में केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण केंद्रों पर 10,000 बच्चों को कालीन बुनने का प्रशिक्षण दिया गया. इस समय 10,000 और बच्चे प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. इस बारे में किसी के पास आंकड़े नहीं हैं कि कितने बच्चे प्राइवेट कारखानों में यह काम सीख रहे हैं.

बच्चों के कालीन बुनने के काम में लगने की वजह से यहां के स्कूलों में दाखिले तो कम हो ही रहे हैं, साथ ही बहुत से बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं. इस बात को देखते हुए सरकार ने घोषणा की थी कि बुनाई सीखने वाले बच्चों को बुनाई के साथसाथ स्कूली शिक्षा भी दी जाएगी पर इस घोषणा पर अभी ठीक से अमल नहीं किया गया.

कालीन उद्योग में काम करने वाले बच्चों के बारे में अभी सरकारी तौर पर तो कोई सर्वेक्षण नहीं किया गया है, पर डाक्टरों का कहना है कि कालीन उद्योग में लगे बच्चों की आंखें जल्दी खराब हो जाती हैं तथा फेफड़े के रोग भी उन्हें जल्दी तथा ज्यादा होते हैं.

बच्चों के इस शोषण के खिलाफ खूब कहा जाने के बावजूद सरकार ने

कालीन उद्योग चलाने वालों की दलील है कि अगर छोटे बच्चों से कालीन न बुनवाया जाए तो यह उद्योग बरबाद हो जाएगा. यानी उद्योग को बनाए रखने के लिए बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ किया जाता रहेगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बारे में न तो कोई नया कार्यक्रम तैयार किया है और न ही बच्चों के काम करने की स्थिति को ही सुधारने की कोशिश की है. इस के विपरीत श्रम आयुक्त को यह कहा जा रहा है कि बच्चों से काम कराने की औपचारिक सरकारी पाबंदी को हटा लिया जाए.

बहुत से जानकारों की राय में यह दलील गलत है कि बच्चे ही अच्छा कालीन बुन सकते हैं. इन का कहना है कि बच्चों को इस धंधे में लगाने की खास वजह यह है कि उन्हें मजदूरी कम देनी पड़ती है. जम्मूकशमीर में इस उद्योग की कम से कम मजदूरी आठ रुपए रोज है. मगर बच्चों को इस से बहुत कम मजदूरी दी जाती है.

जैसेजैसे कशमीर में कालीन उद्योग की प्रगति हुई, वैसेवैसे बच्चों का संकट भी बढ़ता गया. पर पिछले कुछ समय से यह उद्योग गिरावट की ओर है. तो भी

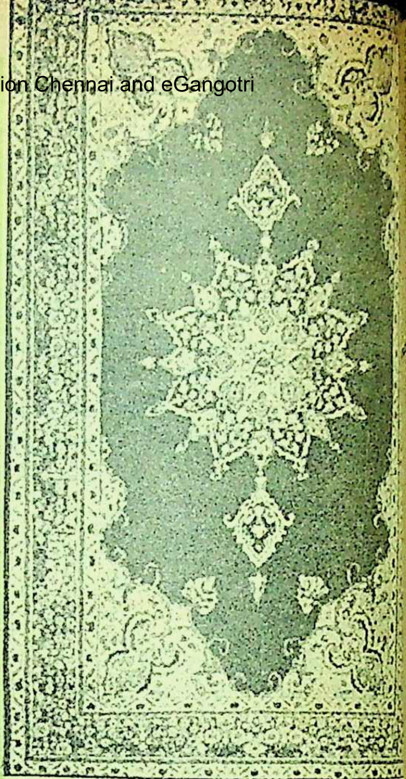

कशमीर का कालीन उद्योग आज संकट के दौर में है. पर अब वे बच्चे कहां जाएं जिन के स्कूल जाने के दिन कालीन बुनने की भेंट चढ़ गए?

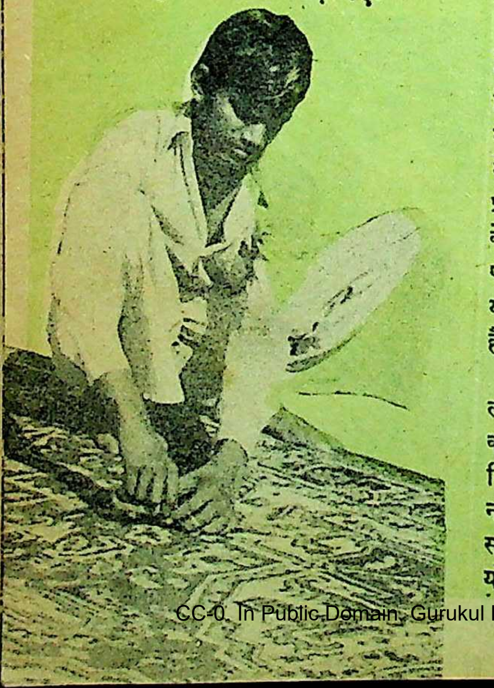

बच्चे संकट में हैं, क्योंकि उद्योग छोड़ कर वे जाएं भी कहां? स्कूल जाने के उन के दिन तो कालीन बुनने की भेंट चढ़ गए.

पिछले दिनों जो ऊनी कालीन 180 से 200 रुपए प्रति वर्ग फुट के हिसाब से बिक रहा था, उस के दाम 140 से 180 रुपए प्रति वर्ग फुट रह गए हैं. दूसरे किस्म के कालीनों का भाव भी 30 से 40 रुपए प्रति वर्ग फुट तक गिर गया है. इस मंदी के कारण कई लोग बच्चों के साथ मारपीट कर उन्हें काम से भगाना चाहते हैं या कम मजदूरी पर काम कराना चाहते हैं.

अभी हाल ही में पुलिस ने ऐसे तीन लोगों को गिरफ्तार किया है जो बच्चों को तंग करते थे. मगर समस्या इन गिरफ्तारियों से हल हो जाएगी, ऐसा नहीं दिखता. इस के लिए तो वहां की सरकार को कोई ठोस और दीर्घकालीन योजना बनानी होगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए व अन्य संस्मरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड़, नई दिल्ली-110055.

मेरे कालिज के एक प्राध्यापक बहुत ही भुलक्कड़ थे. वह अपनी ही कही बात को भूल जाते थे.

एक बार उन की कक्षा में दो लड़के बातें करने में व्यस्त थे. कुछ देर तक देखने के बाद वह प्राध्यापक उन लड़कों से गुस्से में बोले, "तुम दोनों कक्षा से बाहर निकल जाओ."

इस पर लड़कों ने अपनी पुस्तकें समेटीं और कक्षा से बाहर निकल गए.

कुछ देर बाद वे दोनों पिछले दरवाजे से आ कर कक्षा में बैठ गए और फिर बातें करने लगे. प्राध्यापक पढ़ाने में व्यस्त थे. उन लड़कों की बातों से उन का ध्यान बंटा तो वह डांटने की भंगिमा में बोले, "बातें क्यों करते हो? देखा नहीं बातें करने पर मैं ने उन लड़कों को कक्षा से बाहर कर दिया है." —कमल 'मिश्रा'

✦

✦ रेलवे में कुछ रिक्त पदों के लिए मुझे लिखित परीक्षा के लिए एक आवेदन पत्र भरना था. अकसर मैं आवेदन पत्र भरते समय अपने बड़े भाई की सहायता लिया करती थी. लेकिन उस दिन मैं ने स्वयं ही आवेदन पत्र भर दिया.

मेरा जन्म दिल्ली के विक्टोरिया हस्पताल में हुआ था. अतः आवेदनपत्र के जन्म स्थान वाले खाने में मैं ने विक्टोरिया हस्पताल लिख दिया.

आवेदनपत्र पूरा भरने के बाद मैं ने उसे भाई साहब को दिखाया. उसे पढ़ कर वह बड़ी मासूमता से बोले, "हां, वैसे तो सारा ठीक है, लेकिन तुम ने हस्पताल का वार्ड नंबर नहीं लिखा." —सरोज अरोड़ा **(सर्वश्रेष्ठ)**

✦

कुछ ही दिन पहले मैं अपने भतीजे की छुट्टी का प्रार्थनापत्र उस के कालिज में देने गया. बरामदे में खड़े कुछ विद्यार्थियों को मैं ने वह प्रार्थनापत्र दिखाया तो एक ने कहा, "सामने वाले कमरे में जो अध्यापक हैं उन्हें दे दीजिए."

मैं उस ओर मुड़ा तो उन में से एक लड़का बोला, "जरा जोर से बोलिएगा, वह कुछ ऊंचा सुनते हैं."

मैं कमरे में गया और उस अध्यापक को प्रार्थनापत्र देते हुए बोला, "यह छुट्टी का प्रार्थनापत्र है."

"क्या?" अध्यापक ने पुस्तक से अपनी नजरें उठाते हुए कहा.

मैं ने समझा कि वह वास्तव में ऊंचा सुनते हैं. इसलिए मैं ने जरा और जोर से कहा, "यह छुट्टी का प्रार्थनापत्र है."

इस पर वह मेरी तरफ गौर से देखते हुए बोले, "क्या मैं बहरा हूं जो इतनी ज़ोर से चिल्ला रहे हो?" —प्रेमनारायण ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमाओं का सुख

कहानी • चंद्रमोहन प्रधान

परिवार और समाज ने जब सीमा को विनय की जीवन संगिनी नहीं बनने दिया तो उस ने विनय को वह सब समर्पित कर देना चाहा जिस की प्राय: हर पुरुष स्त्री से अपेक्षा रखता है, मगर सीमा को दिल की गहराइयों से प्रेम करने वाला विनय क्या इस समर्पण को स्वीकार कर सका?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय ने मनुहार से पूछा, "सीमा, तुम्हारी सीमाएं तुम्हें कब तक घेरे रहेंगी?"

सीमा मुसकराई, "वीनू, स्त्री की ये सीमाएं ही हैं, जो उसे एक निश्चित घेरे में सुरक्षित रखती हैं. किसी तरह ये सीमाएं टूट जाएं, चाहे उसी के प्रमादवश या किसी की जोरजबरदस्ती, बहकावे में आ कर, तो वह ऐसी निःसीम हो जाती है कि उस का अपना कोई आकार, कोई स्थिर व्यक्तित्व नहीं रह जाता."

"यह कैसी बात है?" विनय ने आश्चर्य से पूछा.

"तुम पुरुष हो न," सीमा ने उस की आंखों में झांका, "तुम क्या जानो कि स्त्री के लिए इन सीमाओं का क्या महत्त्व है. मेरा मतलब विवाह पूर्व की स्थिति से है. यदि यह सीमा एक बार टूटती है तो स्त्री ऊपर से भले ही सामान्य दीखे, सब कुछ पूर्ववत प्रतीत हो, पर भीतर से उस का सारा व्यक्तित्व बदल चुका होता है. उस के जीवन में नया अध्याय शुरू हो जाता है. स्त्री सामान्यतः दो जिंदगियां जीती है—एक तो इस संधि रेखा से पहले का जीवन और दूसरा इस के बाद का सारा जीवन."

विनय ने ठंडी सांस ली. दूर पेड़ों की फुनगी पर झांक रही कालिज की वेधशाला की चमचमाती एल्यूमीनियम की छत को देखता हुआ वह बोला, "तुम ठीक कह रही हो. सच कहूं तो पुरुष जहां एक तरफ चाहता है कि उस की प्रेयसी के आसपास कोई घेरा, वर्जना उस के लिए रुकावट बन कर न रहे, वहीं अचेतन मन की गहराई में यह भी चाहता है, कि वह यों ही दुर्लभ, दुष्प्राप्य बनी रहे."

"सच!" सीमा के चेहरे पर उत्सुकता झलक रही थी.

"ये फिल्मी बातें मत बघारो सीमा," मां ने नाराज हो कर कहा, "कालिज में तुम लोग पढ़ने जाती हो या प्रेम करने?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सच कह रहा हूं," विनय ने उस का हाथ दबा कर कहा, "विवाह पूर्व की इन सीमाओं का प्रत्येक पुरुष भीतर से प्रशंसक रहता है. यह और बात है कि अपने बहिर्मुखी स्वभाव के कारण वह इन्हें हटाने का ऊपर से प्रयास करता रहे."

सीमा ने विनय का हाथ अपने गाल से लगा कर पूछा, "जब तुम यह स्वयं समझते हो तो मुझ से ऐसा क्यों कहते हो?"

"वही, पुरुष चरित्र की विशेषता," विवश मुसकान के साथ विनय ने कहा, "जो प्रत्येक वस्तु को तत्काल उस के संपूर्ण रूप से पा लेना चाहता है. बच्चों की ओर कभी ध्यान दिया है तुम ने? कोई भी रंगीन, सुंदर वस्तु मिले तो उसे पकड़ कर तत्काल मुंह में डाल लेना चाहते हैं. सच पूछो तो पुरुष एक तरह का विकसित बच्चा ही है. उस में संयम स्त्री से कम होता है. वह जल्दबाज, आग्रही और बहिर्मुखी होता है. पर मजे की बात यह है कि उस की प्रेमिका हो या कोई अन्य स्त्री, वह उस के विवाह पूर्व के घोर संयम और सीमाओं का अचेतन मन में प्रशंसक रहता है."

"चाहता भी है, नहीं भी चाहता." सीमा हंसी, "शास्त्रों ने नाहक स्त्री चरित्र को ही जटिल कहा है."

"वह तो है ही, जो विकसित अधिक है, वह जटिल भी अधिक होगा. स्त्री शारीरिक, मानसिक, दोनों तरह से पुरुष से अधिक विकसित है. यह शरीरशास्त्री स्वयं मानते हैं," विनय ने कहा, "खैर, चलो, कैंटीन में चाय पीते हैं. अभी पीरियड शुरू होने में देरी है."

इधरउधर देख विनय ने उस की हथेली को होंठों से लगाया और उठ खड़ा हुआ.

रात को सीमा की मां ने उसे बताया, "सीमा, रमेश फिर आया था."

सीमा विचलित हुई. रमेश उस का और विनय का सहपाठी है. पड़ोसी होने के बाद भी विनय का अपने घर आना उस की मां को पसंद नहीं, लेकिन रमेश के प्रति वह बहुत उदार हैं, क्योंकि रमेश के पिता संपन्न ठेकेदार हैं, शहर में उन के दो सिनेमाघर हैं.

मां ने दीवार को देखते हुए कहा, "रमेश कहता था कि तुम विनय से पहले की तरह ही मिलतीजुलती हो. इस से कालिज में तरहतरह की बातें फैलती हैं. कई बार तुम्हें मना किया है कि विनय के फेर में न पड़ो. तुम्हें अपनी भलाईबुराई समझ में क्यों नहीं आती? कोई बच्ची तो हो नहीं!"

"अम्मां, रमेश को तुम नहीं जानतीं," सीमा ने गंभीर हो कर कहा, "कालिज में तो वह सिर्फ वक्त काटने और राजनीति करने जाता है, पढ़ने नहीं. विनय से तो वह चिढ़ेगा ही. हमेशा अव्वल आने वाला प्रतिभाशाली छात्र है विनय, और शरीफ ऐसा कि उस सा दूसरा ढूंढ़ने पर भी न मिले."

"वह शरीफ है या बदमाश, इस की बात नहीं," मां ने समझाया, "बात है तुम्हारी बदनामी की. यों मिलनेजुलने से तो बात फैलेगी ही, फिर तुम्हारी शादी अच्छी जगह कैसे हो पाएगी? आज कालिज में बात है, कल बाहर भी फैल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है, किसकिस का मुंह बंद करती फिरोगी? विनय में आखिर ऐसा क्या है?"

"अम्मां," सीमा ने सिर झुका कर कहा, "हम लोगों ने पढ़ाई के बाद विवाह करने का निश्चय कर लिया है."

"विवाह!" मां आसमान से गिरीं, "वह एक प्राइवेट कंपनी के मैनेजर का लड़का, और तुम्हारे पिताजी इतने बड़े व्यापारी, उद्योगपति! शहर में हम लोगों की कितनी इज्जत है, बिरादरी में कितना रोबदाब है. तुम इस सब पर पानी फेरना चाहती हो? तुम्हारे लिए तो बड़ेबड़े घरानों से रिश्ते आएंगे. विनय क्या बनेगा हद से हद कहीं प्रोफेसर या मामूली अफसर. गिनी बंधी तनख्वाह..."

"अम्मां," सीमा ने धीरज से कहा, "विनय के पिताजी लखपति भले ही न हों, पर उस की अपनी खूबियों को तो देखो. क्या सभी धनी गुणवान व योग्य होते हैं? रमेश तो कालिज का दादा है. विनय जीवन में बहुत आगे बढ़ेगा. हम लोगों में सच्चा प्रेम है, और हम ने एक हो कर रहने की कसम खा ली है."

"ये फिल्मी बातें मत बघारो, सीमा," मां ने नाराज हो कर कहा, "कालिज में तुम लोग पढ़ने जाती हो या प्रेम करने? हम लोग क्या कुछ नहीं हैं? खुद रिश्ते बनाने लगी हो? अब जल्दी ही तुम्हारा इंतजाम करना होगा. आज ही तुम्हारे पिताजी को कहती हूं."

सीमा और विनय की घनिष्ठता देख कर ईर्ष्यालु लड़कों की छेड़छाड़ का नया मसाला मिल गया था. रमेश के दल के लड़के उस की शह पर दोनों को हर संभव मौके पर तंग करने से नहीं चूकते थे. फलतः दोनों कालिज में जरा सावधान, अलगथलग रहने लगे.

उस दिन दो पीरियड खाली थे. विनय चाय पीने कैंटीन में आया तो सोचने लगा, 'सीमा भी यहां होती तो

कितना मजा आता.' चाय का कप सामने रखे वह यही सोच रहा था कि पीछे से आवाज आई :

"इश्क कुछ पड़ गया है ठंडा सा,
आजकल इम्तहान हैं, प्यारे."

विनय ने चौंक कर पीछे देखा. उधर रमेश और उस के दल के तीनचार लड़के बैठे चाय, सिगरेट पी रहे थे. उस ने अनसुना कर चाय पर ध्यान लगाया कि दूसरी आवाज आई, "भई, कोई जा कर सीमा के पिताजी को इतना तो कह दे :

"क्यों नहीं इस की शादी तू करता,
तेरी लड़की जवान है, प्यारे!"

विनय का धीरज खत्म हो गया. वह झटके से उठा और चाय के दाम दे कर बाहर निकल आया. निकलते हुए उस ने जलती निगाहों से रमेश को देखा, पर रमेश ठहाका लगा कर हंस पड़ा.

दूर तक उन लोगों के ठहाके उस का पीछा करते रहे.

छुट्टी के बाद, मौका निकाल कर अपने ब्लाक के पिछवाड़े विनय ने सीमा को पकड़ा. दोनों धीरेधीरे बातें करते, कालिज के द्वार की ओर बढ़े.

"सीमा," विनय ने जरा खेद के साथ कहा, "लड़के बहुत उछाल रहे हैं हम लोगों की बात को."

उस ने कैंटीन वाली घटना बता दी.

सीमा ने विचारमग्न हो कर कहा, "साथ की लड़कियों की तो पूछो ही मत.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही कहती रहती हैं कि 'भई हीरोइन अमीर है तो क्या, इश्क में यह सब नहीं देखते.' अग्रिम दावत मांगने लगी हैं."

विनय हंसा, जरा कड़वी हंसी. बोला, "ठीक ही तो कहती हैं, तुम बड़े बाप की बेटी हो, मैं मामूली आदमी हूं, हम दोनों का···"

"**वीनू,**" सीमा ने आंखें तरेरीं, "तुम भी वही बात कहने लगे. स्त्री का स्तर उस के पिता के नहीं, उस के पति के अनुसार होता है और मैं ने तुम्हें अपना पति मान लिया है. अब तुम जो हो, वही मैं हूं. पिताजी के धनवैभव से मुझे क्या मतलब? उस के हकदार तो मेरे भाई हैं."

अभिभूत हो कर विनय ने उस के हाथ का स्पर्श किया. दोनों चुपचाप चलते रहे. फाटक पर आ कर सीमा ने देखा, उस की गाड़ी नहीं आई है. घड़ी देखी तो याद आया, आज छुट्टी घंटे भर पहले हो गई.

उस का असमंजस भांप कर विनय ने पूछा, "रिक्शा रोक लूं?"

"रिक्शा नहीं, भई. रिक्शे पर घर लौटने से घर वाले न जाने क्याक्या कल्पनाएं करने लगेंगे कि मैं कहां चल दी थी."

"तो चलो, मैं घर पर छोड़ आता हूं तुम्हें."

"यह तो और भी बुरा होगा, वीनू," सीमा ने जरा मनुहार के साथ कहा, "बुरा न मानना, पर अभी थोड़े दिन सावधानी रखनी जरूरी है."

"ठीक कहती हो. तो चलो, उस रेस्तोरां में बैठते हैं," विनय ने थोड़ी दूरी पर स्थित एक छोटे से रेस्तोरां की ओर संकेत किया, "वहां से मैं तुम्हारी गाड़ी को भी देखता रहूंगा."

"चलो."

रेस्तोरां में उस समय सन्नाटा था. विनय ने ऐसी मेज चुनी, जहां से वह कालिज के फाटक पर निगाह रख सकता था. बैरे ने ग्राहक देख, खुशी के साथ झट चाय ला रखी.

'कुछ हलका नाश्ता भी तो लो," विनय ने सीमा से आग्रह किया और फिर बैरे से बोला, "कुछ नमकीन बिस्कुट और ताजे केक हों तो लाना."

तभी बाहर कुछ शोर सुन पड़ा. सड़क पर स्त्रीपुरुषों का एक छोटा सा जलूस हाथों में बैनर, पोस्टर लिए निकल रहा था. जलूस में नारे लग रहे थे : 'स्त्रियां केवल भोगविलास की वस्तु नहीं हैं,' 'नारी पर अत्याचार बंद करो,' 'बलात्कारियों को फांसी दो,' आदि.

बेनर, पोस्टरों में भी ये ही नारे अंकित थे. जलूस सामने से गुजर गया. सीमा ने देखा, विनय का सिर झुका हुआ है.

"**क्या** सोच रहे हो?" उस ने उत्सुकता से पूछा.

"कुछ नहीं, बस शर्मिंदा हूं, क्योंकि मैं भी तो पुरुष ही हूं."

"तो क्या हुआ?" सीमा ने [illegible] आश्वासन दिया, "स्त्रियां भी तो बहुत [illegible] बुरी होती हैं, पर मैं नहीं हूं. मैं [illegible] लज्जित होऊं उन के कारण? तुम [illegible] शरीफ मर्द हो तो तुम क्यों..."

"ऐसी बात नहीं, सीमा," विनय ने दर्द भरे स्वर में कहा, "स्त्रियों [illegible] मुच में बुरे होने की स्थिति [illegible] दो होती है. जो भी बुरी [illegible] अधिकतर पुरुषों के कारण [illegible] होंगी. इस में अधिक दोष [illegible]

"है तो सही बात [illegible] पुरुष ही करता है."

"और अपने [illegible] स्त्री पर ऐसा क[illegible] और पशुता का [illegible] विनय का चेहरा [illegible] करने वाले स[illegible] बल्कि घोर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी शादी तय हो गई है. जानते हो, किस के साथ? उसी रमेश के साथ." बिलकुल सहज हो कर सीमा कह गई पर विनय सुन कर कहीं खो गया.

लोग असामान्य होते हैं, यौन विकृतियों के रोगी. और ये समाज के लिए भार स्वरूप हैं. इन्हें तुरंत गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए."

"हां, यह तो प्रेम नहीं, पशुता ही है."

"**प्रेम** का तो सवाल ही नहीं उठता, सीमा. बस, ताकत का जोश दिखाना कि हम मर्द हैं, तुम औरत हो. आदमी चांद पर जा चढ़ा, पर उस की 'आदिम पशुता' में रत्ती भर कमी नहीं आई. सच पूछो तो यौन मनोविज्ञान साफ कहता है, स्त्री की सहमति और स्वीकृति से हुआ सहवास जहां पुरुष को सच्चा आनंद और स्थायी तृप्ति देता है, ऐसी जबरदस्ती उसे केवल आत्मग्लानि और पछतावे के सिवा कुछ नहीं देती. यही बात विवाह पूर्व यौन संबंध पर भी लागू होती है."

"तुम भी तो मेरी सीमाओं से परेशान हो," सीमा ने मुस्करा कर कटाक्ष किया.

"वह दूसरी बात है," विनय ने दृढ़ता के साथ कहा, "मैं तुम्हें चाहता हूं, तुम्हारी सीमाएं मुझे कुंठित कर देती हैं कभीकभी बस. किंतु मेरा भीतरी मन यही चाहता है कि तुम मेरे प्रति समर्पित रहो, पर अपनी इन सीमाओं से घिरी रह कर."

"वही बात," सीमा हंसी.

"जानती हो, कुछ लोग यह सब ढकोसला, बकवास मानते हैं," विनय ने कहा, "पुरानी पीढ़ियों के अपने नैतिक मापदंड रहे, पर नई पीढ़ी ने सारी वर्जनाएं त्याग रखी है. विवाह पूर्व की पवित्रता, सतीत्व जैसे शब्द उन्हें अब दकियानूसी लगते हैं. [illegible] कहना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह ऐसी लड़की के साथ विवाह की कल्पना भी नहीं कर सकता, जिसे उस ने बिस्तरे में न चखा हो.''

''छि:, कैसी बात है!'' सीमा ने नाक सिकोड़ी.

''क्योंकि तुम्हारे संस्कार दूसरे हैं,'' विनय ने शांति से कहा, ''यद्यपि गंभीरता से विचार करें तो हमारे ऐसे संस्कार ही इस मामले में अधिक जीवनोपयोगी और सही मार्गदर्शक सिद्ध होंगे. हम हजारों साल पहले की आदिम स्थिति में पशु-पक्षियों जैसे स्वतंत्र थे. बाद में जब मनुष्य में सभ्यता और संस्कारों का विकास हुआ तो उस ने अपने व्यापक अनुभवों के आधार पर नैतिक, सामाजिक मान्यताएं निर्धारित कीं. इस के बाद मनीषियों ने उन्हें सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत रखा और जमाने के अनुरूप इन पर जोर देने के लिए इन्हें धर्मअधर्म, पाप-पुण्य के रंगों में डुबोया गया.''

''सिर्फ मनुष्य ही इन बंधनों को मानता है, अन्य जीवजंतु तो इन से मुक्त हैं,'' सीमा बोली.

''हां, क्योंकि मनुष्य सब से अधिक विचारशील प्राणी है. अन्य जीवजंतुओं को ऐसे नियमों की खास जरूरत नहीं. इन के बिना भी वे मजे में रह सकते हैं, पर मनुष्य इन वर्जनाओं, नियमों को न माने तो उस पर बुरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी है, अपने परिवार में रहता है. एक हद तक, समूहों में रहने वाले उन्नत पशुओं में भी ये नियम अनजाने, प्राकृतिक रूप से बन गए हैं.''

''बड़ी लंबी दार्शनिक बहस में पड़ गए तुम,'' सीमा ने हंस कर कहा.

''इस बहस की आज बड़ी जरूरत है और यह दार्शनिक ही नहीं, बल्कि समाज, परिवार, व्यक्ति की उन्नति एवं स्वास्थ्य से संबंधित है. हम ने वह उन्मुक्त आदिम युग भी देखा, बीच का घोर वर्जना बंधन युक्त जमाना, और आज हम फिर उसी आदिम युग में लौटना चाह रहे हैं,'' विनय ने खेदपूर्वक कहा.

कालिज के फाटक के पास सीमा की कार आ खड़ी हुई, ड्राइवर ने दो बार हार्न बजाया.

''लो भई, तुम्हारी गाड़ी आ पहुंची,'' विनय ने सीमा को बताया, ''ड्राइवर से कहना, कार की प्रतीक्षा में तुम रेस्तोरां में बैठी रहीं. तुम जाओ, मैं बाद में निकलूंगा.''

सीमा विवश सी मुसकान के साथ उठ खड़ी हुई.

दो हफ्ते बाद, कालिज की सीढ़ियों पर विनय को बगल से निकलती हुई सीमा ने बिना उस की ओर देखे कहा, ''वीनू, आज शाम ठीक सात बजे म्युनिसिपल पार्क के फाटक पर मिलना.''

वह आगे बढ़ गई. किसी ने गौर नहीं किया.

विनय दिन भर परेशान रहा. आखिर बात क्या है? प्रयास करने पर भी उसे सीमा से अलग कहीं मिल कर पूछने का मौका नहीं मिला. शायद सीमा स्वयं ही छिटकी रही.

किसी तरह दिन कटा. शाम को साढ़े छ: बजे से ही विनय पार्क के फाटक के आसपास चहलकदमी करने लगा. बत्ती का खंभा वहां से कुछ दूरी पर था और फाटक पर प्रकाश न के बराबर था. उसे प्रतीक्षा की घड़ियां बड़ी लंबी लगने लगीं.

सात बजे के कुछ बाद, सड़क पर एक नारी आकृति दीख पड़ी. फाटक पर उस के आते ही विनय ने देखा वह सीमा है. सीमा बिना इधरउधर देखे उस के हाथ को स्पर्श करती, पार्क में चल दी. मंत्रमुग्ध सा विनय भी पीछे हो लिया. पार्क के एक नीम अंधेरे से कोने में एक बेंच पर दोनों बैठ गए.

''क्या बात है, भई?'' विनय ने बेचैनी से पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वीनू," सीमा का स्वर उखड़ा हुआ था, "मैं यहां एक सहेली के बहाने तुम से मिलने आई हूं. उस का घर बगल में ही है. उसे सब पता है. मेरे पास अभी घंटों वक्त है."

"बात क्या है, सो तो कहो," विनय ने चिंता से पूछा.

"मेरी शादी तय हो गई है. जानते हो, किस के साथ? उसी रमेश के साथ. मां ने पिताजी पर जोर डाला, और बड़ी जल्दी में यह सब हो गया. अगले हफ्ते शादी है, बात फैलने पर मेरा यों बाहर निकलना संभव न होगा. घर वाले तुम्हें किसी कीमत पर नहीं चाहते. मैं चाहूं तो घर छोड़ दूं, पर मेरे मांबाप मेरे कारण अपमानित हों, यह मैं नहीं चाहती. और तुम से घर, पढ़ाई छुड़वा कर तुम्हारा भविष्य, घर भी चौपट नहीं कर सकती. दूसरी तरफ मां ने साफ कह दिया है, मैं ने कुछ भी गड़बड़ की तो वह जहर पी लेंगी."

"ऐं!" विनय हतबुद्धि सा बोला, "यहां तक बात पहुंच गई?"

"हां, मां की बात पत्थर की लकीर होती है. इसलिए हमारी राह सही है, यह जानते हुए भी इस अन्याय के सामने मुझे विवश होना पड़ेगा. मां की हत्या का भार मैं जीवन भर ढो कर सुखी नहीं रह सकूंगी."

"सीमा," विनय ने कुछ क्षण सोच कर कहा, "तुम्हें मेरी ओर से छूट है." उस ने सीमा का हाथ दबा कर कहा, "मेरी परवाह न करो. वही करो जो उचित है. मैं तुम्हारी खुशी या विवशता, जो भी हो, उसे अपनी मान कर मंजूर करता हूं."

"वीनू!" उस के कंधे पर सिर टिका कर सीमा रो पड़ी, "तुम यही कहोगे, मैं जानती थी. यह आदर्शवाद भी प्राय: गलत काम करा देता है. पर यही सही. तुम नहीं तो कोई भी हो, रमेश हो, क्या फर्क पड़ता है. पर आज मैं एक खास कारणवश आई हूं."

"वह क्या?" विनय ने उत्सुकता से पूछा.

"नि:सीम होने," सीमा ने दृढ़ता के साथ, ठंडी आवाज में कहा, "आज मैं तुम्हारे सामने सभी सीमाएं, वर्जनाएं तोड़ देना चाहती हूं. अभी मैं दूसरे की नहीं हूं, तुम मुझे पूर्णरूप से ग्रहण करो, मैं तैयार हो कर आई हूं."

"सीमा, यह क्या कह रही हो?" विनय का स्वर थरथरा गया.

"सच कह रही हूं, और पूरे होश-हवास में हूं," सीमा ने दृढ़ता से कहा, "आज तुम्हारे प्रति पूर्ण समर्पित होने आई हूं, क्योंकि मेरा एक ही पति है और वह

युवतियों का कत्लेआम

संसार में महिलाओं की दर्दनाक स्थिति को सुधारने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कदम उठाए जा रहे हैं. जिस से अनेक देशों में महिलाओं ने कुछ चैन की सांस भी ली है. पर सऊदी अरब, मिस्र, इराक, जोर्डन आदि अरब देशों में आज भी नारी घुटनभरी जिंदगी जी रही है. 'घर की इज्जत' बचाने के नाम पर उस के पिता, भाई व संबंधी स्वयं या भाड़े के आदमी ला कर उन का सर कलम करवा देते हैं.

लंदन स्थित एक संगठन की प्रतिनिधि श्रीमती जैकलिन थिबाल्ट ने नौ वर्षों तक अरब देशों में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन कर उक्त रहस्योद्घाटन के साथ यह भी लिखा है कि यदि किसी युवती का विवाह पूर्व किसी पुरुष से यौन संबंध हो जाए तो उसे मार दिया जाता है. इतना ही नहीं अगर वह किसी पुरुष से बात करते हुए भी देख ली जाए तो भी उस की जान जा सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तुम. वही अपना प्रेम, अपना अधिकार ग्रहण करे, तभी मेरा नारीत्व सार्थक होगा. झूठे सामाजिक बंधन फिर जीवन भर मुझे घेरे रहें, परवाह नहीं."

"सीमा," विनय ने स्थिर स्वर में कहा, "यह प्रलोभन बहुत बड़ा है. किसी दूसरे अवसर पर यह कहतीं तो शायद मुझे सब कुछ मिल जाता, पर...एक बात पर जरा गौर करो.

"अभीअभी तुम ने कहा है तुम मेरी हो. आदमी सिर्फ अपना शरीर भर नहीं होता, शरीर तो ऊपरी आवरण मात्र है. व्यक्ति शरीर के भीतर का स्वत्व है, चेतना है. तुम्हारा हृदय मुझ से पूरित है न?"

"निःसंदेह."

"तो तुम संपूर्ण मेरी ही हो! दुनिया का शायद सब से कठिन काम है नारी हृदय को जीत पाना, सो मुझे सुलभ रहा. इस बिंदु पर मैं हूं, तुम हो, अन्य किसी भी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश नहीं. रहा तुम्हारा शरीर, सो तुम्हारे मातपिता, समाज की अमानत है. इस पर तुम्हारे भावी पति का सीधा हक है. यह उसे ही मिलना चाहिए."

"यह अनाचर नहीं है क्या? मन एक को और शरीर···"

"जहां मातापिता, समाज स्वयं अनाचार की जड़ रोपें, ऐसी अनचाही शादी कराएं, वहां प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरे अनाचार स्वाभाविक ही हैं. पर एक बात पक्की है, हृदय से तुम मेरी हो तो तुम संपूर्ण रूप से मेरी ही हो. तुम्हारे भावी पति रमेश का यह छोटा सा सुख, यह सामान्य अधिकार मैं क्यों छीनूं? तुम्हें इसी तरह पतिगृह को जाना चाहिए, उस बहुमूल्य धन के साथ, जिसे ले कर कुमारी लड़कियां बड़े गर्व से पतिगृह पहुंचती हैं, रिक्त बन कर नहीं!"

सीमा चुप रही. उस के आंसू गिर कर विनय के कालर में जज्ब होते रहे.

"सीमा," विनय ने प्यार से कहा, "तुम ने सच्ची नारी होने का प्रमाण दिया है. तुम्हारा अभी का यह निर्णय आवेश जनित है. स्त्रियों के इसी संयम ने तो अभी तक विवाह संस्था को सुरक्षित रखा है, अन्यथा पुरुष बड़ा लोलुप होता है. जहां स्त्रियों ने सीमाएं तोड़ दीं, वहां समाज भी पतन की राह पर चल पड़ा है. हमारी स्त्रियों ने ही हमें संभाल रखा है, हम बचे हुए हैं."

"तुम बहुत ऊंचे हो, वीनू," सीमा ने भरे कंठ में कहा.

"गलत. मैं नहीं, तुम. यह तुम्हारा ही प्रभाव है, जिस ने आज मुझ से यह सब कहलाया. स्त्री यदि स्वयं संतुलित, संयमित हो तो पुरुष को भी होना पड़ता है. वह लाख बड़प्पन का दंभ भरे, पर इन मामलों में स्त्री की गरिमा के आगे नादान ही है. तुम्हीं ने मुझे यह दिशा दी है."

सीमा की आंखें हलके अंधेरे में भी चमक रही थीं. विनय ने उस का माथा चूमते हुए कहा, "तुम्हें अब सहेली के यहां जाना चाहिए. घर से कोई पूछने आ सकता है. यह निश्चित समझो कि जीवन में मेरे लिए मधुरतम स्मृति तुम्हारी ही रहेगी."

सीमा की आंखें फिर बरसने लगीं. वह रुंधे कंठ से बोली, "मुझ से तुम मिलते तो रहोगे न?"

"जरूर," विनय ने कहा, "न मिलने का क्या कारण? अवश्य मिलूंगा तुम से. और हम दोनों अपने पारिवारिक, सामाजिक दायित्वों का भी ध्यान रखें, यह भी एक अनिवार्य कर्त्तव्य है."

सीमा उठ खड़ी हुई. उस ने दोनों हथेलियों में विनय का चेहरा थाम कर तारों के मंद प्रकाश में उस की आंखों में झांका और पीछे मुड़ कर चल दी.

विनय उस की परछाईं को फाटक के बाहर, सड़क के मटमैले, पीले प्रकाश के आगे अंधेरे में घुलती देखता रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी धुलाई, कम लागत जैसी खूबियों की वजह से डिटरजेंटों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, पर इन के प्रयोग से जो घातक हानियां होती हैं क्या आप ने कभी उन पर भी ध्यान दिया है?

साबुन के बदले डिटरजेंटों का प्रयोग

लेख • उत्सव चतुर्वेदी

पिछले 20 वर्षों में भारतीय गृहिणियों ने जिस तेजी से कपड़े धोने के साबुनों के स्थान पर डिटरजेंटों को अपनाया है, उस से जल्दी ही कपड़े धोने के लिए साबुनों का प्रयोग समाप्त हो जाने की संभावना स्पष्ट दिखने लगी है. इसी लिए अनेक प्रसिद्ध साबुन निर्माता अब साबुन के साथसाथ डिटरजेंट भी बना रहे हैं. डिटरजेंट शब्द ने भारतीय गृहिणी को खूब आकृष्ट किया है. अब तो हालत यह है कि ये डिटरजेंट शहरों से दूरदराज के गांवों तक पहुंच रहे हैं. इस से डिटरजेंटों का उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है.

संभव है कुछ औरतें पाउडर के रूप में मिलने वाले डिटरजेंट को साबुन का ही चूरा समझती हों. लेकिन यह उन की भूल है. इन डिटरजेंटों तथा साबुनों में दूरदराज का भी संबंध नहीं है. दोनों की रासायनिक बनावट और कार्य प्रणाली में बहुत फर्क है. इन्हें बनाने में काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिटरजेंट यानी ऐसा पदार्थ जो साफ की जाने वाली वस्तु की सतह तथा उस पर जमी मैल, दोनों के बीच में घुस कर दोनों का संबंध तोड़ देता है.

आने वाले पदार्थों में भी कोई समानता नहीं है.

डिटरजेंटों के बढ़ते प्रयोग को देखते हुए इन के बारे में कुछ खासखास बातें जान लेना हर गृहिणी के लिए आवश्यक है.

अनेक लाभ मगर कुछ हानियां भी

ये डिटरजेंट क्या हैं ? संक्षेप में तथा वैज्ञानिक भाषा में ये ऐसे पदार्थ हैं, जो साफ की जाने वाली वस्तु की सतह तथा उस पर जमी मैल, दोनों के बीच में घुस कर दोनों का संबंध तोड़ देता है. इस प्रकार वस्तु की सतह से छूट कर मैल के कण पानी के साथ वह जाते हैं और वह चीज साफ हो जाती है. साधारणतया डिटरजेंट के अणुओं के दो भाग होते हैं. एक भाग विद्युत घनात्मक होता है, जो मैल विरोधी होता है. दूसरा भाग विद्युत ऋणात्मक और जल विरोधी होता है.

साबुन की अपेक्षा डिटरजेंट के प्रयोग के अनेक लाभ गिनाए जा सकते हैं. यह हर तरह के पानी में अपना कार्य सुचारु रूप से कर सकता है, जब कि साबुन खारे पानी में झाग नहीं देता. कपड़ों को साफ करने के लिए डिटरजेंट की थोड़ी सी ही मात्रा पर्याप्त होती है, भार के अनुसार पानी के 0·03 प्रतिशत से भी कम. इस प्रकार इस से कपड़े साफ करना निश्चय ही सस्ता पड़ता है. इस से सफाई ज्यादा अच्छी, आसानी से तथा जल्दी होती है.

लेकिन इन फायदों के साथसाथ डिटरजेंट के प्रयोग से कुछ हानियां भी हैं. कुछ वैज्ञानिकों का खयाल है कि इस से कपड़ों की उम्र घटती है, क्योंकि इस के अणु कपड़ों के रेशों में काफी अंदर तक घुस जाते हैं. दूसरी ओर धोने में कपड़े को ज्यादा न पीटने से इस से कपड़े की आयु बढ़ने में भी मदद मिलती है. साबुन की अपेक्षा अधिक सक्रिय होने के कारण इस का इस्तेमाल करना साबुन से ज्यादा नुकसानदेह होता है. साबुन और डिटरजेंट के निर्माण के समय भी साबुन की अपेक्षा डिटरजेंट के निर्माण में वातावरण को प्रदूषित करने वाली विषाक्त गैसें अधिक निकलती हैं.

लेकिन डिटरजेंट के प्रयोग से जो सब से बड़ी हानि है, उस पर शायद किसी का ध्यान नहीं जाता. रैखिक अणु संरचना के कारण साबुन का झाग जीवाणुओं द्वारा ऐसे अवयवों में विघटित हो जाता है, जो कार्बन डाई आक्साइड बन कर धीरेधीरे वायुमंडल में मिल जाते हैं. इस कार्बन डाई आक्साइड को पौधे अपने अंदर खींच लेते हैं, अतः साधारणतः साबुन का झाग वातावरण में सब से कम प्रदूषण करता है.

इस के विपरीत डिटरजेंट की संरचना चक्रीय होती है, जिस में अणु एकदूसरे से ज्यादा मजबूती से बंधे रहते हैं. यह चक्रीय संरचना जीवाणुओं द्वारा आसानी से विघटित नहीं हो पाती. यदि विघटित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

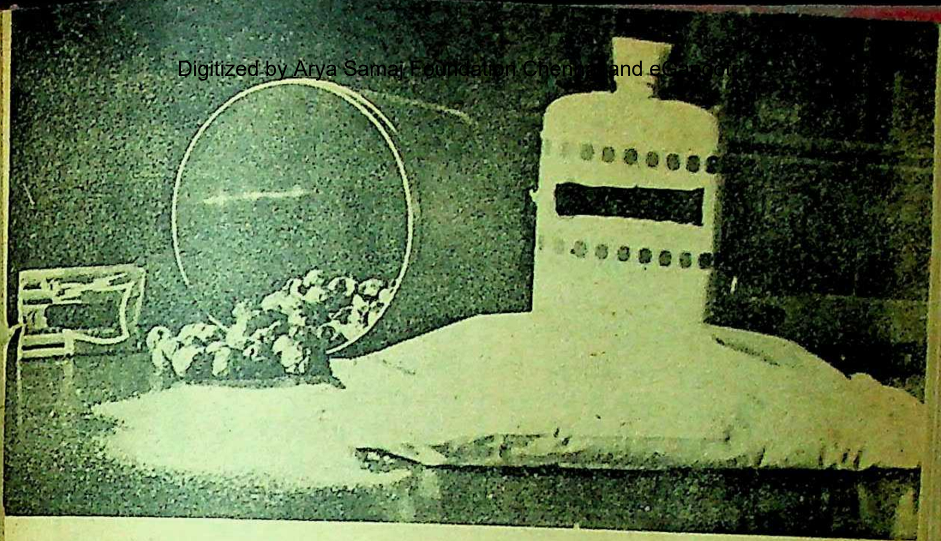

साबुन के बजाए डिटरजेंट से कपड़े की धुलाई न केवल अच्छी और आसानी से होती है बल्कि धुलाई पर खर्च भी कम आता है.

भी होती है तो इस से गंधक और फासफोरस के अम्ल बनते हैं, जिन से सल्फर डाई आक्साइड तथा फास्फीन जैसी दमघोंटू गैसें निकलती हैं. ये सभी गैसें पौधों के लिए भी जहरीली हैं तथा जीव जगत के लिए तो कार्बन डाई आक्साइड की अपेक्षा सैकड़ों गुना हानिकारक हैं.

प्रयोगों द्वारा यह भी देखा गया है कि डिटरजेंट का झाग पानी निकलने की नालियों तथा पाइपों का ज्यादा क्षरण करता है. जब यह झाग नदियों तथा समुद्रों में पहुंचता है तो जल प्रदूषण का एक बड़ा कारण बनता है. कुछ डिटरजेंट तो इस मामले में इतने आगे थे कि अनेक देशों में उन का प्रयोग कानूनी रूप से बंद कर दिया गया. 'सोडियम डेडीसाइल सल्फोनेट' ऐसा ही एक अत्यंत प्रदूषक डिटरजेंट था, जिस का प्रयोग 1963 में ही बंद कर दिया गया था. आज प्रायः हर उन्नत देश किसी भी डिटरजेंट को बाजार में बेचने की छूट देने से पहले उस के प्रयोग से संभावित प्रदूषण की कड़ी जांचपड़ताल करता है.

वैज्ञानिक ऐसे डिटरजेंटों के प्रयोग में दिनरात लगे हुए हैं, जो सफाई में उत्तम होने के साथसाथ कम से कम प्रदूषण करें और उन की संरचना चक्रीय न हो कर रैखिक हो, जिस से उन के झाग का जीवाणुओं द्वारा शीघ्र ही विघटन किया जा सके.

इन डिटरजेंटों का प्रयोग कपड़ों की सफाई तक ही सीमित नहीं है. सच तो यह है कि इन के बहुत से अन्य औद्योगिक उपयोग भी हैं. किसी भी रासायनिक क्रिया में जब अंतरपृष्ठ तनाव कम करने की जरूरत होती है, इन का प्रयोग किया जाता है.

उद्योगों में इन का प्रयोग कलिलीय विलियनों के बनाने में तथा अल्ट्रासानिक तरंगों की मदद से बड़ीबड़ी मशीनों के हिस्सेपुर्जों की सफाई के लिए किया जाता है. अनेक कीट व जीवाणुनाशक पाउडर पानी में आसानी से नहीं घुलते. उन में डिटरजेंट की सूक्ष्म मात्रा मिला देने से वे आसानी से घुल जाते हैं तथा छिड़काव बहुत ही आसान हो जाता है. खनिजों के सांद्रीकरण में भी अब इन का प्रयोग बढ़ रहा है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में. रु. 7.50

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक रु. 3.00

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

तीन या तीन से अधिक पुस्तकें लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छूट या कोई भी दो पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट. रुपए अग्रिम आने पर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

मैं एक विद्यार्थी हूं. अभी तक किसी से प्यार नहीं कर सका, लेकिन प्यार करने की बहुत इच्छा होती है. आप बताइए कि प्यार कैसे किया जाता है? एक लड़की मुझे बहुत अच्छी लगती है, लेकिन उस से बातचीत करने की हिम्मत नहीं होती.

पहली बात तो यह कि आप की प्यार करने की उम्र नहीं है. प्यार और पढ़ाई—ये दोनों चीजें एक साथ नहीं हो सकतीं. दूसरी बात यह कि हर आदमी के लिए जरूरी नहीं है कि वह उस तरह का फिल्मी प्यार करे ही और तीसरी बात यह कि प्यार कोई ऐसी चीज नहीं जिस का तरीका समझाया जा सके. यदि हो सके तो उस लड़की से केवल दोस्ती बढ़ाने की कोशिश करें—जिस का निश्चित नतीजा यह मान कर न चलें कि वह आप की प्रेमिका बन जाएगी. 'प्यार' का चोर मन में ले कर चलेंगे तो बहुत संभव है कि आप में उस से मिलने की हिम्मत ही पैदा न हो.

मैं 19 वर्षीय बी. ए. का छात्र हूं. शीघ्रपतन की बीमारी के कारण चिंतित हूं.

आप ने यह तो लिखा ही नहीं कि आप को शीघ्रपतन होता कब है. आप के पत्र से यह नहीं लगता कि आप विवाहित हैं. शीघ्रपतन केवल विवाहित युवकों, पुरुषों की ही समस्या हो सकती है.

मैं 23 वर्षीय बैंक का कर्मचारी हूं. शिक्षित व सुलझे विचारों वाली युवती से शादी करना चाहता हूं. मैं दहेज का विरोधी हूं पर घर के लोग इस बात पर सहमत नहीं हैं, क्योंकि मेरे भाई की शादी में दहेज कम लेने के कारण बहुत सी धार्मिक रस्में हम पूरी नहीं कर सके थे. अभी भी स्थिति ऐसी नहीं है कि बिना दहेज लिए धूमधाम से शादी की जा सके. मैं स्वयं धूमधाम से शादी करना चाहता हूं और बहनभाइयों को शादी के मौके पर कुछ न कुछ देना चाहता हूं.

आप दहेज के विरोधी हैं पर धूमधाम से शादी करने तथा बहनभाइयों को कुछ देने के लिए दहेज लेना चाहते हैं. वास्तव में, इस तरह झूठी शान दिखाना अनैतिक और अपने आप को अपनी ही नजरों में गिरा देने वाला काम है. आप को अपनी हैसियत के अनुसार शादी में खर्च करना चाहिए और दहेज के लालच में नहीं आना चाहिए. आर्य समाज की रीति से या कोर्ट में जा कर शादी कर के आप बहुत से तामझाम व फिजूलखर्चियों से बच सकते हैं. ऐसे विचार वाले वधू पक्ष की तलाश के लिए आप को वैवाहिक विज्ञापन का सहारा लेना चाहिए.

मैं 20 वर्षीय युवक हूं. मेरे पूरे शरीर पर छोटीछोटी फुंसियां हो गई हैं और खुजली होती है. कुछ लोग कहते हैं कि मुझे नियमित रूप से विटामिन 'बी' की गोलियां लेने की वजह से ऐसा हुआ है. क्या करूं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप विटामिन 'बी' लेना बंद कर दें, वैसे भी किसी भी विटामिन की गोलियां लगातार ज्यादा दिनों तक नहीं लेनी चाहिए. जब भी विटामिन या कोई टानिक लें तो डाक्टर से सलाह अवश्य लें. विटामिन 'बी' की गोलियां छोड़ने के कुछ दिन बाद भी लाभ न हो तो आप योग्य डाक्टर से जांच करवाएं.

✦

मैं 22 वर्षीय युवक हूं और छः वर्षीय पुत्र का पिता हूं. मैं दूसरी संतान चारपांच वर्ष बाद चाहता हूं. क्या करूं?

आप अपने निकट के परिवार कल्याण केंद्र से संपर्क करें. आजकल छोटा परिवार रखने की बहुत सी विधियां प्रचलित हैं, जिन की जानकारी इन केंद्रों पर मुफ्त दी जाती है.

✦

मैं एक हिंदू युवक हूं. अपने ताऊजी की लड़की से प्यार करता हूं और उस से विवाह करना चाहता हूं. क्या करूं?

हिंदू विवाह कानून के अनुसार आप यह विवाह नहीं कर सकते. हां, यदि आप के परिवार में इतने निकट संबंधों में विवाह की परंपरा पहले से मौजूद हो तो आप यह शादी कर सकते हैं. वैसे व्यावहारिकता का तकाजा यही है कि आप ताऊ की लड़की को बहन ही मानें.

✦

मैं 20 वर्षीय स्कूटर मैकेनिक हूं, लेकिन बिलकुल पढ़ालिखा नहीं हूं. जब मैं किसी पढ़ेलिखे व्यक्ति को देखता हूं तो मुझ में हीन भावना आ जाती है और मैं काफी परेशान हो जाता हूं.

आप स्कूटर मैकेनिक हैं, तकनीकी काम जानते हैं, व्यवसाय से लगे हैं, इसलिए आप में हीन भावना होनी ही नहीं चाहिए. बहुत से लोग ऐसे भी हैं, जिन के पास ऊंचीऊंची डिगरियां हैं पर उन के पास कोई रोजगार नहीं है. आप को अपने व्यवसाय में और भी महारत हासिल कर के आत्मविश्वास के साथ तरक्की करनी चाहिए. खाली समय में किसी की सहायता से थोड़ीबहुत पढ़ाई भी करें. जरूरी नहीं कि आप किसी परीक्षा में बैठने के लिए ही पढ़ें. विभिन्न क्षेत्रों की नईनई जानकारी हासिल करना भी नया आत्मविश्वास जुटाने में सहायक होगा.

—नीरजा ●

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर

पुस्तकें भेंट में दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे:

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नई दिल्ली-110055.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : स. क. नाग, नई दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : अरविंद शर्मा, देहरादून.

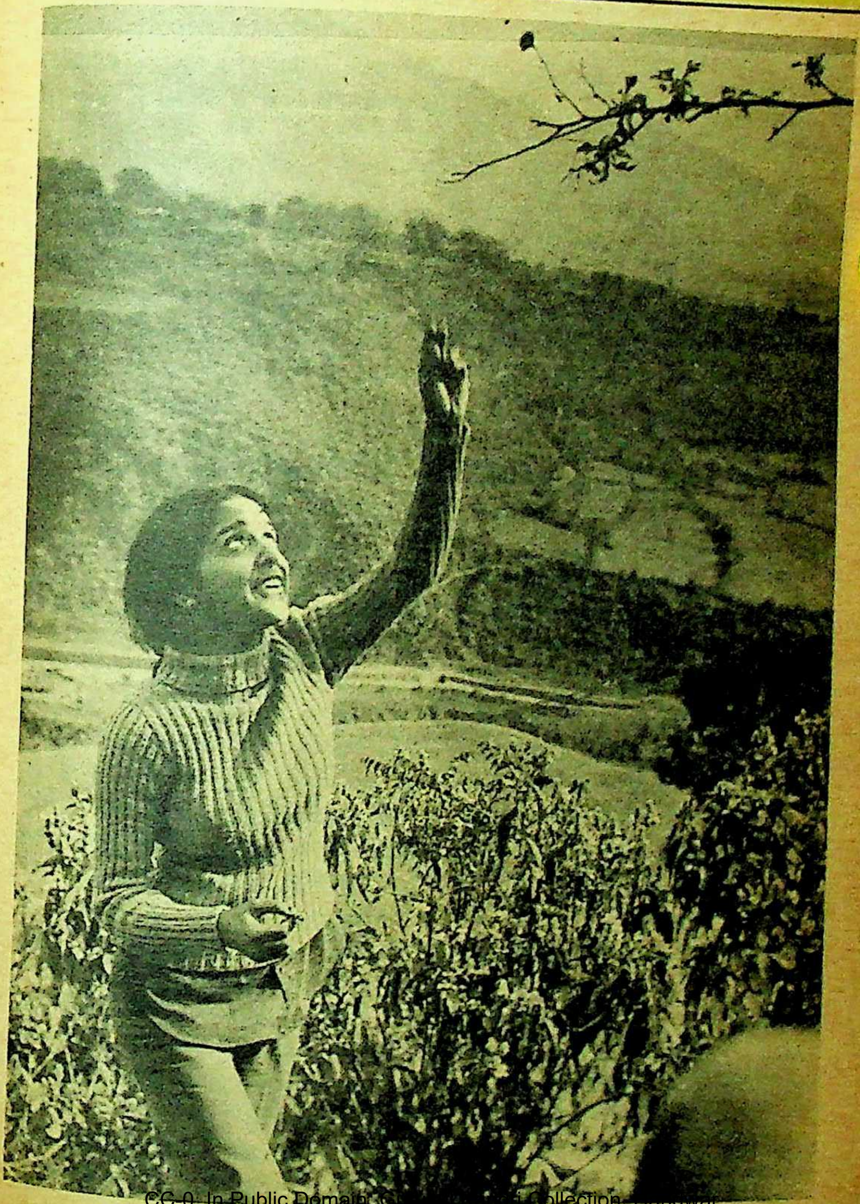

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना जीवन

कहानी • उर्मिला पांडेय

सीमा समझ नहीं पा रही थी कि स्वयं परेशानी उठा कर और सीमा के विरोध के बावजूद अविनाश क्यों बेटे रोहित की सभी इच्छाएं पूरी करना चाहता है. पर जब उसे इस का कारण पता चला तो उस के आश्चर्य का ठिकाना न रहा...

"उपदेश मत दो," अविनाश चीख कर बोला, "मुझे उपदेश सुनना पसंद नहीं है. मुझे ऐसी बातों से घृणा है." फिर वह उठ कर कपड़े बदलने लगा.

उस की अनायास झल्लाहट को देख कर सीमा क्षुब्ध हो गई. वह उठ कर रसोईघर में चली गई और ठीक तरह से जल रही अंगीठी को ही धौंकने लगी. ज्यादा हवा पा कर अंगीठी की आंच और तेज हो उठी. दाल उबल कर गिरने लगी.

सीमा भी मन ही मन उबल रही थी, 'जब देखो तभी उबलने लगते हैं. आखिर क्या कह दिया था मैं ने? यही न कि खेल में क्या धरा है. रोहित को पढ़नेलिखने में मन लगाना चाहिए, जिस से दो रोटी का ठिकाना हो. जिंदगी में रुचियों का महत्त्व नहीं है. यहां तो जिंदगी व्यवसाय की तरह जीनी पड़ती है.'

बात पूरी होने से पहले ही अविनाश बफर उठा था. अजीब आदत है अविनाश की भी. अकारण ही चीखने की आदत पड़ती जा रही है उस को.

अविनाश की झल्लाहट अभी कम नहीं हुई थी. फिर भी चलते समय उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने औपचारि[illegible] मैं जा रहा हूं. अभी आऊंगा."

'कब आओगे?' यह पूछने की औपचारिकता सीमा ने नहीं निभाई.

साइकिल के साथसाथ उस का आक्रोश भी गतिमान था.

'अमुक नक्षत्र में जन्म लेता तो भाग्यशाली वरना भाग्यहीन. मरने के बाद भी लोग कहते हैं कि अमुक दिन, घड़ी मरता तो सीधे स्वर्ग जाता. और जन्ममरण के बीच की अवधि जिसे जीवन कहते हैं, उपदेशों का सामना करते ही बीतती है.

'बचपन में बुजुर्ग, अभिभावक उपदेश देते हैं तो यौवन में जीवनसाथी और मित्रगण और बुढ़ापे में तो अपनी ही संतान उपदेश देने लगती है.

'धर्मगुरु और नेतागण तो रोटी ही उपदेशों की खाते हैं.

'ठीक है, बाबा, दो उपदेश, जरूर दो, पर मार्गदर्शन के लिए.

'यहां तो लोग उपदेश के माध्यम से अपने आप को दूसरों पर थोपना चाहते हैं. अनावश्यक उपदेशों की यह प्रवृत्ति बचपन में अधिक क्लेश देती है. ऐसा नहीं है कि हर कोई गलत होता है या जन्मजात अपराधी होता है. सब को कठोर अनुशासन, उपदेशों के बोझ की आवश्यकता नहीं होती. कइयों को तो ये विद्रोही ही बना देते हैं.

'पर उपदेशों का फंदा डाल कर व्यक्तित्व के विकास का गला घोंटना अपना कर्त्तव्य समझते हैं अभिभावक?'

विचारों में खोया अविनाश जान ही नहीं पाया कि कब से उस का दोस्त विनोद उस के साथसाथ साइकिल पर चला आ रहा है. अचानक विनोद ने तेजी से पैडल मार कर अपनी साइकिल उस की साइकिल के आगे कर ली और ब्रेक लगा कर खड़ा हो गया. अपने आगे साइकिल को खड़ा देख अचकचा कर अविनाश ने भी ब्रेक लगाया.

"ऐसे चलाएगा तो मरेगा एक दिन." दोस्त हंसा.

'लो, राह चलते भी उपदेश सुनो,' अविनाश ने अपने मन में कहा. लेकिन प्रकट में वह भी हंस दिया.

"कहां जा रहे थे?"

"सिगरेट लेने."

वैसे अविनाश को खुद भी नहीं मालूम था कि वह कहां जा रहा है. उस की यह आदत है कि जब भी मूड बिगड़ता है वह साइकिल उठा कर चल देता है और सड़क पर साइकिल दौड़ाने लगता है.

दोस्त के साथ बातों का सिलसिला चल निकला.

अपने क्षोभ को पचाने में काफी देर लगी सीमा को. अंगीठी कुछ बुझ कर कुछ जल कर खत्म हो चुकी थी. पतीला उतार कर वह नए कोयले डालने लगी. यह मिट्टी का तेल मिलना क्या बंद हुआ उस के लिए तो फिर से परेशानियों का सिलसिला ही शुरू हो गया.

आराम से मिट्टी का तेल जलाती थी. न बरतन काले हों न हाथ. न धुआं न धक्कड़. अब तो...आगे बढ़कर पीछे लौटना पड़ा है.

न लौटे तो क्या करे? वह कोई इतनी साधन संपन्न तो है नहीं कि हीटर या गैस जलाने की सोच सके.

'ऊंह, किसकिस बात का गिला करें, किसकिस को रोएं,' उस ने मन ही मन में कहा. फिर अंगीठी उठा कर बाहर हवा में रख दी और आटा गूंधने लगी. 'अभी अविनाश आता ही होगा.' अविनाश के साथ हुई बातचीत फिर गूंजने लगी कानों में.

"रोहित आजकल बुझाबुझा क्यों रहता है?" अविनाश ने उस से पूछा था.

"स्कूल की क्रिकेट टीम में नाम लिखवाया था," सीमा ने बताया.

"तो इस में उदास होने की क्या बात है?" अविनाश जानता था कि रोहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अच्छा खिलाड़ी है. स्कूल टीम में उस का चयन अविनाश को अच्छा लगा था.

"सफेद पैंट, कमीज, जूता, मोजा और बल्ला-न जाने किसकिस चीज की फरमाइश कर रहा था. सौ डेढ़ सौ रुपए का खर्च है. मैं ने मना कर दिया. कहां से आता? और फिर इस साल दसवीं की परीक्षा देनी है. खेलकूद में क्या धरा है? इस से तो पढ़ाई से ही मन हट जाएगा. वही समय और लगन पढ़ाई में लगाएगा तो अच्छे अंकों से पास हो जाएगा. आगे चल कर दो रोटी का प्रबंध तो हो सकेगा."

बस अविनाश एकदम से झल्ला गया था. अप्रतिम रह गई थी सीमा.

यों ही बेबात बिगड़ जाने का स्वभाव हो गया है अविनाश का. आखिर वह और क्या कहती? घर का हाल तो वही जानती है. जहां 10 पैसे खर्च करने के लिए भी 10 बार सोचना पड़ता है वहां रोहित के लिए सौ डेढ़ सौ रुपए कहां से आएंगे? हर जगह से तो कुछ न कुछ लिया है. कहीं से उधार मिलने की भी संभावना नहीं. और फिर खेलों में हिस्सा लेना इतना जरूरी भी तो नहीं है. जब जरूरी खर्चों के लिए ही प्रबंध नहीं हो पाता, तब ऐसी बातों के लिए कहां से इंतजाम हो सकता है?

अविनाश पहले ऐसा चिड़चिड़ा न था. सीमा को दांपत्य जीवन के प्रारंभिक दिन याद आ गए. वे दिन कितने मधुर थे, कितने स्वप्निल.

अंगीठी अभी ठीक से नहीं सुलगी थी. गत्ते का टुकड़ा ले कर वह हवा करने लगी. धुआं फैल कर उस की आंखों में समा गया.

'मेरी जिंदगी भी तो ऐसी ही है, धुएं से भरी.' उस ने आंचल से आंखें पोंछ लीं.

जैसेजैसे आयव्यय का संतुलन बिगड़ने लगा, अविनाश का स्वभाव भी बदलने लगा. पर क्या इस के लिए सीमा जिम्मेदार है? अभाव का तनाव अविनाश से कहीं अधिक उसे झेलना पड़ता है. कभी ईंधन खत्म हो जाता है कभी तेल नहीं. कभी अनाज खत्म, कभी सब्जी के लिए पैसे नहीं. घर के खाली डब्बों की खड़खड़ाहट उसे कितना खोखला करती है यह वही जानती है. अंगीठी पर तवा रख कर रोटी बेलने लगी वह.

अविनाश लौट आया था. शायद भूख लग आई थी उसे.

थाली में दाल और रोटी परोसते हुए सीमा को संकोच हो आया.

अविनाश चुपचाप खाने लगा. शायद सीमा के बजट में आज के लिए सब्जी नहीं थी. चोर नजरों से उस ने सीमा की ओर देखा. चेहरा अभी भी उतरा हुआ था. वह बिलावजह बिगड़ गया था. सच ही तो कहा था सीमा ने, कहां से आएगा पैसा? असल में इसी असमर्थता के सच ने उसे असंयत कर दिया था. रोहित प्रगति कर रहा है, इस खुशी को अधिक देर नहीं महसूस कर पाया वह. उस के स्वप्नों का दर्पण फिर तड़ाक से टूट गया था. वही बाधक बन रहा है रोहित की प्रगति में. टूटन के टुकड़े उसे बुरी तरह चुभे. वह उखड़ गया.

चोर नजर से सीमा ने भी देखा अविनाश बेमन से कौर तोड़ रहा है. अब ऐसे खाने को कौन ललक कर खाएगा? यह भी कोई खाना है? यह तो बस पेट भरना है. सीमा का मन द्रवित हो उठा. कहां से ले आए अविनाश भी? कितनी मेहनत तो करता है वह. बदले में क्या मिलता है उसे? बस पेट भरने लायक खाना और तन ढांपने लायक कपड़ा ही तो. उस की निगाह अविनाश की सूनी कलाई पर पड़ी. लेदे कर एक घड़ी है अविनाश के पास, वह भी नहीं बांध पाता. कभी बिगड़ जाती है तो बनवाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए पैसा नहीं रहता. पिछले एक डेढ़ महीने से घर में रखी है. चेन टूट गई है. खरीदने का जुगाड़ नहीं बैठता.

'कुछ करना होगा. सूनी कलाई अच्छी नहीं लगती. चेन के लिए अतिरिक्त पैसा तो कभी भी नहीं आएगा.' वह अपनी झुंझलाहट पूरी तरह भूल गई.

"क्या बात है, इन दिनों आप हवन नहीं करते?" अविनाश की ओर देख कर सीमा ने पूछा. पिछले दोतीन दिनों से वह लक्ष्य कर रही थी, पर पूछना भूल जाती थी.

"हवन करना मैं ने छोड़ दिया है," अविनाश ने भी उसी लहजे में उत्तर दिया.

सीमा चौंक गई. हाथ हिला. टूटी कोर के प्याले से चाय छलक गई. "छोड़ दिया?" अविश्वास से वह बोली. हवन करने से उस का मतलब अविनाश की धूम्रपान की आदत से था.

"हां, अनास्था के आवेग में सिगरेट पीनी शुरू की थी मैं ने, आस्था के आवेग में छोड़ दी," उस के हाथ से प्याला थामते हुए अविनाश बोला.

'यह अनास्थाआस्था का क्या चक्कर है?' सीमा सोचने लगी. वह बरसों से उस की यह आदत छुड़ाना चाहती थी. आर्थिक शारीरिक दोनों ही दृष्टियों से हानिकारक जो है यह.

कुछ महीनों से आंखों में प्रायः लाली बनी रहती थी. डाक्टर ने भी सिगरेट पीने से मना किया था. पर अविनाश ने इस की परवाह नहीं की थी. "डाक्टर बकवास करते हैं," कह कर उस ने टाल दिया था.

'और अब अपने आप...' वह खुश ही थी.

"विश्वास नहीं हो रहा है न?" चाय की चुस्की लेते हुए अविनाश ने सीमा की ओर देखा.

"अविश्वास की बात नहीं है, पर आप ने पहले बताया नहीं."

"मैं तुम्हें अचंभित करना चाहता था."

सीमा मुसकरा पड़ी. दोनों चुपचाप चाय पीने लगे.

"चलिए, इसी बात पर मैं भी आप को अचंभित कर दूं." प्याले रख कर सीमा वापस आई. उस के हाथ में एक छोटा सा पैकेट था.

उत्सुक हो कर अविनाश ने पैकेट खोला. उस में से घड़ी बांधने की एक आकर्षक चेन निकली.

"अच्छी है न?" सीमा की आंखों में चमक आ गई. उस की पसंद पति को अच्छी लगी. पैसों का क्या है? जरूरतों में जैसे इतनी काटछांट, वैसे कुछ और सही.

"बहुत सुंदर. पर अब इस की कोई जरूरत नहीं." एक फीकी हंसी अविनाश के होंठों पर फैल गई.

"क्यों?" कुछ न समझते हुए सीमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अविनाश का मुख देखने लगी.

"घड़ी मैं ने बेच दी है."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेच दी?" सीमा ने अनजाने ही दोहराया. फिर संभल कर बोली, "लेकिन क्यों? वैसी घड़ी आजकल मिलती कहां है?"

सीमा का उत्साह उदासी में बदल गया. कितनी मुशकिल से घर में कोई चीज आती है, अब आएगी भी क्या? जो है उसे भी...सामान बेच कर...कहां तक...

"नहीं मिलती, इसी लिए तो अच्छे दामों में बिक गई. जहां पिछली बार मरम्मत कराई थी उसी दुकानदार ने दो सौ में खरीद ली," अविनाश बता रहा था.

"लेकिन किस लिए?" सीमा की आवाज में दर्द भर आया.

"हवन करने के लिए नहीं," अविनाश ने हंस कर कहा. प्राय: सीमा कभी मजाक में, कभी खीझ कर अविनाश के पैसे मांगने पर कहा करती थी, "हवन करने के लिए चाहिए होंगे."

लेकिन इस समय सीमा मजाक के मूड में नहीं थी.

"रोहित के लिए." स्पष्ट किया अविनाश ने.

"लो, आज तो हर बात पहेली बन रही है," सीमा कुनमुनाई.

"रोहित...लेकिन रोहित अभी तक आया क्यों नहीं? आज तो उस की आधी छुट्टी थी." सीमा को याद आया.

"उस के स्कूल में खेलों का अभ्यास चल रहा है. उस के बाद वह दर्जी की दुकान पर जाएगा," अविनाश ने बताया.

"दर्जी की दुकान पर? आज आप कोई बात सीधी तरह भी बताएंगे?"

"सीधी तरह क्या बताना, भई, घड़ी बेच कर मैं रोहित के लिए सफेद पैंट, शर्ट का कपड़ा ले आया हूं. उसी का नाप देने जाएगा. ये कुछ पैसे बचे हैं, रख लो. उस के लिए बल्ला भी लाना है, सिलाई भी देनी होगी," अविनाश ने मुट्ठी सीमा के आगे कर खोलते हुए कहा.

"हूं...तो यह बात है." सीमा का मन भर आया.

"सिगरेट छोड़ देने से जो पैसा बचेगा उसे भी अलग जमा करती रहना. वक्त जरूरत पर रोहित के काम आएगा."

'यह कैसा परिवर्तन आ गया है अविनाश में? रोहित के प्रति इतनी ममता तो पहले कभी नहीं दिखाई थी. आज एकाएक...यहां तक कि सिगरेट भी छोड़ दी. अरे हां, कुछ आस्थाअनास्था की बात कर रहा था. वह तो रह ही गई.' रुपए मुट्ठी में पकड़ते हुए सीमा मन ही मन सोच रही थी.

"एक बात बताइए, अभी आप सिगरेट छोड़ने की बात पर कुछ आस्था-अनास्था की बात कर रहे थे. बताइए, यह सब बदलाव कैसे हो गया आप में?" सीमा ने आग्रहपूर्वक कहा.

"सीमा, दरअसल एक विशेष मन:स्थिति में सिगरेट पीने लगा था मैं. उस विशेष मन:स्थिति से मैं ने अब छुट्टी पा ली है."

"कैसी मन:स्थिति? विस्तार से बताइए."

"यह सब बताने बैठ गया तो काफी देर लग जाएगी."

"मुझे अभी कोई काम नहीं है."

"सीमा, तुम्हारा यह आपरेटर पति कभी चित्रकार बनने का सपना देखा करता था. चित्रकला मेरी अभिरुचि थी. अपने सीमित दायरे में मैं अपनी रुचि का विकास करता रहा था. किसी चित्रकार के बारे में पढ़तासुनता तो मन में एक ललक उठती, कभी मैं भी एक चित्रकार के रूप में चर्चित, प्रतिष्ठित होऊंगा, लोग मुझे अपने समय का रवि वर्मा कहेंगे. रोरिक बनूंगा.

"पढ़ने में भी मैं ठीक ही था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविनाश के पिताजी बौखलाए हुए घर में आए और मां से पूछा, "कहां गया तुम्हारा सपूत?"

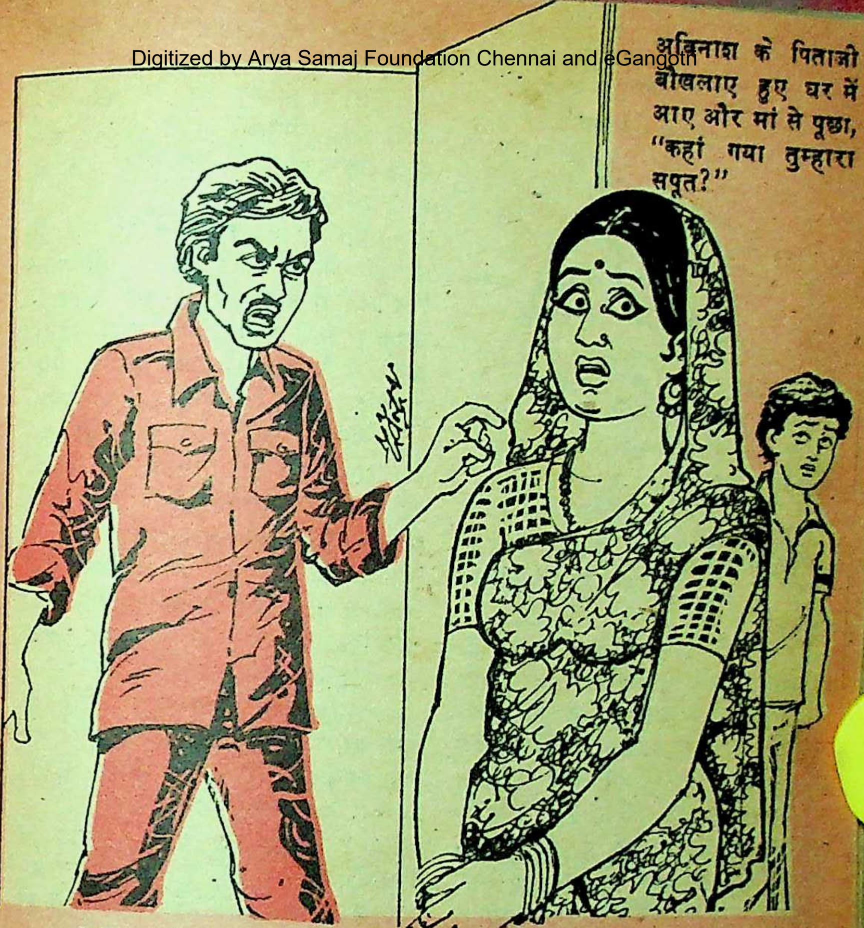

"लेकिन मेरे पिताजी का मरा यह शौक अच्छा नहीं लगता था. वह तो पोस्टमैन थे. अपने बेटे को कम से कम पोस्टमास्टर बनाना चाहते थे. उन का बस चलता तो सीधे पोस्ट मास्टर जनरल ही बना देते.

"उन की निगाह में पढ़लिख कर डिगरी हासिल करना ही मेरे लिए अभीष्ट था. चित्रकला जैसे आलतूफालतू शौक में फंसना उन की दृष्टि में अपना भविष्य बिगाड़ना था. और हमारे देश में कोई पिता यह कैसे सहन कर सकता है कि उस का बेटा अपना भविष्य बिगाड़े. यह काम तो पिता ही कर सकता है," अविनाश ने व्यंग्यपूर्वक कहा.

सीमा ने कोई टिप्पणी नहीं की.

"उस समय मैं रोहित जैसा ही था. वैसे पढ़ने में मैं ठीक था," अविनाश आगे बोला.

"रोहित भी तो पढ़ने में ठीक है," सीमा ने पुत्र की प्रशंसा की.

अविनाश सीमा की बात सुन कर मुसकरा दिया. फिर बोला, "प्रायः देखा जाता है कि जो लोग अपने शौक के प्रति निष्ठावान होते हैं, वे अपने अन्य दायित्वों की भी अवहेलना नहीं करते. अपवाद की बात और है. उन्हीं दिनों हमारे कसबे में चित्रकला सिखाने का एक स्कूल खुला था. मेरे लिए सुनहरा मौका था. पर फीस का भी तो प्रश्न था. पिताजी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमति मिलना भी जरूरी था.

"पिताजी को मेरी इच्छा मालूम हुई तो उन के क्रोध का ठिकाना न रहा. मुझे अभी तक याद है वह सब."

अविनाश रुका, शायद अंतर में उठती टीस को चुपचाप सहन करने के लिए.

"'बोर्ड की परीक्षा सिर पर आ रही है और शहजादे के नखरे तो देखो, चित्रकला सीखेंगे. मैं सिखाता हूं तुझे चित्रकला?' पिता ने गरजते हुए मेरा ब्रश तोड़ दिया और रंगों को नाली में उड़ेल दिया. इस के बाद उन्होंने उन कापियों-कागजों को फाड़ना शुरू कर दिया, जिन पर मैं ने चित्र बना रखे थे. मुझे लग रहा था जैसे कोई मेरे ही चीथड़े कर के फेंक रहा है. मैं चुपचाप देखता रहा. इस के बाद उन्होंने कस कर चारपांच थप्पड़ मेरे गालों पर मारे और बोले, 'अब अगर तुझे चित्र बनाते देखा तो उंगलियां तोड़ दूंगा.' मेरे गालों पर अपनी उंगलियों की चित्रकारी करने के बाद उन्होंने मेरी उंगलियां तोड़ने की धमकी दी. उस रात मुझे नींद नहीं आई. थप्पड़ों की पीड़ा कुछ देर में समाप्त हो गई, पर मन की अंतहीन पीड़ा चैन नहीं लेने दे रही थी.

"उस रात मेरा मन हुआ था कि मां के गहने चुरा लूं या पिता की साइकिल या घड़ी बेच दूं. कुछ भी ऐसा करूं जिस से पैसा मिले और कहीं दूर चला जाऊं, जहां अपनी चित्रकला की साधना कर सकूं, जहां कोई टोकने वाला, [illegible] न हो.

"लेकिन मैं कुछ भी तो नहीं कर पाया. बस, पिताजी द्वारा फाड़ी गई कापियोंकागजों को समेटा और उन में आग लगा दी.

"उन कागजों के धुएं ने मेरे मन में आक्रोश की अकुलाहट भर दी. तीनचार दिन बाद मैं ने स्कूल के एक आवारा लड़के के साथ सिगरेट का कश खींचा. शरीर ने विरोध किया, पर मन ने कहा 'कड़वाहट झेलने के लिए कड़वाहट पियो.'

"मन में विद्रोह सुलगने लगा था, मैं किताबें लिए बैठा रहता, पर पढ़ता नहीं था. मैं पिताजी से बदला लेना चाहता था. दिखाना चाहता था कि सिर्फ किताबें घोटने से कोई अच्छे अंक नहीं लाता. उन्होंने मेरे अरमानों का गला घोंट दिया था, और मैं उन की इच्छा की अवहेलना कर रहा था.

"परीक्षाफल निकला. मैं फेल हो गया था. अब मुझे होश आया, मैं ने यह क्या किया? मैं फेल नहीं होना चाहता था. पर अब क्या हो सकता था?

"डरतेडरते घर आया. संयोग से पिताजी घर पर नहीं थे. मां को बताया. वह दर्दभरे स्वर में बोलीं, 'ऐसा कैसे हो गया रे?'

"**मैं** धड़कते मन से पिताजी के आने की प्रतीक्षा करने लगा. अपने आप को उन का सामना करने के लिए भी तैयार करता रहा. वह दो दिन बाद लौटे.

' "कहां गया तुम्हारा सपूत?' घर में पहुंचते ही उन्होंने मां से पूछा.

"मैं सहमता हुआ उन के सामने आया. अपनी अकड़ भी कायम रखना चाहता था. क्या कर लेंगे? प्रताड़ित ही तो करेंगे. उसे सहने के लिए मैं तैयार था.

"पिताजी ने बिना कुछ पूछे थप्पड़ों की बौछार शुरू कर दी, 'चल तुझे टेलीफोन कंपनी में गड्ढे खोदने का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिला दूं?' भर्त्सना भरे स्वर में उन्होंने कहा.

'"आप को कष्ट करने की जरूरत नहीं है, मैं खुद ढूंढ़ लूंगा. आप ने मेरे लिए जो गड्ढा खोद दिया है वही बहुत है?' अपनी शारीरिक पीड़ा के बीच मैं बोला.

'"अब्बू,' मां ने मुझे टोका, 'अपने पिता से जबान लड़ाता है, अभागे?'

"पिताजी भी और गुस्से में आ गए. बोले, 'देख लिया न अपने लाड़ का फल. देख लेना, एक दिन यह तुम्हारे सिर पर अंगारे जलाएगा, तब तुम्हें पता चलेगा?' फिर मेरी ओर मुखातिब हो कर बोले, 'गड्ढा तो तू जन्म से ही अपने लिए खोद रहा है, नालायक. शर्म नहीं आती, जा दूर हो जा मेरी नजरों से?'

"उन्होंने धक्का दे दिया. मैं चीख उठा. बड़ी देर बाद उठ पाया. उस रात मुझे नींद नहीं आई थी. मैं ग्लानि में गला जा रहा था. सच, मैं ने किस से बदला लिया? पिताजी ने मुझ से मेरा आकाश छीना था, मैं ने स्वयं से अपना धरातल छीन लिया. अपने आवारा रईस दोस्त से मांगी हुई सिगरेट की डब्बी छिपा कर रखी हुई थी मैं ने, उसे लिया, माचिस ली और उठ कर पिछवाड़े चला गया. लगातार तीनचार सिगरेटें पीं. धुएं को खींच कर फिर से मनचाहे ढंग से उगलने पर मुझे लगता, जैसे मैं अपने क्षोभ, अपमान को उगल रहा हूं, उड़ा रहा हूं. जब मन होता तब जलती सिगरेट को मसल कर बुझाने पर अपने अंदर एक अजीब सी हिम्मत का एहसास होता, जैसे मैं जो चाहूं कर सकता हूं, मुझे किसी की परवाह नहीं. तभी मैं ने देखा, एक परछाई मेरी ओर चली आ रही है. वह मां थीं. शायद मेरी तरह उन्हें भी नींद नहीं आई थी या मेरे उठने की आहट उन्हें मिल गई थी.

'"अब्बू...!' वह फुसफुसाईं.

"मैं ने जल्दी से सिगरेट बुझा दी, पर उन्होंने मुझे ऐसा करते देख लिया था.

'"क्यों रे, तू सिगरेट पी रहा है?' भारी चक्कों के बीच पिसी सी उन की आवाज निकली. उन्होंने अपने दोनों हाथ इस तरह मेरी ओर बढ़ाए, जैसे वह मेरा गला ही घोंट देंगी.

"मेरे एकदम निकट आ कर वह हाथों से अपना सिर थाम कर बैठ गईं. मैं भी चुप रहा.

'"मुझे कुछ दिनों से लग रहा था कि

तेरे मुंह से कोई गंध आती है. पर मैं नहीं जानती थी कि तू ऐसा नालायक हो सकता है. जानता है, तेरे पिताजी को मालूम होगा तो तेरी क्या गत बनेगी?' मां ने रोते हुए कहा.

'"हूं,' मैं ने कहा.

'"क्या हूं?'

'"यही कि वह मेरी उंगलियां तोड़ देंगे. मेरी जीभ खींच लेंगे?' मैं ने कड़वे स्वर में कहा.

'"अब्बू,' मां ने उठ कर मेरे कंधों को पकड़ लिया, 'मुझे लग रहा है मेरे घर में कुछ ऐसा होने वाला है, जिस से मुझे बहुत क्लेश पहुंचेगा. सच बता, अब्बू, तेरी क्या मंशा है. मुझे तेरे लच्छन अच्छे नहीं दिख रहे हैं.'

"मैं चुप ही रहा.

'"मुझ से अपने मन की बात बता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बेटे,' वह ग्राकुल स्वर में बोलीं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मां की ग्रकुलाहट ने मुझे विचलित कर दिया. वैसे भी मां के प्रति मेरे मन में ग्राक्रोश नहीं था.

"मां, मैं कहीं चला जाऊंगा.'

"'मैं जानती थी तू ऐसा ही सोच रहा होगा. तेरी उमर में लोग ऐसा ही सोचते हैं.' मेरे कंधे पर मां की पकड़ ढीली पड़ गई. 'देख, बेटे, घर छोड़ना ग्रच्छी बात नहीं होती. न ही किसी ग्रनजानी जगह पर ठोकरें खाना इतना ग्रासान होता है, जैसा कि तेरे जैसे नासमझ सोचते हैं. फिर भी मैं जानती हूं कि तेरी उमर ग्रब यह नहीं रह गई है कि मैं तुझे बांध कर रख सकूं. मैं चाहती हूं...' वह फिर चुप हो गईं.

"'क्या चाहती हो, मां?' मां के विचार जानने को मैं उत्सुक हो उठा.

"'मुझे बता कर जाना. ग्रपनी खैर-खबर देते रहना. तू जानता है, तुझे घर ग्राने में जरा सी देरसबेर हो जाती है तो मेरे प्राण निकलते हैं.' फिर बात पूरी होने से पहले ही मां की सिसकियां शुरू हो गईं. कुछ क्षण रुक कर वह बोलीं, 'ग्रच्छा ग्रब चल कर सो जा.'

"कुछ ही दिन बाद एक रात मां को बता कर मैं चुपके से बंबई पहुंच गया. संभवतः मां भी मेरे ग्रौर पिताजी के बीच टकराव को बचाना चाहती थीं. लेकिन मैं बंबई जे. जे. स्कूल में कला सीखने नहीं, फुटपाथ पर ठोकरें खाने पहुंच गया था." ग्रविनाश व्यंग्य के साथ बोला. "संयोग से एक सज्जन मिल गए. उन्होंने मेरी हालत पर तरस खा कर मुझे एक फैक्टरी में एक छोटी सी नौकरी दिलवा दी. बस इस प्रकार चित्रकार बनने का स्वप्न लेने वाले व्यक्ति के जीवन की दिशा ही बदल गई."

"लेकिन ग्राप के पास तो मैट्रिक का प्रथम श्रेणी का प्रमाणपत्र है?" सीमा जैसे तंद्रा से जागी.

"हां, बंबई में मैं जिस फर्म में काम करता था वहां पर दसवीं पास व्यक्ति को ही ग्रापरेटर का चांस दिया जाता था. मैं ने किसी तरह प्राइवेट परीक्षा दे कर मैट्रिक पास कर ली." ग्रविनाश ने बताया, "बरसों तक मैं स्वयं को तथा पिताजी को क्षमा नहीं कर पाया. इसी लिए रोहित की समस्या ने मुझे उद्वेलित कर दिया.

'मैं नहीं चाहता, जिस स्थिति से मुझे गुजरना पड़ा वैसी मानसिकता से रोहित भी गुजरे. ग्रपने शौक को ले कर रोहित भी मेरे जैसा ही समर्पित होगा. उस का समर्पण भाव टूटना मुझे सहन नहीं हुग्रा. ग्रपने निर्णय से मैं उस के भविष्य को बनानेबिगाड़ने का दावा नहीं कर रहा हूं. भविष्य को कोई मुट्ठी में कैद नहीं कर सकता. न ही जिंदगी कोई गणित है जिसे किसी प्रतिपादित सिद्धांत द्वारा हल किया जा सके. मैं उसे केवल ग्रपना जीवन जीने का सुख देना चाहता हूं."

सीमा भावुक हो उठी. पति के विचारों की गरिमा ग्रौर इकलौती संतान की ग्राकांक्षा में उस के सहयोग से. ●

तमन्ना

या इस तरह बना के
बनूं सब के सर का ताज,
या इस तरह मिटा के
जमाना मिसाल दे.

—ताज भोपाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

शिक्षक के न आने के कारण 11वीं कक्षा में बहुत शोर हो रहा था. शोरगुल सुन कर अंग्रेजी के अध्यापक तमतमाते हुए कक्षा में आए और बोले, "यहां किस अध्यापक का पीरियड है? स्कूल के अनुशासन की किसी को कोई चिंता नहीं. आजकल अध्यापकों चरित्र नाम की कोई चीज नहीं रही. जाओ, तुरंत बुला कर लाओ अपने अध्यापक को."

"श्रीमान, आज आप का ही अंग्रेजी का पीरियड है," एक छात्र ने साहस बटोर कर धीरे से कहा.

—कैलाश शर्मा

✦ उन दिनों मैं कालिज के छात्रावास में रहती थी. छात्रावास में रहने वाली हम सभी लड़कियां प्रायः कीकर की दातुन से दांत साफ कर के उन्हें कमरों के सामने ही फेंक दिया करती थीं.

एक दिन छात्रावास की अधीक्षक आईं और कमरों के सामने बिखरी हुई दातुनों को अपने हाथों में उठा कर बाहर कूड़ेदान में फेंक आईं. इस घटना के कारण शर्म से हम सभी छात्राएं उन से आंख तक नहीं मिला सकीं. उस दिन के बाद किसी ने फिर कभी दातुनों को कमरों के सामने नहीं फेंका.—**चंद्रा वर्णवाल** **(सर्वश्रेष्ठ)**

✦

हमारे महाविद्यालय के दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक बराबर सोचविचार में मग्न रहते थे. वह अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण पूरे महाविद्यालय में विख्यात थे.

एक दिन जब मैं छात्रावास से महाविद्यालय की ओर जा रहा था तो प्राध्यापक से मेरा सामाना हो गया. मैं ने उन्हें नमस्कार किया, जिस का जवाब न दे कर उन्होंने कहा, "सुनो, जरा अपना कलम देना. मैं अपना कलम घर छोड़ आया हूं, लिफाफे पर पता लिखना है."

मैं ने उन्हें अपना कलम दे दिया और महाविद्यालय की ओर बढ़ गया. कुछ देर बाद प्राध्यापक मेरे पास से गुजरे. मैं ने उन्हें आवाज दी, "श्रीमान, मेरा कलम."

उन्होंने कुरते की जेब में हाथ डाला तो एक वही लिफाफा निकला. दोनों जेबों में भी जब कलम न निकला तो उन्होंने धीरे से कहा, "अरे भई, गजब हो गया. इस लिफाफे को बजाए पत्रपेटी में डालने के मैं तुम्हारा कलम ही शायद पत्रपेटी में डाल आया हूं. यह लिफाफा लेते जाओ और डाकघर वालों से पत्रपेटी खुलवा कर उस में से अपना कलम निकाल लेना और इस लिफाफे को पोस्ट कर देना.

डाकघर में जा कर जब मैं ने पत्रपेटी खुलवाई तब मुझे अपना कलम मिल गया. मैं ने प्राध्यापक का वह लिफाफा पोस्ट कर दिया और कलम ले कर वापस आ गया.

—विनय रंजन 'बीनू'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

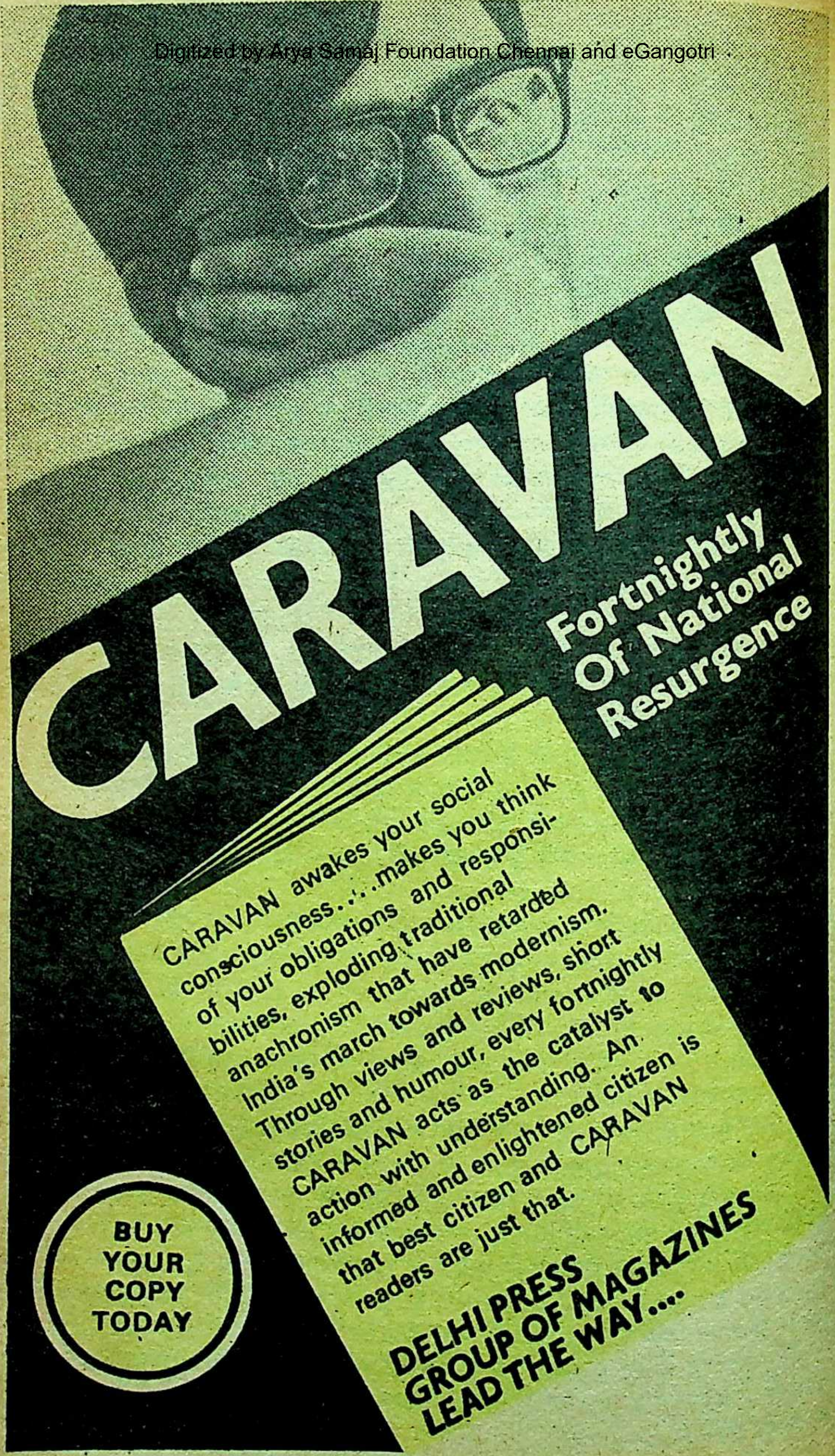

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल मंडल विकास निगम

लक्ष्य के विपरीत बढ़ते कदम

लेख • सिंधु गोयल

इस निगम का गठन भले ही पर्वतीय क्षेत्र में विकास योजनाएं शुरू करने के लिए किया गया हो, पर निगम ने अब तक केवल राष्ट्रीय जनधन की क्षति ही की है. तब भी सरकार निगम की गतिविधियों की ओर ध्यान न दे कर इसे करोड़ों रुपयों की कई नई योजनाएं शुरू करने की छूट क्यों देना चाहती है?

सदियों से गढ़वाल का इलाका हमारे शासकों द्वारा उपेक्षित रहा है.

चाहे कुनंदा शासक हों या वीर मराठा, पहाड़ी इलाके का प्रयोग हमेशा युद्ध के दृष्टिकोण से ही किया गया.

यों अहिल्याबाई होलकर, अशोक व पांडवों तक की इस क्षेत्र में रुचि रही, पर कठिन पहाड़ी परिस्थितियों के कारण न यहां कला का विकास हुआ और न ही शिक्षा, संगीत या भवनों का.

1816 में सगौली संधि के तहद गढ़वाल का पूरा क्षेत्र अंगरेजों के पास आ गया. अंगरेजों को यह क्षेत्र छावनी व गरमियों में रहने के लिए खासा पसंद आया.

धन से निर्धन पर यौवन व मासूमियत से परिपूर्ण पहाड़ी युवतियों में अंगरेजों को टैनिस से भी ज्यादा मनोरंजन नजर आया और अंगरेज बहादुर की कोठी पर जाना रुतबे की बात समझा जाने लगा.

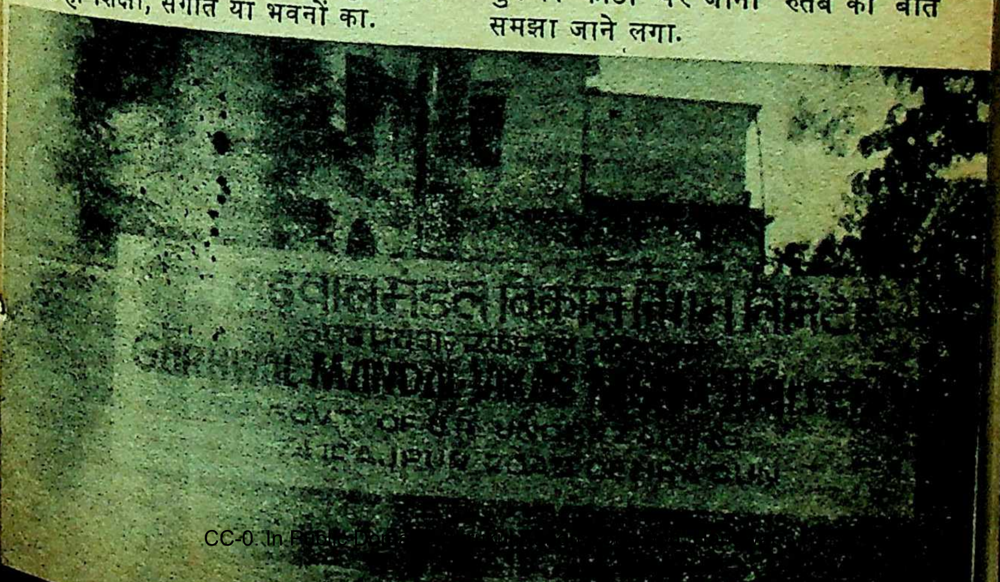

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम ग्रामदनी वाले कुटीर उद्योगों को छोड़ कर गढ़वाली अंगरेजों के माली, चौकीदार, खानसामा, घरेलू नौकर, ग्राया, मालिश करने वाले, ग्रादि बनते चले गए.

कुछ हलचल भी मची, पर पेड़पत्थर से भी डरने वाला हिंदू ब्रिटिश हंटर से भला कैसे टकराता?

एक समय वह भी ग्राया जब यहां ग्रात्मसम्मानी युवतियों ने सामूहिक ग्रात्म-हत्याएं कीं, पर ऐसा भी कितनी बार हो सकता था?

इन सामाजिक व ग्रार्थिक परि-स्थितियों में डेढ़ सौ वर्ष तक पला गढ़-वाल का क्षेत्र पिछड़ेपन की निशानी समझा जाने लगा. यहां प्रति वर्ग किलो-मीटर में सिर्फ 65 व्यक्ति रहते हैं, जब कि उत्तर प्रदेश के ग्रधिकतर जिलों में यह संख्या 500 से ऊपर है.

धन कमाने के विचार से किए जाएं)."

इस प्रकार निगम ने चार प्रकार की गतिविधियां ग्रपने हाथ में लीं.

उद्योग लगाना.
विपणन.
भवन निर्माण.
व्यावसायिक पर्यटन.

ग्राइए, इन का जाएजा लें.

बिरोजा एवं तारपीन तेल फैक्टरी

उन्नीस लाख रुपए की लागत से तिलवाड़ा (चमोली) में स्थापित इस कार-खाने की वार्षिक क्षमता 1,800 टन है.

यहां यह उल्लेखनीय है कि पहले लीसा टिपान का कार्य भी निगम के पास था पर फरवरी, 1979 में वन विभाग ने इसे निगम से वापस ले लिया.

पहले वर्ष कुल 650 टन उत्पादन

निगम का व्यापार विभाग कार्यालय (सामने) : निगम की उद्योग, समाचार व निर्माण संबंधी गतिविधियां घाटे का सौदा सिद्ध हो रही है. ऐसे में इन पर हमेशा के लिए प्रतिबंध लगा देना क्या एक सही कदम नहीं होगा?

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने यहां की सामाजिक व्यवस्था को सुधारने में करोड़ों रुपए खर्च किए, पर बहुत थोड़ी ही सफलता प्राप्त हो सकी.

मार्च, 1976 में यहां एक करोड़ रुपए की ग्रधिकृत पूंजी से 'गढ़वाल मंडल विकास निगम' की स्थापना की गई. निगम की रिपोर्ट में लिखा है:

"निगम का मुख्य लक्ष्य पर्वतीय क्षेत्र में उद्योगों का विकास कर के ग्रधिक से ग्रधिक लोगों को जीविकोपार्जन के साधन दिलाना एवं संपूर्ण क्षेत्र में ग्रार्थिक गतिविधियां उत्पन्न करना है. यहां लोगों का झुकाव उद्यमशीलता की ग्रोर नहीं है और वे नौकरी की ग्रोर भागते हैं. क्योंकि निगम की स्थापना 'कंपनीज एक्ट' के ग्रंतर्गत की गई है, ग्रतः यह ग्रपरिहार्य है कि इस के सभी कार्यकलाप वाणिज्यक हों (यानी

हुग्रा ग्रौर 1979-80 में 938 टन.

इस प्रकार केवल दो वर्षों में ही निगम ग्रपनी क्षमता से 56 प्रतिशत पीछे चल रहा है.

निगम के ग्रधिकारी इस ग्रक्षमता का कारण वन विभाग द्वारा कम लीसा देना बताते हैं, पर वे यह बताने में ग्रसमर्थ हैं कि जब लीसा स्वयं उन के हाथ में था तब भी उत्पादन केवल 33 प्रतिशत ही क्यों हो पाता था.

वास्तविकता है नातजरबेकार व्यक्तियों के हाथ में इस का प्रबंध. ग्रनु-मान तो यह है कि लीसा टिपान के हाथ से निकल जाने से इस कारखाने की हालत ग्रौर भी खराब हो जाएगी. इस समय कुल क्षमता का केवल चार प्रतिशत ही उत्पादन हो रहा है जो चिंता का विषय होना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वत वुड वुल फैक्टरी

मुनि की रेती (टिहरी) में स्थित वुड(लकड़ी की छीलन)बनाने वाली 3.3 लाख कीमत के इस कारखाने की हालत तो बहुत ही खस्ता है.

अपनी आधी उत्पादन क्षमता तक भी न पहुंच सकने वाला यह कारखाना लाखों रुपए का घाटा दे चुका है.

निगम के अधिकारी इस का कारण पर्याप्त कच्चा माल न मिलना बताते हैं, जब कि गढ़वाल मंडल की 65 प्रतिशत भूमि पर जगल ही जंगल हैं व यहा से अनेक राज्यों की लकड़ी की मांग पूरी होती है.

निगम के एक उच्च अधिकारी ने बताया कि वह 'इस सिरदर्द से छुट्टी पाना चाहते हैं, पर कुछ स्थानीय दबावों के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा है.'

संगठित काष्ठ उद्योग, गवाणा

लाखों रुपए की लागत से स्थापित लकड़ी का फर्नीचर व चौखटे बनाने वाला गवाणा (उत्तर काशी) में लगा यह कारखाना वर्ष भर में एक लाख रुपए मूल्य का उत्पादन भी नहीं कर पाता.

पिछले दो वर्षों में ही इस ने 81 हजार रुपए से अधिक का घाटा दिया है.

लाज छिपाने के लिए इस कारखाने को और ज्यादा पूंजी लगा कर पुनर्गठित किया जा रहा है.

इस प्रकार उद्योग के क्षेत्र में निगम पूर्णतया असफल रहा है. इस से स्थानीय व्यक्तियों का कोई आर्थिक विकास नहीं हुआ, उलटे लाखों रुपए प्रति वर्ष के घाटे दे कर निगम ने जनता के पैसे को बरबाद ही किया है.

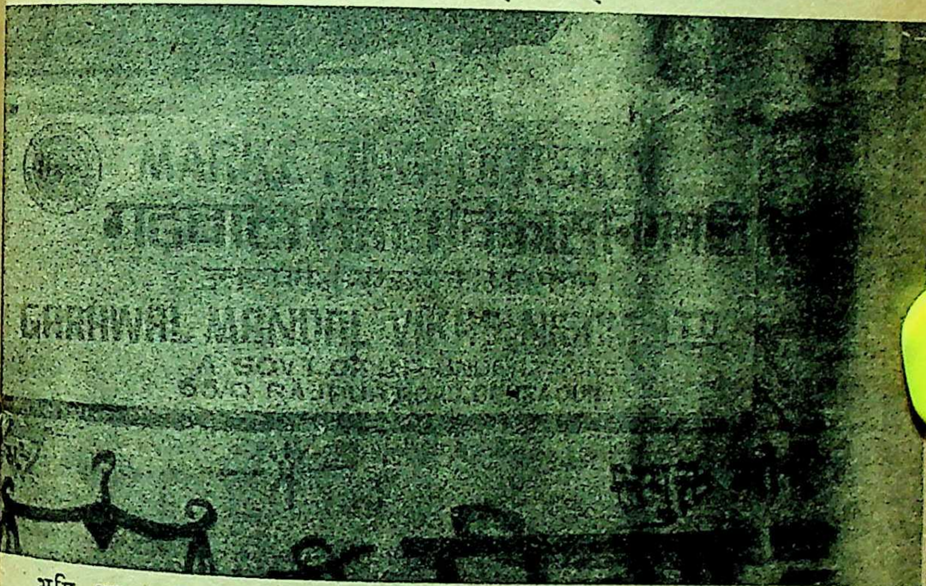

विपणन

गढ़वाल मंडल में बड़े पैमाने पर सेब, आलू, मालटा, गलगल, राजमा, रामदाना आदि उगाया जाता है.

निगम ने 1978-79 व 1979-80 में क्रमशः 8,000 व 10,000 पेटी सेबों का व्यापार किया, उद्यान वालों को 5,000 खाली पेटियां सप्लाई कीं, 3,500 बोरी आलू खरीदाबेचा. शायद किसी अधिकारी को बंगलौर घूमना होगा, इसलिए यहां का आलू बंगलौर में भी बेचा गया.

निगम ने चमोली जिले का सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालटा, गलगल व राजमा भी खरीद डाला. यह बिका नहीं व सड़ गया. इस से किसी को क्या?

रही निगम को आठदस लाख का घाटा होने की बात तो इसे पूरा करने के लिए निगम सरकार से 'अनुदान' मांग रहा है.

कुछ बागवानों ने हमें बताया कि यदि अधिकारियों को खुश कर दिया जाए तो सड़ागला माल भी चल जाता है और वास्तव में चला है.

"भाव तय करने में भी निगम के कर्मचारी व्यापारी कम व दलाल अधिक नजर आते हैं," एक और भुक्तभोगी का कहना था.

बिक्री भाव से अधिक मूल्य पर खरीद, दूरगामी बाजार, ऊंचे विविध (पैकिंग, ढुलाई, लदाई आदि) खर्चे, माल का सड़ना—ये सब इन कथनों का समर्थन करते प्रतीत होते हैं.

निगम के पास अच्छी आरामदेह बसों की कमी नहीं है और न ही यात्रियों की—फिर भी परिवहन के काम में निगम को 1978-79 में 6.51 लाख रुपए और 1979-80 में डेढ़ लाख रुपए का घाटा क्यों हुआ? (सामने निगम की एक बस)

भवन निर्माण

भवन व संबंधित निर्माण कार्य के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के दसियों निर्माण विभाग हैं.

पर निगम को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि ये विभाग 'पर्यटक आवास गृह' तेजी से नहीं बना पाते. अत: निगम ने भी एक 'निर्माण अनुभाग' खोल दिया.

पर अधिशासी अभियंता की देखरेख में अभी तक निगम अन्य विभागों के भवनों की मरम्मत ही कर रहा है और वह भी ठेकेदारों के जरिए. यह कहिए कि नौकर ने मालिक का काम करने को नौकर रख छोड़ा है.

पर आखिर क्यों? इस का जवाब है—पांचछ: लाख के भवन में पांचछ: लाख ही मरम्मत पर खर्च हो रहा है. कैसे? इसे सब जानते हैं.

पर्यटन

मसूरी, देहरादून, बद्रीनाथ, केदारनाथ, जोशीमठ, कर्णप्रयाग, गौरीकुंड, नंदप्रयाग, ग्वालदम, घांगरिया, गंगोत्री, यमुनोत्री, पुष्प घाटी, सहस्रधारा, हर की दून, रूप कुंड, मदमहेश्वर, तुंगनाथ, रिंगाली, खतलिंग, दयारा, डाकपत्थर, औली, गुप्तकाशी, लंका (रावण वाली नहीं), आदि अपने नैसर्गिक सौंदर्य व शीतलता के लिए विख्यात हैं.

प्रति वर्ष करीब दो लाख यात्री तो सिर्फ बद्रीनाथ, केदारनाथ ही आते हैं.

जाड़ों में निगम कार्बेट नेशनल पार्क, काठमांडू, कन्याकुमारी व गंगा सागर के लिए भी भ्रमण का आयोजन करता है.

निगम के पास 20 डीलक्स बसें हैं जो अच्छी हालत में हैं.

इस काम में 1978-79 में निगम को 6.51 लाख रुपए का घाटा हुआ व 1979-80 में डेढ़ लाख रुपए का.

पर्यटन के संबंध में मेरी बातचीत निगम के प्रधान प्रबंधक विनय मोहन मधवाल से हुई. मैं ने उन से पूछा, "गढ़वाल इस कदर सुंदर है, फिर भी यहां पर्यटक कशमीर या नेपाल के मुकाबले बहुत कम आते हैं. इस का क्या कारण है?" उन का जवाब था, "आजकल पर्यटन बहुत महंगा हो गया है. यह सोचना गलत है कि पर्यटक सौडेढ़ सौ रुपए रोज खर्च कर यहां महज ठंडी हवा खाने आता है. ठंडी हवा तो घर बैठे कूलर से भी मिल सकती है. पर्यटक स्वच्छंदता चाहता है, नित्यक्रम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हट कर कुछ अद्भुत व रोमांचकारी चाहता है. वह सब नेपाल में उपलब्ध है पर यहां प्रतिबंधित है.''

''आप का निगम पर्यटन में घाटा क्यों उठा रहा है?''

'अनियमितताओं व स्वच्छंदता के कारण. मैं तो हाल ही में आया हूं. चोरी, नकली पुर्जे, बिना रजिस्टर में दर्ज किए गाड़ी चलाना आदि घाटे के मुख्य कारण हैं. मैं ने सख्ती बढ़ाई है. बसों के टूर, यात्रियों की संख्या व आमदनी में 40 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर दिखाई है व घाटा 80 प्रतिशत नियंत्रण में आ गया है.''

''भ्रमण के अलावा आप के पास पर्यटक के लिए क्या आकर्षण है?''

''हम ने ट्रैकिंग शुरू कर दी है व माउंटेन फ्लाइट (पहाड़ों से सट कर जहाज की सैर) भी शुरू की जा सकती है. जोशीमठ से औली तक रोप वे ट्राली की योजना है व औली को शीतकालीन क्रीड़ा केंद्र बनाने का विचार चल रहा है.''

इस तमाम जानकारी के साथ मैं निगम के प्रबंध निदेशक श्री सुभाषचंद्र बहुखंडी से मिली.

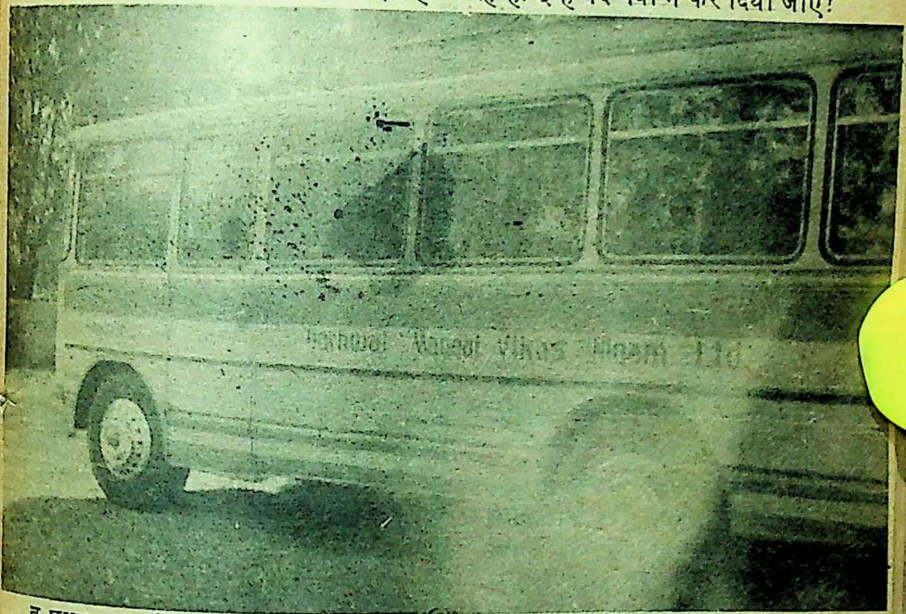

प्रशासनिक सेवा से संबद्ध श्री बहुखंडी का पालनपोषण व जन्म गढ़वाल मंडल में ही हुआ है और वह उत्तर प्रदेश सचिवालय में पर्वतीय विकास विभाग के उप सचिव भी रहे हैं. बहुत ही सरल, सादा एवं सौम्य स्वभाव है श्री बहुखंडी का. मिलते ही बोले, ''हम कुछ भी छिपाना नहीं चाहते. आप बेहिचक कुछ भी पूछें.''

''निगम के सभी उद्योग घाटे में चल रहे हैं. इन्हें बंद क्यों न कर दिया जाए?'' मैं ने स्पष्ट सुझाव दिया.

''तारपीन फैक्टरी घाटा नहीं दे रही अलबत्ता उत्पादन कम हो रहा है. कारण साधनों की नहीं अपितु कुशल कर्मचारियों की कमी प्रतीत होती है. वुड वुल कारखाना बंद करना चाहते हैं, पर नियोजन को ले कर स्थानीय समस्याएं हैं. लकड़ी का कारखाना भी कुछ ठीक नहीं चल रहा है.''

''व्यापार में तो निगम बहुत बुरी स्थिति में है,'' मैं ने कहा.

''हम स्थानीय बागबानों की सहायता करने के कारण यह घाटा उठा रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई-होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :

संपादकीय विभाग

मुक्ता, दिल्ली प्रेस,

नई दिल्ली-110055.

पहाड़ों की वजह से ढुलाई भी ज्यादा पड़ती है."

"सहायता का क्या यह मतलब है कि घाटे के सौदे किए जाएं?"

"विकास के लिए सरकार को ऐसा भी करना पड़ता है. सरकार जो करोड़ों रुपए के अनुदान देती है क्या वह घाटा नहीं है? वह भी तो जनता की जेब से टैक्स के रूप में आएगा."

"पर्यटन उद्योग को आप यदि अपनी एकमात्र गतिविधि बना लें और उसी के विकास में जुट जाएं तो कैसा रहे?" मैं ने जानना चाहा.

"पर्यटन के क्षेत्र में यहां निजी उद्यमी कम हैं. हमारी योजनाएं व कार्य आप ने देखे हैं, हम तेजी से सुधार कर रहे हैं. विदेशी व स्तरीय पर्यटकों के लिए आकर्षण बढ़ा रहे हैं.

"यदि हम अन्य गतिविधियां छोड़ दें तो यह गलत होगा. क्षेत्र को हमारी सभी तरफ आवश्यकता है. जहां नागरिक क्षेत्र कार्यरत है, जैसे खनिज में, वहां हम नहीं जाते."

एक प्रबंध निदेशक के रूप में उन की अपनी सीमाएं हैं वरना यह मानना होगा कि निगम चरमरा रहा है.

1976-77 में कुल 5.27 लाख का कार्य हुआ व 3.16 लाख का घाटा हुआ.

वर्ष 1977-78 में निगम की पूंजी दो करोड़ रुपए कर दी गई थी. इस वर्ष 42.81 लाख के कार्य में 8.21 लाख का घाटा हुआ.

वर्ष 1978-79 व 1979-80 में भी कुल कारोबार एक करोड़ से कम रहा.

इन वर्षों में निगम ने अनुमानित तुलनपत्रों में 78 हजार व 15 लाख का लाभ दिखाया है, पर यह भ्रामक है.

इस में विभिन्न कर व शुल्क शामिल नहीं हैं जो निगम को अंततः दसियों लाख के घाटे में ही ले जाएंगे.

यह आश्चर्य का विषय है कि 1978-79 व 1979-80 के पक्के चिट्ठे अभी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तैयार नहीं हैं व न ही किसी को इस बात की चिंता है.

सरकार द्वारा भेजे आडिटर भी इन सब अनियमितताओं को कैसे पचाते हैं, समझ में नहीं आता.

जनता का भी निगम में विश्वास नहीं है.

इस पर भी अपने बिगड़े व अधूरे कार्यों को सुधारने के स्थान पर निगम लंबीचौड़ी योजनाओं की तरफ हाथ फैला रहा है.

निगम की भावी योजनाएं

अठारह करोड़ का कागज का कारखाना, चार करोड़ का छोटा सीमेंट कारखाना, दूरबीन बनाने का कारखाना, स्टोन मैसनरी ब्लाक यूनिट, सोयाबीन को व्यवहार में लाने लायक बनाने का कारखाना, जड़ीबूटियों का कारखाना, विलायक निस्सारण (सालवेंट ऐक्सट्रैक्शन) संयंत्र, इलैक्ट्रोनिक्स कारखाना, माचिस फैक्टरी आदि इस निगम की भावी योजनाएं हैं.

यह अंदाजा लगाना मुशकिल नहीं कि इन सभी योजनाओं को भी घाटे का ही मुंह देखना पड़ेगा व घाटे की पूर्ति जनता पर टैक्स लगा कर की जाएगी.

सरकार को चाहिए कि इस निगम की उद्योग, व्यापार व निर्माण संबंधी गतिविधियों पर हमेशा के लिए प्रतिबंध लगा दे ताकि जनधन का दुरुपयोग रुक सके व कर्तव्यहीनता को बढ़ावा न मिले.

पर्यटन संबंधी निगम की गतिविधियों पर सरकार को व्यापक दृष्टिकोण से सोचना चाहिए कि वह खानेपीने व आमोदप्रमोद के मामले में पर्यटकों को आवश्यक स्वच्छंदता देने को तैयार है या नहीं.

यदि सरकार ऐसा आवश्यक नहीं समझती तो बेहतर यही होगा कि करोड़ों रुपए की आकर्षक योजनाओं को भूल कर निगम को पूर्णतया बंद कर दिया जाए. ●

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया. प्रशंसा की चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

तुलसी की वास्तविकता पाठकों के सामने ला कर रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

मूल्य रु. 8, डाक खर्च रु. 2.

पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट.

मनीआर्डर द्वारा 5 रुपए भेजिए.

वी.पी.पी. से भेजना संभव नहीं है.

विश्व विजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

VV/P 159

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

मेहमानों की खातिर का अनूठा तरीका

अंबिकापुर सिंचाई विभाग के कार्यालय में एक अधिकारी ने मेहमानों की खातिर करने का एक नया तरीका अपनाया है. कुछ दिनों पहले जब दो पत्रकार उक्त अधिकारी के दफ्तर में उस से मिलने गए तो अधिकारी ने बड़े सम्मान के साथ उन्हें काफी पिलाई. पर जब वे पत्रकार उन के कार्यालय से बाहर निकले तो दरवाजे पर खड़े चपरासी ने बड़ी ही नम्रता से कहा, "साहब, काफी के तीन रुपए दे दीजिए." पत्रकार बजाए कुछ कहने के उसे तीन रुपए दे कर चुपचाप आगे बढ़ गए. —देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : उमाकांत सोनी 'विनय')

✦

स्कूल जाने का शौकीन कुत्ता

जोगवाड़ा (मध्य प्रदेश) के निवासी एक हरिजन का कुत्ता स्कूल की घंटी बजते ही स्कूल में जा कर प्रार्थना के लिए बनी छात्रों की पंक्ति में बड़े ही अनुशासित ढंग से खड़ा हो जाता है. बाद में वह एक कक्षा में बैठ कर शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जाने वाले पाठ को ध्यान से सुनता है.

आधी छुट्टी के समय वह छात्रों की भांति कक्षा से बाहर चला जाता है. आधी छुट्टी के समाप्त होने पर वह दोबारा आ कर पूरी छुट्टी होने तक बैठा रहता है. वह कुत्ता किसी को परेशान नहीं करता. —स्वदेश, इंदौर (प्रेषक : प्रतापसिंह गौड़)

✦

फिल्मी अंदाज में डकैती

गाजियाबाद के देहरा ग्राम में पिछले दिनों फिल्मी ढंग की एक भयंकर डकैती पड़ी. लगभग 60 डाकुओं का एक दल यहां ट्रक में आया और नहर के किनारे पर रुका. डाकुओं ने रंगबिरंगे कपड़े पहने हुए थे.

उन्होंने पहले शराब पी और फिर नाचनेगाने लगे. गांव वाले इन्हें बाराती समझ कर इन का नाचगाना देखते रहे.

अचानक इन डाकुओं ने ट्रक से अपनेअपने हथियार निकाल लिए और गांव को चारों ओर से घेर कर लूटना शुरू कर दिया.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : ताराचंद)

✦

13वीं बार अदालती सम्मन

बिजनौर की अदालत द्वारा एक मृत व्यक्ति को अदालत में उपस्थित होने के लिए 13वीं बार सम्मन जारी किया गया.

जैकलसिंह नामक व्यक्ति के खिलाफ बिजनौर की अदालत में चोरी का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकदमा चल रहा था. पिछले वर्ष [illegible] गांव में उस की मृत्यु हो गई. उस की मृत्यु का प्रमाणपत्र भी अदालत में जमा किया जा चुका है. फिर भी उस व्यक्ति के नाम अदालत से कई बार सम्मन जारी किया गया.

—दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक : जयकुमार बड़कुर)

✦

मलबे में जीवित बच्चे मिले

भयंकर भूकंप से पीड़ित अल असनम नगर (अलजीरिया) में चार दिन से मलबे के नीचे दबे दो लड़के मलबा हटाने पर जीवित मिले. विनाशलीला से पीड़ित अल असनम के नगरवासी इस चमत्कार को देख कर दंग रह गए. बच्चों के अलावा और कोई भी व्यक्ति जिंदा नहीं निकला.

मलवा हटाने वाले बुलडोजरों और अन्य भारी यंत्रों के शोरशराबे के बीच चार दिन से मलबे के नीचे दबे इन बच्चों की हलकीहलकी आवाजें राहत कार्य में जुटे एक कर्मचारी के कानों में पहुंची तो उस कर्मचारी और अन्य स्वयंसेवकों ने वहां से धीरेधीरे मिट्टी व मलबा हटाना शुरू किया. मलबा हटाने पर पता चला कि एक जीने के नीचे दो बच्चे करुण व दयनीय दशा में अर्धमूर्छित से पड़े हैं. एक के सिर पर मामूली चोट थी तथा दूसरे का हाथ टूट गया था. दोनों बच्चों को तुरंत हस्पताल पहुंचाया गया और अब वे ठीक हैं. —**नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : नीरज)**

✦

रजिस्ट्री जो परीक्षा के बाद पहुंची

भारतीय डाकतार विभाग की लापरवाही से राजेंद्रप्रसाद दीक्षित नामक एक युवक को रजिस्ट्री देर से मिलने के कारण नौकरी पाने का एक मौका खो देना पड़ा. इस युवक ने लोक सेवा आयोग की एक परीक्षा के लिए आवेदन पत्र दिया था. परीक्षा 15 तथा 16 सितंबर को होनी थी.

इस युवक के पास लोक सेवा आयोग के इलाहाबाद कार्यालय से रजिस्टर्ड डाक द्वारा 25 अगस्त को परीक्षा का प्रवेशपत्र भेजा गया था. पर उस की रजिस्ट्री लखनऊ में 22 सितंबर को आई और डाकिए ने उस रजिस्ट्री को सात दिन अपने पास रख कर 29 सितंबर को उस युवक के पास पहुंचाया. वह युवक परीक्षा में बैठने से वंचित रह गया. —**दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : अशोक वर्मा)**

✦

बैल और बंदर की दोस्ती

बंदर और बैल की दोस्ती की एक दिलचस्प घटना रोहतक जिले के झज्जर कसबे में देखने को मिली. पिछले कई दिनों से झज्जर के आर्य नगर क्षेत्र व इस के आसपास एक बंदर व एक छोटा बैल इकट्ठे घूमते देखे गए. अगर कोई व्यक्ति बैल को मारता है तो बंदर बैल की रक्षा करता है तथा उस व्यक्ति को अपनी घुड़की से डरा देता है और कोई व्यक्ति यदि बंदर को तंग करता है तो बैल उस को मारने को दौड़ता है. इसी तरह अगर कोई व्यक्ति बंदर को केला आदि देता है तो बंदर कुछ हिस्सा खुद खा कर शेष बैल को दे देता है.

एक दिन बैल एक खेत में जा कर चरने लगा और बंदर बाहर बैठ कर उस की रखवाली करने लगा. जब खेत का मालिक बैल को मार कर बाहर निकालने लगा तो बंदर ने किसान को अपनी घुड़की से डराना शुरू कर दिया और तब तक उस का पीछा नहीं छोड़ा जब तक किसान खेत से बाहर नहीं निकल गया.

—**पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : सतीशकुमार गाबा)** **(सर्वोत्तम)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम

कहानी • शफीक अहमद सिद्दीकी

भोले को जब यह पता चला कि उस का बड़ा भाई मंगू गांव के चौकीदार फत्ते की लड़की फुल्लो से ब्याह करने के सपने देख रहा है तो उस के क्रोध की कोई सीमा न रही. इस का कारण यह नहीं था कि उसे स्वयं फुल्लो से प्रेम था बल्कि इस का कारण यह था कि बापदादा के छोड़े हुए जरा से खेत के टुकड़े पर दोनों भाइयों की दुश्मनी इस सीमा तक पहुंच चुकी थी कि भोला अपने बड़े भाई मंगू को मार डालने तक का इरादा कर चुका था. मंगू और फुल्लो के प्यार की खबर सुन कर वह लालपीला हो गया. अब वह अपने इरादे को जल्दी से जल्दी पूरा कर लेना चाहता था ताकि ऐसा न हो कि मंगू फुल्लो से शादी कर ले और मंगू की मौत के बाद वह खेत के आधे हिस्से की हकदार बन जाए

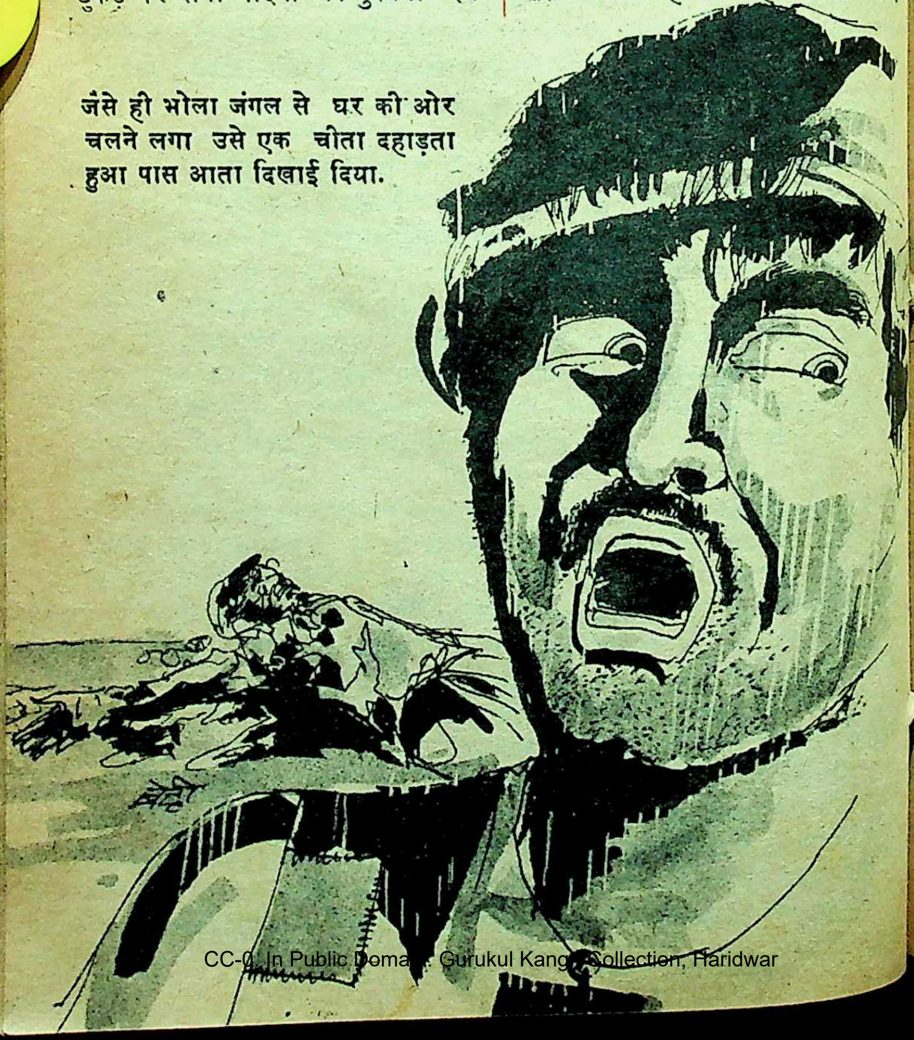

जैसे ही भोला जंगल से घर की ओर चलने लगा उसे एक चीता दहाड़ता हुआ पास आता दिखाई दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोला पंचायत के निर्णय से नाखुश था. वह दिनरात मंगू को मार डालने की तरकीबें सोचता रहता था. आखिर बहुत सोचविचार के बाद उस के मस्तिष्क में एक तरकीब आ ही गई. पर उस का परिणाम ऐसा होगा यह तो उस ने कल्पना में भी न सोचा था!

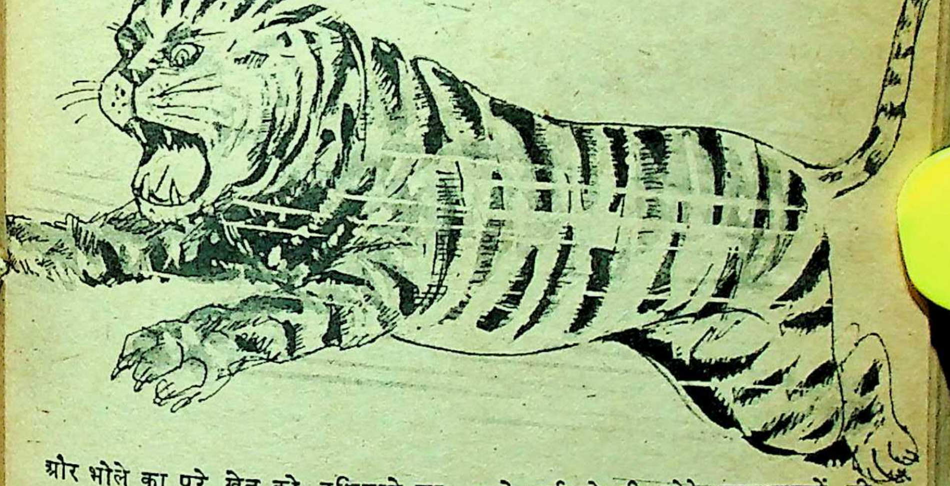

और भोले का पूरे खेत को हथियाने का सपना अधूरा ही रह जाए.

बाप के मरने के बाद दोनों भाइयों ने खेत का बंटवारा करना चाहा था. दोनों ही भाई खेत का सड़क के निकट का हिस्सा अपने पास रखना चाहते थे. पहले तो दोनों भाइयों में तूतू मैंमैं चलती रही, फिर लड़ाईझगड़े हुए. बाद में लट्ठबाजी भी हुई. फिर बात गांव की पंचायत में आई. गांव की पंचायत ने अपने निर्णय में कहा :

"बड़े भाई को हर तरह से बरतरी हासिल होती है. बाप के मरने के बाद बड़े भाई को ही छोटे बहनभाइयों की जिम्मेदारियां संभालनी पड़ती हैं. छोटे भाई की अपेक्षा बड़े भाई को ही समझदार समझा जाता है, इसलिए राजाओं, महाराजाओं और बादशाहों के बड़े लड़के को ही गद्दी पर बैठाया जाता था. यह सब देखते हुए गांव की पंचायत निर्णय देती है कि सड़क से मिला हुआ खेत का हिस्सा मंगू के पास रहेगा और जंगल से मिला हुआ खेत का हिस्सा भोला के पास."

गांव की पंचायत के आगे भोला लाचार हो गया क्योंकि पंचायत के निर्णय को मानना गांव का हर आदमी अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्त्तव्य समझता था, भले ही उसे यह महसूस हो कि उस के साथ ठीक निर्णय नहीं हुआ है. यही कारण था कि उन के गांव में लड़ाईझगड़े जरूर होते थे लेकिन पुलिस कभी नहीं आती थी. पुलिस की नौबत आने से पहले ही वे लोग अपने फायदे और नुकसान को भूल कर समस्या को गांव के बड़ेबूढ़ों के सामने रख देते थे और उन के निर्णय को ही स्वीकार कर लेते थे. जो आदमी पंचायत के निर्णय का पालन नहीं करता था उस का हुक्कापानी बंद कर दिया जाता था. गांव में हुक्कापानी बंद होना बहुत बड़ी सजा समझी जाती थी.

पंचायत के निर्णय को सुन कर भोला खून का घूंट पी कर रह गया. हालांकि उस समय उस ने पंचायत के निर्णय की आलोचना नहीं की थी, लेकिन इस के बावजूद वह जंगल से मिला हुआ खेत का हिस्सा नहीं लेना चाहता था, भले ही उसे अपने बड़े भाई को मौत के घाट ही क्यों न उतारना पड़े.

मंगू को मारना उस के लिए आसान हो न हो, लेकिन उसे मार कर कत्ल के इलजाम से बचना उस के लिए आसान नहीं था. सारा गांव जानता था कि दोनों भाइयों में दुश्मनी है, इसलिए हत्यारा वही समझा जाएगा. यही नहीं, यदि मंगू किसी दुर्घटना में स्वयं ही मारा जाए तो भी गांव वाले यही समझेंगे कि इस दुर्घटना में भोले का ही हाथ है. इसलिए वह हर समय ऐसी योजनाएं बनाता रहता था जिस से वह मंगू को मारने में सफल भी हो जाए और कत्ल के इलजाम से भी बच जाए.

उन की सौतेली बहन कम्मो को दोनों भाइयों की दुश्मनी और लड़ाईझगड़ों की खबर मिलती रहती थी. फिर भी वह उन से मिलने नहीं आई थी. दोनों भाई अपनी सौतेली बहन से उस समय से जलते थे जब से वह गांव में आए एक मेहमान छोकरे कालू को दिल दे बैठी थी और उसी से शादी करना चाहती थी. इस बात पर भी तीनों बहनभाइयों में लड़ाईझगड़े हुए थे. बात ग्राम पंचायत तक पहुंची थी. पंचायत ने अपना निर्णय कम्मो के हक में दिया था. कम्मो की शादी कालू से हो गई थी, जो दूसरे गांव में रहता था. अब वह खेतों पर मजदूरी कर के अपने बीवीबच्चों का पेट पाल रहा था.

भोला दिनरात मंगू को मार डालने की तरकीबें सोचता रहता था. बहुत सोचविचार के बाद उस के मस्तिष्क में ऐसी तरकीब आ ही गई, जिस से सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे.

उन का गांव एक पहाड़ी इलाके के पास बसा हुआ था. उन दिनों पहाड़ी पर से एक चीता उतर आया था जो गांव के कई आदमियों, औरतों और बच्चों की हत्या कर चुका था. इस चीते के उत्पात से गांव वाले भयभीत हो गए थे.

पंचायत ने इस की सूचना संबंधित अधिकारियों को दे दी थी, लेकिन उन की तरफ से चीते को मारने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया था. गांव के कुछ शिकारी चीते को मार सकते थे, लेकिन वह इसलिए आगे नहीं आए थे कि कहीं जंगली जीवजंतु कानून के अंतर्गत चीते का शिकार करने के अभियोग में उन्हें सजा न हो जाए.

चीते के आक्रमणों से गांव वाले परेशान थे, लेकिन भोले को इस चीते की बदौलत मंगू को मारना आसान नजर आ रहा था. उस ने योजना बनाई कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगू को खेत में काम करते वक्त गला घोंट कर मार दिया जाए, फिर उस के गले को खुरच कर खून निकाल दिया जाए और उस के इर्दगिर्द चीते ने पंजों के निशान बना दिए जाएं ताकि गांव वाले यही समझें कि मंगू को चीते ने मार डाला है.

भोले ने अपनी इस तरकीब को अमल में लाने के लिए तैयारियां शुरू कर दीं.

उस ने लोहे के कुछ तार इकट्ठे किए. उन को इस प्रकार जोड़ा कि अगर तारों के उस गुच्छे को रेतीली जमीन पर गिरा कर उठा लिया जाए तो वह चीते के पंजे के निशान लगने लगें. आखिरकार वह चीते का बनावटी पंजा बनाने में कामयाब हो गया और उसे ऐसा उपयुक्त समय भी मिल गया जिस की वह प्रतीक्षा में था.

मंगू शाम के समय खेत पर काम कर रहा था. खेत के आसपास कोई नहीं था. बल्कि दूरदूर तक एक भी आदमी नजर नहीं आ रहा था. भोला दबे पांव मंगू की तरफ बढ़ा और पीछे से उस की कौली भर ली. मंगू ने हाथपैर हिलाए ही थे कि भोला उसे जमीन पर गिरा कर उस की छाती पर बैठ गया और अपने दोनों हाथों से उस का गला दबा दिया. भोले ने मंगू के गले को उस वक्त तक दबाए रखा जब तक उसे यह यकीन नहीं हो गया कि मंगू मर चुका है. मंगू का दम निकल जाने का विश्वास हो जाने के बाद वह उस की छाती पर से उठा. चीते के मसनूई पंजे से मंगू की गरदन और पैरों को खुरच डाला और उस की गरदन में कोई नुकीली चीज चुभो कर खून निकाल दिया, जिस से ऐसा महसूस हो कि चीते ने मंगू को मार डाला है.

फिर भोला ने मंगू के कपड़े इस तरह से फाड़े जिस से ऐसा लगे कि मंगू ने चीते से छुटकारा पाने की कोशिश तो

बहुत की लेकिन असफल रहा. इस के बाद भोला ने मंगू के पास मसनूई पंजे से चीते के पैर के निशान बनाए और उन निशानों को जंगल की तरफ बनाता चला गया ताकि गांव वाले यह समझें कि चीता मंगू को मार कर जंगल की तरफ चला गया.

उस ने यह भी चालाकी की कि अपने पैरों के निशानों को कपड़े से साफ करता गया.

जंगल के पास आ कर भोला को इतमीनान हो गया कि उस ने अपना काम ठीक तरह से कर लिया है और उसे किसी ने देखा नहीं है. अब वह तेज कदमों से अपने घर की तरफ लपका. अभी वह दो कदम ही चल पाया था कि अपने सामने एक चीते को देख कर धक से रह गया. उस के पैरों तले से जमीन खिसक गई. वह पीछे मुड़ कर भागने ही वाला था कि चीता उछल कर उस पर टूट पड़ा और उसे अपने पंजों में दबोच लिया. चीते ने अपने तेज दांत भोला की गरदन में गाड़े और वह उस का खून पी गया.

अपना काम करने के बाद चीता जंगल की तरफ चला गया. मंगू और भोला की लाशें वहीं पड़ी रहीं. थोड़ी देर के बाद एक कुत्ता वहां आया. उस ने भोला की लाश को सूंघा और फिर टांग उठा कर उस पर पेशाब कर के चला गया.

मंगू और भोला की शादियां नहीं हुई थीं. इसलिए ग्राम पंचायत ने उन की सौतेली बहन को उन की जमीन का वारिस ठहराया. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

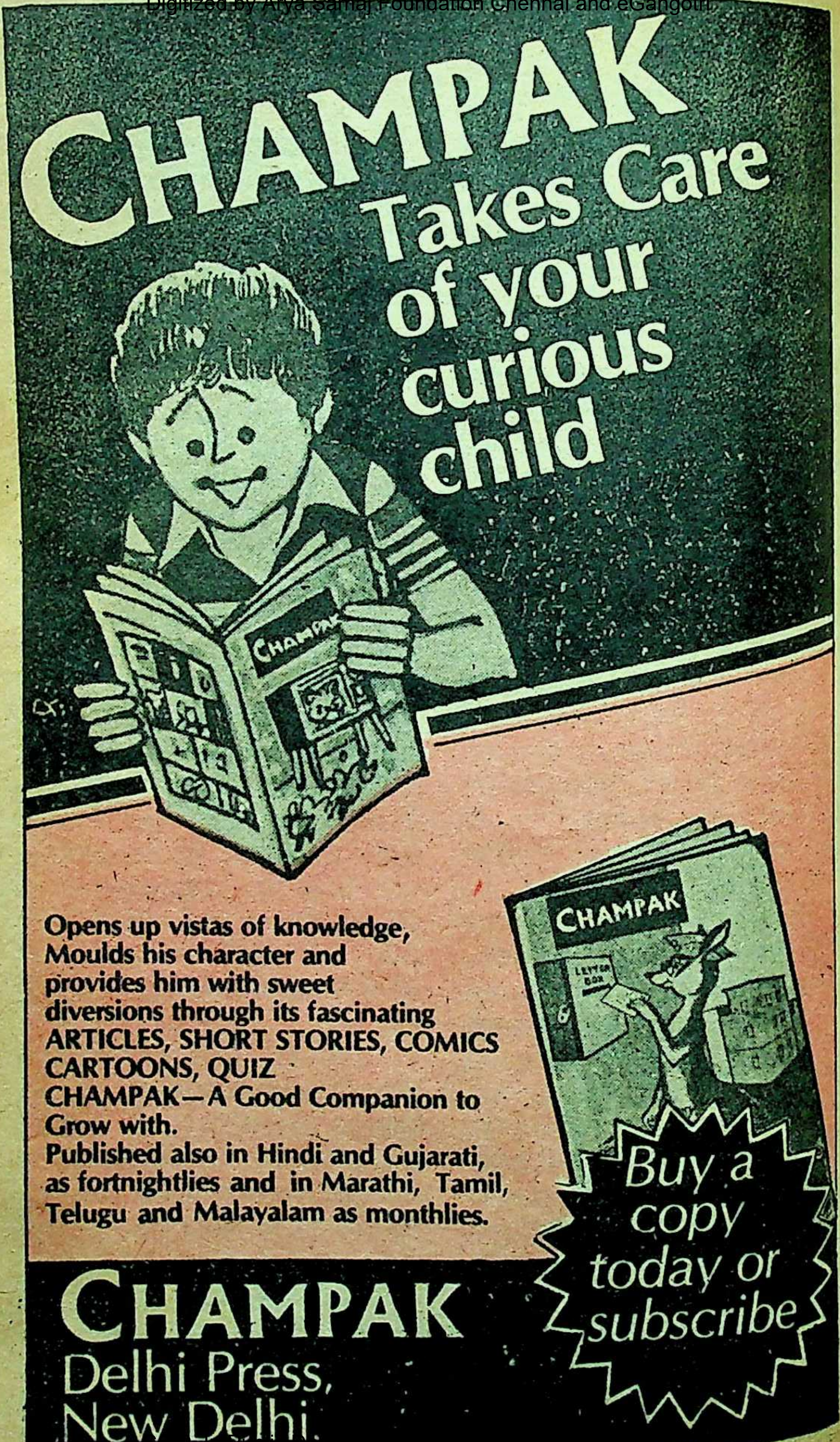

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए व अन्य संस्मरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

हमारे मौसेरे भाई के यहां लड़की होने की खुशी में उन के घर सत्यनारायण की कथा हो रही थी. कथा संपन्न होने के बाद पंडितजी आशीर्वाद देते हुए कहने लगे, "बेटा, भगवान तुम्हें आठ पुत्रों की मां बनाए."

"पंडितजी, भाभी का तो आपरेशन हो चुका है," मेरी मौसी की लड़की ने धीमी आवाज में तुरंत कहा.

—सत्यनारायण मिणियार

✦

हमारी हिंदी की कक्षा में अध्यापिका ने यमक अलंकार समझाते हुए कहा, "किसी पद्यांश में एक ही शब्द अलगअलग अर्थों में बारबार प्रयुक्त हो तो वहां यमक अलंकार होता है."

फिर अध्यापिका ने हम से यमक अलंकार का कोई उदाहरण बोलने के लिए कहा, तब एक लड़की बोल उठी. "सजना है मुझे सजना के लिए."—अलका तिवारी

✦

✦ कुछ दिनों पहले की बात है. हमारे पड़ोस की एक लड़की को चारपांच आदमी और चारपांच औरतें देखने के लिए आईं. उन की खूब खातिरदारी की गई. लड़की पढ़ीलिखी एवं सुंदर थी पर उस के मातापिता संपन्न नहीं थे. अत: उस समय तो वे लड़की को पसंद कर गए लेकिन अगले दिन यह खबर भिजवा दी कि अभी हमारे लड़के का शादी करने का इरादा नहीं है.

एकदो दिन बाद उस लड़की की कुछ सहेलियां लड़के वालों के यहां गईं और उन्हें खूब फटकारा. फिर बोलीं, "हम यहां से जाने वाली नहीं, जब तक आप हमारे खर्च के 200 रुपए नहीं लौटाएंगे. हमारी सहेली के पिता सेवानिवृत्त हैं, उन के पास आप जैसों को खिलाने के लिए फालतू पैसा नहीं है." —सुधा बास (सर्वश्रेष्ठ)

✦

उन दिनों मैं स्कूल में पढ़ती थी. एक बार हमारी गणित की अध्यापिका ने कहा, "गांधीजी को फिजूलखर्च बिलकुल पसंद नहीं था. यहां तक कि वह कागज के छोटेछोटे टुकड़े भी बेकार नहीं फेंकते थे."

दूसरे दिन कुछ लड़कियों ने स्कूल के मैदान में पड़े रद्दी के छोटेछोटे कागज इकट्ठे किए और अपनेअपने बस्तों में रख लिए. जब वह अध्यापिका कक्षा में आ कर गणित के प्रश्न करवाने लगीं तो उन लड़कियों ने रद्दी के उन छोटेछोटे कागजों पर सवाल हल किए. यह देख वह झल्ला कर बोलीं, "तुम लोगों को सवाल करने के लिए ये रद्दी कागज ही मिले थे?"

"कल आप ने ही तो कहा था कि हमें गांधीजी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए," एक तेजतर्रार लड़की ने तपाक से कहा.

—अचला शितोले ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखबिर

लेख • बालकृष्ण श्रीवास्तव

"हां, हुजूर, मैं बिलकुल सच कह रहा हूं. ये बड़े धूर्त लोग हैं. इन्हीं लोगों का हाथ जमना नगर की डकैती में था और आज..."

और फिर आननफानन में पुलिस की टुकड़ी कारवाई के लिए तैयार हो ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. चारों ओर घेराबंदी कर दी जाती है पुलिस और डकैतों की मुठभेड़ होती है. लेकिन कभीकभी इस तरह की मुठभेड़ें काफी चर्चा का विषय बन जाती हैं. समाचार पत्रों में इन की खबरें मोटीमोटी सुर्खियों से आती हैं. जनता का रोष, आक्रोश आंदोलन व घेराबंदी के रूप में उमड़ पड़ता है और सुंदरकांड, बागपत कांड एवं चतुराबाग कांड जैसे प्रकरण लंबे अरसे तक विधान सभा, राज्य सभा और लोक सभा में चर्चा के विषय बने रहते हैं.

आखिर ऐसे कांड कैसे हो जाते हैं? उन में सच और झूठ कितना होता है? और पुलिस व डकैतों की ऐसी मुठभेड़ के मूल सूत्रधार कौन होते हैं?

मुखबिर कौन बनता है?

गांवों, कसबों, शहरों आदि सभी जगहों पर एक खास किस्म के लोग होते हैं जिन्हें मुखबिर, जासूस, भेदिया आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है. ये लोग पुलिस की नाक के बाल होते हैं. इन की सूचनाओं पर ही चाहे वे गलत ही क्यों न हों, ऐसे कांडों की संरचना होती है. यह देखा गया है कि ऐसे कांड अधिकतर गांवों में ही होते हैं.

आइए, अब हम आप को बताएं कि पुलिस के जासूस, भेदिए, दलाल, मुखबिर आदि के नामों से जाने जाने वाले, पुलिस को सूचना देने वाले ये व्यक्ति कितने प्रकार के होते हैं, उन की कार्यप्रणाली कैसी होती है, उन का चरित्र कैसा होता है और कैसे वे जनता के बीच रह कर अपराधों का परदाफाश करते हैं अथवा किस प्रकार स्वयं ही अपराधों के बीज बोते हैं, जिस के परिणामस्वरूप कभीकभी निर्दोष व्यक्ति भी अदालत से सजा पा जाते हैं.

गांवों में पुलिस के मुखबिर चार श्रेणियों के होते हैं. एक तो वे जो हिस्ट्रीशीटर (सजायाफ्ता) होते हैं और समाज में निम्न श्रेणी में आते हैं. दूसरे, अपराधी

पुलिस के जासूस, भेदिए, दलाल, मुखबिर के नामों से जाने जाने वाले ये व्यक्ति जनता के बीच रह कर अपराधों का परदाफाश करने में सफल हो जाते हैं. मगर कैसे? क्या उन के चरित्र और कार्यप्रणाली में कोई विशिष्टता होती है?

प्रवृत्ति के ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्होंने कई अपराध तो किए हों पर उन्हें सजा न मिली हो. तीसरे, गांव के चौकीदार होते हैं. ये भी दो श्रेणियों में विभक्त होते हैं, प्रथम वे जो सीधेसादे होते हैं और अपेक्षाकृत सही सूचनाएं देते हैं. दूसरे वे जो अपराधी प्रवृत्ति के साथ षड्यंत्रों को फैलाते एवं स्वार्थवश गलत सूचनाएं देते हैं. चौथे प्रकार के मुखबिर वे होते हैं जो समाज के प्रतिष्ठित और सफेदपोश व्यक्ति होते हैं, जिन की इज्जत, रोबदाब सब कुछ होता है और पुलिस अधिकारी भी उन से हिचकते हैं.

इन चारों प्रकार के मुखबिरों में सब से सशक्त भूमिका चौकीदार निभाते हैं जो पुलिस विभाग के वेतनभोगी कर्मचारियों की श्रेणी में आते हैं और जिन की नियुक्ति लगभग प्रत्येक ग्रामसभा में होती है.

गांवों में चौकीदार पुलिस को सूचना देने वालों की भूमिका में सब से सशक्त और कारगर कड़ी माना जाता है, क्योंकि वह उस गांव का रहने वाला होता है जहां उस की नियुक्ति की जाती है. इसलिए वह गांव की छोटी से छोटी बात से भी परिचित होता है. इस के अतिरिक्त चौकीदार ज्यादातर छोटी जातियों में से ही रखे जाते हैं. इन में अधिकतर अपढ़, अज्ञानी पर तिकड़मबाज होते हैं.

चौकीदार का प्रमुख कार्य यह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने क्षेत्र के अंदर होने वाले किसी भी अपराध की घटना की जानकारी अविलंब पुलिस को दे. साथ ही घटना से संबंधित तथ्यों को भी पुलिस अधिकारियों के सामने प्रमाण सहित पेश करे और अधिकारियों की अपेक्षित मदद करे.

इस प्रकार उपर्युक्त चारों श्रेणी के मुखबिरों में चौकीदार की भूमिका सब से अहम होती है. लेकिन अन्य तीन प्रकार के मुखबिरों की महत्ता और कार्यप्रणाली के महत्त्व को भी नकारा नहीं जा सकता.

मुखबिरों की समाज में स्थिति

अब हम फिर मुखबिरों की प्रथम श्रणी पर आते हैं. अधिकतर सजायाफ्ता होने के कारण न तो इन का सामाजिक जीवन में कोई स्थान होता है और न ही महत्त्व. इसी लिए समाज इन से दूर रहने की कोशिश करता है. इन लोगों में अधिकतर अपराधी प्रवृत्ति के ही व्यक्ति आते हैं जिन का कार्य चोरी, दंगा, डकैती, कत्ल आदि करना और आए दिन दूसरों की संपत्ति को जबरन या चोरी से हड़प लेना या अन्य किसी तरीके से नुकसान पहुंचाना होता है. इसी प्रवृत्ति के कारण ये लोग आए दिन जेल जाते रहते हैं, मुकदमों में फंसे रहते हैं. इसी कारण पुलिस के यहां इन का नाम हिस्ट्रीशीटर सूची में लिखा रहता है.

चोरी, डाका, कत्ल की घटना हो जाने पर सर्वप्रथम पुलिस इन्हीं सजायाफ्ता लोगों से पूछताछ करती है और लगभग कुछ अंश तक अपने उद्देश्य में सफल भी हो जाती है. लेकिन साथ ही इन के द्वारा दी गई सूचनाओं पर पुलिस अधिकारी कभी भी पूर्णतया विश्वास नहीं करते. इन्हें संदेहास्पद ही मानते हैं. हां, सूत्र या माध्यम के रूप में इन सूचनाओं का इस्तेमाल पुलिस वाले जरूर करते हैं.

दूसरे प्रकार के मुखबिरों को संदेहास्पद और कुछ हद तक विश्वसनीय भी माना जाता है. ये लोग अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं और आए दिन होने वाली अपराधपूर्ण घटनाओं में इन का भी हाथ होता है. लेकिन कानून की पकड़ से बचने में ये माहिर होते हैं. इन की आर्थिक स्थिति भी कुछ अच्छी होती है, जिस से ये दबंग और उद्दंड होते हैं. ये लोग अपने अधिकांश कार्य समाज विरोधी तत्वों से कराते हैं और कभीकभी मौका पड़ने पर स्वयं भी उन में भाग लेते हैं. लेकिन प्रमाणों अथवा प्रत्यक्षदर्शियों के अभाव में ये अकसर बच निकलते हैं,

पुलिस विभाग के अधिकारियों से भी ये मेलमिलाप बनाए रखते हैं जिस से आम लोग इन के खिलाफ कुछ करने से सदैव हिचकते हैं.

अपराधों की रोक या सहयोग

तीसरे प्रकार के मुखबिरों में कथि... चौकीदार आते हैं. ये भी दो प्रकार के होते हैं. एक तो वे जो स्वयं अपराधी न हो कर केवल अपराध उन्मूलन में सक्रिय रहते हैं और दूसरे वे जो स्वयं अपराधी कार्यों में लीन होते हुए पुलिस विभाग को सूचनाएं देते रहते हैं. जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है. पुलिस मुखबिरों में सब से खतरनाक और महत्वपूर्ण दूसरी श्रेणी के ये चौकीदार ही होते हैं. जहां तक देखा गया है, प्रथम श्रेणी के चौकीदार कम ही मिलते हैं. अधिकतर दूसरी श्रेणी के चौकीदार ही कार्यरत दिखाई देते हैं, जिन का कार्य अपराधी कार्यों में लीन रह कर अपराधी घटनाओं को बढ़ावा देना है.

चौथे प्रकार के मुखबिरों में गांव के कथित सम्मानित सफेदपोश व्यक्ति होते हैं जो एक तरफ समाज में ऊंचा स्थान रखते हैं और दूसरी ओर पुलिस को अपेक्षित सूचनाएं भी प्रदान करते रहते हैं. ऐसे व्यक्तियों की संख्या गांवों में काफी होती है. समाज में मानमर्यादा, यश, प्रतिष्ठा सब कुछ रखते हुए ये व्यक्ति भी कभीकभी भीषण कांडों और घटनाओं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृजन करवा देते हैं और फिर पुलिस अधिकारियों को गलत सूचनाएं दे कर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं.

ऐसी श्रेणी के मुखबिरों को जल्दी में न तो समाज कुछ कह पाता है और न ही जनसाधारण में से कोई व्यक्ति इन पर उंगली उठा पाता है. इसी लिए ये कानून, अदालत दोनों के दायरे से हमेशा बाहर रहते हैं.

असामाजिक तत्वों को बढ़ावा

साथ ही एक बात जो और देखने में आई है वह यह कि ये लोग कुछ समाज विरोधी तत्वों को भी प्रश्रय देते रहते हैं. फिर जब कभी वे समाज विरोधी तत्व कानून की पकड़ में आ जाते हैं तो ये जमीनआसमान एक कर के उन को छुड़ा लेने में मदद करते हैं. समाज में इन की अच्छी स्थिति होने और ऊंची पहुंच के कारण पुलिस अधिकारी इन की सूचनाओं को भी काफी हद तक विश्वसनीय समझते हैं. लेकिन साथ ही बचाव की स्थिति रखते हुए सचेत भी रहते हैं, क्योंकि इन के ऊंचे राजनीतिक दांवपेच अकसर पुलिस को भी परेशान कर देते हैं. इसलिए इन की सूचनाओं को विश्वसनीय मान कर भी पुलिस बड़ी होशियारी से कदम उठाती है.

पक्के मुखबिर

आइए, अब आप को बताएं कि पक्के मुखबिर यानी पुलिस के सब से विश्व-

गांव का चौकीदार यानी पुलिस के मुखबिरों में सब से खतरनाक और महत्वपूर्ण मुखबिर : जो अपराधी कार्यों में लीन रह कर अपराधी घटनाओं को बढ़ावा भी देता है और मुखबिरी भी करता है.

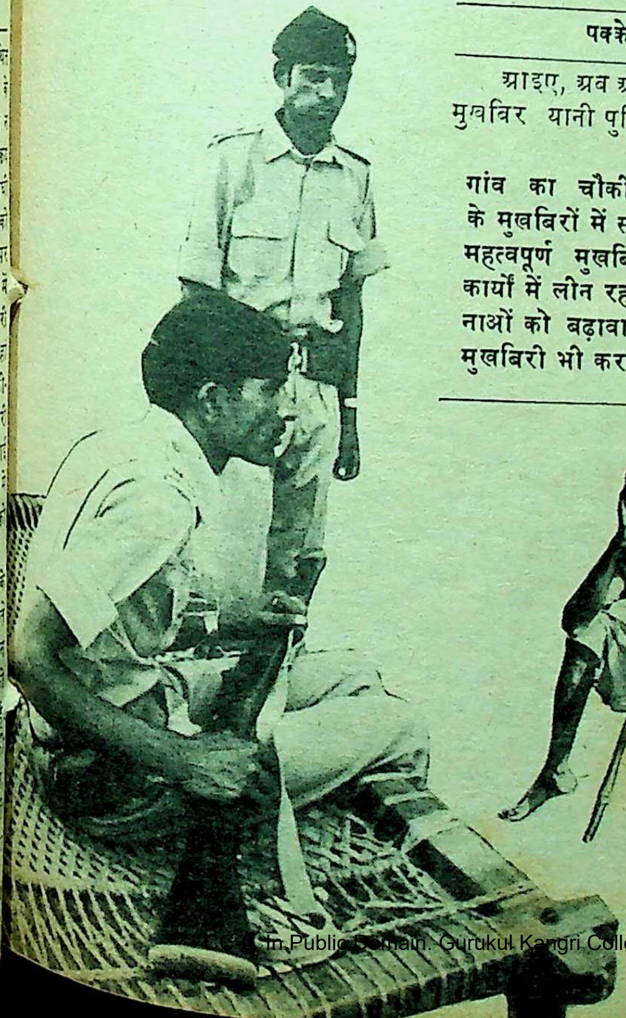

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सनीय मुखबिर कौन माने जाते हैं और कैसे बनते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकीदारों की कारगुजारियां

जहां तक पुलिस के पक्के मुखबिर का प्रश्न है, इस में उपर्युक्त चारों श्रेणियों में से तीसरी श्रेणी के मुखबिरों में चौकीदार की दूसरी श्रेणी आती है. ये अपराधी प्रवृत्ति और कार्यों में लीन होते हुए पुलिस विभाग के वेतनभोगी कर्मचारियों की श्रेणी में आते हैं. गांवों में किसी प्रकार की घटना घटते या अपराध की बू पाते ही ये अपनी गतिविधियां तेज कर देते हैं और अपना फायदा उठाने के लिए ही दोनों पार्टियों से मिले रहते हैं. छोटीमोटी अपराधपूर्ण घटनाओं में भी इन का हाथ रहता है. जब पुलिस अधिकारियों के समक्ष इन के अपराध कार्यों में भाग लेने की पोल खुलती है तो इन का यह तर्क पुलिस तथा संबंधित अधिकारियों को खामोश कर देता है कि "हजूर, यदि हम चोरों, डकैतों के साथ रह कर एकदो घटनाओं में भाग नहीं लेंगे तो उन का विश्वास कैसे प्राप्त कर सकेंगे?"

और यह शतप्रतिशत सच भी है. अपराध कार्यों को करने वाले इतने तो बेवकूफ होते नहीं कि वे किसी के भी अपने साथ उठनेबैठने से ही उस पर भरोसा कर लेंगे. इसलिए वे तभी किसी का विश्वास करते हैं जब कोई व्यक्ति उन के साथ दोचार वारदातों में भाग लेते हैं और समयकुसमय उन की मदद भी करता है. यही बात कभीकभी उन्हें ले भी डूबती है.

इस श्रेणी के मुखबिर जब उन से मिल जाते हैं तो स्वयं को उन के बीच खपा देते हैं और फिर जब सरकार और जनता के समक्ष किसी अपराधी के कार्यों की गूंज पैदा होने लगती है और सिर दर्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तब ये होशियारी के साथ उस का सफाया करवा देते हैं.

एक बात और भी है. ऐसे मुखबिरों को भी कभीकभी भयंकर परिणाम भुग[illegible] पड़ जाते हैं. इन मुखबिरों पर जरा [illegible] शक पैदा होने पर अपराधी तत्व के [illegible] इन को जान से भी मारने में नहीं हि[illegible] कते. ऐसी अनेक घटनाएं आएदिन दे[illegible] सुनने को मिलती हैं कि अमुक मुखबिर [illegible] डाकुओं ने गोली से उड़ा दिया.

लेकिन यहीं पर एक प्रश्न उठ [illegible] होता है और वह यह कि क्या स्वयं अप[illegible] राधी प्रवृत्ति और कार्यों में लीन [illegible] वाले इन पक्के और विश्वसनीय मुख[illegible] द्वारा दी गई सूचनाएं वाकई विश्वस[illegible] होती हैं, और यदि होती हैं तो किस [illegible] तक? क्या संभव नहीं कि उन [illegible] सूचनाएं निजी स्वार्थ अथवा ईर्ष्या [illegible] से दी गई हों? सब जानते हैं कि गांव [illegible] भी गुटबंदी चलती है. क्या यह संभव [illegible] है कि वे गलत सूचनाएं दे कर किसी [illegible] निर्दोष व्यक्ति को दोषी बना कर [illegible] दिला दें और दोषी व्यक्ति को नि[illegible] साबित करने में मदद दें?

आखिर ऐसी स्थिति से कैसे [illegible] जाए? पुलिस को ऐसी कौन सी [illegible] प्रणाली अपनानी चाहिए जिस से [illegible] अप्रिय कांड न हों और निर्दोष व्यक्ति [illegible] फंसे?

पुलिस की धारणा

अकसर यह देखा गया है कि पु[illegible] यह मान कर चलती है कि एक बार [illegible] राध करने वाला अपराधी सदैव के [illegible] अपराधी बन जाता है. लेकिन यह धा[illegible] गलत भी हो सकती है. यदि किसी व्य[illegible] से भूल से या अनजाने में या किसी [illegible] बूरी में कोई अपराध हो जाता है [illegible] कानूनन वह सजा भी पा जाता है तो [illegible] का यह मतलब नहीं कि वह हमेशा के [illegible] लिए अपराधी ही बन जाएगा. प्रायः [illegible] व्यक्ति अपने किए अपराध की सजा [illegible] जाने के बाद अपने को सुधार लेते हैं [illegible] फिर कभी वैसी भूल या अपराध न [illegible] की कसम खा लेते हैं. ऐसे में यदि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

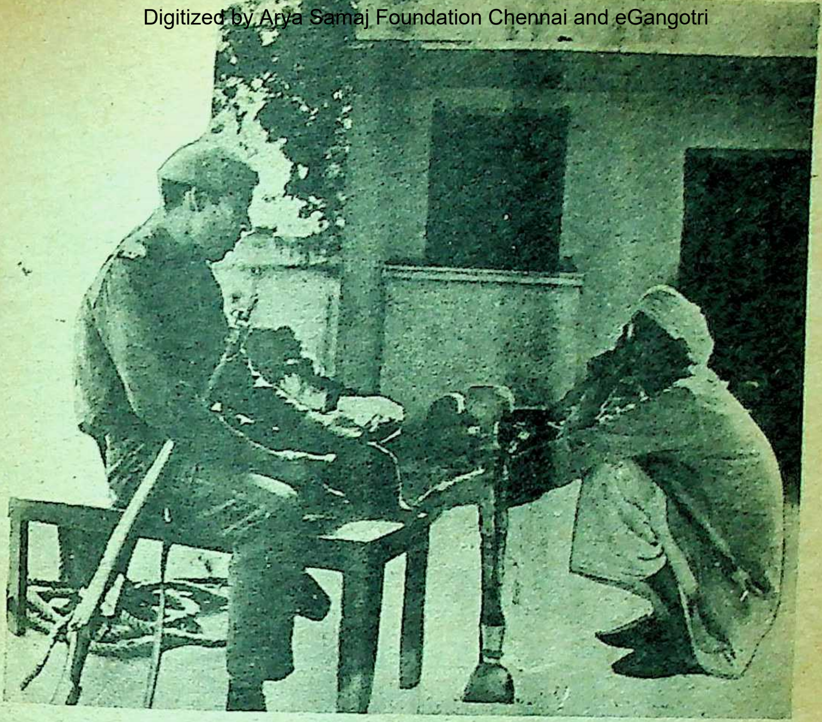

स्वयं अपराधी प्रवृत्ति और कार्यों में लीन रहने वाले मुखबिरों द्वारा दी गई सूचनाएं क्या वास्तव में विश्वसनीय होती हैं?

सूचना के आधार पर उसे फिर किसी अपराध कार्य से जबरन जोड़ दिया जाता है तो यह बहुत गलत बात है.

पुलिस को क्या करना चाहिए

वास्तव में देखा जाए तो हमारे देश में पुलिस को ले कर आम जनता में भय सा समाया हुआ है, जब कि पश्चिमी देशों में जनसाधारण की सब से बड़ी दोस्त पुलिस होती है. इस का कारण है पुलिस का व्यवहार, जिसे एक भुक्तभोगी ही जानता है. तब सवाल उठता है कि पुलिस को क्या कार्यप्रणाली अपनानी चाहिए जिस से जनता में उस का विश्वास भी कायम रहे और गलत सूचनाओं पर कोई अप्रिय घटना भी न घटे? इस के लिए जरूरी है कि पुलिस वाले अपने मस्तिष्क से यह धारणा हटा दें कि एक बार का अपराधी सदैव के लिए अपराधी बन जाता है. दूसरे, मुखबिर की सूचना को पूर्णरूपेण विश्वसनीय मान कर कोई कारवाई नहीं करनी चाहिए.

पुलिस को कोई भी कदम उठाने से पहले अच्छी तरह विचार करना चाहिए कि कहीं मुखबिर द्वारा दी हुई सूचना से कोई निर्दोष व्यक्ति तो नहीं फंस रहा है? उन की सूचनाओं की पुष्टि के लिए उन के समांतर कुछ और मुखबिर भी रखे जा सकते हैं जो अच्छे चालचलन वाले हों.

जब कोई निर्दोष व्यक्ति नहीं फंसेगा या परेशान नहीं होगा तो जनसाधारण का विश्वास भी पुलिस के प्रति बढ़ेगा. इस से अपराधों के उन्मूलन में अपेक्षित सफलता मिलेगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्मोन

लेख • अ. कु. दास गुप्ता

हम में अपने वातावरण में होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया होती है और हमारे स्नायु तंत्र के माध्यम से हमारी विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में सामंजस्य बना रहता है. लेकिन सारे जीवों में स्नायुतंत्र अथवा नाड़ी मंडल नहीं होता. इस के बावजूद उन की गतिविधियों में भी सामंजस्य बना रहता है. यह कैसे होता है?

अब हम यह जानते हैं कि जानवरों के मस्तिष्क से संदेश लाने और उस तक संदेश ले जाने के लिए स्नायु तंत्र के विकास से काफी समय पूर्व उन के शरीर के रसायन उन की गतिविधियों को नियंत्रित किया करते थे. इस तरह पता चलता है कि ये रसायन स्नायु नियंत्रकों से अधिक प्राचीन हैं. मानव शरीर में ये रसायन आज भी विद्यमान हैं, इन्हें हार्मोन कहते हैं.

ये हार्मोन क्या हैं, विस्तार के साथ यह जानने के लिए हमें आम ग्रंथियों से शुरू करना होगा.

ग्रंथियां क्या हैं?

शरीर में जो अंग स्राव उत्पन्न करते हैं, उन सब को एक शब्द में ग्रंथि कहा जा सकता है. इस अर्थ में जिगर, गुर्दा और यहां तक कि वक्ष जैसे बड़े अंग भी ग्रंथियां हैं. लेकिन सामान्यतया हम इस शब्द का प्रयोग स्राव उत्पन्न करने वाले छोटेछोटे अंगों के लिए ही करते हैं.

इन में भी दो भिन्न वर्ग दृष्टिगोचर होते हैं. लसिका ग्रंथियां तथा अन्य स्राव उत्पन्न करने वाली ग्रंथियां. लसिका ग्रंथियां बिलकुल भिन्न प्रकार की होती हैं. वे ऐसी

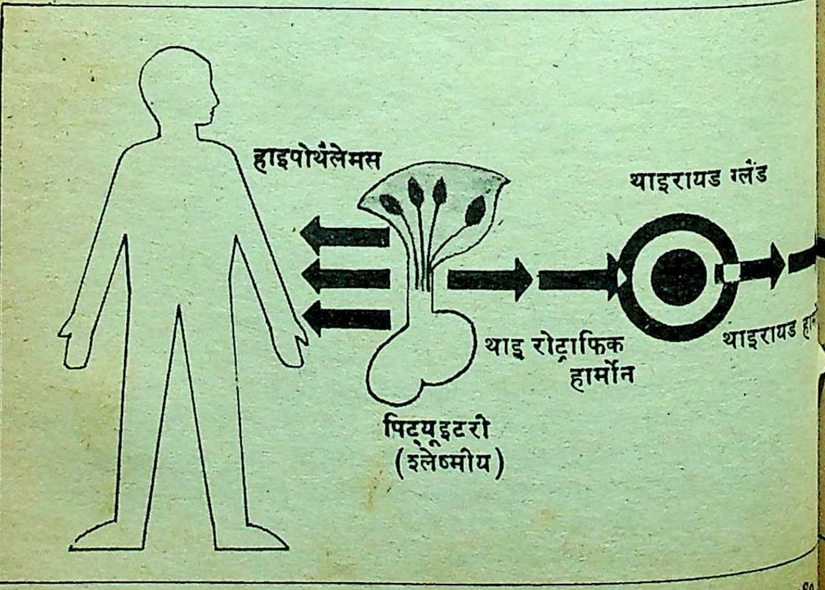

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाली का काम करती हैं जिन में हो कर शरीर के द्रव छनते रहते हैं और रोगों के फैलने को रोका जा सकता है. ये वे ग्रंथियां हैं जो किसी चोट या घाव में मवाद पड़ जाने पर फूल जाती हैं.

दूसरे प्रकार की स्राव उत्पन्न करने वाली ग्रंथियों को भी दो भिन्न वर्गों में बांटा जा सकता है. बाह्य स्रावी ग्रंथियां, जो अपने स्राव को पहले नलिकाओं में भेजती हैं, बाद में यह स्राव उपयोग के स्थान पर ले जाया जाता है. जैसा कि थूक और पसीने की ग्रंथियों में होता है. अंत:स्रावी ग्रंथियां वे हैं जो अपने पदार्थ को सीधे रक्त वाहिनियों में भेजती हैं. इन ग्रंथियों से स्रवित होने वाले पदार्थ को ही हार्मोन कहा जाता है.

ब्राह्यस्रावी और अंत:स्रावी ग्रंथियों के बीच वही अंतर है जो गोली और इंजेक्शन के बीच होता है. गोली मुंह के द्वारा खाई जाती है, तब वह पच कर रक्तवाहिनियों में पहुंचती है. जब हम किसी औषधि को

हार्मोन यानी ऐसे रहस्यमय तंतु जो हमारे जीवन के प्रत्येक कार्यक्षेत्र को प्रभावित करने के साथसाथ उसे अलगअलग रूपों में केंद्रित भी करते हैं.

विकासशील हार्मोन जो शरीर के तंतुओं का तेजी से विकास करते हैं, सीधे पिट्यूइटरीग्लैंड (श्लेष्मीय ग्रंथि) से हो कर गुजरते हैं. थाइरायड हार्मोन पिट्यूइटरी के आदेश पर ही तैयार होते हैं और यह थायरोट्राफिक हार्मोन के रूप में ही भेजे जाते हैं.

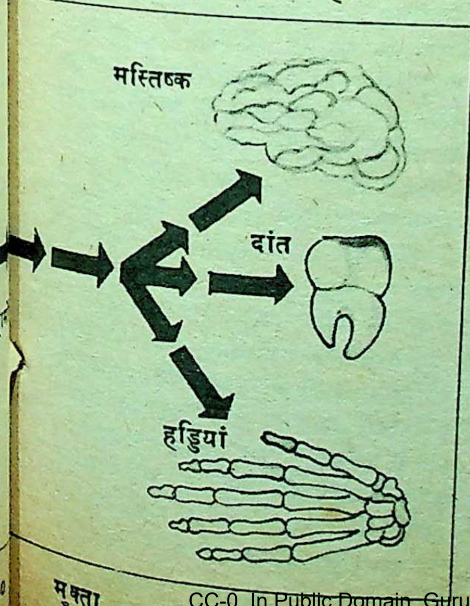

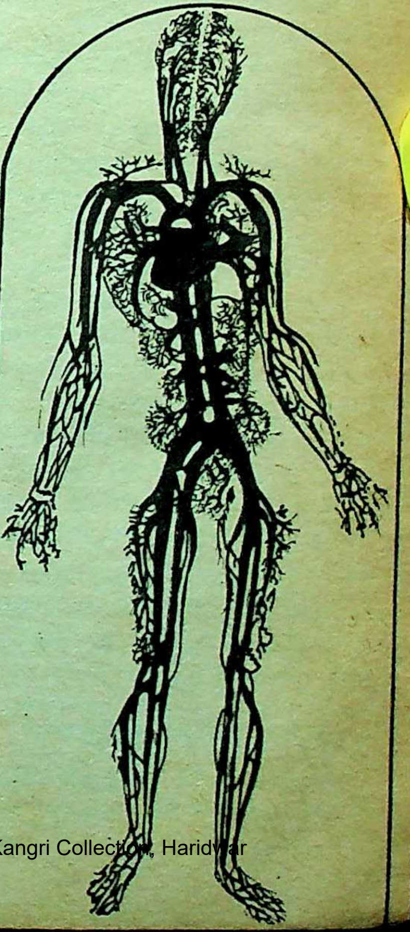

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक और तुरंत प्रभावी बनाना चाहते हैं, तब हम उसे इंजेक्शन के रूप में देते हैं.

इसी तरह प्रकृति भी जब किसी रसायन को हमारे रक्त प्रवाह में सीधे उंड़ेलना चाहती है तो उस का निश्चय ही शीघ्र प्रभाव होता है.

इन में से अधिक महत्वपूर्ण ग्रंथियों को पृष्ठ 160 पर प्रकाशित रेखाचित्र में दिखाया गया है. हम थाइरायड (गलग्रंथि) से आरंभ करेंगे.

थाइरायड ग्रंथि

थाइरायड ग्रंथि श्वास नली के आरपार, उस के ऊपरी सिरे के निकट स्वरयंत्र से ठीक नीचे, जिसे सामान्यतः टेंटुआ कहा जाता है, अंगरेजी के अक्षर 'एच' के आकार में स्थिर होती है. यह आयोडीन तत्व से युक्त हार्मोन उत्पन्न करती है.

आयोडीन से युक्त ये हार्मोन हमारे शरीर में सब से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि ये चयापचय की दर नियंत्रित करते हैं. आप पूछेंगे, यह चयापचय क्या है?

शरीर एक इंजन की भांति है और उसे चलाने के लिए इंजन की भांति ईंधन चाहिए. शरीर का ईंधन उस भोजन में से प्राप्त होता है, जो हम खाते हैं. इस ईंधन को आक्सीजन द्वारा जलाया जाता है. यह सारी प्रक्रिया, जिस से शरीर को ऊर्जा प्राप्त होती है, चयापचय कहलाती है. इस की दर को मापा भी जा सकता है. यही वह दर है, जिस से शरीर में आक्सीजन खपाई जाती है.

भोजन में आयोडीन की कमी से गलगंड हो सकता है. ऐसा होने पर थाइरायड ग्रंथि का अधिक बढ़ना शरीर को आयोडीन की अधिक मात्रा सप्लाई करने के लिए ही होता है.

पैराथाइरायड या अर्द्धथाइरायड

थाइरायड ग्रंथि के ऊतक (टिशू) में चार छोटीछोटी ग्रंथियां होती हैं. इन्हें पैराथाइरायड ग्रंथियां कहते हैं. पैराथाइरायड ग्रंथियों से निकले हार्मोन को पैराथार्मोन कहा जाता है. वह कैलसियम के चयापचय को नियंत्रित करता है.

कैलसियम का हमारे शरीर में महत्त्व केवल इसी बात में नहीं है कि हमारी हड्डियां उसी की बनी होती हैं. स्नायुओं के बीच के तथा स्नायुओं और मांसपेशियों के बीच के जोड़ों पर मनोवेगों के प्रेषण के लिए भी कैलसियम की आवश्यकता पड़ती है. वह हृदय के संकुचन सहित सारी मांसपेशियों के संकुचन को भी प्रभावित करता है. खून जम जाने के समय भी उस की आवश्यकता पड़ती है. कैलसियम की गर्भावस्था के प्रारंभिक मासों में और दूध आने के समय माता को भी आवश्यकता होती है. यदि कैलसियम की सप्लाई अपर्याप्त होगी तो उसे हड्डियों से खींचा जाएगा. हड्डियों और रक्त के बीच कैलसियम का यह आनाजाना पैराथार्मोन द्वारा ही नियंत्रित होता है.

अग्न्याशय

अब हम अग्न्याशय जिसे अंगरेजी में पैनक्रीएस कहा जाता है, की चर्चा करेंगे. अग्न्याशय पेट के निचले सिरे के ठीक पीछे लंबे आकार की नरम और गुलाबी ग्रंथि होती है. यह ग्रंथि दो प्रकार के काम करती है. बाहरी कोशिकाएं एक ऐसी नलिका प्रणाली से संबद्ध होती हैं, जिस की नलिकाएं मिल कर एक बड़ी नलिका में परिवर्तित हो जाती हैं. इसी में अग्न्याशयी रस रहता है, जो पचाने वाले रसों में सब से अधिक महत्वपूर्ण होता है.

आंतरिक कोशिकाएं छोटेछोटे द्वीपों की भांति सारी अग्न्याशए ग्रंथि में समूहों में बिखरी होती हैं. ये कोशिकाएं शायद सब से अधिक प्रसिद्ध हार्मोन इनस्यूलिन उत्पन्न करती हैं, जिस का अर्थ होता है द्वीप. इनस्यूलिन का शरीर के कार्बोहाइड्रेट चयापचय से घनिष्ठ संबंध होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे शब्दों में खून में चीनी की मात्रा के नियंत्रण का इसी से संबंध होता है.

जब कार्बोहाइड्रेट (चीनी और स्टार्च) को खाते हैं तो पाचक रसों द्वारा उसे ग्लूकोस में परिवर्तित कर दिया जाता है. इसे जिगर तक ले जाया जाता है, जहां वह ग्लाइकोजेन में परिवर्तित हो कर एकत्र होता रहता है. जब कभी भी कोशिकाओं द्वारा चीनी का प्रयोग किया जाता होता है, ग्लाइकोजेन को फिर से ग्लूकोस में परिवर्तित करना पड़ता है.

इनस्यूलिन का कार्य

इनस्यूलिन उस दर को नियंत्रित कर के, जिस से कोशिकाओं द्वारा खपाए जाने के लिए जिगर में से ग्लूकोस खून में मिलाया जाता है, शरीर को ग्लूकोस का उपयोग करने में समर्थ बनाती है. यदि अग्न्याशय ग्रंथि पर्याप्त मात्रा में इनस्यूलिन स्रवित नहीं करती तो जिगर ग्लाइकोजेन को एकत्र करने की अपनी शक्ति खो बैठता है. इस के परिणामस्वरूप उक्त प्रवाह में अधिकाधिक ग्लूकोस प्रविष्ट होता जाता है. एक स्थिति में वह मूत्र के साथ व्यर्थ बहने लगता है. इसी स्थिति को मधुमेह कहा जाता है.

अब अधिवृक्क ग्रंथियों पर विचार करें. गुरदे (वृक्क) के ऊपर दो अंग होते हैं, वे हरेक गुरदे के ऊपरी सिरे पर हैट की भांति लगे होते हैं. इन में प्रत्येक ग्रंथि में वस्तुतः दो भिन्नभिन्न भाग होते हैं. अधिवृक्क (ऐड्रिनल) वल्कल (करटेक्स) नामक मजबूत व गहरी पीली बाहरी सतह और अधिवृक्क मृज्जका (ऐड्रिनल मैड्यूला) नामक नरम और गहरा लाल आंतरिक भाग. हम उन का पृथकपृथक वर्णन करेंगे, क्योंकि वे पृथक-पृथक ग्रंथियां हैं और उन के कार्य भी पृथक ही हैं.

अधिवृक्क वल्कल जीवन के लिए आवश्यक है. वह बहुत बड़ी मात्रा में हार्मोन उत्पन्न करती है. इन में से लगभग 30 पहचाने जा चुके हैं. इन सब हार्मोनों को कोर्टिकोस्टेरायड्स कहा जाता है. इन में से दो अधिक प्रसिद्ध हैं, आल्डोस्टेरोन और कोर्टिसोन. आल्डोस्टेरोन गुरदे पर प्रतिक्रिया करता है और नमक के चयापचय को नियंत्रित करता है. शरीर के द्रवों की मात्रा को नियंत्रित करने में इस का बहुत अधिक महत्त्व है. कोर्टिसोन चीनी के चयापचय को नियंत्रित करता है. कोर्टिसोन का गठिया जैसे रोगों और विभिन्न प्रकार की त्वचा संबंधी गड़बड़ियों का उपचार करने के लिए औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है.

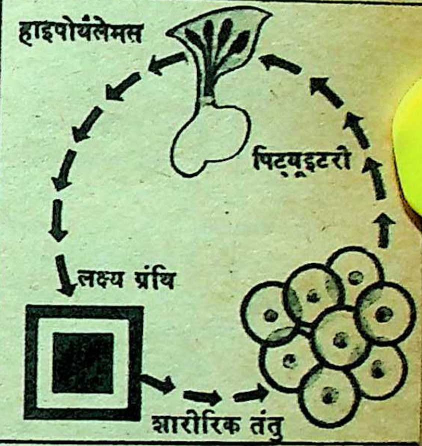

ऐड्रेनेलिन

अधिवृक्क मज्जका ऐड्रेनेलिन उत्पन्न करती है. जब रक्त में ऐड्रेनेलिन छोड़ा जाता है तो उस से रक्तवाहिनियां संकुचित हो जाती हैं और इस प्रकार खून का दबाव बढ़ जाता है. आंतरिक अंगों—आमाशय, आंतों, मूत्राशय और श्वासनलियों की बहुत सी मांसपेशियों पर ऐड्रेनेलिन का उलटा प्रभाव होता है. इस से उन का फैलाव हो जाता है. क्रोध, चिंता और भय जैसी कुछ मनोवैज्ञानिक स्थितियों में भी रक्त में ऐड्रेनेलिन की मात्रा बढ़ जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त में ऐड्रेनेलिन की इस बहुतायत से कुछ परिवर्तन हो जाते हैं, जैसे आंख की पुतली का फैल जाना, बालों के सिरों का खड़े हो जाना, हृदय का जल्दीजल्दी और जोरजोर से धड़कने लगना, कोशिकाओं के संकुचन से त्वचा का विवर्ण हो जाना, अधिक वायु अंदर खींचने के लिए श्वास नली का फैल जाना और जिगर से रक्तवाहिनी में अधिक चीनी आना. क्रोध या भय उत्पन्न करने वाली किसी भी स्थिति से अधिवृक्क मज्जका रक्त में ऐड्रेनेलिन छोड़ने लगती है. इस प्रकार वह शरीर को वे कार्य करने के योग्य बनाती है, जो उस विपत्ति से निपटने के लिए आवश्यक हैं. फिर वे चाहे लड़ने से संबंधित हों या भागने से.

अब हम यौन ग्रंथियों पर आते हैं. इन्हें अर्थात पुरुष के अंडकोष और स्त्री की डिंब ग्रंथियों को अकसर जनन-ग्रंथियां भी कहा जाता है. जनन ग्रंथियों से होने वाले स्राव का कार्य शरीर और मस्तिष्क में सैक्स की विभिन्न विशिष्टताओं का विकास करना है. यही वे स्राव हैं, जिन के कारण स्त्री पुरुष पर और पुरुष स्त्री पर लट्टू हो जाता है.

यौनपरिवर्तन की रोचक वारदातें

एक विशेष बात यह भी ध्यान रखने की है कि यद्यपि अंडकोषों और डिंब ग्रंथियों के अपनेअपने स्राव होते हैं, जो एक को पुरुषत्व प्रदान करते हैं तो दूसरे को नारीत्व, तो भी पुरुष और स्त्री के शरीर में ये दोनों प्रकार के स्राव भी पाए जा सकते हैं. यही कारण है कि पुरुषोचित गुणों वाली स्त्रियां तथा स्त्रियोचित गुणों वाले पुरुष भी अकसर मिल जाते हैं. इन के अतिरिक्त समलिंग कामुकता के भी बहुत दर्शन होते हैं. यौन परिवर्तन की रोचक वारदातें भी इसी कारण होती हैं.

इस से यह सिद्ध होता है कि काम ग्रंथियों के प्रतिरोपण से लिंग का विकास विपरीत दिशा में किया जा सकता है. पूर्णतया नारीत्वयुक्त नारी की अत्यधिक वासना को नियंत्रित करने के लिए उसे पुरुष हार्मोनों की खुराकें दी जा सकती हैं. लेकिन उस स्त्री को यह चेतावनी दे दी जाती है कि वह इस बात का ध्यान रखे कि उस के चेहरे पर मूंछें न उगने लगें.

अंडकोषों का कार्य

अंडकोष दो पुरुष यौन ग्रंथियां हैं. वे लिंग के ठीक पीछे त्वचा की परतों या थैली के रूप में स्थित होते हैं. उन के दो कार्य हैं : एक तो स्परमैटोजोआ (शुक्राणु) उत्पन्न करना, जिस से यहां पर हमें कोई मतलब नहीं है और दूसरा हार्मोन टैस्टोस्टेरोन उत्पन्न करना. उस के स्राव की शरीर पर प्रतिक्रिया का बहुत पहले से ज्ञान है, क्योंकि नर का पुंसत्वहरण मनुष्य द्वारा की गई प्राचीनतम शल्यक्रिया में से एक है. इस शल्यक्रिया के द्वारा ही उस ने भयानक बैल को शांत बना दिया, मुर्गे को खस्सी मुर्गा और ओजस्वी व्यक्ति को जननेंद्रिय रहित हिजड़ा. अब तक मुसलिम हरमों में सेवा के लिए पुंसत्वहीन पुरुषों को रखने की प्रथा सर्वविदित है. वेटिकन में गायकों की आवाज को कोमल बनाए रखने के लिए उन का पुंसत्वहरण कुछ साल पहले तक जारी था.

पुंसत्वहरण को आज की नसबंदी अथवा नलबंदी के लिए की गई शल्यक्रिया से भिन्न माना जाना चाहिए. पुंसत्वहरण में अंडकोषों को बिलकुल हटा दिया जाता है. नसबंदी में केवल शुक्राणुओं का मार्ग अवरुद्ध किया जाता है. अंडकोष अपने स्थान पर बने रहते हैं और वे स्राव उत्पन्न करने तथा छोड़ने का अपना काम जारी रखते हैं, जिन से पुरुष पुरुष बना रहता है. उसे कामोत्तेजना यथापूर्व होती है. यह भी जान लेना चाहिए कि पुंसत्वहरण और नसबंदी दोनों में लिंग को यथावत छोड़ दिया जाता है. जिस व्यक्ति पर इन दोनों में से किसी भी एक प्रकार की शल्यक्रिया की हुई होती है, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

व्यक्ति सहवास जारी रख सकता है.

इस में कोई संदेह नहीं कि अंडकोष रहित व्यक्ति में संभोग की इच्छा काफी कम हो सकती है, लेकिन वैसे वह ऐसा करने के योग्य होता है. इस का यह अर्थ है कि हिजड़े रखने की प्रथा से केवल इतना निश्चित होता था कि जो कोई भी बच्चे होते थे वे मालिक के होते थे.

अध्ययन से यह भी पता चला है कि प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था में टेस्टोस्टेरोन के स्राव में बहुत धीरेधीरे कमी होती है. इतनी ही कमी मैथुन करने की शक्ति में होती है. इन स्थितियों में टेस्टोस्टेरोन से उपचार अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है. पालद क्रिफ ने अपने ग्रंथ 'पुरुष हार्मोन' में यह मत प्रकट किया है कि प्रतिदिन लगभग 20-30 मिलीग्राम टेस्टोस्टेरोन लेने से किसी पुंसत्वहीन पुरुष में भी यौवन का उद्दाम वेग ठाठें मारने लगता है.

स्त्री की डिंब ग्रंथियों की बनावट

स्त्री की डिंब ग्रंथियां जंघाओं के लगभग मध्य में नीचे की ओर दोनों ओर स्थित बादाम के आकार की दो ग्रंथियों के रूप में होती हैं. इन से डिंब स्खलित होता है, जो यदि शुक्रकीट से संयुक्त हो जाता है तो स्त्री गर्भ धारण कर लेती है. यहां पर हमें उन के केवल दूसरे कार्य से ही वास्ता है अर्थात मादा हार्मोन ओएस्ट्रेडायल और प्रोगेस्टोरोन का स्रवण इन ग्रंथियों से कैसे होता है.

ओएस्ट्रेडायल वक्ष स्थल के विकास सहित स्त्री की अन्य यौन विशेषताओं के विकास के लिए उत्तरदायी हार्मोन है. ओएस्ट्रेडायल और प्रोगेस्टेरोन के अन्य

बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के शारीरिक विकास में हार्मोन की गतिविधियों का विशेष महत्त्व होता है.

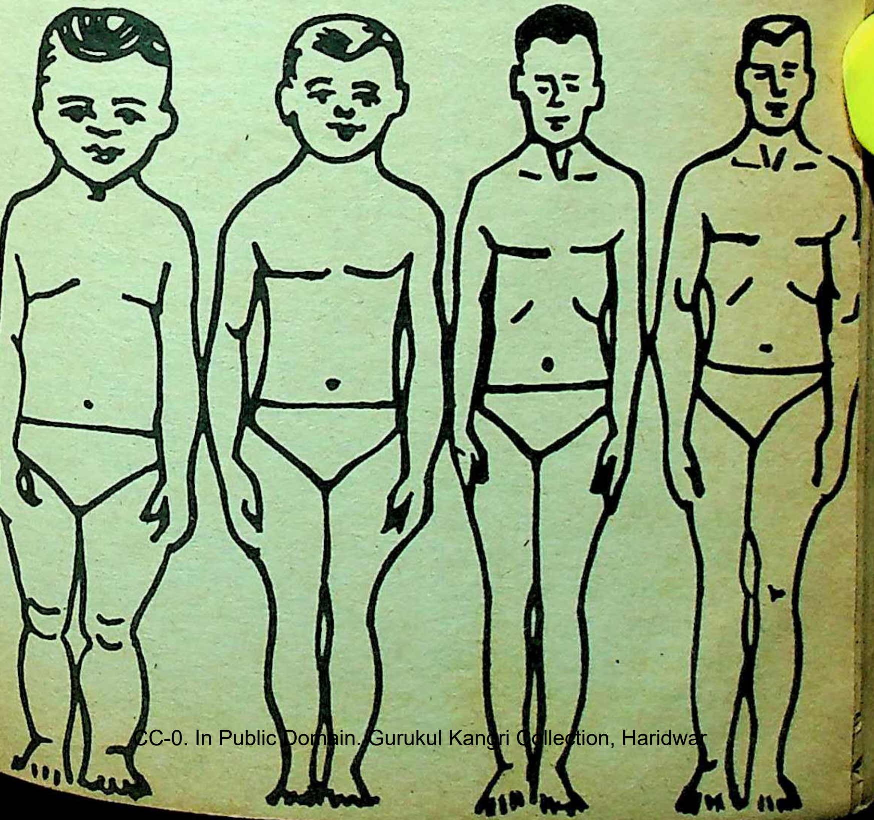

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

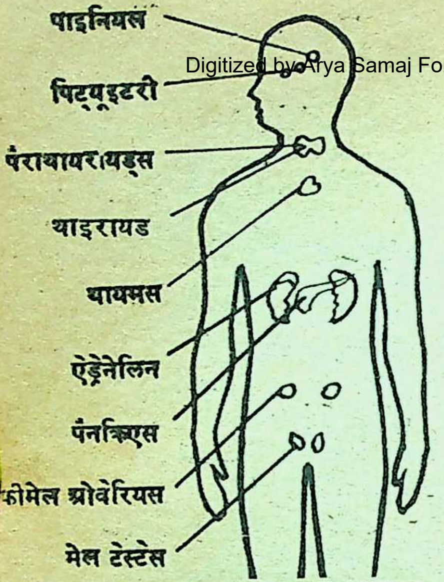

मानव शरीर को अधिक प्रभावित करने वाली ग्रंथियां.

कार्य मासिक धर्म की प्रक्रिया से घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं.

पीयूष ग्रंथियां

अंत में (लेकिन महत्त्व की दृष्टि से जो कम नहीं है) हम मस्तिष्क के ऊपर हड्डी से बनी छोटी सी खाली जगह में स्थित एक बहुत छोटी ग्रंथि पिट्यूइटरी (पीयूष) पर विचार करेंगे. मस्तिष्क के बाद यह शरीर का शायद सब से जटिल अंग है.

हम यह देख चुके हैं कि हार्मोन हमारे शरीर की गतिविधियों और यहां तक कि भावनाओं को भी काफी हद तक नियंत्रित करते हैं. लेकिन, हार्मोनों को कौन नियंत्रित करता है, यह हम ने नहीं जाना है. वह है पिट्यूइटरी ग्रंथि. हो सकता है आप पूछ बैठें कि पिट्यूइटरी ग्रंथि से ठीक ऊपर स्थित मस्तिष्क का अंग हाइपोथैलेमस इसे नियंत्रित करता हो. पिट्यूइटरी ग्रंथि इस से पूरी तरह से संबद्ध होती है. अगर कहा जाए कि हाइपोथैलेमस को क्या चीज प्रभावित करती है तो यह स्वयं मस्तिष्क हो सकता है. यह बात समझ लेनी चाहिए कि अन्य अंतःस्रावी ग्रंथियां पिट्यूइटरी ग्रंथि को प्रभावित करने में समर्थ होती हैं.

इस प्रकार पिट्यूइटरी ग्रंथि शरीर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतःस्रावी ग्रंथि है. ऐसा वह कुछ विशेष हार्मोन उत्पन्न कर के करती है, जो अन्य अंतःस्रावी ग्रंथियों पर असर डालते हैं और उन्हें अपने हार्मोन स्रवित करने के लिए उत्तेजित करते हैं. इस बात को समझ लेने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि अंतःस्रावी प्रणाली का वास्तविक नियंत्रण हाइपोथैलेमस ही करता है. इस के बावजूद उस का महत्त्व पिट्यूइटरी ग्रंथियों को ही मिलता है, जिस से उस का नाम अब भी बना हुआ है.

पिट्यूइटरी ग्रंथि का महत्वपूर्ण कार्य

उस का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य विकास हार्मोन का उत्पादन करना है. पिट्यूइटरी ग्रंथि से उत्पन्न विकास हार्मोन शरीर के विकास को नियंत्रित करता है. (वह अपना कार्य तब आरंभ करता है, जब गर्भस्थ शिशु की अवस्था चार सप्ताह से अधिक नहीं होती) यह विशेष रूप से हड्डियों के विकास को प्रभावित करता है.

यह संभव है कि ये विकास हार्मोन किसी प्रकार कैंसर की समस्या से भी संबद्ध हों. पर यह स्मरण रखना चाहिए कि कैंसर रोग कोशिकाओं के शीघ्र गति से विकास के अतिरिक्त और कुछ नहीं है.

पीयूष ग्रंथि (पिट्यूइटरी) बहुत से हार्मोन उत्पन्न करती है, जिन में से प्रत्येक का अपना एक विशेष कार्य होता है. हाल ही के वर्षों में पीयूष ग्रंथि के बहुत से कार्य गिनाए गए हैं.

पीयूष ग्रंथि द्वारा स्रवित एक मजेदार हार्मोन प्रोलेक्टिन है, जिस का अर्थ होता है 'दूध के लिए' अर्थात् मातृप्रेम हार्मोन. यह स्तनों में दूध लाता है. यहां तक कि पक्षियों में भी. मादा पक्षियों से माता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भांति व्यवहार कराने और अंडे सेने जैसे मातृवत कर्तव्य पूरे कराने में यह हार्मोन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है. इस बात को पूरी तरह से सिद्ध किया जा चुका है.

मादा पेंगुइन अपने अंडों को असुरक्षित छोड़ देती है और उन्हें सेती नहीं. इस के बावजूद, इस हार्मोन की थोड़ी सी मात्रा दे देने से वह न केवल अपने अंडों पर बैठने लगी, बल्कि दूसरे पक्षियों के अंडों पर भी बैठी. हम निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि क्या अपने शिशु के प्रति लापरवाह माता प्रोलेक्टिन की थोड़ी सी मात्रा दे देने से अधिक स्नेही माता बन जाएगी.

हार्मोनों के संबंध में यह बात विशेष रूप से जानने योग्य है कि शरीर में उन का उपयुक्त मात्रा में सर्वदा संतुलन बना रहना चाहिए. उन में से कोई भी न तो कम होना चाहिए और न अधिक.

एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा. हम यह बता चुके हैं ऐड्रेनेलिन रक्त में चीनी प्रवाहित करती है. हम ने रक्त में चीनी की मात्रा को कम करने से संबंधित इनस्युलिन के गुण का भी उल्लेख किया है. ये दोनों हार्मोन आरे की तरह व्यवहार करते हैं. जब आप अधिक चीनी खाते हैं तो अग्न्याशय ग्रंथि अधिक इनस्युलिन उत्पन्न करने की दिशा में प्रवृत्त हो जाती है. जब आप के शरीर में यह चीनी जज्ब होती है तो ऐड्रेनेलिन जिगर की कोशिकाओं को अधिक चीनी निकालने के लिए प्रेरित करती है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि हार्मोन हमें स्वस्थ बनाए रखते हैं. हमारे उचित विकास में सहायता करते हैं. लेकिन प्रकृति के विशाल आंगन में यह तसवीर का एक पहलू मात्र है. हार्मोन न केवल हम मानव प्राणियों में अपनी भूमिका अदा करते हैं, बल्कि जीव जगत के अन्य सदस्यों में भी ये यही कार्य करते हैं. यहां तक कि वनस्पति जगत में भी इन का कार्य है. इस बात के स्पष्ट प्रमाण विद्यमान हैं कि यौन संबंध, घोंसलों और छत्तों का बनना, बच्चों को चुग्गा देना, उन का पालनपोषण करना आदि पशुपक्षियों का व्यवहार निश्चित रूप से उन की विभिन्न ग्रंथियों द्वारा निःसृत हार्मोनों से नियंत्रित होता है.

इसी तरह पौधों के विभिन्न गुण जैसे अंकुरों की प्रकाश की दिशा में बढ़वार, उन की जड़ों का पानी और गुरुत्वाकर्षण शक्ति की दिशा में बढ़वार और तनों की किसी बाहरी वस्तु के स्पर्श से प्रतिक्रिया करना, सब पौधों के हार्मोनों 'आक्सिजनों' से नियंत्रित होता है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि रहस्यपूर्ण रसायन हार्मोन सब कहीं हैं, हमारे अंदर भी और बाहर भी. वे जीवन के सारे पक्षों का पथ प्रदर्शन और नियंत्रण तथा उसे प्रभावित कर रहे हैं. ●

हृदय प्रतिरोपण—आधी सफलता

ब्रिटेन में पिछले 12 वर्षों में हृदय प्रतिरोपण के लिए 25 रोगियों के आपरेशन किए गए. उन में से 13 रोगियों की आपरेशन के तुरंत बाद, दो रोगियों की तीनचार माह बाद और एक रोगी की लगभग एक वर्ष बाद मृत्यु हो गई. लंदन के प्रसिद्ध स्वास्थ्य विशेषज्ञ डाक्टर पीटर ड्रपर ने यह रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि हृदय रोगों के उपचार के लिए हृदय प्रतिरोपण का तरीका अपर्याप्त और घातक है.

इस संदर्भ में डाक्टर ड्रेपर ने सुझाव दिया है कि हृदय व रक्त संबंधी रोगों की आरंभिक रोकथाम की ओर जरूरी ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि 50 प्रतिशत से अधिक मौतें इन रोगों से ही होती हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद अपनी अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

किसी कंपनी का एक अधिकारी जनाना हस्पताल के प्रतीक्षा कक्ष में बैठा अपने बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा कर रहा था. बैठेबैठे उस ने अपना ब्रीफकेस खोला और दफ्तर की एक फाइल निकाल कर उसे पढ़ने में व्यस्त हो गया.

थोड़ी देर बाद नर्स ने आ कर सूचना दी, "श्रीमान, बधाई हो. लड़का आया है."

"जरा ठहर कर आए. मैं इस समय व्यस्त हूं," उस अधिकारी ने फाइल से नजरें उठाए बिना ही कह दिया.

—जगमोहनसिंह चुग

✦

एक व्यक्ति ने जेबकतरे को डांटते कहा हुए, "तुम्हें शर्म नहीं आई मेरी जेब काटते हुए?"

"शर्म मुझे क्यों आएगी? शर्म तो आप को आनी चाहिए क्योंकि आप के बटुए में एक रुपया भी नहीं था," जेबकतरे ने तपाक से जवाब दिया.

—हीरालाल

✦

मैं अपने मित्रों सहित सिनेमाघर में एक फिल्म देख रहा था. हमारी पंक्ति में बैठा एक व्यक्ति ठीक तरह से फिल्म देखने के बजाए बारबार बगल वाली सीट पर बैठी एक युवती को घूर रहा था.

तंग आ कर उस युवती ने उस व्यक्ति से कहा, "क्या आप अपना एक फोटो मुझे देने की कृपा करेंगे?"

"हांहां, क्यों नहीं," उस व्यक्ति ने खुश हो कर कहा, "एक फोटो तो अभी भी मेरे बटुए में पड़ा है. लेकिन आप उस का क्या करेंगी?"

"घर में छोटे बच्चे जब दंगा करेंगे तो वह फोटो उन्हें दिखा कर डराऊंगी," युवती ने बड़े सहजभाव से कहा.

—प्रमोदकुमार (सर्वोत्तम)

✦

एक व्यक्ति : एक तो तुम ने पाजामा खो दिया, ऊपर से धुलाई के पैसे मांग रहे हो?

धोबी : साहब, पाजामा तो धुलने और प्रैस होने के बाद ही खोया था.

—हरीश बहल •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए
विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 5.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

भगवान विष्णु की भारत यात्रा
एक तीखा व्यंग्यात्मक उपन्यास. रु. 4.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा, क्या मानव हार गया ? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

MUKTA December (First) 1980
R.N. 6502/60 D(C)-104
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

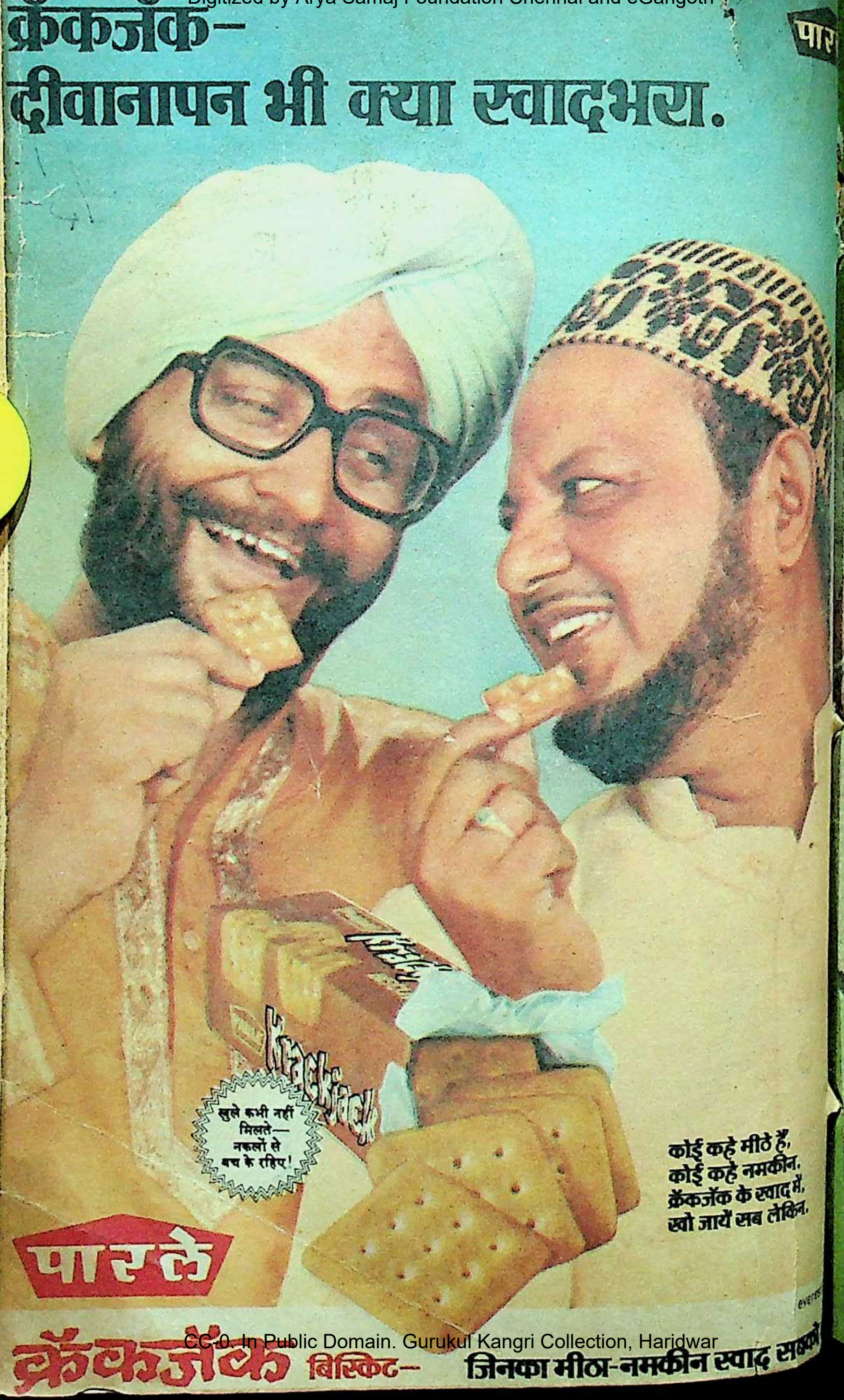

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवंबर (द्वितीय) 1980

मुक्ता

घोटालों में घिरा दिल्ल क्रिकेट सं

समाज कल्या बनाम पार्टी कल्याण

लघु उद्योगों में अस्थिरता

नागरिक उड्डयन में राजनी

2.50 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

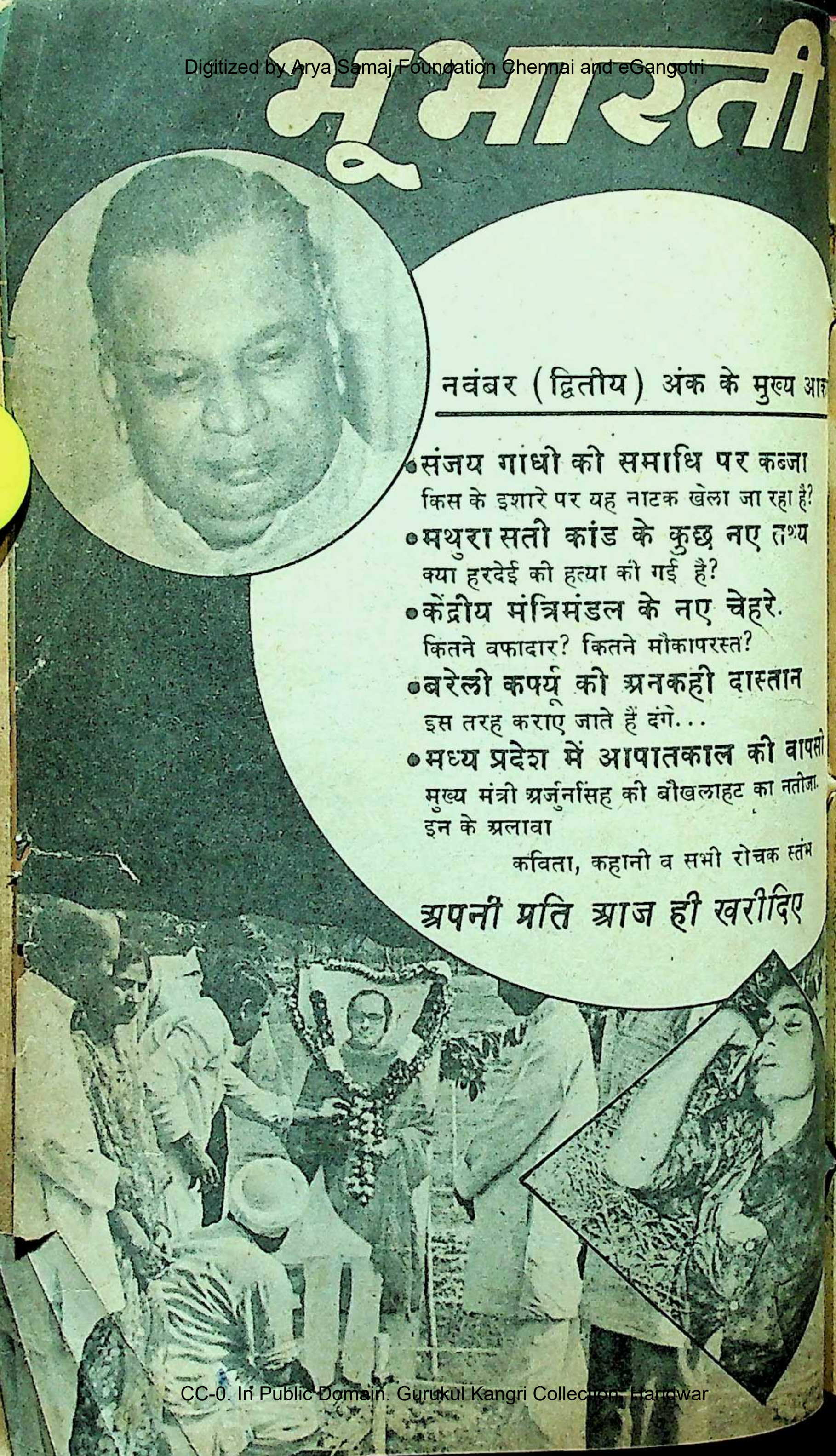

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ते बच्चों की ज़रूरत कॉम्प्लान

सिर्फ़ कॉम्प्लान® में ही २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं जिनकी उनको रोज़ाना ज़रूरत है

बढ़ते बच्चों की खास ज़रूरतें होती हैं, **कॉम्प्लान** उन्हें सर्वोत्तम प्रोटीन के साथ साथ २२ अन्य अत्यावश्यक पोषक तत्त्व भी देता है जिनकी बच्चों को बढ़ती उम्र में ज़रूरत रहती है. ध्यान रहे **कॉम्प्लान** ही वह नियोजित आहार है जिसकी डॉक्टर ज़्यादहतर सिफ़ारिश करते हैं.

कॉम्प्लान चॉकलेट, केसर-इलायची और स्ट्रॉबेरी के स्वादभरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

लिंटास-GLC. 6-1810 HI

मुफ़्त! ३२ पृष्ठ की पुस्तिका

"सम्पूर्ण परिवार के लिए पोषाहार मार्गदर्शिका" कृपया ५० पैसे के डाकटिकट सहित इस पते पर लिखें: पोस्ट बैग नं. १६११६ (कॉम्प) जी-१०७ बम्बई-४०० ०२५.

कॉम्प्लान® -परिपूर्ण नियोजित आहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

घोटालों में घिरा दिल्ली...	18	विशेष प्रतिनिधि
हिमालय में भूस्खलनों की ..	26	सुंदरलाल बहुगुणा
अधिकार पत्र	45	कस्तूरचंद जैन
खादी ग्रामोद्योग कमीशन	50	खान भारती
नागरिक उड्डयन में...	56	महरउद्दीन खान
समाज कल्याण बनाम...	67	विशेष प्रतिनिधि
भारत में तेल की खोज	70	विशेष संवाददाता
कुत्ता	76	प्रदीप शालिग्राम
राजेश की वापसी अमिताभ...	86	मणि वत्सल
लघु उद्योगों में अस्थिरता	122	विवेक सक्सेना
घासीराम कोतवाल	134	श्रीशचंद्र मिश्र
उदयपुर का प्राकृतिक...	148	संजय गोठवाल

कथा साहित्य

पगला बाबू	36	नरेंद्र शास्त्री
रूठी रानी	61	अनिल नागपाल
अंगरेजी ज्ञान	99	रोशनलाल
परमिट बाबू	115	सिंधु गोयल
इति हड़ताल प्रकरणम्	144	बुलाकी शर्मा
अकाल	154	अशोक मिश्र

कविताएं

करते हैं आप...	35	जीवन महता
सन्नाटा भाता है...	83	सरल जैन
शर्माया करती हो	98	अनिल चड्ढा
दौर, व्यवस्था, कार्यक्रम	159	मि. ला. जायसवाल

स्तंभ

संपादक के नाम	7	65	ये लड़के
मुक्त विचार	14	94	नेताजी
शाबाश	33	100	परदे के आगे
ये शिक्षक	43	109	पिछले छः महीने
पसंद अपनीअपनी	49	119	सावधान
चुनावों की चहल	55	131	धूपछांव

दास्ताने दफ्तर 161

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

नवंबर (द्वितीय) 1980
अंक : 344

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. द्वारा सुरक्षित हैं.

© दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. 1980.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.50 रुपए, एक वर्ष : 50.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 120.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग फ़ैशन के ताने-बाने
सूपरटेक्स ने सबसे पहले पहचाने.
अनूठी प्रतिभा...

अपने विमल रिटेलर से माँगिए: क्रिस्टल सुइड, यंग टर्क, स्पीडस्टर, हाइ-सोफी, फेयर लेडी, स्वीट सॉफ्टी
किट्टी क्वीन, रियल गर्ल, ब्यूटी स्पॉट, एवरग्लेड, रेस विनर, हाई-टेस्ट, टेक्सलोन, वीपी, इत्यादि.

® is the registered trademark of Reliance Textile Industries Ltd.

Mudra/RTI/90 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

अक्तूबर (प्रथम)) अंक के 'मुक्त विचार' बहुत अच्छे लगे. विशेष रूप से सरकारी दफ्तरों पर आप की टिप्पणी बिलकुल सही थी. आज नागरिकों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है. आवश्यक चीजों के दाम दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं. डेढ़-दो साल पहले जो चीनी खुले बाजार में ढाई रुपए किलो मिलती थी वह आज 15 रुपए किलो तक बिक रही है. और तो और बिजलीपानी की व्यवस्था भी ठीक नहीं है. इस्पात, सीमेंट आदि का उत्पादन दिन पर दिन कम होता जा रहा है.

देश के ताप बिजलीघरों को चलाने के लिए पर्याप्त कोयला नहीं है. खानों से कोयला ढोने के लिए पर्याप्त वैगन नहीं हैं. ऐसी स्थिति में उत्पादन कैसे बढ़े?

कोयला, रेल व बिजली उद्योग सरकारी क्षेत्र में हैं. इस क्षेत्र में कामचोरी व रिश्वतखोरी का बोलबाला है. यही कारण है कि आज औद्योगिक संकट पैदा हो गया है. पिछले साल सरकारी प्रतिष्ठानों को 1,900 करोड़ रुपए का घाटा हुआ था. वर्तमान परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए यदि हम भविष्य के आर्थिक संकट की कल्पना करें तो डर लगने लगता है. मेरे विचार से निम्नलिखित उपाय प्रयोग में लाने से ही हम इस भयंकर स्थिति से छुटकारा पा सकते हैं.

● सरकारी दफ्तरों में पांच साल के लिए नई भरती बंद कर दी जाए. हर साल दो प्रतिशत की दर से कर्मचारियों की संख्या 10 प्रतिशत कम हो जाएगी. इस से दफ्तरों में फिजूलखर्ची कम हो जाएगी.

● सरकारी अफसरों की पदोन्नति वरीयता के बजाए काम करने की योग्यता के आधार पर की जाए.

● जो सरकारी उद्योग घाटे में जा रहे हैं उन्हें नागरिक क्षेत्र को सौंप दिया जाए.

● सरकार अपने हाथों में केवल प्रशासन, सुरक्षा और विदेश विभाग ही रखे. उत्पादन, परिवहन जैसे कार्य नागरिक क्षेत्र को सौंप दे.

● बिक्री कर तुरंत हटा दिया जाए तथा आय कर, संपत्ति कर, आयात एवं उत्पादन शुल्क आदि को बहुत सरल बना दिया जाए ताकि रिश्वतखोरी कम हो.

● जहां तक संभव हो कंप्यूटर जैसे आधुनिक साधनों का प्रयोग उत्पादकता बढ़ाने के लिए किया जाए जैसे रेल टिकटों की बिक्री आदि के कार्य में.

—ज. द. बापट

✦

अक्तूबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार' में 'काम नहीं तो वेतन नहीं' शीर्षक टिप्पणी बहुत अच्छी लगी. कामचोरों एवं हड़तालियों के विरुद्ध केरल सरकार द्वारा उठाया गया यह कदम निश्चय ही साहसपूर्ण एवं सराहनीय है. अगर केंद्र सरकार व अन्य राज्य सरकारें भी ऐसा ही कदम उठाएं तो सरकारी विभागों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को रोजरोज की हड़तालों से मुक्ति मिल जाएगी.

—शीला रंजन

अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'कामरेड गरीबसिंह' (कहानी : अशोक कुमार शर्मा), 'मंदे का मारा' (व्यंग्य : तरशचंद जैन) तथा 'सिफारिश के चक्कर में' (व्यंग्य : शकुंतला शर्मा) काफी पसंद आए. 'अधिकारी : एक घुटता व्यक्तित्व' (लेख : इं. मधुचंद्र जैन) अच्छा बन पड़ा है. पर यह भी सही है कि यदि अधिकारी वर्ग पर थोड़ाबहुत भी अंकुश न रखा जाए तो वह मनमानी करने लग जाता है. इतना अवश्य है कि ईमानदार व परिश्रमी अधिकारी को व्यर्थ ही तंग नहीं किया जाना चाहिए.

—ललेंद्र हुमने 'ललित'

अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'अधिकारी : एक घुटता व्यक्तित्व' अच्छा लगा. वास्तव में अधिकारियों को तो कर्मचारीगण, विशेषकर 'बाबुओं' ने अपने हाथों की कठपुतली बना रखा है, जिस की डोर वे मुख्य कार्यालय में बैठ कर चाय की चुसकियां लेते हुए खींचते रहते हैं.

लेकिन मेरे विचार में तो बड़े अधिकारी भी कुछ कम नहीं होते. अपने से छोटे अधिकारी को, जिस के पास पूरा कार्यभार रहता है और किसी प्रकार की गलती हो जाने पर जिसे सारा दंड भी भुगतना पड़ता है, परेशान करने में वे

विश्व के सब से प्राचीन व हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार प्रकाशित

ऋग्वेद

(ऋग्वेद की संपूर्ण 'शाकल संहिता' का हिंदी भाषांतर)

भाषांतरकार :

डा. गंगासहाय शर्मा एम. ए. (संस्कृत), पीएच. डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए. यह वही वेद है जो आज तक एक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए.

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

मूल्य 65/- डाक व्यय 10/- अतिरिक्त

पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए

प्राप्य : **दिल्ली बुक कंपनी**, एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी कोई [illegible]

सितंबर (द्वितीय) अंक में 'चक्कर फिल्मी सितारों के नाम का' (लेख : मणि) अच्छा लगा. पर लेखक ने एक जगह गलती की है. विजयेंद्र घाटगे ने 'चितचोर,' 'अनपढ़,' 'अगर,' 'आखिरी इंसाफ' जैसी फिल्मों में विजयेंद्र के नाम से अभिनय किया. इसी से मिलतेजुलते नाम का एक अन्य कलाकार है विजयेंद्र मित्तल, जो विजेंद्र के नाम से फिल्मों में काम कर रहा है. —उदय कापसे

सितंबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'दुर्घटना' (कहानी : विनोदकुमार डबराल) में आज की पुलिस का सच्चा भंडाफोड़ किया गया है.

देश में बलात्कार की घटनाएं महामारी की तरह फैल रही हैं, जिन में सब से अधिक पुलिस ही यह कुकृत्य कर रही है या इस प्रकार के कुकृत्य करने वालों का साथ दे रही है. —ओम माथुर

सितंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'केकड़े' (कहानी : शैलेंद्रकुमार दुबे) दिल को छू लेने वाली है. ऐसी कहानियां केवल मुक्ता में ही पढ़ने को मिलती हैं. —आलोककुमार सिंह

अगस्त (द्वितीय) अंक में 'नव बौद्धों की राजनीति' (लेख : राकेश कोहरवाल) में 'नव' विशेषण क्यों जोड़ा गया है? यह अलगाव अपमानजनक लगता है. नए और पुराने बौद्ध की विभाजक रेखा ही गलत है. पुराने हिंदू और नए हिंदू में इतना अधिक अंतर है, फिर भी उस में विभाजक रेखा नहीं खींची जाती है.

लेखक ने लिखा है कि 48 हजार हरिजनों ने धर्म परिवर्तन किया. लेखक ने ये आंकड़े कहा से लिए? 1951 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति
शंबूक वध
अतीत का मोह
पुरोहितवाद
गोपूजा
हमारी धार्मिक सहिष्णुता
कृष्णनीति : हमारा नैतिक पतन
ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
राम का अंतर्द्वंद्व
राम का अंतर्द्वंद्व : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
भारत में संस्कृति का ब्राह्मण नियंत्रित विस्तार
हिंदू धर्म
संस्कृत
भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
कर्ण
भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
तुलसी और वेद
रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
भ्रष्टाचार
रामचरितमानस में नारी
सत्यनारायण व्रत कथा
क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
गांधीजी का बलिदान
यज्ञोपवीत
जंत्र तंत्र मंत्र
कर्मयोग
गरुड़ पुराण
ईश्वर
आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म
सरिता और हिंदू समाज.

मूल्य- 5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.

हुई जनगणना के अनुसार देश में बौद्धों की संख्या 1,80,823 थी. सन 1961 की जनगणना में यह संख्या बढ़ कर 32,50,227 हो गई. 14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर में डाक्टर अंबेडकर के साथ लाखों लोगों ने दीक्षा ग्रहण की थी. सन 1971 की जनगणना में यह संख्या बढ़ कर 38,74,842 हो गई.

भारत में आम आदमी वैचारिक बिखराव, कूपमंडूकता, पाखंड, अशिक्षा एवं उत्पीड़न की गिरफ्त से आजादी के 33 वर्षों के बाद भी नहीं छूट सका है. बुद्ध और अंबेडकर का दर्शन समान दृष्टि से देखता हुआ दलितों को जूझने की शक्ति प्रदान करता है. —**भंवरलाल पंडित**

◆

'देशद्रोही' (उपन्यास : महेंद्र अधिकारी) की सभी किस्तें पढ़ीं. उपन्यास उत्तम रहा. आशा है आगे भी इस प्रकार की रचनाएं प्रकाशित होती रहेंगी.

अगस्त (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'रिश्ता भाईबहन का' (लेख : दुर्गाप्रसाद सैनी) में जो विचार प्रस्तुत किए गए हैं, वे एकदम सही हैं.

मेरा एक दोस्त जहां कहीं भी जाता है, एक ऐसी लड़की साथ ले जाता है जिसे वह बहन कहता है. लोग कहते हैं कि उन का रिश्ता साफसुथरा नहीं है. मैं कई बार सोचता हूं कि अपने दोस्त से कहूं कि वह अपनी बहन के साथ ज्यादा न घूमाफिरा करे. पर सोचता हूं कि कहीं वह बुरा न मान जाए. मैं उसे यह लेख अवश्य पढ़ाऊंगा, शायद कुछ फायदा हो सके.

—**राकेशकुमार जैन**

◆

सितंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित लायन रमेश सचदेव द्वारा मेरे लेख 'कितने समाजसेवी ये सेवा क्लब' पर कुछ तीखी सी प्रतिक्रिया पढ़ने को मिली. ऐसा एहसास हुआ कि लेख के तथ्यों ने उन की कमजोर रग को छू दिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सचदेव का आरोप है कि लेख में समाजसेवी क्लवों की केवल धज्जियां उड़ाई गई हैं. इस बारे में मेरा इतना ही कहना है कि जहां तक इन क्लवों द्वारा किए जाने वाले समाजसेवा कार्यों का संबंध है, उन के प्रचार में इन क्लवों के बजट का खासा बड़ा भाग चला जाता है.

स्तर के हिसाब से कार्यक्रम आयोजित करने का औचित्य तो समझ में आता है, लेकिन सेवा के नाम पर 'डिनर' उड़ाना गरीब, बेबस और पिछड़े लोगों का उपहास नहीं तो और क्या है?

सेवा क्लवों को अपने अहं की तुष्टि का साधन बनाने की बात लायन सचदेव ने स्वयं स्वीकार की है. पर इस तुष्टि के और भी तरीके हैं. सिर्फ गरीबों का नाम ले कर अहं की तुष्टि करना क्या न्यायपूर्ण है?

चुनाव में पैसे के दुरुपयोग की ओर इंगित करने से मेरा आशय यही था कि यह पैसा उन लोगों के कल्याण के लिए खर्च करना अधिक सार्थक होगा, जिन की बात ये क्लब अपने जबरदस्त प्रचार में करते हैं.

लेखे की गोपनीयता की बात कह कर पाठकों को भ्रमित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है. वास्तविकता यह है कि इन सेवा क्लवों के कुल बजट का बहुत छोटा सा हिस्सा ही समाज सेवा पर व्यय होता है. —**प्रदीप गुप्ता**

मुक्ता के लेखक

नरेंद्र शास्त्री

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'पगला बाबू' के लेखक नरेंद्र शास्त्री उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं. जीवन के प्रति आस्थावान दृष्टिकोण रखते हुए आप स्वतंत्र रूप से लिखते रहे हैं. अध्यापन आप का व्यवसाय है तो अभिनय और अध्ययन आप की रुचियां हैं.

प्रदीपकुमार शालिग्राम

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित लेख 'कुत्ता' के लेखक प्रदीपकुमार शालिग्राम नागपुर निवासी हैं. हिंदी के अतिरिक्त आप को मराठी भाषा का भी ज्ञान है. साहित्य की प्रत्येक विधा पर आप साधिकार लिख सकते हैं. पढ़ने के साथसाथ आप को भ्रमण का भी शौक है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'बैंक कर्मचारियों में बढ़ती अनुशासनहीनता' (लेख: विशेष प्रतिनिधि) अच्छा लगा. इसी आशय का एक उदाहरण लिख रहा हूं. मेरे गांव (गहमर, जिला गाजीपुर) में यूनियन बैंक आफ इंडिया की शाखा है. इस बैंक के फील्ड अफसर एवं शाखा प्रबंधकों ने समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को ऋण दिलाने में काफी रुचि ली और उस से लोगों को लाभ भी हुआ. पर इधर कुछ समय से इस बैंक के अधिकारी इस दिशा में उदासीन हो गए हैं.

तीन महीने पहले से कोई भी फील्ड अफसर इस बैंक में नहीं है. एक को तैनात भी किया गया, पर देहात में आने की अनिच्छा के कारण उस ने लंबी छुट्टी ले ली. उस की गैरहाजिरी में बैंक द्वारा ऋण देने का सारा कार्य बंद पड़ा है. ऐसी ही हालत बारा के संयुक्त ग्रामीण बैंक की भी है. बैंक कर्मचारियों द्वारा अध्यापकों के वेतन आदि से संबंधित पावना पत्रों को एक [illegible] वारे हाथ का खेल है. ऐसी स्थिति शाखा कार्यालय की ही नहीं, गाजीपुर स्थित मुख्य कार्यालय की भी है. वहां भेजे गए बिल आदि यदि एक सप्ताह के भीतर सुरक्षित वापस आ जाएं तो गनीमत है.

—बालमुकुंद सिंह

अगस्त (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'रिश्ता भाईबहन का' (लेख: दुर्गाप्रसाद सैनी) पढ़ा.

यहां एक बात मुझे कहनी है कि ये बनाए हुए रिश्ते कभीकभी काफी खतरनाक साबित हो जाते हैं. हमारे शहर की ही बात है. एक महिला ने एक पुरुष को अपना भाई बनाया और कुछ दिनों बाद वह भाई ही उस की लड़की को ले भागा. मैं ने देखा है कि इन बनाए हुए भाइयों के कारण कभीकभी स्त्रियां अपने सगे भाइयों के प्रति ही उपेक्षा का भाव दिखाने लगती हैं क्योंकि बने हुए भाई यह कभी पसंद नहीं करते कि बनाई हुई बहन उन से ज्यादा

नई दिल्ली में

- अंगरेजी की नवीनतम पुस्तकें
- हिंदी प्रकाशकों की विविध विषयों पर पुस्तकें
- सरिता, मुक्ता, भूभारती, चंपक कैरेवान व वूमंस ईरा का वितरण केंद्र
- सरिता पत्र समूह के लिए विज्ञापन स्वीकार करने का केन्द्र

दिल्ली बुक कंपनी

एम/12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगे भाई का ध्यान रखे.

जब कोई युवती किसी को भाई बनाती है तो गलीमहल्ले की महिलाएं अकसर कहती हैं, "सामने भैया बाद में सैंया." ऐसी स्थिति में कौन लड़की किसी को भाई बनाना पसंद करेगी? वैसे भी आज की व्यस्त जिंदगी में रिश्ते बनाने व उसे निभाने का समय किस को है?

—शोभा दसाज

जुलाई (द्वितीय) अंक में 'नया बजट' (लेख: आर्थिक पर्यवेक्षक) पढ़ने के बाद यह एहसास हुआ कि इस बजट को चालाकी से भरा बजट कहना गलत न होगा.

भुक्ता के माध्यम से बजट का वास्तविक स्वरूप जान कर लाखों पाठकों के मन में सरकार के प्रति क्षोभ हुआ हो तो यह स्वाभाविक है. **—प्रदीपकुमार**

जून (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'कालिज पुस्तकालयों में भ्रष्टाचार' (लेख: दामोदर अग्रवाल) में सारा दोष पुस्तकालयाध्यक्षों, लिपिकों एवं प्राध्यापकों पर ही थोप दिया गया है. इस में छात्र-छात्राओं के कारनामों को भी शामिल किया जाना चाहिए था.

छात्र परीक्षाओं से पहले ही किताबें निकलवा लेते हैं पर समय पर वापस नहीं करते. इस से दूसरे विद्यार्थियों को वे पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पातीं.

—सत्येंद्रसिंह

जून (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'और मेरे लायक कोई सेवा' (व्यंग्य: जैमलसिंह सैनी) बहुत पसंद आया. इस में वर्तमान समाज के व्यवहार से संबंधित एक कड़वे सच को प्रकट किया गया है. अतः यह मनोरंजन करने के साथसाथ लोगों को अपने व्यवहार में उचित सुधार करने की भी चेतावनी देता है.

—श्रीधर मिश्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

राष्ट्रपति पद्धति की वकालत

देश की वर्तमान कठिनाइयों, आर्थिक गिरावट, दंगों, महंगाई आदि के लिए बलि के बकरों की खोज शुरू हो गई है, जिन पर इन सब खराबियों का दोष मढ़ा जा सके. कभी यह दोष सी. आई. ए. (अमरीकी गुप्तचर विभाग) या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर मढ़ा जाता था, आजकल संसदीय प्रणाली पर मढ़ने की कोशिश की जा रही है.

पिछले महीने श्रीमती गांधी के इशारे पर, सरकारी पैसे से इंदिरा समर्थक वकीलों का दिल्ली में एक सम्मेलन बुलाया गया जिस का उद्देश्य ब्रिटेन की तरह की हमारी वर्तमान संसदीय प्रणाली को दोष देना और उस के स्थान पर अमरीका जैसी राष्ट्रपति शासन पद्धति को लागू करने की वकालत करना था.

रईसी ठाटबाट से हुए इस सम्मेलन में दिए गए भाषणों में महंगाई, आर्थिक जड़ता आदि के लिए संसदीय प्रणाली को बुराभला कहा गया. सम्मेलन का उद्देश्य तो था अमरीका की तरह सर्वशक्तिमान राष्ट्रपति पद वाली प्रणाली का अनुमोदन करना पर सम्मेलन में आए इंदिरा समर्थक वकीलों ने भी इस पर मुहर लगाने से इनकार कर दिया और सम्मेलन को बिना अपना उद्देश्य पूरा किए ही समाप्त करना पड़ा.

सम्मेलन में क्या हुआ, क्या नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं है. महत्वपूर्ण है श्रीमती इंदिरा गांधी की विचारधारा, जिन्होंने इस सम्मेलन को बुलवाया और उस में मुख्य भाषण दिया.

संसदीय प्रणाली, जो भारत में 30 वर्षों से चल रही है, अन्य किसी भी प्रणाली से बेहतर है. अमरीका की राष्ट्रपतीय पद्धति बुरी नहीं है पर वहां संसद और न्यायालय को भी बहुत अधिकार हैं. यहां तो अभी भी दोनों सरकार के इशारे पर नाचते हैं.

अमरीका में समाचारपत्रों और जनमत का भी बहुत महत्व और प्रभाव है. यहां जनमत और समाचारपत्रों को कभी भी आसानी से सरकारी चंगुल में दबाया जा सकता है.

फिर अमरीका में एक ही भाषा, लगभग एक ही धर्म और अब एक ही जाति है. भारत में अनेक धर्म, बीसियों भाषाएं और सैकड़ों जातियां उप जातियां हैं. यहां प्रधान मंत्री मंत्रिमंडल का नेता मात्र होता है, संवैधानिक शासक नहीं. यह तो श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने व्यक्तित्व की छवि के कारण मंत्रिमंडल को कठपुतली बना रखा है. ऐसा हमेशा नहीं होता. श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रारंभिक वर्ष व श्री लालबहादुर शास्त्री व श्री मोरारजी देसाई के समय मंत्रिमंडल पूरी तरह शक्तिशाली थे.

मंत्रिमंडल में हर राज्य, हर जाति, हर भाषा के प्रतिनिधि होते हैं. अतः कोई भी निर्णय किसी विशेष वर्ग के हित या अहित में नहीं लिया जा सकता. राष्ट्रपतीय पद्धति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हर समय विवाद होंगे कि यह निर्णय उस वर्ग के खिलाफ है, यह इस वर्ग के. जो बात अब आराम से मंत्रियों के दबाव या संसद के झुकाव से तय हो जाती है, राष्ट्रपतीय पद्धति में उस के लिए धरने, हड़तालें और दंगे कराने होंगे.

जब प्रधान मंत्री ही अपने हाथों में असीमित अधिकार जमा कर सके तो राष्ट्रपतीय पद्धति में तो न जाने क्या होगा जहां संविधान भी हर तरह के अधिकार राष्ट्रपति को देगा. भारत जैसे देश में राष्ट्रपति या तो प्रभावहीन व्यक्ति होगा जिस से देश चल नहीं पाएगा या फिर तानाशाह जो अपनी सत्ता पर प्रहार समझ कर हर विरोध को कुचलेगा.

...और इंदिराजी की उत्सुकता

श्रीमती इंदिरा गांधी राष्ट्रपति वाली शासन पद्धति के लिए क्यों उत्सुक हैं, इस के कई कारण हो सकते हैं.

संसद में यद्यपि इंदिरा कांग्रेस का पूरा बहुमत है, फिर भी युवा कांग्रेस के लगभग 150 संसद सदस्य इंदिराजी से बुरी तरह रुष्ट हैं. गर्दिश के दिनों में उन्होंने ही इंदिरा व संजय का साथ दिया था, पर अब संजय गांधी की मृत्यु के बाद उन्हें अवांछित घोषित कर दिया गया है. यह वर्ग कभी भी किसी अन्य वर्ग का सहयोग पा कर इंदिरा गांधी से विद्रोह कर सकता है और संसद में उन की सरकार गिरा सकता है. लेकिन राष्ट्रपति वाली शासन पद्धति में संसद का बहुमत बेमतलब का हो जाएगा.

राष्ट्रपतीय पद्धति के चुनाव में श्रीमती इंदिरा गांधी अन्य किसी भी उम्मीदवार से कहीं अधिक मत प्राप्त कर सकेंगी. देश के अन्य राजनीतिक नेता किसी न किसी वर्ग, जाति, भाषा, राज्य आदि से जुड़े हैं. श्रीमती इंदिरा गांधी के पास न केवल आकर्षक व्यक्तित्व है, उन के पास तीन पीढ़ियों की सेवा का इतिहास अखिल भारतीय छवि है, जिस के कारण वह अन्य किसी भी उम्मीदवार के मुकाबले कहीं अधिक सफल होंगी.

यदि यह पद्धति अभी लादी जा सकी तो विरोधी दलों द्वारा चुने गए राष्ट्रपति संजीव रेड्डी से भी आसानी से छुटकारा मिल सकेगा. साथ ही उन्हें मंत्रियों को संसद से ही चुनने की अनिवार्यता से भी छुटकारा मिल जाएगा.

राष्ट्रपति होने पर राज्यपालों, न्यायाधीशों की नियुक्ति के विवाद भी समाप्त हो जाएंगे, क्योंकि फिर तो ये अधिकार सीधे राष्ट्रपति के ही होंगे.

राष्ट्रपति होने पर आपातस्थिति लागू करने की आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि आपातस्थिति लगातार ही रहेगी.

असम समस्या अधर में कब तक?

कुछ सरकार की हठधर्मी और कुछ छात्र संघ की हठधर्मी के कारण असम का मामला लंबी बातचीत के बावजूद हल नहीं हो पाया है. छात्रों ने असम में बंद का आयोजन कर के अपना आंदोलन फिर शुरू कर दिया है और एक बार फिर देश का सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र अव्यवस्था के दौर में आ गया है.

सरकार ने आंदोलनकारियों की यह मांग कि 1951 के बाद भारत में घुसे सभी शरणार्थियों के नाम मतदाता सूची में से काट दिए जाएं, 1961 से 1971 तक के शरणार्थियों को देश भर में फैला दिया जाए और 1971 के बाद आए बंगला देश निवासियों को लौटने पर बाध्य किया जाए, अस्वीकार कर दी है. केंद्र मात्र 1971 के बाद आए शरणार्थियों के नाम सूचियों में से काटने को तैयार है.

इस मामले में केंद्र सरकार वास्तव में दुविधा में है. केंद्र में जो भी सरकार हो, उस का पहला कर्तव्य सत्ता में बने रहना होता है. यह मतदाताओं की मर्जी पर होता है. अतः उन को खुश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना बहुत आवश्यक है. असम आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब कम से कम अगले दोतीन चुनावों में तो इंदिरा कांग्रेस असमियों के मत प्राप्त नहीं कर सकती. जो थोड़ेबहुत मत मिल सकते हैं, वे उन मुसलिम शरणार्थियों के हो सकते हैं जिन्हें असमी वहां से निकालना चाहते हैं. अब यदि केंद्र छात्र संघ की बात मान जाए तो इंदिरा कांग्रेस का असम से पूरी तरह सफाया हो जाएगा.

यही नहीं, असम की सफलता पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा आदि के शरणार्थियों (जिन के नाम अब मतदाता सूचियों में डाल दिए गए हैं) को भी नाराज कर देगी. चूंकि इस सारे मामले से मुसलिम शरणार्थी जुड़े हुए हैं, इसलिए देश के अन्य हिस्सों में भी मुसलमानों के सुरक्षित मतों से इंदिरा कांग्रेस को हाथ धोना पड़ सकता है.

सरकार चाहे किसी भी पार्टी की हो, वह इतना बड़ा जोखिम नहीं ले सकती, चाहे इस से देश का हित हो या अहित. इसी वजह से केंद्र इस समस्या को टाले जा रहा है और यह आशा लगाए हुए है कि एक न एक दिन आर्थिक दबाव के कारण असमियों को घुटने टेकने ही पड़ेंगे और हड़ताल तथा आंदोलन छोड़ कर वे यथास्थिति बनाए रखने के लिए मजबूर हो जाएंगे.

वैसे असम छात्र संघ व गण संग्राम परिषद के नेतृत्व की तारीफ की जानी चाहिए. एक वर्ष से चले आ रहे इस आंदोलन का स्वरूप भारत में कभी भी, कहीं भी हुए आंदोलनों से भिन्न है. सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद इन संगठनों में न तो विवाद उत्पन्न हो पाए और न ही किसी को खरीदा जा सका. इन का सामूहिक नेतृत्व इतना अच्छा रहा कि आज वर्ष भर बाद भी जनता किसी एक व्यक्ति के नाम से इस आंदोलन को नहीं जोड़ पाई है.

यह चीज साबित करती है कि यह आंदोलन कुछ अतिउत्साही और सत्ता के भूखे नेताओं का अपने लाभ के लिए चलाया जाने वाला आंदोलन नहीं है, बल्कि सोचसमझ कर राज्य की जनता की इच्छानुसार चलाया जा रहा आंदोलन है.

श्री त्रिपाठी ने त्यागपत्र क्यों दिया

श्रीमती इंदिरा गांधी की पार्टी में निचले स्तरों पर तो जोरदार जूतपैजार हो ही रही है, अब ऊपरी स्तर के भी विवाद बाहर आने लगे हैं और जिस राजनीतिक स्थायित्व के लिए मतदाताओं ने इंदिरा कांग्रेस को चुना था, वह खतरे में पड़ गया है.

आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री डा. चेन्ना रेड्डी के बदले जाने के कुछ दिन बाद ही श्रीमती गांधी के वरिष्ठतम सहयोगी श्री कमलापति त्रिपाठी ने त्यागपत्र दे दिया.

श्री त्रिपाठी श्रीमती इंदिरा गांधी के निकटतम राजनीतिक सहयोगी ही नहीं, उन के धार्मिक अनुष्ठानों व तंत्रमंत्र संबंधी मामलों के भी प्रमुख सलाहकार हैं. श्री त्रिपाठी ही कुछ दिनों से उन के लिए यज्ञ, हवन आदि की देखरेख करने के अलावा इस का भी ध्यान रख रहे थे कि उन के लिए कौन सा मुहूर्त शुभ है.

फिर भी श्रीमती इंदिरा गांधी उन से अधिक दिन नहीं निभा पाईं और अप्रत्यक्ष रूप से उन के काम की आलोचना करने लगीं. जब एक प्रेस सम्मेलन में उन्होंने रेल मंत्रालय के काम की कटु आलोचना की तो त्रिपाठीजी ने त्यागपत्र दे दिया और यह सामने आने लगा कि विवाद दरअसल रेल मंत्रालय के सुचारु ढंग से कार्य किए जाने पर नहीं, बल्कि उत्तर प्रदेश की राजनीति के बारे में है.

अपने सहयोगियों को धूल बराबर समझने की श्रीमती इंदिरा गांधी की आदत पुरानी है. हमेशा से ही शाही शानशौकत और सत्ता के वातावरण में रहने के कारण उन्हें अब अपने ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना अधिक विश्वास हो गया है कि वह दूसरे किसी भी व्यक्ति की कुछ मानने को तैयार ही नहीं हैं. त्रिपाठीजी इस बात को अच्छी तरह जानते हैं. इसी लिए वह बिना विवाद के त्यागपत्र देना चाह रहे हैं.

असल में इंदिरा शासन की सब से बड़ी कमजोरी ही यह है. श्रीमती गांधी न किसी पर विश्वास करना चाहती हैं, न किसी को अधिक महत्त्व देना चाहती हैं. नतीजा यह है कि देश के महत्वपूर्ण निर्णय उन के निजी आदेशों पर होते हैं.

60 करोड़ निवासियों के देश का पूरा शासन एक ही व्यक्ति के हाथों नहीं चल सकता. इसी लिए राजनीतिक स्थायित्व होते हुए भी उन की सरकार कुछ नया काम कर पाने में असफल हो रही है.

यह बात कोई नई नहीं है. 1971 और 1975 के बीच भी जब श्रीमती इंदिरा गांधी राजनीतिक तौर पर पूरी तरह सुरक्षित थीं, देश की आर्थिक व प्रशासनिक स्थिति डांवाडोल रही है. इस के विपरीत 1965 और 1970 के बीच अनेक आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद देश खासा ठीक चला है.

1971 और 1977 की तरह अब भी मंत्री हों या अधिकारी, सब एक अनजाने भय के शिकार हैं कि न जाने कब उन्हें बे मुरव्वती से निकाल बाहर किया जाए.

आज जब नागरिक क्षेत्र के बड़े उद्योग तक अपने उच्च अधिकारियों को कामकाज में पूरी जिम्मेदारी देने को तैयार हैं, इंदिराजी इतने बड़े देश के प्रशासन में किसी को भी अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने का अवसर नहीं दे रही हैं. यही उन के प्रशासन की सब से बड़ी कमी है और शायद व्यक्तिगत राजनीतिक छवि बनाने में सब से बड़ी योग्यता.

तलाकशुदा स्त्रियों को सुरक्षा

मद्रास उच्च न्यायालय ने एक रोचक मामले में फैसला दिया है कि छोड़ी गई या तलाक दी गई पत्नी व उस के बच्चों के लिए निर्धारित गुजारा पति को दिवालिया होने के बाद भी देना होगा. सामान्यत: दिवालिया होने के बाद किसी व्यक्ति को अपने पुराने कर्जों के भुगतान से छुटकारा मिल जाता है. उच्च न्यायालय के अनुसार पत्नी को दिया जाने वाला गुजारा एक नैतिक कर्त्तव्य है जिस से छुटकारा नहीं मिल सकता.

उक्त मामले में भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता के अंतर्गत मजिस्ट्रेट ने पति को अपनी पत्नी को मात्र 35 रुपए तथा बच्चे को मात्र 20 रुपए माहवार का गुजारा देने का आदेश दिया था. पति अनेक बहाने बना कर यह पैसा देने से इनकार कर रहा था, अत: अंत में मजिस्ट्रेट ने उस की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया था. इस पर पति ने दिवाला कानून का लाभ उठा कर बचना चाहा था.

यह मामला दर्शाता है कि किस प्रकार पति बच्चों और पत्नी को नाम मात्र का खर्चा देने में भी तंग करते हैं. इस मामले में भी पत्नी को अदालतों के चक्कर काटने पड़े और पति बहाने बना कर निकलता रहा. उच्च न्यायालय भी उसे कैद की सजा ही दिला सका, पत्नी बच्चे को पैसा नहीं.

वैवाहिक जीवन में दरारें पड़ना कोई बड़ी बात नहीं है. किसी दूसरे से लगाव, मानसिक क्लेश, मारपीट आदि की दशा में विवाह बंधन टूटना भी संभव है. पर संबंध तोड़े जाने पर पति बच्चों की जिम्मेदारी से छुटकारा नहीं पा सकता. यदि पत्नी के जीवन निर्वाह का भार उस पर न भी हो तो बच्चों की खातिर उसे बच्चों और मां का खर्च उठाना ही होगा, चाहे वह खुद भूखा रहे.

यदि कानून के दांवपेचों से कोई पति इस प्रकार के खर्चों से बचना चाहे तो अदालतों का कर्त्तव्य है कि वे पत्नी को संरक्षण दें और खर्चा भत्ता दिलाने में किसी भी हालत में देर न करें. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोटालों और झगड़ों में घिरा दिल्ली क्रिकेट संघ

विशेष प्रतिनिधि

भारत में जब किसी भी क्षेत्र में खासी कमाई होने लगती है तो घोटालों और झगड़ों का एक लंबा सिलसिला शुरू हो जाता है. इस मुसीबत से क्रिकेट जैसा खेल भी अलग नहीं रह पाया है.

दिल्ली में रणजी ट्राफी, दिलीप ट्राफी व अन्य राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के अलावा टेस्ट मैच व छोटेमोटे घरेलू मैचों को कराने का जिम्मा 'दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ' के जिम्मे है. यह संघ भारत

दिल्ली का फिरोजशाह कोटला क्रिकेट मैदान : बाहर से आई हर क्रिकेट टीम को यहां की व्यवस्था की आलोचना करने का अवसर क्यों मिला?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड से जुड़ा हुआ है संघ के अध्यक्ष हैं रामप्रकाश मेहरा, जो पिछले 25 सालों से अध्यक्ष बने हुए हैं. 65 साल के रामप्रकाश मेहरा विभाजन के समय जब लाहौर से दिल्ली आए थे उस समय उन के पास सिर्फ 200 रुपए की पूंजी थी. लेकिन आज दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष के नाते वह लाखों की संपत्ति के मालिक हैं.

1979-80 की संघ की बैलेंस शीट के हिसाब से उस के पास लगभग 60 लाख रुपए की पूंजी जमा है. अक्तूबर, 1979 में दिल्ली में भारत व आस्ट्रेलिया के बीच हुए टेस्ट मैच से संघ को 7 लाख 45 हजार 6 सौ 97 रुपए 70 पैसे का फायदा हुआ था और दो महीने बाद इसी मैदान पर भारत ने जब पाकिस्तान के साथ टेस्ट मैच खेला तो संघ ने 20,72,524 रुपए 18 पैसे कमाए. वैसे भी कोई मजबूत टीम यदि दिल्ली में टेस्ट मैच खेले तो 20 लाख रुपए की आसानी से कमाई की जा सकती है.

इसी लंबीचौड़ी कमाई के लालच ने झगड़े के बीज बोने शुरू कर दिए हैं.

दिल्ली क्रिकेट संघ के अध्यक्ष रामप्रकाश मेहरा : संघ की बदौलत लाखों के मालिक.

दिल्ली क्रिकेट संघ के सचिव के. के. मेहरा : सफाई देने के मामले में अपने चाचा से भी दो कदम आगे.

श्री मेहरा 25 साल से संघ के अध्यक्ष हैं तो उन के भतीजे के. के. मेहरा पिछले 20 साल से सचिव. बाकी अधिकारी भी इतने ही समय से अपनीअपनी कुर्सियों

पिछले 20-25 वर्षों से दिल्ली क्रिकेट संघ के प्रमुख पदों पर जमे बैठे पदाधिकारियों का एक ही मकसद रहा है—जैसे भी हो संघ पर अपना आधिपत्य जमाए रखो. क्रिकेट मैदान की दशा, देश की प्रतिष्ठा खराब होती है तो हो. और उन के द्वारा किए गए घोटालों को ले कर विवाद उठ रहे हैं तो उठें. मगर ताज्जुब है कि इतने पर भी सरकार संघ की गतिविधियों को नजरअंदाज क्यों करती आ रही है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

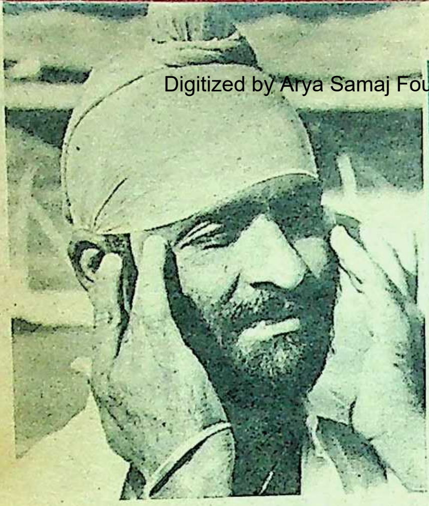

बिशनसिंह बेदी : दिल्ली क्रिकेट संघ से भ्रष्टाचार दूर करने का एक ही उपाय है—वर्तमान संघ को भंग कर के उस को नए सिरे से बनाया जाए.

पर डटे हुए हैं. हालांकि सरकार ने काफी समय पहले कानून बना दिया था : "किसी भी खेल संगठन का अधिकारी अपने पद पर तीनतीन साल की दो अवधियों यानी कुल जमा छः साल से ज्यादा नहीं रह सकता."

यह कानून दिल्ली के क्रिकेट संघ ने लागू क्यों नहीं किया? और ऐसा न करने पर सरकार ने उस के खिलाफ कोईक दम क्यों नहीं उठाया? इस का जवाब आज तक नहीं मिल सका है. हां, सरकार की लापरवाही का फायदा उठा कर श्री मेहरा ने दिल्ली क्रिकेट पर अपनी तानाशाही हकूमत कायम कर ली है और सारा काम सिर्फ उन की मर्जी से चलता है.

संघ के 1,700 सदस्य हैं. इन में से कई ऐसे हैं जो क्रिकेट खिलाड़ी तो हैं ही नहीं क्रिकेट से उन का दूर तक का कोई वास्ता नहीं है. उल्टे जो सचमुच क्रिकेट खिलाड़ी रहे हैं उन्हें संघ का सदस्य बनने ही नहीं दिया जाता.

संघ के हर साल चुनाव होते हैं लेकिन कागजी तौर पर. आज तक कभी भी संघ के सभी तो क्या, आधे सदस्यों ने भी खुद चुनाव में हिस्सा नहीं लिया है. इसी साल जुलाई में अधिकारियों के चुनाव के लिए जो बैठक हुई थी उस में संघ के सिर्फ 20 सदस्य मौजूद थे.

संघ के चुनाव का विचित्र तरीका

संघ के चुनाव का तरीका काफी विचित्र है. इस में यह नियम है कि यदि कोई सदस्य चुनाव के लिए होने वाली बैठक में हिस्सा न ले पाए तो वह किसी दूसरे व्यक्ति को अपनी जगह भेज सकता है. यह जरूरी नहीं है कि वह व्यक्ति संघ का सदस्य ही हो. संघ के सदस्य डाक द्वारा भी छपे हुए फार्म पर वोट दे सकते हैं. संघ के अधिकांश सदस्य क्योंकि गैर खिलाड़ी हैं इसलिए अधिकारी कौन है? खिलाड़ियों को क्या सुविधाएं मिलें? मैदान व्यवस्था कैसी हो? इन सवालों से उन्हें कुछ भी लेनादेना नहीं होता. उन्हें मतलब होता है टैस्ट मैचों में फ्री पास मिलने से.

"मैंने मंसूरअलीखां पटौदी को दिल्ली का कप्तान बनाया था, हालांकि इस के लिए मुझे कई खिलाड़ियों की नाराजगी सहनी पड़ी. पर वह दिल्ली छोड़ कर चला गया."—रा. प्र. मेहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही वजह है कि वही जानेपहचाने चेहरे दिल्ली क्रिकेट संघ पर 20 सालों से डेरा जमाए हुए हैं. श्री मेहरा कहते हैं, "मैं अगर 25 साल से अध्यक्ष हूं तो क्या मुसीबत आ गई. चिन्नास्वामी क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में 30 साल से हैं. पंजाब में मोहला व बंगाल में ए. एन. घोष को भी कुर्सी संभाले 30 साल हो गए हैं. मद्रास में चिदंबरम 25 साल से हैं तो बंबई में वानखेड़े 20 साल से. उड़ीसा में मोहती को 30 साल से ज्यादा समय हो गया है क्रिकेट से जुड़े हुए. जो बाकी जगह हो रहा है वही तो मैं ने दिल्ली में किया है."

सफाई देने के मामले में के. के. मेहरा तो अपने चाचा से भी कुछ कदम आगे हैं. उन का तर्क है, "हम ने दिल्ली में क्रिकेट की जड़ें जमाने में काफी मेहनत की. अब अगर हम उस का फायदा उठा रहे हैं तो लोगों को क्यों एतराज हो रहा है."

पिछले 20-25 सालों की अपनी तानाशाही में श्री मेहरा व उन के भतीजे ने कई ऐसे नियम बना लिए जो उन के साम्राज्य को कायम रखने में मददगार सिद्ध हो रहे हैं. दिल्ली क्रिकेट संघ से कई क्रिकेट संस्थाएं व कई क्रिकेट क्लब संबंधित हैं, लेकिन वोट दे सकने का अधिकार किसी को नहीं है. श्री मेहरा फरमाते हैं, "इस में मैं क्या कर सकता हूं. मैं 25 साल पहले क्रिकेट संघ में आया लेकिन 'वोट कौन दे, कौन न दे' यह नियम उस से भी 15 साल पहले ही बन गया था." यानी अपने कार्यभार संभालने से 15 साल पहले बने नियमों में 25 साल में भी वह कोई सुधार लाने की नहीं सोच सके हैं.

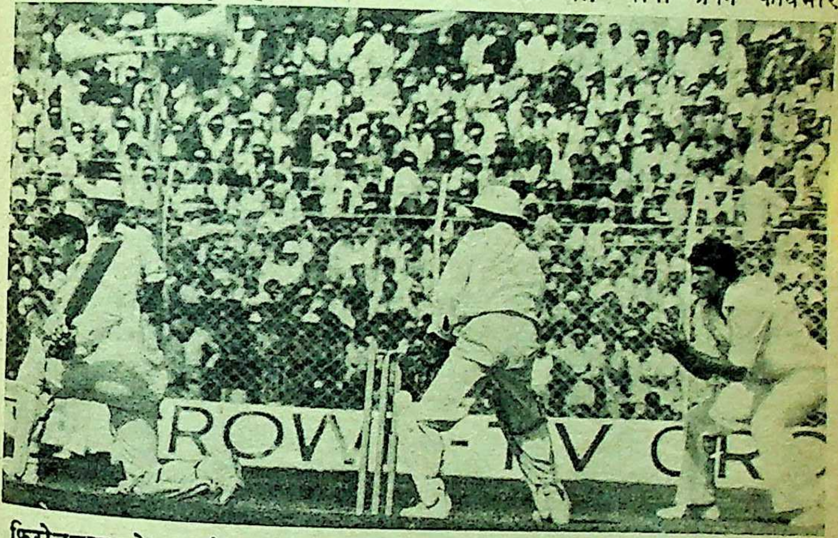

फिरोजशाह कोटला मैदान पर भारत और आस्ट्रेलिया के बीच पिछले वर्ष खेले गए मैच का दृश्य : मैच तो कब का पूरा हुआ मगर सुविधाओं के नाम पर किया गया घोटाला अब तक उलझा हुआ है.

भारत में हर राज्य में क्रिकेट संघ है लेकिन दिल्ली क्रिकेट संघ की अपनी अलग ही खासियतें हैं. मसलन :

अन्य क्रिकेट संघों की तुलना में दिल्ली क्रिकेट संघ खिलाड़ियों को बहुत कम सुविधाएं देता है. 1979-80 के सीज़न में जब फिरोजशाह कोटला मैदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

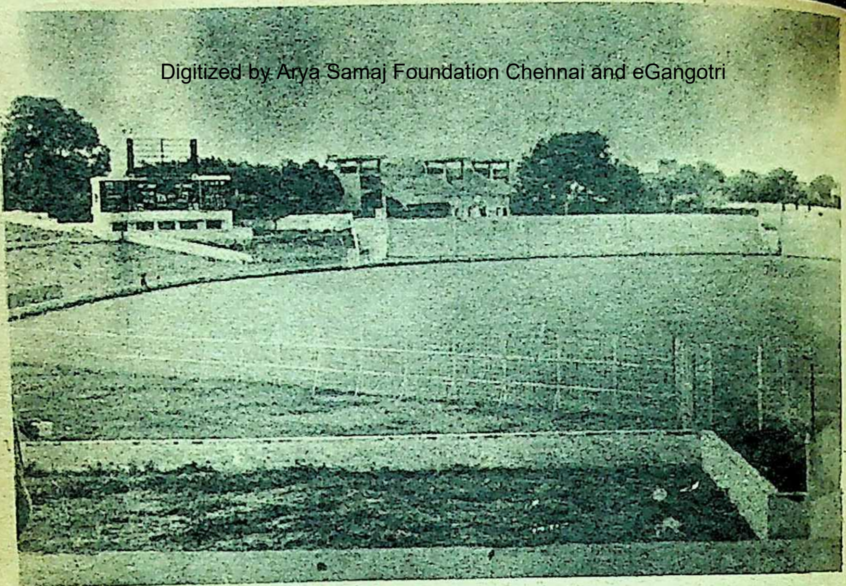

फिरोजशाह कोटला क्रिकेट मैदान में सुविधाओं की कमी की शिकायत दर्शकों को हमेशा से रही है. इस शिकायत को दूर करने के लिए 1979-80 में काफी पैसा खर्च किया गया है. पर वास्तव में इस से सुविधाएं जुटाई गई या यह भी अधिकारियों की जेबों में गया?

में दिल्ली व हरियाणा के बीच रणजी ट्राफी मैच हो रहा था, उसी समय कोटला मैदान के बाहर ऊबड़खाबड़ जगह पर जूनियर खिलाड़ियों की प्रतियोगिता हो रही थी. रणजी ट्राफी के खिलाड़ियों को तो होटलों में ठहराया गया लेकिन जूनियर खिलाड़ियों को लेखक ने खुद श्री मेहरा के ग्राफिस के साथ लगे एक ही हाल में जमीन पर रातें बिताते देखा.

दिल्ली का क्रिकेट मैदान सब से गंदा क्यों!

ग्रन्य टेस्ट केंद्रों के मुकाबले दिल्ली का मैदान टेस्ट ग्रायोजित करने के लिहाज से सब से गंदा है. टिकटों की कीमतें यहां ज्यादा रहती हैं. बदले में खिलाड़ियों ग्रौर दर्शकों को मामूली सुविधाएं भी नहीं मिलतीं. बाहर से ग्राई हर क्रिकेट टीम ने यहां की व्यवस्था की ग्रालोचना की है.

दिल्ली ही ऐसा एकमात्र टेस्ट केंद्र है जहां पुराने मशहूर खिलाड़ियों को पास पाने के लिए एड़ीचोटी का जोर लगाना पड़ता है.

बाकी राज्यों के क्रिकेट संघ क्रिकेट खिलाड़ियों की सुविधा का सम्मान करते हैं लेकिन दिल्ली में उन्हीं खिलाड़ियों को यह सम्मान मिल पाता है जो मेहरा साम्राज्य के दुलारे हों. जो खिलाड़ी किसी गलत बात का भी यदि विरोध करने की गुस्ताखी करता है तो उस का पत्ता साफ होने में देर नहीं लगती. ग्रनिल ग्राकाशलाल, मनमोहन सूद, ग्रनिल खन्ना, राजिंदर पाल, विजय सोंधी जैसे खिलाड़ी दसियों साल तक दिल्ली के लिए खेले लेकिन श्री मेहरा की सनक ने उन्हें चुटकियों में बाहर निकाल फेंका.

मंसूर ग्रली खां पटौदी व बिशनसिंह बेदी के साथ भी ऐसा ही हुग्रा. मंसूर ग्रली खां दिल्ली की तरफ से खेलता था लेकिन एक दिन यकायक उस ने हैदराबाद से खेलने की इच्छा प्रकट की. हालांकि किसी भी रूप में हैदराबाद से उस का कोई संबंध नहीं था. श्री मेहरा बताते हैं—"मैं ने उसे दिल्ली का कप्तान बनाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालांकि इस के लिए मुझे आकाशलाल, मनमोहन सूद व राजिंदर पाल की नाराजगी सहनी पड़ी. एक शाम मैं ने मंसूर अली को दिल्ली के कुछ क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ, जिन में कुछ स्कूली बच्चे भी थे, लुधियाना में शराब की महफिल जमाते देखा. मैं ने इस पर आपत्ति की तो वह दिल्ली छोड़ कर चला गया."

वैसे जहां तक शराब का सवाल है, वह तो फिरोज शाह कोटला मैदान में बने संघ के दफ्तर में बांटे जाते कभी भी देखा जा सकता है.

विवाद बेदी और मेहरा की अनबन का

बेदी के साथ श्री मेहरा की लड़ाई पूरी तरह 'मूंछ' की लड़ाई थी. बेदी को आगे लाने में और राजेंद्र गोयल को टेस्ट मैचों में न आने देने के पीछे श्री मेहरा का खास हाथ रहा था. बदले में वह चाहते थे कि बेदी उन का वफादार रहे. शुरू में दिल्ली की टीम चुनने में उन्होंने बेदी की सलाह को माना. लेकिन 1978-79 में बंगलौर में रणजी ट्राफी जीतने के बाद बेदी ने न सिर्फ कर्नाटक क्रिकेट संघ से 17 हजार रुपए ले कर शैंपेन में उड़ा डाले बल्कि खिलाड़ियों की एक यूनियन बना कर श्री मेहरा से मांग की कि रणजी ट्राफी जीतने की खुशी में हर खिलाड़ी को पांचपांच हजार रुपए का बोनस दिया जाए. बेदी ने एक गलती यह और की कि जो ग्राउंडमैन दिल्ली से बंगलौर गया था उसे वह अपने साथ हवाई जहाज से वापस लाया हालांकि नियम के हिसाब से उसे दूसरे दरजे के डिब्बे में आना चाहिए था.

ये तमाम बातें रामप्रकाश मेहरा को भड़काने के लिए काफी थीं. जो व्यक्ति बेदी को दिल्ली व भारत की क्रिकेट टीम में लाया था उसी ने बेदी को क्रिकेट से बाहर कर दिया. श्री मेहरा का आरोप है कि अंगरेजी के दो प्रमुख समाचार पत्रों के खेल प्रतिनिधियों ने बेदी के मामले को जानबूझ कर उछाला क्योंकि वे टेस्ट मैचों में उन के लिए निर्धारित 10 पासों से अधिक चाहते थे जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया. तभी से वे उन के (श्री मेहरा के) खिलाफ हो गए.

1979-80 की बैलेंस शीट में खर्च का जो ब्यौरा दिया गया है उस में कई किस्म के घोटालों की आशंका की गई है. 1979 में 13 से 18 अक्तूबर तक दिल्ली के फिरोज शाह कोटला मैदान में भारत व आस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट मैच खेला गया. लगभग दो महीने बाद 4 से 9 दिसंबर तक इसी मैदान पर भारत व पाकिस्तान भिड़े. भारत आस्ट्रेलिया टेस्ट के लिए दान और विज्ञापन पट्ट पाने के लिए संघ ने मेहरा साम्राज्य के कुछ दुलारे लोगों को काफी अच्छा कमीशन दिया. कमीशन के मामले में श्री मेहरा ने बताया, "पिछले तीन टेस्ट मैचों में (वेस्टइंडीज के खिलाफ दो और इंगलैंड के खिलाफ एक) हमें विज्ञापनों के नाम पर एक लाख रुपया भी नहीं मिला था.

संसद सदस्य कमलनाथ : क्रिकेट में सुधार के प्रति पैदा हुई नईनई दिलचस्पी की वजह क्रिकेट प्रेम है या दिल्ली क्रिकेट संघ की आय के लंबे-चौड़े आंकड़े?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिहाजा इस बार हम ने विज्ञापन देने वालों को 20 प्रतिशत कमीशन देने की पेशकश की जो कि पूरी तरह से जायज है. यह कहना गलत है कि कमीशन पाने वाले मेरे रिश्तेदार हैं. क्रिकेट प्रशासन में 20 साल से ज्यादा समय तक रहते हुए क्या अब मैं यह गंदे काम करूंगा."

संघ में घोटाले ही घोटाले

भारत आस्ट्रेलिया टेस्ट में विज्ञापनों से प्राप्त 5,44,050 रुपए में 1,05,950 रुपए का कमीशन दिया गया यानी लगभग 20 प्रतिशत. लेकिन इस रकम में तीन लाख रुपए दान के रूप में मिले थे और उस पर कमीशन देने का सवाल ही नहीं पैदा होता. विज्ञापन पट्टों से मिले 2,44,050 रुपए में से 1,05,950 रुपए कमीशन में देने का मतलब है लगभग पचास प्रतिशत कमीशन, जो नहीं दिया जाता. भारत पाकिस्तान टेस्ट में भी प्राप्त 5,67,860 रुपए में से लगभग तीन लाख रुपए दान के रूप में मिले. बाकी पर लगभग पचास प्रतिशत की ही दर से 1,11,550 रुपए का कमीशन दिया गया. अधिकांश विज्ञापन पट्ट मोदी व 'इंडियन टोबेको कंपनी' द्वारा सीधे ही भेजे गए, लिहाजा उन पर कमीशन देने का कोई सवाल ही नहीं था.

फिरोजशाह कोटला मैदान में सुविधाओं की कमी की शिकायत दर्शकों को हमेशा से रही है. इस शिकायत को दूर करने के लिए 1979-80 में काफी पैसा खर्च किया गया, इतना ज्यादा कि उस में भी हेरफेर की बू आती है.

संघ ने स्टेडियम की मरम्मत व अन्य सुविधाएं जुटाने के लिए 69,354 रुपए 52 पैसे खर्च किए. भारत आस्ट्रेलिया टेस्ट के दौरान इस मद में 18,583 रुपए 60 पैसे और हुए. लेकिन इतना ही काफी नहीं था. दो महीने बाद ही मैदान की हालत इतनी बिगड़ गई कि उस की मरम्मत कराने के लिए 76,038 रुपए खर्च करने पड़े. इस काम के लिए कोई टेंडर नहीं मंगवाया गया. दिलचस्प बात यह है कि भारत पाकिस्तान टेस्ट खत्म होने के बाद भी मरम्मत का काम अधूरा पड़ा हुआ था.

जिस कंपनी ने मरम्मत का काम किया था उसी को अतिरिक्त 3,36,656 रुपए 30 पैसे दोनों टेस्टों के दौरान किराए पर कुर्सियां व शामियाने लाने की व्यवस्था करने के लिए दिए गए. यदि इस काम के लिए टेंडर मंगवाएं जाते तो आसानी से इस रकम में 30 प्रतिशत की बचत की जा सकती थी.

अस्थायी मूत्रालयों के इंतजाम के लिए भारत आस्ट्रेलिया टेस्ट के दौरान 21,480 रुपए खर्च किए गए. हालांकि श्री मेहरा कहते हैं कि यह इंतजाम स्थायी रूप से कराया गया था. लेकिन तब दो महीने बाद भारत पाकिस्तान टेस्ट के दौरान इसी काम पर 46,730 रुपया क्यों खर्च किया गया?

संघ के कामकाज में अनियमितताएं

यह तो हुई 1979-80 के बैलेंस शीट की बात. वैसे भी संघ के कामकाज में काफी अनियमितताएं हैं :

—अन्य राज्यों के क्रिकेट संघ के मुकाबले दिल्ली क्रिकेट संघ अपने से संबंधित क्रिकेट क्लबों के खिलाड़ियों को वोट डालने की अनुमति नहीं देता.

—कहा जाता है कि दिल्ली क्रिकेट संघ का एक गुप्त खाता है जिस की जानकारी श्री मेहरा व उन के भतीजे के सिवा किसी को नहीं है.

—चाचाभतीजे पर यह आरोप भी अकसर लगाया जाता है कि वे जब कभी क्रिकेट संघ के काम से कहीं जाते हैं तो उस का यात्रा बिल दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड दोनों से वसूलते हैं.

—यह भी कहा जाता है कि संघ पिछले कई सालों से खर्च और आय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाबकिताब नहीं रख रहा है.

दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ में फैली खराबियों की तरफ 12 अगस्त को संसद सदस्य कमलनाथ ने लोक सभा में इशारा किया. उन्होंने मांग की कि संघ की मान्यता को फौरन रद्द कर दिया जाए.

यही नहीं, उन्होंने 'दिल्ली राज्य क्रिकेट संघ' की भी स्थापना कर डाली. और कहा कि श्री मेहरा वाले संघ के स्थान पर उन के संघ को मान्यता दी जाए. इस संघ के अध्यक्ष बने —खुद कमलनाथ.

स्कूल के दिनों से संजय के नजदीकी दोस्त रहे, कलकत्तावासी कमलनाथ ने जनवरी, 1980 में मध्य प्रदेश से लोक सभा का चुनाव जीता और तब से दिल्ली में अपनी राजनीतिक गोटियां फिट करने के चक्कर में लगे हुए हैं. हो सकता है कि देहरादून के स्कूल में संजय गांधी के साथ उन्होंने क्रिकेट खेला हो, लेकिन हाल के सालों में क्रिकेट से उन का रिश्ता दर्शक से ज्यादा नहीं रहा है.

उन्हें यकायक क्रिकेट के सुधार में दिलचस्पी पैदा क्यों हो गई ? कहा जाता है कि लोक सभा सदस्य बनने से पहले किसी टेस्ट मैच के लिए बहुत ज्यादा पास देने की उन की मांग को श्री मेहरा ने नहीं माना था. उस खुंदक ने और क्रिकेट से होने वाली आमदनी ने उन्हें शायद दिल्ली व ज़िला क्रिकेट संघ के खिलाफ मुहिम छेड़ने को उकसाया.

लेकिन क्या कमलनाथ वाले संघ को दिल्ली क्रिकेट की जिम्मेदारियां सौंप कर इस समस्या को दूर किया जा सकता है? वैसे यदि ऐसा किया गया तो संघ पर कमलनाथ अपने चहेतों को बैठाने से क्यों चूकेंगे.

इस सारे झगड़े का इलाज वही है जो बिशनसिंह बेदी ने सुझाया है. उस का कहना है : "इस का एकमात्र हल यही है कि संघ को भंग कर के उस को नए सिरे से बनाया जाए."

इस में यह इंतजाम किया जा सकता है कि दिल्ली के क्रिकेट खिलाड़ियों को संघ का सदस्य बनाया जाए और उन्हें अपने अधिकारी चुनने को कहा जाए. ऐसी व्यवस्था भी की जानी जरूरी है कि एक बार चुने गए अधिकारी निर्धारित समय के बाद दोबारा चुनाव में खड़े न हो सकें.

श्री रामप्रकाश मेहरा ने कुछ समय पहले इस प्रतिनिधि से कहा था, "दिल्ली में टेस्ट मैच करना किसी बड़ी लड़ाई जीतने से कम नहीं होता. यहां का हर दूसरा आदमी अपने को अफलातून समझता है और चाहता है कि हम उस का ध्यान रखें."

इस से लगता है कि श्री मेहरा भी क्रिकेट की जिम्मेदारी उठातेउठाते थक गए हैं. बेहतर होगा कि वह अपनी पारी समाप्त कर नए लोगों को सामने आने का मौका दें. ●

जेल जाने का जाली प्रमाणपत्र

इंदिरा कांग्रेस की ओर से उन कार्यकर्ताओं को प्रमाणपत्र दिए जा रहे हैं, जो जनता शासन के दौरान श्रीमती इंदिरा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में जेल गए थे. इंदिरा कांग्रेस के लोगों को यह उम्मीद है कि इन प्रमाणपत्रों से भविष्य में काफी लाभ मिलेगा. यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में ये प्रमाणपत्र 500 से ले कर 1,000 रुपए में मिल रहे हैं.

पर कांग्रेस (इ) के एक नेता के अनुसार ये प्रमाणपत्र जाली हैं. क्योंकि कांग्रेस (इ) के परिपत्र के अनुसार इन प्रमाणपत्रों पर प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष के हस्ताक्षर नहीं हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमालय में प्रलयंकारी भूस्खलनों की कहानी

हिमालय की पांचवीं लड़ाई

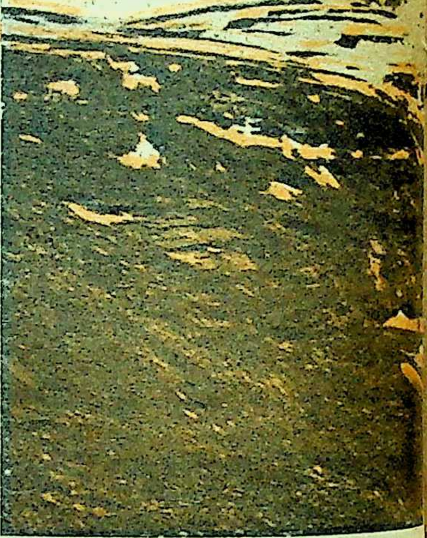

लेख सुंदरलाल बहुगुणा

अनादि काल से जो हिमालय भारत का उत्तर की ओर से प्रहरी रहा है, पिछले दस बरस में वहां एकदो नहीं पांचपांच लड़ाइयां लड़ी गई हैं. सब से बड़े आश्चर्य की बात यह है कि ये लड़ाइयां मनुष्यों के बीच नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच हुई हैं. इन में से अंतिम लड़ाई का स्थल, जिस का प्रभाव अभी तक महसूस किया जा रहा है, गंगा का उद्गम स्थल उत्तरकाशी जिला और भागीरथी का तट रहा है. यह लड़ाई अभी तक जारी है.

उत्तरकाशी से गंगोत्री जाते समय तप्त ऋषि कुंड के क्षेत्र गंगनाणी और डबराणी के बीच नौ सितंबर के भयंकर भूस्खलन के बाद पैदल यात्री नई बनी टूटी फुटी सड़क पर जान हथेली पर रख कर जा रहे हैं. इस पहाड़ पर दरारें पड़ी हुई हैं.

एक भीमकाय पाषाण शिला के किसी भी समय टूट कर गिरने का खतरा बना हुआ है, क्योंकि इस के नीचे की मिट्टी

हिमालय की यह लड़ाई आज भी जारी है और यदि समय रहते सरकार और हम आप सचेत न हुए तो इस के कई भयंकर परिणाम सामने आएंगे!

हट गई है, वही इसे टिकाए हुए थी. यदि यह चट्टान खिसक गई तो इस के नीचे से गुजरने वाले यात्रियों की मौत के अलावा अगस्त, 1978 की तरह भागीरथी का प्रवाह भी अवरुद्ध हो जाने का पूरा खतरा है. यदि पिछली बार की तरह पुनः झील बन गई और वह टूटी तो दूरदूर तक विनाश का महातांडव होगा.

इस दशक में हिमालय की ओर से होने वाले आक्रमण का पहला एहसास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून 1980 में ज्ञानसू (उत्तरकाशी) भूस्खलन के 24 ज्ञात मृतकों में से एक (सामने).

जुलाई, 1970 के चौथे सप्ताह में हुआ. जब ऋषिकेश बद्रीनाथ मार्ग पर बेलाकूची में अलकनंदा का प्रवाह रुक गया था. उस के साथ ही कई स्थानों पर एक साथ भूस्खलन हुआ. बेलाकूची के पड़ाव पर खड़ी मोटर गाड़ियां और लोगों में से कितने बह गए, इस का आज तक कोई हिसाब नहीं लगा पाया.

चमोली जिले में. अलकनंदा की सहायक नदी बिरही पर बना लगभग एक शताब्दी पुराना गोहन ताल मलबे से भर गया. अलकनंदा का तल कम से क म 15 फुट ऊंचा उठ गया. इस अनहोनी घटना का कारण बादल फटना कह कर टाल दिया गया, पर वास्तव में अलकनंदा और उस की सहायक नदियों के ऊपरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलागम क्षेत्रों के जंगलों की कटाई इस का मूल कारण है. सरकारी क्षेत्रों में इसे वैज्ञानिक वन प्रबंध के अंतर्गत वैज्ञानिक दोहन की संज्ञा दी जाती है.

प्रकृति ने पहाड़ों पर पेड़ों को भूक्षरण व भूस्खलन को रोकने और बरसात में होने वाली अत्यधिक वर्षा के पानी को धारण करने के लिए उगाया है. इस क्षेत्र की बिखरी हुई जनसंख्या की न्यूनतम अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जब प्रकृति की इस देन को तोड़ा जाए तो कुछ हद तक क्षम्य है, परंतु इस के विपरीत जब अपनी भोगलिप्सा को पूरा करने के लिए इस का नाश किया जाता है तो प्रकृति अपना सौम्य परोपकारी रूप छोड़ कर रौद्र रूप धारण कर लेती है.

बेलाकूची में यही हुआ था. कुछ सूझबूझ वाले समझदार लोगों ने इसे महसूस कर पेड़ों की कटाई रोकने की मांग की तो उन का उपहास उड़ाया गया.

हिमालय की तीसरी लड़ाई

सन 1970 के बाद कोई भी वर्ष ऐसा नहीं गया, जब हिमालय क्षेत्र में भूस्खलनों के कारण मौतें न हुई हों और खेत, सड़क, नहरों व मकानों के नष्ट होने से नुकसान न हुआ हो. परंतु हिमालय प्रदेश के लाहौल स्पीति क्षेत्र में जनवरी, 1977 में आए बर्फीले तूफान (हियाण) व भूकंप ने सब को चौंका डाला. भूस्खलन की तरह हिमस्खलन भी ऊंचाई के क्षेत्रों में भारी तबाही का कारण बन जाता है. लाहौल स्पीति की जनसंख्या बिखरी हुई है, इसलिए मौतें तो कम हुईं पर लोगों को अकथनीय विपत्तियों का सामना करना पड़ा. सरकार ने हेलीकाप्टरों की सहायता से राहत पहुंचाने का काम किया.

15 अगस्त, 1977 की रात को जब भारतीय सैनिक भारत—तिब्बत—नेपाल सीमा के तवाघाट पड़ाव में आजादी का उत्सव मना रहे थे, ऊपर खेला गांव से मिट्टीपत्थर का रेला भयंकर गर्जनतर्जन के साथ आया और देखतेदेखते बस्ती का एक भाग उस के नीचे दब गया. इस दुर्घटना में 44 जानें गईं. इन में 33 तो सैनिक ही थे. कई दिनों के प्रयास के बाद भी जब मृत सैनिकों के शव निकालने में सफलता नहीं मिली तो एक उच्चाधिकारी ने कहा, "मानवीय आक्रमण का मुकाबला करने के लिए हमारे पास सब साधन हैं, पर प्रकृति के इस आक्रमण के आगे हम अपनी हार स्वीकार करते हैं." मैं इसे हिमालय की तीसरी लड़ाई कहता हूं.

भागीरथी का रौद्र रूप

6 अगस्त, 1978 को उत्तरकाशी के लोगों ने देखा कि भारी वेग के साथ बहने वाली भागीरथी अचानक लुप्त हो गई है. कुछ देर बाद मालूम हुआ कि भागीरथी के सहायक नाले कनोड़िया गाड में हुए भारी भूस्खलन के कारण 45 किलोमीटर ऊपर जोती में भागीरथी का प्रवाह रुक गया है. करीब 14 घंटे बाद जब यह झील टूटी तो पवित्र भागीरथी खूंखार बनी हुई थी. उस में पेड़ और पत्थर तक बह रहे थे और वह अपने दोनों तटों को तोड़ती हुई, अपने आसपास का सब कुछ उदरस्थ करती हुई आगे बढ़ रही थी. पर यहीं इति नहीं थी. भूस्खलन का मूल तो सहायक नाले पर लगभग 5 किलोमीटर ऊपर 12 हजार फुट की ऊंचाई पर था, जहां दूसरी झील बनी हुई थी, जो 12 अगस्त को टूटी और पहले से भी अधिक तबाही का कारण बनी. कई दिनों तक ऊंचालाड़ का पहाड़ टूटता रहा और उत्तरकाशी के लोग किसी भी आशंका से भयभीत रहे. इस के कारण नदी का तल पहले की तुलना में तीन से ले कर 10 मीटर तक ऊंचा हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरकाशी की भागीरथी की घाटी अगस्त की प्रलयकारी बाढ़ और भूस्खलन के कारण बुरी तरह से क्षतविक्षत हो गई थी. मीलों तक इस क्षेत्र में सड़कों का नामोंनिशान नहीं रह गया था. निर्माणाधीन मनेरीभाली जल विद्युत परियोजना का काम ठप पड़ गया था. क्षति का अनुमान 30 करोड़ रुपए तक आंका गया था.

जानमाल का अधिक नुकसान

कुछ ही दिनों के बाद जिले की टौंस घाटी से भूस्खलनों की प्रलयलीला के समाचार आए. वहां पर मियां गाड और टिकोची क्षेत्र में जंगलों की कटाई के कारण भारी तबाही हुई. हिमाचल प्रदेश की रोहड़ तहसील में एक पूरा गांव दब गया. 25 अगस्त, 1978 को हिमाचल प्रदेश में नैनादेवी में भारी भूस्खलन हुआ. यह 150 मीटर लंबा था और इस से 143 मकान वहीं ध्वस्त हो गए. उस वर्ष भूस्खलनों में मरने वालों की संख्या, 40 लाख की जनसंख्या के हिमाचल प्रदेश में 272 रही. सन 1905 के कांगड़ा भूकंप में भी इतने लोग नहीं मरे थे.

सन 1979 की बरसात में चमोली जिले का समूचा कौंथा गांव भूस्खलन में दब गया. इस में 39 जानें गईं. इसी तरह की दुर्घटना में पिठौरागढ़ के शिशना गांव में 15 जानें गईं. यह स्थान सन 1977 के तबाही स्थल तवाघाट के ठीक ऊपर था.

इस वर्ष जिस समाचार ने सब को आश्चर्यचकित कर दिया है, वह है जून के चौथे सप्ताह में उत्तरकाशी जिले के मुख्यालय उत्तरकाशी के ज्ञानसू महल्ले के एक भाग का श्मशान बन जाना. रात को लगभग साढ़े दस बजे मूसलाधार वर्षा का पानी अपने साथ मिट्टी, पत्थर ले कर आया और उस के नीचे कई लोग दब गए. सरकारी आंकड़ों के अनुसार 24 जानें गईं, परंतु दो दिन बाद ऋषिकेश

9 सितंबर, 1980 को 10 मनुष्यों की बलि लेने वाला गंगनाणी और डबराणी के बीच का भूस्खलन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में गंगा में कई लाशें देखी गईं. अतएव इस में 40 तक जानें जाने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता. इसी वर्ष 29 जुलाई को हिमालय क्षेत्र में भूकंप के कारण पिठौरागढ़ जिले के धारचूला क्षेत्र व नेपाल में कई जानें गईं और हजारों मकान ध्वस्त हो गए.

पांचवीं लड़ाई का मोर्चा

डबराणी और गंगनाणी के बीच 9 सितंबर को हुआ दूसरा भूस्खलन हिमालय की पांचवीं लड़ाई का ही एक मोर्चा है. दोपहर को डेढ़ बजे उत्तरकाशी के जिलाधिकारी श्री गोपालदास मेहरोत्रा अन्य अधिकारियों के साथ हरसिल से उत्तरकाशी की ओर आते हुए कनोड़िया गाड के ठीक सामने उस स्थान पर पहुंचे, जहां से भागीरथी का सन 1978 में प्रवाह रुकने का स्थल 500 मीटर नीचे था. पहले दिन यहां थोड़ा भूस्खलन हुआ था और सार्वजनिक निर्माण विभाग के श्रमिक रास्ता बना रहे थे. जैसे ही यह दल वहां पहुंचा एक पेड़ हिलने लगा और देखते-देखते एक धमाके के साथ धरती कई फुट नीचे धंसती चली गई. उन्हें लगा जैसे धरती घूम रही हो. इस के बाद ही सैकड़ों टन की पाषाण शिलाएं टूटटूट कर नीचे आने लगीं. 10 लोग वहीं दब कर मर गए, जो बचे वे पत्थरों की आड़ में आ गए थे. दुर्घटना में घायल श्री बचनसिंह प्रंडोर और शिवसिंह के अनुसार: "हम चट्टानों के बीच फंसे लोगों की कराहें सुन सकते थे, परंतु उन्हें देख नहीं सकते थे. जब तक एक को बचाने के लिए शिवसिंह लपके ऊपर से एक बड़े पत्थर ने उस व्यक्ति की खोपड़ी चकनाचूर कर दी."

मनुष्य की मूर्खता का परिणाम

हिमालय में प्रकृति के ये प्रकोप प्राकृतिक प्रकोप नहीं हैं, बल्कि अपनी भोगलिप्सा को तृप्त करने के लिए हमारी सभ्यता द्वारा प्रकृति के साथ किए गए बलात्कार का दुष्परिणाम हैं. हिमालय में पहले भी इस प्रकार की दुर्घटनाएं हुईं पर ये बहुत कम होती थीं.

ज्ञात इतिहास के अनुसार ढ़ैणी का डांडा टूटने के कारण झाला (उत्तर-

अलकनंदा अवरोध का क्षेत्र गरुड़ गंगा के ऊपर पाखी गांव—जहां सन 1970 में तेजी से पहाड़ टूटा था.

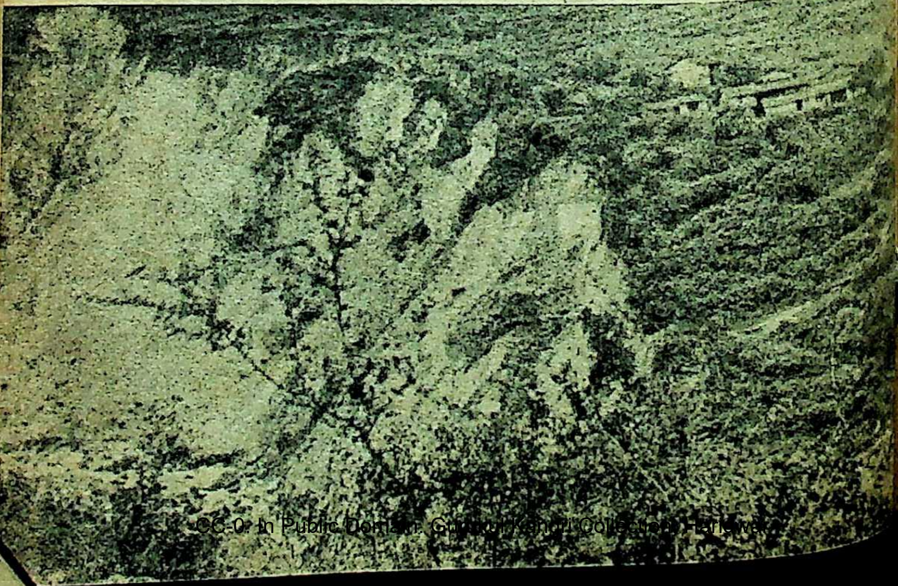

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

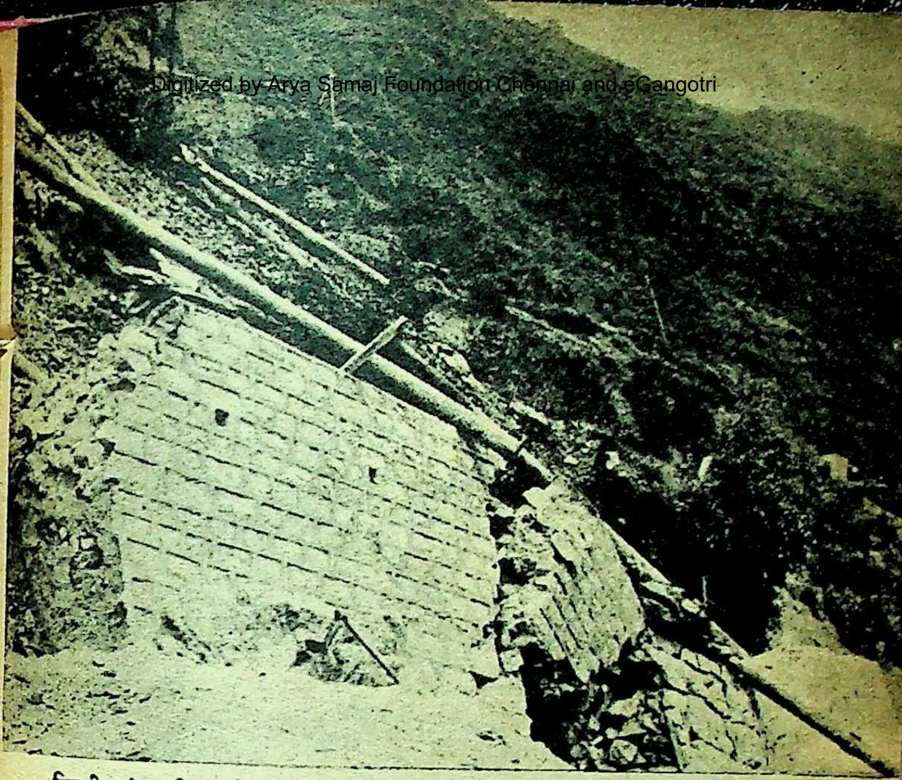

टिहरी बांध की बाईं व्यावर्तन सुरंग पर जुलाई के मध्य में हुआ भूस्खलन--बांध निर्माण के खिलाफ प्रकृति की चेतावनी.

काशी) में ढाई सौ वर्ष पहले भागीरथी का प्रवाह रुक गया था. झाला से जांगला तक के समतल क्षेत्र में एक बड़ी झील के अवशेष अब तक हैं. इस के नीचे दबे हुए 240 मंदिरों में से एक शिवमंदिर खुदाई में निकला है.

दूसरी दुर्घटना सन 1893 में बिरही नदी पर पहाड़ टूटने से गोहना ताल के बनने और टूटने की हुई थी. 80 करोड़ टन मलवा इस के साथ आया था, जिस से नदी का तल 350 मीटर तक भर गया था और पांच किलोमीटर लंबा तथा दो किलोमीटर चौड़ा ताल बन गया था.

सब से अधिक खतरनाक घटना

पर इन सब में सर्वाधिक हृदयद्रावक घटना सन 1880 में नैनीताल के एक बड़े होटल के भूस्खलन के नीचे 153 लोगों के दब जाने की हुई. उन दिनों गोरे साहब अपने सुखभोग के लिए इस विलास नगरी का निर्माण कर रहे थे. अत्यधिक खुदाई और इमारतों के निर्माण के कारण पहाड़ के अंदर पानी भर गया, जो भूस्खलन का कारण बना.

इस दशक में भूस्खलनों का कारण

इस दशक में हुए भूस्खलनों का कारण व्यापार के लिए पेड़ों की कटाई और उन का लुढ़कान है, जैसा कि ज्ञानसू के भूस्खलन के संबंध में उत्तर प्रदेश के चार विधायकों सर्वश्री विद्यासागर, शिवानंद नौटियाल, बलदेवसिंह आर्य और कुंवरसिंह नेगी ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया है. जहां पेड़ कटते हैं, धरती की बरसाती जल के धारण की क्षमता समाप्त हो जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ों पर खड़ा प्रत्येक हरा पेड़ बाढ़ और भूस्खलन के खिलाफ जीता-जागता प्रहरी है. सरकार, अफसर, ठेकेदार (अब सरकारी प्रतिष्ठान वन निगम भी) और उद्योगपति पर्वतीय जंगलों का तेजी से कटाई व लीसा निकाल कर दोहन कर रहे हैं. दूसरा कारण सड़कों का जाल है. इस जाल को बिछाने के लिए अंधाधुंध विस्फोटक सामग्री का उपयोग किया जा रहा है. डबराणी गंगनाणी के बीच 9 सितंबर को हुए भूस्खलन का तात्कालिक कारण वहां पर पिछले दो वर्षों से सड़क निर्माण के लिए इस क्षेत्र में काटे गए पेड़ भी हैं. ऊंचाई के क्षेत्रों में घुमन्तू पशुपालकों (गूजरों) द्वारा भैंसों की चराई इस का तीसरा कारण है.

हिमालय के प्रख्यात भूगर्भवेत्ता डाक्टर खड़गसिंह वल्दिया पांच वर्ष पूर्व यह चेतावनी दे चुके हैं कि हिमाचल प्रदेश में टौंस से ले कर उत्तर प्रदेश के पिठौरागढ़ जिले के धारचूला तक (काली नदी के किनारे) उच्च और मध्य हिमालय के संधि स्थल पर कमजोर पहाड़ों की एक श्रृंखला चली गई है, जिन में भूगर्भीय हलचलें हो रही हैं. सन 1970 से आज तक हुई हिमालय की प्राकृतिक लड़ाइयां इस पट्टी के क्षेत्र में हुई हैं.

"आज मुझे दस रुपए का फायदा हो गया. मेरे अगले दो दांत जो मुझे आप डाक्टर से तुड़वाने थे, कविता पाठ करते समय श्रोताओं ने मुफ्त में तोड़ दिए."

डाक्टर वल्दिया कहते हैं यहां पेड़ काटना और विस्फोटकों का उपयोग दुर्घटनाओं को न्यौता देना है. विकास की चकाचौंध से अंधी आंखें और अल्पजीवी अर्थव्यवस्था के त्वरित लाभ के शोरगुल से बहरे कान न इन स्पष्ट चेतावनियों को देख सकते हैं और न सुन सकते हैं. केवल सड़कों के निर्माण के लिए ही नहीं, इस क्षेत्र में टिहरी बांध जैसे विशाल बांध के निर्माण के लिए भी रातदिन विस्फोटकों के धमाके हो रहे हैं. टिहरी बांध की निर्माणाधीन बाईं व्यावर्तन सुरंग में इसी वर्ष हुआ भूस्खलन, जिस से एक करोड़ रुपए की क्षति हुई, इस के खिलाफ स्पष्ट चेतावनी थी. पेड़ों की कटाई को तेज करने के लिए विदेशी सहायता से खरीदी मशीनें सरकारी संगठन वन निगम के अंतर्गत कार्यरत हैं.

हिमालय के कोप को शांत कर यहां के लोगों और सारे देश को (क्योंकि हिमालय देश की अर्थनीति को प्रभावित करता है) सुख, शांति और समृद्धि की ओर ले जाने के लिए गांधीजी की 80 वर्षीय अंगरेज शिष्या सरला बहन के नेतृत्व में उत्तराखंड स्थित सर्वोदय परिवार ने एक योजना प्रस्तुत की है. उन्होंने इसे 'पहाड़ों में अस्तित्व का अधिकार पत्र' नाम दिया है. यह योजना योजना आयोग की फाइलों की शोभा बढ़ा रही है.

'अस्तित्व के अधिकार पत्र' योजना में कहा गया है : "पर्वतीय विकास की प्राथमिकताएं बदलो. सड़क, बांध आदि के तोड़फोड़ के कामों के बजाए युद्ध स्तर पर धरती के घावों को भरने के लिए फल, चारा, ईंधन, जैविक खाद और रेशम देने वाले पेड़ों को लगाओ." •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

जीत बुलंद हौंसले की

डाकुओं को पकड़वाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल कर 12 वर्षीय सतनारायण ने बड़े साहस का परिचय दिया.

22 सितंबर की रात को डाकू कन्नू उर्फ कानसिंह एवं उस के गिरोह ने मलारनाडूंगर से लगभग 12 किलोमीटर दूर मलारना चौड में प्रहलाद नाम के एक ग्रामीण के घर पर डाका डाला. डाकुओं एवं घर वालों के शोरगुल से आसपास के लोग जाग गए तो डाकू भागने लगे. उस समय आयुर्वेदिक हस्पताल के पास अपने घर के बाहर सतनारायण सो रहा था. डाकुओं की भगदड़ से उस की आंख खुल गई. वह सामने से भाग कर जा रहे कन्नू डाकू के पैरों से लिपट गया. अपने सरदार को छटपटाते देख भागते हुए डाकुओं ने गोली चलाई. बंदूक के छर्रे सतनारायण की पीठ, हाथ व जांघ में घुस गए. उस की कनपटी भी छिल गई, पर उस ने अपनी पकड़ में ढील नहीं आने दी. इतने में वहां गांव वालों की भीड़ भी आ पहुंची. भीड़ ने डाकू को पकड़ कर पेड़ से बांध दिया और पुलिस को सूचना भेज दी.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : जगदीशसिंह गहलोत)

✦

सफाई मजदूरों का त्याग

पिछले दिनों बरहामपुर नगरपालिका के सफाई मजदूर फटेपुराने कपड़े पहने अपनी वार्षिक वर्दियां लेने के लिए नगरपालिका कार्यालय पर जमा हुए. दशहरे के मौके पर उन्हें नई वर्दियां दी जाती हैं.

सफाई मजदूरों की नेता श्रीमती मुखिया ने आंखों में आंसू लिए रुंधे गले से कहा, "बाढ़ ने हमारे भाईबहनों का सब कुछ तबाह कर दिया है. इस बार हमें मिलने वाले सभी कपड़े उन के लिए भेज दिए जाएं. हम अपने फटेपुराने कपड़ों से ही एक साल और निकाल लेंगे."

सभी ने उन का समर्थन किया और वे सारे कपड़े बाढ़ पीड़ितों के लिए भेज दिए गए.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : राजकुमार)

✦

गायों ने बालक को बचाया

अंतगढ़ से 25 किलोमीटर दूर ग्राम मुडपार का एक 12 वर्षीय बालक जानवरों को चराने के बाद अपनी बहन के साथ संध्या के समय घर लौट रहा था. बस्ती के समीप ही जब एक गाय झाड़ियों की ओर चली गई तो बालक उस के पीछे दौड़ा. पर ज्यों ही वह झाड़ियों के पास गया, वहां छिपे पांच भालुओं में से एक ने उस पर हमला बोल दिया. भालू ने जैसे ही [illegible] कर [illegible] कुछ गायों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दौड़ कर भालू को सींग मारमार कर बालक को उस से आजाद कराया. सींगों की
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मार से भालू भाग गए. बाद में लड़के को गायों ने तब तक अपने घर में सुरक्षित रखा, जब तक कि बस्ती के लोग वहां नहीं पहुंच गए.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : संजयकुमार घेवरिया)

✦

धोबी की ईमानदारी

बेईमानी और भ्रष्टाचार के बोलबाले वाले इस युग में अभी भी ऐसे लोग हैं जो अपना कार्य ईमानदारी व निष्ठा से करते हैं. इस का एक उदाहरण मेरठ में उस समय देखने को मिला जब महल्ला शीश महल में रहने वाले एक धोबी साबू को धुलाई के लिए आए कपड़ों में सोने की एक अंगूठी और एक हथफूल मिला. उस ने तुरंत उन आभूषणों को उन कपड़ों के मालिक के घर पहुंचा दिया.

—दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़ (प्रेषक : रजनी माहेश्वरी)

✦

एक की सूझबूझ ने 200 को बचाया

गुजरात के बनासकांठा नगर में रहने वाले श्री डाह्या भाई पटेल ने लगभग 200 नागरिकों को मरने से बचा लिया.

श्री डाह्या भाई पटेल जब सब्जी खरीदने सब्जी मंडी पहुंचे तो उस ने देखा कि सब्जी मंडी विशाल के भवन में एक बड़ी दरार पड़ गई है और किसी भी क्षण यह दरार पूरे भवन को मलबे में बदल सकती है. इस से उन्होंने चीखचीख कर लोगों को निकलने की चेतावनी दी. लेकिन सब्जी मंडी के होहल्ले में किसी ने उन की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया.

तब उन्होंने पुलिस की मदद ली. पुलिस ने तत्काल सारा भवन खाली करवा लिया.

सचमुच कुछ ही देर बाद पूरी इमारत ढह गई.

—गांडीव, वाराणसी (प्रेषिका : ममता भटनागर)

✦

✦ बलात्कारी को स्वयं दंड दिया

लखनऊ जिले के अतगुरसरैया ग्राम की एक महिला ने बलात्कार का प्रयास करने वाले का लिंग काट कर उसे तत्काल दंड दे दिया.

वह विवाहिता महिला उस दिन घर में अकेली थी. बशीर नामक व्यक्ति उस के घर में घुस आया. रक्षा की कोई सूरत न देख कर महिला ने बशीर का प्रस्ताव स्वीकार करने का नाटक किया और जैसे ही बशीर निर्वस्त्र हुआ, महिला ने पास पड़े चाकू से उस का लिंग काट दिया.

—बिजनौर टाइम्स, बिजनौर (प्रेषक : सुधीर अग्रवाल) (सर्वोत्तम)

✦

ग्रामीणों ने पांच डकैत मारे

एटा जिले के सलीमपुर गांव में पिछले दिनों आधी रात में ग्रामीणों से हुई एक मुठभेड़ में पांच सशस्त्र डकैत मारे गए.

पुलिस की वर्दी पहने हुए डकैत दो मकानों को लूट कर भाग रहे थे कि गांव सुरक्षा समाज के सदस्यों ने उन्हें ललकारा. ग्रामीणों व डकैतों में जम कर संघर्ष हुआ. पुलिस ने गांव वालों को डाकुओं के जवाबी हमले से पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन दिया है.

—हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : कलीराम अग्रवाल) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतें हैं बेकार की बातें

शहर की गोष्ठिग्रों में चलती गांव की बातें,
कितनी भली लगती हैं ये बेपांव की बातें.

वातानुकूलित कमरों में बनी योजनाएं,
कहते कैसे फिर ग्राप उन्हें ख्वाब की बातें.

जुड़े ही नहीं जो लोग ग्राबोहवा से कभी,
बढ़चढ़ कर करते हैं वे ग्रलगाव की बातें.

मुफ़लिसी में लोग मरते रहेंगे बदस्तूर,
चलती रहेंगी यूं ही इनकलाब की बातें.

ग्राराम से करते हैं वे ग्रपने सभी काम,
नाहक करतें हैं ग्राप बेकार की बातें.

पैदा कीजिए कुछ माद्दा ग्रपने में वरना,
समझेंगे नहीं ये ऊंचे दिमाग की बातें.

—जीवन महता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पगला बाबू

कहानी • नरेंद्रशास्त्री

विकास खंड अधिकारी ने उदासीनता के साथ कहा, "अब कुछ नहीं हो सकता. आप नाहक परेशान हो रहे हैं."

"फिर भी आप चाहें तो..."

"ओह, आप इतने पुराने आदमी हो कर भी बात नहीं समझ पा रहे हैं. पगला बाबू स्वतंत्रता सेनानी भी तो नहीं थे."

"मैं समझता हूं, साहित्य और उद्यान के माध्यम से उन्होंने गांव की सेवा की है. इस नाते भी उन की स्मृति को सुरक्षित रखना..."

विकास खंड अधिकारी झुंझला कर बोले, "आप को समझाना बेकार है. बड़ी मुशकिल से तो सरकार ने नलकूप लगाने की अनुमति दी है. जमीन का नक्शा तैयार हो चुका है और आप हैं कि..."

"मैं अड़ंगा नहीं डाल रहा हूं. सिर्फ यही निवेदन करना चाहता हूं कि नलकूप उन के बाग से अलग लगाया जाए. पास ही ग्राम सभा की परती जमीन है न, वहीं."

"देखिए, अब तो उन का कोई वारिस भी नहीं रहा. यह तो उस बाग का सदुपयोग ही हो रहा है."

"लेकिन उस आदमी ने गांव में रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पगला बाबू ने अपने मन में गांव का एक सुंदर चित्र संजोया था. और गांव को वही रूप देने के लिए वह जीवन भर प्रयत्न करते रहे—केवल इस उम्मीद पर कि एक न एक दिन सभी लोग उन के इस प्रयास में सहयोग अवश्य देंगे...

कर अखबार निकालने की हिम्मत की थी. पेड़ लगाए थे. उस की स्मृति के लिए आप के पास क्या योजना है?"

कुछ क्षण तक विकास खंड अधिकारी चुप रहे. फिर बोले, "आप जैसे बुजुर्ग से मैं क्या कहूं. गांव के किसी भी आदमी को इस में कोई आपत्ति नहीं है. लेकिन आप हैं कि..."

मैं उठ कर कार्यालय से बाहर आ गया. उदास, थकाहारा सा. कोई भी तो मेरी बात नहीं समझता. ग्राम सभा के अध्यक्ष ने भी उस दिन हंसते हुए कहा था, "आप भी सठिया गए हैं, काका. इस समय लोगों को रोटी की पड़ी है. किताब पढ़ने का समय किस के पास है?"

मैं ने समझाया, "पगला बाबू की स्मृति सुरक्षित रखने से गांव की इज्जत ही बढ़ेगी, भाई."

मेरी बात उन के गले नहीं उतरी थी, उन्होंने व्यंग्य के साथ कहा, "पगला बाबू तो सचमुच के पागल थे. आप को तो सही ढंग से सोचना चाहिए. छोड़िए पुरानी बातों को."

रात को भोजन करने बैठा तब भी मन उदास था. बुढ़ापे में शायद किसी की उदासी जल्दी पहचान में आ जाती है.

पगलाबाबू को किसी की परवा न थी वह रोज ही एक पौधा लगाते और हर सप्ताह स्कूल की दीवार पर हस्तलिखित अखबार 'हालचाल' लगा देते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सावित्री मेरी भावनाओं को जानती थी. बोली, "आखिर आप [illegible] सोचते हैं? इस उमर में सिर खपाने से क्या लाभ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन मेरे ऊपर किसी की बात का असर नहीं हो रहा था. पत्नी के समझाने का भी असर नहीं हुआ. बिस्तर पर सोने गया, तब भी पिछली बातें याद आती रहीं. रहरह कर पगला बाबू याद आ जाते. कभी सोचता, मुझे इन बातों से क्या मतलब? मैं ही गांव की इज्जत के लिए क्यों मरूं? लेकिन यह विचार पल भर में ही गायब हो जाता और पगला बाबू की बातें याद आने लगतीं. अकसर वह कहा करते थे, "गांव की मिट्टी में मेरी मिट्टी मिल जाए, बस, यही मेरी मुक्ति है."

पगला बाबू का नाम बाबू विजयसिंह था. सन 1945 में वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए. कर के लौटे थे. मैं भी जेल से वापस आ कर प्राइमरी स्कूल में अध्यापक हो गया था.

उस शाम वह मेरे दरवाजे पर आए. आते ही मुझ से लिपट गए और बोले, "कहो, नेताजी."

"नेताजी?" उन के इस संबोधन से मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ.

"अखबारों में तुम्हारे जेल जाने की खबर पढ़ी थी न."

"और तुम क्या करते रहे?"

"बस, दोस्तों के साथ गुप्त रूप से अखबार निकालता रहा."

"फिर यह क्यों नहीं कहते कि जेल जाने से डरते रहे?"

इस के बाद बड़ी देर तक हम लोग हंसीमजाक करते रहे. उस समय तक मेरा विवाह हो चुका था. सावित्री ने भीतर से हलवा बना कर भेजा. हलवा देख कर वह हंसते हुए बोले, "तुम्हारे शरीर की चरबी का रहस्य आज ही जान पाया हूं."

तीनचार दिन तक गांव में रहने के बाद वह इलाहाबाद चले गए. मैं ने पूछा भी था कि अब वहां क्या करने जा रहे हो, लेकिन उन्होंने इस का कोई समुचित उत्तर नहीं दिया था.

एक दिन उन का लिफाफा मिला. मैं ने पत्र निकाल कर पढ़ा और स्तब्ध रह गया. पत्र में लिखा था: "यहां इलाहाबाद में मेरे साथ एक लड़की पढ़ती रही है. मैं उस से शादी का वादा कर चुका हूं. यह सब कैसे हो गया, कह नहीं सकता, शायद उस की कविताओं ने मुझे अपनी ओर खींच लिया है. सुनो, एक काम तुम्हें करना है. तुम मां के पास चले जाना और उन्हें इस शादी के लिए किसी तरह तैयार कर लेना. अड़चन सिर्फ इतनी ही है कि सरिता मेरी बिरादरी की नहीं है. मैं इन दिनों ऐसा महसूस करने लगा हूं कि यदि मेरे जीवन में सरिता नहीं आई तो मैं भीतर से टूट जाऊंगा."

कई दिनों तक विजय के पत्र को ले कर मैं परेशान रहा था. सावित्री मेरी समस्या सुन कर हंस पड़ी थी, "अच्छा हुआ आप की शादी घर वालों ने जल्दी कर दी थी."

मैं झुंझला गया था, "तुम्हें हंसी आ रही है और मैं परेशान हूं कि चाची के सामने कैसे यह बात रखूं."

मेरी बात सुन कर चाची के झुर्रियों भरे चेहरे पर आंसू की लकीरें झिलमिलाने लगी थीं, "तुम्हारे चाचा के न रहने पर मैं ने बहुत दुख सहा है, बेटा," चाची का कंठ अवरुद्ध हो गया था, "विजय को लिख दो, औरत की कोई जाति नहीं होती. तुम्हारी मां इस शादी के लिए तैयार है."

मैं ने सारी स्थिति समझाते हुए विजय को एक लंबा पत्र लिख दिया कि चाची उस के बिना बेचैन हैं. सारी बातें तय कर के जल्दी चला आए.

फिर तीन माह तक कोई उत्तर नहीं मिला और एक रात किसी ने आ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

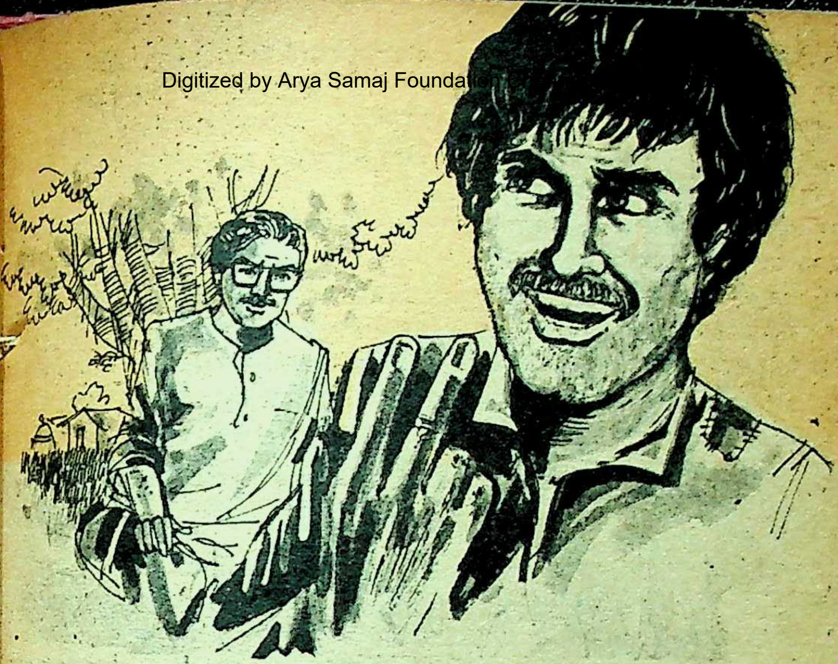

मैं ने आश्चर्यचकित हो कर पूछा, "हस्तलिखित अखबार?" तो पगला बाबू मुसकरा कर बोले, "हां, दो ही प्रतियां तो होंगी. एक मेरे लिए और एक स्कूल के लिए."

बताया कि चाची की हालत खराब है.

मेरे पहुंचने से पहले ही सब कुछ खत्म हो चुका था. गांव वालों ने उस दिन पहली बार दिल का दौरा नाम की बीमारी का नाम सुना था.

तार पा कर विजय बाबू आ गए थे. पंदरह दिनों तक कर्मकांडों के चलते वह गांव में रुके रहे. फिर घर में ताला लगा कर चले गए. मुझ से भेंट तक नहीं की.

महीने भर बाद मुझे एक पत्र मिला. भेजने वाले विजय बाबू ही थे. पत्र बहुत संक्षिप्त था : "सरिता शादी कर के मेरे साथ गांव में नहीं रह सकती. और मैं उस के साथ शादी कर के शहर में नहीं रह सकता. समझ लो, यह शादी टूट चुकी है और मैं कुछ दिनों तक निरुद्देश्य भ्रमण करने के लिए आज ही गाड़ी पकड़ रहा हूं. पत्र का जवाब मत देना, क्योंकि इन दिनों मैं किसी निश्चित स्थान पर नहीं रहूंगा."

समय पंख लगा कर उड़ता रहा. आजादी आई. गांव के पुराने आदर्श टूट कर बिखरने लगे. पेड़ काट डाले गए. ताड़ीशराब की दुकानें खुल गईं. जमींदारी गई. ठेकेदारी शुरू हो गई. नए नेता पैदा हुए और सफेदपोश दलाल अफसरों की जी हजूरी में लग गए. आजादी की लड़ाई के समय देखा गया सपना कच्चे धागे की तरह टूट गया.

मैं जैसे इन बातों से अलगथलग अपने पारिवारिक सुखदुख में लगा रहा. बच्चे बड़े हो रहे थे और खेतीबारी का झंझट अलग से था.

अचानक एक दिन विजय का आगमन हुआ. मेरे हलवाहे ने आ कर कहा, "उन्हें आए तो पांच दिन हो गए हैं."

"पांच दिन हो गए!" मैं चौंक गया. ओह, मैं भी कितना कृतघ्न हूं. चाची के न रहने पर उन के महल्ले की ओर भी नहीं जा सका था. अब किस मुंह से विजय के सामने जाऊं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर मैं विजय के घर के सामने जा कर खड़ा हो गया. लेकिन यह क्या? कहां है वह घर? मेरे सामने एक खंडहर खड़ा था. महल्ले के लोग अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए उसे पूरी तरह तोड़ चुके थे. दरवाजे, खपरैल, खंभे, बांस, बरतन कुछ भी तो नहीं रहा था.

मैं उस खंडहरनुमा घर में घुस गया. बचपन की बहुत सी यादें ताजा हो उठीं. मैं ने चारों ओर नजर दौड़ाई, पर विजय बाबू दिखलाई न पड़े. मैं निराश हो कर बाहर निकल आया. सड़क पर रंगीला पहलवान मिल गया. बोला, "विजय बाबू को ढूंढ़ रहे हैं न? कुछ न पूछिए, मास्टर साहब! ज्यादा पढ़लिख जाने से भी दिमाग गड़बड़ा जाता है."

"लेकिन वह हैं कहां?"

"दो दिन तक तो इस टूटेफूटे मकान में चुपचाप रोते रहे. अब अपने कुएं वाले खेत पर रहते हैं."

एक एकड़ जमीन, उत्तरी मेंड़ पर पूर्वजों का पुराना कुआं. बस, यही संपत्ति बच गई थी विजय बाबू के पास. चार एकड़ जमीन तो उन की पढ़ाई और घर खर्च के चलते ही बिक चुकी थी.

दोपहर हो चुकी थी. दूर कहीं किसी पेड़ पर बैठी कोयल राग अलाप रही थी. मैं उन के खेत की पश्चिमी मेंड़ पर जा कर खड़ा हो गया और चारों ओर नजरें दौड़ा कर विजय बाबू को तलाशने लगा. लेकिन वह दिखाई न पड़े. लौटने की ही सोच रहा था कि तभी उन की आवाज कानों से आ कर टकराई, "मैं आ रहा हूं, अभी जाना नहीं."

आवाज को लक्ष्य करती हुई मेरी आंखें पक्के कुएं की ओर चली गईं. वहां एक पुराना जामुन का पेड़ था, जिस पर से विजय बाबू उतर रहे थे. हद हो गई. उन्हें पेड़ पर चढ़ने की क्या जरूरत आ पड़ी? क्या सचमुच उन का दिमाग खराब हो गया है? मैं जल्दीजल्दी कदम बढ़ाता उन के बिलकुल निकट तक जा पहुंचा.

वह मुझे अपलक देखने लगे थे. पता नहीं क्यों, मैं उन की आंखों की ओर देखते ही भीतर से बहुत भावुक हो आया. क्या हो गया है विजय को? मन के टूटने से क्या शरीर इतना टूट जाता है? कहां गया विजय का चुस्त और आकर्षक व्यक्तित्व? चुंबकीय ताकत रखने वाली वे बड़ीबड़ी आंखें कहां रख आया है यह आदमी? साधारण कुरतापाजामा पहने उस दुबलेपतले अधेड़ उम्र के आदमी को देख कर मुझे सहसा विश्वास नहीं हुआ कि मेरे सामने विजय बाबू ही खड़े हैं.

"मैं वही हूं, भाई, तुम्हारा विजय."

ओह! आवाज तो वही है, जो मेरे कानों में अकसर गूंजती रही है. एक वजनदार और असरदार आवाज. अब मैं अपने ऊपर अंकुश न रख सका. मेरी बांहें अपने आप खुल गईं और विजय को अपनी बांहों में भर लिया. चाहता था, पूछूं, घर क्यों नहीं आए? लेकिन चाह कर भी कुछ बोल नहीं पाया. शायद मैं रो रहा था. शायद वह भी रो रहे थे. हम दोनों रो रहे थे, एकदूसरे के कंधों से लगे हुए.

जामुन की छाया में बैठते ही वह बोले, "मुझे अब इसी खेत पर रहना है. यहां एक लहलहाता हुआ बगीचा लगाऊंगा. मेरे चारों ओर फलों से लदे पेड़ होंगे और फूलों की कतारें होंगी. जामुन के नीचे मेरी झोंपड़ी रहेगी और यहीं से हस्तलिखित अखबार निकालूंगा."

"आज के युग में हाथ से लिखा अखबार भला क्या अर्थ रखता है?" मैं जैसे कुछ और पूछना भूल गया था.

वह हंस पड़े, "सिर्फ दो प्रतियां ही तो निकालनी हैं. एक मेरी फाइल में रहेगी और दूसरी प्रति प्राइमरी स्कूल की दीवार पर. लोग वहीं पढ़ लिया करेंगे."

मुझे लगा, वाकई विजय बाबू के दिमाग का कोई यंत्र ढीला हो गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेवकूफी मत करो, घर चलो. वहीं रह कर जो करना हो करो," मैं ने कहा.

लेकिन उन के हठ के आगे मेरी एक न चली. वह मेरे साथ रहने को तैयार न हुए और मैं क्षुब्ध हो कर वापस लौट आया. धीरेधीरे लोगों ने उन्हें पगला बाबू कहना शुरू किया और आश्चर्य की बात थी कि विजयसिंह ने सहर्ष 'पगला बाबू' उपनाम को स्वीकार भी कर लिया.

उस दिन प्राइमरी स्कूल की दीवार पर 'हालचाल' अंक देख कर लोग दंग रह गए. संपादक की जगह 'पगला बाबू' लिखा था. सुंदर, सुडौल अक्षरों में गांव के कई समाचार लिखे हुए थे. कुछ उपदेशात्मक वाक्य भी थे. संपादकीय टिप्पणी में लोगों को बाग लगाने का आह्वान किया गया था.

गांव वाले उसे पढ़ते, फिर हंसी उड़ाते हुए चले जाते, "बेचारे का दिमाग खराब हो गया है."

और उधर विजयसिंह का बगीचा भी तैयार हो रहा था. शीशम, बबूल, नीम, आम, केला, अनार, नींबू, पपीते और न जाने कितने प्रकार के पेड़ तेजी से पनप रहे थे. भरी दोपहरी में उन का कठिन श्रम देख कर गांव वाले दांतों तले उंगली दबा लेते, "जरूर किसी प्रेत की सवारी रहती है, पगला बाबू पर. नहीं तो भला कोई आदमी अकेले इतनी मेहनत कर सकता है!"

'हालचाल' हफ्ते में दो दिन प्राइमरी स्कूल की दीवार पर चिपका हुआ दिखलाई देता और उधर कोई न कोई पौधा रोज ही कुएं वाले खेत में लगा दिया जाता. पगला बाबू बोलते कम थे. बस दिन भर बीड़ी फूंकते हुए बाग में काम करते रहते और रात भर लालटेन की रोशनी में न जाने क्याक्या पढ़तेलिखते रहते. उन की पूरी दुनिया जामुन के पेड़ के नीचे बनी झोंपड़ी में सिमट गई थी. गांव वाले कहते, "पगला बाबू तो कभी सोते ही नहीं."

एक दिन तो अद्‌भुत तमाशा हो गया. प्राइमरी स्कूल के सामने वाले मैदान में ढेर सारी किताबें और पत्रिकाएं उन्होंने करीने से सजा कर रख दीं और बीच में खड़े हो कर चिल्लाने लगे, "फल लगाओ और घर में किताबें सजाओ. अपना उद्धार अपने आप करो. ऐ गांव वालो, पगला बाबू की बात मानो."

लेकिन किसी ने उन की पुस्तक प्रदर्शनी को गंभीरता से नहीं देखा. सब खड़ेखड़े हंसते रहे. कुछ मनचले युवकों ने उन की किताबें उठा लीं और चलते बने. छोटे बच्चे रंगीन पत्रिकाओं के चित्र नोचने लगे. किसी ने उन की कोई मदद नहीं की और मैं भी अपने घर चुपचाप बैठा रहा. सुनने में आया कि अपनी पत्रिकाओं और पुस्तकों की दुर्गति देख पगला बाबू चीखचीख कर सब को गालियां देने लगे थे और बाद में रोने लगे थे. पता नहीं, उस रात कितनी वेदना ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर अपनी झोंपडी में पड़े रहे होंगे वह.

बाद के दिनों में उन की डायरी का एक अंश मुझे पढ़ने को मिला और लगा, गांव के किसी भी आदमी ने उन्हें नहीं पहचाना, मैं ने भी नहीं. डायरी में लिखा था : "मैं चाहता हूं कि यहां के लोगों में सांस्कृतिक चेतना जागे. लोग फूलों और फलों से प्यार करें. अपनी किताबें पढ़ें. गांव में अखबार और पत्रिकाएं मंगाई जाएं."

उन की डायरी का यह पृष्ठ मुझे भीतर तक आहत कर गया.

सावन की अंधेरी रात थी. शाम से ही वातावरण भराभरा सा था. कई दिनों से वर्षा हो रही थी. पर उस रात की आंधी ने सब को जैसे आतंकित कर के रख दिया. आंधी का वेग इतना तेज था कि सारी प्रकृति फुंफकारती हुई सी प्रतीत होती थी, जैसे सैकड़ों वायुयान एक साथ आकाश में तीव्र ध्वनि करते हुए उड़ रहे हों. लगभग 45 मिनट तक यह काली आंधी चलती रही और उस के बाद मूसलधार वर्षा शुरू हो गई.

सुबह आसमान साफ था. सूरज की किरणें खेतों में जमे पानी पर पड़ रही थीं, लेकिन गांव में हाहाकार मचा हुआ था. कुएं के पास वाला जामुन का पेड़ जड़ से उखड़ कर झोंपड़ी पर गिर पड़ा था और पेड़ के मोटे तने के नीचे पड़ा था पगला बाबू का शव.

पगला बाबू के न रहने पर काफी दिनों तक मैं अपराध भावना से ग्रसित रहा. गांव वालों ने उन के बाग को उजाड़ डाला. उस रात के तूफानी थपेड़ों के बाद उन की कुछ डायरियां और पुस्तकें बच गई थीं, जिन्हें मैं उठा लाया. लेकिन उन की स्मृति को सुरक्षित रखने का सारा प्रयास निष्फल हो गया. अब उस उजड़े बाग में सरकारी नलकूप के साथ कर्मचारियों के रहने के लिए कमरे भी बनाए जा रहे थे.

नलकूप का उद्घाटन करते हुए राज्य के सिंचाई मंत्री ने कहा, "हम गांधीजी का सपना साकार कर के रहेंगे. यह नया नलकूप आप के लिए सुख का संदेश ले कर आया है."

मैं भी भीड़ में बैठा था. अचानक मुझे पगला बाबू की याद आ गई और न जाने किस भावना के कारण मैं चिल्ला पड़ा, "पगला बाबू, जिंदाबाद."

आसपास बैठे लोग हंस पड़े. एक युवक ने व्यंग्य किया, "एक पागल गया, अब यह दूसरा पैदा हो रहा है." मैं कुछ कहता, तभी पुलिस का एक जवान आ गया और एक तरह से उस ने मुझे घसीटते हुए भीड़ से बाहर कर दिया और बोला, "अबे, बुड्ढा हो गया है पर तमीज नहीं आई."

भीड़ के बाहर मैं अकेला खड़ा था—गुस्से से भरा हुआ. और फिर अनायास मेरी आंखें छलछला आईं. ●

पहले **चंपक** फिर आइसक्रीम या चाकलेट

चंपक आइसक्रीम या चाकलेट से बहुत सस्ता और बहुत अधिक गुणकारी है. ज्यादा मीठा खिलाकर बच्चे का स्वास्थ्य न बिगाड़िए— उसे चंपक पढ़ने को दीजिए और उस का दिमाग बढ़ाइए.

नन्हेमुन्नों को मीठी सीख देने वाली पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

♦ एक बार हमारे इतिहास के अध्यापक ने एक बहुप्रचलित वाक्य दोहराया, "नियमित जीवन आरोग्य रहने का सब से अच्छा उपाय है."

इस पर एक छात्र ने कहा, "श्रीमान, आज का युग बहुत आगे बढ़ गया है. आज तो यह मान्यता है कि एक ही प्रकार की दिनचर्या रोजरोज दोहराने से जीवन का विकास रुक जाता है. आज तो जीवन के हर कार्य में बदलाव और तेजी लाने की जरूरत है."

इस पर अध्यापक ने कहा, "पानी की ऊर्जा को अगर बांध बना कर रोका जाए तो उस से बिजली पैदा की जा सकती है. तुम्हारी शक्ति भी अगर व्यवस्थित रूप से किसी कार्य में लगाई जाए तभी वह उपयोगी हो सकती है. शक्ति को व्यवस्थित, संगठित और नियंत्रित कर के कोई भी काम किया जा सकता है."

यह सुन कर मुझे लगा अगर अध्यापक एवं अभिभावक युवा शक्ति को इसी प्रकार सही दिशा दें तो युवावर्ग विध्वंसात्मक कार्यों में लगने के बजाए अपने एवं समाज के हित में रचनात्मक कार्य कर सकता है. ——पीयूष जैन **(सर्वोत्तम)**

दिन के दो बजे का समय था. बहुत तेज धूप पड़ रही थी. पर शायद मेरे दोस्त को गरमी नहीं लग रही थी. वह परीक्षा भवन में निरीक्षक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए मोटी बनियान पहने बैठा था.

परीक्षा चालू होने के कुछ देर बाद छात्रों की जेबों की तलाशी ली जाने लगी. किसी भी छात्र के पास कोई फर्रा या कुंजी नहीं मिली. जब मेरे दोस्त की जेबों की तलाशी ली गई तो उस की जेब से आठ तह वाली एक चिट निकली. निरीक्षक ने उसे फर्रा समझ कर मुसकराते हुए खोला. पर उस कागज को पढ़ कर उस निरीक्षक का चेहरा उतर गया. उस पर लिखा था, "अप्रैल फूल." ——**राजेश सूर्यवंशी**

एम. काम. करते ही अपने ही कालिज में मेरी प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति हो गई. उस समय हमारे कालिज में विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के लिए अलगअलग साइकिल स्टैंड थे. नियुक्ति के बाद पहले दिन जैसे ही मैं अपनी साइकिल प्राध्यापकों के साइकिल स्टैंड पर रखने लगा तो चौकीदार ने चिल्ला कर कहा, "यह लड़कों के लिए नहीं है. अपनी साइकिल दूसरे स्टैंड पर रखो."

मैं ने कहा, "बाबा, मैं यहां प्राध्यापक हूं, और आज से ही आया हूं."

"तुम प्राध्यापक नहीं हो, यहां अपनी साइकिल मत रखो," चौकीदार बोला.

विवश हो कर मुझे वहां से अपनी साइकिल हटा कर लड़कों के साइकिल स्टैंड पर रखनी पड़ी. पर असलियत जान कर वह बहुत शर्मिंदा हुआ. ——[illegible] ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.

प्रमोद भटनागर   मूल्य : 3.00

कार में हत्या :

कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?

जनमित्र   मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :

देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता   मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :

इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र   मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी द्वारा.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार पत्र

लेख • कस्तूरचंद जैन

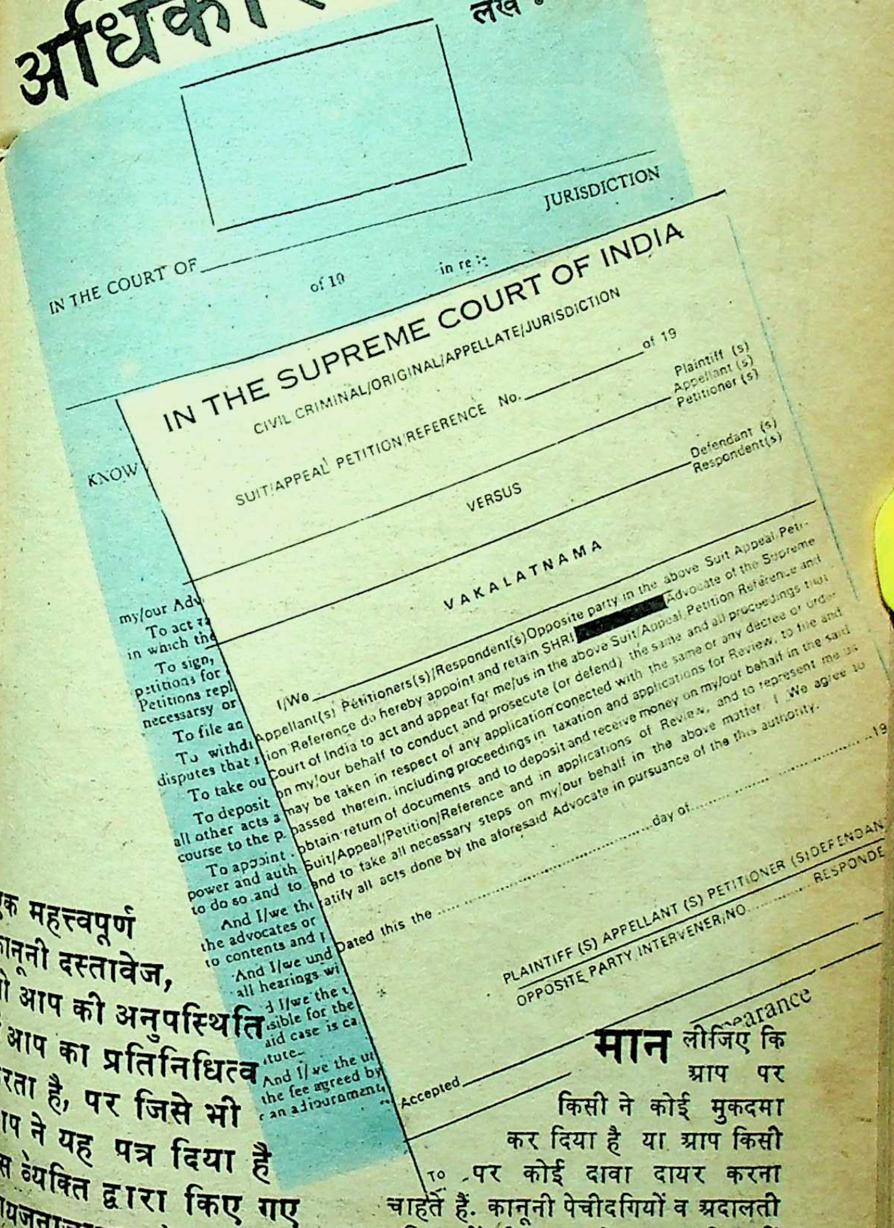

एक महत्त्वपूर्ण कानूनी दस्तावेज, जो आप की अनुपस्थिति में आप का प्रतिनिधित्व करता है, पर जिसे भी आप ने यह पत्र दिया है उस व्यक्ति द्वारा किए गए जायजनाजायज फैसलों के लिए उत्तरदायी आप ही होते हैं.

मान लीजिए कि आप पर किसी ने कोई मुकदमा कर दिया है या आप किसी पर कोई दावा दायर करना चाहते हैं. कानूनी पेचीदगियों व अदालती प्रक्रियाओं की आप को जानकारी नहीं है. इसलिए चाहे अदालत में आप स्वयं भी क्यों न उपस्थित हों, आप अपने साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी ओर से एक ऐसे व्यक्ति को भी (जैसे वकील) खड़ा करना पसंद करेंगे जो अदालती कामकाज से परिचित हो, गवाहों के बयान करवा सके, उन से जिरह कर सके तथा अदालत में बहस कर सके. इस प्रकार के कामों को करने का अधिकार देने वाले पत्र को अधिकार पत्र या मुख्तारनामा कहते हैं.

एक और परिस्थिति की भी कल्पना की जा सकती है. किसी पूर्व निश्चित समय पर आप को किसी कार्यालय में पेश हो कर कोई बयान देना है या किन्हीं दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने हैं. पर परिस्थितियां कुछ ऐसी बन गई हैं कि आप वहां स्वयं नहीं जा सकते. कानून आप की मजबूरी को स्वीकार करता है और आप को छूट देता है कि आप अपने एवज में अपने किसी विश्वसनीय सहयोगी को आवश्यक अधिकार पत्र दे कर भेज दें. अधिकार पत्र या मुख्तारनामे के अंतर्गत आप के प्रतिनिधि द्वारा किए या कराए गए सब कार्यों का कानूनी वजन ठीक वैसा ही होता है, जैसे वे सब कार्य आप ने स्वयं उपस्थित हो कर किए हैं या निर्देश दे कर कराए हैं.

मुख्तारनामा भी एक कानूनी दस्तावेज है. इसलिए यह जरूरी है कि उस पर प्राधिकारी व्यक्ति यानी अधिकार प्रदान करने वाले के हस्ताक्षर सप्रमाणित हों जिस से भविष्य में कोई अपने हस्ताक्षर से इनकार कर अधि-

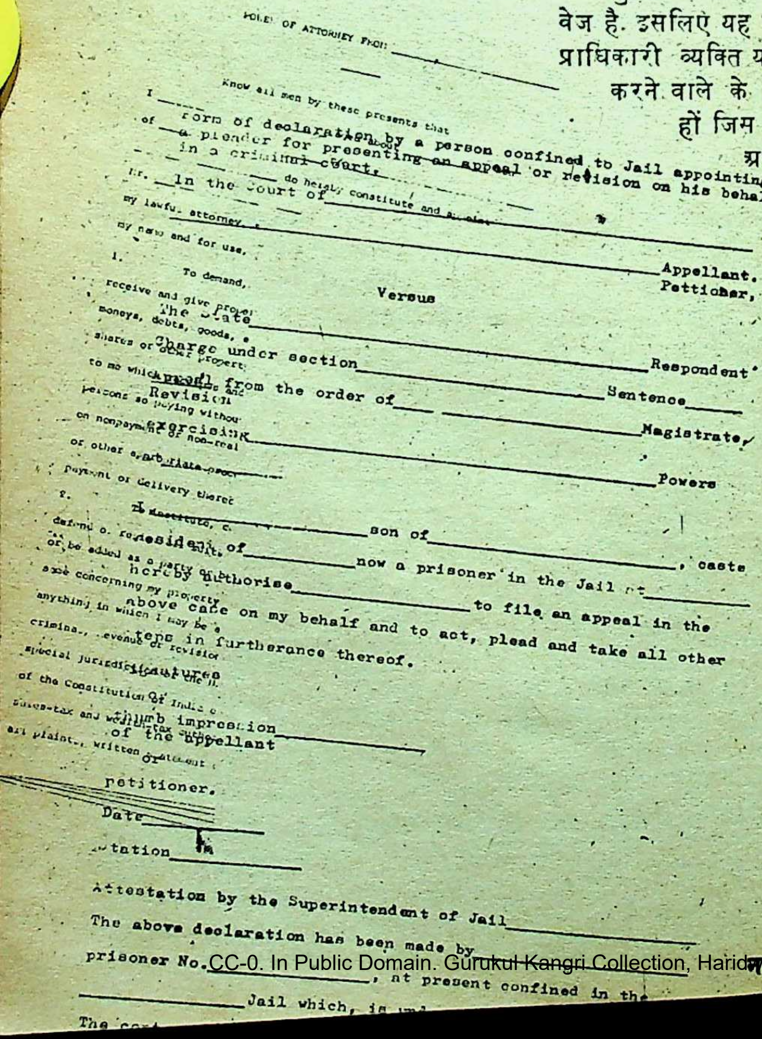

पावर आफ एटार्नी अधिकार पत्र के दो नमूने : किसी के भी नाम इसे जारी करने से पूर्व उस व्यक्ति के विषय में पूर्ण जानकारी व विश्वसनीयता का पता अवश्य लगा लें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार पत्र को फर्जी न कह सके. यह तसदीक किसी मजिस्ट्रेट से या नोटेरी पब्लिक से कराई जा सकती है, या फिर अधिकार पत्र को दस्तावेजों के रजिस्ट्रार के यहां पंजीकृत करा कर की जा सकती है. अचल संपत्ति के मामलों में पंजीबद्ध अधिकार पत्र सर्वोत्तम होता है. कारण सौ वर्ष बाद भी उस की सप्रमाणित प्रतिलिपि हासिल हो सकती है तथा उस को साबित किया जा सकता है.

अधिकार पत्रों की किस्में

अधिकार पत्रों को तीन किस्मों में रखा जा सकता है : (1) वकालतनामा, (2) विशेष अधिकार पत्र (मुख्तारनामा खास), तथा (3) साधारण अधिकार पत्र (मुख्तारनामा आम). सभी अधिकार पत्रों पर इन की विशेषता के अनुरूप स्टैंप ड्यूटी लगती है. क्योंकि वकालतनामा एक मान्यताप्राप्त वकील को ही दिया जा सकता है, इसलिए इस की औपचारिकताएं सब से सरल व कम होती हैं.

विशेष अधिकार पत्र वह होता है जो किसी कार्य विशेष को पूरा करने के लिए ही दिया जाता है. जैसे ही वह कार्य पूरा हो जाता है, उस मुख्तारनामे की वैधता अपने आप समाप्त हो जाती है. मान लीजिए, आप ने एक मुकदमे की पैरवी के लिए किसी को अपना मुख्तार नियुक्त किया या अपनी कोई संपत्ति बेचने के लिए अपने लड़के को अधिकार दिया. जैसे ही मुकदमा समाप्त हो जाता है या संपत्ति बिक जाती है, वह अधिकार पत्र निरर्थक हो जाता है.

साधारण अधिकार पत्र या मुख्तारनामा आम के अंतर्गत आप का प्रतिनिधि तब तक वे सारे काम करता रहेगा, जब तक आप उस के अधिकार वापस नहीं ले लेते. मान लीजिए, आप शेयर आदि खरीदते व बेचते रहते हैं और इस काम के लिए आप ने अपने एक कर्मचारी को अधिकार पत्र दे रखा है. आप का वह प्रतिनिधि, जब तक आप उस के अधिकार पत्र को रद्द नहीं करते, बारबार आप के नाम से शेयर खरीद व बेच सकता है.

एक ही अधिकार पत्र में आप उसे विभिन्न काम करने का अधिकार दे सकते हैं. वह शेयरों की खरीदफरोख्त भी कर सकता है, अचल संपत्ति की खरीद फरोख्त, उसे किराए पर देने, किराए की वसूली और मकान को खाली कराने के काम भी कर सकता है. किसी भी मुकदमे की पैरवी व बचाव भी कर सकता है. आप के बैंक खाते से रकम निकाल सकता है. वह वे सब कार्य कर सकता है जिन का आप ने उसे अधिकार दिया है. एक अधिकार पत्र द्वारा एक से अधिक व्यक्तियों को प्रतिनिधि नियुक्त किया जा सकता है.

अधिकार पत्र रद्द हो सकता है

दिल्ली में एक अधिकार पत्र द्वारा पांच तक मुख्तार नियुक्त किए जा सकते हैं. आप के निर्देशानुसार उन में से कोई भी एक अकेला भी काम कर सकता है या एक से अधिक व्यक्ति सम्मिलित रूप से काम को अंजाम दे सकते हैं. चाहें तो आप अपने प्रतिनिधि को अपनी ओर से काम को पूरा कराने के लिए उप प्रतिनिधि भी नियुक्त करने का अधिकार दे सकते हैं.

अधिकार पत्र रद्द करने के लिए आप मुख्तारनामा वापस ले कर मौखिक रूप से अपने प्रतिनिधि को बरखास्त कर सकते हैं, उसे लिखित नोटिस दे कर भी या किसी अच्छे समाचार पत्र में विज्ञापन प्रकाशित करवा कर भी उस को दिए अधिकारों को समाप्त कर सकते हैं. पर अधिकार पत्र वापस ले कर विज्ञापन प्रकाशित कराना सब से अच्छा तरीका है. प्राधिकारी या प्रतिनिधि की मृत्यु होते ही अधिकार पत्र भी रद्द हो जाता है.

यहां एक नई किस्म के अधिकार पत्र के बारे में भी [illegible] होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :

संपादकीय विभाग

मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055.

वह है अटूट अधिकार पत्र या इरिवोकेबल मुख्तारनामा. इस प्रकार के अधिकार पत्र की ईजाद महायुद्ध के दौरान इंपोर्ट (आयात) लाइसेंस आदि की गैरकानूनी बिक्री के लिए हुई थी. पर दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा पट्टे पर बेची गई जमीनों व मकानों की बिक्री पर पाबंदी लगा दिए जाने के कारण कुछ चालाक व्यक्तियों ने अपना स्वार्थसिद्ध करने के लिए इसे पुनर्जीवित किया है.

इस अधिकार पत्र का कानून में कोई अस्तित्व नहीं है, पर इस का चलन इतना अधिक हो गया है कि आज यदि आप शुभेच्छु होने के नाते किसी को सत्परामर्श देने की गलती कर बैठें कि कानून में अटूट मुख्तारनामा नामक कोई चिड़िया नहीं होती तो वह आप की अक्ली पर तरस खा कर आप से कहेगा, "तब आप की राय में ये सैकड़ों व्यक्ति जो रोज अहस्तांतरणीय जायदाद की खरीदफरोख्त कर रहे हैं, मूर्ख हैं?" तब आप को सिवा चुप रह जाने के और कोई चारा नहीं रहेगा. उस को यह बताना बेकार है कि जिस खिलौने से एक बालक को बहलाया जा सकता है, उसी खिलौने से सैकड़ों बालकों को भी फुसलाया जा सकता है.

प्राधिकारी व प्रतिनिधि का कानूनी रिश्ता एक स्वामी व सेवक से अधिक नहीं होता. यह दूसरी बात है कि कोई सेवक वेतनभोगी होता है, कोई शुल्क ले कर काम करता है और कोई केवल स्नेहवश. पर भारतीय कानून के अंतर्गत अधिकारी को अपने कर्मचारी या सेवक को हटाने का अधिकार उस को नियुक्त करने के अधिकार में ही निहित है. अतः 19 अगस्त, 1980 को ही सर्वोच्च न्यायालय की एक पीठ ने तमिलनाडु सरकार को मद्रास उच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध अपील करने की विशेष अनुमति देते हुए इस सिद्धांत का समर्थन किया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद अपनी अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति से कहा, "मेरे पास 5,000 मीटर की दौड़ में जीता हुआ स्वर्ण पदक, ऊंची कूद का रजत पदक, हाकी के खेल में जीता हुआ कप तथा कुश्ती में जीती हुई गदा है. इस के अलावा..."

उस की बात काटते हुए दूसरे व्यक्ति ने कहा, "भाई साहब, आप तो बड़े होनहार खिलाड़ी हैं."

"खिलाड़ी कौन है, साहब! मैं तो सामान गिरवी रखने का धंधा करता हूं," पहले व्यक्ति ने जवाब दिया.

—केंद्र पालसिंह

✦

एक समारोह में एक स्त्री गाना गा रही थी. उस के गाने पर झुंझला कर एक व्यक्ति ने अपने पास बैठे व्यक्ति से कहा, "किसी गधे को यहां बुला लिया जाए तो वह भी इस महिला से अच्छा गा सकता है. कौन है यह?"

"मेरी पत्नी है," साथ वाली सीट पर बैठे व्यक्ति ने कहा.

"ओह, माफ कीजिए, गलती हो गई. दरअसल इन की आवाज तो ठीक है. मगर इन्हें एकदम घटिया किस्म का गीत गाना पड़ रहा है. किस नौसिखिए ने यह गीत लिखा है?"

जी, मैं ने उस व्यक्ति ने जवाब दिया

—कुलवंतसिह **(पुरस्कृत)**

✦

दूध के लिए रोजरोज परेशानी उठाने वाली एक महिला ने अपने पति से कहा, "मैं कहती हूं, एक भैंस ले लो. तो रोजना दूध आसानी से मिल जाया करेगा."

पति ने उत्तर दिया, "आसानी से कैसे मिलेगा? क्या उस के लिए भूसे आदि का प्रबंध नहीं करना पड़ेगा?"

पास ही में उन का छोटा लड़का खड़ा था. पिता की बात सुन कर वह बोला, पिताजी आप भूसे की फिक्र न करें. यह समस्या में हल कर दूंगा, क्योंकि स्कूल में अध्यापक मुझ से कहते हैं कि मेरे दिमाग में भूसा भरा है."

—सुरेंद्रपाल

✦

एक युवती अपनी लिखी कहानी को ले कर एक संपादक के पास पहुंची. संपादक ने कहानी पर एक सरसरी नजर डालते हुए कहा, "आप की कहानी तो अच्छी मालूम होती है, पर आप का हस्तलेख ऐसा है कि ठीक से पढ़ा नहीं जाता. आप इसे टाइप कर के ले आइए."

"जी, मैं अगर टाइप करना ही जानती होती तो मुझे कहानी लिखने की क्या जरूरत थी. अब तक किसी कार्यालय में स्टेनोटाइपिस्ट बन गई होती," वह युवती बोली.

—चैतन्यमुरारी बाजपेयी ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह खादी ग्रामोद्योग कमीशन है!

लेख • खान भारती

खादी ग्रामोद्योग कमीशन बनाने के पीछे उद्देश्य था--खादी और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा मिले. पर क्या यह कमीशन इस उद्देश्य के अनुरूप ही काम कर रहा है?

अंगरेजों ने भारत को एक बड़ा नुकसान यह पहुंचाया था कि उन्होंने गांव के कारीगरों को लगभग बेकार कर दिया था. आजादी की लड़ाई के दौरान गांधीजी का ध्यान इस ओर गया तो उन्होंने अहिंसा की लड़ाई में चरखा और खादी को अपना मुख्य हथियार बना लिया. यही नहीं गांधीजी ने स्कूलों में पढ़ाई के साथसाथ कुटीर उद्योग सिखाने पर भी जोर दिया. गांधीजी के बाद राजनीतिबाजों ने उन के बताए रास्ते पर चलने का ढोल खूब पीटा मगर किया कुछ नहीं. गांधीजी की बुनियादी शिक्षा सिर्फ बहस का विषय बन कर रह गई. ग्रामोद्योगों को विकसित करने की बात अब भी की जाती है

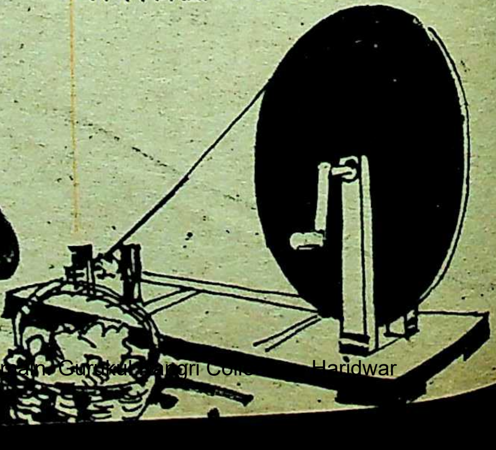

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजी के सपनों को साकार करने के नाम पर खादी ग्रामोद्योग कमीशन अब तक चल रहा है.

खादी ग्रामोद्योग कमीशन बनाने के पीछे उद्देश्य यह था कि इस से खादी और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा. मगर यह कमीशन आज अपने केंद्रीय और राज्य स्तरों पर रिटायर्ड राजनीतिबाजों की शरण स्थली बन गया है. कमाल तो यह है कि आजादी के पांच साल बाद बने इस कमीशन को गांव वाले आज तक भी नहीं जानते. इस कमीशन की लगभग सभी दुकानें शहरों में होती हैं. जहां तक इस कमीशन द्वारा बनाई गई खादी व दूसरी चीजों का सवाल है वे भी गांव वालों की पहुंच के बाहर ही होती हैं. गांव में अगर किसी ने अपने उद्योग में तरक्की की है तो अपनी ही कोशिशों से की है, कमीशन का उस में कोई हाथ नहीं होता. यों कागजों पर कमीशन ने गांव के लगभग सभी कारीगरों के लिए कर्ज व अनुदान की योजना बना रखी है मगर इन योजनाओं का लाभ गांव वालों के नाम पर दूसरे ही उठाते रहते हैं.

आंकड़े उठा कर देखे जाएं तो खादी ग्रामोद्योग कमीशन के बारे में यह बात सामने आती है कि गांवों में दस्तकारियों को बढ़ावा देने वाला यह कमीशन खुद घाटे में चल रहा है और उत्पादन व लोगों को रोजगार देने के आंकड़े भी गिरावट की ही तसवीर पेश करते हैं.

1965-66 में कमीशन के आंकड़ों में 18,90,000 लोगों को रोजगार दिया गया जो घट कर 1977-78 में 9,22,000 ही रह गया. उत्पादन में भी गिरावट साफ देखने को मिलती है. 1965-66 में कमीशन ने 848.5 लाख वर्ग मीटर कपड़ा तैयार किया जो 1978-79 में घट कर 715 लाख वर्ग मीटर पर आ गया. इस गिरावट के लिए क्या कारण हो सकते हैं यह तो कमीशन ही बता सकता है मगर इतनी बात साफ है कि कमीशन के पास धन की खास कमी नहीं रही. यह बात दूसरी है कि उस धन के इस्तेमाल में भ्रष्टाचार की भी कमी नहीं

कागजों पर भले ही यह योजना गांव वालों के लिए रही हो मगर इन योजनाओं का लाभ गांव वालों के नाम पर दूसरे ही उठाते रहते हैं.

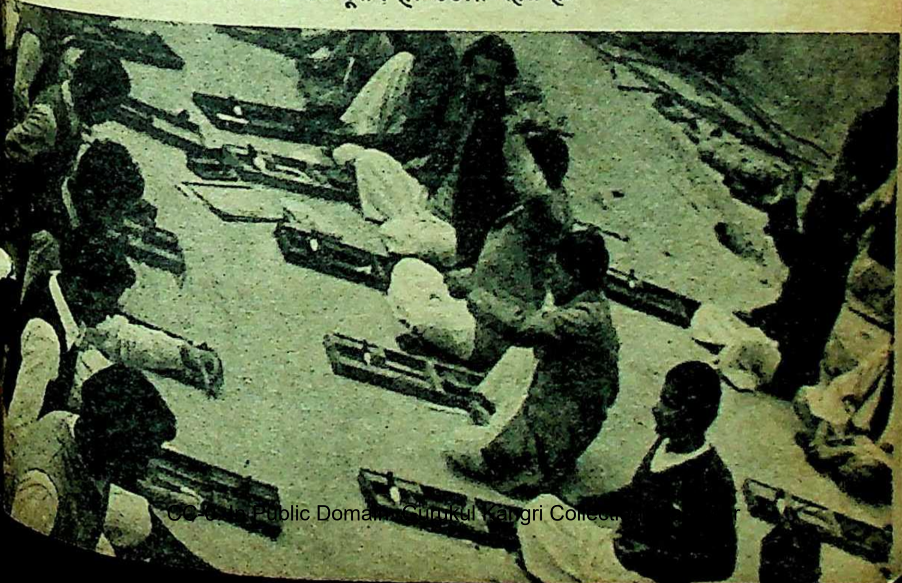

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही. यह बात आंकड़ों से साफ हो जाती है.

कर्ज का दुरुपयोग

1957 से 1979 तक सरकार ने खादी ग्रामोद्योग कमीशन को 369·22 करोड़ रुपए कर्ज व 323.23 करोड़ रुपए का अनुदान दिया. कमीशन ने इस रकम में से 341·47 करोड़ रुपया राज्य खादी बोर्डों को कर्ज में दिया और 149·20 करोड़ रुपया ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देने के लिए दिया. रुपया तो दे दिया गया मगर कमीशन के पास इस बात का पता लगाने के लिए कोई मशीनरी नहीं कि इस रकम को कैसे इस्तेमाल किया गया. इस का नतीजा यह हुआ कि राज्य बोर्डों ने कमीशन से ज्यादा पैसा लेना शुरू कर दिया. सितंबर, 1979 तक ज्यादा ली गई इस रकम की मात्रा 9.14 करोड़ तक पहुंच गई थी. विभिन्न संस्थाओं से भी कमीशन को 4.70 करोड़ रुपए की वसूली करनी थी जो उन को ज्यादा दे दिए गए थे.

राज्य खादी बोर्डों को कमीशन द्वारा दी जाने वाली रकम के लिए राज्य सरकार गारंटी देती है. 31 मार्च, 1979 तक 23 राज्यों में 89.14 करोड़ रुपए के कर्ज के लिए राज्य सरकारों की गारंटी कुल 68·35 करोड़ रुपए के लिए मिली थी. कमीशन की ओर से 468 संस्थाओं को 202 करोड़ रुपए का कर्ज दिया गया. ये सभी संस्थाएं अब ठप हैं. कमीशन के अनुसार इन संस्थाओं से कर्ज की वसूली मुमकिन नहीं है.

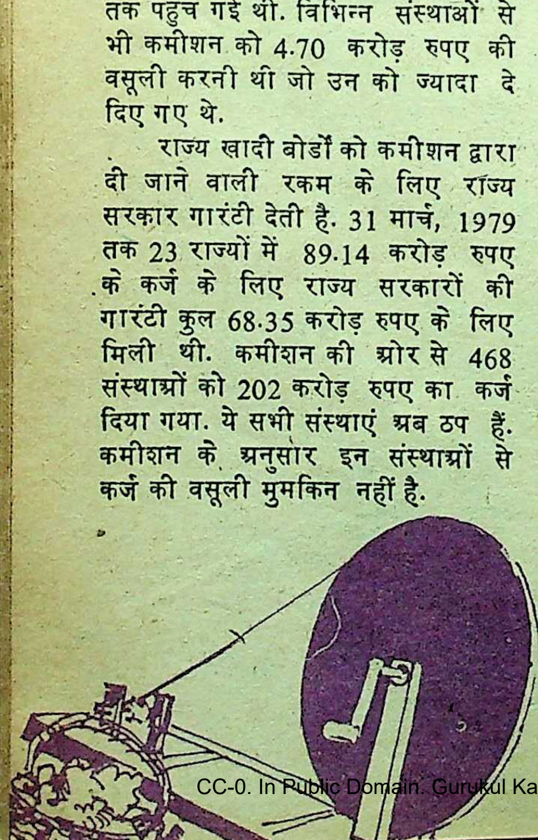

यह हाल तो कमीशन का है. राज्य बोर्डों की तसवीर भी इसी जैसी है. अगस्त, 1979 में राज्य खादी बोर्डों ने जिन 13,458 संस्थाओं को 8.42 करोड़ रुपए का कर्ज दिया गया वे ठीक से काम नहीं कर रही हैं. जाहिर है कि जब संस्थाएं काम ही नहीं कर रहीं तो कर्ज कैसे लौटाया जाएगा? इस बारे में कहा जाता है कि संस्थाओं को कर्ज उन के राजनीतिबाजों से संबंधों के आधार पर दिया जाता है. या फिर वे लोग पैसा हासिल कर लेते हैं जिन की बोर्ड में सीधी पहुंच होती है.

रियायत के तौर पर सरकार कमीशन को दिए गए कर्ज पर मिलने वाले ब्याज को अनुदान में देती रही है. 1957-79 के बीच अनुदान की यह रकम 86·16 करोड़ थी. आडिट की जांच में यह भी पता चला कि इस अनुदान में 32·10 करोड़ अधिक दिया गया.

कमीशन की योजनाओं में प्रगति

खादी ग्रामोद्योग कमीशन की कई तरह की योजनाओं में कितनी प्रगति हुई है यह घानी के तेल के उत्पादन की योजना से साफ हो जाता है. 1953 व 1978 के बीच घानी के तेल का उत्पादन बढ़ाने के लिए राज्य बोर्डों व दूसरी कई संस्थाओं को 31·69 करोड़ रुपया दिया गया. इसी दौरान 1971 व 1979 के बीच बिजली से चलने वाली 7,144 घानियां भी लगाई गईं, मगर उत्पादन जो 1960-61 में 5,87,000 क्विंटल तेल व 8,44,000 टन खल था वह 1978-79 में घट कर 5,06,000 क्विंटल तेल व 5,99,000 टन खल पर आ गया. समझ नहीं आता इस बीच पावर घानियां लगने पर भी उत्पादन क्यों नहीं बढ़ा. कहीं यह घानियां कागजों पर ही तो काम कर नहीं रह गईं?

गांधी जयंती के आसपास कमीशन की ओर से सामान बेचने के लिए अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजादी के पांच साल बाद बने इस कमीशन को गांव वाले आज तक नहीं जानते चूंकि इस की प्रायः सभी दुकानें शहरों में होती हैं. (चित्र--नई दिल्ली की एक दुकान का).

जगहों पर अपने काम की नुमाइशें लगाई जाती हैं. इन नुमाइशों पर 1957 व 1978 के बीच 2·74 करोड़ रुपया खर्च किया गया. इन नुमाइशों का एक दिलचस्प किस्सा भी सुन लीजिए. खादी ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा जुलाई, 1969 से अक्तूबर, 1970 तक एक नुमाइश लगाई गई. इस नुमाइश में कमीशन के साथ एक अन्य संस्था ने भी हिस्सा लिया. संस्था को कमीशन ने 6·85 लाख रुपए का कर्ज दिया. नुमाइश के बाद संस्था ने 1·65 लाख का घाटा कमीशन को दिखा दिया. लिए गए कर्ज में से संस्था ने 2·82 लाख रुपए कैंटीन, क्वार्ट्स बिक्री घर व दूसरे कामों पर खर्च किया. नुमाइश के बाद संस्था ने यह सारी जायदाद शिक्षा मंत्रालय को दे दी. ग्रामोद्योग कमीशन से इस बारे में पूछा तक भी नहीं गया.

कमीशन की उदारता

बाद में संस्था की प्रार्थना पर घाटे का 50 प्रतिशत कर्ज उसे और दे दिया गया. निर्माण कार्य पर 2·82 लाख रुपए को वसूली में दिखाने के बाद भी संस्था पर 2·29 लाख रुपया बाकी रह गया. इस तरह से कुल मिला कर नुमाइश कमीशन के लिए घाटे का सौदा ही रही.

कमीशन अपनी स्थापना के उद्देश्यों में तो कामयाब रहा ही नहीं है साथ ही घाटे का शिकार भी है. इसलिए खादी ग्रामोद्योग कमीशन की समूची कार्यप्रणाली पर फिर से विचार करने की जरूरत है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं- विश्व सुलभ साहित्य

धुएं के बीच
चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से ल् हांग भारत चला आया. मगर चीनियों ने उसे यहां भी आ दबोचा. तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की...एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निर्ममतापूर्ण कहानी.

मौत के आंसू
राजन मृदुला के साथ रंगरलियां मनाने अलकापुरी पहुंचा मगर वहां उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उस की लाश से हुई. हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा
पतिपत्नी की मुसकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा. क्या सचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबन्ध थे? या राजेश ही लीला के गदराए जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे.

प्रतिशोध
एक जरमन सैनिक की सच्ची कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया.

आंख मिचौनी
एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग...निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?—शायद इन सब का योगफल.

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 6% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ के लिए चुनावों से संबंधित रोचक झांकी या चुटकुले भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित झांकी या चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

चुनावों की चुहल, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

1980 के विधान सभा चुनावों के दौरान एक दलबदलू नेता दूरदर्शी पार्टी के उम्मीदवार के पक्ष में भाषण कर रहे थे. भाषण के अंत में उन्होंने कहा, "आप लोगों से प्रार्थना है कि हाथी पर निशान लगा कर अपने उम्मीदवार को सफल बनाएं."

एक सज्जन ने टोकते हुए कहा, "कुछ दिनों पहले तो आप 'हाथ' पर मुहर लगाने की बात करते थे?"

"भई, मैं तो पहले भी हाथ ही पर मुहर लगाने के लिए कहता था और अब भी 'हाथी' पर मुहर लगाने को कह रहा हूं," नेताजी ने सफाई पेश की.

—मधुसूदन

पिछले विधान सभा चुनावों का कई प्रगतिशील मोर्चों द्वारा बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया था. उन्होंने उस समय जगहजगह यह लिखा :

"चुनावों का बहिष्कार करो, चुनाव धोखा है."

किसी व्यक्ति ने इस के नीचे एक पंक्ति और लिख दी :

"चुनावों में लूटो यही तो मौका है."

—मूलचंद जैन

विधान सभा चुनावों के दौरान उम्मीदवार- जोशीजी तथा उन के सहयोगी गांवगांव जा कर प्रचार कर रहे थे. एक कार्यकर्त्ता ने खेराना की रोड़ी काकी से जोशीजी को ही वोट देने का वचन ले लिया.

मतदान के समय रोड़ी काकी अपना वोट पेटी में न डाल कर उसे अपने साथ लाने लगीं तो वहां तैनात अधिकारियों ने उसे मतपत्र साथ ले जाने से रोका और उस पत्र को पेटी में डालने के लिए कहा. इस पर रोड़ी काकी ने कहा, "मैं तुम्हारे बहकावे में नहीं आऊंगी. अपना वोट तो मैं जोशीजी को ही दूंगी."

—पवनकुमार जैन

एक स्थानीय नेता ने संपादक पर गरजते हुए कहा, "मेरे बारे में ऐसी खबर आप ने क्यों छापी है? मैं आप पर मानहानि का दावा करूंगा."

"पर आप ने ही तो कल अपने भाषण में बतलाया था कि आप कन्या विद्यालय के कोषाध्यक्ष पद से हट रहे है," संपादक ने कहा.

"यह तो सही है, लेकिन यह समाचार आप ने 'समाज सुधार' स्तंभ में क्यों छापा है?" नेताजी ने कहा.

—अश्विनी जैन •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक उड्डयन में राजनीति

संजय गांधी की मृत्यु के शोर में एकदो बार एयर मार्शल जहीर का नाम सामने आया था. समाचारों में कहा गया था कि श्री जहीर ने हवाई जहाज चलाने के बारे में संजय गांधी की लापरवाहियों की ओर प्रधान मंत्री का ध्यान खींचा था. कहा जाता है कि इसी बात से नाराज हो कर संजय गांधी ने उन्हें जबरदस्ती छुट्टी पर भिजवा दिया और एयर मार्शल जहीर को उन का कार्यकाल समाप्त होने से एक साल पहले ही रिटायर होने को मजबूर कर दिया गया.

एयर मार्शल जहीर के नागरिक उड्डयन के महानिदेशक पद से हटाने के समाचार का तो लोगों को पता चला, मगर यह बहुत कम लोगों को मालूम हो सका कि जिस दिन एयर मार्शल जहीर विदा हुए उसी दिन सरकार ने इंडियन एयरलाइंस व एयर इंडिया के प्रबंधक बोर्डों के नए सदस्यों के नामों का ऐलान भी किया था. हालांकि इन दोनों घटनाओं में एकदूसरे से कोई सीधा संबंध नहीं बताया जाता, मगर इन्हें एकदूसरे से पूरी तरह अलग भी नहीं किया जा सकता. आखिर नए नामों की घोषणा के लिए एयर मार्शल जहीर के हटने का ही क्यों इंतजार किया गया? शायद इस की वजह यह थी कि श्री जहीर प्रबंधक बोर्ड में राजनीतिक नियुक्तियों का विरोध कर रहे थे.

भारत में हवाई सेवाओं का संचालन दो सरकारी निगम इंडियन एयर लाइंस और एयर इंडिया करते हैं. इंडियन एअर लाइंस के हवाई जहाज देश के भीतर और पड़ोसी देशों—बंगला देश, पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका व अफगानिस्तान को आतेजाते हैं और एअर इंडिया की हवाई सर्विस उप देशों में है. इन दोनों निगमों का संचालन 1953 के एयर कार्पोरेशन ऐक्ट द्वारा होता है. इस ऐक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

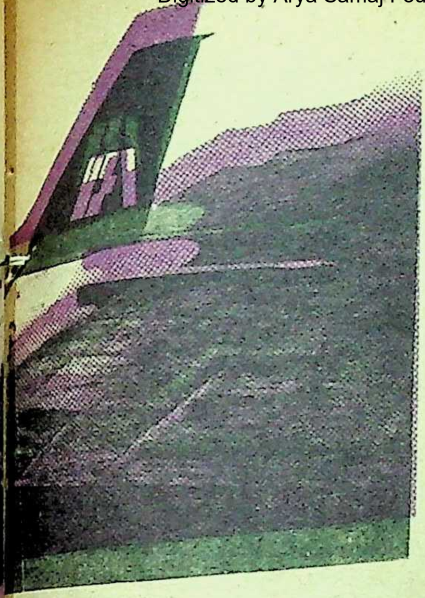

लेख • महर उद्दीन खान

इंडियन एयर लाइंस और एअर इंडिया के विभागों में अवसरवादी राजनीति हावी होती जा रही है. यदि समय रहते इस पर काबू न पाया गया तो इस के परिणाम घातक सिद्ध हो सकते हैं!

…के अनुसार प्रत्येक निगम में नौ सदस्य व एक चेयरमैन होता है. इन की नियुक्ति सरकार करती है. नागरिक उड्डयन महानिदेशालय पर इन दोनों निगमों की सेवाओं के नियमित संचालन के साथसाथ नागरिक उड्डयन के लिए आवश्यक व्यवस्था करने का भार भी है.

इसी कानून के तहत सरकार ने नए नामों का ऐलान किया है जिन में एयर स्टाफ के चीफ के अलावा तीन सरकारी अफसर दोनों बोर्डों के समान रूप से सदस्य बनाए गए हैं. आज के अफसरों पर हावी राजनीतिक प्रभाव को देखते हुए सरकारी अफसरों से किसी सही सलाह की आशा नहीं की जा सकती. इन के अलावा नए नामों में सब से ज्यादा खटकने वाली बात श्री चरणजीतसिंह को दोनों बोर्डों में नामजद करना है. राजनीतिक आधार पर बनाए गए इस प्रबंध मंडल के मातहत हवाई सेवाओं में कोई खास सुधार हो पाएगा यह आशा करना अभी बेकार है.

नए सदस्यों में श्री चरणजीतसिंह दिल्ली के एक बड़े व्यवसायी होने के साथ-साथ इंदिरा कांग्रेस के संसद सदस्य भी हैं. उन की नियुक्ति क्या गुल खिलाती है यह तो भविष्य ही बताएगा, मगर प्रबंध ऐसा किया गया है कि भविष्य में कोई अधिकारी हवाई सेवाओं के बारे में राज-

एयर मार्शल जे. जहीर : प्रबंधक बोर्ड में राजनीतिक नियुक्तियों का विरोध एक सही कदम. मगर परिणाम-पद छोड़ना पड़ा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणजीतसिंह : दोनों बोर्डों में नियुक्ति का आधार क्या है?

नीतिबाजों की शिकायत करने की हिम्मत ही न कर सके.

जानकार लोगों का कहना है कि राजनीतिक आधार पर बनाए गए बोर्ड पर आगे चल कर सरकार को पछतावा ही होगा. इन नियुक्तियों का विरोध होने पर हालांकि सरकार ने उठाई गई आपत्तियों पर विचार करने व नामों की फिर से समीक्षा करने का आश्वासन दिया है, फिर भी सरकार ने यह सबकुछ बहुत सोचसमझ कर किया है, दोनों सेवाओं के चेयरमैन के लिए उन अधिकारियों को लिया गया है जो कहीं और रिटायर हो चुके हैं. जैसा कि अकसर होता है, ऐसे लोगों के मन में हमेशा अपने पद के बारे में अनिश्चय की भावना बनी रहती है. ये अधिकारी अपने विभाग को काम करने की उतनी आजादी नहीं दे पाते जितनी कि जरूरी होती है. दूसरे ये लोग नागरिक समस्याओं पर ध्यान देने के स्थान पर अपने आकाओं को ही खुश रखना ज्यादा फायदेमंद समझते हैं. इस समय नागरिक उड्डयन के सामने दो प्रमुख समस्याएं हैं जिन पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है. पहली हवाई जहाजों का चुनाव और दूसरी दोनों हवाई सेवाओं को सही मार्ग अलाट करना.

यहां यह बात ध्यान देने की है कि इस समय संसार भर में नागनिक उड्डयन सेवाएं घाटे का शिकार हो रही हैं जिस के कारण हवाई जहाजों की खरीद पर भी असर पड़ रहा है. इंडियन एयर लाइंस तथा एअर इंडिया में भारी घाटे के लिए तेल की बढ़ी हुई कीमतों को जिम्मेदार ठहराया जाता है. मगर इस के अलावा और भी कई कारण हैं, जिन में है कर्मचारियों के वेतनों में वृद्धि. विशेष रूप से विमान चालकों के वेतन में भारी वृद्धि सब आंकड़ों को गड़बड़ा देती है.

भारतीय हवाई सेवाओं के ठीकठीक संचालन के लिए अच्छे हवाई जहाजों की समस्या अकसर रहती है. इस मामले में दोनों ही निगम गलती पर रहे हैं. इस समय जिन हवाई जहाजों की जरूरत है उन पर एअर इंडिया के प्रबंधक बोर्ड को तुरंत ध्यान देना होगा. हवाई जहाजों के आनेजाने के समय में भी फेरबदल किए जाने की जरूरत है.

अब जरा दूसरी घटना यानी एयर मार्शल जहीर को समय से पहले रिटायर करने के नतीजों पर भी विचार कर लें. एयर मार्शल जहीर के नागरिक उड्डयन के महानिदेशक पद से हट जाने से सरकार के लिए देश में प्रतिभाओं की खोज का काम आसान न होगा. श्री जहीर ने हवाई जहाज में यात्रा करने वालों की सुरक्षा पर काफी जोर दिया था. इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

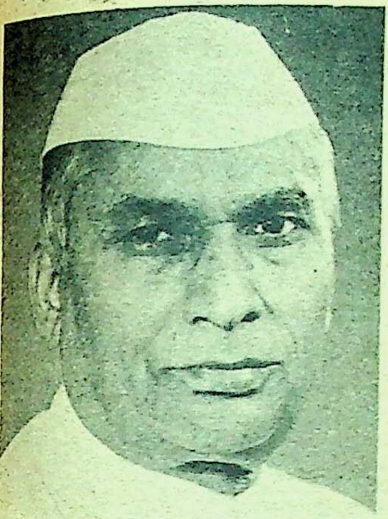

नागरिक उड्डयन मंत्री अनंतप्रसाद शर्मा : क्या राजनीति की छाया से दूर रह कर नियुक्तियां संभव हैं?

मामले में वह कुछ खास कोशिशें कर रहे थे. उन के हटने से शायद अब इस दिशा में इतनी दिलचस्पी से काम नहीं हो पाएगा.

इस मामले में एयर मार्शल जहीर ने विमान चालकों की कार्यकुशलता की जांच की पक्की व्यवस्था करने पर जोर दिया था.

विमान चालकों का विरोध

इस बात पर टाटा जांच समिति ने भी बल दिया था कि विमान चालकों की कार्यकुशलता की जांच होती रहनी चाहिए. मगर पता नहीं किन कारणों से विमान चालक इस व्यवस्था का विरोध करते हैं, जब कि उन की कार्यकुशलता की जांच के लिए एक स्थायी फ्लाइट इंस्पेक्टर की जरूरत है. इस से हवाई जहाज में यात्रा करने वालों की सुरक्षा बढ़ सकेगी.

इन प्रबंधक बोर्डों को हवाई जहाज से यात्रा करने वालों की सुरक्षा का कितना ध्यान है इस बात का पता एक घटना से चलता है जिस का प्रचार बहुत कम किया गया है. हर देश में विमान चालकों की एक बड़ी संख्या वायु सेना के अधिकारियों की होती है. एअर इंडिया भी आमतौर पर इन में से ही विमान चालक लेती है. अब सरकार ने हिदायत दी है कि वायु सेना के अफसरों को व्यावसायिक विमान उड़ानों का लाइसेंस तब तक न दिया जाए जब तक वे उन सारी परीक्षाओं व प्रक्रियाओं को पास न कर लें जो एक नए विमान चालक को देनी पड़ती हैं.

सवाल है कि क्या सरकार उच्च श्रेणी के वकीलों, डाक्टरों व इंजीनियरों की सेवा लेते समय उन की परीक्षा लेती है? फिर इन अनुभवी विमान चालकों के लिए ऐसा क्यों? शायद ऐसा कर के सरकार अन्य महकमों की तरह विमान चालकों में भी अपने चहेतों को भरना चाहती है. इस मामले में चीफ आफ एयर स्टाफ (जो अब दोनों हवाई सेवाओं के बोर्डों के सदस्य भी हैं) की चुप्पी यात्रा करने वालों के लिए काफी खतरनाक साबित हो सकती है.

इस निश्चय पर अगर तुरंत विचार कर लिया गया तो एयर लाइंस को काफी लाभ हो सकता है. कोई भी हवाई सर्विस इतने भारी नुकसान से लंबे समय तक नहीं ठहर सकती, जितने नुकसान से भारतीय हवाई सेवाएं गुजर रही हैं.

राजनीतिक आधार पर विमान चालकों की नियुक्ति यात्रियों के लिए खतरा व एयर लाइंस के लिए भारी नुकसान का कारण बन सकती है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

सरिता

निहित स्वार्थों को चुनौती देने वाली एकमात्र पत्रिका, जिस ने बड़ी से बड़ी शक्ति की परवाह नहीं की. सरिता की यह निर्भीकता अब एक इतिहास बना चुकी है. इसी लिए आज 40 लाख से अधिक पाठक सरिता का सम्मान करते हैं.

सरिता के लेख, समीक्षाएं, टिप्पणियां, उस की स्पष्ट नीति व क्रांतिकारी विचार आप को भी नए मोड़ पर ले आएंगे. हृदयस्पर्शी कहानियां, मोहक कविताएं आप का स्वस्थ मनोरंजन करेंगी.

लाखों पाठकों के साथसाथ आप भी आज से ही सरिता पढ़िए.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं -ज्योति नए युग की घरघर जगाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूठी रानी

राजा मालदेव राजकुमारी उमादे से विवाह करने जैसलमेर पहुंचा था और वहां उस की दासी सुंदरी पर मोहित हो गया. मगर इस कमजोरी का उसे इतना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा यह कौन जानता था!

कहानी • अनिलकुमार नागपाल

जैसलमेर में बड़ी धूमधाम थी. वहां के शासक लूनकरण भाटी की बेटी उमादे का विवाह जोधपुर के वीर राजा मालदेव राठौर के साथ होने वाला था. मालदेव राठौर चुने हुए 2,500 राठौर सैनिकों के साथ जैसलमेर आ चुके थे.

विवाह से मात्र एक दिन पहले जब मालदेव अपने मित्रों के साथ महफिल में नाच देखने में मग्न थे, तभी उन के सेवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने आ कर खबर दी, "अन्नदाता, रावजी की दासी आप से एकांत में कुछ अर्ज करना चाहती है."

मालदेव तत्काल अंदर कमरे में चले गए. जाते ही मालदेव पत्थर की तरह खड़े रह गए. एक परम सुंदरी युवती कमरे में खड़ी थी. कुछ देर तक मालदेव उस युवती को एकटक निहारते रहे. फिर उस युवती को देख कर मानो अपनी सुध-बुध खो बैठे. युवती भी मालदेव के बलिष्ठ शरीर और लंबे कद पर मोहित हो गई प्रतीत होती थी.

"तुम कौन हो और क्या संदेश लाई हो?" मालदेव ने पूछा.

"मैं रावजी की पुत्री उमादे की दासी सुंदरी हूं. उन्होंने आप के लिए यह संदेश भेजा है कि रावजी से आप सावधान रहें. रावजी ने भाटी सरदारों के साथ मिल कर आप के खिलाफ षड्यंत्र रचा है. आप अपनी सेना को अपने से पृथक न रखें."

दासी उमादे का संदेश सुना कर चली गई.

मालदेव दासी के जाने के बाद भी बड़ी देर तक उसी प्रकार खड़े रहे. फिर उन्होंने अपने को संभाला. वह बाहर अपने मित्रों के बीच आए. उन्होंने उमादे का संदेश अपने साथियों को सुनाया. कुछ ही देर में राठौर सरदारों ने सेना को ज्यादा दूर न रखने का निश्चय कर लिया और चुने हुए 25 घुड़सवार वीरों को मालदेव का अंगरक्षक नियुक्त कर दिया गया.

सब इंतजाम हो जाने के बाद भी मालदेव के होशोहवास गायब थे. उन के दिल में तो उमादे की दासी सुंदरी बस चुकी थी. उन के दिल का हाल कोई न समझ सका. राठौर सरदारों ने समझा कि मालदेव उमादे और राव लूनकरण के बारे में सोच रहे हैं. किसी को यह खयाल तक न था कि मालदेव एक साधारण दासी के लिए चिंतित हो रहे हैं. उस काल में दासियों का समाज में कोई सम्मान नहीं था. दासियां राजकुमारियों के साथ दहेज में दी जाती थीं और महाराज के भोग की वस्तु समझी जाती थीं.

मालदेव ने सुंदरी से अपना ध्यान हटाने का असफल प्रयत्न किया. अंत में उन्होंने अपने विश्वस्त मित्र जैंता को अपने दिल का हाल कह सुनाया. जैंता ने मालदेव को दहेज में सुंदरी को मांगने की राय दी. पर मालदेव को इस से संतोष नहीं हुआ. उन्होंने जैंता से कहा कि वह चाहते हैं कि उन्हें सुंदरी की मात्र एक झलक दिखा दी जाए. पहले तो जैंता ने मालदेव को समझाने का काफी प्रयत्न किया, पर जब वह नहीं माने तो उस ने इस के लिए प्रयत्न करने का आश्वासन दिया.

जैंता ने अपनी विश्वस्त दासी, पारो से सुंदरी को मालदेव से मिलवाने में सहायता मांगी. पारो राजकुमारी उमादे के महल में पहुंची और मौका पा कर उस ने सुंदरी को अकेले में ले जा कर मालदेव का प्रेम निवेदन कर दिया.

सुंदरी को इतना सम्मान मिलने की स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी. इस प्रेम निवेदन को सुन कर वह हैरान रह गई. सुंदरी मालदेव से मिलना तो चाहती थी, पर उस को डर था कि अगर इस बात की भनक किसी को भी लग गई तो उसे जिंदा रेत में गड़वा दिया जाएगा.

पारो के काफी प्रयत्न करने पर सुंदरी महल से कुछ दूर मुख्य द्वार से पहले पेड़ों के झुरमुट के पास एकांत में मालदेव से मिलने को राजी हो गई.

मालदेव जैंता और अन्य दो विश्वस्त वीरों के साथ वेष बदल कर सुंदरी द्वारा बताए स्थान पर उस का इंतजार कर रहे थे. कुछ ही देर में मालदेव को अंधकार में एक छाया आती दिखाई दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया के करीब आते ही सुंदरी की छवि दृष्टिगोचर हुई. मालदेव का इशारा पाते ही तीनों राठौर अंधकार में विलीन हो गए. राठौरों के जाते ही सुंदरी मालदेव की बांहों में थी. यह निश्चय करना कठिन था कि पहले सुंदरी मालदेव की बांहों में आई थी या मालदेव ने सुंदरी को आगे बढ़ कर बांहों में ले लिया था. मालदेव ने अपने प्रेम की निशानी के रूप में अपने गले से माला उतार कर सुंदरी के गले में डाल दी.

अभी कुछ ही समय बीता था कि अचानक गश्त कर रहे कुछ सिपाहियों के घोड़ों की टापें सुनाई देने लगीं. सुंदरी मालदेव की बांहों से छूटने के लिए कसमसाई. फिर मालदेव की बांहों से छूट कर वह अंधकार में कहीं विलीन हो गई. मालदेव भी सवारों के आने से पूर्व पेड़ के पीछे छिप गए और सवारों के जाने के बाद वापस अपने महल की ओर चल दिया. राह में मालदेव को उन के साथी इंतजार करते हुए मिल गए.

मालदेव के सैनिकों के मालदेव के साथ ही रहने के कारण राव लूनकरण कुछ भी करने में असमर्थ हो गया. अंत में उसे उमादे का विवाह मालदेव से करना ही पड़ा. शादी के फेरों के समय मालदेव को उमादे के पीछे सुंदरी की झलक नजर आई. कुछ ही क्षणों में मालदेव को पता चल गया कि दहेज में सुंदरी नहीं मिली है.

शादी के बाद जब मालदेव महफिल से उठे तो बुरी तरह नशे में चूर थे. सरदारों ने उन को काफी शराब पिला दी थी. राठौर इस शादी को अपनी विजय की तरह मना रहे थे. दासियों ने मालदेव को सुहागरात वाले कक्ष में छोड़ दिया. मालदेव ने महल में पहुंच कर जब नशे से चूर आंखें खोलीं तो उमादे के स्थान पर उस की दृष्टि सुंदरी पर टिक गई. मालदेव होश खो बैठे और उन्होंने सुंदरी

मालदेव सामने सुंदरी को देख कर अपने होश खो बैठे. यह देख कर उमादे हैरान, परेशान सी कमरे से बाहर चली गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पकड़ कर पलंग पर अपने साथ लिपटा लिया. उमादे हैरान हो कर कमरे से बाहर चली गई.

सुबह होने पर मालदेव को होश आया. उमादे कमरे में नहीं थी मालदेव ने उमादे के पास जा कर क्षमा मांगी. उमादे ने यह कह कर कि "आप ने जिस दासी के साथ मुंह काला किया है, आप उसी के योग्य हैं," अपना मुंह फेर लिया.

इस घटना के बाद उमादे ने आ-जीवन [illegible] रहने का प्रण लिया. उस ने अपना संपूर्ण जीवन जोधपुर से दूर मालदेव से अलग रह कर अजमेर में बिता दिया.

मालदेव ने उमादे को मनाने के कई प्रयत्न किए पर वह सफल न हो सके. सन 1562 में मालदेव की मृत्यु के बाद उमादे स्वेच्छा से अपने पति के साथ सती हो गई. राजस्थान के इतिहास में उमादे रानी 'रूठी रानी' के नाम से प्रसिद्ध है. पर अजमेर में आज भी रूठी रानी का महल प्रसिद्ध है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए व अन्य संस्मरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड़, नई दिल्ली-110055.

कालिज में हमारे एक प्राध्यापक नए छात्रों से इस तरह परिचय करते थे कि वे उत्तर देते हुए सकपका जाते थे.

हमारी कक्षा में लखनऊ के एक छात्र ने दाखिला लिया. हम ने उसे उस प्राध्यापक के स्वभाव के बारे में पहले ही बता दिया था. पीरियड लेने के लिए वह कक्षा में आए और उपस्थिति लेने लगे. इसी दौरान उन्हें मालूम हो गया कि क्रमांक 69 एक नया छात्र है. हाजिरी लेने के बाद वह नए छात्र से बोले, "आप का शुभागमन कहां से हुआ है?"

"जी लखनऊ से."

फिर उन्होंने लखनवी अंदाज में कहा, "आप की तारीफ?"

"जितनी भी की जाए कम ही है," छात्र ने उत्तर दिया. —**गोविंद आहूजा**

✦

✦ एक दिन मैं कालिज से घर आ रही थी. बस में ज्यादा भीड़ नहीं थी. मैं खिड़की की ओर मुंह किए हुए खड़ी थी कि पीछे से एक नौजवान लड़के ने मेरे कंधे पर हाथ रख दिया. इस पर मैं गुस्से से बोली, "क्यों रे, तुझे आंखों से दिखता नहीं है? क्या तू बिलकुल ही अंधा हो गया है?"

"हां बहनजी, मैं अंधा ही हूं," लड़के ने बहुत ही नरमी और सरलता से कहा.

मैं ने ध्यान से देखा, वह सचमुच ही अंधा था. इस पर मुझे बहुत पश्चात्ताप हुआ.

—**अनीसा फिरदौस (सर्वोत्तम)**

✦

एक बार कालिज की तरफ से हम बी. एससी. के विद्यार्थी घूमने गए थे. वहां पर सब ने एकदूसरे की फोटो खींची. हमारे एक मित्र ने तो वहां के बंदरबंदरियों की तसवीर भी खींची.

वापस आने पर एक दिन जब हम सभी छात्रछात्राएं अपनी कक्षा के बाहर खड़े थे तो एक छात्र ने कुछ जोर से कहा, "देखो, नीतू की तसवीर कितनी साफ आई है."

यह सुन कर मेरी सहेली नीतू अपना फोटो लेने के लिए झपटी. मगर जब उस ने वह तसवीर देखी तो झेंप गई और हम सभी ठहाका मार कर हंस दिए, क्योंकि वह एक बंदरिया की फोटो थी. —**नीरा टंडन** ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविजय प्रकाशन
का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

● **खाई** — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास.

2.50

● **ये पति**

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है.

2.50

● **मेहंदी का पौधा** — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा.

2.50

विश्व पाकेट बुक्स

● **प्रतिहिंसा** — जनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है.

2.50

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● **आधी रात को दिन** — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है. क्या था उन खिलौने में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था.

2.50

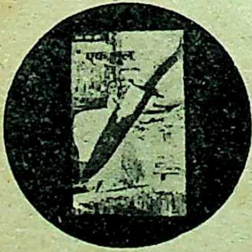

● **एक भूल** — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास.

2.00

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

विश्वविजय प्रकाशन एम 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज कल्याण बनाम पार्टी कल्याण

हमारे राजनीतिज्ञों का नैतिक [illegible] ही यह बन गया है कि जैसे भी हो अपनों की जेबें भरो. और आज यही उद्देश्य पूरा कर रही है केरल में [illegible] नारायणन के मुख्य मंत्रित्व में [illegible] संयुक्त मोर्चा [illegible]

लोकतंत्र जनता का शासन माना जाता है. मगर भारत में यह परंपरा बन गई है कि जो भी पार्टी शासन में आ जाती है उस के बड़े से ले कर छोटे कार्यकर्ता तक सब उस सरकार को केवल अपनी सरकार समझते हैं. इस के विपरीत विरोध वाले अपने को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं. शासक पार्टी का हर कार्यकर्त्ता 'अपने शासन' में ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाना चाहता है. चाहे वह सही तरीकों से हासिल हो या गलत तरीकों से. हाल ही में केरल की संयुक्त मोर्चा सरकार में शामिल मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी के मंत्रियों द्वारा अपनी पार्टी को लाभ पहुंचाने के कुछ मामले सामने आए हैं. संयुक्त मोर्चा सरकारों का कुछ भरोसा नहीं होता. शायद यही सोच कर मार्क्सवादी मंत्री अपने पार्टी कार्यकर्ताओं को मजबूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना देना चाहते हैं. दूसरे उन्हें केंद्र में इंदिरा गांधी के आने से भी यह खतरा हर दम बना रहता है कि पता नहीं कब इंदिराजी की केरल की ओर टेढ़ी नजर हो जाए. इसी लिए संयुक्त मोर्चा सरकार. बनने के बाद पार्टी एवं पार्टी कार्यकर्ताओं के भविष्य की सुरक्षा के लिए करदाताओं के धन को कई बहानों से धीरेधीरे पार्टी कार्यकर्त्ताओं के पास पहुंचाया जा रहा बताते हैं.

समाज कल्याण मंत्रालय एक दुधारू गाय

पार्टी और पार्टी कार्यकर्ताओं की हालत सुधारने के लिए राज्य का समाज कल्याण मंत्रालय दुधारू गाय साबित हो रहा है. यह मंत्रालय मार्क्सवादी मंत्री श्रीमती के. आर. गौरी के अधीन है. लोगों में यह धारणा पक्की होती जा रही है कि पार्टी और पार्टी कार्यकर्त्ताओं तक सरकारी धन पहुंचाने के लिए गलत तरीकों का खुल कर इस्तेमाल किया जा रहा है. केरल के समाज कल्याण विभाग ने कई जनकल्याणकारी योजनाएं बनाई हैं. लोगों का विचार है कि इन योजनाओं का उद्देश्य जनकल्याण न हो कर पार्टी कल्याण अधिक है.

ऐसी ही एक योजना विधवाओं व कुंआरी माताओं को आर्थिक सहायता देने की है. सरकारी नियमों के तहत समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों ने जरूरतमंद महिलाओं की सूची तैयार कर मंत्री श्रीमती गौरी के पास भेजी. श्रीमती गौरी ने इस सूची को उठा कर रख दिया व पार्टी की जिला कमेटियों द्वारा भेजी गई सूचियों को अपनी मंजूरी दे कर अधिकारियों के पास भेज दिया. बताया जाता है कि बिन ब्याही माताओं के नाम से अनेकों युवतियों ने सहायता हासिल कर ली है. यह भी इलजाम लगाया जा रहा है कि जिला कमेटियों ने सूची में उन्हीं लोगों को शामिल किया था जो पार्टी कार्यकर्त्ता हैं. इस के अलावा यह भी बताया जाता है कि जिला कमेटी के सचिव मिलने वाली सहायता में से अपना हिस्सा भी तय कर लेते हैं.

वार्षिक बजट में सरकार ने विधवाओं व बिन ब्याही माताओं की सहायता के लिए पांच लाख रुपए का इंतजाम किया था. मगर श्रीमती गौरी ने जो सूची मंजूर की है उस के आधार पर इस से बहुत ज्यादा रकम खर्च करनी पड़ेगी. विभाग के अधिकारी भी अपने को इस हालत में नही समझते कि नामों की जांच कर लें कि सहायता चाहने वाली वास्तव में जरूरतमंद हैं भी या नहीं.

एक जरिया यह भी

समाज कल्याण बनाम पार्टी कल्याण का दूसरा जरिया सरकार की शिशुगृह बनाने की योजना है. इस योजना के अंतगर्त राज्य भर में शिशु-गृह बनाए जाने हैं. कानून के मुताबिक रजिस्टर्ड संस्थाएं शिशुगृह के लिए सहायता की दरख्वास्त दे सकती हैं. सहायता के रूप में शिशुगृह बनाने के लिए 600 रुपए एकमुश्त व 250 रुपए महीना मिलता है. इस 250 में 150 आया की तनख्वाह के लिए व 100 रुपए नौकरानी की तनख्वाह दी जाएगी. बताया जाता है कि इस के लिए भी समाज कल्याण विभाग में बड़ी तादाद में दरख्वास्तें पहुंची हैं. विधवाओं व कुवांरी माताओं की सहायता की योजना की तरह इस योजना में भी दरख्वास्तों को छांट कर सरकारी मंजूरी के लिए भेजा गया है मगर मंजूरी उन्हीं दरख्वास्तों पर मिलेगी, जो श्रीमती गौरी सूची बना कर भेजेंगी. अगर मंत्री की सूची में समाज कल्याण निदेशालय द्वारा मंजूर की गई दरख्वास्त नहीं है तो उसे सहायता नहीं मिलेगी.

इस योजना में कई अजीब बातें भी सामने आ रही हैं. कई मामलों में ऐसा हुआ कि सरकार ने शिशुगृह के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता मंजूर कर के जब सरकारी चिट्ठी भेजी तो उन्हें लेने वाला ही कोई नहीं मिला. बताया जाता है कि कई लोगों ने पार्टी कार्यालय के जरिए झूठे नामों से शिशुगृह चलाने की दरख्वास्तें दी हैं और ऊपर से सहायता की मंजूरी भी हासिल हो चुकी है.

ऐसा भी नहीं कि मोर्चे में शामिल दूसरे दलों को इस भ्रष्टाचार का पता न हो, मगर उन में भी ज्यादातर लोग खामोश हैं. शायद वे अपने महकमों के जरिए अपने लोगों को लाभ पहुंचा रहे होंगे. हां, अब मोर्चे में शामिल कुछ विधायकों ने श्रीमती गौरी द्वारा समाज कल्याण के नाम पर पार्टी कल्याण की सी. बी. आई. द्वारा जांच करने की मांग की है.

श्रीमती के. आर. गौरी : समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा बनाई गई योजनाओं का उद्देश्य जनकल्याण है या पार्टी कल्याण?

एक और योजना

केरल सरकार एक अन्य योजना के तहत खेत मजदूरों को पेंशन भी देगी. इस योजना के लिए अब तक प्राप्त प्रार्थनापत्रों के आधार पर सरकार 26 करोड़ रुपए खर्च करेगी, जब कि बजट में इस काम के लिए 7.5 करोड़ रुपए का इंतजाम किया गया था. इस योजना में भी मार्क्सवादी पार्टी से संबंधित यूनियन के खेत मजदूरों को ही ज्यादा लाभ होगा.

पता चला है कि मजदूरों को पेंशन की योजना के लिए नाम मंजूर करने में पंचायत समितियों ने भाईभतीजावाद से काम लिया व अंधे की रेवड़ी के लिए अपनेअपनों के नाम पेंशन योजना के लिए भेज दिए. इस सब की जब शिकायत की गई तो राज्य के श्रम मंत्री ने इन शिकायतों की जांच होने तक भुगतान रोकने के आदेश जारी कर दिए. मगर जब मुख्य मंत्री को इस बात का पता चला तो उन्होंने अपने अधीन काम करने वाले जनसंपर्क विभाग को श्रम मंत्री का आदेश प्रसारित करने से रोक दिया. लोगों का विचार है कि श्रम मंत्री का आदेश लागू हो जाने पर पेंशन के दावेदारों की पोल खुलने का खतरा था. इन दावेदारों में ज्यादातर मार्क्सवादी पार्टी के समर्थक ही बताए जाते हैं.

इस तरह से लोगों के कल्याण के नाम पर पार्टी कल्याण हो रहा है. पता नहीं दूसरी पार्टियां व केरल की जनता खुले आम हो रही इस लूट को कब तक बरदाश्त करेंगी. इस सब के कारण सरकारी दफ्तरों का भी यह हाल हो गया है कि वे भी सरकारी स्तर पर वही काम करते हैं जो मार्क्सवादी पार्टी कराना चाहती है. कोई भी काम कराने के लिए यहां मार्क्सवादी प्रभाव एक महत्वपूर्ण जरिया बन रहा है. खैर, और कुछ हो या न हो, मगर समाज कल्याण के नाम पर केरल की मार्क्सवादी पार्टी का कल्याण हो जाएगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

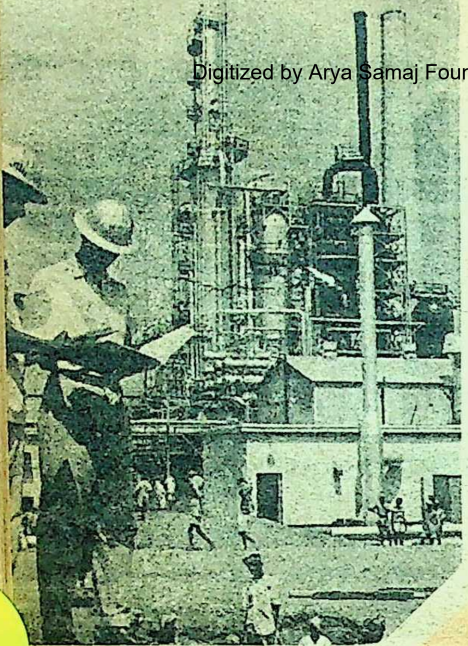

तेल की राजनीति का भारत भी जानेअनजाने शिकार होता रहा है. तब भी क्या हमारी सरकार अपने ही देश में तेल की के खोज काम में तीव्रता ला रही है?

लेख • विशेष प्रतिनिधि

भारत में तेल की खोज

विश्व की अर्थव्यवस्था का आज ऊर्जा एक प्रमुख आधार है और ऊर्जा के साधनों में तेल का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. उधर तेल उत्पादक देशों का यह हाल है कि वे जब चाहते हैं, तेल के दाम बढ़ा कर विश्व की अर्थ-व्यवस्था के सामने संकट उत्पन्न कर देते हैं. अपनी विभिन्न समस्याओं के हल के लिए ये देश तेल को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने से भी नहीं चूकते. आज विश्व की राजनीति में तेल की राज-

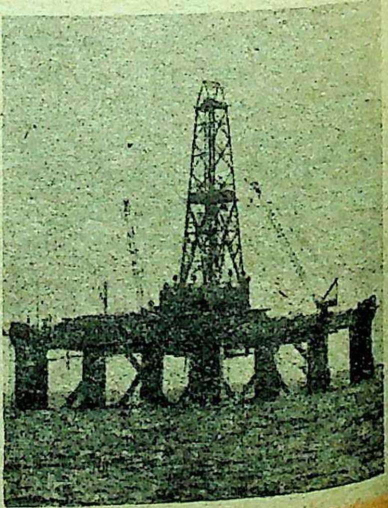

समुद्रों में तेल की खुदाई केलिए प्रयोग में आने वाला एक यंत्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति एक मुख्य भूमिका अदा करती है.

भारत को भी अकसर इस राजनीति का शिकार होना पड़ता है. विशेषकर इस तेल राजनीति से सुरक्षा के लिए. वैसे आजादी के बाद से ही यह महसूस किया जाता रहा है कि भारत को तेल के मामले में आत्मनिर्भर होना चाहिए. भारत में तेल की खोज का काम सरकार को करना होता है. इसलिए अभी इस मामले में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य दूर ही दिखाई देता है.

अभी हाल ही में सरकार ने फैसला किया है कि देश में तेल की खोज के काम में विदेशी कंपनियों को भी शामिल किया जाएगा. सरकार के इस फैसले की कई क्षेत्रों में आलोचना की गई है. आलोचना के अन्य मुद्दों को छोड़ भी दिया जाए तो सरकार के इस फैसले से तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग की निष्क्रियता तो सिद्ध हो ही गई है. जहां तक विदेशी कंपनियों को इस खोज में शामिल करने की बात है, यह कोई एकदम नया फैसला नहीं है. अब से पहले भी ऐसे फैसले किए जा चुके हैं. सन 1960 में बंबई के निकटवर्ती गहरे समुद्र में तेल की खोज के लिए रूस का सहयोग लिया गया और सन 1974 में इस कोशिश में कामयाबी भी हासिल हो गई.

जनता सरकार के सामने भी ऐसे प्रस्ताव आए थे. मगर वहां आपसी झगड़ों के कारण इन प्रस्तावों पर विचार करने का समय ही नहीं मिल पाया. भारत में तेल की खोज के लिए विदेशी कंपनियों का सहयोग लेना विशेष आलोचना का विषय नहीं, क्योंकि आज रूस व चीन जैसे कम्यूनिस्ट देश भी अपनी कई समस्याओं के समाधान के लिए विदेशी कंपनियों को न्यौता देने में नहीं हिचकिचाते हैं. फिर अगर विदेशी कंपनियों के सहयोग से भारत की तेल समस्या हल होती है तो इस में बुरा भी क्या है?

इस वर्ष के आरंभ में फिलिप्स पैट्रो-

अहमदाबाद के निकट कलोल क्षेत्र के सेरथा गांव में कुछ वर्ष पूर्व तेल क्षेत्र का पता लगा था. परीक्षात्मक तेल कूप से प्राप्त तेल खनिज (अशुद्ध तेल) गड्ढे में दिखाई दे रहा है.

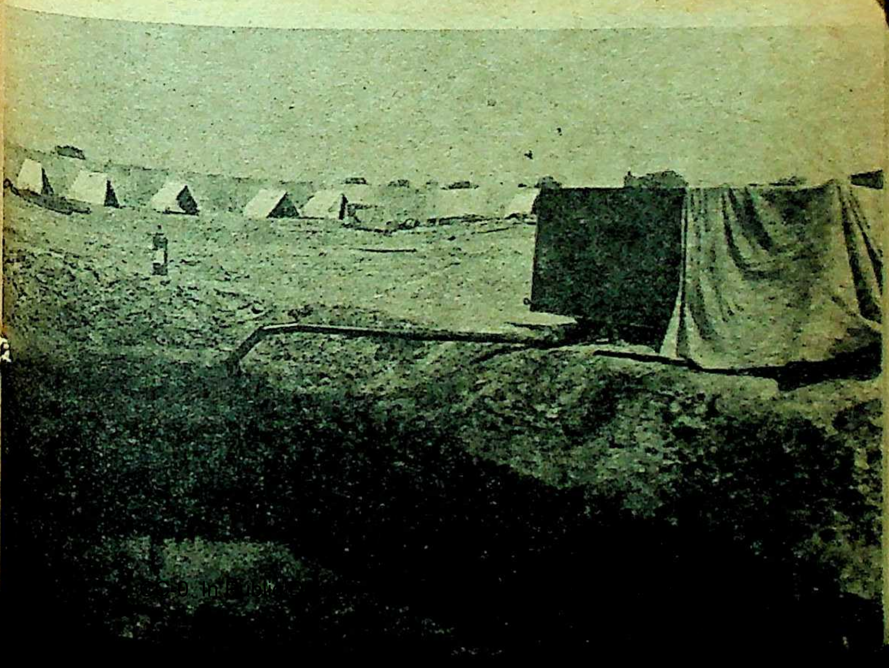

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

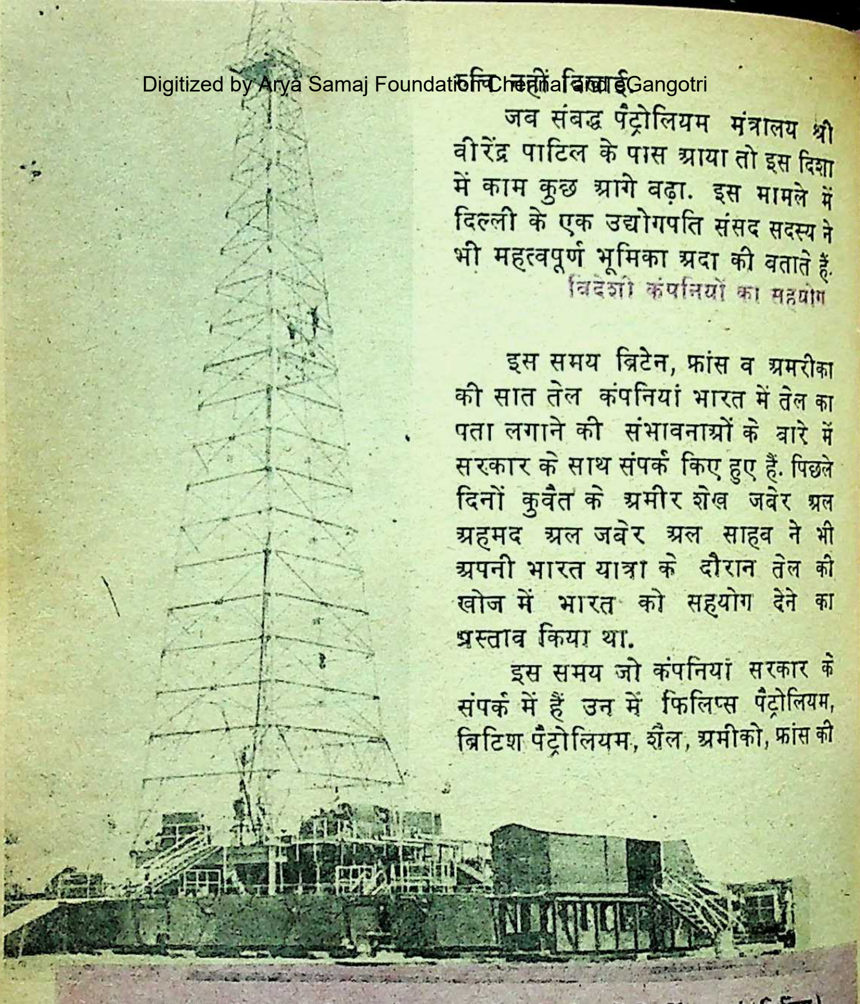

रुचि नहीं दिखाई

जब संबद्ध पैट्रोलियम मंत्रालय श्री वीरेंद्र पाटिल के पास आया तो इस दिशा में काम कुछ आगे बढ़ा. इस मामले में दिल्ली के एक उद्योगपति संसद सदस्य ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की बताते हैं.

विदेशी कंपनियों का सहयोग

इस समय ब्रिटेन, फ्रांस व अमरीका की सात तेल कंपनियां भारत में तेल का पता लगाने की संभावनाओं के बारे में सरकार के साथ संपर्क किए हुए हैं. पिछले दिनों कुवैत के अमीर शेख जबेर अल अहमद अल जबेर अल साहब ने भी अपनी भारत यात्रा के दौरान तेल की खोज में भारत को सहयोग देने का प्रस्ताव किया था.

इस समय जो कंपनियां सरकार के संपर्क में हैं उन में फिलिप्स पैट्रोलियम, ब्रिटिश पैट्रोलियम, शैल, अमीको, फ्रांस की

पश्चिमी बंगाल में बर्दवान के निकट तेल की खोज के सिलसिले में खुदाई (ड्रिलिंग) करने के लिए कार्यरत रिग. यह 147 फुट ऊंचे इसपाती मीनार से काम कर रही है.

लियम के अध्यक्ष तथा ओक्सीडेंटल पैट्रोलियम के प्रतिनिधि ने श्री गोयनका के साथ इस विषय पर प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से भेंट की थी. श्रीमती गांधी ने उन्हें उचित प्रस्ताव तैयार करने तथा आगे संबंधित मंत्रालय से बातचीत करने को कहा था. उस समय श्री प्रकाशचंद्र सेठी तेल से संबद्ध मंत्रालय भी देख रहे थे. बताया जाता है कि श्री सेठी उन दिनों एक तो काफी चिड़चिड़े हो रहे थे तथा दूसरे उन्हें श्री गोयनका पसंद नहीं थे. अतः उन्होंने इन लोगों में कोई विशेष

सी. पी. एफ. तथा मैक्सिको की कंस्ट्रकशंस प्रोटैक्सा प्रमुख हैं. बर्मा आयल की भी पेशकश है, मगर उस का सहयोग इस दिशा में संभवतः न हो सकेगा, क्योंकि इस कंपनी को अभी असम से ही फुरसत नहीं मिल रही, जहां आयल इंडिया के साथ इस का 50 प्रतिशत का साझा है.

कई क्षेत्रों में इस बात की भी आलोचना की जा रही है कि श्री गोयनका के अतिरिक्त अन्य भारतीय उद्योगपति इस दिशा में कोई रुचि नहीं ले रहे हैं. इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बात की आलोचना करने से पहले प्रायः यह बात नहीं देखी जाती कि भारत में तेल की खोज का काम अत्यंत महंगा सौदा है. एक कुंए की खुदाई पर लगभग आठ करोड़ रुपए का खर्च आता है. अगर खुदाई के बाद भी तेल न मिले तो इस आठ करोड़ का एक बड़ा भाग व्यर्थ चला जाता है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतरा सरकारीकरण का

इस के अलावा उद्योगपतियों के इस कार्य में रुचि न लेने का एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि उद्योगपति धन खर्च कर के तेल की खोज में सफल भी हो जाएं तो उन्हें हर समय सरकारीकरण का खतरा लगा रहता है. सरकारीकरण की धौंस दे कर सरकार उन्हें हर समय दबा कर रखने का प्रयास करती है.

इस संबंध में निश्चय से कुछ नहीं कहा जा सकता.

भारत में तेल का उत्पादन

इस समय भारत में बंबई के निकटवर्ती गहरे समुद्र में तेल का उत्पादन हो रहा है. पिछले वर्ष इस क्षेत्र से 44 लाख टन कच्चा तेल निकाला गया. दैनिक औसत रही 88,000 बैरल. इस उत्पादन को 1,00,000 बैरल प्रति दिन करने के प्रयास तेजी से किए जा रहे हैं. इस वर्ष के अंत तक उत्पादन 1,40,000 बैरल प्रति दिन तथा 1981-82 में 1,80,000 बैरल व 1982-83 के मध्य तक 2,20,000 बैरल कच्चा तेल प्रति दिन उत्पादन होने लगे तो कुल उत्पादन 4,20,000 बैरल प्रति दिन होगा जो उस समय की मांग का 50 प्रतिशत ही हो पाएगा.

टेमा (घाना) में निर्मित एक तेल शोधक कारखाना.

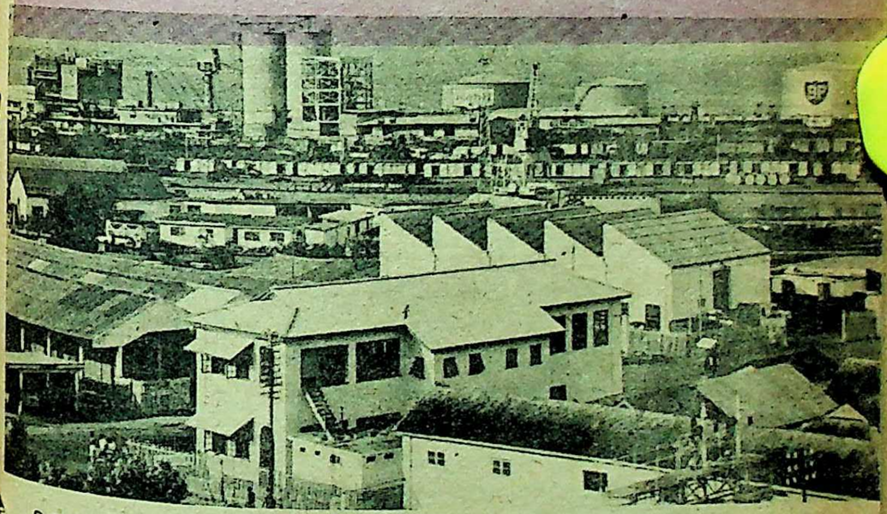

विदेशी तेल कंपनियों के बारे में अनुमान है कि उन्हें तेल की खोज के लिए अगले सात वर्षों में 3,000 से 5,000 करोड़ रुपए के बीच व्यय करना होगा. इतना सब होने पर भी भारत को तेल के मामले में आत्मनिर्भरता प्राप्त होगी अथवा नहीं,

इस प्रकार आत्मनिर्भरता का लक्ष्य निकट नहीं दिखाई देता, क्योंकि तेल की खोज में जैसेजैसे विलंब होता जा रहा है, मांग उतनी ही तेजी से बढ़ती जा रही है. यदि आजादी के तुरंत बाद ही इस समस्या को गंभीरता से लिया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो शायद आज भारत तेल के मामले में काफी आगे होता. मगर उस समय राजनीतिबाजों को इस बारे में सोचने की शायद फुरसत नहीं थी. उन की इस लापरवाही का ही परिणाम है कि आज भारत को भारी तेल संकट के दौर से गुजरना पड़ रहा है.

समाचार है कि तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग ने अपनी 1980-85 की पंचवर्षीय योजना में 3,000 करोड़ रुपए खर्च कर के समुद्र में 95 जगह तेल की खोज करने तथा 200 पूर्ण विकसित तेल कुंए तैयार करने और स्थल पर 250 जगह तेल की खोज करने व 300 पूर्ण विकसित तेल कुंए बनाने का कार्यक्रम बनाया है.

इस कार्यक्रम में कितनी सफलता मिलेगी यह तो अभी तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग स्वयं भी नहीं बता पाएगा, मगर एक बात स्पष्ट है कि भारत के आयोग योजनाएं तो बड़ीबड़ी बनाते हैं मगर उन पर अमल किस हद तक होता है यह सभी जानते हैं. इस का एक मुख्य कारण यह है कि भारत में योजना पर खर्च होने वाले धन का एक बड़ा भाग मूल योजना पर खर्च न हो कर अफसरों, कर्मचारियों के यात्रा भत्तों, उन के रखरखाव पर खर्च हो जाता है.

पिछले साल भारत में 300 लाख टन तेल की आवश्यकता थी. जिस का लगभग दो तिहाई भाग विदेशों से आयात करना पड़ा था. 1984 तक भारत की कच्चे तेल (अशोधित) की जरूरत 420 व 430 लाख टन के बीच होने का अनुमान है. अगर भारत तब तक अपने उत्पादन को 23 लाख बैरल प्रति दिन कर लेता है तो यह भारत के लिए पर्याप्त होगा. तेल उत्पादन (ओपेक) देश इस समय 300 लाख बैरल तेल प्रति दिन निकालते हैं.

ओपेक देशों द्वारा निर्धारित वर्तमान मूल्यों पर अगर भारत को सारा तेल बाहर से मंगाना पड़े तो इस पर कुल खर्च 64 करोड़ रुपए प्रति दिन के आसपास होगा. अपने तेल बजट को 40-50 प्रतिशत तक लाने के लिए भारत को अपना तेल उत्पादन 120 लाख टन वार्षिक करना होगा. अगले 20 सालों में यह उत्पादन 550-700 लाख टन करना होगा.

संदेह यही है कि क्या भारत इतना उत्पादन कर पाएगा? यों अनाज के मामले में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर लेने के बाद यह असंभव नहीं कि वह तेल के मामले में आत्मनिर्भर न हो सके. भारत में समुद्र तथा जमीन के भीतर तेल के विशाल भंडार होने का अनुमान है. बस, आवश्यकता इस बात की है कि परिश्रम एवं लगन से कार्य किया जाए. पर सरकारी अमले में प्रायः इसी का अभाव है.

इस के अतिरिक्त भारत के तेल में आत्मनिर्भर होने के बारे में एक और बाधा आ सकती है. वह यह कि यहां राजनीतिबाज महत्वपूर्ण फैसले करते समय देश हित को कम तथा निजी एवं दलगत स्वार्थ को ज्यादा ध्यान में रखते हैं. मंत्रियों के व्यक्तिगत मतभेद और निजी संबंध भी कई योजनाओं में आड़े आ जाते हैं.

भारत इस समय तेल के गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है तथा अभी इस से छुटकारा पाने के आसार नजर नहीं आ रहे. हां, कभीकभी इस संकट के और अधिक बढ़ने के आसार नजर आने लगते हैं.

अतः इस समय जरूरत इस बात की है कि भारत को तेल के मामले में आगे बढ़ाने के लिए हर संभव उपाय किए जाएं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता ने लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए

द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए

तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ता

लेख • प्रदीप शालिग्राम

घर की सुरक्षा और शौक के लिए लोग कुत्ता पालते हैं. क्या कभी उन्होंने यह भी जानना चाहा है कि उन के मित्र व पड़ोसियों की उन के इस शौक के बारे में क्या राय है?

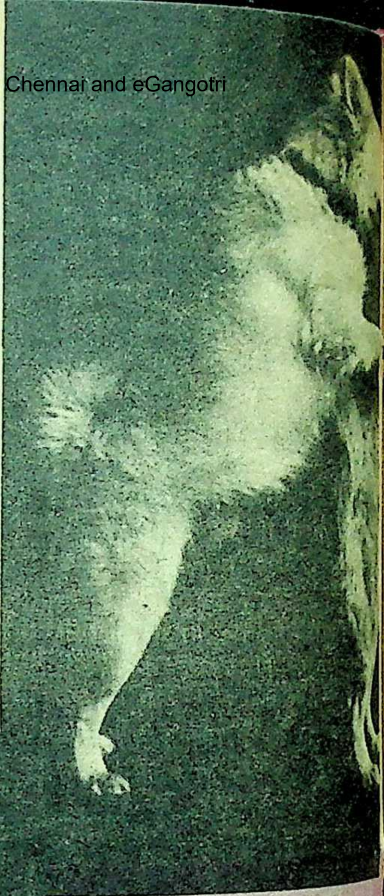

प्रायः लड़कियां व महिलाएं कुत्ता शौक के लिए पालती हैं.

हम सब के लिए कुत्ता कोई अजीब प्राणी नहीं है. कुत्ते का उल्लेख भारतीय साहित्य में शुरू से मिलता है.

आज महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि कुत्ता कितना पुराना जानवर है? प्रश्न है लोगों में इसे पालने का शौक आखिर क्यों है?

कुछ वर्ष पूर्व जब मैं पहली बार शहर आया (क्योंकि मैं गांव का रहने वाला हूं) तो किसी बंगले के प्रवेश द्वार पर 'कुत्ते से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ सुंदर बच्चों और सुंदरियों की प्रतियोगिताओं की तरह अब बड़ेबड़े नगरों में स्वस्थसुंदर कुत्तों की प्रतियोगिताओं का चलन भी बढ़ता जा रहा है.

सावधान' की तख्ती देख कर मुझे यही लगा कि घर के किसी नटखट बच्चे का नाम होगा. किंतु लगभग हर बड़े बंगले या कोठी में ऐसी तख्तियां देखदेख कर अनुभव से मैं यह जान गया कि इस मकान के मालिक का एक पालतू कुत्ता है, जिस से सावधान रहने की बात कही गई है.

कुत्ता पालने की वजह भी अलगअलग पाई. चोरों से सुरक्षा तो प्रमुख वजह है ही, कुछ लोग कुत्ते को भगवान का रूप मान कर भी घर में जगह देते हैं. जवान लड़कियां एवं महिलाएं कुत्ता शौक के लिए पालती हैं पर ज्यादातर लोग घर की रखवाली के लिए ही कुत्ता पालते हैं.

डाकिया कुत्ते के डर से पत्र अकसर दूर से ही अंदर फेंक देता है. उस का बस चले तो वह इस से भी बचने की कोशिश करे. ऐसे घरों में बाहर पत्र बाक्स टंगा है तो ठीक नहीं तो खत कचरे की टोकरी में गया समझो. रिश्तेदार भी यह कभी सीधे नहीं पूछेंगे, "कुत्ता मर गया या नहीं?" बल्कि कहेंगे, "आप का मोती कैसा है?"

जवाब मिलता है, "पहला वाला तो एकाएक कहीं चला गया. अब दो अल्सेशियन पिल्ले चार सौ रुपयों में लिए."

फिर तो पुराने वाले कुत्ते के जो किस्से सुनाए जाते हैं, वह किसी सगे रिश्तेदार के भी क्या सुनाए जाते होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पूरे 15 साDigitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri चोर कभी घर में नहीं आया आदिआदि.

कुत्ता पालने का सब से बड़ा लाभ जो मुझे समझ आया है, वह यह कि घर में कुत्ता हो तो फालतू लोग घर आ कर तंग नहीं करते. मेरे एक दोस्त ने जो पोस्टमास्टर हैं, कुत्ता पाला. वह उसे 'कालिया' कहते हैं. दफ्तर जाते समय वह कालिया को भी अपने साथ ले जाते. एक दिन की बात है कालिया उन की मेज के नीचे सोया पड़ा था कि एक प्राध्यापिका अपनी कुतिया को गोद में ले कर डाकघर तशरीफ ले आई. हमारा दोस्त जरा घुटा हुआ आदमी है. उन्हें कहने लगा, "अंदर आइए, चाय मंगाता हूं."

कुत्ता तो कुत्ता ही है

प्राध्यापिका के टामी के साथ अंदर प्रवेश करते ही कालिया ने जो छलांग लगाई तो सीधे टामी पर ही. फिर तो डाकघर में ऐसा शोर मचा कि पूछो मत. मनीआर्डर वाली खिड़की के लोग पैसे छोड़ कर भाग गए. कुत्तों की आवाज में हमारे

वाह रे कुत्ता प्रेम! पर यदि कुत्ते ने भी चुंबन ले लिया तो चौदह इंजेक्शन लगवाने की नौबत भी आ सकती है!

दोस्त की आवाज और टामी की मालकिन उस प्राध्यापिका की आवाज भी मिल जाने से पल भर के लिए मैं भी चकरा गया कि यह क्या हुआ.

जरा पहचानिए तो यह कुत्ता ही है या घर का कोई बड़ाबूढ़ा?

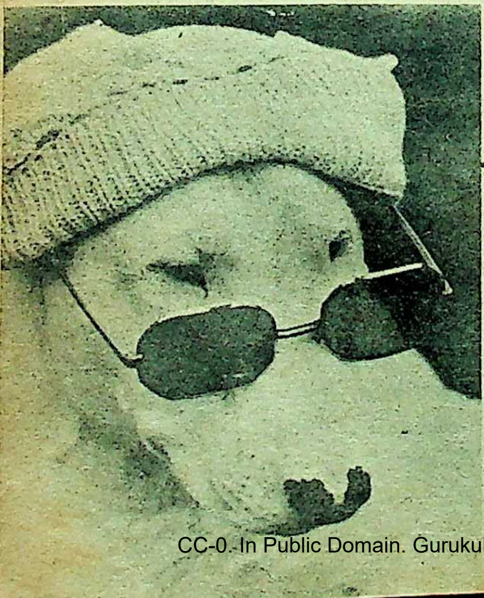

कुत्ता पालने का अंजाम

मकान मालिक नए किराएदारों को घर में बंधे कुत्ते के संबंध में पहले तो कोई सूचना नहीं देते, बाद में किराएदार को तंग करना हो तो कुत्ते से काम लेते है. कुत्ता पालने वालों के लड़केलड़कियों की शादियां भी अकसर बड़ी उम्र में ही होती देखी हैं. ऐसा क्यों होता है. उस का कारण मैं तो यही समझा हूं कि वर अथवा वधू वाले ऐसे घरों के दरवाजे खटखटाने में बहुत डरते हैं.

पिछली गरमियों की ही तो बात है. हमारे पड़ोस में रात के समय मेहमान आए. उस घर का कुत्ता बंधा था. इन दिनों अधिकतर लोग घर के बाहर आंगन में ही सोते हैं. मेहमान का भी वहीं प्रबंध किया गया. सुबह कुत्ते का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ते भी कई तरह के होते हैं—कुछ गलियों की खाक छानते फिरते हैं तो कुछ लोगों के चहेते बनते हैं.

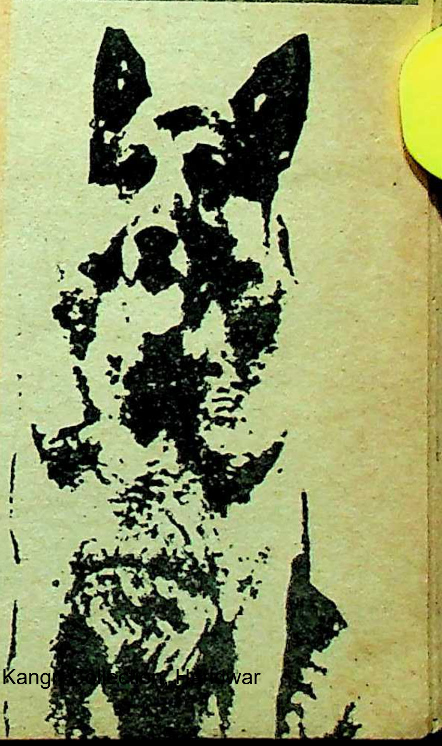

बंधन खुलते ही उस ने घर में एक अजनबी की उपस्थिति सहन नहीं की. मेहमान बेचारा यह कहता भाग गया, "कुत्ता आखिर कुत्ता ही है."

घनिष्ठ संबंधों को शिथिल करना हो तो वह भी कुत्ते की मदद से आसानी से हो जाता है. एक बार एक सज्जन ने मुझ से पूछा, "क्योंजी, वह जो रोजाना दो कुत्ते घुमाने ले जाते हैं. आप जानते हैं उन्हें?"

"क्यों?" मैं ने पूछा.

तब उन्होंने कहा, "आप उन से कह दीजिएगा कि उन का एक कुत्ता हमारे आंगन में रोजाना टट्टी कर जाता है और दूसरा गुलाब के पौधों को पानी देने में कमी नहीं करता. यह ठीक नहीं है."

कुत्ता ईमानदार प्राणी है, इस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्तों के ये ठाटबाट देख कर तो यही लगता है कि कुत्ते इनसानों से बेहतर जिंदगी गुजार रहे हैं, जब कि कई इनसान अभाव में अपना जीवन कुत्तों की तरह जी कर बसर कर रहे हैं.

[illegible] मालिक को उस से इतना प्यार होता है कि उस की मौत पर कुछ तो बेतहाशा रोते हैं. ऐसे ही एक अवसर पर मैं किसी के घर पहुंचा, पहले तो मामला समझ में नहीं आया. पता चला कल्पना मर गई. मैं भी उन के दुख में इस एहसास के साथ शामिल हो गया कि चलो इन के किसी दुख में तो काम आया. पर बाद में पता चला कि कल्पना उन की प्रिय कुतिया का नाम था.

इसी से याद आया कि कुत्तों के

नाम बड़े ही विचित्र होते हैं. मुझे एक दोस्त ने बताया, एक बार वह हेमा के साथ सैर पर गया. रास्ते में हेमा जंजीर छुड़ा कर भाग गई. वह 'हेमा, हेमा' चिल्ला कर कुतिया को बुलाने लगा. रास्ते से गुजरती एक लड़की ने--"शर्म नहीं आती"--कह कर मेरे उस दोस्त पर सैंडिल ही फेंक मारी.

मैं ने दोस्त को समझाया भी, "जब कुत्ते के नाम से ऐसे हादसे होते हैं तब तो कुत्तों से लगाव कम ही रखना चाहिए." पर उस पर कोई असर नहीं हुआ.

ऐसे ही एक बार मैं बड़े भाई के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ रात के समय हैदराबाद उन के दोस्त का घर ढूंढ़ने गया. गली के कुत्तों से बचतेबचते मकान खोज ही लिया. जैसे ही दोस्त को आवाज दी, तीन तगड़े कुत्ते दौड़ कर आए. यह देख कर हम दोनों भागने की फिराक में ही थे कि तभी उन का बेटा बाहर आया और हमें अंदर ले गया, किंतु कुत्तों का भौंकना जरा भी कम नहीं हुआ. मेरे भाई को पेशाब की हाजत हुई. जब वह बाहर आया तो कुत्ते पंक्ति में बैठे भौंक रहे थे. उन के घर से बाहर निकलने तक उन का भौंकना बंद नहीं हुआ. दोबारा ऐसी जगह फिर मैं कभी नहीं गया.

एक महोदय ने मुझ से कहा, "किसी दिन हमारे यहां चाय पर आओ न."

मैं ने पूछा, "आप के यहां कुत्ता है क्या?"

उन्होंने कहा, "वह कुछ नहीं करता, सिर्फ भौंकता है. आप बैठे रहें तो प्यार से कंधे पर पांव रखता है, हाथपांव चाटता है और मौका मिला तो काटता है." स्पष्ट है कि वह मुझे बुलाने में नहीं मुझे कभी न आने देने में दिलचस्पी ले रहे थे.

कुत्ता प्रेम ऐसा भी होता है

मैं ने एक ऐसी महिला देखी है जो अपने कुत्ते के साथ घंटों बातें करती थी. जैसे "अब छः नगर की बस आएगी. फिर हम घर जाएंगे. वहां हम तुम्हें दूध पिलाएंगे, खाना खिलाएंगे, नहलाएंगे," आदिआदि.

सड़कों पर दौड़ती कारों, मोटरों में अकसर कुत्ते के दर्शन होते हैं. करोड़ों गरीब इनसानों की तुलना में ये कुत्ते कहीं अधिक खुशकिस्मत हैं.

एक बार मुझे एक साहब ने कुत्ते का फोटो लेने अपने बंगले पर बुलाया. मैं ने स्पष्ट कहा, "कुत्ते के मरने पर ही फोटो लूंगा, क्योंकि दो वर्ष पूर्व जब मैं ऐसे ही उस के एक जातभाई का फोटो लेने गया

कुत्ते को नहलाने के बाद वह गंदा भले ही न लगे पर 'कुत्तापन' तो उस में ज्यों का त्यों बरकरार रहेगा ही.

था तो कुत्ता तो बंगले के चारों ओर भौंकता प्रदक्षिणा कर रहा था, मैं उस के पीछेपीछे भागता फिर रहा था और मेरे पीछे सारे घर वाले. कुत्ता कैमरा क्लिक करने का मौका ही नहीं दे रहा था."

अपने मालिक का आदेश न मानने वाले ऐसे बदजात कुत्ते लोग क्यों पालते हैं, इस का ज्ञान मुझे उस दिन हुआ, जब मैं ने अपनी एक तसवीर में सिर्फ कुत्ते की दुम ही देखी.

कुत्तों की संख्या आज इतनी बढ़ गई है. फिर भी चोरी की खबरें पढ़ कर हैरानी होती है. पता नहीं ऐसे वक्त कुत्ते क्या करने लगते हैं.

कुत्ते पालने वालों का घर छोड़ कर निकलना भी जरा टेढ़ी खीर है. फिर भी यह देख कर हैरानी होती है कि लोग खूब कुत्ते पालते हैं.

संपतरामजी की लड़की को कुत्ते ने काट लिया. किंतु लड़की की जिद के कारण उन्होंने कुत्ता पालना न छोड़ा. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कहा तो कहने लगे, "भई, लड़की की खुशी के लिए ही तो हम ने कुत्ता पाला है." यह बताते समय उन का सीना कोई साढ़े तीन इंच फूल गया था. उन्हें बच्ची को कुत्ते द्वारा काट लिए जाने की चिंता नहीं थी.

एक परिचित रिसर्च स्कालर दो दिन से बहुत खिन्न थी. मैं ने सहज स्नेह वश कारण पूछ लिया. उस ने रुंधे गले से कहा, "हमारी लीना कल चल बसी. पिताजी भी जोरजोर रो रहे हैं." अधिक पूछताछ करने पर पता चला कि लीना उन के घर की लाडली कुतिया थी.

एक बार हमारे पड़ोसी परिवार सहित फिल्म देखने गए. जाते समय अपना कुत्ता हमारे घर छोड़ गए. वे रात के एक बजे लौटे. तब तक उस कुत्ते ने भौंकने के सारे रिकार्ड तोड़ दिए. उस ने रोटी सूंघ कर छोड़ दी तो मैं ने उसे दूध डाला. किंतु फिर भी उस का भौंकना बंद नहीं हुआ. नींद से परेशान हो कर मैं ने डंडा संभाला तो वह इस तरह गुर्राने लगा कि मुझे अपना वह इरादा छोड़ना पड़ा. अलबत्ता भविष्य में किसी का कुत्ता संभालने से तोबा कर ली. पड़ोसी लौटे तो उन्होंने कुत्ते को भूखा-प्यासा भौंकते देखा तो बजाए मेरी हालत पर तरस खाने के मुझ से ही झगड़ पड़े.

आखिर कुत्ते के कारण हम उन के हमेशा के लिए दुश्मन बन गए.

इस घटना के बाद उन्होंने कभी सिनेमा तो क्या नातेरिश्तेदारों के यहां जाना भी बंद कर दिया. उन की श्रीमतीजी भाई की शादी थी पर कुत्ते की वजह से वह शादी में भी नहीं गई. देखा, यह छोटा सा मरियल जानवर क्याक्या गुल खिलाता है?

एक बार मुझे गला फाड़ कर चिल्लाने वाले एक व्यक्ति से मिलने का अवसर मिला. उन के घर पहुंचा तो द्वार पर ही कुत्ते के दर्शन हुए. वह मुझ पर ऐसे झल्लाए कि जंजीर से बंधा उन का कुत्ता तक हड़बड़ा गया. मैं सोचने लगा, कुत्ते का काम यह हजरत स्वयं कर लेते हैं, फिर भी कुत्ता पालते हैं. सोचा फाटक पर 'कुत्ते से सावधान' का बोर्ड हटा कर 'मालिक से सावधान' लिख देना चाहिए.

आज भी कई इनसान अभाव में अपना जीवन जी कर कुत्तों की जिंदगी बसर कर रहे हैं. उन्हें हर जगह दुतकार खानी पड़ती है. मेरा खयाल है कि कुल मिला कर आज कुत्ते इनसानों से बेहतर जिंदगी गुजार रहे हैं. कभी सोचता हूं, मैं ने इनसान हो कर बहुत बड़ा गुनाह किया. काश, मुझे भी कुत्ते का जन्म मिला होता तो मैं किसी बंगले में मौज से रह रहा होता और खूब गोरी सी लड़की मेरी मौत पर दो आंसू तो बहाती. •

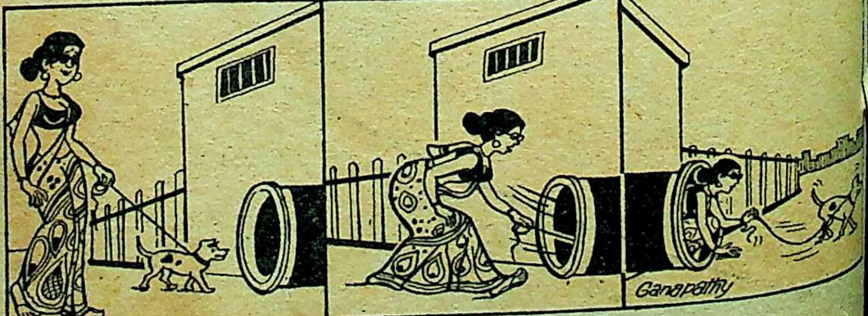

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्नाटा भाता है

—सरल जैन

जाने क्यों सन्नाटा अब मुझ को भाता है.
लगता है यूं ही मैं
बैठी चुपचाप रहूं,
स्वयं ही सिमट कर
बस अपने आप रहूं.
हर क्षण मेरे लिए गीत हुआ जाता है.
उजियारा निरर्थक
और [illegible] अंधियारा,

अच्छा लगता मुझ को
हर सपना बंजारा.
बाहों के झूले में समय झूल जाता है.
पर्वत से मन फिसला
नदिया सा बहा नहीं,
जो कुछ भी कहना है
तुम से वह कहा नहीं.
फूल अजन्मा, लेकिन महकमहक जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देश वासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साज-सज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसे लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्र-पत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों की 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा :

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंत से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार

सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर या चैक इस पते पर भेजें

दिल्ली प्रेस, 3 ई, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश की वापसी
अमिताभ की विदाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात साल पहले बनी 'नमकहराम' दो कलाकारों के फिल्म जीवन के लिए काफी महत्वपूर्ण सिद्ध हुई. इसी फिल्म ने राजेश खन्ना की स्टार की पदवी से विदाई और अमिताभ बच्चन के उस पद पर पहुंचने की आधारशिला रखी. राजेश तब ज्यादा चलने वाला, ज्यादा पसंद किया जाने वाला और ज्यादा बिकने वाला स्टार था. अमिताभ तब तक अभिनेता के रूप में अपनी साख जमा चुका था, लेकिन स्टार बनने की उस की ललक पूरी नहीं हो पाई थी.

राजेश सफलता के नशे में चूर था. हाल ही में उस ने कहा है, "उन दिनों मैं यह सोचने लगा था कि मैं सम्राट हूं. मेरी तरक्की कोई नहीं रोक सकता. मैं कोई भी गलत काम नहीं कर सकता. मैं ने तब धड़ाधड़ वाहियात फिल्में साइन कर लीं. इस विश्वास में कि मेरा जादू उन फिल्मों को चला देगा." जरूरत से ज्यादा पैदा हुए इसी आत्मविश्वास ने राजेश को नंबर एक की स्थिति से उठा कर नीचे फेंक दिया. पुराने दोस्तों से उस की अनबन हो गई और अहं की वजह से नए दोस्त वह बना नहीं सका.

उधर अमिताभ शुरू के फिल्मी जीवन में जरूरत से ज्यादा विनीत हो गया. हर कीमत पर कोई भी समझौता

एक समय था जब राजेश सुपर स्टार था और अमिताभ गुमनामी के अंधेरे में पड़ा था. फिर हालात इस से बिलकुल उलटे हो गए. पर क्या अब अमिताभ और राजेश का बदला हुआ व्यवहार फिर से शुरू के हालात पैदा कर रहा है?

लेख • मणि वत्सल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने को वह तैयार रहता. इस निर्ममता से उस का व्यवहार ऐसा रहता मानो सैक्रीन से भी ज्यादा मीठा हो. राजेश से खार खाए बैठे निर्माताओं को अमिताभ भा गया और फिर एक ऐसा सिलसिला शुरू हुआ जिस में राजेश को दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया गया और अमिताभ सब का प्यारादुलारा बन गया.

अब कहानी फिर उलटी दिशा में शुरू

अब कहानी उलटी दिशा में शुरू हो रही है. जिस घमंड ने राजेश की सत्ता उलट दी थी, उसी घमंड ने अब अमिताभ के शासन में भी दरारें पैदा करनी शुरू कर दी हैं. एक ओर अमिताभ बेहद घमंडी और असहयोगी हो गया है तो दूसरी ओर राजेश बेहद नम्र, विनीत व सहयोगी बन गया है. इसलिए वह अब निर्माताओं की पसंद बनता जा रहा है.

ऐसा क्यों हुआ? इस के लिए 'नमकहराम' के दिनों से बात शुरू करनी जरूरी है. राजेश व अमिताभ सब से पहले एक साथ 'आनंद' में आए. यह फिलम पूरी तरह से राजेश की थी लेकिन अमिताभ अपनी एक अलग पहचान बना पाने में जरूर सफल हो गया.

उन दिनों अमिताभ कड़की की हालत में था और महमूद के घर पर रह रहा था. 'आनंद' जब रिलीज हुई तो महमूद की दूर की रिश्ते की एक बहन पाकिस्तान से आई. उस ने फरमाइश की, "मैं तो राजेश खन्ना की कोई फिलम देखना चाहती हूं. सुना है वह काफी अच्छा कलाकार है." उस ने 'आनंद' देखी. जब सिनेमाघर से बाहर निकली तो काफी गुमसुम सी थी. उस ने कहा, "सचमुच राजेश अच्छा कलाकार है. कितना गुमसुम सा लेकिन सारी बातें मानो उस की आंखें कह देती हैं."

महमूद ने ठहाका लगाते हुए कहा, "अरे बाबा, वह राजेश थोड़े ही है. राजेश तो वह था जो पूरी फिलम में चपरचपर रोल रहा था."

'बावर्ची' में राजेश शतप्रतिशत था तो अमिताभ सिर्फ कुछ प्रतिशत ही (इस फिलम में पात्रों का परिचय उसी ने कराया था). फिलम में जया भादुड़ी भी थी जो 'गुड्डी' के दिनों से अमिताभ को 'लंबूजी' कह कर उस के काफी निकट पहुंच चुकी थी. 'गुड्डी' में पहले अमिताभ बच्चन था लेकिन कुछ रीलें बनने के बाद वितरक की सलाह पर उसे हटा दिया गया. लेकिन फिलम के निर्देशक हृषिकेश मुखर्जी को अपनी प्रिय अभिनेत्री जया का यह 'ब्वाय फ्रैंड' कुछ ज्यादा ही भा गया. कहा जाता है कि 'आनंद' का कम प्रभावशाली रोल हृषि दा ने अमिताभ को इस वायदे के साथ दिया था कि अगली फिलम में वह उसे जबरदस्त रोल देंगे.

'नमकहराम' में दो भूमिकाएं थीं–एक गरीब दोस्त की और दूसरी घमंडी अमीर व्यक्ति की, जिसे मामूली सा अपमान भी बेचैन कर डालता है. अमिताभ गरीब दोस्त की भूमिका करना चाहता था, क्योंकि कहानी के अनुसार इस पात्र को अंत में मरना था और 'आनंद' के अनुभव से अमिताभ ने सीख लिया था कि हृषि दा की फिलमों में मरने वाला पात्र ही ज्यादा सफल हो पाता है.

पासा पलट गया

हृषि दा ने राजेश खन्ना को भी कहानी सुनाई और उस से कहा, "तुम गरीब दोस्त वाला रोल करो."

राजेश घमंडी दोस्त का रोल करना चाहता था. हृषि दा ने उसे समझाया, "यह एंग्री मैन का रोल है. तुम्हारी इमेज पर फबेगा नहीं. इसे अमित को ही करने दो."

"लेकिन यही रोल ज्यादा जोरदार हैं," राजेश ने कहा.

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?" हृषि दा ने पूछा. इस के बाद राजेश कुछ नहीं बोला और फिलम पर काम शुरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया. दोनों [illegible] के विरुद्ध रोल करने उतरे. अमिताभ ने अपना अनुभव बताते हुए कहा, "पहले दिन जब 'नमकहराम' के सेट पर मैं पहुंचा तो हृषि दा ने मुझे राजेश के फोटो के सामने रोते हुए कुछ डायलाग बोलने को कहा. मैं समझ गया कि राजेश फिर जीत गया है."

लेकिन हृषिकेश मुखर्जी ने राजेश को आसानी से जीतने नहीं दिया. पहले फिल्म में अमिताभ वाला रोल कम था, लेकिन बाद में उसे काफी बढ़ा दिया गया. यहां [illegible] राजेश को भी एहसास होने लगा कि सुपर स्टार होने के बावजूद एक नए से लड़के के सामने उस की उपेक्षा की जा रही है.

फिल्म आधी बन चुकी थी. तभी अमिताभ व राजेश में अहं का टकराव शुरू हो गया. फिल्म के सेट पर एक दिन अमिताभ की मां तेजी बच्चन ने पूछा, "क्यों लल्ला, क्या तुम कभी राजेश खन्ना नहीं बन सकोगे?"

अमिताभ ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मन ही मन उस ने राजेश के साम्राज्य को ध्वस्त करने का संकल्प कर लिया. 'नमकहराम' की हीरोइन रेखा ने अमिताभ और राजेश के

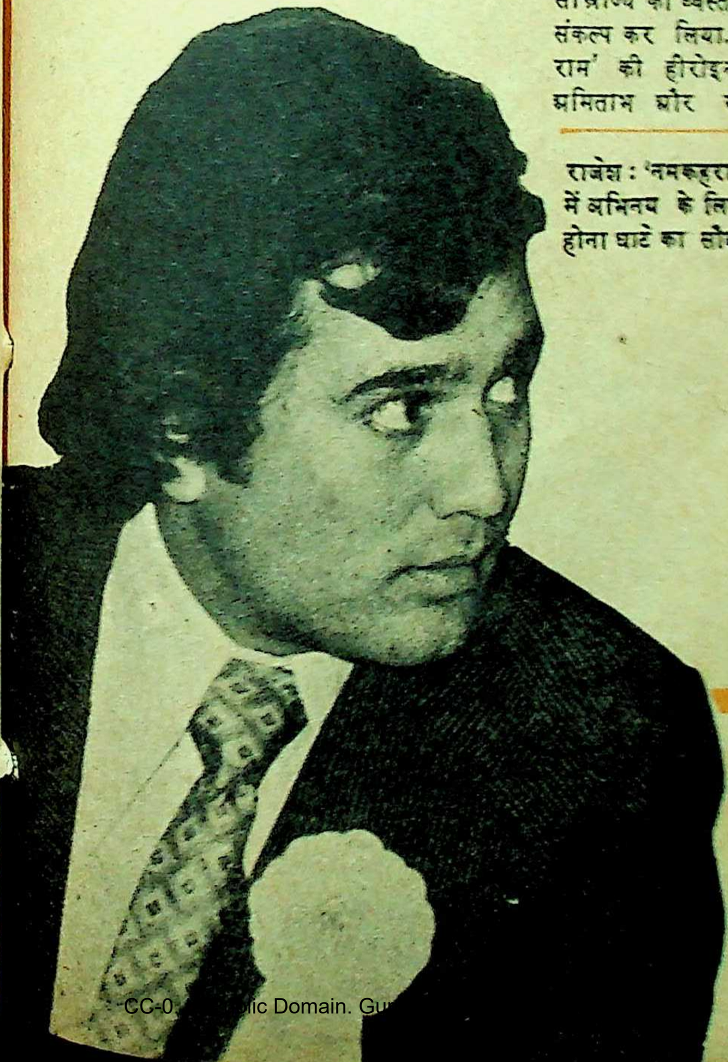

राजेश : 'नमकहराम' फिल्म में अभिनय के लिए तैयार होना घाटे का सौदा रहा.

CC-0. ...lic Domain. Gu...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टकराव में राजेश का साथ दिया. कुछ ही दिन पहले उसी के इशारे पर 'दुनिया का मेला' से अमिताभ को हटा कर संजय को ले लिया गया था.

'नमकहराम' पूरी हुई. अमिताभ का रोल राजेश खन्ना से कम महत्वपूर्ण नहीं रहा. राजेश को उस के चमचों ने समझा दिया कि हृषिकेश मुखर्जी ने उस के साथ धोखा किया है. लिहाजा राजेश ने कसम खा ली कि वह हृषि दा की किसी फिल्म में काम नहीं करेगा. दोनों की अंतिम फिल्म 'नौकरी' थी जो छः साल पहले शुरू हुई थी और आज तक पूरी नहीं हो सकी है.

हृषि दा ने एंग्री यंगमैन की जो इमेज अमिताभ को दी वही उसे स्टार बनाने में मददगार सिद्ध हुई. 'जंजीर' व 'अभिमान' एक साथ ही रिलीज हुईं. सफल दोनों ही फिल्में रहीं लेकिन 'जंजीर' के गुस्सैल और प्रतिशोध की आग में जल रहे अमिताभ

अमिताभ व जया : जोड़ी लगातार सफल होती रही.

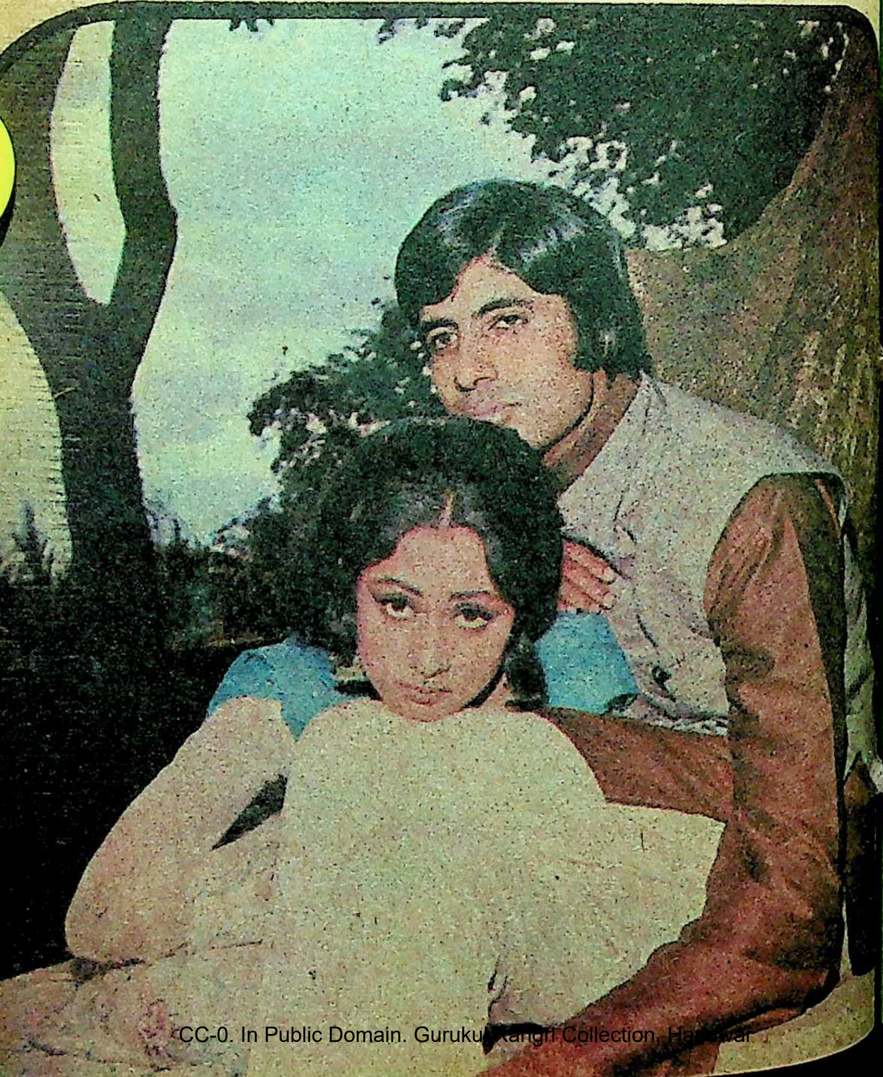

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

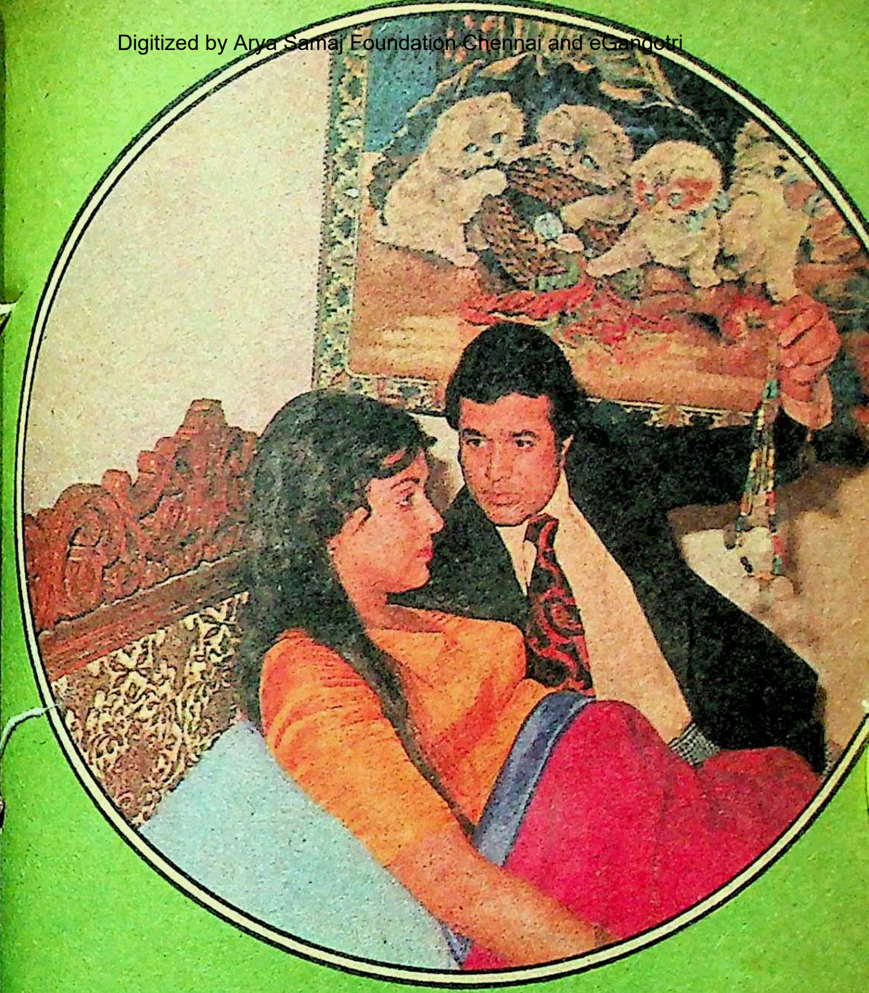

राजेश व हेमा : असफलता के दिनों में न अपना नाम काम आया न प्रसिद्ध अभिनेत्रियों का साथ.

को दर्शकों ने ज्यादा पसंद किया.

'नमकहराम' के बाद राजेश की जया भादुड़ी से ठन गई. उस ने जया के साथ फिर कभी काम न करने का फैसला कर लिया. वजह उस ने यह बताई, "जया 'बावर्ची' में मेरी बहन बनी थी. अब भला मैं उस के साथ रोमांटिक रोल कैसे कर सकता हूं?" लेकिन असलियत यह थी कि अमिताभ की वजह से ही राजेश ने जया से अनबन कर ली थी.

'इत्तफाक' से राजेश के खास दोस्त बन जाने वाले यश चोपड़ा की निर्माता के रूप में पहली फिल्म 'दाग' के प्रदर्शित होते ही कई घटनाएं एक साथ घट गई. फिल्म में राखी व शर्मिला टैगोर दोनों थीं. दोनों के बीच ही भूमिकाओं को ले कर शीतयुद्ध चला, जिस में राजेश ने राखी का साथ दिया.

जिस राजेश के साथ उस के शुरू के फिल्मी जीवन में शर्मिला ने 'आराधना'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की थी, उस के इस रवैए ने शर्मिला को काफी नाराज कर दिया. बाद में तो राजेश ने शर्मिला के साथ किसी और फिल्म में काम करने से साफ मना कर दिया.

'दाग' के बाद राजेश ने अंजू महेंद्र के साथ छः साल पुराने संबंध तोड़ कर 'बाबी' की तोप नायिका डिंपल से शादी कर ली. इस से ऋषि कपूर व राजेश के बीच भी टकराव शुरू हो गया. सिंपल (डिंपल की बहन) के साथ खलनायक रंजीत के कथित संबंधों की वजह से राजेश ने उस से भी दुश्मनी मोल ले ली.

'आप की कसम' में संजीवकुमार व 'प्रेम कहानी' में शशि कपूर को यह शिकायत रही कि राजेश ने उन के कई अच्छे सीन कटवा दिए. इस से राजेश की इमेज बिगड़ती गई. सलीम जावेद के साथ लड़ाई ने स्थिति और बिगाड़ दी.

राजेश से सभी नाखुश

राजेश के लिए सलीम जावेद ने 'हाथी मेरे साथी' लिखी थी, लेकिन तब वह स्टार के सामने बोल सकने की हालत में नहीं थे. 'हमशक्ल' के निर्माण के दौरान भी राजेश ने सलीम जावेद को अच्छा नाच नचाया.

'भोलाभाला' भी सलीम जावेद ही लिख रहे थे. वे चाहते थे कि फिल्म में डाकू वाला रोल सुनील दत्त या विनोद खन्ना करे. लेकिन राजेश इस बात पर अड़ गया कि वही दोनों रोल करेगा. बाद में भी उस ने फिल्म में हस्तक्षेप करना नहीं छोड़ा. लिहाजा सलीम जावेद ने फिल्म छोड़ दी. यह फिल्म अभी तक पूरी नहीं हो सकी है.

'दाग' के बाद जब 'दीवार' की योजना चल रही थी तभी एक दिन राजेश ने जावेद के झापड़ मार कर इस लेखक जोड़ी के साथ अपनी दुश्मनी को नया रूप दे दिया. 'दीवार' का निर्देशक यश चोपड़ा राजेश खन्ना को फिल्म में लेना चाहता था लेकिन सलीम जावेद ने शर्त रखी, "या तो फिल्म में हम रहेंगे या राजेश."

तब तक 'जंजीर' में अमिताभ व सलीम जावेद की जोड़ी हिट हो गई थी. इसलिए निर्माता गुलशन राय ने अमिताभ को राजेश की जगह चुनने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई.

अमिताभ अच्छा स्टार या अभिनेता?

'जंजीर' के बाद जहां अमिताभ को हृषि दा का सहारा मिला वहीं कई सफल निर्माता निर्देशकों ने भी उसे आगे बढ़ाने में मदद की. अमिताभ को ले कर तो हृषि दा व व्यावसायिक निर्माताओं के बीच अच्छाखासा विवाद तक छिड़ गया.

हृषि दा ने कहा—"अमिताभ बहुत अच्छा एक्टर है, लेकिन स्टंट फिल्मों में उस की प्रतिभा का सिर्फ पांच प्रतिशत ही इस्तेमाल किया जा रहा है."

जवाब दिया मनमोहन देसाई ने-"हो सकता है कि हृषि दा अमिताभ की शतप्रतिशत प्रतिभा इस्तेमाल करते रहे हों, लेकिन पांच प्रतिशत प्रतिभा का इस्तेमाल करने वाले फार्मूला फिल्मों के निर्माताओं ने ही उसे स्टार बनाया है और दौलत व शोहरत दी है."

अमिताभ इस विवाद में कभी नहीं उलझा. वह हृषि दा व मनमोहन देसाई दोनों के साथ काम करता रहा.

मनमोहन देसाई ने 'सच्चा झूठा' व 'रोटी' राजेश के साथ की थी, लेकिन अमिताभ का साथ होते ही उस ने फैसला कर लिया कि उस की हर फिल्म का हीरो अमिताभ ही होगा. ऐसा ही फैसला प्रकाश मेहरा, राकेशकुमार व गुलशन राय और यश चोपड़ा जैसे लोगों ने कर लिया.

राजेश को जी. पी. सिप्पी ने 'राज' में पहली बार मौका दिया था. फिर 'बंधन' व 'अंदाज' में भी वह दिखाई दिया, लेकिन 'अंदाज' के बाद से सिप्पी कैंप में सलीम जावेद का प्रवेश हो गया और उन्होंने राजेश को न तो 'सीता और गीता' में आने दिया और न ही 'शोले' व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमिताभ [illegible] के [illegible] पर चलने से कहीं फिर से गुमनामी के अंधेरे में न खो जाए.

बन रही 'शान' में आने दिया. शक्ति सामंत राजेश का दोस्त व वितरण के धंधे में हिस्सेदार भी था, लेकिन अपनी फिल्म 'बरसात की एक रात' व बाहर की फिल्म 'दि ग्रेट गैंबलर' के लिए उस ने अमिताभ को चुना. नरेंद्र बेदी को निर्माता राजेश ने ही बनाया था, लेकिन 'बेनाम' व 'अदालत' में राजेश की जगह अमिताभ को दिलाने में उस ने ज्यादा दिलचस्पी ली. यश चोपड़ा ने भी अमिताभ का सहारा ले लिया.

राजेश पतन की ओर

धीरेधीरे वे सभी दोस्त राजेश से अलग हो गए जिन्होंने उस का कैरियर बनाने व संवारने में मदद दी थी. इस के साथ ही एकएक कर के उस की फिल्में पिटने लगीं. उस ने अपना पारिश्रमिक कम कर दिया लेकिन तब भी उसे अच्छी फिल्में नहीं मिलीं. धीरेधीरे चमचों ने भी साथ छोड़ना शुरू कर दिया और एक दिन ऐसा आया कि वह बिलकुल अकेला रह गया.

उधर अमिताभ नंबर एक स्थिति पर पहुंच गया था. शशि कपूर व विनोद खन्ना के साथ उस की अच्छी जोड़ी बन गई थी. उस की फिल्में भी सफल होने लगी थीं. शुरू में अमिताभ को काफी अपमानित होना पड़ा था. इसलिए लोगों को भरोसा था कि सफलता उस का दिमाग नहीं बिगाड़ेगी.

लेकिन अमिताभ का दिमाग बिगड़ गया. पहले उस ने प्रेस से नाराजगी मोल ली, प्रेस रिपोर्टरों को व प्रेस फोटोग्राफरों को सेट पर न आने देने की उस ने सख्त हिदायत दे दी. फिर शुरू हुआ पैसे के मामले का विवाद. स्टार बन जाने के बाद उस ने अपने पुराने साथियों से कहा—"अब मैं नई शर्तों पर नए पारिश्रमिक के हिसाब से फिल्मों में काम करूंगा."

कहा जाता है कि 'मुकद्दर का सिकंदर' के बाद उस ने प्रकाश मेहरा से उस की अगली फिल्म में काम करने के लिए 25 लाख रुपए मांगे. वितरक, निर्माता गुलशन राय ने तो साफ कहा, "अमिताभ बदल गया है. अब वह फिल्म में काम करने का जितना पैसा हम से मांग रहा है, वह अब तक हमारी पिछली फिल्मों के लिए ली गई रकम से पांच गुना ज्यादा है."

राकेशकुमार ने 'खून पसीना' के बाद फैसला किया कि वह अमिताभ वाली फिल्में ही लेगा. लेकिन एक घटना के बाद से उस ने यह हठ छोड़ दी है. हुआ यह कि एक दिन अमिताभ के घर उस की बच्ची को राकेशकुमार ने गोद में उठा

(शेष पृष्ठ 112 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

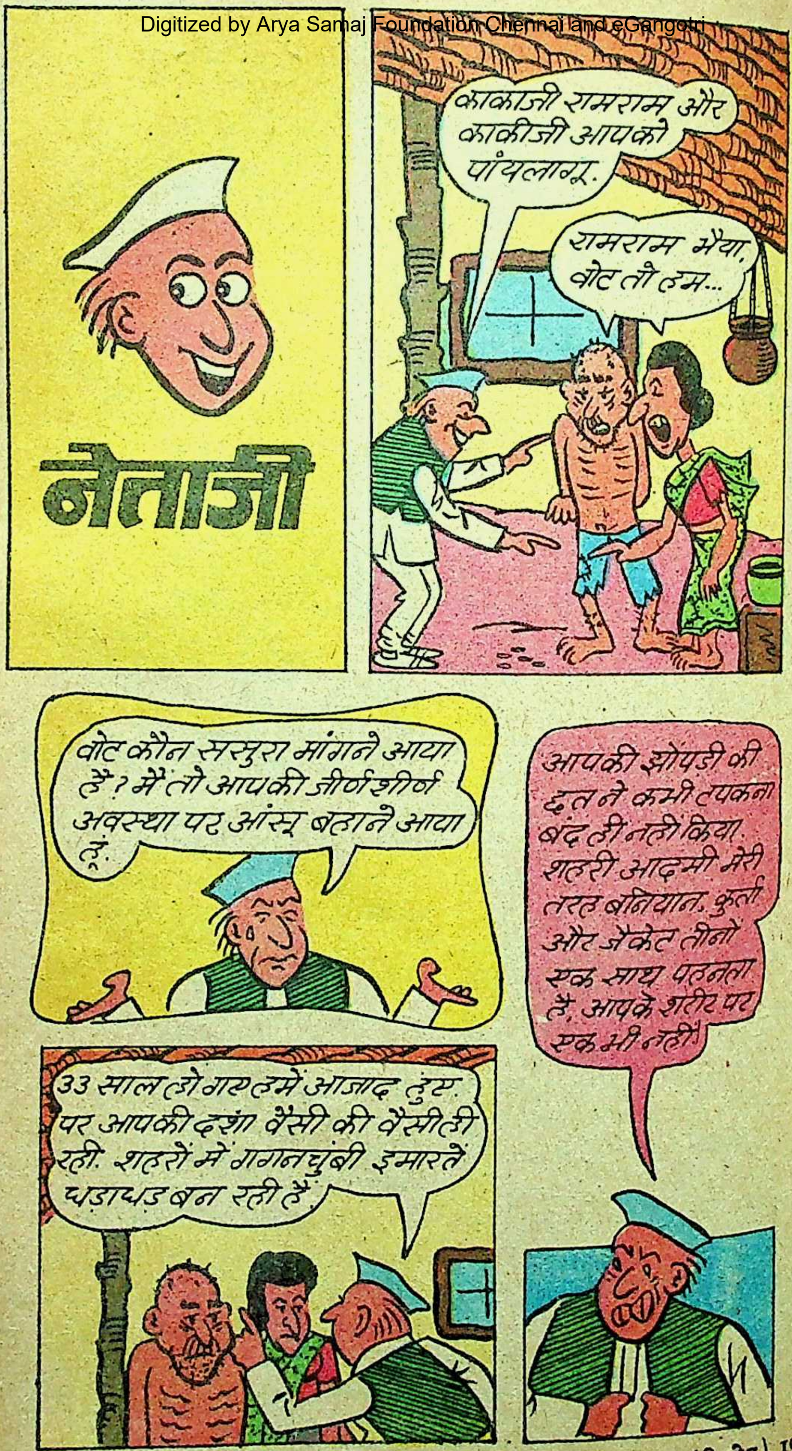

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : न. स. ओलानिया, जयपुर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : प्रसाद, दिल्ली.

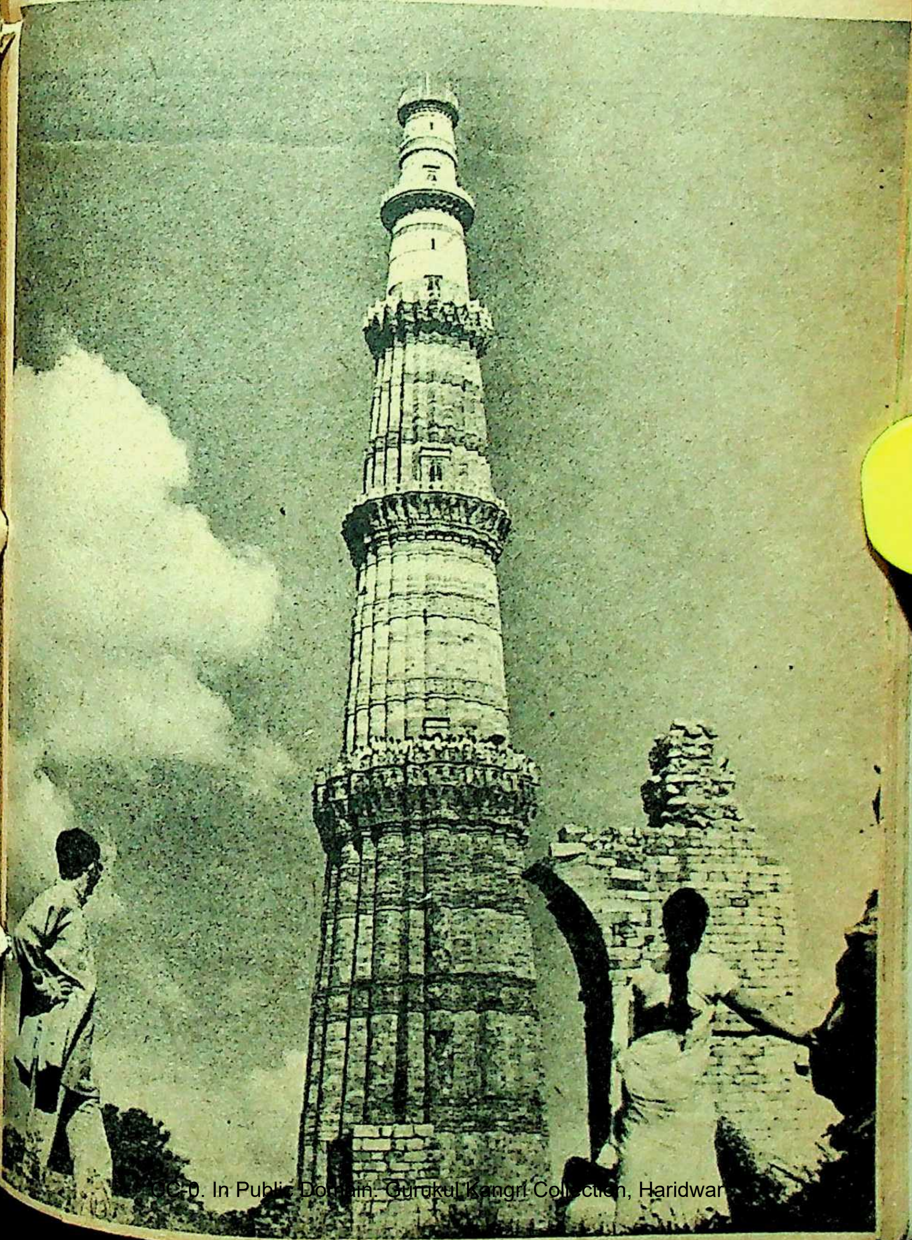

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्माया करती हो

झुके नयनों के कोरों से तुम झांका करती हो,
मैं जानता हूं तुम मुझ से शर्माया करती हो.

मैं पास आऊं, फेरती हो मुंह क्यों तुम अपना?
गर बाद मेरे सखियों से ढुंढ़वाया करती हो.
चुप रह जाती हो, बोलना मैं चाहूं जब तुम से
पर तन्हाई में गीत मेरे गाया करती हो.

रखना न था गर वास्ता मुझ से कोई तुम ने,
तो चुपकेचुपके सपनों में क्यों आया करती हो?
जब चाहती हो प्रियतम को अपने मन ही मन में,
क्यों बेवजह ही मुझ को तुम तड़फाया करती हो.

—अनिल चड्ढा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजी ज्ञान

डा. शास्त्री के सुपुत्र ने जिस तरीके से अंगरेजी ज्ञान पाया वह वास्तव में अद्वितीय था...

लघु कथा • रोशनलाल सुरीरवाला

"मेरे बेटे ने दो ही दिन में अंगरेजी का कितना ज्ञान कर लिया है," संस्कृत के प्राध्यापक डा. वेदव्रत शास्त्री ने सगर्व कहा और निरपेक्ष अतिथि को इस का अविलंब प्रमाण देने के लिए उन्होंने अपने लड़के से मुसकरा कर पूछा, "बताओ, बेटे, आईज कहां हैं, आईज?"

खेल में निमग्न चार वर्षीय चिरंजीव को यह असामयिक प्रश्न बड़ा अखरा. फिर भी मानो विद्वान पिता की जिज्ञासा शांत करने के लिए उस ने सीधे हाथ की नन्ही तर्जनी अपनी चिबुक पर टिका दी.

"मैं आईज पूछ रहा हूं, बेटे, आईज." शास्त्रीजी ने एकएक शब्द पर जोर दिया. उन की हंसी सिमट गई और स्वर में क्रोध का अंश आ मिला, "बताओ, आईज कहां हैं?"

चिरंजीव घबरा गया और उस ने अपनी तर्जनी चिबुक से उठा कर होंठों पर रख ली.

शास्त्रीजी ने दांत भींच लिए और बाएं हाथ की हथेली पर दाएं हाथ की मुट्ठी मार कर गरज उठे, "आईज बता, आईज कहां हैं? बोल, कहां हैं आईज?"

भयातुर चिरंजीव की आंखें डबडबा आईं और उस की तर्जनी अब नाक पर जा लगी.

"अबे, मैं आईज पूछ रहा हूं. आईज कहां हैं, आईज?" शास्त्रीजी का धैर्य जाता रहा और उन्होंने पांच किलो का झापड़ चिरंजीव के कोमल गाल पर जड़ दिया.

चिरंजीव की गरदन नल की टोंटी सी घूम गई. वह दर्द से बिजली सा तड़पा और चीत्कार कर उठा. क्रमानुसार उस की तर्जनी अब आंखों पर थी.

सहसा डा. वेदव्रत शास्त्री प्रसन्नता से उछल पड़े और अपनी संपूर्ण देह के साथ मार्गदर्शक सिपाही की भांति आश्चर्यअवाक अतिथि की ओर घूम गए, "देखा आप ने, मैं न कहता था कि मेरे बेटे ने दो ही दिन में अंगरेजी का कितना ज्ञान प्राप्त कर लिया है!" •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदे के आगे परदे के पीछे

बेहतर साथ

मराठी की फिल्म 'जाकोल' पूरी हो गई है. इस में दो खास बातें हैं. एक तो यह कि तनुजा ने काफी समय बाद किसी मराठी फिल्म में अभिनय किया है और दूसरी यह कि फिल्म का निर्देशन डा. श्रीराम लागू ने किया है. डा. लागू का कहना है, "तनुजा के बिना यह फिल्म बन ही नहीं सकती थी."

हिंदू संस्कृति पर फिल्म

कुछ सफल फिल्मों के निर्देशक किसी समय की अभिनेत्री साधना पति आर. के. नैयर हिंदू संस्कृति पर दो भागों में एक फिल्म बना रहे हैं. लंदन बसे भारतीय राम आडवाणी इस फिल्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में [illegible] हो गया है. हिंदी में इस फिल्म का एक भाग ढाई घंटे का होगा और अंगरेजी में डेढ़ घंटे का.

आर. के. नैयर की अंतिम फिल्म थी 'इतकाम' जो 12 साल पहले बनी थी. उस के बाद से वह अब तक 12 फिल्मों की योजना तो बना चुके है, लेकिन फिल्म कोई भी नहीं बनी. उन की यह योजना भी पूरी हो पाती है, इस में संदेह है.

श्रीराम लागू : "तनुजा (सामने) के बिना यह (जाकोल) फिल्म बन ही नहीं सकती थी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह टैक्सी था तो यह जेट है

एक समय था जब शशि कपूर ने दो सौ फिल्में साइन कर घंटों के हिसाब से निर्माताओं को समय देना शुरू कर दिया था. इस पर उस के बड़े भाई राज कपूर ने चुटकी ली थी, "तुम एक्टर थोड़े ही हो, तुम तो टैक्सी हो."

अब जितेंद्र इस उपाधि से आगे निकल कर जेट बन चुका है. वह मिनटों के हिसाब से निर्माताओं को समय दे रहा है. शशि कपूर तो बंबई में ही रह कर एक साथ एक दिन में तीनचार निर्माताओं के लिए काम करता है. जितेंद्र एक ही दिन में बंबई के निर्माता को निबटाने के बाद मद्रास में हो रही शूटिंग में भी हिस्सा ले लेता है. इस समय उस के पास बंबई की तुलना में मद्रास में बनने वाली फिल्में ज्यादा हैं.

कुणाल भी मैदान में

एक निर्माता है—सिब्बे हसन रिजवी. वह शशि कपूर के निजी सहायक थे. अपने बास को ले कर उन्होंने एक फिल्म बनाई 'नाच उठे संसार'. फिल्म बुरी तरह पिटी. अब यह शशि के लड़के कुणाल को

जितेंद्र : ज्यादा फिल्मों में काम की दृष्टि से यदि शशि टैक्सी था तो इसे जेट कहना होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले कर फि[illegible] हैं 'आहिस्ता आहिस्ता'. नायिका है पद्मिनी कोल्हापुरे और निर्देशक इस्माइल मेमन. 'नाच उठे संसार' को पूरा होने में चार साल लग गए थे. यह फिल्म भी अगर अपने नाम के हिसाब से बनी तो शायद यह जुआ भी रिजवी साहब हार जाएं.

नामों का सिलसिला

निर्माता फिल्मी नामों में भी ऐसी परंपराएं शुरू कर देते हैं कि ताज्जुब तो होता ही है साथ ही उन के अंधविश्वासी होने पर गुस्सा भी आता है. देव आनंद ने कई साल पहले 'हम दोनों' के अंगरेजी हिज्जे में एक की जगह दो 'ओ' को इस्तेमाल किया था. हाल ही में एक और फिल्म शुरू हुई है जिस में दोनों के अंगरेजी हिज्जे में एक की जगह दो 'ओ' को इस्तेमाल किया गया है. एक फिल्म बन रही है 'हम पांच' खुद देव आनंद का लड़का 'हम तीनों' बना रहा है.

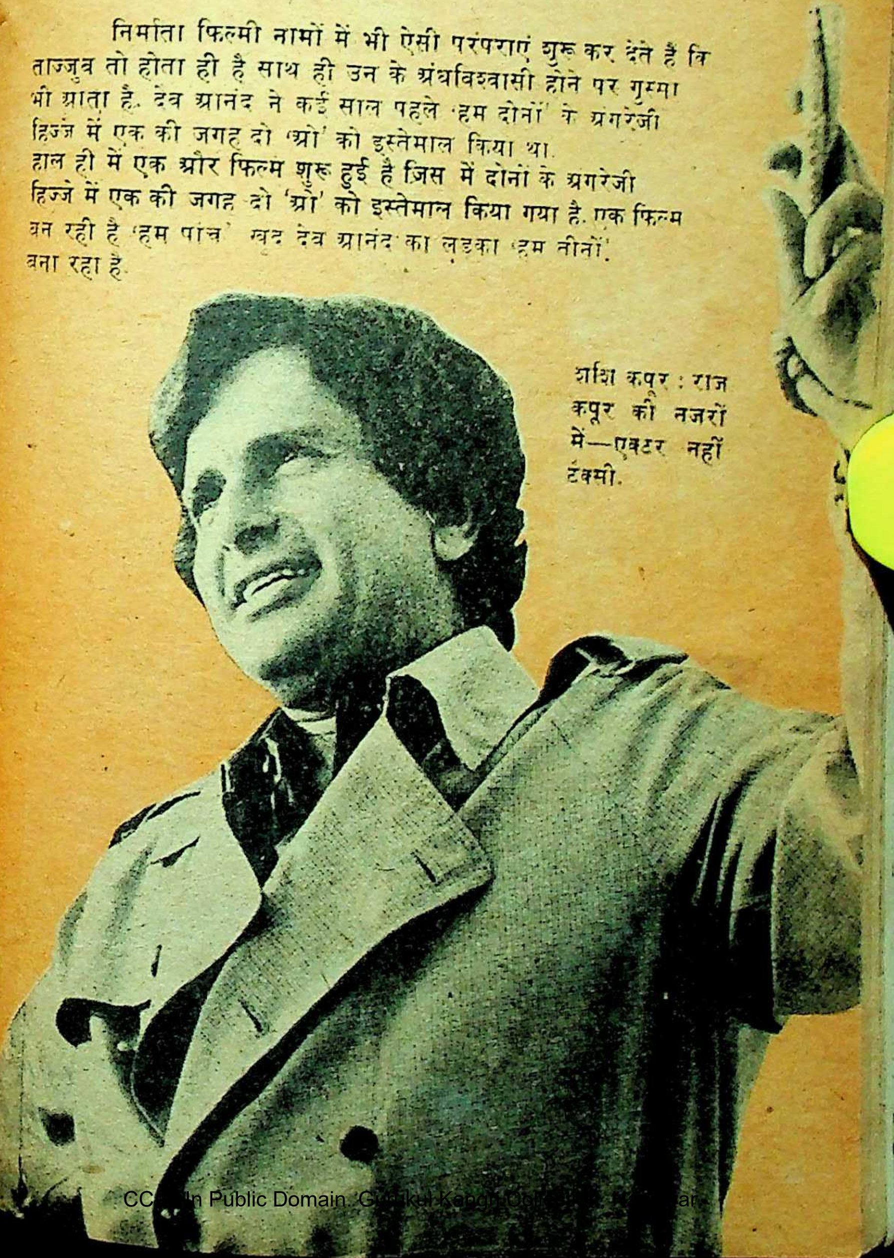

शशि कपूर : राज कपूर की नजरों में—एक्टर नहीं टैक्सी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंपल कापड़िया : क्या खलनायिका की भूमिकाएं करने का फैसला कर लिया है?

सिंपल खलनायिका

पिछले दिनों सिंपल कापड़िया पर 'लूटमार' के लिए काफी कम कपड़ों में उत्तेजक कैबरे फिल्माया. इस कैबरे की इतनी चर्चा थी कि पूरा स्टूडियो दर्शकों से खचाखच भरा था. लेकिन दोतीन दिन पहले दूसरे गाने की शूटिंग के समय बाहर का कोई व्यक्ति नहीं था, क्योंकि उस में सिंपल ने पूरे कपड़े पहने हुए थे.

इस कैबरे से लगता है कि सिंपल ने खलनायिका की भूमिकाएं स्वीकार करने का फैसला कर लिया है. हिंदी फिल्मों में कैबरे आम तौर पर खलनायिकाएं ही करती हैं.

राजनीति और फिल्म का चक्कर

विट्ठल भाई पटेल की स्थिति काफी अजीब रही है. [illegible] 'झूठ बोले कौआ काटे' लिखने के बाद वह राजनीति में हाथपांव मारने लगा. एक साल पहले निदा फाजली के साथ उस ने गीतकारों की जोड़ी बनाने की ठानी. लेकिन जनवरी, 1980 में इंदिरा कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद से वह फिर राजनीति में कुलाचें भरने लगा. अब उस ने फैसला किया है कि वह फिल्मों में गाने भी लिखेगा और राजनीति भी करेगा. हो सकता है कि दोनों के चक्कर में वह कहीं का न रहे.

डैनी : निर्देशन से ऊब

'फिर वही रात' डैनी के निर्देशन की पहली फिल्म है. इस फिल्म की सफलता के आधार पर उसे कुछ फिल्मों का निर्देशन करने का मौका मिल सकता है. लेकिन जल्दी ही ऐसा कोई प्रस्ताव स्वीकार करने

विट्ठल भाई पटेल : फिल्मों में गीत लिखने और राजनीति भी करने का फैसला तो किया, पर इस पर अमल हो पाएगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला नहीं है. उस का कहना है : "मैं निर्देशक बनने के चक्कर में काफी समय व कई फिल्में खो चुका हूं. पहले मैं इस कमी को पूरा करूंगा. मेरे भीतर का 'एक्टर' तो हर कीमत पर जिंदा रहना ही चाहिए."

सफलता असफलता के बारे में उस का नजरिया है : "मैं अपनी तरफ से हमेशा बढ़िया काम करने की कोशिश करता हूं. यदि सफल हो गया तो ठीक है नहीं तो मैं सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता हूं."

असरानी सुधर गया

असरानी ने अपनी एक फिल्म को 'हम नहीं सुधरेंगे' के नाम से जरूर बनाया है लेकिन लगता है कि इस फिल्म के

डैनी : मैं निर्देशक बनने के चक्कर में काफी समय व कई फिल्में खो चुका हूं."

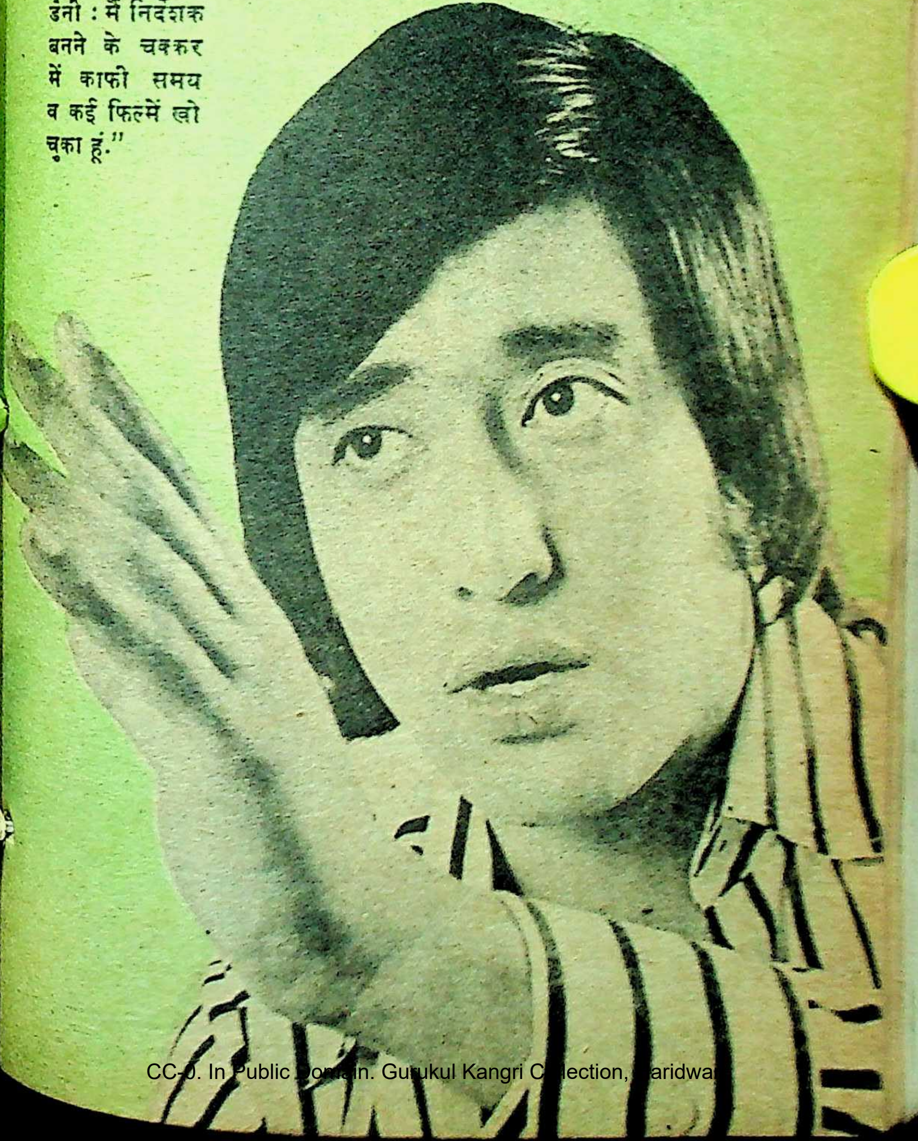

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभव ने उसे सुधरने पर मजबूर कर दिया है. 'हम नहीं सुधरेंगे' का हीरो, निर्माता व निर्देशक वह खुद ही था. तीन महीने में वह फिल्म पूरी कर लेना चाहता था, लेकिन फिल्म को पूरा होने में दो साल से ज्यादा समय लग गया. वह कहता है, "फिल्म बनाना आसान काम नहीं है. पिछले तीनचार सालों में ही स्थिति काफी बदल गई है."

निर्माता बनने का भूत तो उस के दिमाग से उतर ही गया है, हीरो भी वह अब नहीं बनेगा. 'हम नहीं सुधरेंगे' के अलावा 'सलाम मेमसाहब', 'चला मुरारी हीरो बनने' व 'दो हवलदार' की असफलता ने उसे जता दिया है कि उस का चौखटा हीरो के सांचे में फिट नहीं बैठता. लिहाजा अब वह पूरी गंभीरता से हास्य भूमिकाएं करने में जुट गया है.

असरानी : अब तो ध्यान केवल हास्य भूमिकाओं की ओर है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधविश्वासी योगिता

फिल्मों की अनिश्चित दुनिया में अपनी सफलता का आधार भाग्य या किस्मत को मान लेना मामूली बात है. योगिता बाली भी गहनों और कपड़ों के मामले में काफी अंधविश्वासी है. जिन कपड़ों व गहनों को पहन कर वह एक बार फिल्म में सफलता पा लेती है, बाद में उन्हें ही वह बारबार दोहराना चाहती है. दिलचस्प बात यह है कि इतनी सावधानी के बावजूद वह दूसरे दरजे की फिल्मों से ऊपर नहीं उठ सकी है और इन फिल्मों में भी काम पाने के लिए उसे काफी पापड़ बेलने पड़ते हैं. पता नहीं ये फिल्मी सितारे कब समझेंगे कि सफलता पाने के लिए भाग्यवादी या अंधविश्वासी होना नहीं बल्कि मेहनती होना जरूरी होता है.

गायत्री : फिल्मी दुनिया भले घर की लड़कियों के लिए सही जगह नहीं है.

योगिता बाली : फिल्मों में सफलता गहनों और कपड़ों की बदौलत नहीं मेहनत करने पर मिलती है.

पुष्पा

गायत्री की परेशानी

गायत्री ने उन लड़कियों को जो अभिनेत्री बनने की चाह रखती हैं, सलाह दी है कि वह अपने फैसले को बदल दें, क्योंकि फिल्मी दुनिया भले घर की लड़कियों के लिए सही जगह नहीं है.

गायत्री हिंदी फिल्मों में बाल कलाकार के तौर पर आई थी. बाद में उस के साथ किसी के रोमांस की खबर नहीं उड़ी, इसलिए निर्माताओं ने उसे हीरोइन बनने के लायक न मान कर फिल्मी बहन बना दिया.

हीरोइन वह बन रही है लेकिन दक्षिण भारतीय फिल्मों में. तेलुगु भाषा की 'मुगडु कवाली' में वह कुट्टा सुब्बाराव के निर्देशन में काम कर रही है, जो खुद कई जानीमानी हिंदी फिल्मों के भी निर्देशक रह चुके हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं-

विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी. स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर... ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमान-जनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?--असंभव. परिणाम क्या हुआ?... ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों को उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

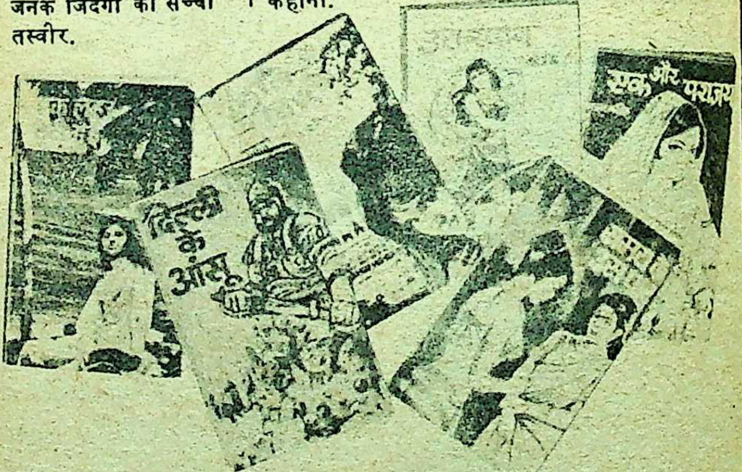

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सैट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

VPB107

पिछले छः महीनों की फिल्में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए
म. : मनोरंजक/देख लें
नि. : निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ
अ. : अपव्यय/समय की बरबादी
मु. पा. : मुख्य पात्र

दोस्ताना : दो नायकों और एक नायिका के त्रिकोण की वही जानी पहचानी कहानी. नामी लोगों के बावजूद फिल्म कहीं भी सामान्य स्तर से ऊपर नहीं उठी है. **नि. :** राज खोसला, **मु. पा. :** अमिताभ, जीनत, शत्रुघ्न. **स.**

काला पानी : एक स्मगलर का बेटा बड़ा हो कर पुलिस इंस्पेक्टर बनता है और अपने ही पिता को पकड़वाता है. कहींकहीं फिल्म का संपर्कसूत्र टूटा सा नजर आता है. **नि. :** शिबु मित्रा, **मु. पा. :** शशि कपूर, नीतू, अजित. **अ.**

निशाना : ठाकुर प्रताप की पत्नी जानकी का हार लेने के लिए उस का अपहरण करता है, लेकिन हार उस के हाथ नहीं लगता. ठाकुर की लड़की कविता राजा से प्यार करती है. तभी पता चलता है कि राजा जानकी के हत्यारे का बेटा है. अंत में राजा सब रहस्य खोलता है. अपराधी पकड़ा जाता है. **नि. :** के. राघवेंद्र राव बी.-ए., **मु. पा. :** जितेंद्र, पूनम ढिल्लों, प्रेम चोपड़ा, उत्पल दत्त. **अ.**

फिर वही रात : दौलत के लालच में खलनायक द्वारा नायिका को डराडरा कर मार डालने के षड्यंत्र की कहानी. निर्देशक के रूप में डैनी की पहली फिल्म, लेकिन निर्देशन के साथसाथ अभिनय में भी वह इस फिल्म में शून्य रहा. **नि. :** डैनी, **मु. पा. :** राजेश, किम, अरुणा ईरानी, डैनी. **स.**

किस्मत : जीवन दो छोटे बच्चे श्यामा और मोती का अपहरण करना चाहता है लेकिन गलती से वह यशोदा की लड़की गंगा को उठा ले जाता है. बड़ा होने पर मोती जीवन से लड़ता है और अंत में उसे मारने में सफल होता है. मोती और गंगा का विवाह हो जाता है. निर्देशक ने बीच में वेश्या से नायक के विवाह का भी चित्रण किया है. **नि. :** भीष्म कोहली, **मु. पा. :** मिथुन, रंजीता, शक्ति कपूर, उर्मिला भट्ट. **अ.**

लूटमार : विक्रम विंग कमांडर भारत के पिता और पत्नी की हत्या कर के भाग जाता है. भारत उस की तलाश करता है. पुलिस और सैनिकों की मदद से भारत विक्रम को मारने में सफल होता है. **नि. :** देव आनंद, **मु. पा. :** देव आनंद, टीना, राखी, अमजद, शक्ति कपूर. **अ.**

अब्दुल्लाह : खलील रेगिस्तान में लोगों को लूटता है और उन के बच्चों को उठा ले जाता है. खलील एक हिंदू औरत को मार देता है. उस के बच्चे को अब्दुल्लाह पालता है. खलील को पता चलता है कि एक दिन बच्चे के कारण उस की मौत होगी. वह बच्चे को मारने की कोशिश करता है और अंत में नायक के हाथों स्वयं मारा जाता है. **नि. :** संजय खान, **मु. पा. :** संजय, जीनत, राज कपूर.

अपने पराए : बड़ा भाई अपने चचेरे भाई को काम के लिए बारबार पैसा देता है और छोटा भाई व्यापार में खराब कर देता है. लेकिन मंझली बहू और भैया उसे घर से निकलवा देते हैं. एक दिन बड़े भैया और भाभी को मंझली बहू और मंझले देवर की चालाकी का पता चलता है तो वह जा कर छोटे भाई और उस की पत्नी, बच्चों को फिर घर ले आते हैं. **नि. :** बासु चटर्जी, **मु. पा. :** शबाना, अमोल, उत्पल-दत्त, आशा लता. **उ.**

सलाम मेम साहब : सड़कों पर नाचने-गाने वाले की कहानी जो सुखी जीवन की तलाश में इधरउधर भटकने के बाद अपने भीतर की खुशी तलाश कर लेता है. सामान्य फिल्म में सामान्य गीत संगीत. **नि. :** असरानी, **मु. पा. :** असरानी, जरीना बहाव, मंजू, रंजीत. **स.**

बिन मां के बच्चे : अपने पिता से बिछुड़े दो बच्चों की कहानी जो लंबीचौड़ी नाटकीयता के बाद अंत में मिल जाते हैं. सामान्य स्तर पर बनी सामाजिक फिल्म में गीत और संगीत भी सामान्य ही रहा. **नि. :** सत्येन बोस, **मु. पा. :** श्रीराम लागू, तनुजा, बिंदु. **स.**

बेरहम : एक पुलिस अधिकारी द्वारा अपने ही वरिष्ठ अधिकारी को पकड़ने की एक आदर्शवादी कहानी, जिस में मनोरंजन के नाम पर सभी किस्म के फार्मूले भर दिए गए हैं. निर्देशक की पकड़ की वजह से फिल्म रोचक हो गई है. **नि. :** रघुनाथ झालानी, **मु. पा. :** संजीव-कुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, रीना राय. **म.**

हम नहीं सुधरेंगे : तीन हमशक्ल आदमियों की कहानी. एक बदमाश चांद, एक रिश्वत लेने वाला चपरासी मदनलाल और एक जासूस पी. के.. चांद पी. के. को पकड़ कर उस की शक्ल का फायदा उठाना चाहता है, लेकिन अंत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुलिस मदनलाल की मदद से उस तक पहुंच जाती है. चांद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मु. पा. : असरानी, मंजु बंसल, रीता भादुड़ी, योगिता बाली. स.

एक गुनाह और सही : वर्मा शंकर को बैंक लूटने के लिए मजबूर कर देता है. वर्मा शंकर की पत्नी पारो से बलात्कार करता है, पारो वर्मा को गोली मार देती है. पुलिस से बचने के लिए शंकर और पारो को भागना पड़ता है. अंत में शंकर वर्मा को मारने में सफल होता है. नि. : योगी कथूरिया, मु. पा. : सुनील दत्त, परवीन बाबी, मदन पुरी. अ.

जुदाई : पतिपत्नी के बीच अहं की लड़ाई को ले कर उठे पारिवारिक मतभेद की जानी पहचानी कहानी, जिस में वास्तविकता कम और अविश्वसनीय फामूले ज्यादा हैं. नि. : टी. रामाराव, मु. पा. : अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा. स.

नीयत : तीन दोस्तों और एक ही लड़की को ले कर बनाए गए प्रेम संबंधों की कहानी, जिस में स्मगलर पिता का पुत्र एक दोस्त मारा जाता है, एक रास्ते से हट जाता है और नायक-नायिका का मिलन हो जाता है. हर किस्म के फार्मूलों का समावेश. नि. : अनिल गांगुली, मु. पा. : शशि कपूर, रेखा, जितेंद्र. स.

लहू पुकारेगा : सत्यजीत और संदीप दो अनाथ लड़के हैं. संदीप को एक धनी आदमी गोद ले कर पढ़ालिखा कर वकील बनाता है और सत्यजीत एक बदमाश बनता है. परिस्थितियां सत्यजीत को डाकू बना देती हैं और अंत में वह अपने भाई को बचाने के लिए दूसरे बदमाश की गोली का शिकार बन जाता है. नि. : अख्तर उल इमान, मु. पा. : सुनील दत्त, सायरा बानो, फिरोज खान, अमजद. अ.

यारी दुश्मनी : शंकर और बिरजू दो दोस्त हैं, लेकिन एक बार 10 लाख रुपए के हीरे हाथ लगने पर बिरजू शंकर को पकड़वा कर स्वयं धनी बन जाता है. जेल से छूटने पर शंकर को जब इस बात का पता चलता है तो वह बिरजू को मारने की कोशिश करता है. लेकिन एक डाकू से रुपयों को बचाने के लिए दोनों मिल कर लड़ते हैं. अंत में डाकू मारा जाता है. नि. : सिकंदर खन्ना, मु. पा. : सुनील दत्त, अमजद, रीना राय. अ.

कुरबानी : राजेश और अमर दो प्रसिद्ध चोर हैं. बदमाशों का एक गिरोह राजेश से किसी दूसरे बदमाश के घर चोरी करने के लिए कहता है, लेकिन उस के मना कर देने पर मारपीट करता है. एक मुठभेड़ में बदमाशों से लड़ते हुए राजेश को बचाने के लिए अमर अपनी कुरबानी दे देता है. नि. : फिरोज खान, मु. पा. : विनोद खन्ना, फिरोज खान, जीनत, अमजद. स.

थोड़ी सी बेवफाई : नीमा का विवाह एक धनी परिवार में अरुण से होता है, लेकिन अरुण से व्यापार में कुछ गलती हो जाने पर वे गरीब हो जाते हैं. जैसेतैसे अरुण घर को संभालने की कोशिश करता है, लेकिन नीमा अपने पति पर शक कर के अपने मायके चली जाती है. अंत में बहुत देर के बाद एक नाटकीय घटना के सहारे पतिपत्नी का मिलन होता है. नि. : इस्माइल श्रोफ, मु. पा. : शबाना, राजेश खन्ना, श्रीराम लागू, देवेन वर्मा. स.

बंबई का महाराजा : गांव का एक सीधा-सादा किसान जमींदार के जुल्म से तंग आ कर डाकू बन जाता है और फिर बंबई में पहुंच कर वहां की अपराध दुनिया का महाराजा बन जाता है. सामान्य ढंग से निर्देशित फिल्म जिस में नयापन कुछ भी नहीं है. नि.: शिबु मित्रा, मु. पा. : अमजद, विद्या सिन्हा, गायत्री, राजकिरण. स.

चेहरे पे चेहरा : एक वैज्ञानिक की कहानी जो ऐसी दवा बनाना चाहता है जो आदमी की बुराई को खत्म कर दे. लेकिन दवा ऐसी बन जाती है, जो अच्छाई को खत्म कर आदमी को शैतान बना देती है. नया विषय लेकिन प्रस्तुतीकरण उबाऊ. नि.: राज तिलक, मु. पा.: संजीव, सुलक्षणा, रेखा, शत्रु. स.

सौ दिन सास के : भवानी देवी अपने बड़े बेटे की बहू शीला पर बहुत अत्याचार करती है लेकिन उस के छोटे बेटे की बहू दुर्गा उस को ठीक कर देती है. अंत में सब का सुखद मिलन होता है. नि. : विजय सादाना, मु. पा. : आशा पारिख, रीना राय, राज बब्बर, ललिता पवार. स.

एक बार फिर : महेंद्र एक लोकप्रिय अभिनेता है और वह इंगलैंड में सुमन से विवाह करता है. सुमन को पता चलता है कि महेंद्र का दूसरी लड़कियों से यौन संबंध है तो वह एक भारतीय चित्रकार विमल की ओर आकर्षित होती है. वह सुमन से विवाह के लिए कहता है. पहले तो सुमन थोड़ा हिचकती है लेकिन फिर उसे अपना लेती है. नि. : विनोद पांडेय, मु. पा.: दीप्ति नवल, सुरेश ओबराय, सईद जाफरी. स.

उन्नीस बीस : बिछुड़े हुए भाईबहनों की पुरानी कहानी, जो लंबी मारपीट व नाटकीय घटनाओं के बाद आपस में मिल जाते हैं. हर दृष्टि से निराशाजनक फिल्म. नि. : स्वरूपकुमार, मु. पा. : राकेश रोशन, रंजीता, मिथुन, योगिता. अ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजेश की वापसी अमिताभ
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(पृष्ठ 93 से आगे)

लिया. कहा जाता है कि जया ने फौरन उसे डिटोल के पानी से नहलाया. यह कहते हुए—"अमित नहीं चाहते कि हमारे बच्चों को फिल्मी दुनिया के कीटाणु लगें."

राकेशकुमार बतौर निर्माता के जो पहली फिल्म बना रहा है उस से अमिताभ का दूर तक का कोई संबंध नहीं है.

'राजपूत' व 'धर्म कांटा' में पहले अमिताभ को लिया गया था लेकिन दोनों ही फिल्मों में राजेश था इसलिए अमिताभ ने उन में काम करने से मना कर दिया.

घमंडी होने का जो लेबल पहले राजेश पर लगा था वह अब अमिताभ पर लगाया जाने लगा है.

इसी वजह से उस की लोकप्रियता भी घटती जा रही है. पिछले दिनों कुछ फोटोग्राफरों ने यूनियन बना कर यह फैसला किया है कि उन में से कोई भी अमिताभ की तसवीरें नहीं खींचेगा.

लगभग एक दरजन फिल्मों की लगातार असफलता के बाद जब 'अमरदीप' थोड़ी सफल हो गई तो राजेश को लगा कि वह फिल्मों में दोबारा वापस लौट सकता है. लिहाजा उस ने सारा अहं व पिछली दुश्मनी भुला कर दोस्ती करनी शुरू कर कर दी. सब से पहले उस ने सलीम जावेद से दोस्ती कर ली. दो साल पहले सलीम जावेद ने कहा था—"हम इस गोरखे के लिए कभी काम नहीं करेंगे." लेकिन अब वह राजेश के लिए 'जमाना' लिख रहे हैं जिस में ऋषि कपूर भी है.

ऋषि कपूर और रणधीर कपूर की शुरू से ही राजेश से पट नहीं रही थी. रणधीर ने 'कसमें वादे' में राजेश को नहीं आने दिया. यश चोपड़ा राजेश, शशि कपूर, रणधीर कपूर व संजीवकुमार को ले कर 'सवाल' बनाना चाहता था लेकिन पिछले अनुभवों को देखते हुए शशि व संजीव ने राजेश के नाम पर आपत्ति की. इसलिए अमिताभ को फिल्म में ले लिया गया. लेकिन अब यश चोपड़ा भी अमिताभ से खुश नहीं रहा है.

'काला पत्थर' के बारे में शुरू में यह कहा जा रहा था कि यह फिल्म पिट जाएगी. यश चोपड़ा ने फैसला कर लिया था कि यदि ऐसा होगा तो वह राजेश को ले कर अगली फिल्म शुरू कर देगा. इस के लिए राजेश से उस ने बातचीत भी कर ली, लेकिन 'काला पत्थर' हिट हो गई और अमिताभ यश की अगली फिल्म 'सिलसिला' का भी हीरो बन गया.

लेकिन पिछले कुछ दिनों में जो घटनाक्रम बदला है उस से लगता है कि यश व अमिताभ की जोड़ी जल्दी ही टूट जाएगी. यश चोपड़ा की फिल्मों में पैसा लगाने वाला गुलशन राय अमिताभ का विरोधी हो गया है. 'दि ग्रेट गैंबलर', 'मिस्टर नटवरलाल' व 'दो और दो पांच' की असफलता ने अमिताभ के बाजार भाव पर खासा असर डाला है.

अमिताभ के फिल्मी जीवन की सब से बड़ी दुर्घटना सलीम जावेद के साथ उस के संबंधों में दरार आ जाना है. सलीम जावेद अमिताभ को ध्यान में रख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी व संवाद लिखते थे. दोनों में मनमुटाव [illegible] सलीम जावेद निर्माता के रूप में एक फिल्म बनाना चाहते थे. फिल्म जल्दी पूरी करने के लिए उन्होंने फटाफट कहानी व पटकथा लिख डाली. अमिताभ पहले तो फिल्म में काम करने को तैयार हो गया लेकिन बाद में उस ने अपने छोटे भाई बंटी से कहलवा भेजा, "मैं फिल्म नहीं कर सकूंगा क्योंकि मेरे पास समय नहीं है."

इधर राजेश टूटे संबंध जोड़ने में लगा रहा. गुलशन राय से उस ने कहा—"अब हम मिल कर कौन सी फिल्म बनाएंगे?" मनमोहन देसाई से उस ने कहा, "जब तुम मुसीबत में थे, मैं ने 'सच्चा झूठा' में काम किया. अब मुझे तुम्हारी जरूरत है. क्यों न एक फिल्म हम लोग मिल कर बना लें?" प्रकाश मेहरा के साथ भी वह एक फिल्म कर रहा है.

सफलता पाने के बाद अमिताभ यह भूल गया कि सिर्फ एक कलाकार की वजह से फिल्म अच्छी नहीं बनती, उस के लिए एक अच्छी टीम की जरूरत होती है.

वैसे उसे जी. पी. सिप्पी की 'शान' से काफी आशाएं हैं. इस फिल्म की रीलें बन चुकी हैं लेकिन 'शान' में कला- [illegible] इसलिए यदि फिल्म सफल भी होती है तो भी अमिताभ के हिस्से में इस का कम ही श्रेय आएगा. वैसे भी फिल्म की सफलता का सारा श्रेय निर्देशक रमेश सिप्पी ले जाने से नहीं चूकेगा.

अमिताभ में प्रतिभा तो है लेकिन जो खेल खेल कर उस ने राजेश को परास्त किया था, वही खेल अब राजेश खेल रहा है—अमिताभ के दोस्तों को अपनी तरफ खींचने का. लड़ाई यहां प्रतिभा की नहीं है बल्कि बिलकुल व्यावसायिक किस्म की यह लड़ाई है.

अमिताभ इस लड़ाई का माहिर है और यदि वह चाहे तो अपना घमंड व अहं त्याग कर फिर से राजेश के लिए चुनौती बन सकता है.

हमारी फिल्मी दुनिया का यह सिद्धांत है कि कोई भी सितारा यहां ज्यादा समय तक चमक नहीं पाता. अमिताभ धुंधला पड़ रहा है लेकिन उस के स्थान पर आ रहे राजेश को भी धुंधलाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा. वैसे भी वह एक बार पिट चुका सितारा तो है ही. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीरबल की सूझबूझ
एक विनोदप्रिय बादशाह और एक पैनी बुद्धि वाले वजीर की तीखी नोकझोंक का चटपटा संग्रह.
रु. 4.00

पूरे परिवार के लिए हास्य–व्यंग्य से भरपूर पुस्तकें

विश्व सुलभ साहित्य

बच्चों के मुख से
आप के अपने बच्चों की सहज निश्छल भोली बातें जिन्हें पढ़ कर आप एक मीठी गुदगुदी महसूस करेंगे. रु. 4.00

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे.
रु. 4.00

ये पति
पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली घरेलू वातावरण में पति के चारों ओर घटी घटनाओं का संग्रह रु. 2.50

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

पूरा सैट केवल 11 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट. रुपया अग्रिम आने पर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

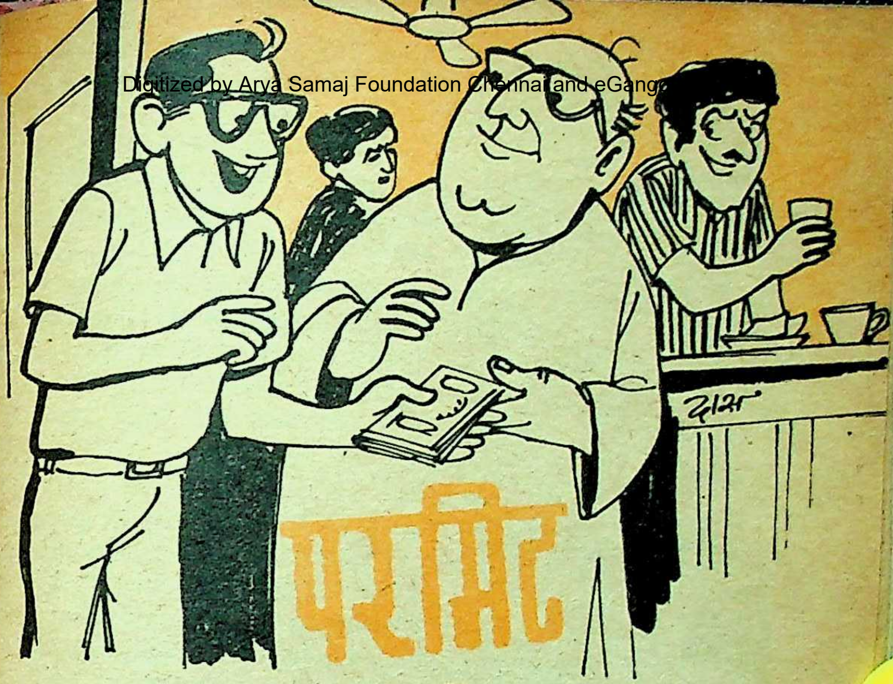

परमिट बाबू

कहानी • सिधु गोयल

विभाग के सभी लोग देशराज को 'परमिट बाबू' का महत्त्व समझाते रहे, जो उन की समझ में न आया. इसी लिए आए दिन उन का तबादला होता रहा, पर इस का महत्त्व समझते ही देशराज के व्यवहार में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया.

सीमेंट तो आप ने भी जरूर देखा होगा. न भी देखा हो तो अब चुटकी भर उठा कर देख लीजिए. बारीक सा पाउडर जैसा होता है, जिसे आप हलकी सी फूंक भी मार दें तो उड़ जाए.

पर आप को यह जान कर ताज्जुब होगा कि इस के बनाने में लोहा और पत्थर काम आते हैं. वही लोहा और पत्थर जिन्हें उठाने के लिए बड़ीबड़ी क्रेनें इस्तेमाल की जाती हैं.

तभी शायद सीमेंट के परमिट काटने वाला बाबू भी एकदम सीमेंट की तरह होता है. ऊपर से एकदम सीधा व मामूली आदमी नजर आएगा. केवल पांच सौ रुपए प्रति माह पाने वाला क्लर्क, जिसे छोटा से छोटा अफसर भी चाहे तो कलम चला कर मुअत्तल कर दे. जिस का घर का खर्च भी तनख्वाह से मुश्किल से पूरा होता होगा.

पर उसी की भीतरी शक्ति के बारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आप को पता लगे तो आप दांतों तले उंगली न दबाएं और बात है, आंखें तो फाड़ ही लेंगे.

गरीब का मकान हो या रईस की कोठी, कर्मचारी का क्वार्टर हो या अधिकारी का बंगला, थोड़ेबहुत सीमेंट की जरूरत सभी को रहती है. और सीमेंट के इन जरूरतमंदों की जान इसी परमिट बाबू के हाथ में रहती है.

यों तो सारा साल, पर खासतौर पर बरसात से पहले व्यापारी, अधिकारी, उद्योगपति, दुकानदार आदि रोज परमिट बाबू की कुरसी को घेरे रहते हैं.

दया के अवतार परमिट बाबू जैसे न करना तो जानते ही नहीं. हर व्यक्ति को आश्वस्त करने की कोशिश में रहते हैं. तभी तो बेचारे हर पांच मिनट बाद सामने लाला की कैंटीन तक जाते हैं और जरूरतमंद की जरूरत के मुताबिक केवल पांच रुपए प्रति कट्टे के हिसाब से वसूली कर के फिर अगले जरूरतमंद की जरूरत पूरी करने चले आते हैं.

बरसों से चले आ रहे इस दस्तूर वाले दफ्तर में इस बार देशराज परमिट बाबू हो कर क्या आए कि ठहरे पानी के तालाब में भी तूफान आ गया.

देशराज बरसों कस्टोडियन महकमे में रहे. पर जहां उन के संगीसाथियों ने अपनी जायदादें खड़ी कर लीं, वहीं देशराज अपनी ईमानदारी के प्रमाणस्वरूप वही कुरतापाजामा और चप्पलें चटकाते रहे.

जब कस्टोडियन का दफ्तर बंद हुआ व उस के पक्के कर्मचारियों को सरकार ने अन्य विभागों में भेजा तो जहां और लोग मनचाहे स्थान पर नियुक्ति पा गए, वहां देशराज की सूखी सिफारिश कोई रंग नहीं ला सकी और उन्हें घर से आठ सौ किलोमीटर दूर उत्तरकाशी में पटक दिया गया.

नौकरी थी सो झख मार कर देशराज स्वयं तो उत्तरकाशी चले गए, पर अपने परिवार को उन्होंने घर पर ही छोड़ दिया.

ठंडी जलवायु के आदी न होने के कारण वह आए दिन बीमार रहने लगे. उधर परिवार को भी पूरा खर्च भेजना पड़ रहा था.

सुबहशाम बच्चों में रहने वाले देशराज को जबतब पत्नी और बच्चों की याद आती और उदासी के बादल उन्हें ढक लेते.

आठ साल में पचासों बार उन्होंने विभागीय अधिकारियों से अपनी खस्ता आर्थिक, शारीरिक व पारिवारिक हालत बयान करते हुए नजदीक के किसी कार्यालय में तबादले की मांग की, पर कोई बात न बनी.

इस पर उन के सहयोगियों ने उन्हें समझाया कि तबादले की फिक्र छोड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब नोट काटो, खाओपियो और पहाड़ की मौज लो.

देशराज को यह स्वीकार नहीं था. पर आठ साल की इस यंत्रणा से आखिर वह टूट गए और एक साथी के समझाने पर अपने तबादले के लिए 400 रुपए खर्च करने पर तैयार हो गए.

सवा महीने के अंदर ही उन का तबादला घर के पास हो गया और वह भी एकदम 'बढ़िया सीट' पर.

रिश्वत देना और लेना बड़ा बेढब है. देशराज दोनों ही नहीं जानते थे. देशराज अब जिस 'सीट' पर आए थे, वहां अब तक किसी बाबू ने लक्ष्मी का निरादर नहीं किया था.

पर देशराज तो अपवाद थे. उन्होंने वहां पहुंच कर इसे बंद कर दिया. नतीजा यह हुआ कि बड़े साहब की कार चलनी बंद हो गई व छोटे साहब स्कूटर से साइकिल पर उतर आए.

बड़े बाबू की मेज पर सुबहसुबह दो पैकेट सिगरेट व सोलह पान के जोड़े नजर आने बंद हो गए.

अन्य क्लर्क भी जो रोज शाम को घर जाने से पहले थैलों में बच्चों के लिए फलमिठाई डाल कर घर ले जाते थे, अब खाली हाथ घर जाने लगे.

और तो और कैंटीन वाला लाला भी दिन भर देशराज को कोसता, क्योंकि जहां दिन भर बाबू लोग चायनाश्ता मंगवाते थे, वहां अब सब कुछ ठंडा सा पड़ गया था.

उधर सीमेंट लेने वालों को भी परेशानी का एहसास होने लगा. जिसे मकान की मरम्मत के लिए एक ही बार में 10 कट्टे मिल जाते थे, वहां अब दो भी मयस्सर नहीं होते.

सीमेंट की कालाबाजारी रोकने के लिए देशराज सैंकड़ों पुरानी फाइलें खोजने में जुट जाते.

परिणाम यह हुआ कि पचासों लोगों

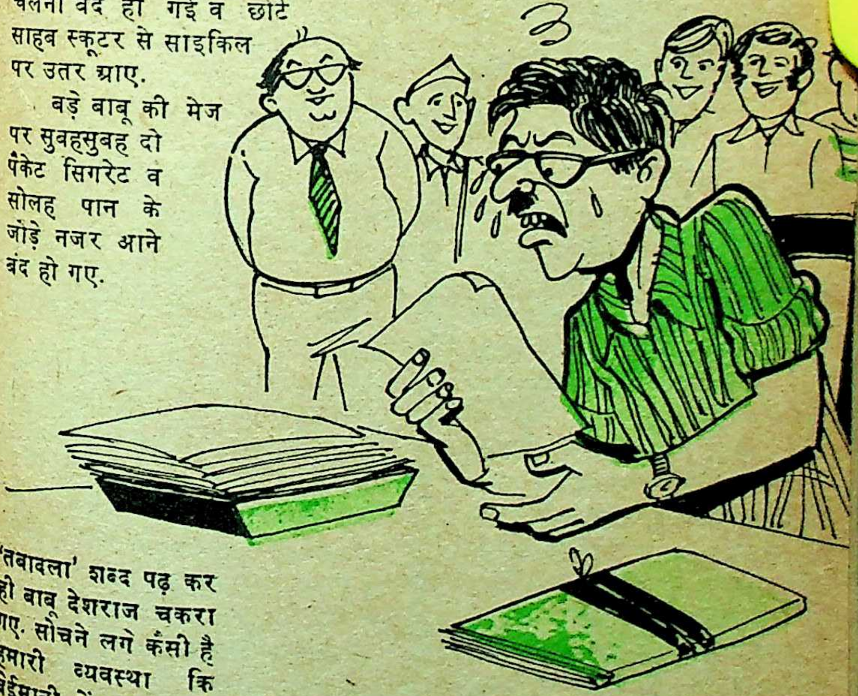

'तबादला' शब्द पढ़ कर ही बाबू देशराज चकरा गए. सोचने लगे कैसी है हमारी व्यवस्था कि बेईमानी में सब खुश हैं और ईमानदारी...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का धंधा देखते ही देखते चौपट हो गया.

कुछ बाबू लोगों का खयाल था कि शायद नई घोड़ी चाल दिखा रही है और थोड़े समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा.

पर जब पूरा महीना गुजर गया और देशराज ने दम भी नहीं भरा तो सभी के लिए यह असह्य हो गया.

हार कर बड़े बाबू के घर एक आपात बैठक हुई. इस बैठक में परमिट बाबू देशराज को नहीं बुलाया गया. इस में उन की खुल कर निंदा की गई व सभी ने यह मत व्यक्त किया कि देशराज इस काबिल ही नहीं हैं कि वह इस पद की बारीकियों को समझ सकें व आवश्यक जिम्मेदारी का ठीक ढंग से निर्वाह कर सकें.

साथ ही उत्तरकाशी से मंगवाई गई देशराज की रिपोर्ट की भी चर्चा हुई, जिस के अनुसार उन के कभी सुधरने की संभावना एकदम शून्य थी.

अगले ही दिन से परमिट बाबू के खिलाफ एक संयुक्त अभियान छेड़ दिया गया.

उपभोक्ता उन की शिकायत सचिवालय व मंत्रालय में करने लगे. कुछ एक तो हलफनामा तक दाखिल करने को तैयार थे कि परमिट बाबू ने उन से खुल्लमखुल्ला रिश्वत मांगी.

कुछ उपभोक्ता बड़े साहब के पास निजी तौर से शिकायत ले कर पहुंचे.

जैसा कि बड़े साहब का कर्त्तव्य था, उन्होंने तुरंत परमिट बाबू को मीमो जारी कर दिया कि वह बताएं कि भ्रष्टाचार व अनियमितता के आरोपों की जांच पूरी होने तक उन्हें मुअत्तल क्यों न कर दिया जाए अथवा उन के तबादले के लिए ऊपर क्यों न लिख दिया जाए?

बाबू देशराज का सिर 'तबादला' शब्द पढ़ कर ही चकरा गया. सोचने लगे, कैसी है हमारी व्यवस्था कि बेईमानी में सब खुश हैं व ईमानदारी की सब जगह मिट्टी पलीद होती है.

दुखी मन से वह दफ्तर के पुराने चपरासी से अपनी व्यथा कह बैठे.

चपरासी ने अंगरेजों का जमाना भी देखा था. वह तजरबेकार था. उस ने देशराज को जनतंत्र व समाजवाद का मतलब समझाया.

अगले दिन बड़े साहब कार से व छोटे साहब स्कूटर से आए. बड़े बाबू को कुरसी संभालते ही मेज पर सिगरेट व पान के दर्शन हुए.

उपभोक्ताओं की शिकायतों के बारे में सभी की राय थी कि ये सब झूठी हैं व ईमानदार आदमी को कर्त्तव्य से डिगाने के लिए जानबूझ कर की गई हैं.

कैंटीन वाले लाला ने भी वह कोना फिर साफ करवा दिया था, जहां परमिट बाबू देशराज भी हर पांच मिनट बाद तशरीफ लाने लगे थे.

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में, किंतु रोचकता लिए होनी चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें : सर्वोत्तम पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

नायब तहसीलदार . . . नकली निकला

अलीगढ़ में पुलिस ने हरिश्चंद्र सारस्वत नाम के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है. वह अतरौली तहसील में नकली नायब तहसीलदार बन कर काम कर रहा था.

इस व्यक्ति ने तबादले का एक जाली आदेशपत्र बनाया और अलीगढ़ में जिलाधिकारी को वह आदेशपत्र दिखाते हुए कहा कि उसे हरदोई से बदली कर के यहां भेजा गया है.

जिलाधिकारी ने उस के कागजात पर नियुक्ति के लिए आदेश लिख दिए और 20 जून को यह व्यक्ति अतरौली तहसील में नायब तहसीलदार नियुक्त हो गया.

जब अलीगढ़ जिला प्रशासन द्वारा हरदोई जिला प्रशासन को लिखा गया कि वह नायब तहसीलदार हरीश्चंद्र सारस्वत को किए गए अंतिम भुगतान के प्रमाण-पत्र भेजे तो वहां जवाब आया कि इस नाम का कोई व्यक्ति हरदोई में नायब तहसीलदार नहीं था. इस पर उस व्यक्ति को तुरंत गाजीपुर ग्राम में गिरफ्तार कर लिया गया.

—दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक : जयकुमार बड़कुर)

✦

जाली अंक सूची का इस्तेमाल

इंदौर के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने शिवलाल यादव नामक एक व्यक्ति को विक्रम विश्वविद्यालय की बी. एससी. भाग एक की नकली अंक सूची के आधार पर रीवा के मेडिकल कालिज में प्रवेश लेने की कोशिश के कारण धारा 420 के तहत दो वर्ष की कैद व 500 रुपए का जुरमाना भरने की सजा सुनाई.

मेडिकल कालिज रीवा में प्रवेश पाने के लिए शिवलाल यादव ने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की अंक सूची की जो प्रति संलग्न की थी, उस में उसे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण बताया गया था.

उस जाली सूची के आधार पर उसे मेडिकल कालिज में प्रवेश दे दिया गया था. बाद में एक शिकायत मिलने पर जांच की गई. उस समय पता चला कि शिवलाल ने जिस क्रम संख्या की अंक सूची पेश की है उस क्रम संख्या तक छात्र परीक्षा में बैठे ही नहीं थे.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अरुणकुमार सिंह)

✦

ट्रांजिस्टर में ईंट

एक ग्रामीण 63 रुपए के जूते दुकानदार से यह कह कर ले गया कि वह इन जूतों के बारे में अपनी तसल्ली करने जा रहा है. जूते की इस दुकान में वह अपना एक थैला, जिस में एक ट्रांजिस्टर तथा खाली बोतल थी, छोड़ कर जल्दी ही लौट आने को कह गया. शाम तक न लौटने पर जब दुकानदार ने ग्रामीण का थैला खोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

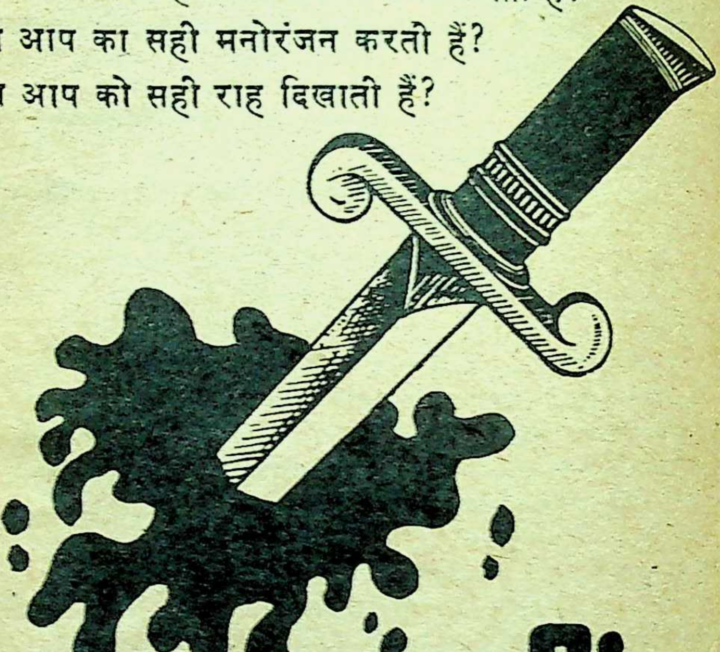

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

तो उस में एक ट्रांजिस्टर था और उस ट्रांजिस्टर में पुर्जों के स्थान पर ईंट रखी हुई थी.

—दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़ (प्रेषिका : रजनी माहेश्वरी)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

✦

दामाद ने चोरी की

वाराणसी के जैतपुरा थाना की पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है, जिस ने अपने ससुर के घर में चोरी की थी. गिरफ्तार किए गए व्यक्ति के पास से चोरी का माल भी बरामद हुआ है. पुलिस उस के दो साथियों की तलाश कर रही है.

हुआ यह कि यह व्यक्ति अपने दो अन्य साथियों सहित रात में अपने ससुर के घर गया और भोजन करने के बाद अपने साथियों सहित वहीं सो गया. रात में मौका पा कर उस ने लगभग 29,000 रुपए का माल अपने साथियों को दे कर उन्हें पिछले दरवाजे से बाहर निकाल दिया और स्वयं चुपचाप सो गया.

—नवभारत टाइम्स, बंबई (प्रेषक : बालकृष्ण नीमा)

✦

✦ मंत्री बिना टिकट पकड़ा गया

हरियाणा के एक भूतपूर्व मंत्री तथा इंदिरा कांग्रेस के नेता पिछले दिनों प्रथम श्रेणी के डब्बे में बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गए. रेलवे मजिस्ट्रेट ने उन पर 450 रुपए जुरमाना किया. जिसे देने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया.

दिल्ली रिवाड़ी लाइन पर गुड़गांव के निकट बसई धनकोट स्टेशन पर अचानक एक यात्री गाड़ी की स्पेशल मजिस्ट्रेट ने चेकिंग की, जिस में उक्त मंत्री के अलावा अनेक व्यक्ति बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े गए.

—रांची एक्सप्रेस, बिहार (प्रेषक : रामावतारप्रसाद साहू) (सर्वोत्तम)

✦

यात्रा का झांसा दे कर 270 मजदूरों को ठगा

बस द्वारा उड़ीजा मेले (जोधपुर) की यात्रा कराने का झांसा दे कर एक ट्रेवलिंग एजेंट 270 मजदूरों से करीब 35,370 रुपए ले उड़ा.

बताया जाता है कि उस व्यक्ति ने कालिका ट्रेवल्स कंपनी के नाम से इस क्षेत्र में दफ्तर खोल रखा था. वह उड़ीजा मेले की यात्रा के नाम पर प्रति व्यक्ति 131 रुपए लेता रहा. करीब 270 मजदूरों से उस ने प्रत्येक से 131 रुपए एकत्र किए पर निर्धारित तिथि पर न वह मिला और न उस की बस आई.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अशोक खत्री)

✦

साड़ियों का प्रलोभन दे कर ठगी

रायपुर पुलिस ने पिछले दिनों एक महिला व पुरुष ठग को गिरफ्तार किया. ये दोनों ठग ऐसी बूढ़ी महिलाओं को शिकार बनाते थे जो पैरों या हाथों में चांदी के भारीभरकम गहने पहने हों. ये दोनों लुटेरे अपने शिकार के पास पहुंच कर कहते थे, "हमारे मालिक सब को मुफ्त में दोदो साड़ियां बांट रहे हैं. हमारे साथ चल कर आप दो साड़ियां ले लें."

शिकार को अपने शिकंजे में ले कर ये दोनों आगे बढ़ते थे. एकांत में जा कर पुरुष कहता, "तुम चांदी के इतने सारे गहने पहने हो, इन्हें देख कर हमारा मालिक कहेगा कि तुम गरीब नहीं हो. इसीलिए तुम इन्हें उतार कर मेरी स्त्री को दे दो और मेरे साथ चलो." फिर वे दोनों बूढ़ी महिलाओं को चकमा दे कर गायब हो जाते.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : द्वारिका अग्रवाल 'रज्जन') ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु उद्योगों में अस्थिरता दोषी कौन?

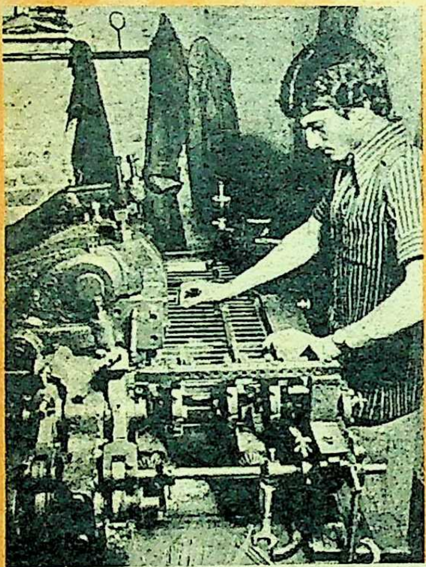

लघु उद्योगपति अकसर इस बात की शिकायत करते पाए जाते हैं कि सरकार लघु उद्योग लगाने व उन के विकास के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध नहीं करती है. इस के विपरीत सरकार उन्हें हर संभव सहायता दिए जाने का दावा करते हुए उन पर करों की चोरी करने व साधनों के दुरुपयोग का आरोप लगाती है. उद्यमी कहते हैं कि सरकार स्वयं उन को गैरकानूनी काम करने के लिए विवश करती है. ग्राहक कहता है कि हमारे देश में लघु उद्योगों द्वारा तयार किया गया माल घटिया किस्म का होता है. घटिया स्तर के लिए निर्माता विक्रेता को और विक्रेता ग्राहक को जिम्मेदार ठहराता है. कुल मिला कर सरकार, उद्योगपति, विक्रेता व ग्राहक एक-दूसरे को दोषी ठहराते हैं. हमें देखना यह है कि वास्तव में इस के लिए दोषी कौन है.

लोगों को अकसर यह भी कहते सुना जाता है, "अजी लाभ में क्या रखा है?" पर यह बात हमारी सरकार की नीतियों के साथ लागू नहीं होती. उदाहरण के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंड्यूट पाइप [illegible] में यदि [illegible] का नाम स्टील ट्यूबिंग रख दिया जाए तो वह उत्पादन शुल्क से मुक्त रहता है और यदि उसे स्टील के नाम से पुकारा जाए तो उस पर उत्पादन शुल्क लग जाता है. ऐसा क्यों? स्पष्ट है कि कोई भी व्यक्ति इस का निर्माण स्टील पाइप के नाम से नहीं करेगा.

इसी प्रकार फर्नीचर उद्योग में यदि

लेख • विवेक सक्सेना

नुकसान होता है, क्योंकि कोई भी उद्योगपति उस की नजरों में बिजली से चलने वाली ड्रिल मशीन का उपयोग नहीं करता और इस प्रकार उत्पादन शुल्क बचा ले जाता है. पावर कनेक्शन के अभाव में ये ड्रिल मशीनें घरेलू बिजली से चलाई जाती हैं जो एक गैरकानूनी काम है.

प्रतिभा, परिश्रम, धन और सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद लघु उद्योग देश के आर्थिक विकास में सहयोगी न बन कर बाधक सिद्ध हो रहे हैं. लघु उद्यमियों का आरोप है कि सरकार के रवैए व नीतियों की वजह से ऐसा हो रहा है, तो सरकार इस के ठीक विपरीत बात कहती है. आइए, देखें कि वास्तव में दोषी कौन है?

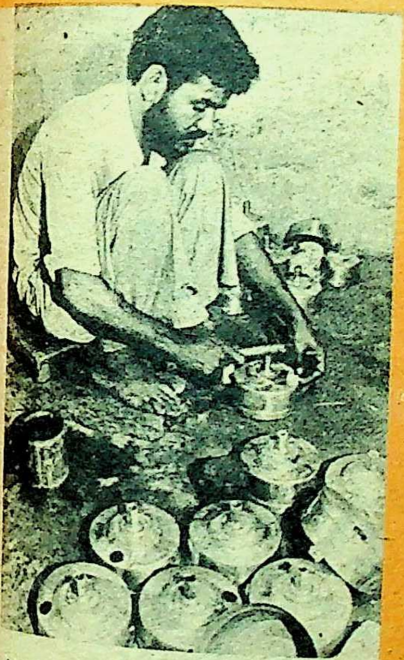

(बाएं) साइकिल की [illegible]लया, (बीच में) एक्वेरियम बाक्स, व (ऊपर) स्टोव बनाता कारीगर : सरकार की लापरवाही उद्योगों के पनपने में बाधक है.

स्टील का फर्नीचर बनाने के लिए बिजली से चलने वाली ड्रिल मशीन का प्रयोग किया जाए तो फर्नीचर पर उत्पादन शुल्क लग जाता है, जब कि हाथ से चलने वाली ड्रिल मशीन का प्रयोग करने पर यह सामान उत्पादन शुल्क से मुक्त रहता है. ऐसे नियमों के कारण सरकार को दोहरा

प्रश्न यह है कि उन को करों से बचने के ये तरीके कौन सिखाता है? इस का सीधा उत्तर यह है कि ऐसे नियमों को लागू करने व बनाने की जिमेम्दारी सरकार ने जिन लोगों पर सौंपी है वही उसे तोड़ने के रास्ते बता देते हैं. इस संबंध में एक उद्योगपति ने बताया कि शुरू में वह ऐसा करने से घबराता था, किंतु संबंधित इंस्पेक्टरों ने यह कहते हुए उस का हौसला बढ़ाया, "अरे, नियम तो तोड़ने के लिए बनाए जाते हैं. और फिर हमारे रहते तुम्हें कैसा डर? तुम भी दो पैसे कमाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हमें भी दो पैसे कमाने दो.

यही बात वस्त्र उद्योग पर भी लागू होती है. यदि सिले हुए कुरतों में बटन लगा दिए जाएं तो वे 'फिनिश्ड गुड्स' यानी तैयार माल की कोटि में आ जाते हैं और उन पर बिक्री कर लग जाता है जब कि बटन न लगे होने पर वे इस कर से मुक्त रहते हैं. तब 'अर्द्ध तैयार माल' की कोटि में आते हैं.

दिल्ली के एक सुप्रसिद्ध ब्रा निर्माता के अनुसार सरकार की नीतियां कुछ समझ में नहीं आती हैं. समान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक व्यक्ति को तो वह कार्य करने की अनुमति मिल जाती है जब कि दूसरा इस से वंचित रहता है. उदाहरण के लिए ब्रा की बिक्री में विज्ञापन व प्रचार का बहुत अधिक महत्त्व है किंतु रेडियो व टेलीविजन पर इसका विज्ञापन प्रसारित नहीं किया जा सकता. क्योंकि इस में सरकार को अश्लीलता नजर आती है. किंतु दूसरी ओर शीतल पेय व नहाने के साबुन के विज्ञापनों में अर्द्धनग्न युवतियां खुले आम परदे पर दिखाई जाती हैं.

प्रत्येक उद्योग में जो एक आम शिकायत देखने को मिली वह यह थी कि कच्चे माल के आवंटन में भ्रष्टाचार बुरी तरह व्याप्त है. जो वास्तव में उत्पादन करता है उसे कोटा नहीं मिलता और जिन्हें कोटा मिलता है वे उस को काले बाजार में बेच देते हैं. उदाहरण के लिए लोहे की चादरों का कच्चे माल के रूप में उपयोग करने वाले उद्योगों को अपनी जरूरत के मुताबिक इस की मात्रा नहीं मिल पाती. दिल्ली में 60 प्रतिशत ऐसे फर्जी उद्योग चल रहे हैं जिन्हें भारी मात्रा में इन चादरों का कोटा मिला हुआ है जब कि वे उत्पादन के नाम पर एक डब्बा तक नहीं बनाते. इन का काम कोटे में मिलने वाले लोहे को काले बाजार में ऊंचे दामों पर बेचना है. इस कमाई में सब का हिस्सा है. कुछ संबंधित अधिकारी भी इस में अपनी पूरी योगदान देते हैं.

इस बारे में एक उद्योगपति ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "कोई भी घाटा नहीं सहता है. हमें ऊंचे दामों पर कच्चा माल खरीदना पड़ता है. अतः हम भी ऊंचे दामों पर अपना माल बेच देते हैं."

लघु उद्यमियों की लाचारी

कभी तो सरकार कोटा नहीं देती और कभीकभी इतना अधिक कोटा दे देती है कि उसे खरीद पाना लघु स्तर पर उद्योग चलाने वाले व्यक्ति के बस की बात नहीं होती. स्कूटर व मोटरसाइकिल के कंट्रोल वायर बनाने के काम आने वाला आयातित स्टील शेप वायर या हार्स वायर काफी अच्छी किस्म का होता है. इसे मंगाने के लिए लाइसेंस व कोटा आसानी से नहीं मिलता. अगर कभी मिला भी तो वह इतना अधिक होता है कि उतनी अधिक धनराशि खर्च कर पाना किसी भी लघु उद्योगपति के सामर्थ्य के बाहर होता है. सरकार यह नहीं करती कि कई लघु उद्योगों को सम्मिलित रूप से इसे आयात करने की अनुमति प्रदान कर दे क्योंकि एक साथ लगभग 80,000 रुपए का माल एक व्यक्ति द्वारा खरीद पाना असंभव है. किंतु 10 उद्योगपति आठआठ हजार रुपए लगा कर यह माल आसानी से मंगवा सकते हैं.

इस का परिणाम यह होता है कि बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है अर्थात कुछ फर्जी किंतु संपन्न निर्माता वास्तविक निर्माताओं की इस मजबूरी का लाभ उठाते हुए यह कोटा प्राप्त कर लेते हैं और वही कच्चा माल ऊंचे दामों पर निर्माताओं को बेच देते हैं. ऐसी स्थिति में निर्माता के सामने सिर्फ दो ही विकल्प रह जाते हैं. यदि वह ऊंचे दामों पर कच्चा माल खरीदता है तो अपने माल को बाजार में बेच पाना उस के लिए मुश्किल हो जाता है और यदि कंट्रोल वायर बनाने के लिए रद्दी माल इस्तेमाल करता है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा कर के [illegible] उन के जीवन से खिलवाड़ करता है. पर वह भी क्या करे, जब ग्राहक स्वयं सस्ते के चक्कर में रद्दी माल खरीदने को तैयार हो?

साइकिल की तीलियों, स्टोव, रेडीमेक्स आदि के निर्माताओं ने इस संबंध में बताया कि कभी भी निर्माता अपनी इच्छा से घटिया माल तैयार नहीं करता. उसे वितरक की मांग के अनुसार माल तैयार करना पड़ता है.

उदाहरण के लिए, साइकिल की तीलियां बनाने में मीडियम कार्बन स्टील के स्थान पर माइल्ड स्टील तार काम में लाया जाता है. इसी तरह से स्टोव बनाने में निर्धारित स्तर से पतली

कितने लघु उद्योगपति खुद सरकारी कोटे से रॉ वायर आयात करने में समर्थ हैं?

[illegible] पीतल की जगह लोहे की चादर इस्तेमाल की जाती है. इस आधार पर इलेक्ट्रोप्लेटिंग कर के प्रदर्शित किया जाता है. निर्माताओं के अनुसार वितरक घटिया माल बेचना इसलिए पसंद करते हैं क्योंकि इस से उन के लाभ का प्रतिशत काफी अधिक होता है.

जब वितरकों से इस बारे में पूछताछ की गई तो उन्होंने कहा, "ग्राहक सस्ता सामान खरीदना चाहता है. वह अधिक पैसे खर्च कर के अच्छी चीज लेने को तैयार ही नहीं होता तो हम क्या करें? हम तो वही सामान बेचेंगे जो ग्राहक खरीदना चाहेगा."

सरकार उद्योग लगाने के लिए जमीन भी देती है, किन्तु जमीन देते समय व्यावहारिकता को ताक पर रख देती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उद्योगपति की आर्थिक स्थिति पर भी ध्यान दिए बिना अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करती है. बहुत से उद्योग इतने छोटे होते हैं और उन को लगाने वाले उद्यमियों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब होती है कि वे बड़े प्लाट (100 वर्ग मीटर) खरीदने में असमर्थ होते हैं.

उदाहरण के लिए धातु के सामान पर पालिश करने का उद्योग 1,500 रुपए की लागत से प्रारंभ किया जा सकता है.

स्टील ट्यूबिंग की जगह स्टील पाइप
नाम रखा नहीं कंड्यूट पाइप
पर कर लग गया.

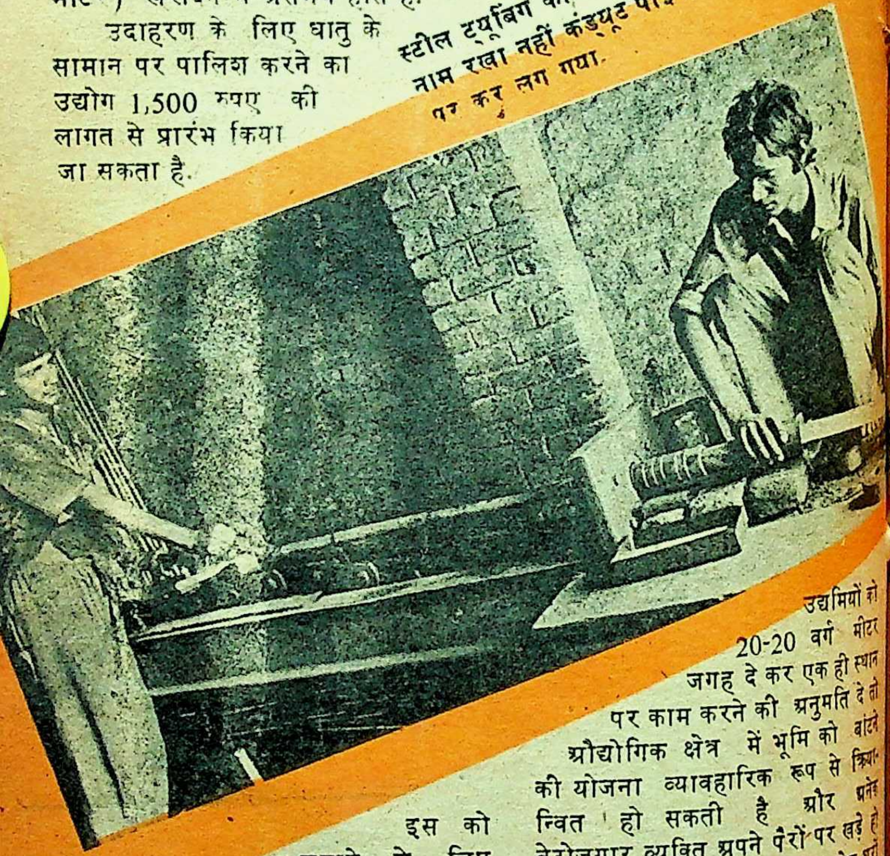

इस को लगाने के लिए 5-10 हजार रुपए की लागत से प्लाट खरीदना हर उद्योगपति के लिए संभव नहीं होता और फिर इस उद्योग को लगाने के लिए बहुत अधिक स्थान की जरूरत भी नहीं होती. किंतु वह न तो औद्योगिक क्षेत्र में प्लाट खरीद कर वहां अपना उद्योग लगा सकता है और न ही इस को अपने घर पर चलाने के लिए बिजली का इस्तेमाल कर सकता है, क्योंकि घरेलू बिजली का औद्योगिक कार्यों के लिए उपयोग करना अपराध है. यदि सरकार एक उद्योगपति को 100 वर्ग मीटर का प्लाट देने के बजाए पांच ऐसे उद्यमियों को 20-20 वर्ग मीटर जगह दे कर एक ही स्थान पर काम करने की अनुमति दे तो औद्योगिक क्षेत्र में भूमि को बांटने की योजना व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित हो सकती है और अनेक बेरोजगार व्यक्ति अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं, पर ऐसा नहीं होता. उद्योग घरों में ही चलते हैं, संबंधित अधिकारियों व इंस्पेक्टरों की जेबें गरम होती रहती हैं व नुकसान सरकार का होता है.

थाईलैंड प्रति वर्ष एक तिहाई विदेशी मुद्रा मछलियों के निर्यात से कमाता है. मत्स्य उद्योग के बारे में जानकारी प्राप्त करते समय 'ट्रापिक्वेरियम' नाम से मत्स्य उद्योग चलाने वाले श्री राकेश शुक्ल ने कहा कि मछलीघर में पाली जाने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछलियों की विदेशों में बहुत मांग है. इन की संख्या बढ़ाने व प्रजनन के लिए हमारे देश में समस्त सुविधाएं उपलब्ध हैं. यदि विदेशों से दुर्लभ जाति की मछलियां मंगा कर उन की संख्या में वृद्धि कर के उन का निर्यात किया जाए तो राष्ट्र को प्रति वर्ष करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा की आय हो सकती है, पर हमारे देश में मछलियों के आयात पर पाबंदी है, जब कि इन के आयातकर्ता सरकार को इस बात की गारंटी देने को तैयार हैं कि वे जितने मूल्य की मछलियां आयात करेंगे, उस से दस गुना मूल्य की मछलियां निर्यात कर के दिखाएंगे. पर सरकार इस बारे में उदासीनता का रुख अपनाए हुए है.

बिजली का कनेक्शन न मिलने के बाद भी उद्योग चलते हैं, पर ऐसे में कमाई होती है तो सिर्फ भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों की.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक्रिलिक शीट बनाने के काम आने वाला कच्चा माल मोनोमर एक पेट्रोलियम जन्य पदार्थ है. पहले यह विदेशों से मंगाया जाता था. आयातित मोनोमर 16 रुपए प्रति किलो के भाव से बिकता था, किंतु सरकार ने जापान के सहयोग से इसे भारत में ही बनाने के लिए बड़ौदा में एक कारखाना स्थापित किया है. हमारे देश में बनने वाला मोनोमर न केवल घटिया किस्म का है बल्कि काफी महंगा (24 रुपए किलो) भी है. एक रोचक तथ्य यह भी है कि मोनोमर के आयात पर तो रोक लगा दी गई है, पर तैयार एक्रिलिक शीट का आयात किया जा रहा है. अतः ऐसी उद्देश्यहीन अलाभकारी नीतियां तैयार करने से उद्योगों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है.

मानक चिह्न का प्रयोग

बहुत सारी विशेषताओं के बावजूद बहुत कम निर्माता आई. एस. आई. (भारतीय मानक संस्थान) का निशान प्राप्त करने के लिए उत्सुक दिखाई पड़ते हैं. जब बिजली के उपकरण तैयार करने वाली कंपनी 'इलाइट' के प्रोडक्शन मैनेजर श्री सुरेश गुप्त से आई. एस. आई. निशान का प्रयोग न करने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, "वास्तव में ये मानक भारतीय परिस्थितियों में खरे नहीं उतरते. ज्यादातर मानक आई. एस. आई. ने विदेशों से उधार लिए हैं. अतः उन के अनुसार वस्तुओं के निर्माण में व्यावहारिक कठिनाइयां आती हैं. साथ ही जिस प्रकार का कच्चा माल, इन मानकों के अनुसार निर्माण में प्रयुक्त किया जाना चाहिए, वह सरकार उपलब्ध नहीं करा पाती. अतः मानक निर्धारित करने से फायदा क्या है?

"एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारण यह भी है कि इन के अनुसार माल तैयार करने से लागत बहुत अधिक बढ़ जाती है. अतः नए उद्यमी के लिए बढ़ी लागत पर माल बेच पाना संभव नहीं हो पाता.

वैसे श्री गुप्त इस बात से सहमत थे कि यह तभी कारगर हो सकता है जब हर वस्तु पर इस निशान का अंकित किया जाना अनिवार्य कर दिया जाए."

चिह्न के प्रयोग में वैधानिक परेशानी

हमारे देश में इस समय लगभग 30 प्रतिष्ठित कंपनियां स्टोव का निर्माण कर रही हैं, किंतु एक भी आई. एस. आई. के मानक का उपयोग नहीं कर रही है. इस बारे में इन की भी यही दलील है कि उन्हें मानक के अनुसार निर्धारित कच्चा माल तो सरकार उपलब्ध नहीं करा पाती, अतः इन्हें बनाने से क्या फायदा. इस का परिणाम यह होता है कि रद्दी किस्म के स्टोव का निर्माण होता है और आए दिन इन के फटने की दुर्घटनाएं होती रहती हैं.

यदि ये मानक निर्धारित करते समय संबंधित निर्माताओं से सलाह ले ली जाए तो इस समस्या को किसी सीमा तक सुलझाया जा सकता है. दूसरी बात यह है कि यदि सरकार वास्तव में भारतीय मानक संस्था को उपयोगी बनाना चाहती है तो वे ऐसे निर्माताओं के लिए इस का निशान लेना अनिवार्य कर दे जिन के द्वारा उत्पादित वस्तु के प्रयोग से किसी प्रकार की क्षति होने की संभावना हो सकती है. भारतीय मानक संस्था उपभोक्ता के हितों की रक्षा के लिए अधिकतम यही कर सकती है कि वह स्तर के अनुरूप माल न होने पर उस फर्म को लाइसेंस न दे या पुराना लाइसेंस रद्द कर दे. बस इतना कर देने से ही संस्था की जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है. किंतु उपभोक्ता के जीवन को बराबर खतरा बना रहता है, क्योंकि खराब माल बाजार में बिकने आ जाता है व आई. एस. आई. इस संबंध में कुछ भी करने में कानूनन असमर्थ होता है.

अभी कुछ समय पहले दिल्ली पुलिस ने छापा मार कर एक ऐसे व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गिरफ्तार किया गया था. 12 बोर की बंदूक में काम आने वाले एल. जी. कारतूस पिछले चार वर्षों से बना रहा था. वह प्रति वर्ष आठनौ लाख कारतूस बना कर बेचता था.

तकनीकी कुशलता का दुरुपयोग

उल्लेखनीय है कि एल. जी. कारतूस हमारे देश में नहीं बनते हैं व विदेशों से आयात किए जाते हैं. इस कारतूस के विभिन्न हिस्से सहायक उद्योगों द्वारा तैयार करवाए जाते थे. अतः किसी को भी इन के निर्माण किए जाने के बारे में कोई संदेह नहीं होता था.

इस घटना के दो पहलू हैं. पहली बात यह है कि वह व्यक्ति काफी समय से बड़े पैमाने पर गैरकानूनी ढंग से इन कारतूसों का निर्माण कर के अपराध कर रहा था, अतः उसे कड़ी सजा दी जानी चाहिए.

किंतु वहीं दूसरी ओर इस घटना का व्यावहारिक पहलू क्या हमें यह सोचने के लिए विवश नहीं करता कि जो कारतूस लाखोंकरोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा खर्च कर के आयात किए जाते थे, उन्हें हमारे देश में भी बनाया जा सकता था. क्या उस व्यक्ति में प्रतिभा नहीं थी और क्या वह दूसरे लोगों को रोजगार प्रदान नहीं कर रहा था? इन सब प्रश्नों का उत्तर यही है :

वास्तव में हमारे देश में प्रतिभा को विकसित करने के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते हैं. अतः प्रतिभाशाली व्यक्ति या तो दूसरे देशों को चल देते हैं अथवा अपनी योग्यता का दुरुपयोग कर के गैरकानूनी काम करने लगते हैं. ●

मुक्ता लघु उद्योग विशेषांक

मुक्ता का 'लघु उद्योग विशेषांक' जून (द्वितीय) 1980 अंक शिक्षित बेरोजगारों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है. यह अंक सीमित संख्या में उपलब्ध है. अपने संग्रह और उपयोग के लिए 3.00 रुपए पोस्टल आर्डर अथवा मनीआर्डर से भेज कर अंक प्राप्त करें. वी. पी. पी. से भेजना संभव नहीं. रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए 2.50 रुपए अतिरिक्त भेजिए.

मनीआर्डर व पोस्टल आर्डर भेजने का पता : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन तीन बाल उपन्यासों का नया सेट

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्रत्येक रु. 2.75

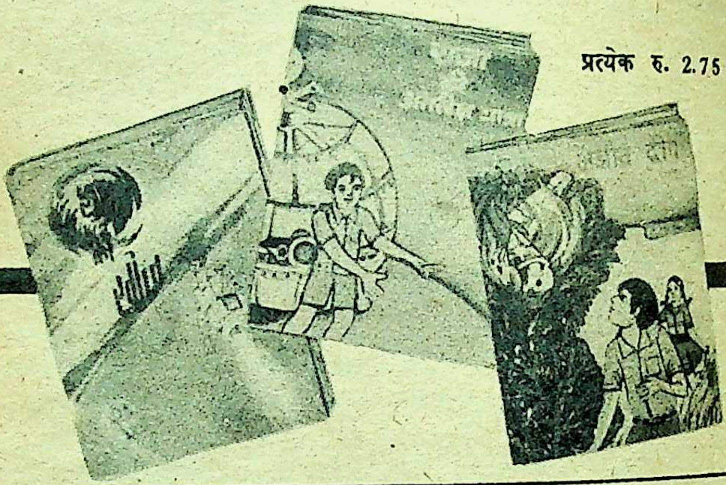

राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी...........राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या उसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिस्र जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले...... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए हुए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा दीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिक के साथ उमेश चाचा को खोजने निकल पड़ा......उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढ़ा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्याक्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सर्कस नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

शहर में गधे घूमने लगे

प्रशासन को परेशान करने के लिए असामाजिक तत्व कैसेकैसे हास्यास्पद तरीके अपना सकते हैं, इस का एक उदाहरण पिछले दिनों मुरादाबाद शहर में देखने को मिला.

शहर में कर्फ्यू वाले कई क्षेत्रों में वहां के लोगों ने काफी संख्या में गधे छोड़ दिए. इन गधों के शरीर पर पुलिस एवं एक स्थानीय विधायक का नाम लिखा हुआ था. यहांवहां घूमते हुए गधों को बाद में पुलिस ने पकड़ लिया.

—देशबंधु, जबलपुर (प्रेषक : हरिशचंद्र गुरु)

कंगाल बनने के बाद फिर लखपती

लखपती बनने में वह सफल तो रहा मगर पहले उसे कंगाल होना पड़ा.

आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के बोम्मागनिपल्ली तालुके के एक किसान को आठ साल पहले अपने खेत में प्याज के आकार का एक हीरा मिला था. आठ बच्चों का बाप वह किसान उस हीरे को ले कर कल्याणदुर्ग के तहसीलदार के पास गया. तहसीलदार ने वह हीरा रख लिया और कहा, "सरकार तुम्हें अच्छा इनाम देगी."

वह इंतजार करता रहा मगर उसे इनाम नहीं मिला. आठ वर्ष तक वह इस इनाम के लिए सरकार से मुकदमा लड़ता रहा. इस चक्कर में वह कंगाल हो गया पर अंत में मुकदमे का फैसला उस के पक्ष में ही हुआ. पिछले दिनों एक विशेष समारोह में उसे तीन लाख रुपए का बैंक ड्राफ्ट दिया गया.

—सांध्य टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : नीरजकुमार)

बकरे ने गंदा पानी पिलवाया

अमृतसर से दो मील दूर सुलतानविंड गांव का भाना नामक एक हरिजन एक बकरा खरीद कर अपने घर आ रहा था. रास्ते में उसे पूर्णसिंह जाट मिल गया. वह भाना को बकरा बेचने के लिए कहने लगा. इस पर भाना ने कहा कि वह उसे बकरा मुफ्त ही दे देगा यदि वह गांव के पोखर में कुल्ला कर के और मुंहहाथ धो कर आए. तब पूर्णसिंह ने गांव के लोगों के सामने उस गंदे पोखर में मुंहहाथ धोए और कुल्ला किया. फिर वह उस बकरे को ले कर अपने घर चला गया. घर पहुंच कर भाना ने सारी घटना अपनी पत्नी व लड़कों को बताई तो वे उसे बकरा वापस लाने के लिए जोर देने लगे. इस पर भाना पूर्णसिंह के घर गया और उस से अपना बकरा वापस मांगने लगा. पूर्णसिंह ने भी बकरा वापस देने के लिए उसी पोखर में हाथमुंह धोने और गंदा पानी पीने की शर्त लगाई. आखिर भाना ने गांव के लोगों के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

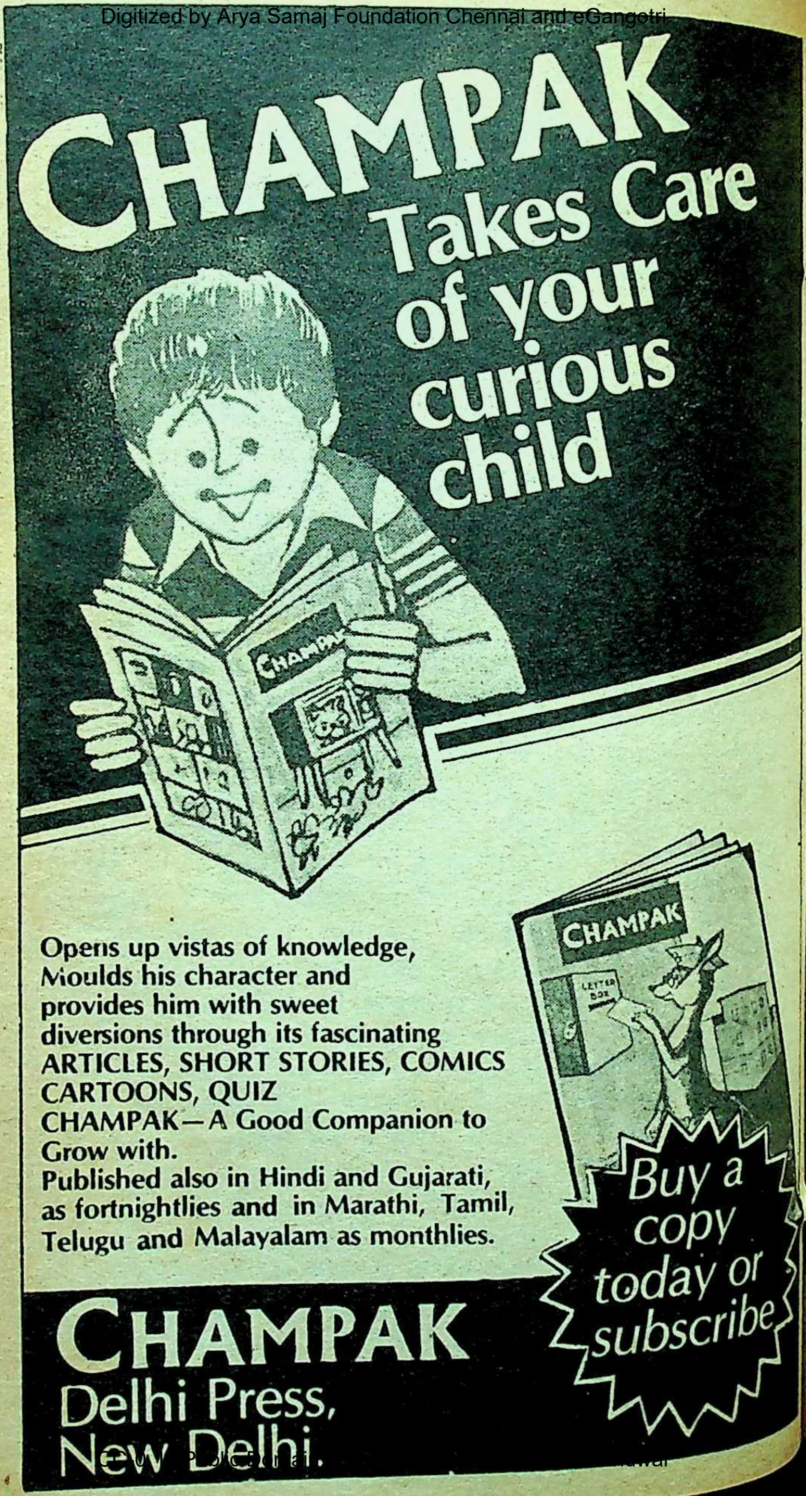

CC-0. In Public Domain. ... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने उस गंदे पोखर में मुंह धोया और उस का गंदा पानी भी पिया. इस तरह वह अपना बकरा वापस ले कर अपने घर की ओर चल दिया.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषिक : उषा)

✦

सोचा डाकू निकला कुत्ता

पिछले दिनों एक रात को बंगरू पुलिस थाने (जयपुर) को टेलीफोन से किसी ने बताया कि यूनाइटेड कमर्शियल बैंक में बाहर ताला लगा हुआ है, लेकिन अंदर डाकू घुसे हुए हैं.

पुलिस वाले बिना विलंब किए अपनी राइफलें तथा अन्य हथियार उठा कर डाकू दल का मुकाबला करने के लिए बैंक की ओर चल दिए. इस बीच सारे कसबे में भी यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि बैंक में कोई डाकू दल घुस कर लूटपाट कर रहा है. अतः कुछ ही देर में हजारों स्त्रीपुरुष बैंक के चारों ओर जमा हो गए.

फिर पुलिस ने डाकुओं को ललकारा कि वे शीघ्र ही दरवाजा खोल कर बाहर आ जाएं. लेकिन अंदर से जब काफी देर तक कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो लोगों को कुछ संदेह हुआ. इसी बीच पुलिस के एक सिपाही ने चुपके से रोशनदार के जरिए अंदर देखने का प्रयास किया तो पता चला कि वहां कोई डाकू नहीं है बल्कि एक कुत्ता घबराया सा इधरउधर कुरसीमेजों के बीच घूम रहा है.

—दैनिक नवज्योति, जयपुर (प्रेषक : महंत भगवानदास शर्मा)

✦

सरकारी आंकड़ों का क्या कहना

सरकारी आंकड़ों का एक रोचक उदाहरण पिछले दिनों हरदोई में देखने को मिला.

बाढ़ एवं अतिवृष्टि के बाद बीमारी रोकने के लिए जिले में स्वास्थ्य विभाग ने 77,082 कुओं में कीटनाशक दवाएं छिड़कने की बात कही है जब कि वहां कुओं की कुल संख्या 16,875 है.—अमर उजाला, बरेली (प्रेषक : अनिल) **(सर्वोत्तम)**

✦

वाह रे परीक्षक

हरदोई में जूनियर हाई स्कूल की परीक्षाओं की उत्तरपुस्तिकाएं कितनी लापरवाही से जांची जाती हैं इस का रहस्योद्घाटन उस समय हुआ जब एक व्यक्ति ने अपनी पुत्री की उत्तरपुस्तिकाओं की पुनः जांच कराई.

गंगादेवी हायर सेकंडरी स्कूल की उक्त छात्रा के गणित के प्रथम प्रश्नपत्र में 19 और द्वितीय प्रश्नपत्र में 34 अंक थे. किंतु उत्तरपुस्तिकाओं की पुनः जांच कराने से पता चला कि परीक्षक ने सभी उत्तरों को देखा ही नहीं. सभी उत्तरों के अंक देने पर उसे प्रथम प्रश्नपत्र में 50 और द्वितीय प्रश्नपत्र में 39 अंक प्राप्त हुए.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक : झिन्ने श्रीवास्तव)

✦

जिलाधीश की कार्यकुशलता

नाहन के नए जिलाधीश ने अपनी कार्यकुशलता दिखाने के लिए अराजपत्रित कर्मचारियों की हड़ताल में भाग लेने के कारण पांवटा साहिब के एक ऐसे कर्मचारी रामदित्ता को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया जो वर्षों पूर्व मर चुका है. एक अन्य नोटिस तोताराम नाम के आदमी के नाम जारी किया गया, जो 1975 में सेवामुक्त हो गया था.

—दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़ (प्रेषक : अशोककुमार) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घासीराम कोतवाल

नाटक के प्रदर्शन के लिए नाट्य मंडली को यूरोप क्यों भेजा गया?

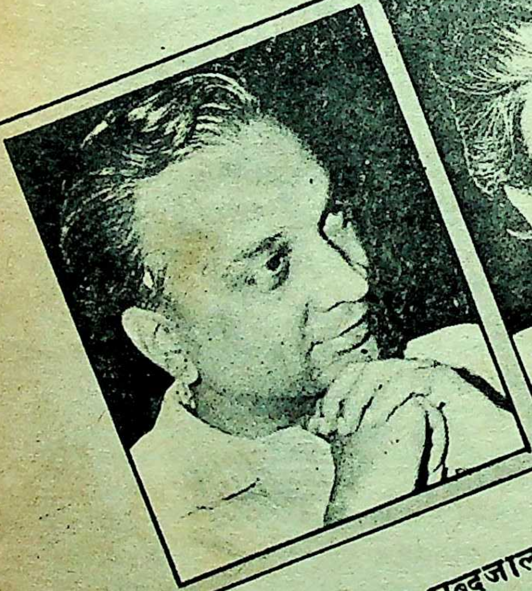

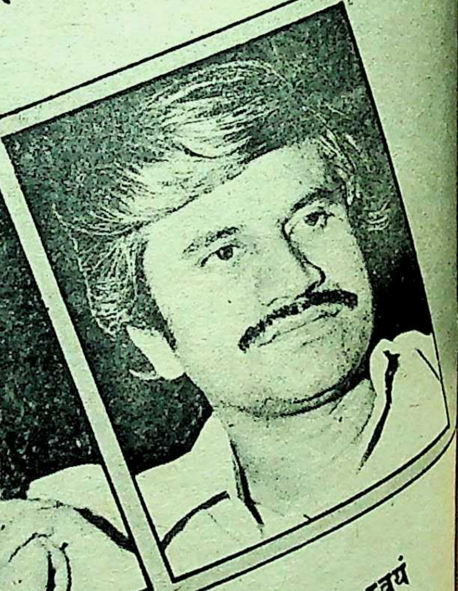

समाज को अपने शब्दजाल में फंसा कर स्वयं ऐयाशी करने वाले वर्ग का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करने वाले इस नाटक के प्रदर्शन को ले कर यहां कई विवाद उठ खड़े हुए थे. यदि उन विवादों को नजरअंदाज कर दिया जाए तब भी दूसरे देशों में इस नाटक के प्रदर्शन की अनुमति देना क्या उचित ठहराया जा सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख श्रीरामचंद्र मिश्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'घासीराम कोतवाल' नाटक के लेखक विजय तेंदुलकर (बाएं), निर्देशक जब्बार पटेल (बीच में) और नाटक का पहला दृश्य गणेश पूजा (नीचे) : कुरीतियों और धर्म व जाति के नाम पर ऐयाशी करने वालों का परदाफाश करने वाले नाटक का प्रारंभ पूजा आडंबर से क्यों?

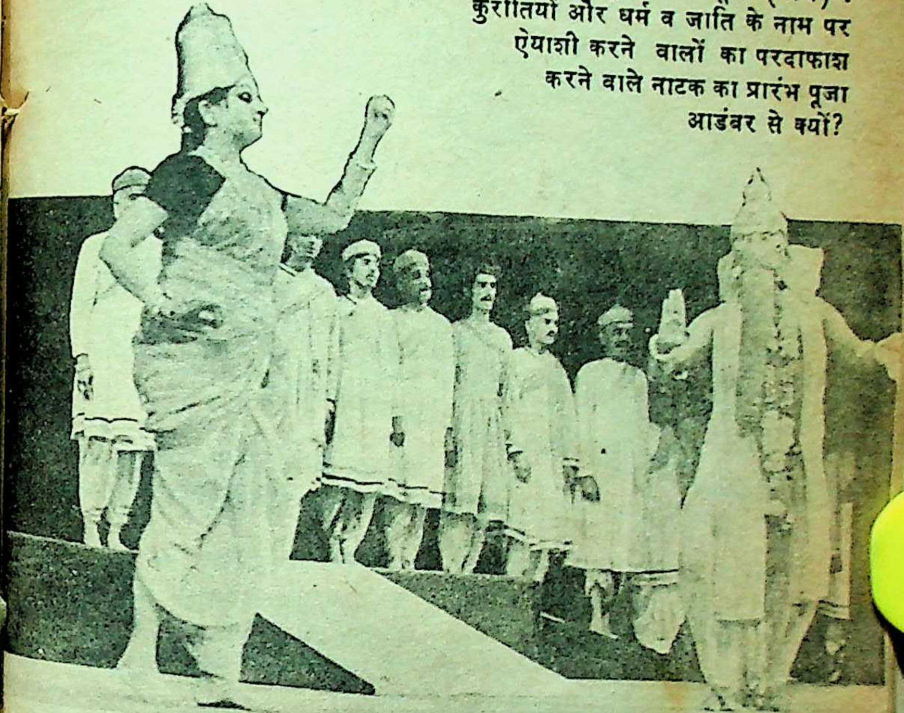

सितंबर के तीसरे सप्ताह में दो केंद्रीय मंत्री आपस में मिले. ये मंत्री थे सूचना व प्रसारण मंत्री वसंत साठे और विदेश मंत्री पी. वी. नरसिंह राव.

उन की बातचीत का विषय था : विजय तेंदुलकर द्वारा मराठी में लिखे और पुणे की थिएटर एकेडमी द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले 'घासीराम कोतवाल' नाटक को पश्चिम बर्लिन व अन्य यूरोपीय शहरों में दिखाने की इजाजत दी जाए या नहीं?

विदेश मंत्रालय ही सांस्कृतिक संबंधों की भारतीय परिषद का काम भी देखता है. एकेडमी ने परिषद से अपील की थी कि नाटक प्रस्तुत करने वाले दल को पश्चिम बर्लिन व अन्य यूरोपीय शहरों में जाने के लिए वित्तीय सहायता दी जाए.

पश्चिमी जरमनी के अंतरराष्ट्रीय नाट्य समारोह में 'घासीराम कोतवाल' को प्रस्तुत करने के लिए थिएटर एकेडमी को आमंत्रित किया गया था. बर्लिन में तो इस नाटक का प्रदर्शन होना ही था, इस के अलावा इस नाटक के यूरोप में भी लगभग 25 प्रदर्शन किए जाने थे. कलाकारों व अन्य प्रबंधकों सहित इस नाट्य दल के 64 सदस्यों के विदेश आने-जाने का खर्चा इतना ज्यादा था कि भारत की कोई भी नाट्य संस्था उसे उठा नहीं सकती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

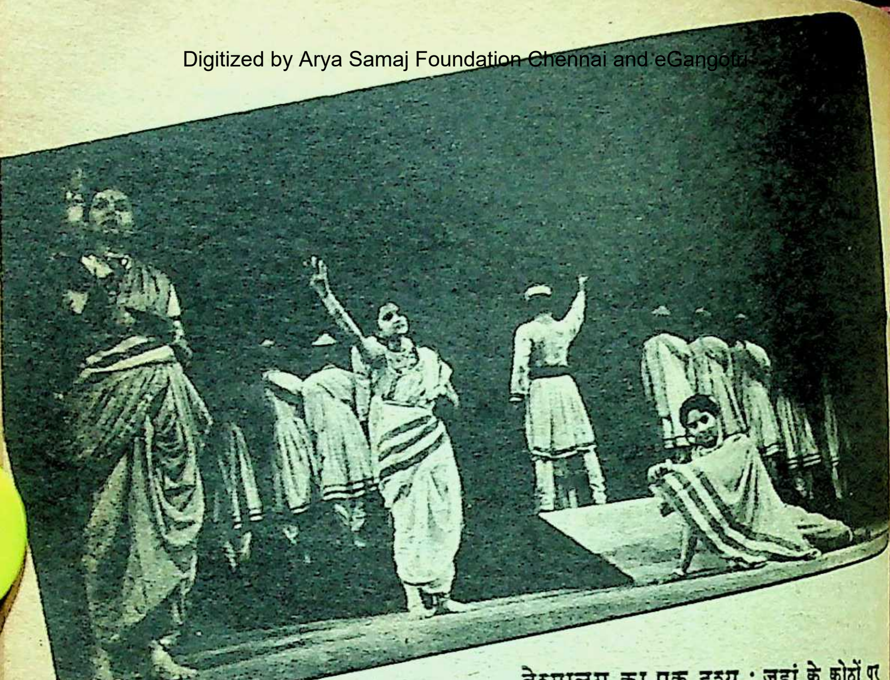

वेश्यालय का एक दृश्य : जहां के कोठों पर ब्राह्मण शाम ढलते ही मंदिर जाने के बहाने पहुंच जाते हैं.

लिहाजा थिएटर एकेडमी ने महाराष्ट्र व केंद्र की सरकारों से अनुदान देने की अपील की और यहीं से सारे तमाशे की शुरुआत हुई. सिर्फ सामाजिक आधार पर ही नहीं बल्कि राजनीतिक व धार्मिक आधार पर भी इस नाटक के विरोध व समर्थन में अलगअलग गुट बन गए.

नाटक का विरोध

राजनीतिक और सामाजिक विरोध के अगुआ बने वसंत साठे. उन्होंने नरसिंह राव से कहा, "एकेडमी के विदेशी दौरे को सांस्कृतिक परिषद की तरफ से कोई आर्थिक मदद न दी जाए."

नरसिंह राव न्यूयार्क जाने की तैयारी में थे. उन्होंने जवाब दिया, "अगर आप समझते हैं कि इस नाटक को विदेशों में नहीं दिखाया जाना चाहिए तो आप इस सिलसिले में प्रधान मंत्री से बातचीत कर लें."

वैसे उन का खुद का मत था कि अगर नाटक सरकारी मदद से खेला जाना है तो उस के लिए नाट्य मंडली को विदेश जाने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए.

वसंत साठे प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से मिले. उन्होंने कहा, "अगर यह नाटक बर्लिन में दिखाया गया तो भारत की सही तसवीर सामने नहीं आ सकेगी."

20 सितंबर को सरकार ने इस नाटक के प्रदर्शन के लिए नाट्य मंडली को बर्लिन न जाने देने का फैसला कर लिया. लेकिन यह काफी जल्दबाजी में किया गया फैसला था.

किंतु यह फैसला सरकार के लिए कई परेशानियां खड़ी कर सकता था. मसलन :

- इस से बजाए समस्या सुलझने के और विकट हो जाती.
- इस से विदेशों में यह धारणा बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती कि भारत में सेंसरशिप लागू हो गई है.

फिर ऐसा कोई कानून भी नहीं है जिस के तहत किसी नाट्य मंडली को विदेश जाने से रोका जा सके. अधिक से अधिक यदि परिषद पैसा देने से मना कर देती तो सांस्कृतिक व सामाजिक संस्थाओं की मदद से यह खर्च उठाया जा सकता था.

नाट्य दल विदेश रवाना

परिषद ने 64 में से 32 लोगों का खर्च उठाना स्वीकार कर लिया. बाकी की व्यवस्था एकेडमी ने खुद कर ली. ऊपरी खर्चे के लिए महाराष्ट्र सरकार ने एक लाख रुपया दिया और इस तरह तमाम विरोधों व आक्षेपों के बावजूद सरकारी सहायता की बैसाखियों की मदद से थिएटर एकेडमी का दल 'घासीराम कोतवाल' प्रस्तुत करने के लिए बर्लिन जा पहुंचा.

'घासीराम कोतवाल' को विदेश में दिखाने का विरोध तो इस बार हुआ, लेकिन जब आठ साल पहले यह नाटक पुणे में खेला गया था, तभी से यह विवादास्पद चला आ रहा है.

अगस्त, 1980 में 'भगवा सेना' नाम की पुणे की एक संस्था ने धमकी दी थी कि यदि शहर में 'घासीराम कोतवाल' नाटक खेला गया तो वह उस थिएटर को तहसनहस कर देंगे. इस सेना का नायक है विलास तुपे, जिस पर आरोप है कि उस ने आचार्य रजनीश पर चाकू से हमला किया था. लेकिन नाटक खेलने के समय जब भगवा सेना ने प्रदर्शन करना चाहा तो पुलिस ने उसे तितरबितर कर दिया.

पुणे के उच्च वर्ग में इस नाटक का खासा विरोध होता रहा है. विरोधियों का मानना है :

● यह नाटक ब्राह्मण वर्ग का मजाक उड़ाता है.

पेशवा का मंत्री नाना फड़नवीस रसिक मुद्रा में : नाटक के विरोधियों को नाना का वेश्यालय में जाने का प्रसंग ही ज्यादा खटक रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

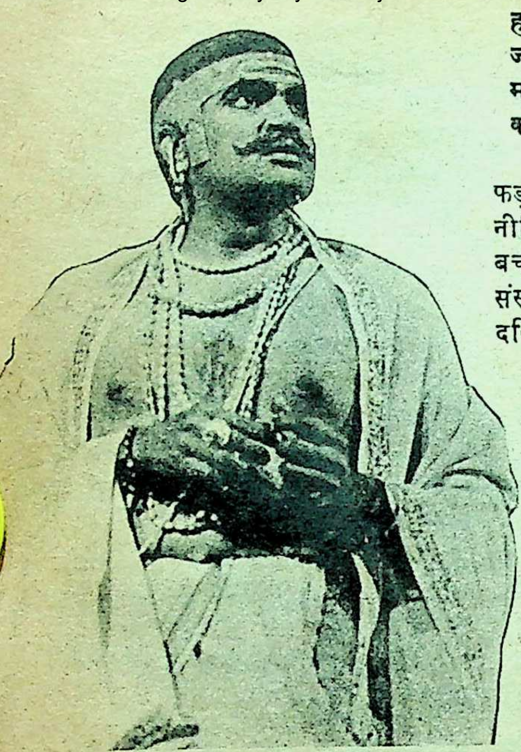

● इस में जानबूझ कर ब्राह्मण वर्ग के चरित्र को छिछला दिखाया गया है.

● यह नाटक भारतीय संस्कृति का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता.

● यह ऐतिहासिक विभूति नाना फड़नवीस के व्यक्तित्व को काफी गंदले रूप में प्रस्तुत करता है.

'घासीराम कोतवाल' नाटक के समर्थकों का अलग ही मत है. वे कहते हैं:

—यह भारतीय नाट्य इतिहास के महत्त्वपूर्ण नाटकों में से एक है.

—यह नाटक उस सामंती व्यवस्था को स्पष्ट करता है जो समय के परिवर्तन को स्वीकार नहीं करना चाहती और इस के बजाए कूपमंडूकता व घटिया स्तर की सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं से ही लिपटे रहना चाहती है.

—यह नाटक सिद्ध करता है कि नाना

नाना फड़नवीस' नाटक में इस ऐतिहासिक व्यक्ति के निजी जीवन में कुछ ज्यादा ही झांका गया है. यही वजह मराठा ब्राह्मणों की बौखलाहट का कारण बन गई है.

फड़नवीस भले ही एक विलक्षण राजनीतिज्ञ व कुशल प्रशासक रहा हो, लेकिन बचपन से जमे सांस्कृतिक व धार्मिक संस्कारों की वजह से वह पाखंडी और दकियानूसी हो गया था.

नाटक का विषय क्या है?

आखिर 'घासीराम कोतवाल' में ऐसी क्या बात है जो यह विवाद उठ खड़ा हुआ?

'घासीराम कोतवाल' 18वीं शताब्दी की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक व्यंगयात्मक नाटक है, जिस में तत्कालीन कूपमंडूकता का मजाक उड़ाया गया है. नाटक में जिस समय की कहानी ली गई है तब धर्म के नाम पर पुणे में हर किस्म के व्यभिचार हो रहे थे.

मंदिरों के बहाने ब्राह्मण वेश्यालय जाते थे. उपेक्षित ब्राह्मणियों ने अपनेअपने यार पाले हुए थे. खानेपीने से ले कर मुर्दों तक को फूंकने में उन में झगड़ा होता था.

यह काल महाराष्ट्र के पेशवाओं के पतन का समय था.

पुणे का प्रधान था नाना फड़नवीस, जो उम्र से बूढ़ा लेकिन आदतों से रसिक था. एक दिन वेश्यालय में वेश्या के साथ नाचते हुए नाना के पैर में हलकी सी मोच आ जाती है, कन्नौज से आया ब्राह्मण घासीराम उसे सहारा देता है. घासीराम वेश्या का नौकर होता है. वेश्या नाना द्वारा घासीराम को दिया गया हार उस से झपट लेती है.

एक सुबह पुणे के ब्राह्मण घासीराम को चोर मान कर उस की धुनाई कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं. घासीराम उन से बदला लेने की कसम खाता है. [illegible] पहुंचता है. नाना एक छोटी सी लड़की को फुसलाने की कोशिश कर रहा होता है कि तभी घासीराम वहां पहुंच जाता है. लड़की कहीं खिसक जाती है. नाना घासीराम से कहता है कि वह अगर उसे खूबसूरत लड़की ला कर दे तो वह उसे मालामाल कर सकता है.

घासीराम का प्रतिशोध

प्रतिशोध में अंधा घासीराम दिमाग से कुछ नहीं सोच पाता और नाना के हरम में अपनी लड़की ललिता को ही भेज देता है. बदले में वह ले लेता है पुणे शहर की कोतवाली, ताकि अपने अपमान का बदला ले सके. कोतवाल बन कर वह नियम जारी करता है कि बिना परमिट रंडीबाजी करना, मुर्दा फूंकना, गर्भ गिराना, खानदानी औरत का छिनाली करना, छिनाल का भड़ुआगीरी करना, ब्राह्मण का बदकारी करना आदि बंद.

उस का सारा गुस्सा ब्राह्मणों पर ही टूटता है. धीरेधीरे उस के विरोधियों की संख्या बढ़ती जाती है.

उधर अत्यधिक भोग की वजह से ललिता मर जाती है. नाना उस की लाश को गड़वा देता है और एक छोटी उम्र की लड़की से सातवीं शादी करने की तैयारी शुरू कर देता है.

घासीराम को जब अपनी लड़की की मौत का पता चलता है तो वह बौखला जाता है. उसे नहीं सूझता कि वह क्या करे. उसी दिन फलों की चोरी करने के जुर्म में वह कुछ ब्राह्मणों को पकड़ कर कालकोठरी में डलवा देता है जहां कुछ

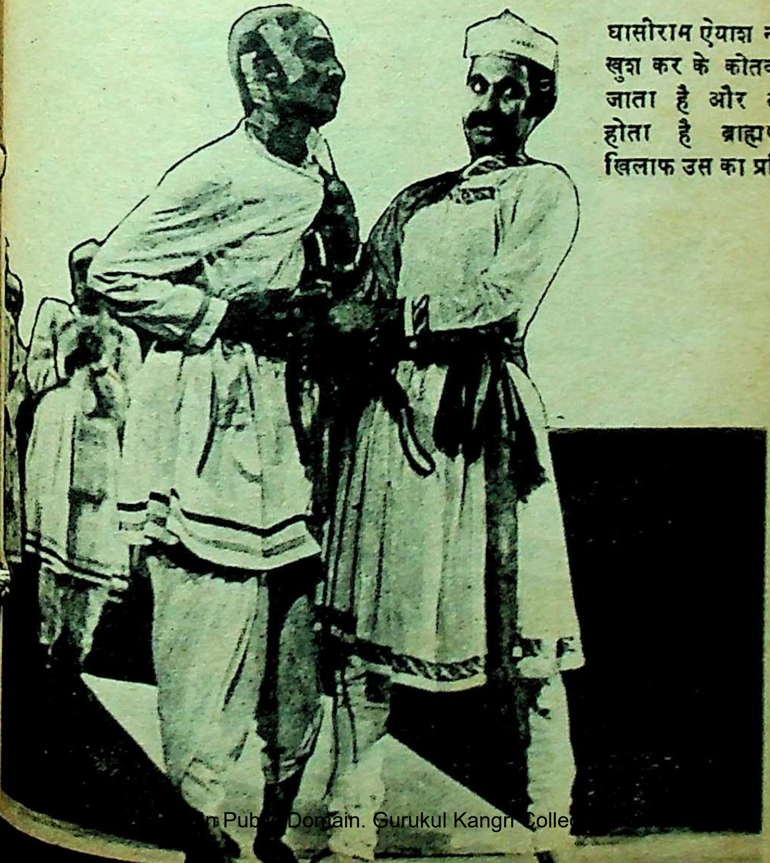

घासीराम ऐयाश नाना को खुश कर के कोतवाल बन जाता है और तब शुरू होता है ब्राह्मणों के खिलाफ उस का प्रतिशोध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

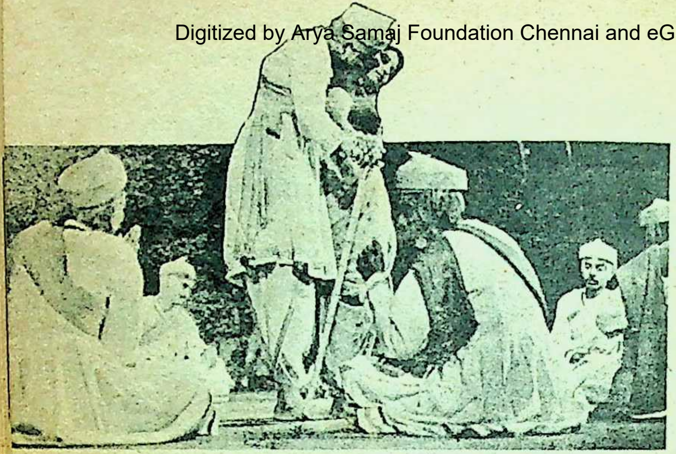

घासीराम की मनमानी के बीच नाना भोग-विलास में ही लीन रहता है.

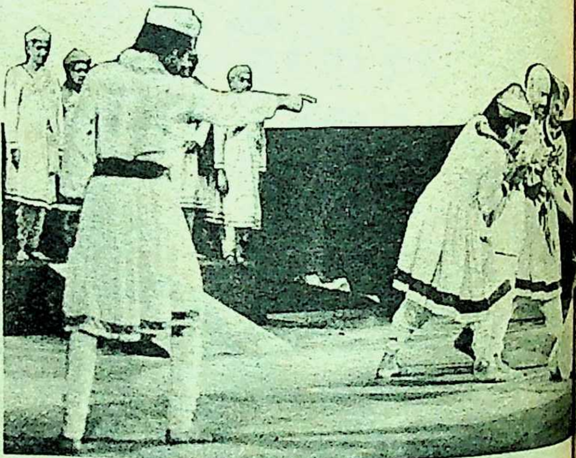

उधर घासीराम की सख्ती से बौखला कर सभी ब्राह्मण उस का विरोध करते हैं.

की दम घुटने से मृत्यु हो जाती है.

ब्राह्मण मिल कर शोर मचाते हैं. नाना खुद घासीराम से पिंड छुड़ाने के फेर में होता है. लिहाजा वह घासीराम को खत्म करने का हुक्म दे देता है. पुणे के ब्राह्मण मिल कर घासीराम कोतवाल की हत्या कर देते हैं.

आठ साल पहले जब पहली बार पुणे में इस नाटक का प्रदर्शन हुआ था तो अच्छाखासा तहलका मच गया था. परंपरावादी लोगों के लिए यह स्वीकार कर पाना आसान नहीं था कि जिस नाना फड़नवीस को वे आदर्श प्रशासक मानते थे वह हाथ में चांदी की मुठिया वाली छड़ी लिए और कलाइयों में चमेली का गजरा लगाए नाचतेगाते हुए मंच पर प्रवेश करे और 'बेटीबेटी' कह कर छोटी उम्र की लड़कियों के साथ भोग करे.

लेकिन इन छोटेमोटे विरोधों के बावजूद 'घासीराम कोतवाल' के 200 से ज्यादा प्रदर्शन देश भर के अलगअलग हिस्सों में हुए. हर शो में दर्शकों की खासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाना की अनुमति मिलने पर पुणे के ब्राह्मणों द्वारा सामूहिक रूप से घासीराम कोतवाल की हत्या कर दी जाती है (सामने)

नाना की सातवीं शादी की तैयारी—वधू नन्हीमुन्नी बच्ची है : बेमेल विवाह पर करारा व्यंग्य (नीचे)

भीड़ रही.

विरोध क्यों?

नए विवाद ने तब जोर पकड़ा जब थिएटर एकेडमी ने सांस्कृतिक परिषद से आर्थिक मदद की मांग की और परिषद की अध्यक्षा कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने इसे स्वीकार कर लिया. विरोधियों का आक्रोश शायद इस बात को ले कर ज्यादा था कि सरकार ने सिर्फ इस नाटक विशेष को ही क्यों मदद देना स्वीकार किया? भारत में आज भी लोग विदेश-यात्रा के खास सौदाई हैं और हर व्यक्ति चाहे वह कलाकार ही क्यों न हो, अपनी प्रतिभा का मूल्यांकन विदेशी भूमि पर पाना चाहता है. लेकिन हर कोई तो विदेश नहीं जा पाता और जो विदेश नहीं जा पाता वह उस की आलोचना करता है जो किसी तरह तिकड़म कर के विदेश जाने की जुगाड़ कर चुका हो.

ऐसा ही 'घासीराम कोतवाल' के साथ हुआ. महाराष्ट्र की कई पेशेवर नाटक कंपनियों ने इस विदेश यात्रा का विरोध किया. शिव सेना की मदद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 2

कितना महंगा धर्म : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
कितना महंगा धर्म (निर्णय)
राम कथा व सीता चरित्र
सरिता और हिंदू समाज
तुलसी साहित्य : अनुवादों की सफल नुमाइश के सिवा क्या है ?
तुलसी साहित्य : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?
रावण
रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग
रामचरितमानस के कुछ असंगत स्थल
श्रीकृष्ण
गीता
कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्म प्रचार
क्या कौमार्यरक्षा दकियानूसी है?
कृष्ण और राधा
श्रीमद्भागवत
भागवत और भूगोल
समाजवाद बनाम स्वतंत्रता
कामायनी
हिंदू विवाह पद्धति
पुत्रेष्टि यज्ञ
तुलसीदास और हिंदू समाज
हिंदी साहित्य का गलत इतिहास
धनुषयज्ञ
कृष्ण और गोपियां
हमारे देव मंदिर
क्या समाजवाद अनिवार्य है?
विवाह पूर्व यौन संबंध
श्रीकृष्ण : अपने जीवन की संध्या में सताई गई नारी
कृष्ण और कुब्जा

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट, रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

मराठी प्रेक्षक संघ बना कर उन्होंने नाटक की विदेश यात्रा के विरोध में बाकायदा एक अभियान छेड़ दिया.

मराठी के कुछ समाचारपत्रों ने पी. एल. देशपांडे (मराठी के प्रसिद्ध लेखक) से मांग की कि वह सरकार से अपील करें कि 'घासीराम कोतवाल' को विदेश में न खेलने दें. 14 साल पहले उन्होंने ही एक अन्य नाटक 'टच आफ ब्राइटनेस' के विदेश में खेले जाने का विरोध किया था, लेकिन इस बार पी. एल. देशपांडे ने इस नाटक का विरोध करने से मना कर दिया. शंभु मित्र, बासु भट्टाचार्य, बासु चटर्जी, कुमुदनी मेहता, अमोल पालेकर, डा. श्रीराम लागू, गिरीश करनाड, ख्वाजा अहमद अब्बास के साथ मिल कर उन्होंने सरकार से अपील की कि वह नाटक के विदेश में खेले जाने पर प्रतिबंध न लगाए.

प्रदर्शन के समर्थकों का तर्क

उन का तर्क था, "यह सरकार का काम नहीं है कि वह यह देखे कि सही इतिहास क्या है और नाटक लेखक ने उस की कैसे व्याख्या की है. अगर सरकार पुणे की नाट्य मंडली की यात्रा पर कोई प्रतिबंध लगाती है तो इस का मतलब होगा सेंसरशिप और लेखकीय अधिकारों का हनन. इस से यह भी माना जाएगा कि सरकार महाराष्ट्र में ब्राह्मण राजनीति को कायम रखना चाहती है."

दिलचस्प बात यह है कि 'घासीराम कोतवाल' का विरोध कलात्मक स्तर पर कम और जातिगत आधार पर ज्यादा हुआ. अधिकांश ब्राह्मणों की तरफ से ही इस नाटक को विदेश में खेले जाने का विरोध किया गया.

नाट्य मंडली विदेश चली गई. इस की सब से ज्यादा पीड़ा वसंत साठे को ब्राह्मण होने की वजह से ही हुई. उन्होंने कहा, "यह नाटक इतिहास को गलत ढंग से प्रस्तुत करता है और विदेशों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इसे दिखाना हमारे देश के स्वाभिमान पर आघात होगा."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उन की एक नहीं चल सकी. 22 सितंबर को शिव सेना के प्रमुख बाल ठाकरे ने अदालत में इस नाट्य मंडली की विदेश यात्रा को रोकने के लिए अपील कर दी. बाद में वह इस शर्त पर समझौता करने को तैयार हो गए कि नाटक की विवरणिका में नाना फड़नवीस को महान राजनीतिज्ञ व कुशल प्रशासक बता दिया जाएगा यानी जो नाटक दिखाया जाएगा उस की शुरू में लीपापोती कर दी जाएगी.

इस नाटक के संबंध में विवाद तभी उठा जब थिएटर एकेडमी ने सरकार से आर्थिक सहायता की मांग की. यदि यह मांग नहीं की जाती तो कोई तूफान पैदा नहीं होता. सवाल यह है कि जब किसी नाटक के किसी विश्व प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के चयन का जिम्मा सरकार पर नहीं है तो वह उस के विदेश में खेले जाने के लिए नाट्य मंडली को बाहर भेजने का खर्चा क्यों उठाए? अगर सरकार 'घासीराम कोतवाल' को खेलने के लिए नाट्य मंडली को बर्लिन भेजती तो एक अलग बात थी, लेकिन इस नाटक के साथ जो हुआ उस से एक गलत परंपरा ही जन्म लेगी. अगर कोई नाटक मंडली इतनी सक्षम नहीं है तो क्यों वह विदेश यात्रा का मोह नहीं त्याग पाती?

इस सामाजिक कोढ़ को उजागर करने वाले 'घासीराम कोतवाल' जैसे नाटकों की विदेशों में नहीं बल्कि देश के छोटेछोटे हिस्सों में जरूरत है. बजाए बर्लिन व यूरोप में खेलने के यदि थिएटर एकेडमी भारत के गांवगांव में यह नाटक खेले तो उस से लोगों में जागरूकता पैदा होगी. यूरोपीय दर्शकों के लिए तो यह एक महज तमाशा है और भारतीय कूपमंडूकता का मजाक उड़ाने का एक माध्यम भी. ●

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट

सेट नं. 3

सिपाही क्यों लड़ता है
प्रेम पत्र न लिखिए
डायरी न लिखिए
इसलाम और स्त्री
योगी अरविंद
गीता में अंतर्विरोध
गायत्री मंत्र
गायत्री मंत्र : आलोचना व आपत्तियों के उत्तर
ट्रेड यूनियन
संसद सदस्य श्री चादर वाला केस :
मुकदमे की काररवाई
सेशन जज का निर्णय
उच्च न्यायालय का निर्णय
सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय
घाटे वाले बालाजी
आखिरत की अटकलें
हिंदी साहित्य की बपौती
भीष्म
मुसलिम विवाह
भगवान श्री रजनीचर
महाभारत की ऐतिहासिकता
महाभारत की ऐतिहासिकता : आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर
रेंट कंट्रोल एक्ट एक विफल कानून
आप की लड़की प्रेम करती है
यूनियन
सौंदर्य प्रतियोगिता
वैज्ञानिक ज्ञान बनाम अध्यात्म ज्ञान
पूंजीपति
नियोग
सरिता और हिंदू समाज

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट, रुपए अग्रिम भेजें. वी. पी. पी. नहीं भेजी जाएगी.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति हड़ताल प्रकरणम्

हड़ताल का 27वां दिन था. शाम के पांच बजे थे. यह दिन भी पूरा हुआ. अगली सुबह 10 बजे से 28वां दिन शुरू हो जाएगा. फिर वही नारेबाजी होगी : 'हमारी मांगें पूरी करो,' 'जो हम से टकराएगा, चूरचूर हो जाएगा,' 'तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी,' 'हर जोरजुलम की टक्कर में,

कहानी • बुलाकी शर्मा

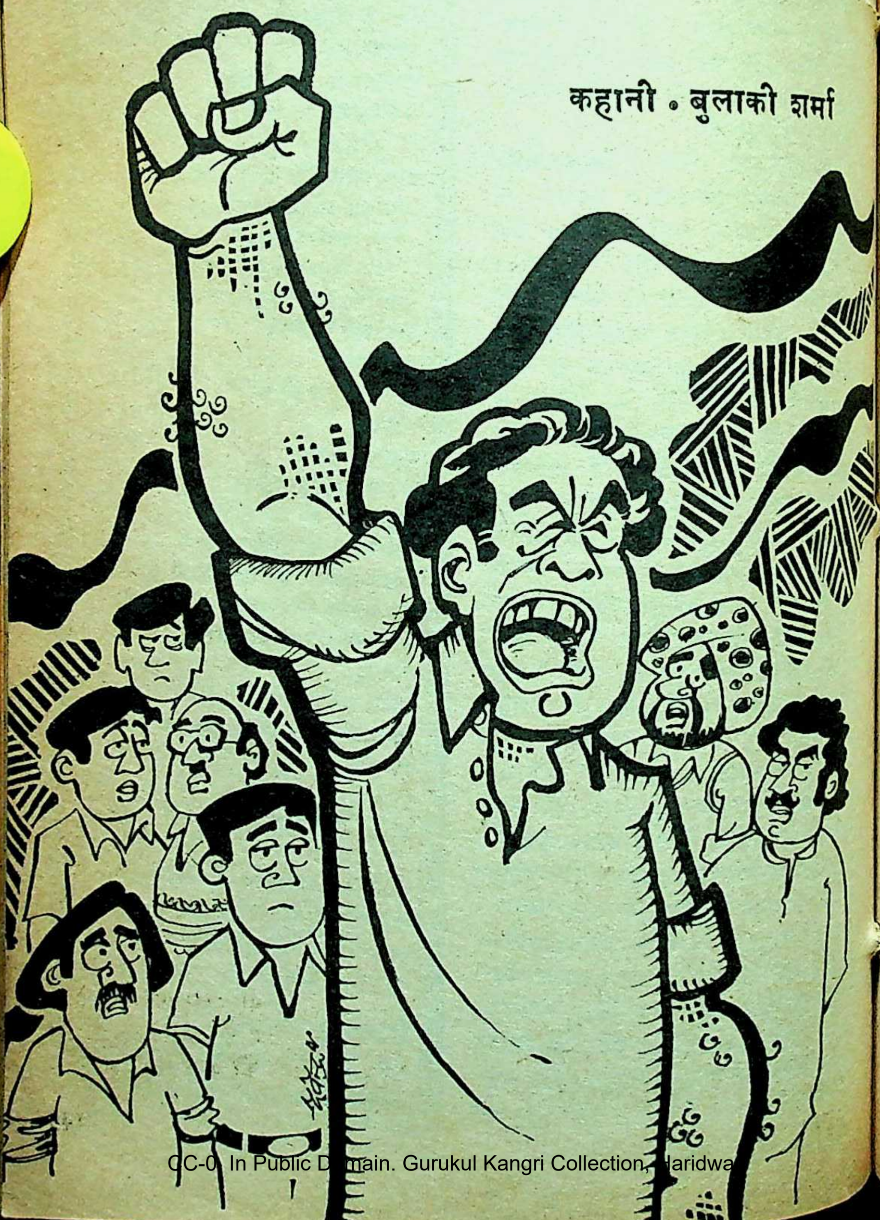

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताओं की मांग पर कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी, जो काफी समय तक चलती रही मगर मांगें नहीं मानी गईं. ऐसे में ही नेताओं को एक और उपाय सूझा, मगर क्या तब भी वे सफल हो सके?

हड़ताल हमारा नारा है' ग्रादिग्रादि.

हड़ताल की शुरुग्रात वाकई जोशोखरोश के साथ हुई थी. पहले दिन कर्मचारियों ने हाथ ऊंचे करकर के, गला फाड़फाड़ कर नारे लगाए थे. तब लगा था कि निश्चित रूप से ये लोग ग्रपनी मांगें मनवा कर रहेंगे. इन से टकराने वाला वाकई मिट्टी में मिल जाएगा.

कर्मचारियों के नेता ग्रपने जोशीले भाषणों से लोगों को जोश दिलाए जा रहे थे. सभी में उमंग थी, ग्रपने ग्रधिकार हासिल करने की चाह थी. लगभग सभी के चेहरों पर दर्प था.

पर जोशोखरोश की भी एक सीमा होती है. युवा छात्र कालिज में जम कर मस्ती मारते हैं. मूड बना तो पढ़ लिया नहीं तो छुटभैयों को, यहां तक कि कभीकभी तो प्राध्यापक को भी डांट देते हैं. लेकिन कालिज की चारदीवारी के बाहर पैर रखते ही उन्हें ग्राटेदाल का भाव मालूम होने लगता है. ठीक उसी तरह जिस तरह जीतने पर जनता के नुमाइंदे उस का हाथ छोड़ देते हैं. कालिज से बाहर निकलते ही छात्र नौकरी के चक्कर में पड़ जाता है या कोई काम करने की सोच में डूब जाता है.

ऐसा हड़तालियों के साथ हुग्रा था. चारपांच दिन तो हरेक के चेहरे पर विद्रोह की झलक थी, कुछ करने का जोश था. यहां तक कि पहले कुछ दिन तो कर्मचारी हर समय मारपीट पर भी उतारू रहते थे. कोई दफ्तर जाने की चेष्टा करता तो ग्रन्य कर्मचारी उस की बांह पकड़ कर उसे बाहर खींच लाते.

पर पहला हफ्ता पूरा होतेहोते स्थिति बदलने लगी. हालत यह हो गई कि ग्रगर कोई नेता मौकेबेमौके कोई नारा लगाता तो उस के पहला बोल—'जो हम से टकराएगा' शुरू करने पर कोई दूसरा बोल—'चूरचूर हो जाएगा' न कहता. उसे खुद ही नारा पूरा करना पड़ता.

अब तो कई दिनों से केवल सुबह ग्रौर शाम दो ही बार नारेबाजी होती थी. सुबह सब के चेहरे पर उदासी, निराशा एवं संशय की कालिमा छाई रहती थी. कर्मचारियों में से बहुत सारे काम पर लौट जाने की बात सोचने लगे थे. कर्मचारी नेता हड़तालियों को हर तरह के प्रलोभन दे रहे थे. वे भाषण झाड़ते रहते, ताकि हड़तालियों को दूसरी बातें सुनने को ही न मिलें. लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल पा रही थी.

इस के बावजूद 27 दिन पूरे हो गए थे. खुद कर्मचारी नेताग्रों के ग्रनुसार 75 प्रतिशत कर्मचारी हड़ताल पर थे. सरकारी ग्रांकड़ों के ग्रनुसार सिर्फ 25 प्रतिशत हड़ताल पर थे.

मांगें सरकार के पास कितनी ही बार रखी जा चुकी थीं, लेकिन सरकार ने बिलकुल ध्यान नहीं दिया था. मांगों की हालत वैसी ही हो रही थी, जैसी बहसों में उठाए मुद्दों की हुग्रा करती है. पुरानी मांगें भूलती जा रही थीं, नई मांगें उठती जा रही थीं.

27वें दिन की शाम लगभग सभी कर्मचारी शाम की नारेबाजी के बाद निराशा के साथ घर लौट गए कि 'कल फिर ग्राना है, काम पर नहीं, नारेबाजी के लिए.'

हड़तालियों के कुछ खास नेता फिर भी बैठे रहे. वे भी परेशान थे कि न तो सरकार उन की मांगें मान रही है ग्रौर न कर्मचारी उन की बात मान रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

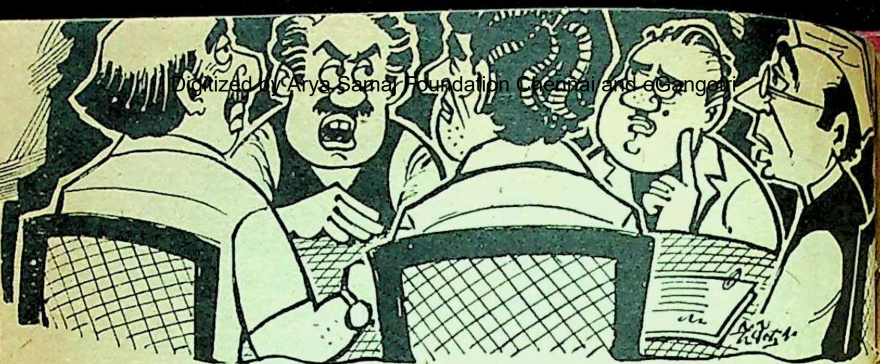

हड़ताल करने के बावजूद भी जब नेताओं और कर्मचारियों को संतोष न हुआ तो फिर एक बार आपात बैठक बुलाई गई.

"कल क्या होगा?" एक ने पूछा.

"क्या कहा जा सकता है?" दूसरे ने जवाब दिया.

यह आपात बैठक थी. कर्मचारियों के घरों में अन्न का दाना तक न रहा था. नजरें आपस में टकरातीं और झुक जातीं. ये लोग राजपूत तो थे नहीं कि मरनेमारने पर उतारू हो जाते. बेचारे कर्मचारी महीना भर कमा कर उसे अगले महीने खाते हैं. इसलिए उन के नेता भी वैसे ही थे कि लड़ कर कुछ ज्यादा मिल जाए तो ठीक, नहीं तो समझौता कर लो. अब वे सोच रहे थे कि इज्जत बचा कर समझौता कैसे हो.

सब की जबान यही कहना चाह रही थी, लेकिन पहल किसी से नहीं हो रही थी. फिर भी भरी सभा में कोई न कोई तो पान का बीड़ा उठाने वाला साहसी मिल ही जाता है. एक बोला, "यों शांत बैठे रहने से अब नहीं चलेगा. आंदोलन के पक्ष में कर्मचारी अब बिलकुल नहीं हैं. हम कब तक उन्हें यों जबरदस्ती रोके रखेंगे? सरकार भी हमारी कमजोरी जान गई है, इसलिए वह भी मांगें मानने वाली नहीं है."

शुरुआत होने से संकोच दूर हो गया. दूसरा बोला, "लेकिन अब ड्यूटी पर ऐसे ही कैसे जाएं? मिला क्या हमें? फिर इन 27 दिन की तनख्वाह का सोचो, वैसे ही काम पर चले गए तो वह मिलेगी क्या? कर्मचारियों को तंग किया जा सकता है. जिन्हें बर्खास्त किया गया है, उन्हें वापस लिया जाना चाहिए. हड़ताल के दिनों को ड्यूटी नहीं मानें तो कम से कम छुट्टियां तो मान ही लें, जो धीरेधीरे काट ली जाएं."

गंभीरता से सोचने के बाद यह निश्चय किया गया कि कल से नया रुख अपनाया जाएगा, कर्मचारियों को कह दिया जाएगा कि सरकार ने हमारी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर के शीघ्र निर्णय देने का आश्वासन दिया है. इसलिए अब हमारा आंदोलन सिर्फ इन मांगों को ले कर है कि हड़ताल के दिनों की तनख्वाह दी जाए, बर्खास्त साथियों को वापस लिया जाए तथा किसी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कारररवाई न की जाए.

पांचों कर्मचारी नेता अपने पिछले अनुभवों के आधार पर आश्वस्त थे कि नई मांगें आंदोलन को तीनचार दिन तक खींच लेंगी. फिर—कर्मचारियों का प्रतिनिधि मंडल मुख्य मंत्री से मिला था. उन के आग्रह पर हम आंदोलन वापस ले रहे हैं. सभी अगले दिन काम पर पहुंच जाएं.

हड़ताल तोड़ने का कार्यक्रम तय हो गया. आपात बैठक समाप्त हुई. सभी ने अगली सुबह दस बजे मिलने का निश्चय कर के एकदूसरे से विदा ली. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखद वैवाहिक जीवन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3.50

युवतियों से
एक युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा
रु. 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

पूरा सैट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर रुपए अग्रिम आने पर डाक खर्च की छूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • संजय गोठवाल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदयपुर का प्राकृतिक सौंदर्य

नगर परिषद का दायित्व होता है नगर की स्वच्छता व सुंदरता बनाए रखना. उदयपुर नगर परिषद ने पिछले 35 वर्षों में यह दायित्व किस तरह निभाया—आइए एक झलक हम भी देखें...

दुनिया में बहुत कम शहर ऐसे होंगे जो विश्व पर अपनी किसी विशिष्टता की छाप छोड़ते हों. राजस्थान में बसा उदयपुर इन्हीं थोड़े से विशिष्ट नगरों में से एक है. बरसों से पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र चला आ रहा उदयपुर देशविदेश में झीलों की सुरम्य नगरी के रूप में तो प्रसिद्ध है ही, शौर्य और वीरता के प्रतीक मेवाड़ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर परिषद की गंदगी का शिकार

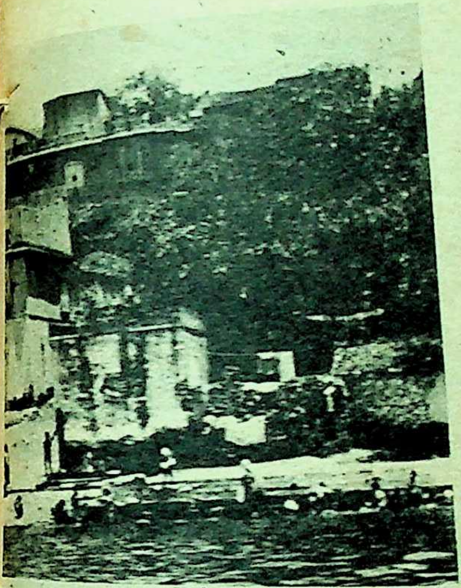

महाराणा प्रताप की कार्यस्थली होने का गौरव भी प्राप्त किए हुए है.

महाराणा प्रताप के पिता उदयसिंह ने इस नगर का निर्माण सन 1559 में एक साधु की प्रेरणा से एक ऐसे स्थान पर किया था जहां प्रकृति अपना सौंदर्य बिखेरे रहती थी. पर यदि आज वह साधु और महाराजा उदयसिंह जीवित होते और उदयपुर की गंदी गलियों, टूटी सड़कों और बेढंगे चौराहों पर पड़े कूड़े के ढेरों एवं खुले पड़े भूमिगत नालों से आ रही

(ऊपर) उदयपुर की मनोरम झील, मगर जिस रास्ते से यहां तक पहुंचना होता है उस का यह हाल है (नीचे).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

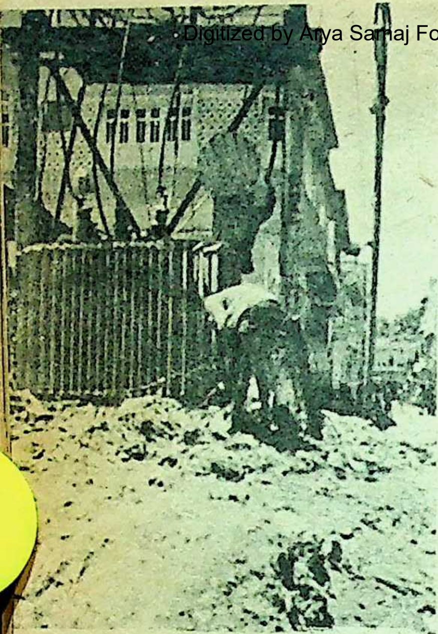

सड़ांध को देखते तो उदयपुर नगर बसाने की अपनी गलती पर अवश्य पश्चात्ताप करते.

राजपूताना के वैभवशाली स्थलों में उदयपुर को सब से सुंदर बताने वाले लार्ड कर्जन ने एक जगह लिखा था: "उदयपुर नगर को जैसा हम आज देख रहे हैं, उस की हमारे मस्तिष्क में एक अमिट छाप बनी रहेगी."

इसी प्रकार महान इतिहासकार टायनबी ने भी कहा था कि उदयपुर विश्व के सुंदरतम स्थानों में से एक है, किंतु इस के चित्रों को देखने से इस की वास्तविक सुंदरता का आभास नहीं हो सकता. इस का वास्तविक सौंदर्य तो यहां आ कर ही देखा जा सकता है.

उदयपुर का नया अश्विनी बाजार: बाजार तो बंद है, हां, यहां मौजूद कचरे के ढेर में से कुछ ढूंढ़ा जा सकता है.

उदयपुर की पिछोला झील से ले कर स्वरूप सागर तक में फैली जल कुंभी—मगर परिषद के अधिकारियों की नजर में यहां का पानी अभी भी स्वच्छ है.

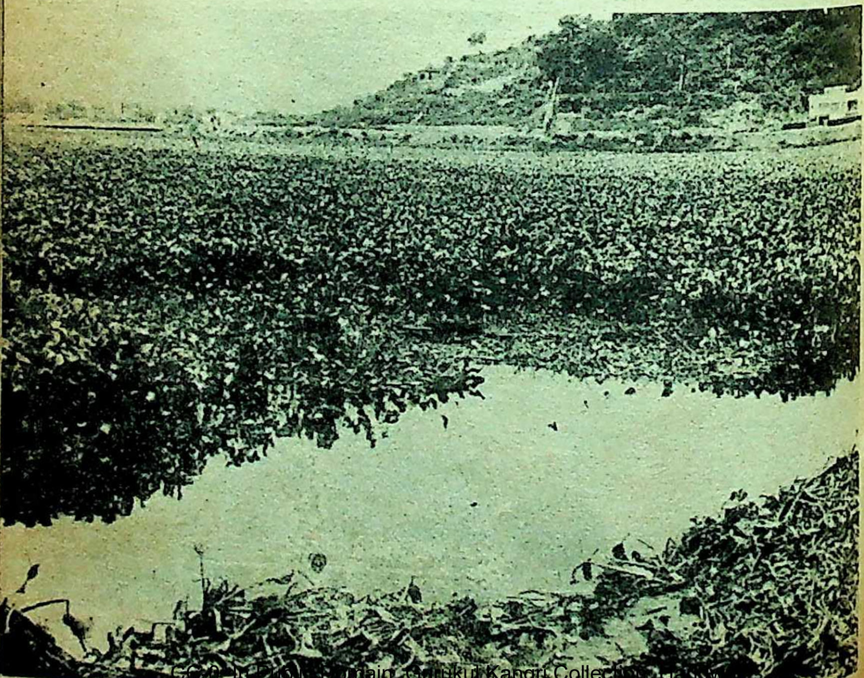

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

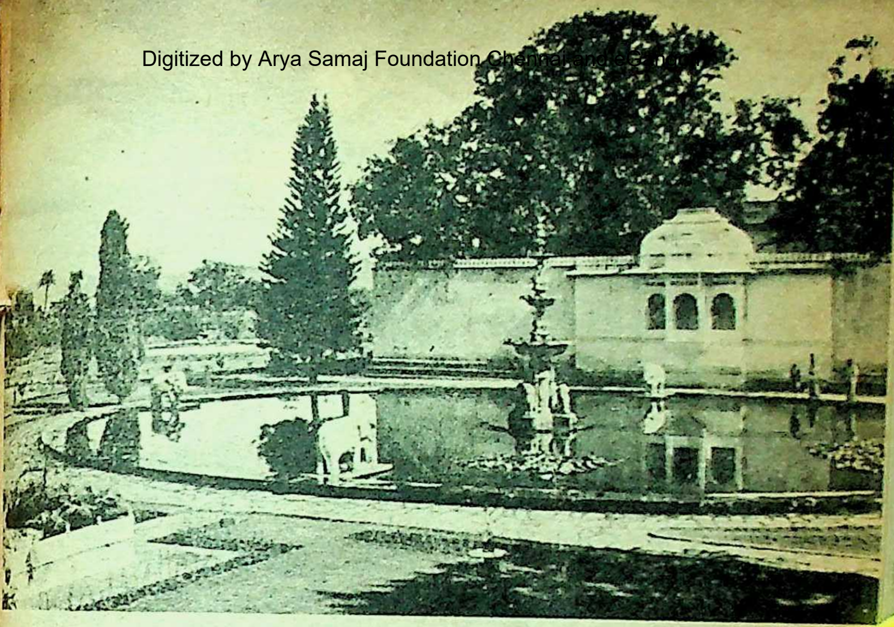

उदयपुर का एक और प्रसिद्ध स्थल—'सहेलियों की बाड़ी' : यदि परिषद अपने वर्तमान ढर्रे पर चलती रही तो जल्दी ही पर्यटक यहां तक आने में कतराने लगेंगे.

नगर का हस्पताल क्षेत्र : दवा लेने के लिए हस्पताल में पहुंचने से पहले रोगी को इस कचरे से और भी कई रोग लेने की पूरीपूरी आजादी है. →

बरसों पूर्व परतंत्र भारत में उदयपुर के जिस प्राकृतिक सौंदर्य की इन लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी, आज स्वतंत्र भारत में उस की दुर्दशा देख कर कोई भी प्राकृतिक सौंदर्य का प्रेमी अपनी आंखों से आंसू बहाए बिना नहीं रह सकता.

किसी भी नगर के प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक सौंदर्य को बनाए रखने तथा नगर को स्वच्छ रखने का दायित्व नगर निगम, नगर परिषद अथवा नगर पालिका पर होता है. उदयपुर में 1945 से चली आ रही नगर परिषद को 35 वर्ष हो गए हैं, पर इन वर्षों के उस के क्रियाकलाप का विश्लेषण किया जाए तो यह लगेगा कि इन वर्षों में नगर परिषद ने नगर को स्वच्छ रखने, बढ़िया साफसुथरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सड़कों का निर्माण करने और सड़कों के किनारे प्रकाश व्यवस्था को आकर्षक बनाने एवं जनता को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के बजाए जनता से विभिन्न करों के रूप में अधिकाधिक धन वसूल कर राज्य सरकार की निगाह में एक बढ़िया व्यावसायिक संस्थान बनने का ही प्रयास किया है.

परिषद की आय व व्यय

पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों से पता चलता है कि नगर परिषद को 1976-77 में 93.77 लाख रुपए की आय हुई, जब कि सन 1977-78 में 100.47 लाख रुपए तथा 1978-79 में 1.18 करोड़ रुपए की किंतु 1979-80 में यह आय घट कर 1.17 करोड़ रुपए रह गई. चालू वित्तीय वर्ष (1980-81) में 1.25 करोड़ रुपए की आय होने का अनुमान है. आय के अनुपात में परिषद ने जनहित कार्यों पर 1976-77 में केवल 33.42 लाख रुपए, 1977-78 में 65.44 लाख रुपए, 1978-79 में 56.74 लाख रुपए और 1979-80 में 60 लाख रुपए व्यय किए.

इस के विपरीत परिषद द्वारा नगर की प्रकाश व्यवस्था को आकर्षक एवं आधुनिकतम बनाने पर प्रति वर्ष 10 लाख रुपए, अग्नि शमन सेवा पर तीन लाख रुपए, सार्वजनिक उद्यानों पर 4.5 लाख रुपए, पुस्तकालयों एवं वाचनालयों पर 3 लाख रुपए, सड़कों व नालियों की मरम्मत पर 10 लाख रुपए, स्थानीय बस सेवा की बसों पर 4 लाख रुपए, तथा नए, निर्माण कार्यों पर 38 लाख रुपए खर्च किए.

हैरत की बात यह है कि सफाई आदि पर इतने व्यय के बाद भी नगर की जनता को चारों तरफ गंदगी और सड़ांध के दर्शन तथा अंधेरे में ठोकरें खाने के लिए टूटीफूटी सड़कें ही मिलती हैं. नगर परिषद भवन तक में सफाई का कहीं नाम नहीं है. कमरों के अंदर जगह-जगह मकड़ी के जाले दिखाई देते हैं.

परिषद भवन के सामने और शहर में विभिन्न स्थानों पर जनता के मनोरंजन के लिए बने आकर्षक फव्वारों वाले छोटेछोटे जलाशयों में भी बदबूदार काई जमी हुई दिखती है. टाउन हाल के बाहर बगीचे में रात्रि को रोशनी के लिए लगाए गए खंभों पर बल्ब और ट्यूब महीने में बीस दिन जलती ही नहीं.

परिषद द्वारा संचालित गुलाब बाग में बच्चों की रेलगाड़ी भी प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में आए दिन खराब होती रहती है. नगर के शौचालयों को स्वच्छ रखने की किसी को फुरसत नहीं. यह भी नहीं कि परिषद के पास कर्मचारियों की कमी हो. परिषद में इस समय लगभग 1,250 कर्मचारी काम करते हैं, जिन में से 50 बड़े अधिकारी हैं. इन में नगर को स्वच्छ रखने के लिए, पांच सफाई निरीक्षक और लगभग 700 सफाई कर्मचारी हैं.

परिषद के असीमित साधन

नगर को स्वच्छ रखने की व्यवस्था की दृष्टि से उसे छः भागों में बांट रखा है तथा एक को छोड़ कर प्रत्येक भाग में एक निरीक्षक को एक कार्यालय तथा पर्याप्त स्टाफ दे रखा है. परिषद के पास इस समय कचरा ढोने के लिए छः ट्रक और 12 ट्रैक्टर तथा निरीक्षण अधिकारियों के लिए दो कारें, तीन जीपें, एक उड़न दस्ता व एक मेटाडोर है. संकट के समय अथवा विवाहोत्सव आदि में पानी उपलब्ध कराने के लिए छः वाटर टैंकर, दो पानी के पंप तथा आग बुझाने के लिए तीन दमकलें हैं.

सिटी बसों की हालत यह है कि उन्हें पिछले तीन वर्षों से निरंतर घाटे में दिखाया जा रहा है, जब कि बसें हर समय खचाखच भरी हुई दिखती हैं. प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 1977-78 में बसों में 26,500 रुपए का घाटा दिखाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद के अधिकारी राज्य मंत्रियों से मिलने में मशगूल--इसी में सार है.

गया, जो सन 1978-79 में बढ़ कर 73,500 रुपए हो गया. यह घाटा बढ़ते-बढ़ते 1979-80 में 1,41,882 रुपए का हो गया. इस तरह पिछले तीन वर्षों में परिषद को नगर बस सेवा से कुल 2,50,000 रुपए का घाटा हुआ है.

फिर भी प्रशासक मस्त हैं. उन्हें किसी बात की चिंता नहीं, क्योंकि अपने गहरे प्रभाव के कारण पिछले 10-15 वर्षों से वह निरंतर यहीं बने हुए हैं और उदयपुर में एक विभाग से दूसरे विभाग में तबादला करवाते रहे हैं.

आश्चर्य की बात तो यह है कि वर्ष भर की कुल आय का 50 से 70 प्रतिशत तक जनसुविधाओं पर खर्च किया दिखाए जाने के बावजूद नगर परिषद में काम के लिए जाने वाले लोगों को इधर से उधर जूतियां ही चटखानी पड़ती हैं. छोटे से छोटे कर्मचारी से ले कर बड़े बाबू तक पर्याप्त वेतन पाने के बावजूद जनता के सामने इस ढंग से अपना हाथ फैलाते हैं जैसे यह अतिरिक्त पैसा प्राप्त करने का उन्हें कानूनी अधिकार है.

यदि कुछ दिया न जाए तो संबद्ध व्यक्ति की स्थिति यह होगी कि या तो वह रोज परिषद के चक्कर लगाएगा या फिर उसे काम कराने के लिए राजनीतिक दांवपेच लड़ाने होंगे.

परिषद में काम करने वाले अधिकतर कर्मचारी अपने निजी व्यवसायों में लगे हैं, क्योंकि उन्हें तबादलों का कोई डर नहीं है. इस संबंध में परिषद के ही एक बाबू से पूछा गया तो उस ने कहा कि जिस अधिकारी में दम हो उन्हें पकड़ कर उन के विरुद्ध काररवाई कर के देख ले. एक दूसरे बाबू का यह कहना था कि उन के अफसर उन्हें कुछ इसलिए नहीं कह सकते क्योंकि वे स्वयं गलत कार्य करते हैं. परिषद में कई महत्त्वपूर्ण फाइलों में भी हेराफेरी हो जाती है.

नगर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने के लिए उत्तरदायी नगर परिषद की कार्यप्रणाली की यही स्थिति रही तो कोई आश्चर्य नहीं कि यहां के नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए प्रति वर्ष आने वाले 3,50,000 भारतीय और लगभग 40,000 विदेशी पर्यटकों की संख्या में भारी कमी हो जाए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

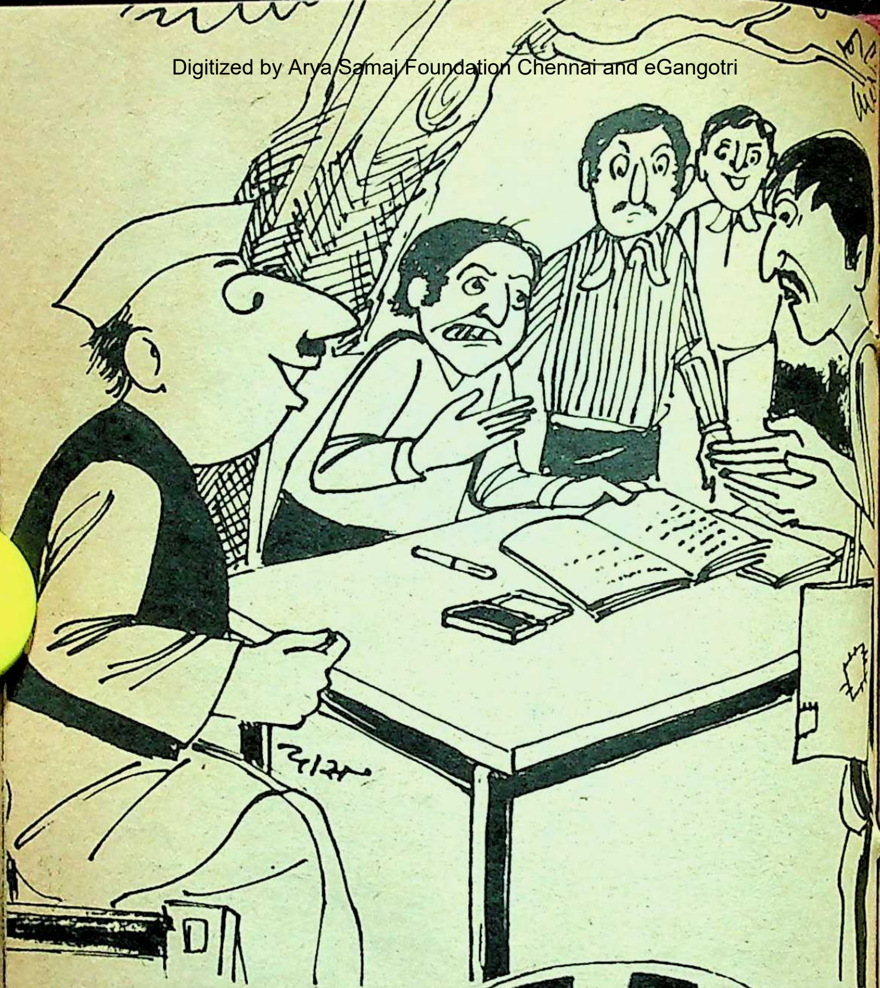

व्यंग्य . अशोक मिश्र

देश में अकाल पड़ने पर जब मैं ने अपने मित्रों को खुश होते देखा तो सहसा उन पर गुस्सा आया, मगर इस की असलियत जान कर तो मैं आश्चर्य चकित रह गया!

मेरे क्षेत्र में अकाल पड़ गया था. मुझे पता नहीं था. पर एकाएक शहर में परिवर्तन होने लगा. इस कारण मुझे आभास हो गया कि हो न हो आसपास के क्षेत्रों में अकाल पड़ा है.

मैं अपने एक मित्र अफसर के यहां गया था. उस मित्र को मैं वैष्णव अफसर कहता हूं. वह मांस नहीं खाते और मदिरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप से कोसों दूर रहते हैं, पर हैं लक्ष्मी के भक्त. उन दिन उन के घर में एक भव्य स्टीरियो सेट देखा तो चकित रह गया.

एक मजदूर ने पूछा, "मालिक, अनाज नहीं मिलेगा?" उस की बात सुन कर नेताजी और रामभरोसे बौखला कर उसे डांटनेडपटने लगे.

"मित्र, इस महंगाई के जमाने में स्टीरियो सेट?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"जी हां, जमाना तो महंगाई का है पर प्रभु की दया से अकाल पड़ गया है. राहत कार्य चल रहे हैं," वैष्णव अफसर ने उत्तर दिया.

"अकाल पड़ने से आप के यहां स्टीरियो आने का क्या संबंध?" मैं ने पूछा.

यह मैं कल बताऊंगा. कल आप मेरे साथ राहत कार्य स्थल पर चलिए," उस वैष्णव अफसर ने कहा.

दूसरे दिन मैं उन के साथ राहत कार्य स्थल पर पहुंच गया. राहत कार्य पर करीब डेढ़ सौ ग्रामीण लगे हुए थे. वे एक नाले पर बांध बना रहे थे. जीप से उतरते ही करीब दो सौ बेरोजगार ग्रामीणों ने हमें घेर लिया.

"अन्नदाता, हमें भी काम मिले," उन सभी ग्रामीणों ने फरियाद की.

"देखो, भई, अभी सरकार के पास बड़ी तंगी है. हम ने एक नई योजना ऊपर भेजी है. अगर पास हो गई तो तुम्हें भी काम मिल जाएगा. पर एक बात तुम लोगों में बड़ी खराब है..." अफसर ने गांव वालों से कहा.

"वह क्या, हजूर?"

"यही कि एक तो हम लिखापढ़ी कर के तुम्हारे लिए काम की व्यवस्था करते हैं और तुम लोग हमारी ही शिकायत करते हो," अफसर ने कहा.

"अन्नदाता, हम क्यों शिकायत करेंगे? आप हमें काम दिलाएं, रोजीरोटी दिलाएं और हम आप की शिकायत करें!" गांव वालों ने उत्तर दिया.

"ठीक है, साहब, इन्हें अवश्य काम दिलवाइए. आप जरा तीखी चिट्ठी ऊपर लिखिए. काम बन जाएगा. ये गांव वाले शरीफ हैं, बदमाश नहीं, जो उस हाथ को ही काटें जो उन्हें खिलाता है," साथ में आए नेताजी ने कहा.

"ठीक है, तुम सब रामभरोसे से बात कर के रखना. हम 10-15 दिनों में तुम्हारे लिए काम का इंतजाम कर रहे हैं," अफसर ने कहा.

उसी शाम मजदूरी बांटनी थी. रामभरोसे रजिस्टर ले कर आ गया और लोगों को मजदूरी बांटने लगा. हम सब यह देख रहे थे.

"मालिक, अनाज नहीं मिला?" मजदूरों ने पूछा.

इस राहत कार्य में पैसों के साथ अनाज देने की भी व्यवस्था थी. यह मैं जानता था और साथ में आए नेताजी भी.

"देखो, भई, पिछली बार तुम लोगों को अनाज दिया था, इस बार पैसे दे रहे हैं. अब अगले हफ्ते अनाज देंगे. एक तो हम ऊपर से लिखापढ़ी कर के तुम्हारे लिए काम की व्यवस्था करते हैं, ऊपर से आप लोग अपनी मांगें बढ़ाते हो. देखो, भई, सरकार बिलकुल नहीं चाहती कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राहत कार्य का खर्च बढ़े. पर हम सरकार के पीछे पड़े रहते हैं और जैसेतैसे कर के मंजूरी लाते हैं. अभी सब्र करो. एक सप्ताह पैसे लो और एक सप्ताह अनाज," नेताजी ने लोगों को समझाया.

मजदूर आपस में कानाफूसी करने लगे. पर कर भी क्या सकते थे? सब रामभरोसे से मजदूरी लेने लगे. रामभरोसे मजदूरों से दो रजिस्टरों पर अंगूठे लगवा रहा था. मैं समझ रहा था कि वह एक रजिस्टर में पैसों के भुगतान पर अंगूठा लगवा रहा है और दूसरे रजिस्टर में अनाज के भुगतान पर. मजदूरों के चले जाने के बाद रामभरोसे, अफसर और नेताजी तीनों काल्पनिक मजदूरों के नामों के आगे अंगूठा लगाने लगे. राहत कार्य में लगे डेढ़ सौ मजदूरों के स्थान पर तीन सौ मजदूरों के नाम पर अंगूठे लग गए थे.

"भई, रामभरोसे, अगली बार से अंगूठा लगाने के लिए एक रुपया प्रति व्यक्ति के हिसाब से गांवों से ही आदमी बुलाओ. हर बार हम लोगों का अंगूठा लगाना ठीक नहीं है," अफसर ने कहा.

"जो आज्ञा. आप एक रुपया कहते हैं, मैं तो पचास पैसे में अंगूठा लगवा लूंगा," रामभरोसे ने उत्तर दिया.

"नेताजी, अब आप निश्चित हो कर अनाज को बेच सकते हैं. अब उस का हिसाब साफ हो गया है." अफसर ने कहा.

"अजी साहब, अनाज तो उसी दिन बेच दिया था जिस दिन गोदाम से निकल कर मेरे ट्रक पर चढ़ा था," नेताजी ने उत्तर दिया.

"हमें तो मालूम ही नहीं पड़ा," अफसर ने कहा.

"आप को नहीं, आप की पत्नी को मालूम है. उन के पास वह हार पहुंच गया है जिस की फरमाइश उन्होंने की थी," नेताजी ने उत्तर दिया.

"तब तो ठीक है. घर में माल पहुंच गया," अफसर ने खुश हो कर कहा.

"अब आप स्कूटर की सवारी छोड़ दीजिए. स्कूटर में दुर्घटना का डर रहता है. इस अकाल में कार खरीद लीजिए. पता नहीं, अगले साल बरसात अच्छी हो गई तो मुश्किल हो जाएगी. कारों की कीमत भी दिनोंदिन बढ़ रही है," नेताजी ने कहा.

"अगले साल पानी बरसेगा तो कारों की कीमत अपने आप गिर जाएगी. अभी तो हरेक दौड़ रहा है कार लेने. हम अगले साल लेंगे. अभी पूंजी जमा करेंगे," अफसर ने कहा.

हम लोग जीप में बैठ कर शहर वापस आ गए. अगले दिन मुझे पुनः उस अफसर के साथ जाना था. दूसरे दिन जीप में चलने पर वैष्णव अफसर ने कहा, "आज हम सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा संचालित राहत कार्य देखने चल रहे हैं. वहां का इंजीनियर बड़ा ही कार्यकुशल है. सरकार में उस की बड़ी पूछ है."

कहना न होगा सरकार में पूछ का अर्थ है, पैसे बनाने की कला में पारंगत.

हम राहत कार्य के कार्यस्थल पर पहुंच गए. एक बांध पर 10-12 मजदूर मिट्टी डाल रहे थे. हम बांध के पास बने दफ्तर में गए. दफ्तर में इंजीनियर साहब नशे में धुत आराम कुरसी पर पसरे हुए थे.

"कहो कैसे हो गुरु?" अफसर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा.

"गुरु कहते हो तो चरण स्पर्श करो," इंजीनियर ने नशे में झूमते हुए कहा.

वैष्णव अफसर ने औघड़ पंथी इंजीनियर ने चरण स्पर्श कर लिए.

"अच्छा, अब तू मेरा शिष्य हो गया. वैसे मैं वैष्णव परंपरा के मनुष्यों से घृणा करता हूं. पर तुम्हारी बात दूसरी है. तुम अभी पूंजी उपार्जन में नए आए हो, इस कारण मध्यमवर्गीय कंजूसी से तुम्हारा पीछा नहीं छूटा है. अपनी शंका प्रस्तुत करो," इंजीनियर ने कहा.

"मान्यवर, बांध पर केवल 10-12 मजदूर ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं. क्या कारण है?" वैष्णव अफसर ने पूछा.

"**शिष्य,** कारण यह है कि बांध ठेकेदार बना रहा है. वह चाहे 10 मजदूर रखे, चाहे सौ, हमें क्या. बांध समय पर पूरा होना चाहिए, सो हो गया. तुम स्वयं अपनी आंखों से देख सकते हो. अकाल में वर्षा से पहले बांध बना होना चाहिए, सो बन गया," इंजीनियर ने कहा.

"महानुभाव, वह ऐसा कौन सा ठेकेदार है जिस ने समय पर बांध पूरा कर दिया? वह भी 10-12 मजदूर ले कर?" मैं ने पूछा.

"पिछले साल पानी खूब गिरा था, इस कारण बांध बह गया था. इस साल अकाल के कारण पुन: बनाना पड़ा. अब समझे? तभी तो कहा गया है कलम तलवार से शक्तिशाली होती है. न पिछले साल बांध बहा था, न इस साल बना है. करामात फाइलों की है, जिन में बांध बहा और बना," इंजीनियर साहब ने शंका का समाधान किया.

"श्रद्धेय, यह बांध बना कब था?" वैष्णव अफसर ने पूछा.

"बहने के एक साल पहले," इंजीनियर साहब ने उत्तर दिया.

"मान्यवर, बांध बहने की जांचपड़ताल नहीं हो रही?" मैं ने पूछा.

"हो रही है, पर उसे निष्कर्ष निकालने में 10 साल लगेंगे. तब तक यह बांध पांच बार बहेगा और पुन: पांच बार बनेगा. मित्र, इस क्षेत्र में हर दूसरेतीसरे साल अकाल पड़ता है. इस कारण बांध का कार्य युद्धस्तर पर करना होता है. इसलिए हमें जांचपड़ताल की चिंता नहीं करनी चाहिए. हम तो सिपाही हैं. हमें युद्ध से मतलब है, उस की समीक्षा से नहीं. फिर हम ने यह कार्यक्षेत्र दो लाख रुपए में खरीदा है," इंजीनियर साहब ने कहा.

मैं भी सुन चुका था कि अकालग्रस्त क्षेत्रों में अपना तबादला करवाने के लिए अफसरों को दोदो लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं. पर अब मैं इस बात को स्वयं अपने कानों से सुन रहा था.

"भाई साहब, हम नदीनाले बांधते हैं, पर प्रकृति पर विजय केवल परमात्मा पा सकता है. बांध तो बहेगा. अगर न बहा तो हम लोग अकालग्रस्त हो जाएंगे," इंजीनियर साहब ने मुझे समझाया.

दूसरे दिन मेरी मुलाकात मेरे एक पुराने मित्र से हो गई. यह मित्र सदैव स्कूटर पर चलता था पर उस दिन वह नई डीजल की जीप चला रहा था.

"यह जीप अभी खरीदी है क्या?" मैं ने उस से पूछा.

"हां, सब अकाल की कृपा है," उस ने उत्तर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अकाल की कृपा!" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"हां, साहब, अकाल पड़ने पर सरकार को याद आता है कि गांवों में पीने के पानी का प्रबंध नहीं है. अतएव ट्यूब वैल खुदने लगते हैं. तुम तो जानते हो कि मैं ट्यूब वैल खोदने वाला ठेकेदार हूं," उस ने कहा.

"पर, मित्र ट्यूब वैल से एक साल में डीजल जीप कैसे आ गई?" मैं ने पूछा.

"देखो, मित्र, ट्यूब वैल 20 फुट गहरा भी होता है और दो सौ फुट गहरा भी. खोदो 20 फुट और पैसा पाओ दो सौ फुट का," मित्र ने कहा.

"पर यार, 20 फुट वाला ट्यूब वैल तो अकाल की गरमी में सूख जाएगा."

"हां, तब कहेंगे कि पंप खराब है. गांव वाले भी जानते हैं कि पंप ठीक होने में एक साल लगता है. एक साल में अकाल बीत जाएगा." मेरे मित्र ने उत्तर दिया.

"महानुभाव, वह ऐसा कौन सा ठेकेदार है जिस ने समय पर बांध पूरा कर दिया, वह भी सिर्फ 10-12 मजदूर ले कर," मैं ने इंजीनियर साहब से पूछा.

"यार, अकाल में बड़ा आनंद है. गावों में पानी पहुंचाने को टैंकर खरीदे गए हैं. पहले तो टैंकर की खरीद में कमाई फिर ट्रैक्टर के डीजल की बिक्री में कमाई. टैंकर और ट्रैक्टर गांवों में तो पानी पहुंचाते नहीं, हां बंगलों के बगीचों में सिंचाई के लिए पानी भले ही ले आते हों. और मित्र, फिर जब ट्रैक्टर और टैंकर खरीदा जाता है तो टायर भी खरीदे जाते हैं. गांवों के ऊबड़खाबड़ रास्तों में टायर भी तो अधिक लगते हैं. ऊबड़खाबड़ रास्ते से ही मुझ में प्रेरणा जागी कि क्यों न सड़क बनाने का ठेका ले लिया जाए. गांवों में टैंकर शीघ्रता से पहुंचे इस के लिए आवश्यक है कि नई सड़कें बनाई जाएं," मित्र ने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे चलने पर मेरे एक लेखक मित्र मुझे मिल गए. उन के पैरों में नई चप्पल थीं, और वह कुरता भी टेरीकाट का पहने हुए थे.

मैं ने उन से चाय पीने को कहा तो उन्होंने मना कर दिया. यह नई बात थी. पहले तो वह मुफ्त में जहर भी पी जाते थे.

"मित्र, आज बड़े व्यस्त लग रहे हो, क्या बात है?" मैं ने पूछा.

"कुछ मत पूछो, कोल्हू का बैल जैसा काम में लगा हूं. अकाल की दया है. अभी सत्ता पक्ष के चार नेताओं के लिए और विपक्ष के छः नेताओं के लिए भाषण लिख कर देना है, जिन को उन्हें अकाल-ग्रस्त ग्रामों में जा कर सभाओं में देना है. जानते हो, मैं ने एक नई खोज की है? यह अकाल विदेशी एजेंटों के द्वारा विपक्षी नेताओं की मदद से आया है. सब उपग्रहों की करामात है. अब विपक्ष के लिए मेरी खोज सुनो. यह आकाल सत्ता पक्ष के नेताओं के भ्रष्टाचार के कारण वरुण देव के रूठने से हुआ है. ही...ही...ही," लेखक मित्र खीसें निपोरते हुए बोले.

मुझे लगा कि मूल्यों का अकाल आ गया है ●

क्षणिकाएं

दौर

वह भी एक दौर था
यह भी एक दौर है,
लाइन में लग कर
चीजें खरीदने का
मजा ही कुछ और है.

व्यवस्था

हमारा प्रजातंत्र
कितना सुव्यवस्थित है,
समाज में
असामाजिक तत्व भी
सुरक्षित है.

कार्यक्रम

बच्चों के सभी कार्यक्रम
शानदार थे,
मगर सभी बच्चे
चालीस के पार थे.

—मिश्रीलाल जायसवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिए—सोचिए

सिर्फ

दि लक्ष्मी कर्मशियल बैंक लिमिटेड के साथ ही

आप समय को, भाग्य को व भविष्य को अपने साथ पाते हैं.

बेहतर लाभ के लिए हमारे साथ बचत करें और साथ ही राष्ट्र के निर्माण में मदद दें.

अधिक जानकारी के लिए हमारी नजदीकी शाखा से सम्पर्क करें.

दि लक्ष्मी कर्मशियल बैंक लिमिटेड

मुख्य व पंजीकृत कार्यालय :
'एच' ब्लाक, कनाट सरकस,
नई दिल्ली

बी. एल. खुराना
अध्यक्ष

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया. प्रशंसा की चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

तुलसी की वास्तविकता पाठकों के सामने ला कर रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

मूल्य रु. 8, डाक खर्च रु. 2.
पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट.
मनीआर्डर द्वारा 5 रुपए भेजिए.
वी.पी.पी. से भेजना संभव नहीं है.

विश्व विजय प्रकाशन
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्ताने दफ्तर

✦ मेरे मित्र के कार्यालय में एक मुख्य लिपिक (क्लर्क) एवं एक कनिष्ठ लिपिक की गहरी दोस्ती है. एक बार कनिष्ठ लिपिक को कुछ स्टेशनरी चाहिए थी. अतः उस ने एक कागज पर उन चीजों के नाम एवं मात्रा लिख कर उसे अपनी जेब में रख लिया. मुख्य लिपिक के पास जा कर अपनी जेब से एक कागज निकाल कर उस की मेज पर रखते हुए उस ने कहा, "कागज वगैरह मंगाने हैं, इस पर हस्ताक्षर कर दो."

"यह सामग्री अतिशीघ्र चाहिए. कृपया स्वीकृति दें," यह टिप्पणी लिख कर उस कागज को मुख्य लिपिक ने विभागाध्यक्ष के पास भेज दिया. विभागाध्यक्ष ने जब वह कागज देखा तो तुरंत मुख्य लिपिक को बुलवा कर उस के सामने वह कागज रखते हुए कहा, "यह क्या है?"

मुख्य लिपिक अपने हस्ताक्षर किए हुए उस कागज को पढ़ कर हैरान रह गया. उस पर लिखा था :

मूंग की दाल दो किलो, बैंगन एक किलो, भिंडी आधा किलो, आटा 20 किलो, चीनी दो किलो.

वास्तव में यह सूची कनिष्ठ लिपिक को घर से कार्यालय आते समय उस की पत्नी ने दी और कनिष्ठ लिपिक ने गलती से मांग पत्र के स्थान पर इस कागज को जेब से निकाल कर हस्ताक्षर करवा लिए थे. —हरीश राम **(सर्वोत्तम)**

✦

हमारे दफ्तर में अनुपयोगी वस्तुओं के बारे में पता लगाया जा रहा था. लगभग सभी कर्मचारी नए नियुक्त हुए थे. अतः उन की परेशानी को देखते हुए विभागाध्यक्ष ने कहा, "इस बारे में पुरानी फाइलें निकाल कर देखो और रिपोर्ट बना लाओ." कर्मचारियों ने उन फाइलों को देख कर रिपोर्ट बनाई और विभागाध्यक्ष के के पास भिजवा दी.

थोड़ी देर बाद विभागाध्यक्ष ने उन्हें बुला कर कहा, "आप लोगों ने यह क्या लिख दिया? ट्रक को दीमक कैसे खा गई?"

दरअसल हुआ यह कि कर्मचारियों ने पूरी रिपोर्ट तो ठीक बनाई थी, किंतु पुरानी सर्वेक्षण फाइल में एक जगह अनुपयोगी लेखन सामग्री के बारे में लिखा था : "दीमक ने खा लिया." इसी कारण वह जल्दीजल्दी में अनुपयोगी ट्रक के बारे में लिख बैठे कि उसे दीमक ने खा लिया. —राजकुमारी ठाकुर

✦

मेरे पति एक कार्यालय में निजि सचिव के पद पर कार्यरत हैं. एक दिन उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अधिकारी ने उन से कहा, "जरा चपरासी को बुला कर दो कोल्डरिन (सर्दी-जुकाम की गोली) मंगवाना." यह कह कर वह पेशाबघर की ओर चल दिए.

मेरे पति ने चपरासी को बुलाया और उस से कहा कि वह दो कोल्डड्रिंक (दो बोतल ठंडे पेय की) ले आए. चपरासी ने दो ठंडी बोतलें मेज पर रखीं तो वह अधिकारी चिल्ला उठे, "मुझे पहले ही जुकाम ने परेशान कर रखा है और ऊपर से तुम यह ठंडी बोतलें ले आए." फिर वह मेरे पति की ओर मुखातिब हो कर बोले, "मैं ने आप से 'कोल्डरिन' मंगवाने के लिए कहा था न कि 'कोल्डड्रिंक.'"

मेरे पति बड़े शर्मिंदा हुए. —मधु वधवा

◆

हमारे अफसर के कमरे में टेलीफोन है. दफ्तर के कर्मचारी उन की गैरहाजरी में उस का गलत उपयोग करने लगे तो उन्होंने उस पर ताला लगा दिया.

एक दिन की बात है. वह अफसर अपने कमरे में नहीं थे और उन के टेलीफोन की घंटी बज रही थी. काफी देर तक घंटी बजने के बाद भी कोई फोन क्यों नहीं उठा रहा, यह जानने के लिए हमारे विभाग का एक साथी उन के कमरे में पहुंचा तो उस ने देखा कि चपरासी फोन की तरफ देखते हुए भी फोन नहीं उठा रहा है.

इस पर कर्मचारी ने उस से पूछा, "घंटी बज रही है फिर भी तुम फोन क्यों नहीं उठा रहे हो?"

"कैसे उठाऊं साहब, इस पर ताला जो लगा है?" —श. ब. खनगन

◆

मेरा एक मित्र खाद्य निगम के गोदाम में काम करता है. एक बार उस के गोदाम से 1,000 बोरे अनाज पूना भेजे जाने थे. बोरे ट्रकों में भर कर पहले रेलवे स्टेशन पहुंचाए गए और वहां मालगाड़ी में भर दिए गए.

गाड़ी चले जाने पर संबंधित कर्मचारी ने हिसाब लगाया तो पता चला कि नौ बोरे ज्यादा चले गए हैं. अब तो उस कर्मचारी के पसीने छूटने लगे. तब पुराने कर्मचारियों ने उसे हिम्मत बंधाते हुए कहा, "चिंता मत करो यार, ऐसा तो अकसर होता ही रहता है." फिर उन्होंने अन्य बोरों में से थोड़ाथोड़ा गेहूं निकाल कर नौ बोरे तैयार कर दिए और सारा हिसाबकिताब ठीक कर दिया. —राम सराफ ●

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

दास्ताने दफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहशोभा

नवंबर 1980

- घर की साजसज्जा के लिए रंग योजना : अनेक उपयोगी सुझाव.
- दीवाली के लिए मीठे व नमकीन विशेष व्यंजन: राजस्थानी गुझिया, खोए के मालपुए, परवल की मिठाई, सोयाबीन का हलवा, काजू की बर्फी, छेना मुर्की—ग्यारह व्यंजन.
- शादी के बाद हेमा मालिनी से भेंटवार्ता :
- बुनाई के 4 नए नमूने

और साथ ही स्वास्थ्य व सौंदर्य संबंधी सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याओं पर लेख व कहानियां व सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही खरीदें

दीवाली विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

MUKTA November (Second) 1980
R.N. 6502/60 D(C)-104
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुक्ता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3)

युवक युवतियों की पत्रिका

अंक 187
अप्रैल (द्वितीय)
1974

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस बिल्डिंग,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-55.

दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद, में मुद्रित व प्रकाशित.

मुक्ता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड है.

मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस समाचारपत्र द्वारा सुरक्षित हैं.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.00 रुपए,
एक वर्ष : 40.00 रुपए,
दो वर्ष : 75.00 रुपए.

विदेश में (समुद्री डाक से)
एक वर्ष : 60.00 रुपए,
दो वर्ष : 115.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि.,
झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ.

लेख

पारासेल द्वीपसमूह 14 उग्रसेन गोस्वामी
डाक्टर संघर्ष की राह पर 20 ललितमोहन बंसल
एस्पिरीन 67 चंद्रकुमार मिश्र
लोकप्रिय कैसे बनें? 70 जयंतीलाल भंडारी
परीक्षा से पहले 74 राधाकांत भारती
गुब्बारों की उड़ानें 79 लिखमीचंद खत्री
हिंदी फिल्मों में चोरी... 102 लता पंत
बारसीलोना 126
कलात्मक बैग 130 सुभाषिणी
भारत इंगलैंड टैस्ट क्रिकेट 134 श्रीशचंद्र मिश्र

कथा साहित्य

धुएं की दीवार 34 गोवर्द्धनसिंह 'वहशी'
लौटती बहारें 42 अशोक दत्त सुमन
मुआयना परीक्षा केंद्र का 52 रोहिणी कांत
रहस्यपूर्ण हत्या 84 अजय
रात का फैसला 89 योगेंद्रनाथ सिन्हा
पत्र फिल्म वितरक का... 120 रमाकांत 'आजाद'

कविता

तेरी याद गहरी है 50 लक्ष्मीनारायण 'शोभन'
डाली हरसिंगार की 83 अखिलेश 'अंजुम'

स्तंभ

संपादक के नाम 4 — 78 पसंद अपनी अपनी
मुक्त विचार 11 — 100 मैं क्या करूं?
स्वर्णिम वाक्य 33 — 109 ये लड़कियां
धूपछांव 51 — 110 पखवाड़े की फिल्म
चित्रावली 61 — 114 परदे के आगे
ज्ञान पहेली 65 — 132 खेल समीक्षा

छाया

आवरण : र. न. शर्मा
धर्मनाथ प्रसाद 97 — 98-99 सरोज शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

मार्च (प्रथम) के मुक्त विचार में 'विचार स्वतंत्रता पर लाल तलवार' पढ़ा. आज रूस के कम्युनिज्म ने वहां के अपने ही देश के साहित्यकारों, इतिहासकारों, संगीतकारों, वैज्ञानिकों आदि के खिलाफ एक जेहाद छेड़ रखा है. इस का एक मात्र कारण यह है कि वहां के विचारकों ने वहां की दुरवस्था, अत्याचार, दमन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध आदि के खिलाफ लिखना शुरू किया. इसी कारण वहां के विद्वान जेल के सीखचों में बंद हैं. उन को तरहतरह के कष्ट दिए जा रहे हैं. वहां के शासकों को यह पता नहीं कि इस तरह के दमन व अत्याचार से सच्चाई को छिपाना संभव नहीं है.

विश्वविख्यात सोल्जे नित्सिन का देशनिकाला ही एक न एक दिन रूसी कम्युनिज्म की जड़ें उखाड़ने की शुरुआत हो सकता है. आज यह साबित हो चुका है कि कम्युनिज्म 'निर्धन जनता' का शत्रु है.

—प्रेमशंकर शर्मा 'आलोक,' जयपुर

✦

फरवरी (द्वितीय) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'लड़कियों से छेड़खानी' के संबंध में आप के द्वारा व्यक्त विचारों से कुछ हद तक सहमत हुआ जा सकता है, पूर्णतः नहीं.

लड़कियों के साथ समयअसमय छेड़खानी करने वालों से निश्चय समाज को खतरा है और उन्हें उन की असभ्यता पर कड़ी सजा मिलनी चाहिए. पर आप के द्वारा सुझाए गए उपाय ज्यादा व्यावहारिक नहीं हैं.

सफेदपोश पुलिसमैनों की संख्या बढ़ाने से कोई फायदा नहीं है. पुलिस की निष्क्रियता आज हर जबान पर चर्चा का विषय है. इस छेड़खानी को रोकने के लिए लड़कियों को आत्मरक्षा की विभिन्न विधियां सीखनी चाहिए और असभ्यता के शुरू होते ही उन्हें मजा चखाने की पहल करनी चाहिए. यदि लड़की कुछ देर भी अपना बचाव करने में सफल हो जाए तो फिर उसे शीघ्र ही अन्य लोगों से सहायता प्राप्त हो सकती है क्योंकि हमारे समाज का अधिकांश वर्ग लड़कियों की तरफ ही होता है.

ऐसे कुछ गुंडों को कड़ी सजाएं दी जानी चाहिए, जिस से भविष्य में ऐसे लोग सोचसमझ कर काम लें.

—विजयकुमार अग्रवाल, भोपाल

✦

मार्च (प्रथम) में प्रकाशित 'अपराध और सजा' (कहानी : भूपेंद्र गांधी) में नायिका मीनाक्षी के बाएं हाथ की पांचों उंगलियां दोनों चित्रों में सलामत हैं, जब कि कहानी से प्राप्त संकेत के अनुसार बाएं हाथ की दो उंगलियां 'छिन' गई थीं. चित्रों में कहानी का प्रत्येक निर्देश

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. सभी पत्रों पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप की दौलत...
बिना दौलत लुटाए

पाण्ड्स
Angel Face
कामप्रेस्ड पाउडर

एंजेल फ़ेस काम्प्रेस्ड पाउडर अधिक समय तक चेहरे को अधिक मुलायम रखता है. न कोई भद्दा चिन्ह छोड़े, न जमे. आपका स्वाभाविक सौंदर्य अधिक खिल उठता है आर आप अचानक अपने को रूपलक्ष्मी महसूस करने लगती हैं. आसान क़ीमतों पर कॉम्पैक्ट पाउडरों की क़िस्मों में से कोई भी पसंद कीजिए. ६ शेड्स. रूप की दौलत हासिल करने के लिए आपको खजाने नहीं लुटाने पड़ेंगे.

स्वाभाविक सौंदर्य का सहज साधन

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. मद्रास ४४ (सीमित दायित्व के साथ यू.एस.ए. में स्थापित) ट्रेडमार्क रजि. भारत में निर्मित

लिंटास - AFCP. 1-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रमित्र विज्ञापन

20 वर्षीय युवक. रुचियां : फोटोग्राफी, भ्रमण, संगीत और साहित्य, युवकयुवतियों से पत्रमित्रता का इच्छुक. संपर्क : वि. नं. 2169, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

✦

18 वर्षीय युवक. बिलासपुर निवासी. रुचियां : रेडियो सुनना, कविताएं लिखना, जासूसी तथा सामाजिक उपन्यास पढ़ना, युवकयुवतियों से पत्रमित्रता. संपर्क : वि. नं. 2170, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

✦

21 वर्षीय, एम. काम., अविवाहित युवक. विधि में अध्ययनरत., रुचियां : फास्ट ड्राइविंग, अध्ययन, भ्रमण, पत्रमित्रता. संपर्क : वि. नं. 2171, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

✦

रायपुर निवासी. डाक्टर. रुचियां : नरनारी पत्रिका एवं होम्योपैथिक चिकित्सा में रुचि तथा ज्ञानवर्द्धक साहित्य में विशेष रुचि. संपर्क : वि. नं. 2172, मुक्ता, नई दिल्ली-55.

पत्रमित्र बनाइए

मुक्ता के पाठकों की तरफ से बहुत दिनों से यह मांग थी कि मुक्ता द्वारा पत्रमित्र बनाने का प्रबंध किया जाए. पत्रिका की ओर से इस का प्रबंध करना तो संभव नहीं है परंतु मुक्ता में एक विशेष स्तंभ आरंभ किया जा रहा है जिस में पत्रमित्रता के इच्छुक व्यक्ति विज्ञापन प्रकाशित करा सकते हैं और अपने लिए उपयुक्त मित्रों का चुनाव कर सकते हैं.

इस स्तंभ में पत्रमित्र इच्छुकों के नाम व पते प्रकाशित नहीं किए जाएंगे. पहला पत्रव्यवहार मुक्ता की मार्फत होगा.

इस स्तंभ में अपना विज्ञापन प्रकाशित कराने की दर 25 पैसे प्रति शब्द होगी. 'वि. नं...मुक्ता, नई दिल्ली-55' (6 शब्द) के 1.50 रुपए अलग होंगे. उत्तर भेजने का कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा. शुल्क पेशगी मनी आर्डर या पोस्टल आर्डर से भेजें. शुल्क तथा विज्ञापन इस पते पर भेजिए :

पत्रमित्र विभाग,

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-55.

सूक्ष्मता से प्रकट करना चाहिए.

—रजनी शर्मा, नई दिल्ली

✦

फरवरी (द्वितीय) में 'कित्तूर की वीरांगना' तथा 'चौसिंगा' दोनों रचनाओं में 'कुसुम मेघवाल' का नाम पढ़ने को मिला. जब कि चौसिंगा में कुसुम महता 'प्रियदर्शिनी' होना चाहिए था.

—रमेशचंद्र शर्मा 'मधुर,' गोरखपुर

● **हमें इस गलती के लिए खेद है.**

—संपादक

✦

फरवरी (द्वितीय) में प्रकाशित 'शादी का इंतजाम' (एकांकी : शिवकुमार दुबे) पसंद आई. मेरी तो राय है कि उक्त एकांकी के रिप्रिंट छपवाए जाने चाहिए ताकि समय पड़ने पर वधू पक्ष के असहाय लोग उसे मंगवा कर वर पक्ष के लालची रिश्तेदारों को भेंट कर सकें.

एकांकी का नाम यदि 'शादी का इंतजाम' के स्थान पर 'दूल्हे का इंतजाम' होता तो मेरे मतानुसार उपयुक्त होता.

—दत्तात्रय नाथ, पंधाना

✦

फरवरी (प्रथम) में प्रकाशित 'नोट बुक रखने की आदत' (लेख : इंदु क. मल्लाह) पढ़ा. आज अपनी पुरानी नोट बुक खो कर जिस प्रकार मुझे कभीकभी दुख होता है, वैसा ही शायद उन नवयुवकों को भविष्य में होगा जो नोट बुक रखते ही नहीं या रखते हैं तो उन की सुरक्षा करने में असफल होते हैं.

—रूपसिंह शर्मा, लखीमपुर खीरी

✦

मार्च (द्वितीय) में प्रकाशित 'नहले पर दहला' (व्यंग्य : विनोदकुमार खेमका) अच्छा लगा. देवर भाभी के प्यार, होली के मजाक आदि का जो चित्रण लेखक ने किया है, वह पारिवारिक रिश्तों के माधुर्य को प्रतिबिंबित करता है.

—सुनीता, मथुरा

अप्रैल (द्वितीय) ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(लेख : शशिभूषण 'शलभ') वर्ष भर की फिल्मों पर समीक्षात्मक दृष्टि से अच्छी जानकारी प्रस्तुत करता है.

—**शालिनी, बंबई**

✦

फरवरी (प्रथम) में प्रकाशित 'एक नाम की दो फिल्में' (लेख : महावीरसिंह चौहान) प्रकाशित हुआ था. उन में से कुछ फिल्में तीन बार भी बन चुकी हैं या तीसरी बार बन रही हैं. ये हैं :

बिखरे मोती (संजय, बबीता), चिंगारी (संजय, लीना चंदावरकर), आबरू (दीपककुमार, विम्मी), नादान (नवीन निश्चल, आशा पारिख).

जो बन रही हैं—

अमानत (मनोज, साधना), दोस्त (धर्मेंद्र, हेमा मालिनी).

—**हरचरणसिंह नैय्यर, सागर**

✦

फरवरी (द्वितीय) में प्रकाशित 'प्रतीक्षा' (कहानी : मदनमोहन मेहरा) आज के तथाकथित भद्र समाज का परदाफाश करती है. नैतिकता और सुखी गृहस्थ जीवन के दोहरे तनाव में जी रही नारी का चित्रण अच्छे ढंग से हुआ है. बेकारी के इस युग में पतिपत्नी चाह कर भी आर्थिक परिस्थितियों से समझौता नहीं कर पाते. अधिक योग्य पुरुष की अपेक्षा कम योग्य स्त्री को नौकरी देने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है. यह नौकरीशुदा स्त्रियों के परिवार को नष्ट करती है, तथा उन के पारिवारिक जीवन को भी कुप्रभावित करती है.

—**शोभा, नई दिल्ली**

✦

मुरादाबाद में हाल ही में हुई भयंकर रेल दुर्घटना में बहुत से व्यक्तियों को मौत के मुंह में जाना पड़ा. हमारे मंत्रियों को इस प्रकार की रेल दुर्घटनाओं की जल्द ही रोकथाम करनी चाहिए और मृत व्यक्तियों के संबंधियों को ईमानदारी से मुआवजा दिया जाना चाहिए.

—**अजयकुमार पुगला, मुरादाबाद** ●

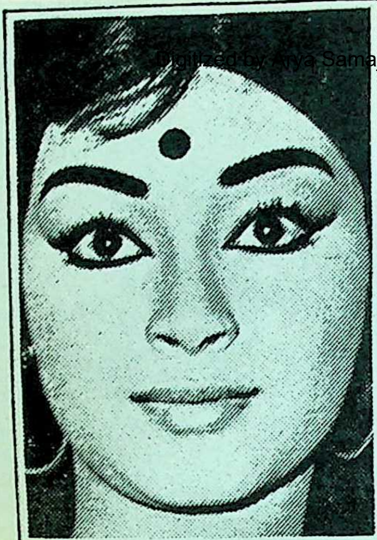

उसकी सुन्दरता का रहस्य हो

ऐटेक्स

सौंदर्य प्रसाधन

तीस साल से ज़्यादा मशहूर "ऐटेक्स्" श्रेष्ठ गुणों के लिए विश्वसनीय

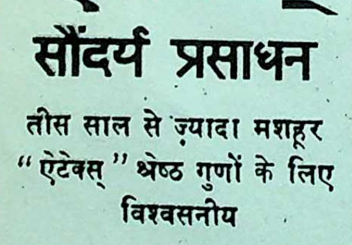

Aravind Laboratories
MADRAS-33
AL-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AGMARK

शुद्ध खाद्य पदार्थों के लिये एगमार्क मुहर देखिये

एगमार्क मुहर लगा घी,
मक्खन, तेल, पिसे मसाले, गेहूं का आटा,
शहद, अंडे और रोजाना के प्रयोग की
अन्य कई चीजें शुद्ध
होती हैं।

davp 73/621

शुद्ध खाद्य पदार्थ काम में लाइये
एगमार्क वस्तुएं खरीदिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लैक्सो बेबी पाउडर
क़रीब क़रीब माँ के स्पर्श की ही तरह मुलायम

ग्लैक्सो द्वारा 'बालोपयोगी' उत्पादनों की विश्वसनीय परम्परा में एक और...

जन्मजात कोमल; कारण– आपका मुन्ना भी तो बड़ा कोमल है। है न! ग्लैक्सो बेबी पाउडर इतना महीन बनाया गया है कि नहाने के बाद या चड्डी बदलने पर भी यह मुन्ने के तन पर बड़े प्यार से लगा रहता है! आपके विश्वसनीय ग्लैक्सो की ही देन!

१०० ग्रा. और
४०० ग्रा. के डिब्बों में मिलता है।

आपका प्यार, ग्लैक्सो का संसार– केवल आपके मुन्ने के लिए!

ग्लैक्सो

CMGBT-4-172 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

चेतावनी भी, चुनौती भी

दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों ने शिक्षकों की यूनियन को चेतावनी दी है कि यदि उन्होंने परीक्षाओं को बायकाट करने का निर्णय तुरंत वापिस न लिया तो उन्हें छात्रों के आंदोलन का सामना करना पड़ेगा.

छात्रों का यह निर्णय बहुत ही प्रशंसनीय है. दिल्ली के शिक्षक काफी समय से बेकाबू होते जा रहे हैं. विश्वविद्यालय और सरकार को उन की हर बात माननी पड़ रही है क्योंकि हर मांग के साथ वे हड़ताल की धमकी देना भी आरंभ कर देते हैं.

सरकार या विश्वविद्यालय का शिक्षकों को नियंत्रित करने का हर प्रयास विफल होता जा रहा है. इस का नतीजा यह है कि शिक्षकों ने शिक्षा के प्रति छात्रों की उदासीनता का लाभ उठा कर पढ़ाई-लिखाई को बिलकुल तिलांजलि दे दी है.

शिक्षकों को विश्वास है कि एक बार नौकरी पा लेने के बाद उन्हें नौकरी से तो कोई निकाल ही नहीं सकता. अतः वे गंभीरता से पढ़ाएं या न पढ़ाएं, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता. प्रिंसिपलों और कालिजों की प्रबंध कमेटियों को उन्होंने हड़ताल का दबाव डाल कर पंगु बना दिया है. फिर उन्हें शिक्षा के कार्य को गंभीरता से लेने के लिए कौन बाध्य कर सकता है?

यह काम केवल छात्र ही कर सकते हैं. पढ़ाई से सभी छात्र कतराते हैं पर वे यह भी जानते हैं कि शिक्षा के गिरते स्तर के कारण उन को नौकरियां पाने में कितनी कठिनाई होगी. यदि शिक्षक रुचि ले कर पढ़ाएं तो उद्दंड से उद्दंड छात्र भी पढ़ने लगता है. परंतु यदि वे टालमटोल कर पढ़ाएं तो अच्छे छात्र भी पढ़ाई से उदासीन हो जाते हैं.

इसलिए आवश्यक है कि स्वयं छात्र ही समयसमय पर शिक्षकों की कार्यरुचि के बारे में कालिज अधिकारियों को सूचित करते रहें और घटिया शिक्षकों से पढ़ने से इनकार कर दें.

छात्रों की चेतावनी इसी दिशा में सही कदम है. आशा की जानी चाहिए कि छात्र इसी प्रकार अपने भविष्य को सुधारने के लिए यत्न करते रहेंगे.

आखिरी मौका

यद्यपि कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में बहुमत प्राप्त हो गया है, 1970 के लोक सभा के चुनावों में 48 प्रति शत वोटों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकाबले उसे केवल 32 प्रति शत वोट प्राप्त हुए हैं. स्पष्ट है कि श्रीमती गांधी की प्रतिष्ठा काफी गिर गई है. वास्तव में अब उन की स्थिति विरोधी दलों के कई नेताओं जैसी ही हो गई है. यदि उत्तर प्रदेश में आज भी कांग्रेस सत्तारूढ़ है तो उस का कारण है विरोधी दलों को 68 प्रति शत का मत मिलने पर भी उन में एकता न होना.

इन चुनावों में कांग्रेस किस प्रकार कमजोर हो गई है, यह वोटों के प्रति शत से स्पष्ट है. कांग्रेस को इस बार 32.19 प्रति शत, संगठन कांग्रेस को 8.44 प्रति शत, जनसंघ को 17.11 प्रति शत, भारतीय क्रांति दल को 21.09 प्रति शत और कम्युनिस्ट पार्टी को 2.40 प्रति शत वोट प्राप्त हुए हैं. 18.77 प्रति शत वोट अन्य दलों और निर्दलीयों को मिले हैं.

कांग्रेस से जनता किस प्रकार तंग है यह इन परिणामों से स्पष्ट है और इस सब का कारण श्रीमती इंदिरा गांधी का नेतृत्व है. याद रखने की बात है कि कांग्रेस को इतने वोट लेने के लिए लगभग 60 करोड़ रुपए खर्चने पड़े और न जाने किसकिस प्रकार की धांधलियां और बेईमानियां करनी पड़ीं. यदि ये चुनाव कांग्रेस सत्ता से हट कर कराती तो उसे 20 प्रति शत से अधिक वोट हरगिज न मिल पाते. जनता अब जान गई है कि केवल नारों से ही पेट नहीं भरता. यदि नारों से किसी का पेट भरता है तो वह सत्तारूढ़ कांग्रेसियों का ही है.

हर तरह से शक्तिशाली होते हुए और देश की ताकत अपनी मुट्ठी में रखते हुए भी श्रीमती इंदिरा गांधी न तो कांग्रेसी राजनीतिबाजों को भ्रष्टाचार करने से रोक सकी हैं और न ही देश में कोई चेतना ला सकी हैं. (वास्तविकता तो यह है कि कांग्रेसी उन्हीं के इशारे व प्रोत्साहन पर भ्रष्टाचार करते हैं.) उलटे, जब से वह गद्दी पर आई हैं, देश की आर्थिक हालत हर साल खस्ता होती जा रही है.

इस का कारण वही है जिस से गांधीजी स्वतंत्रता की लड़ाई में डरा से अच्छा फल नहीं निकल सकता. उन्होंने कई बार स्वयं अपने आंदोलन इसलिए स्थगित कर दिए क्योंकि लोग तोड़फोड़ और हिंसा पर उतारू हो गए थे.

श्रीमती गांधी जिन तरीकों से गद्दी पर बैठीं व जिन साधनों से उन्होंने असली सत्ता पाई व बनाई रखी है, उन्हें किसी भी दशा में नैतिक नहीं कहा जा सकता. तो फिर कौन कांग्रेसी उन की बात का आदर करेगा? श्रीमती गांधी रोज हड़तालें और आंदोलन बंद करने की अपीलें करती हैं, पर सुनता कौन है?

यदि इंदिरा जी ने अब भी ईमानदारी से सत्ता का मोह त्याग कर केवल सही साधनों का प्रयोग नहीं किया तो उन की गद्दी जाने में देर न लगेगी. यह अब उन का और कांग्रेस का आखिरी मौका है.

भटकिए मत

गुजरात के छात्रों और युवकों के हाल ही के आंदोलन से आशा बनी थी कि छात्रवर्ग का संघर्ष राजनीतिबाजों व नौकरशाही को नियंत्रित करने का कारगर उपाय होगा. परंतु विधान सभा भंग होते ही नवनिर्माण समिति ने जिस प्रकार व्यवहार करना शुरू किया है उस से यह आशा धूमिल हो गई है.

नवनिर्माण समिति की नई मांग है कि परीक्षाओं को स्थगित कर दिया जाए. कुछ छात्र नेता तो यहां तक मांग कर रहे हैं कि परीक्षा लिए बिना उन्हें अगली कक्षाओं में चढ़ा दिया जाए. इस के लिए उन्होंने फिर भूख हड़तालें, घेराव और आंदोलन शुरू कर दिए हैं.

कुछ समय पूर्व लोग कांग्रेस मंत्रिमंडल का विरोध कर रहे थे क्योंकि राजनीतिबाजों ने बिना श्रम और मेहनत किए लाखों रुपए कमा लिए थे. यदि छात्रों को भी बिना मेहनत किए और परीक्षा में बैठे डिग्री मिल जाए तो क्या वह भ्रष्टाचार न होगा?

पुरानी कहावत है कि जो शीशे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुहल्ले में रहते हैं उन्हें दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकने चाहिए. इसी प्रकार जो खुद भ्रष्टाचार करते हैं, उन्हें दूसरों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा कर दंड देने का भी कोई अधिकार नहीं है.

गुजरात के छात्रों को चाहिए कि वे शांतिपूर्वक परीक्षाएं दें और श्रम कर के ही अगली कक्षा में बैठने का अधिकार लें.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नशा उतराए न उतरे

दिल्ली में हुए मद्यनिषेध सम्मेलन में देश के अधिकांश राज्यों के प्रतिनिधियों ने स्पष्ट कह दिया है कि लोगों का स्वास्थ्य बिगड़े या आर्थिक दशा खराब हो, वे शराबबंदी लागू कर के उस से प्राप्त होने वाले राजस्व से हाथ नहीं धोना चाहते.

यद्यपि स्वतंत्रता से पहले कांग्रेस ने वादा किया था कि स्वतंत्रता के बाद देश में पूर्ण मद्यनिषेध लागू किया जाएगा, लेकिन स्वतंत्रता के बाद दोएक राज्यों के अलावा सब टालमटोल करते रहे हैं. जिन राज्यों ने आरंभ में शराबबंदी लागू भी की थी, वे भी एकएक कर के इसे समाप्त कर रहे हैं.

यह तो मानी हुई बात है कि शराब को कानून से बंद नहीं किया जा सकता. यदि कानून से शराबबंदी की गई तो गैर-कानूनी शराब बनेगी जो जहरीली भी होगी और जिस के बलबूते पर दूसरे अपराध भी पनपेंगे.

परंतु इस का मतलब यह नहीं है कि सरकारें शराब का प्रचार करें और ऐसेऐसे स्थानों पर इस की दुकानें खोलने की अनुमति दें जहां लोग आसानी से आ कर पी सकें. लगभग सभी राज्यों में शराब की दुकानें ठीक मुख्य मार्गों पर होती हैं ताकि ट्रक और गाड़ी वाले आराम से शराब खरीद कर पी सकें (और यदि दुर्घटनाएं हों तो सरकार को क्या?)

आम तौर पर विदेशियों को सहूलियतें देने के नाम पर होटलों में भी शराब की बिक्री की अनुमति दे दी जाती है.

यदि सरकार को लोगों के हित का ध्यान है, जिस का प्रचार वह हर समय करती है, तो उसे इस प्रकार की दोतरफा नीति को त्याग देना चाहिए. एक तरफ तो समाज कल्याण विभाग प्रचार करे कि शराब पीना बुरा है और दूसरी ओर राजस्व विभाग ऐसे उपायों को सोचे जिन से शराब अधिक बिके और ज्यादा पैसे मिलें.

दूसरे, सरकार को फिल्मों में शराब पीते दिखाने पर एकदम प्रतिबंध लगा देना चाहिए. कुछ समय पहले तक तो हिंदी फिल्मों में शराब तभी दिखाई जाती थी जब किसी के चरित्र का हनन दिखाना होता था. परंतु अब शराब हर स्थिति में दिखाना शुरू कर दिया गया है—बापबेटे साथसाथ शराब पीते हैं, मित्रमित्र साथ-साथ शराब पीते हैं और यहां तक कि अब माएं और हीरोइनें भी शराब पीती दिखाई जाने लगी हैं. इन सब का प्रभाव यह हुआ है कि शराब, जो अब तक मध्यम वर्ग में बुरी चीज समझी जाती थी, अब सम्मानजनक स्थान पाने लगी है.

शराब की दुकानें सदा ही शहर के भीड़भाड़ वाले स्थानों से दूर होनी चाहिए ताकि लोगों को खरीदने में कष्ट उठाना पड़े. क्लबों, विवाहों, होटलों आदि में भी शराब पीना, पिलाना और पी कर घूमने पर कानूनी प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए. विवाहों तथा पार्टियों में जिस प्रकार मिठाई व गेहूं आदि की बनी चीजों को खिलाने पर प्रतिबंध है उसी प्रकार शराब पिलाने पर प्रतिबंध होना चाहिए. यह प्रतिबंध कुछ भी मुश्किल नहीं है क्योंकि बहुत से व्यक्तियों को न चाहते हुए भी औरों के दबाव में आ कर या फैशन के प्रभाव में शराबखोरी करनी-करानी पड़ती है. जिसे शराब पीनी हो, वह घर में बैठ कर पिए और जब नशा उतर जाए तभी घर से बाहर निकले. सार्वजनिक रूप से शराबखोरी की कोई आवश्यकता नहीं है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पारासेल द्वीपसमूह

लेख • उग्रसेन गोस्वामी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर दक्षिण चीन सागर के कुछ नन्हे-नन्हे टापुओं को ले कर दक्षिण पूर्वेशिया के प्रदेश में काफी तनातनी का वातावरण पैदा हो गया है. दक्षिण वियतनाम और चीन के बीच जनवरी, 1974 में एक तगड़ी नौसैनिक भिड़ंत भी हुई और चीन ने बलपूर्वक दक्षिण वियतनाम से दक्षिण चीन सागर में पारासेल द्वीपसमूह के नाम से विख्यात चार छोटे-छोटे टापुओं को हथिया लिया. ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि पारासेल द्वीपसमूह के टापुओं पर दक्षिण वियतनाम का सुस्पष्ट आधिपत्य था लेकिन काफी अरसे से ये टापू दक्षिण वियतनाम के सैनिक नियंत्रण में रहे हैं.

पारासेल नामक इस द्वीपसमूह (चीनी इसे 'हसिशा द्वीपसमूह' कहते हैं) में डंकन, पैटल, राबर्ट और मनी नाम के चार द्वीप हैं. इन में किसी का भी क्षेत्रफल एक वर्गमील भी नहीं है. वास्तव में ये द्वीप समुद्री चट्टानों या रेतीले टिब्बों से अधिक कुछ नहीं हैं. ऐसे अनगिनत नन्हेनन्हे द्वीप दक्षिण चीन सागर में फैले हुए हैं. उदाहरण के लिए, पारासेल द्वीपसमूह के पूर्व में स्थित केवल फिलिपीन द्वीपदेश में ही सात हजार द्वीप हैं किंतु इन सात हजार द्वीपों में दोतिहाई से भी अधिक द्वीप इतने छोटे हैं कि उन के नाम तक ही नहीं हैं. ऐसे नन्हेनन्हे द्वीपों पर मानव के बस पाने की भी कोई संभावना नहीं होती.

पारासेल के ये द्वीप भी निर्जन ही पड़े थे. मछुआरे जरूर यहां आते रहते हैं जो मछलियां पकड़ने के अलावा इन द्वीपों पर विचरने वाले समुद्री पक्षियों की बीट एकत्रित कर के ले जाते हैं जो खेतों में खाद के काम आती है. पारासेल द्वीपसमूह दक्षिण वियतनाम की तटरेखा से 400 किलोमीटर पूर्व में स्थित है और चीन के हैनान द्वीप से 280 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है.

यह सही है कि पारासेल द्वीपसमूह दक्षिण वियतनाम की अपेक्षा चीन के हैनान द्वीप के अधिक निकट है, किंतु केवल इसी कारण कोई देश किसी भूखंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट चीन के दानवी अत्याचारों से आतंकित पारासेल द्वीपसमूह कब तक चीन और वियतनाम के युद्ध की आग में जलता रहेगा?

स्प्रैटली द्वीपसमूह की दक्षिण पश्चिम सीमा पर तैनात दक्षिण वियतनाम के सशस्त्र सैनिक.

पर अपना दावा नहीं जता सकता. चीन काफी अरसे से इस द्वीपसमूह को अपने मानचित्रों में अपने क्वानतुंग प्रांत का भाग बतलाता चला आया है. उधर दक्षिण वियतनाम का भी इन द्वीपों पर काफी पुराना दावा है. वस्तुतः पारासेल द्वीपसमूह एक सीमा विवाद का विषय था, जिसे चीन ने बलपूर्वक अपने हक में सुलझा लिया.

साम्राज्यवादी हाथों में

दक्षिण वियतनाम का कहना है कि पारासेल द्वीपसमूह सन 1802 से वियतनाम का अंग रहा है. सन 1802 का, दक्षिण पूर्वेशिया के इतिहास में एक विशेष महत्त्व है क्योंकि उसी वर्ष वियतनाम राज्य का पहलेपहल सूत्रपात हुआ था. यों तो वियतनामी भूखंड का इतिहास ईसवी सन के प्रारंभ से भी पहले शुरू होता है, किंतु वह लगभग एक हजार वर्ष पहले तक चीन के साम्राज्यवादी हाथों में प्रायः परतंत्र ही बना रहा. तब का वियतनाम 17 अक्षांश तक ही सीमित था जो कि अब उत्तर वियतनाम और दक्षिण वियतनाम की सीमा रेखा है.

अगली कई शताब्दियों में वियत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

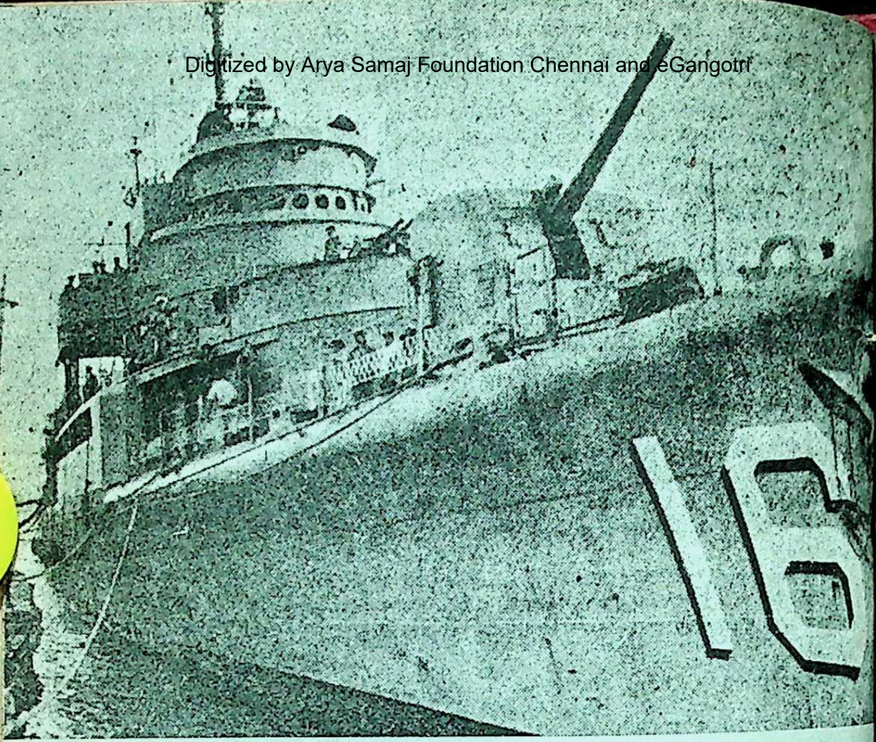

कम्युनिस्ट चीन के साथ हुए जलयुद्ध में 'एच क्यू-16 लाइ थ्योंग किएट' विध्वंसक जहाज ने बहुत कमाल दिखाया...

नामी अपने क्षेत्र का विस्तार करते रहे और अठारहवीं शताब्दी के अंत तक चीन सागर की पश्चिमी तटरेखा के साथसाथ 1200 मील तक फैला इलाका वियतनामी राष्ट्र का अंग बन चुका था. 1802 में वियतनाम के तत्कालीन शासक गिया लांग ने अपने को नए राज्य का सम्राट घोषित करते हुए इस विस्तृत क्षेत्र को पहलेपहल वियतनाम का नाम दिया.

वियतनाम का अर्थ होता है दक्षिण के लोग. चीन के संदर्भ में वियतनामी सदा अपने को चीनियों से अलग मानते आए हैं. मूल वियतनामी क्षेत्र (वर्तमान उत्तर वियतनाम) के चीन के दक्षिण में स्थित होने के कारण 'नाम' (दक्षिण) 'वियत' (लोग) पद प्राचीन काल से प्रचलित था. उसी के आधार पर गिया लांग ने इस समूचे क्षेत्र को वियतनाम का नाम दिया.

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में समूचा वियतनामी क्षेत्र लाओस और कंबोदिया के साथ फ्रांस के आधिपत्य में आ चुका था. फ्रांस ने वियतनाम में देशज राजतंत्र तो समाप्त न किया लेकिन इस दौरान वियतनाम की स्थिति फ्रांस के एक उपनिवेश से अधिक नहीं थी. इसी फ्रांसीसी आधिपत्य के संदर्भ में दक्षिण वियतनाम का यह भी कहना है कि पारासेल द्वीपसमूह फ्रांसीसियों के समय में भी वियतनाम का अंग बना रहा और 1932 से तो वहां लगभग नियमित रूप से सैनिक चौकी भी बनी रही है.

प्रभुता का दावा

द्वितीय विश्वयुद्ध में दक्षिण पूर्वेशिया के और बहुत से इलाके के साथसाथ इन टापुओं पर भी जापान का कब्जा हो गया था किंतु जापान की पराजय के बाद वियतनाम ने पुनः 1951 में इन द्वीपों पर अधिकार कर लिया. बाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण वियतनाम द्वारा समयसमय पर कई आदेश जारी किए गए जिन में इन द्वीपों की प्रभुता का दावा किया गया था. अभी पिछले वर्ष सितंबर में भी इस प्रकार का एक आदेश दक्षिण वियतनाम द्वारा जारी किया गया था. तब तो चीन ने इस दावे को तुरंत चुनौती न दी. किंतु इस वर्ष जनवरी में सैनिक कारवाई कर के इन द्वीपों में स्थित दक्षिण वियतनाम के गश्ती दस्तों को खदेड़ बाहर कर दिया.

चीन का यह दावा है कि केवल पारासेल द्वीपसमूह ही नहीं बल्कि दक्षिण चीन सागर के चुंगशा (स्प्रेटली), नानशा और तुंगशा नामक तीन और द्वीपसमूहों पर भी सदा से चीन का आधिपत्य रहा है. उस का कहना है कि कुछ समय के लिए इन पर फ्रांस का नियंत्रण जरूर रहा और बाद में ये जापानी कब्जे में भी रहे किंतु दूसरे विश्वयुद्ध में जापानियों

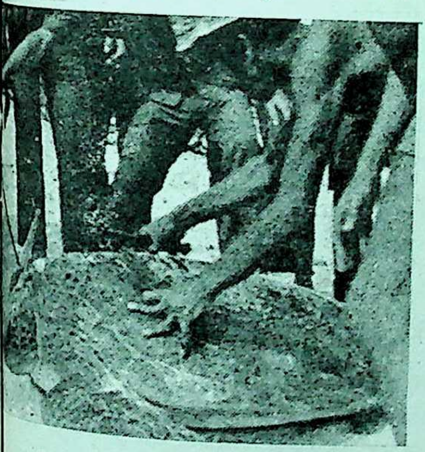

नैन्यत द्वीप में 'डाइ मोइ' नामक कछुआ बहुत पाया जाता है. दक्षिण वियतनाम के सैनिक अपने शिकार के साथ...

की पराजय के बाद इन का स्वामित्व स्वयमेव चीन के हाथ में चला गया.

चीन ने इधर हाल तक दक्षिण चीन सागर के इन विवादग्रस्त नन्हेनन्हे टापुओं पर ही नहीं वरन इसी सागर में स्थित 13,000 वर्गमील में फैले अपने हैनान द्वीप की ओर भी कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था. फिर अचानक इन टापुओं में चीन की दिलचस्पी इतनी अधिक कैसे बढ़ गई कि उस ने इन्हें अपने कब्जे में लेने के लिए बलप्रयोग करने से भी गुरेज न किया? इस का एक कारण तो यह बताया जाता है कि ऐसा विश्वास है कि दक्षिण चीन सागर की तलहटी में पेट्रोलियम के काफी बड़े भंडार हैं और वर्तमान तेल संकट को देखते हुए कोई भी समर्थ देश ऐसे प्रदेश पर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करेगा ही जहां तेल मिलने की संभावना हो. किंतु केवल यही एक कारण पर्याप्त नहीं लगता. पारासेल द्वीपसमूह के टापू काफी सामरिक महत्त्व के बताए जाते हैं, जहां से चीन समूचे दक्षिण पूर्वेशिया की राजनीतिक गतिविधियों पर कड़ी नजर रख सकता है.

चीन का आधिपत्य

चीन केवल पारासेल द्वीपों पर ही अपना हक नहीं जता रहा है बल्कि दक्षिण चीन सागर में बिखरे पड़े और भी बहुत से निर्जन टापुओं को अपना बतला रहा है. पारासेल द्वीपों के स्वामित्व पर तो उस का विवाद दक्षिण वियतनाम और कुछ हद तक उत्तर वियतनाम से हो सकता है क्योंकि उत्तर वियतनाम भी उसी अखंड वियतनामी राष्ट्र का उत्तराधिकारी है, जो 1945 से पहले, जब उत्तर वियतनाम का जन्म हुआ, इन द्वीपों का स्वामी बताया जाता है. किंतु अन्य जिन द्वीपों पर चीन ने अपना दावा जताया है, उन पर दक्षिण वियतनाम के अतिरिक्त फिलिपीन तथा ताइवान (फारमोसा) भी अपने दावे पेश कर रहे हैं. किंतु दक्षिण पूर्वेशिया के ये छोटेछोटे देश कुछ भी कहते रहें, चीन को जब भी सुविधाजनक लगा, वह शेष द्वीपों पर भी बलपूर्वक कब्जा करने से गुरेज नहीं करेगा.

बातचीत द्वारा सीमा विवाद सुल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

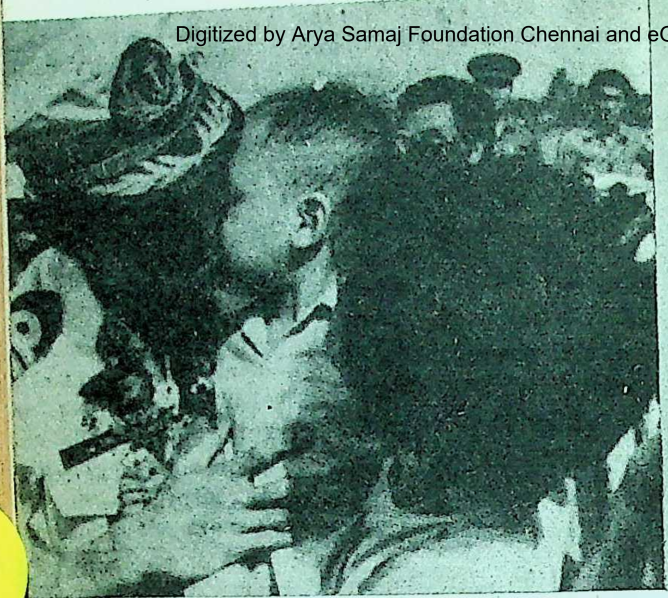

'एच क्यू-16 लाइ थ्योंग किएट' विध्वंसक जहाज के कमांडर ले वेन थ्यू पारासेल द्वीप समूह में कम्युनिस्ट चीन से हुए युद्ध के बाद घर आने पर पत्नी और बच्चे के साथ.

झाने में चीन को शायद ज्यादा विश्वास नहीं है. उस के साथ स्वयं हमारा सीमा-विवाद काफी अरसे से चला आ रहा है. उस के बारे में कई सालों तक चीन तथा हमारे देश के बीच बातचीत भी होती रही. लेकिन जब चीन को बातचीत द्वारा अपने पक्ष में मामला सुलझता नजर नहीं आया था तो उस ने 1962 में भारत पर सशस्त्र आक्रमण द्वारा इस विवाद को सुलझाने का प्रयत्न किया. रूस के साथ अपना सीमा विवाद सुलझाने में भी चीन शस्त्र उठाने से नहीं हिचकिचाया.

सीमा विवाद

भारत तथा रूस से हथियारों से सीमा विवाद को सुलझाने में तो उसे मात्र कुछ भूमि ही प्राप्त हो सकती थी किंतु दक्षिण चीन सागर में छितराए चंद वर्गमील क्षेत्रफल के इन द्वीपों के माध्यम से तो चीन के लिए दक्षिण पूर्वेशिया के समूचे प्रदेश पर अपना प्रभुत्व जमाने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है. गत शताब्दियों का अनुभव इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि दक्षिण पूर्वेशिया के ताले को दक्षिण चीन सागर की चाबी से बहुत आसानी से खोला जा सकता है.

वैसे तो दक्षिण चीन सागर प्रशांत महासागर का ही एक अंग है, किंतु इस जल प्रदेश के चीन के दक्षिण में स्थित होने के कारण इतिहास ने इसे दक्षिण चीन सागर का नाम प्रदान किया है. उत्तर की ओर चीन की दक्षिणी तटरेखा के अतिरिक्त ताइवान (फारमोसा) द्वीप इस की हदबंदी करता है. पश्चिम में उत्तर वियतनाम तथा दक्षिण वियतनाम इस के प्रभाव को बांधते हैं. पूर्व में फिलिपीन द्वीपसमूह यदि इस की सीमारेखा खींचता है तो दक्षिण में इस का विस्तार बार्नियो द्वीप तक चला जाता है.

लगभग पांच लाख वर्गमील क्षेत्र में फैले इस जल प्रदेश का दक्षिण पूर्वेशिया के संदर्भ में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है. इतिहास गवाह है कि दक्षिण पूर्वेशिया के देशों पर प्रभुत्व जमाने की जिस किसी शक्ति को भी लालसा रही है, उस ने दक्षिण चीन सागर की लहरों पर तैरते हुए ही उन पर अपनी धाक जमाई. चाहे ईसवी सन की शुरू की शताब्दियों में भारतीयों द्वारा दक्षिण पूर्वेशिया की धरती पर खड़े किए गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट चीन द्वारा रिहा किए जाने के बाद दक्षिण वियतनामी युद्धबंदी सैनिक हांगकांग के हवाई अड्डे पर..

…पा (वर्तमान वियतनाम का मध्यवर्ती क्षेत्र) तथा कांबोज (कंबोदिया) आदि के राज्य हों अथवा आज से चारपांच सौ वर्ष पहले इस क्षेत्र की संपदा की तलाश में भटकतेफिरते यूरोपीय नाविक हों, सभी ने दक्षिण चीन सागर की कमंद से छलांग लगा कर ही इस प्रदेश. को अपने वश में किया था. संयुक्त राज्य अमरीका का विख्यात सातवां नौसैनिक बेड़ा भी इसी दक्षिण चीन सागर से दक्षिण पूर्वेशिया के प्रदेश में अमरीकी प्रभुत्व की रखवाली करता रहा है.

इधर कुछ अरसे से अमरीका इस क्षेत्र से अपने हाथ खींच लेने की प्रक्रिया में जुटा हुआ है. पिछले करीब दो दशकों से अमरीका इस क्षेत्र के देशों की राजनीति पर काफी हावी रहा है. अब जब अमरीका अपनेआप को इस क्षेत्र से हटा रहा है, दूसरी विश्व शक्तियां इस क्षेत्र को अपनेअपने प्रभाव क्षेत्र में लाने के लिए प्रयत्नशील हो गई हैं. रूस का प्रयास रहा है कि इस क्षेत्र के देशों को एक सामूहिक सुरक्षा संधि द्वारा अपने साथ जोड़ लिया जाए. इस में उसे अभी तक तो सफलता नहीं मिली. चीन की यह कोशिश है कि यह क्षेत्र रूस के प्रभाव क्षेत्र में न जा कर उस की मुट्ठी में रहे.

इस प्रदेश के छोटेछोटे देश वैसे ही चीन की शक्ति से आतंकित हैं और चीन दक्षिण चीन सागर के नाकों पर कब्जा कर के अपनी 'छत्रछाया' में विस्तार करना चाहता है, जिस के नीचे इस क्षेत्र के देशों को 'आश्रय' लेने के लिए मजबूर किया जा सके. दूसरी विश्व शक्तियां चीन की इस काररवाई को कब तक चुपचाप देखती रहेंगी, यह तो समय ही बताएगा. किंतु सैनिक काररवाई द्वारा दक्षिण चीन सागर के नन्हेनन्हे टापुओं की हाल की छीनाझपटी कोई मामूली घटना नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में एक नए तनाव की शुरूआत है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर संघर्ष की र

एक जमाना था जब हमारे देश में डाक्टर और डाक्टरी सेवा को बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, लेकिन आज ऐसा लगता है कि इस पेशे के प्रति न तो सरकार ही रुचि ले रही है और न ही हमारी जनता. इस का एक कारण तो यह है कि अधिकांश जनता इतनी गरीब है कि उसे आज की इस कमरतोड़ महंगाई में पेट भर रोटी जुटाने के सिवा दूसरी बातों के लिए समय ही नहीं मिलता कि वह उस की गहराई में जाए. दूसरे, हमारे संविधान में स्वास्थ्य सेवा को राज्य का विषय माना गया है और देश भर में उपयुक्त चिकित्सा का प्रबंध करना राज्य सरकारों का कर्त्तव्य है. फलतः देश भर के सरकारी अस्पतालों में इन की कार्यप्रणाली, चिकित्सासेवा तथा शिक्षणप्रशिक्षण के संबंध में एकरूपता दिखाई नहीं देती.

वस्तुतः आज न तो इन अस्पतालों में काम करने वाले डाक्टर खुश हैं और न ही इलाज कराने के लिए आने वाले लाखों गरीब व असहाय रोगी. इस का स्पष्ट उदाहरण दिल्ली के सात बड़े अस्पताल हैं जो कि पिछले तीन माह से कनिष्ठ डाक्टरों की हड़ताल से उत्पन्न स्थिति से लड़खड़ाती चिकित्सा-सेवा के कारण चरमरा रहे हैं. इतनी लंबी अवधि हो जाने के बाद भी इन डाक्टरों की हड़ताल समाप्त कराने के लिए न तो सरकार ही उत्सुक दिखाई देती है और न ही हमारी जनता. वस्तुतः हमारी सरकार तभी अपनी कुंभकर्णी निद्रा से जागती है, जब उसे भारी खतरे के धमाके सुनाई पड़ते हैं. ये खतरे या तो हिंसात्मक होते हैं या भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाने वाले. इन से संबंधित क्षेत्रों में पूर्णतया कामकाज ठप्प हो जाते हैं.

अब तक दिल्ली के कनिष्ठ डाक्टरों की हड़ताल से सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी, क्योंकि ये डाक्टर न तो अपनेआप को हिंसात्मक दंगों के लिए तैयार कर पाए हैं और न ही इन की हड़ताल से सरकार की आर्थिक साख को धक्का पहुंचा है. सरकार को तो डाक्टरों की हड़ताल से उन को वेतन आदि न देने से आर्थिक लाभ ही हुए हैं, फिर सरकार को हड़ताल खुलने, न खुलने से चिंता क्यों? हड़ताली डाक्टरों की अनुपस्थिति में वरिष्ठ डाक्टर तो काम कर ही रहे हैं, भले ही हजारों गरीब रोगियों को अस्पतालों की चौखट से लौटना पड़े.

आखिर वरिष्ठ डाक्टर भी, जो हड़ताली डाक्टरों का एक चौथाई भाग हैं, कहां तक इन अस्पतालों में काम कर सकते थे? अब वे भी लगातार काम करतेकरते शारीरिक और मानसिक रूप से थक गए हैं और उन्होंने बाह्य रोगी विभाग (ओ. पी. डी.) में काम न करने का फैसला कर लिया है. वरिष्ठ डाक्टरों के इस फैसले से सरकार परेशानी में पड़ गई है और उस

कनिष्ठ ड
पूर्तिपूर्ण
की है.

प्रश्न
गाल के
समस्याएं
कनिष्ठ ड
गों के विर
अपनाना प

जैसा
विधान
सरकारों
चिकित्सा
यित्व है
सरकारें
द्रीय सरक
ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • ललितमोहन बंसल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राह पर क्यों?

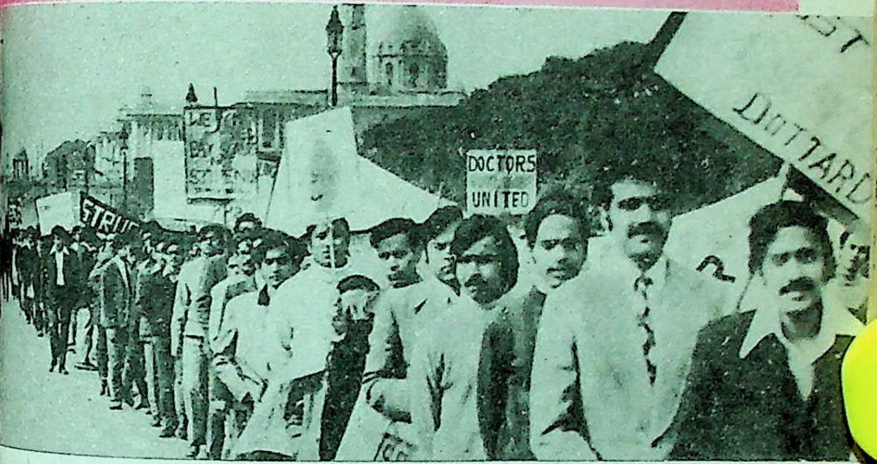

दिल्ली के कनिष्ठ डाक्टर : अभी हम संगठित हैं!

कनिष्ठ डाक्टरों की मांगों पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करने के लिए पेशकश की है.

प्रश्न उठता है कि आखिर इस हड़ताल के पीछे ऐसी कौन सी बुनियादी समस्याएं रही हैं जिन पर देश भर के कनिष्ठ डाक्टरों को अपने सम्मानपूर्ण पेशे के विरुद्ध जा कर हड़ताल का रुख अपनाना पड़ा है.

जैसा कि ऊपर कहा गया है, हमारे संविधान में स्वास्थ्य सेवा का कार्य राज्य सरकारों के अधीन है और उपयुक्त चिकित्सा का प्रबंध करना उन का दायित्व है. .इसलिए राज्यों में राज्य सरकारें और केंद्रशासित प्रदेशों में केंद्रीय सरकार अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए जगहजगह पर मेडिकल कालिज तथा इन से संलग्न अस्पतालों की व्यवस्था करती हैं. इस के लिए सरकार को अन्य शिक्षणप्रशिक्षण संस्थाओं की तरह मेडिकल कालिज से एक मेडिकल ग्रेजुएट (एम. बी. बी. एस.) तैयार करने के लिए लगभग 80 हजार रुपए खर्च करने पड़ते हैं जो भवनों, फर्नीचर, प्रयोगशालाओं, उपकरणों, दवाओं और अध्यापक डाक्टरों के वेतनों के रूप में होते हैं.

एक इंजीनियर पर सरकार को 60-70 हजार रुपए खर्च करने पड़ते हैं.

दूसरी ओर एम. बी. बी. एस. के छात्र को मेडिकल कालिज में साढ़े चार वर्ष तथा अस्पताल में 'इंटर्न' प्रशिक्षणार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

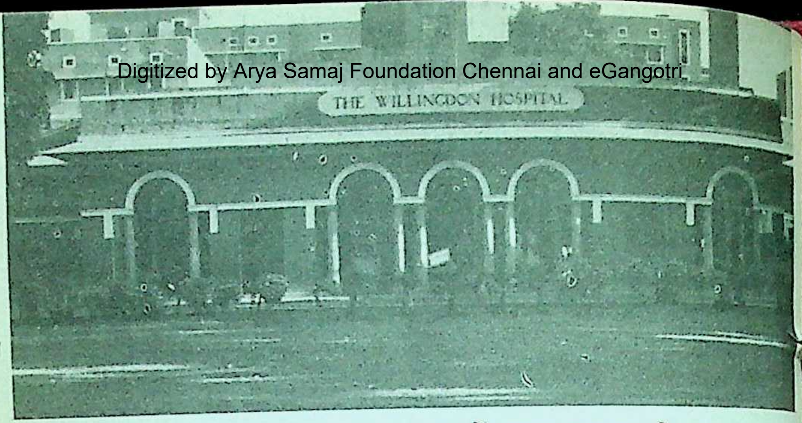

दिल्ली के एक अस्पताल का दृश्य : चारों तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा...

के रूप में एक वर्ष लगाना आवश्यक होता है. इस पर लगभग 15,000 रुपए व्यय होते हैं. इस में कालिज की फीस, होस्टल का किराया, खानेपीने तथा पुस्तकों आदि के खर्च सम्मिलित होते हैं.

मेडिकल कालिज से संलग्न अस्पताल में 'इंटर्नशिप' करने के पश्चात ही सरकार की अधिकृत संस्था 'इंडियन मेडिकल कौंसिल' उसे पूर्णरूपेण डाक्टर होने की मान्यता प्रदान करती है. इस के पश्चात ही ये डाक्टर निजी चिकित्सालय खोलने के अधिकारी होते हैं तथा सी. जी. एच. एस. की डिस्पेंसरियों, रेलवे और सैनिक अस्पतालों में डाक्टर के रूप में नियुक्त हो सकते हैं. जो डाक्टर एम. बी. बी. एस. की परीक्षा में अव्वल आते हैं तथा चिकित्सा के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता (एम. एस. अथवा एम. डी.) पाने की इच्छा रखते हैं, उन्हें सरकारी अस्पतालों में पूर्ण डाक्टर की तरह कनिष्ठ डाक्टरों—हाउस सर्जन, पोस्ट ग्रेजुएट और रजिस्ट्रार प्रशिक्षणार्थी—के रूप में 80 से 100 घंटे प्रति सप्ताह काम करना पड़ता है. ये डाक्टर सरकारी अस्पताल में काम अवश्य करते हैं लेकिन इन्हें सरकारी कर्मचारी नहीं कहा जाता और न ही इन्हें कोई वेतनमान, महंगाई भत्ता, 'नान प्रैक्टिसिंग' भत्ता, पेंशन आदि की सुविधाएं ही दी जाती हैं. इन्हें केवल भत्ते और मुफ्त छात्रावास की सुविधाएं दी जाती हैं.

हाउस सर्जन

एम. बी. बी. एस. में अच्छे अंक होने तथा 'इंटर्नशिप' के दौरान संतोषजनक काम होने पर ही किसी डाक्टर को इन सरकारी अस्पतालों में 'हाउस जाब' के लिए लिया जाता है. ये डाक्टर ओ. पी. डी. में रोगियों को देखते हैं तथा वार्ड में सप्ताह में दिनरात 80 से 100 घंटे ड्यूटी देते हैं. रात को रोगी की हालत खराब होने पर इन्हें ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर अपने से वरिष्ठ रजिस्ट्रार से परामर्श करना होता है.

पोस्ट ग्रेजुएट

हमारे देश के चिकित्साविज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन (एम. एस. अथवा एम. डी.) की डिग्री सर्वोपरि मानी जाती है. यह चिकित्साविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्टता पाने के लिए दी जाती है. पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए हाउस जाब का कार्य संतोषजनक पाया जाना आवश्यक होता है. डाक्टर को पढ़ाई के साथसाथ अस्पताल में ओ. पी. डी. के रोगियों को देखना, प्रायः वार्ड में दिनरात की ड्यूटी देना, नर्सों और अंडरग्रेजुएटों को पढ़ाना तथा अपने क्षेत्र में शोध कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि करना आवश्यक होता है. इन्हें भी लगभग 80-100 घंटे तक काम करना पड़ता है. पोस्ट ग्रेजुएशन तीन वर्षों का होता है. इस के लिए विभिन्न राज्यों में अलगअलग कार्यप्रणाली है.

रजिस्ट्रार

रजिस्ट्रार बनने के लिए प्राय: मास्टर आफ फिजिशियन अथवा मास्टर आफ सर्जरी की डिग्री लेनी पड़ती है. इस डिग्री के लिए उन्हें कम से कम 10-15 हजार रुपए अतिरिक्त खर्च करने पड़ते हैं जिन में अधिकांश रुपया शोध कार्य एवं पुस्तकों पर खर्च होता है. इन डाक्टरों को ओ. पी. डी. वार्ड और आपरेशन थिएटर

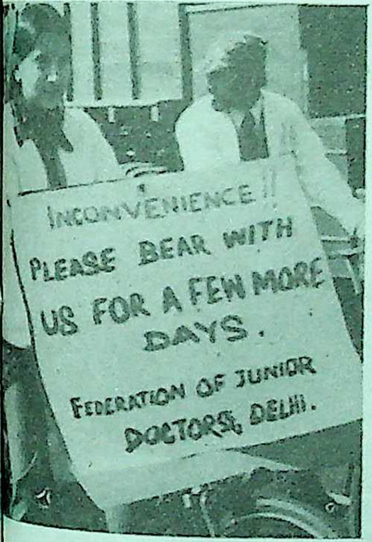

दिल्ली के जूनियर डाक्टरों का साइकलों पर जुलूस : एक लेडी डाक्टर संघर्ष के मोर्चे पर...

आदि के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है. ये डाक्टर तृतीय श्रेणी के अराजपत्रित कर्मचारी कहलाते हैं. इन्हें अस्पताल में तीन वर्षों के लिए नियुक्त किया जाता है.

इस संदर्भ में डाक्टरों का कहना है कि आजादी मिलने के पश्चात भी हमारे देश के सरकारी अस्पतालों की चिकित्सा प्रणाली में कोई अंतर नहीं आया है. उन्हें आज भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इन अस्पतालों में पूर्णरूपेण डाक्टर का काम करना पड़ता है जब कि सरकार उन्हें अंगरेजों की नीति के अनुसार 'सस्ता श्रम' प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रशिक्षणार्थी ही मानती है और उन्हें इंडियन एयरलाइंस के एक लोडर तथा जीवन बीमा निगम के एक चपरासी से भी कम पैसा देती है.

इस में कोई दो मत नहीं हैं कि अस्पतालों में इंटर्नशिप करने के पश्चात सरकार की अधिकृत संस्था उन्हें पूर्णरूपेण डाक्टर की मान्यता देती है और उन्हें निजी चिकित्सालय खोलने तथा अन्य सरकारी निकायों में पूर्णरूपेण डाक्टर के रूप में कार्य करने का अधिकार प्रदान करती है. लेकिन सरकार अपने ही अस्पतालों में इन डाक्टरों से पूर्णरूपेण डाक्टर के रूप में काम ले, किंतु प्रशिक्षणार्थी के रूप में भत्ते आदि दे कर उन का मुंह बंद करना चाहे तो यह असंगत और अव्यावहारिक जान पड़ता है. यही डाक्टरों की बुनियादी समस्या है जिस के लिए उन्हें समयसमय पर देश भर में आंदोलन करने के लिए मजबूर होना पड़ा है.

आजकल दिल्ली के सात बड़े सरकारी अस्पतालों—सफदरजंग, आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस, विलिंगडन, लेडी हार्डिंग, इर्विन तथा पंत अस्पताल—के 2400 कनिष्ठ डाक्टर 1 जनवरी, 1974 से हड़ताल पर हैं. ये डाक्टर अस्पताल के कुल डाक्टरों का तीन-चौथाई भाग हैं. अब स्थिति यह है कि जैसेजैसे हड़ताल की अवधि बढ़ती जा रही है, इन अस्पतालों के वरिष्ठ डाक्टरों के धैर्य का बांध टूटता जा रहा है और उन में भी असंतोष की ज्वाला धधकने लगी है. अब तक ये वरिष्ठ डाक्टर ही कनिष्ठ डाक्टरों के स्थान पर ओ. पी. डी. और केजुएलिटी में मोर्चा संभाले हुए थे. लेकिन हाल ही में इन के द्वारा ओ. पी. डी. का बहिष्कार करने के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डा. कर्णसिंह की कोठी के बाहर कनिष्ठ डाक्टरों का प्रदर्शन...

इन की हालत और भी खस्ता हो गई है.

इन अस्पतालों के ओ. पी. डी. में अब सन्नाटा छाया रहता है. नए रोगियों को वार्ड में प्रवेश न देने की वजह से वहां अधिकांश बिस्तर खाली पड़े दिखाई देते हैं. कुछेक वार्डों पर तो ताले लटका दिए हैं. विभिन्न अस्पतालों में घूमतेघूमते जब यह संवाददाता दिल्ली के सब से बड़े अस्पताल, इर्विन अस्पताल, के सर्जीकल वार्ड में पहुंचा और वहां एक रोगी से मिला तो उस ने बताया : ''यदि रात को किसी रोगी की हालत खराब हो जाती है तो अकसर नर्सें ही महत्त्वपूर्ण निर्णय ले लेती हैं या सुबह होने का इंतजार करती हैं. लेकिन जब स्थिति काबू से बाहर हो जाती है तो फिर वे घर पर सो रहे वरिष्ठ डाक्टरों को या तो फोन से सूचित करती हैं या उन्हें बुलवा भेजती हैं.'' उल्लेखनीय है कि ऐसी स्थिति में आम तौर पर रात की ड्यूटी पर तैनात हाउस सर्जन ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेता है और आवश्यकता पड़ने पर वह अपने से वरिष्ठ डाक्टर रजिस्ट्रार से परामर्श लेता है.

हड़ताल की इस अवधि के बीच कनिष्ठ डाक्टरों ने जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अपनेअपने अस्पतालों के बाहर तथा धर्मशालाओं में शामियाने आदि लगा कर समांतर ओ. पी. डी. चलाए हैं जिन में रोगियों को मुफ्त चिकित्सा परामर्श के साथसाथ उन्हें मुफ्त दवाएं भी दी गई हैं. इस के लिए बड़ी मात्रा में धन संग्रह करने के लिए उन्होंने समयसमय पर चेरिटी मनोरंजन कार्यक्रम आदि किए हैं तथा जनता में जा कर हजारों रुपए एकत्र किए हैं. दूसरी ओर सरकार ने डाक्टरों के आंदोलन को कुचलने के लिए रजिस्ट्रारों और हाउस सर्जनों को नौकरी से निकालने के आदेश जारी किए हैं तथा उन से मुफ्त छात्रावास की सुविधा वापस लेने के आदेश दिए हैं. (यह दूसरी बात है कि सरकार अपने आदेशों को अब तक कार्यान्वित नहीं कर पाई है!) इस के अतिरिक्त पोस्ट ग्रेजुएशन करने वाले डाक्टरों को जो वजीफे दिए जा चुके हैं, उन से उन की राशि वापस लेने के भी आदेश जारी किए गए हैं. इस तरह सरकार और हड़ताली डाक्टर, दोनों ही अपनेअपने कार्यकलापों से जनता की सहानुभूति बटोरने में लगे हैं.

31 मार्च, 1973 का ऐतिहासिक समझौता

यहां हड़ताली डाक्टरों और सरकार के बीच हुए 31 मार्च, 1973 के ऐतिहासिक समझौते का उल्लेख करना आवश्यक है. वैसे तो इन हड़ताली डाक्टरों के आंदोलन की कहानी 1964 से शुरू होती है लेकिन फरवरी, 1973 में इन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंदोलन ने एक गंभीर रूप धारण कर लिया था और उन्होंने अपनी मांगें मनवाने के लिए पहली बार संयुक्त रूप से तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री श्री खाडिलकर को एक ज्ञापन दिया था, जिस में उन्होंने 31 मार्च, 1973 की अर्द्धरात्रि से हड़ताल करने की चेतावनी भी दी थी.

सरकार ने समय रहते हड़ताल के खतरे को भांप लिया और उन्हें हड़ताल पर न जाने के लिए मना लिया. रातों-रात भारत सरकार के स्वास्थ्य सचिव श्री सी. एस. रामचंद्रन और हड़ताली डाक्टरों के एक प्रतिनिधिमंडल के बीच एक लिखित समझौता हो गया. इस समझौते से कुछ कनिष्ठ डाक्टरों को आघात पहुंचा लेकिन अधिकांश डाक्टरों में खुशी की लहर दौड़ गई, क्योंकि उन्हें उन की आशा के अनुकूल आश्वासन दिए गए थे. समझौते में मूलत: यह स्वीकार कर लिया गया था कि सरकारी अस्पतालों में इंटर्नशिप के बाद काम करने वाले कनिष्ठ डाक्टरों को हर दृष्टि से पूर्णरूपेण डाक्टरों के समान समझा जाएगा; उन्हें पूर्ण डाक्टरों को मिलने वाले क्रमिक वेतनमान दिए जाएंगे; उन के कार्य के घंटे नियत होंगे; उन्हें सुविधाजनक ड्यूटी दी जाएगी तथा पानीबिजली सहित मुफ्त छात्रावास की सुविधाएं दी जाएंगी.

इस के अतिरिक्त इस बात पर भी सहमति प्रकट की गई थी कि इन की कार्य प्रणाली में परिवर्तन किया जाएगा. इस कार्य के लिए दोनों पक्षों ने एक कमेटी गठित करने का निर्णय लिया था. कमेटी के सम्मुख समझौते की शर्तों को रखे जाने, 31 दिसंबर से पूर्व रिपोर्ट देने तथा सरकार द्वारा कमेटी की सिफारिशों को 1 जनवरी, 1974 से लागू करने का फैसला किया गया था.

सरकार ने समझौते की शर्तों में यह भी जोड़ दिया था कि यदि कमेटी ने वित्तीय साधनों को देखते हुए कनिष्ठ डाक्टरों की वर्तमान कार्यप्रणाली तथा भत्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया तो वह उसे उपयुक्त क्रमिक भत्ते आदि देने को कहेगी.

जैसा कि सरकार की ढुलमुल नीति और नौकरशाही की बदौलत सभी कार्यों में कोई न कोई अड़चन आ जाती है, इस मामले में भी वही हुआ. पहले तो इस कमेटी का गठन ही समझौते के तीन मास पश्चात स्वास्थ्य मंत्रालय में सहायक सचिव श्री करतारसिंह की अध्यक्षता में हुआ, फिर कमेटी की पहली बैठक रिपोर्ट देने की अवधि समाप्त होने के 9 दिन बाद हुई. अतएव तब तक हड़ताल शुरू हो चुकी थी.

डाक्टरों की हड़ताल के कारण खाली आपरेशन थिएटर

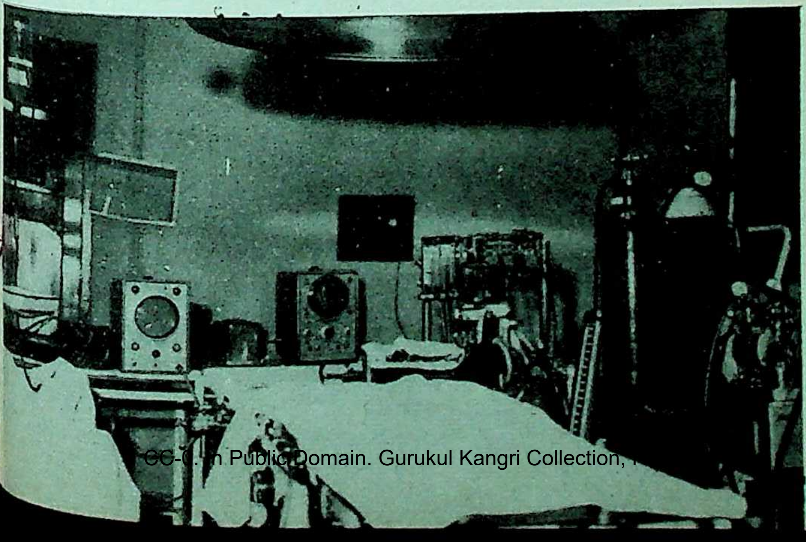

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

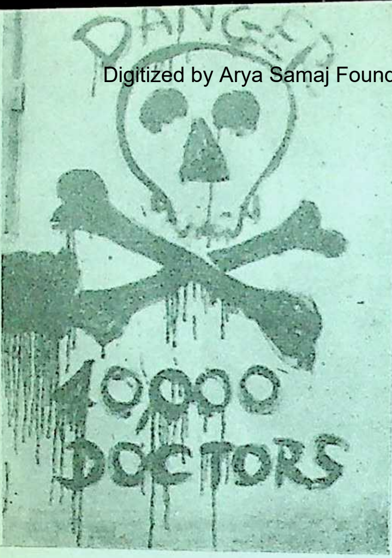

शिक्षित डाक्टरों ने कालिख पोत कर दीवारों की कैसी दुर्दशा बनाई है!

करतारसिंह कमेटी ने अपनी सिफारिशों में इंटर्न को 275 रुपए, हाउस सर्जन को 450 रुपए, पोस्ट ग्रेजुएट को पहले साल 500 रुपए और दूसरे साल 550 रुपए मासिक देने का सुझाव दिया था. रजिस्ट्रार को तृतीय वेतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर क्रमिक वेतनमान 650-30-710 तथा अन्य भत्तों को मिला कर कुल 847 रुपए देने का प्रस्ताव था. इस में 'नान प्रैक्टिसिंग' भत्ता सम्मिलित नहीं किया गया था. करतारसिंह कमेटी की सिफारिशों में कनिष्ठ डाक्टरों की कार्यप्रणाली में भी परिवर्तन कर दिया गया. अब इन डाक्टरों की सेवाओं को 'छः वर्षीय रेजिडेंसी स्कीम' के अधीन बदल दिया जाएगा. इस में तीन वर्षीय जूनियर रेजिडेंसी स्कीम और तीन वर्षीय सीनियर रेजिडेंसी स्कीम लागू होगी. जूनियर रेजिडेंसी स्कीम में हाउस सर्जन और पोस्ट ग्रेजुएशन करने वाले डाक्टर तथा सीनियर रेजिडेंसी स्कीम में रजिस्ट्रार कार्य करेंगे.

इन सिफारिशों पर सरकार ने अपनी मोहर लगा दी तथा इंटर्न, हाउस सर्जन और पोस्ट ग्रेजुएट के भत्तों में क्रमशः 25, 50 रुपए की बढ़ोतरी कर दी. स्वास्थ्य मंत्री श्री कर्णसिंह ने करतारसिंह कमेटी की सिफारिशों को समझौते की भावना के अनुरूप बताते हुए हड़ताली डाक्टरों से काम पर लौटने की बारबार अपील की लेकिन हड़ताली डाक्टर तो कमेटी की सिफारिशों को सुन कर और अधिक भड़क उठे.

सिफारिशों पर कनिष्ठ डाक्टर क्षुब्ध

करतारसिंह कमेटी की सिफारिशों ने कनिष्ठ डाक्टरों को और भी क्षुब्ध कर दिया. जब यह संवाददाता दिल्ली के विभिन्न अस्पतालों के हड़ताली डाक्टरों से मिलने गया तो उन्होंने बताया कि सरकार ने 31 मार्च, 1973 के लिखित समझौते की खिल्ली उड़ाते हुए उन के साथ विश्वासघात किया है.

इन सिफारिशों में उन्हें पूर्णरूपेण डाक्टर का दर्जा देने से इनकार किया गया है तथा उन्हें पूर्णरूपेण डाक्टरों को मिलने वाले क्रमिक वेतनमान, संबंधित भत्तों और 'नान प्रैक्टिसिंग' भत्ते से वंचित कर दिया गया है.

इर्विन अस्पताल के डा. सुदर्शन वैद ने मार्च समझौते की चर्चा करते हुए बताया, "स्वास्थ्य सचिव श्री सी. एस. रामचंद्रन ने समझौते के समय सरकार की ओर से सरकारी अस्पतालों में काम करने वाले कनिष्ठ डाक्टरों को पूर्णरूपेण डाक्टर का दर्जा दिए जाने तथा इस से संबंधित क्रमिक वेतनमान, महंगाई भत्ता और 'नान प्रैक्टिसिंग' भत्ता आदि देने का लिखित वादा किया था. लेकिन इस समय सरकार समझौते की भावना से खिलवाड़ कर रही है. यदि सरकार को उन्हें प्रशिक्षणार्थी के रूप में भत्ते ही देने थे तो समझौते में पूर्णरूपेण डाक्टर का दर्जा दिए जाने तथा कमेटी के गठित किए जाने का ढोंग रचने की क्या जरूरत थी? फिर ये भत्ते तो सरकार हमें समझौते से पूर्व ही देने को सहमत हो गई थी."

सफदरजंग अस्पताल में रजिस्ट्रार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और वहां के कनिष्ठ डाक्टर संघ के प्रवक्ता डा. महाराजकुमार भान ने कहा, “सरकार श्रमिक वेतनमान की बजाए क्रमिक भत्ते दे कर हमें और जनता को भ्रम में डालना चाहती है. वस्तुस्थिति यह है कि सरकार ने अस्पतालों में काम करने वाले इन कनिष्ठ डाक्टरों की पूर्वस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं किया है बल्कि प्रशिक्षणार्थी के रूप में ही भत्तों में वृद्धि की है.”

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार द्वारा समझौते के संबंध में जनता में भ्रांतियां फैलाने पर आक्रोश प्रकट करते हुए डा. भान ने कहा, “वास्तव में सरकार सम्मानपूर्ण पेशे के नाम पर हमारा शोषण करती आई है लेकिन अब हम सतर्क हैं और सरकार की किसी भी चेतावनी का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं.”

इसी अस्पताल की डा. तृप्ता कोहली ने कहा, “सरकार हमारी कठिनाइयों को समझती है और समयसमय पर हमारी अमूल्य सेवाओं की सराहना भी करती है. लेकिन फिर भी हमारी मांगों पर सद्‌भावनापूर्ण विचार नहीं करना चाहती. इस का मुख्य कारण यह है कि वह अपनी दोषपूर्ण नीतियों के कारण कनिष्ठ डाक्टरों को, जिन्हें वह प्रशिक्षणार्थी कहती है, अपने ही अस्पतालों में रख कर उन से अधिक से अधिक काम लेना और उन्हें कम से कम पैसा देना चाहती है.”

अस्पताल में सस्ता श्रम जुटाने की सरकारी प्रवृत्ति की बात आई तो आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में पोस्ट ग्रेजुएशन कर रहे डा. ज. स. जुनेजा ने, जो कि वहां के कनिष्ठ डाक्टर संघ के प्रवक्ता भी हैं, कहा, “यह (आंदोलन) सरकार की दोषपूर्ण नीतियों का ही परिणाम है. जब सरकार अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए सम्मानपूर्ण पेशे में व्यभिचार फैलाती है तो असीम दुख होता है. जब सरकार यह समझती है कि देश में डाक्टरों में बेकारी बढ़ती जा रही है, वे काम की तलाश में विदेश भागते जा रहे हैं तथा अस्पतालों में उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में रोगी चिल्लाते रहते हैं तो वह हर साल नए मेडिकल कालिज क्यों खोलती जा रही है? इस से स्पष्ट है कि वह जनता को यह जताना चाहती है कि उस ने चिकित्सा कार्यों में सुधार के लिए डाक्टरों की संख्या बढ़ा कर देश में अस्पतालों का जाल बिछा दिया है.”

इस समय देश में 30,000 डाक्टर बेकार हैं और 23,000 डाक्टर नौकरी की तलाश में विदेश जा चुके हैं. सरकारी सूत्रों के अनुसार हर वर्ष 1300 डाक्टर

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव का पुतला जला कर डाक्टरों ने अपना आक्रोश प्रकट किया.

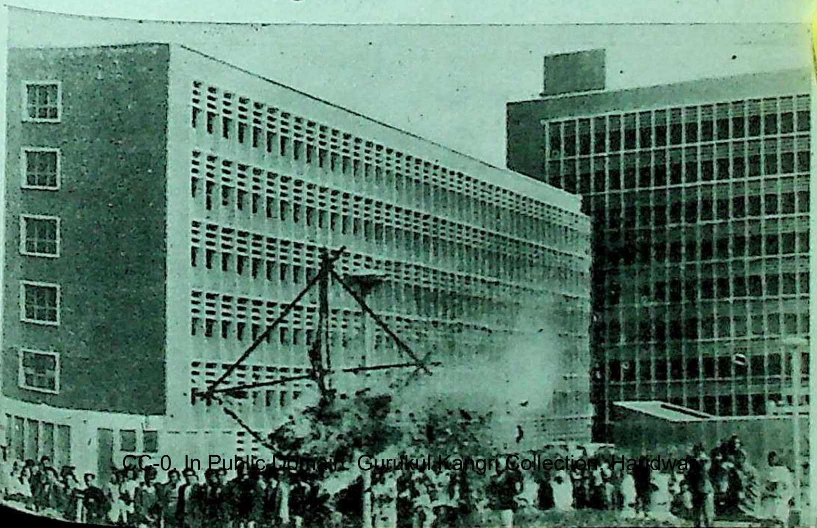

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विदेश चले जाते हैं जो लौट कर नहीं आते. इस तरह 80,000 रुपए प्रति डाक्टर के हिसाब से सरकार की 200 करोड़ रुपए की धनराशि कुएं में पड़ जाती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा और अनुभव के बावजूद पैसे कम

इर्विन अस्पताल में रजिस्ट्रार डा. विजय अग्रवाल ने बताया कि सरकारी अस्पताल में काम करने वाला रजिस्ट्रार सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ सर्विसेज, रेलवे, सेना तथा सरकारी निकायों के अस्पतालों में काम करने वाले डाक्टर से शिक्षा और अनुभव में अधिक योग्य होता है. रजिस्ट्रार प्रायः एम. एस. या एम. डी. होता है लेकिन अन्य अस्पतालों में काम करने वाले डाक्टर केवल एम. बी. बी. एस. होते हैं. रजिस्ट्रार को ओ. पी. डी. वार्ड में चिकित्सा कार्यों के साथसाथ अंडरग्रेजुएटों और नर्सों को पढ़ाना भी पड़ता है. लेकिन फिर भी उसे इन डाक्टरों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है. उसे वरीयता, पदोन्नति और 'नान प्रेक्टिसिंग' भत्त से वंचित रखा जाता है. इतना ही नहीं, उसे प्रशिक्षणार्थी कहा जाता है तथा तृतीय श्रेणी के अराजपत्रित अस्थायी सरकारी कर्मचारी के नाम से संबोधित किया जाता है.

इर्विन अस्पताल में ही पोस्टग्रेजुएशन कर रहे डा. भारतभूषण जोशी ने अपने साथ काम करने वाले एक डिमांस्ट्रेटर की चर्चा करते हुए कहा कि डिमांस्ट्रेटर को द्वितीय श्रेणी के अराजपत्रित अधिकारी का वेतनमान दिया जाता है जब कि वह एक पोस्टग्रेजुएट डाक्टर से शिक्षा और अनुभव में कहीं कम होता है. डिमांस्ट्रेटर का काम अंडरग्रेजुएटों को पढ़ाना होता है जब कि पोस्टग्रेजुएशन करने वाले डाक्टर को अंडरग्रेजुएटों और नर्सों दोनों को पढ़ाने के साथसाथ शोध कार्य करना होता है. इस के अतिरिक्त उसे ओ. पी. डी. वार्ड में उसे दिनरात प्रति सप्ताह 80 से 100 घंटे ड्यूटी देनी पड़ती है. यह सरकार की गलत नीतियों का ही परिणाम है.

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा

हमारे देश में अधिकांश जनता गांवों में रहती है लेकिन आजादी मिलने के पश्चात भी हमारे गांव उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में दम तोड़ रहे हैं. आज भी हजारों ग्रामीण चिकित्सा के लिए शहरों के बड़े अस्पतालों की ओर आते दिखाई देते हैं. इस संबंध में सरकार का कहना है कि वह तो डाक्टरों को गांवों के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में भेजना चाहती है लेकिन वे ही शहरों की तड़कभड़क और आराम की जिंदगी से दूर गांवों में नहीं जाना चाहते. इस के विपरीत डाक्टरों का कहना है कि देश भर के 5134 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में से केवल 179 ऐसे केंद्र हैं जहां डाक्टर नहीं हैं, अर्थात कुल मिला कर वहां 2,000 डाक्टर कम हैं. इस समय देश भर में 40,000 कनिष्ठ डाक्टर कार्य कर रहे हैं.

लेडी हार्डिंग में रजिस्ट्रार डाक्टर वीना जोशी ने बताया, "ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के लिए इतना कम पैसा खर्च किया जाता है कि उस से आधुनिक मशीनों, औजारों और दवाओं का प्रबंध तो दूर, चकित्सालयों की उपयुक्त व्यवस्था भी नहीं होती. इसलिए गांवों में डाक्टरों के रहने मात्र से ही चिकित्सा सेवा में कोई योगदान नहीं मिलेगा. आवश्यकता इस बात की है कि इन केंद्रों के लिए उपयुक्त धनराशि जुटाई जाए तथा वहां दवाओं के साथसाथ आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए जाएं."

हड़ताली डाक्टरों के विचार जान लेने के पश्चात यह संवाददाता स्वास्थ्य मंत्री डा. कर्णसिंह और स्वास्थ्य सचिव श्री सी. एस. रामचंद्रन से उन के विचार जानने के लिए गया. पहले तो उन के निजी सहायकों ने उन की व्यस्तता की चर्चा करते हुए अनुरोध ठुकरा दिया लेकिन दूसरे दिन पुनः इस संवाददाता के आग्रह पर उन्होंने शीघ्र ही बातचीत करवाने का वचन दे दिया. लेकिन प्रेस में यह सामग्री जाने तक मंत्रालय की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समांतर ओ. पी. डी. : हड़ताली डाक्टरों ने कैंपों में रोगियों की देखभाल कर के अपना फर्ज निभाया. . .

से कोई आशाजनक उत्तर नहीं मिला.

इस बीच स्वास्थ्य मंत्रालय में महानिदेशक डा. श्रीवास्तव को सरकारी पक्ष पर विचार देने के लिए मना लिया गया लेकिन उन्होंने भी कुछ मिनट बातचीत करने के बाद अपने एक सहयोगी उपमहानिदेशक डा. चावला से वार्तालाप करने को कहा. डा. चावला करतारसिंह कमेटी के सदस्य भी थे.

सरकारी पक्ष

डा. चावला ने कमेटी की सिफारिशों पर टिप्पणी करते हुए कहा, "कमेटी के सदस्यों ने एक मत से 31 मार्च के समझौते के शब्दों और भावना का समादर किया है. इस में कोई दो मत नहीं हैं कि कनिष्ठ डाक्टर अस्पतालों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं लेकिन उन्हें पूर्णरूपेण डाक्टर के वेतनमान नहीं दिए जा सकते. इन अस्पतालों में पूर्णरूपेण डाक्टर के रूप में मिलने वाली सुविधाएं तो केवल उन्हें ही दी जा सकती हैं जो संघीय लोक सेवा आयोग की परीक्षा में चयन होने के पश्चात आते हैं. ये डाक्टर वरिष्ठ डाक्टर (लेक्चरार) कहलाते हैं."

उन्होंने कहा, "यदि कनिष्ठ डाक्टरों को पूर्णरूपेण डाक्टर अर्थात स्थायी सरकारी नौकर मान लिया जाए तो इंटर्नशिप समाप्त कर के आने वाले नए डाक्टरों को इन अस्पतालों में नहीं रखा जा सकेगा. दूसरा यह कि इंटर्नशिप समाप्त कर के लगभग सभी डाक्टर अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक सीखने और अनुभव पाने के लिए ही इन अस्पतालों में काम करने आते हैं. इसी लिए उन्हें प्रशिक्षणार्थी समझा जाता है और भत्ते दिए जाते हैं."

उन्होंने कहा, "मार्च समझौते में कनिष्ठ डाक्टरों को पूर्णरूपेण डाक्टर मानने और संबंधित क्रमिक वेतनमान देने की बात कही गई है लेकिन इस के साथसाथ इस बात पर भी सहमति प्रकट की गई है कि वित्तीय साधनों को देखते हुए सरकार कमेटी को वर्तमान भत्ते और वजीफों के बदले क्रमिक कुल भत्ते आदि देने का निर्देश देगी. इसलिए वित्तीय साधनों को देखते हुए सरकार ने मार्च समझौते का किसी तरह से उल्लंघन नहीं किया है."

सी. जी. एच. एस., रेलवे और सेना के चिकित्सालयों में काम करने वाले डाक्टरों और सरकारी अस्पतालों में कनिष्ठ डाक्टरों को मिलने वाली अलग-अलग सुविधाओं के बारे में चर्चा करते हुए डा. चावला ने कहा, "दोनों में तुलना करना अवांछनीय है क्योंकि इन अस्पतालों में छः वर्षीय रेजिडेंट डाक्टर का काम करने के पश्चात एक रजिस्ट्रार सीधे संघीय लोक सेवा आयोग द्वारा चयन के आधार पर वरिष्ठ डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(लेक्चरार) बन सकता है तथा उस के ग्रेड (1050-1600) में जा कर अधिक रुपया अर्जित कर सकता है. यह अकसर चिकित्सालयों में काम करने वाले डाक्टरों को नहीं मिल पाता.''

उपमहानिदेशक जब अपनी बात खत्म कर चुके तो इस संवाददाता ने उत्तर प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में काम करने वाले कनिष्ठ डाक्टरों को क्रमिक वेतनमान, महंगाई भत्ता, 'नान-प्रैक्टिसिंग' भत्ता आदि दिए जाने की चर्चा की तो वह सोच में पड़ गए. फिर एकाएक बोलें, "हमारे संविधान में स्वास्थ्य सेवा राज्य सरकार का विषय है, इसलिए उत्तर प्रदेश सरकार का इस विषय में क्या दृष्टिकोण रहा होगा यह कहना कठिन है. फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि उत्तर प्रदेश के कनिष्ठ डाक्टरों को छोड़ कर इन्हें देश भर में सब से अधिक भत्ते दिए जा रहे हैं.''

"क्या सभी या अधिकांश रजिस्ट्रार वरिष्ठ अध्यापकों को मिलने वाले वेतनमान और गौरव को अर्जित कर पाते हैं? यदि नहीं तो क्या उन्हें लगातार सरकारी नौकरी न मिल पाने और उस में व्यवधान आने की अवस्था में, पेंशन आदि की सुविधा से वंचित नहीं रहना पड़ता?''

"यह संघीय लोक सेवा आयोग के चयन पर निर्भर करता है. लेकिन यह कहना कठिन है कि सभी रजिस्ट्रारों को यह नौकरी मिल जाती है. फिर करतारसिंह कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार पेंशन की सुविधा तो उन्हें ही दी जा सकती है जिन की सरकारी सेवाएं बिना किसी व्यवधान के जारी रहें.''

डा. चावला ने सरकारी पक्ष पर विचार प्रकट करते हुए यहीं पर वार्तालाप समाप्त करने की इच्छा प्रकट की.

भविष्य अंधकारमय

कनिष्ठ डाक्टरों और सरकारी पक्ष पर विचार करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि न तो सभी इंटर्नस को हाउस जाब मिल पाता है और न ही सभी हाउस सर्जनों को पोस्टग्रेजुएशन में प्रवेश मिल पाता है. इस के दो मुख्य कारण हैं. पहला यह कि पोस्टग्रेजुएशन में सीटें कम होती हैं और दूसरा यह कि सुविधा उन्हीं को प्रदान की जाती है जिन का हाउस जाब में कार्य संतोषजनक हो. हाउस जाब में कार्य संतोषजनक होने का निर्णय वरिष्ठ अध्यापकों के कथन पर अस्पताल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट लेते हैं. अतएव 50 प्रति शत डाक्टरों की तो यहीं छंटनी हो जाती है.

इस के पश्चात पोस्टग्रेजुएशन करने वाले सभी डाक्टर भी रजिस्ट्रार नहीं बन पाते क्योंकि अस्पताल में रजिस्ट्रारों के लिए भी कम स्थान होते हैं. रजिस्ट्रार बन जाने के बाद भी जब ये रेजिडेंसी स्कीम के अंतर्गत अस्पताल में छः वर्ष पूरे कर लेते हैं, तब भी वरिष्ठ अध्यापक के वेतनमान और स्थायी सरकारी नौकरी से वंचित रहते हैं. तब न केवल इन्हें बल्कि देश की चिकित्सा सेवा को आघात पहुंचता है. अनुमान है कि वरिष्ठ डाक्टर बनने का गौरव केवल एक प्रति शत रजिस्ट्रारों को ही मिलता है.

इतना ही नहीं, वरिष्ठ डाक्टरों के चयन और नियुक्ति में भी सरकार की नौकरशाही की बू आती है. इस संबंध में जब यह संवाददाता दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में काम कर रहे वरिष्ठ डाक्टरों से मिला तो मालूम हुआ कि अकसर इन पदों पर अस्थायी नियुक्तियां कर ली जाती हैं जिन्हें स्वास्थ्य मंत्रालय का एक निश्चित विभाग करता है. इस समय दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में 95 प्रति शत वरिष्ठ डाक्टर, लेक्चरार व सहायक प्रोफेसर, अस्थायी सरकारी कर्मचारी के रूप में काम कर रहे हैं और इन्हें स्थायी सरकारी नौकरों को मिलने वाली सुविधाओं से वंचित रखा जा रहा है.

यही कारण है कि अधिकांश उच्च शिक्षा प्राप्त डाक्टर, जिन के पास निजी चिकित्सालय खोलने के लिए पैसे नहीं होते और जिन्हें उपयुक्त सरकारी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

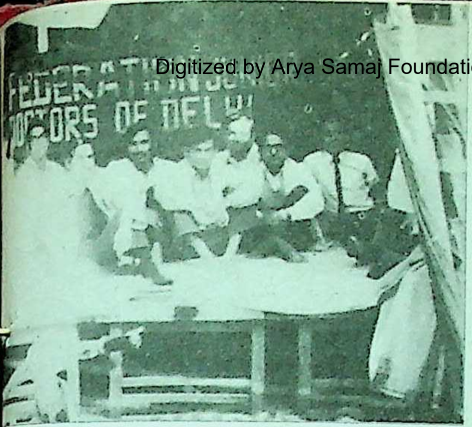

लंबी प्रतीक्षा : डा. कर्णसिंह के निवास स्थान के बाहर धरने पर बैठे डाक्टर...

नौकरी नहीं मिल पाती, वे नौकरी की तलाश में विदेश चले जाते हैं.

ये ही कुछ ऐसी बुनियादी समस्याएं हैं जिन्हें दृष्टि में रखते हुए कनिष्ठ डाक्टर अपने वर्तमान और भविष्य को अंधकारमय समझते हैं और हड़ताल का रुख अपनाए हुए हैं. इन की सहानुभूति में दिल्ली के मेडिकल कालिजों के छात्रों ने डेढ़ मास तक हड़ताल कर अपना रोष प्रकट किया है. दिल्ली के कनिष्ठ डाक्टरों की हड़ताल से उत्पन्न स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए इन के अखिल भारतीय संघ ने देश भर के सरकारी अस्पतालों में काम करने वाले कनिष्ठ डाक्टरों के पद, वेतन और वरीयता संबंधी मसलों पर एकरूपता लाने हेतु, राज्य सरकारों का ध्यान आकर्षित किया है.

अखिल भारतीय कनिष्ठ डाक्टर संघ के आह्वान पर देश भर के 25,000 डाक्टरों ने अनिश्चित काल के लिए हड़ताल की. राज्य सरकारों ने अपने-अपने राज्यों में कनिष्ठ डाक्टरों की मांगें या तो तुरंत मान ली हैं या उन्हें आश्वासन दे दिए हैं. लेकिन दिल्ली में कनिष्ठ डाक्टरों की हड़ताल समाप्त नहीं हो सकी है क्योंकि दिल्ली के अस्पताल केंद्रशासित प्रदेश में होने के नाते सीधे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन हैं और यह मंत्रालय दिल्ली के हड़ताली डाक्टरों को किसी न किसी तरह का दंड देने के पक्ष में है.

14 मार्च समझौता वार्ता भंग

हड़ताल के दौरान दिल्ली कनिष्ठ डाक्टर संघ और स्वास्थ्य मंत्री डा. कर्णसिंह के बीच दो बार कईकई घंटों तक समझौता वार्ता हो कर भंग हो गई. इस वार्ता में कनिष्ठ डाक्टरों के रुख में भारी परिवर्तन देखने को मिले हैं. उन्होंने हड़ताल की निरंतर बढ़ती अवधि तथा गरीब और असहाय रोगियों में बढ़ते असंतोष को दृष्टि में रखते हुए पूर्णरूपेण डाक्टर का दर्जा दिए जाने की मूल मांगों का भी परित्याग कर दिया है. इस के अतिरिक्त उन्होंने पूर्णरूपेण डाक्टरों को मिलने वाले क्रमिक वेतनमान से कम क्रमिक वेतनमान पर काम करना स्वीकार कर लिया है. इस समझौता वार्ता के नौ सूत्री प्रस्ताव में एक को छोड़ कर शेष सभी धाराओं पर इन डाक्टरों ने अपनी सहमति प्रकट की है. इन डाक्टरों ने जिस बात पर असमति प्रकट की है, वह उन्हें दंड देने के संबंध में है.

समझौता वार्ता भंग होने का मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि स्वास्थ्य मंत्री डा. कर्णसिंह चाहते हैं कि हड़ताली डाक्टरों को कुछ न कुछ दंड दिया जाना चाहिए ताकि वे भविष्य में आंदोलन का रास्ता न अपना सकें. हड़ताली डाक्टरों को दंड देने की धारा नं. 7 में उल्लेख किया गया है कि उन्हें 'काम नहीं तो वेतन नहीं' के आधार पर माना जाएगा, रजिस्ट्रारों के तीन वर्षीय सेवा काल में 'सेवा में व्यवधान' अंकित किया जाएगा तथा उन्हें हड़ताल की अवधि का वेतन नहीं दिया जाएगा. इस से इन डाक्टरों को भय है कि अस्पताल की सेवा के बाद उन्हें सरकारी नौकरी पाने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा.

अन्य कनिष्ठ डाक्टरों—जूनियर रेजिडेंट के संबंध में कहा गया है कि उन्हें हड़ताल की अवधि का कार्य आने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिनों में करना पड़ेगा तथा उन्हें उस अवधि का भी वेतन नहीं दिया जाएगा. इस से उन्हें लगभग तीन मास की हड़ताल की अवधि तथा तीन मास और, कुल मिला कर छः मास के वेतन से वंचित रहना पड़ेगा. इस के अतिरिक्त उन की पोस्ट-ग्रेजुएशन की डिग्री पर 'सेवा में व्यवधान' लिखे जाने का भी प्रस्ताव है.

हड़ताली डाक्टरों का कथन है कि जब तक समझौते की दंड संबंधी सातवीं धारा को संशोधित नहीं किया जाएगा, उन के लिए काम पर लौटना असंभव है.

दोनों पक्षों ने जिन धाराओं पर सहमति प्रकट की है, उन के अनुसार जूनियर रेजिडेंट डाक्टरों को 500-20-540 रुपए का वेतनमान, महंगाई भत्ता तथा नगर भत्ता मिलेगा. सीनियर रेजिडेंट डाक्टरों-रजिस्ट्रारों को 700 रुपए मूल वेतन तथा अन्य भत्ते देने का प्रस्ताव है. इस के अतिरिक्त दोनों पक्षों ने यह भी स्वीकार किया है कि कनिष्ठ डाक्टरों की सभी श्रेणियों को 150 रुपए का 'नान प्रैक्टिसिंग' भत्ता देने का प्रश्न मंत्रीमंडल के समक्ष रखा जाएगा.

दोनों पक्षों ने इस बात पर भी सहमति प्रकट की है कि जो डाक्टर छः वर्षीय रेजिडेंसी स्कीम के अंतर्गत अपना सेवा काल संतोषजनक रूप से समाप्त करते हैं, उन्हें सरकार संघीय लोक सेवा आयोग से दो अतिरिक्त तरक्कियां देने की सिफारिश करेगी. ... कमेटी की एक अन्य सिफारिश में, जिस पर कनिष्ठ डाक्टर अधिक क्षुब्ध थे, सरकार ने संशोधन करना स्वीकार कर लिया है.

हड़ताल समाप्त

दिल्ली कनिष्ठ डाक्टर संघ और स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच हुए एक नवीनतम समझौते के अनुसार दिल्ली के 2400 डाक्टरों ने 6 अप्रैल को अपनी 95 दिन पुरानी हड़ताल समाप्त कर दी.

अब हाउस सर्जन को 500 रुपए, पोस्ट ग्रेजुएट को पहले वर्ष 550 रुपए, दूसरे वर्ष 600 रुपए मिलेंगे. इस के अतिरिक्त इन्हें 3 प्रति शत महंगाई भत्ता तथा 6 प्रति शत नगर मुआवजा भत्ता भी मिलेगा. इंटर्न्स को 350 रुपए मासिक भत्ता दिया जाएगा. उन की सेवाओं में व्यवधान को भी अंकित नहीं किया जाएगा.

29 मार्च समझौता वार्ता

14 मार्च को हुई समझौता वार्ता हड़ताली डाक्टरों को दंड देने संबंधी धारा को ले कर भंग हो गई. इस से दिल्ली की जनता और वरिष्ठ डाक्टरों दोनों को ही गहरा आघात पहुंचा. वरिष्ठ डाक्टरों ने रातोंरात ओ. पी. डी. का बहिष्कार करने की योजना बना ली. सफदरजंग और आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस के वरिष्ठ अध्यापकों ने तो ओ. पी. डी. का बहिष्कार करना भी शुरू कर दिया. इस से स्वास्थ्य मंत्रालय में कुछ खलबली मच गई और मंत्रालय ने हड़ताली डाक्टरों से काम पर लौटने की अपील करते हुए दंड संबंधी धारा में तुरंत संशोधन करने की पेशकश की. इस पेशकश को हड़ताली डाक्टरों ने तुरंत सहर्ष स्वीकार कर लिया. लेकिन तभी सरकार ने 14 मार्च समझौते की अन्य धाराओं में भी परिवर्तन करने की इच्छा प्रकट की. इस में पूर्व प्रस्तावित वेतनक्रम में कमी करने का प्रस्ताव था. इस के अतिरिक्त अन्य धाराओं में क्याक्या परिवर्तन किए जाएंगे, इसे सरकार ने गुप्त रखा और हड़ताली डाक्टरों को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने सरकार की इस नई पेशकश को 48 घंटों के अंदर नहीं माना, और काम पर नहीं लौटे तो उन्हें गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ेगा.

सरकार की इस नई पेशकश पर क्षुब्ध इन हड़ताली डाक्टरों ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यदि सरकार वास्तव में उन्हें काम पर वापस लेना चाहती है तो वह संसद में सदस्यों के सम्मुख अपनी नई पेशकश को स्पष्ट करे, क्योंकि उन का सरकार पर विश्वास उठ चुका है. •

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णिम वाक्य

इस स्तंभ के अंतर्गत छपने के लिए उपयुक्त उद्धरण भेजें. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और सर्वोत्तम उद्धरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. उद्धरण के साथ लेखक, रचना व प्रकाशक का नाम, संस्करण वर्ष और पृष्ठ संख्या का उल्लेख जरूरी है. इस अंक की पुरस्कार विजेता सुश्री सुधा दुदानी, धनबाद, हैं.

भेजने का पता : स्वर्णिम वाक्य, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● "दुनिया में खतरा बुरे की ताकत के कारण नहीं, अच्छे की दुर्बलता के कारण है. भलाई की साहसहीनता ही बड़ी बुराई है. घने बादल से रात नहीं होती, सूरज के निस्तेज हो जाने से होती है."

—अज्ञेय : शरणदाता (प्रेषिका : सुधा दुदानी, धनबाद)

● "अहंकार चाहे योग्यता का हो, चाहे रूप और प्रतिभा का, पद का हो या पृथुल वैभव का, कभी अव्यक्त हो कर नहीं रह सकता. यदि एक ओर वह मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा के कारण हिंसा की संज्ञा पा सकता है तो दूसरी ओर ज्वलंत प्रकृति का पृष्ठपोषक भी होता है. अहंकार के बिना न कोई प्रतिभा पनप सकती है, न कोई प्रबुद्ध अभिजात्य सुरक्षा का पावन संबल पा सकता है."

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : उन से न कहना (प्रेषक : रामसेवक यादव, बंबई)

● "प्रेम स्वत: अनंत उपहार देता है. किंतु इन उपहारों का कुछ भी अर्थ नहीं, यदि हम उन के द्वारा उस प्रेम को नहीं पाते जो स्वयं उपहार दे रहा है. उसे पाने के लिए हमारा हृदय भी उसी प्रेम से पूर्ण होना चाहिए. प्रेमरहित हृदय से उपहार लेने वाला केवल वस्तु की उपयोगिता जान कर उपहार लेता है. उपहार की उपयोगिता केवल भावना में है."

—रवींद्रनाथ ठाकुर : साधना (प्रेषिका : कमलेश गुप्ता, एत्मादपुर)

● "भाग्य के हाथ में सब कुछ है. लेकिन रुकना कभी श्रेयस्कर हुआ है? सांस रुकती है, उसे मौत कहते हैं. गति रुकती है, तब भी मौत है. हवा रुकती है, वह भी मौत है. रुकना सदा मौत है. जीवन नाम चलने का है."

—जैनेंद्रकुमार : सुनीता (प्रेषक : जयपालसिंह शेरू अहिर, बंबई)

● "संकल्प और भावना तकड़ी के दो पलड़े हैं. जिस को अधिक भार से लाद दीजिए, वही नीचे चला जाएगा. संकल्प कर्त्तव्य है और भावना कला. दोनों के समान समन्वय की आवश्यकता है."

वृंदावनलाल वर्मा : मृगनयनी (प्रेषक : सुरेश वर्मा 'पथिक,' जबलपुर)

● "पुरुष का जीवन सदैव यदि स्त्री को सहलाते, पुचकारते ही बीते तो बहुत ही बुरा है. उसे तो उन्मुक्त, विकासोन्मुख और स्वतंत्र होना चाहिए. संसार में उसे युद्ध करना है. वह घड़ी भर मन बहलाने के लिए जिस तरह चाहे रह सकता है. उस के आचरण में, कर्म में, नदी की धारा की तरह प्रवाह होना चाहिए. तालाब के बंधे पानी सा उस के जीवन का जल सड़ने और सूखने के लिए होगा तो वह भी जड़ और स्पंदनविहीन होगा."

—जयशंकर प्रसाद : तितली (प्रेषक : कुलवंतसिंह, पीलीभीत) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुएं की दीवार

मां के मरने के बाद शीला को पिता का इतना स्नेह मिला कि वह अनजाने में कुछ दुर्गुण अपना बैठी जिस की वजह से उस की अंकुशहीन जिंदगी में अजीब तूफान आ गया...

शाम से ही नई दुलहन को देखने का तांता लगा था. पहलेपहल तो शीला को अपनी प्रशंसा अच्छी लगी, पर दो घंटे गुजर जाने के बाद भी जब महिलाओं का आना कम नहीं हुआ तो उसे बुरा लगने लगा. यों तो महिलाओं के आगमन पर उसे आपत्ति नहीं थी, पर वह कुछ क्षणों का एकांत चाह रही थी. वह बाथरूम जाने के बहाने से उठ भी सकती थी किंतु ऐसा करना उसे खुद नहीं भा रहा था. उसे ऐसा महसूस होने लगा था, जैसे उस का पेट फूलता जा रहा है.

ट्रेन में सफर करते वक्त जब उसे अपने पेट फूलने का अहसास हुआ था तो वह उठ कर बाथरूम में चली गई थी. अपनी हाजत की पूर्ति हो जाने पर उसे राहत मिली थी. वह अब भी बाथरूम जाने के बहाने उठ सकती थी मगर वहां से लौट कर आने पर पकड़े ज़ाने का अंदेशा था. ट्रेन की बात और थी. वहां कोई उस से बात करने वाला नहीं था इसलिए गंध निकलने का सवाल ही नहीं था. परंतु इस औरतों के झुंड में तो उन के प्रश्न का उत्तर देना ही देना है. और उसी दौरान कहीं पकड़ी गई तो बड़ी भद्द होगी.

यही सब ख़याल कर के शीला लघु-शंका के लिए भी बाथरूम नहीं जा पा रही थी. यों तो एक बार उस की छोटी ननद, कनक उसे बाथरूम ले गई थी किंतु उस वक्त उस के पास पैकेट नहीं था. पैकेट तो सूटकेस में था जिसे एकांत पाने पर ही निकालना संभव होता.

उस ने चूड़ियों के बीच अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली तो नौ बज रहे थे. पता नहीं, और कितनी देर उस के दर्शनार्थियों का आना जारी रहेगा. वह मन ही मन झुंझला रही थी.

उस के मुंह का स्वाद भी जाने कैसा हो गया था. वह पानी पी कर मुंह की बदमजगी को दूर करना चाह रही थी. मगर बदमजगी थी कि बढ़ती जा रही थी.

घड़ी की सुई ज्योंज्यों आगे बढ़ रही थी, उस के दिल की धड़कनें भी एक अनजाने से पग से बढ़ती जा रही थीं. औरतों के जाने के बाद 'उन का' प्रवेश होगा. फिर उन से तो बात करनी ही पड़ेगी. यात्रा के दौरान उन्होंने उस से भीड़ की वजह से बात नहीं की, मगर एकांत पा जाने में भी क्या वह बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"मैं ने तुम्हारी बात नहीं मानी थी, आंटी, उसी की सजा मुझे मिली है." सिलिया को बांहों में भर कर शीला रो पड़ी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करेंगे?

और एक अनजानी फुरफुरी से उस का मन कुछ क्षणों को भयमिश्रित सुखद कल्पना में डूबना चाह रहा था. वह उसी रौ में अपनी हाजत को भुलाना भी चाह रही थी, पर किसी महिला के आगमन ने उस की सुखद कल्पना के तानेबाने को छिन्नभिन्न कर दिया. उस ने आते ही अपनी भारी आवाज में एक बम गोला छोड़ दिया, "बहू तो बड़ी सुंदर है, मगर कुम्हला गई सी लगती है."

उस की मधुर कल्पना के धागे मरोड़ कर प्रवेश करने वाली महिला के प्रति शीला का रुख पहले ही खराब हो गया था, उस पर उस ने जो एक बम गोला छोड़ दिया, उस से उस का मन और भी विरक्त हो उठा. उस ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि इस औरत के किसी भी प्रश्न का वह ठीक से उत्तर नहीं देगी. जब कुम्हला गई सी लगती हूं तो देखने क्या आई हो? अपनी सुंदरता की आलोचना उसे अच्छी नहीं लगी. कुछ क्षणों के लिए वह अपनी हाजत भी भूल गई.

उस महिला ने बिना शीला के करीब आए, दरवाजे पर से ही सनत की मां को अपनी भारी आवाज में हांक लगाई और उस के आ जाने पर उसे जोर की एक डांट पिला दी, "बहू क्या मोम की गुड़िया है जो बिना जलाए नहीं गलेगी. अरी, अंधी, वह आदमी की औलाद है. इसे कुछ आराम करने दो, अकेली छोड़ दो. च च च...कितनी कुम्हला गई है बेचारी!"

शीला को उस महिला की भारी आवाज में जैसे शहद का भंडार मिल गया. अपने कुम्हला जाने का उस ने गलत अर्थ लगा लिया था. यह औरत तो उस के लिए साक्षात देवी है. और उस ने झट से उस के चरण छू लिए.

दो कदम पीछे हटते हुए उस महिला ने भिन्नाए हुए स्वर में कहा, "इस की जरूरत नहीं, तुम आराम करो," फिर महिलाओं के झुंड को संबोधित करते हुए वह बोली, "कुछ कल भी देख लेना, बहनो! अब कमरा खाली करो." और वह एक प्रकार से सब को धकेलते हुए कमरे से बाहर ले गई.

शीला की जान में जान आ गई. हाजत चरम सीमा तक पहुंच चुकी थी. कमरा खाली होते ही उस ने झट से कपाट बंद कर लिया और अंदर से चिटकनी लगा दी. फिर तो उस ने दो सेकंड के अंदर ही सूटकेस खोल कर सिगरेट का पैकेट निकाल लिया और बिना इधरउधर देखे सिगरेट सुलगा कर लंबेलंबे कश खींचना शुरू कर दिया.

> शीला को मालूम नहीं था
> विचारों वाला होते हुए भी
> अपने घर वालों की तरह

पांचछः लंबे कश लेने के बाद उसे जैसे राहत सी मिली. मुंह की बदमजगी भी जाती रही और पेट का फूलना भी कुछ कम होता सा लगा.

अभी वह आधी सिगरेट भी खत्म नहीं कर पाई थी कि कनक ने दरवाजा पीटना शुरू कर दिया, "क्या अभी से सो गईं, भाभी? जल्दी दरवाजा खोलो, अब कोई नहीं आएगा."

घबराहट में शीला ने सिगरेट बिना बुझाए ही पलंग के नीचे डाल दिया तथा मुंह पोंछते हुए दरवाजा खोल दिया.

अंदर प्रवेश करते हुए कनक ने मजाक कर दिया, "बिना भैया के आए ही सोने की तैयारी कर रही थीं?" और वह अपनी नाक सिकोड़ कर कुछ सूंघने का प्रयास करने लगी.

शीला ने विषयांतर के लिए कहना शुरू कर दिया, "बैठेबैठे कमर दुखने लगी थी सो..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाभी, तुम्हारे कमरे में कुछ जल रहा है," बीच में ही ... बोली, "सिगरेट की गंध लग रही है." और ...ने अपनी अनुसंधानी दृष्टि कमरे में ...नी शुरू कर दी.

शीला को अपनी गलती महसूस हो रही थी. पलंग के नीचे जलती सिगरेट ...क कर उस ने जो एक बड़ा अपराध ...दिया था, उस से छुटकारे का कोई ...य उस की समझ में नहीं आया.

शीला को बिना कुछ सोचने का ...का दिए ही, कनक ने पलंग के नीचे ...जलती हुई सिगरेट निकाल ली.

शीला का चेहरा उतर गया. उस

...अत्याधुनिक और उदार ...का फैसला उस के प्रति ...दकियानूसी होगा...

...आंखों में आंखें डालते हुए कनक ने ...प्रकार से जड़वत शीला का मुंह सूंघ ...या, "तो तुम सिगरेट पीती हो! और ...ने आज तक इसे छुआ भी नहीं."

...बुत सी खड़ी शीला की जबान में ...ताकत ही नहीं थी कुछ कहने की. ...रंगे हाथ पकड़ी गई है, बस, इतना ...ज्ञान था उसे. आगे क्या होगा, इस ...वह अनभिज्ञ थी.

उस की चेतना तो तब लौटी, जब ...अपनी मां के साथसाथ दोतीन और ...ओं सहित फिर से कमरे में आ ...ई. उस के बाद तो प्रश्नों की झड़ी ...गई. मगर उस ने जबान नहीं खोली. ...को ही उस ने अपना आवरण बना ....

पर उस की चुप्पी उस का आवरण ...बन सकी. नौकरानी के हाथ उस के ...खाना आ गया. वह खाती तो क्या, ...चुपचाप सिर झुकाए बैठी रही. उस का ...संबल था सनत. वह पढ़ालिखा है, प्रोफेसर हैं. उन का विचार तो उदार होगा ही.

मगर जब आधी रात बीत जाने पर भी उस के कमरे में सनत नहीं आया तो उस की बेचैनी बढ़ने लगी. वह समझ गई कि मां और बहन की बातों में वह भी आ गए हैं.

उस ने कपड़े भी नहीं बदले, न कमरे में अंदर से कील ही लगाई. वह अब भी इस उम्मीद पर उन का इंतजार कर रही थी कि शायद सब के सो जाने पर वह आएं. मगर कोई नहीं आया. खिड़की खुली थी इसलिए हवा आ रही थी और आ रही थी चांद की रोशनी. पर जिस उजाले की उसे जरूरत थी, वह नहीं आ रहा था.

जब रात के ढाई बज गए तो उस ने अंदर से चिटकनी चढ़ा ली और खिड़की में खड़े हो कर चांदनी रात का दृश्यावलोकन करने लगी. नींद तो उड़ ही गई थी आंखों से, अत: सिगरेट पी कर अपने को स्थिर करने की कोशिश करने लगी. आज की चांदनी रात उस के लिए अमावस की रात सिद्ध हो रही थी. उस ने सिगरेट फेंक कर खिड़की बंद कर ली.

खाने के नाम पर उस ने केवल दो गिलास ठंडा पानी पिया और पलंग के पाए से लग कर आंखें मूंद लीं.

उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई दरवाजे पर दस्तक दे रहा है. एक पुलक विह्वलता के वशीभूत उस ने दरवाजा खोल दिया. सामने वही रात वाली नौकरानी खड़ी थी.

सुबह हो गई थी. नौकरानी ने कमरे में घुसते हुए कहा, "चल कर नहाधो लीजिए. आज रात की गाड़ी से आप को कलकत्ता जाना है."

वज्रपात हो गया उस पर. उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. क्या उसे त्यागा जा रहा है? इतना कठोर दंड?

फिर भी उस ने नौकरानी से कुछ नहीं पूछा. वह ... गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है कि कोई उस से बात ही न करे?

वह मरे मन से सुबह की क्रिया से निवृत्त होने चल पड़ी. जब वह नहाधो कर अपने कमरे में लौटी तो टेबल पर रात के खाने के स्थान पर नाश्ता रखा हुआ था. भूख तो रात ही उस की खत्म हो गई थी. फिर भी चाय पी ली उस ने.

दिन भर इसी तरह बीत गया. उस ने दिन का खाना भी नहीं खाया. नौकरानी ने खाने के लिए कई बार कहा भी था, पर उस ने उस की बातों पर ध्यान ही नहीं दिया था.

उसे अब भी यह आशा थी कि उस की भूख हड़ताल की सूचना से घर का कोई सदस्य आएगा और उसे खाने को बाध्य करेगा, पर कोई नहीं आया. हां, शाम की चाय नौकरानी के हाथ आ गई. उस ने चाय पी ली.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

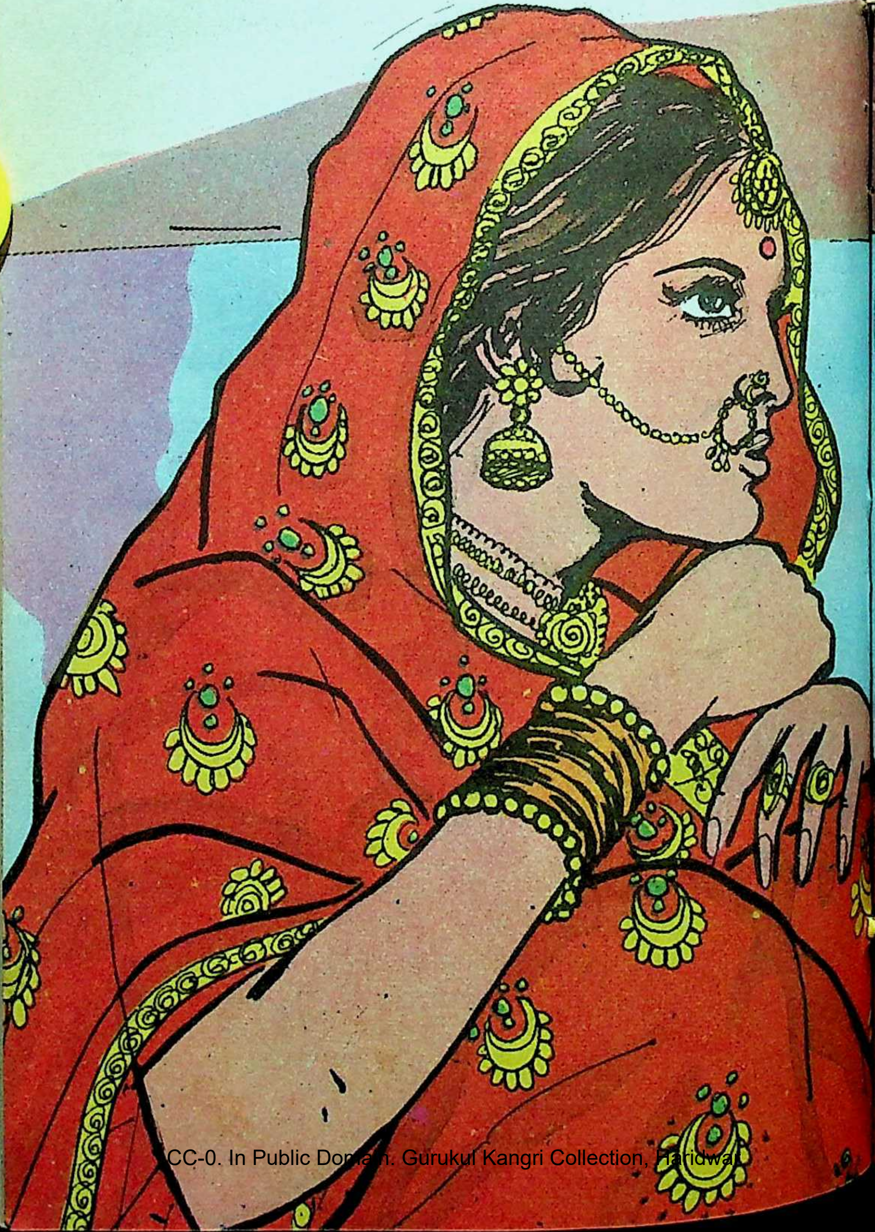

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चाय के जूठे बरतन लेने जब नौकरानी दोबारा आई तो उस ने जैसे रटे-रटाए डायलाग बोल दिए, "आप तैयार हो जाइए, स्टेशन जाना है."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस की इच्छा तो हुई कि वह न जाने के लिए अड़ जाए और वहीं भूख हड़ताल कर के जान दे दे, पर इस उम्मीद पर वह तैयार होने लगी कि रास्ते में शायद वह सनत को कुछ नरम कर सके.

इसी आत्मविश्वास के बल पर वह साइकलरिक्शे पर जा कर बैठ गई. घूंघट में वह यह नहीं देख सकी कि दूसरे रिक्शे पर कौन बैठा है. उस की बगल में नौकरानी बैठ गई थी.

कुछ दूर चलने पर नौकरानी ने धीरे से उस के कान में कहा, "घूंघट खोल दो, बहू, अब कोई जानपहचान का

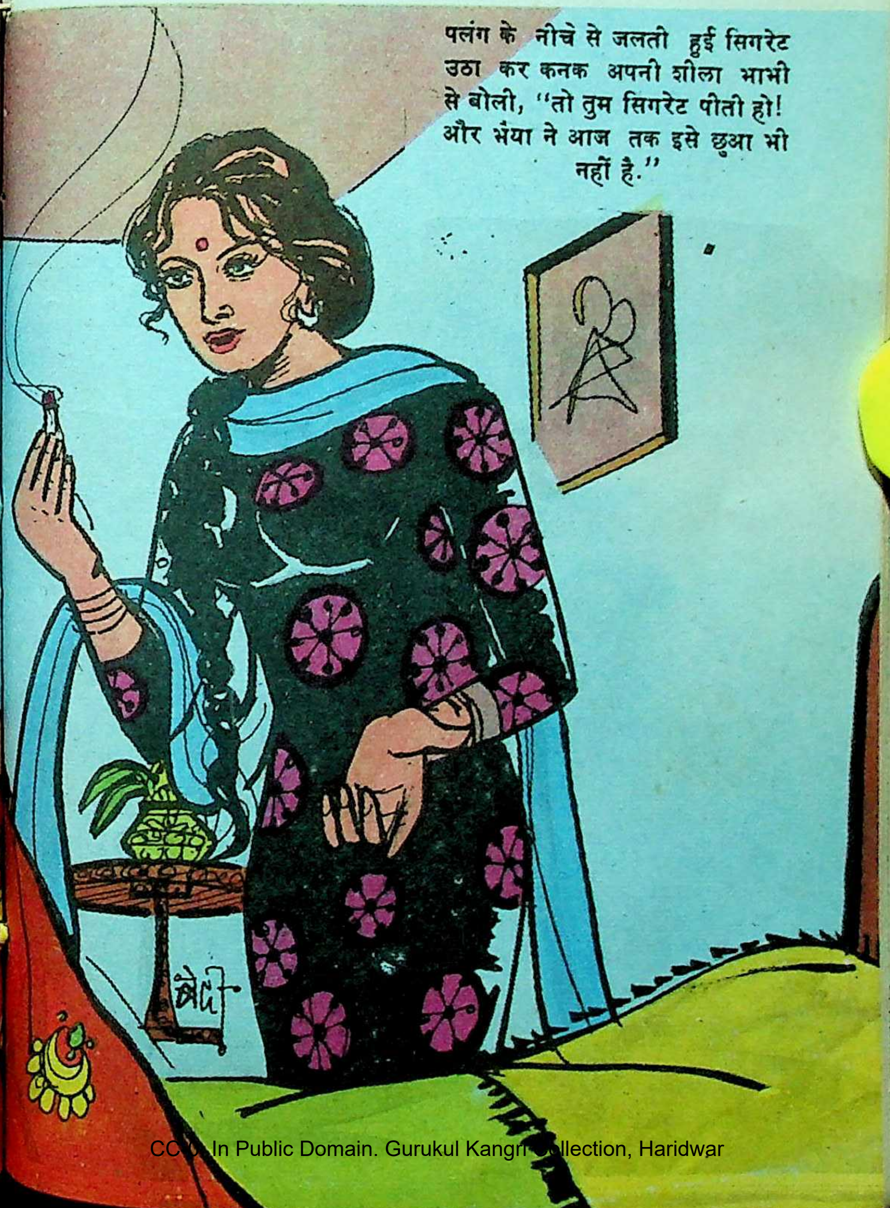

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिलेगा.''

घूंघट उसे भी अच्छा नहीं लग रहा था इसलिए नौकरानी की बात मान कर उस ने घूंघट उघाड़ दिया. उसे यही विश्वास था कि पिछले रिक्शे में सनत बैठा है, पर उस के विश्वास का महल उस समय धराशायी हो गया, जब वह स्टेशन पर उतरने लगी. पिछले रिक्शे से सनत की जगह उस का छोटा भाई अनंत उतरा. तो वह छोड़ने भी नहीं जा रहे हैं? इस विचारोदय पर शीला के कदम रुक गए.

तब तक अनंत के इशारे पर एक कुली ने सूटकेस सिर पर उठा लिया था. पर शीला वहीं जड़वत खड़ी रही.

नौकरानी ने उस के मनोभाव को समझते हुए भरे गले से कहा, ''बाद में सब ठीक हो जाएगा, बहू, अभी ये लोग जैसा चाहते हैं, वैसा ही करो.''

शीला को नौकरानी के कथन में आत्मीयता का पुट मिला. उसे अपनी नौकरानी, सिलिया का खयाल आ गया कि न चाहते हुए भी उस की जिद पर उसे सिगरेट ला कर देना ही पड़ता था. एक तरफ वह डांटती भी थी और दूसरी तरफ प्यार से समझाती भी थी कि यह लत ठीक नहीं है.

मगर लत बढ़ती ही गई बनिस्बत छूटने के. सिलिया की डांटफटकार और दुलार का कुछ भी असर शीला पर नहीं हुआ. दोएक बार सिलिया ने शीला को यह भी समझाने की कोशिश की थी कि प्रोफेसर साहब अगर जान गए कि वह उस के लिए सिगरेट लाती है तो उस की नौकरी चली जाएगी.

उस वक्त शीला ने हंस कर सिलिया से कहा था, ''तुम मेरी मां की जगह हो. डैडी तुम्हें कभी नहीं निकालेंगे.''

और अनायास ही सिलिया की जबान बंद हो गई थी. पता नहीं, शीला ने क्या सोच कर उसे 'मां की जगह' कहा था. उस ने फिर बात नहीं चलाई थी, हां, कभीकभार दबे स्वर में कहा था, ''अब शादी होगी तुम्हारी. यह लत छोड़ दो.'

''कोशिश कर रही हूं.''

ट्रेन भागी जा रही है. वह खिड़की से लग कर बैठी है. उस की बगल में अनंत बैठा है. वह अनवरत बाहर ही देखती जा रही है.

किसी स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही अनंत चायवाय के लिए उस से पूछ लेता है. वह सिर हिला कर 'हां' या 'ना' में उत्तर दे देती है. फिर दोनों में कोई बात नहीं होती. गाड़ी चलती रहती है.

शीला सोच रही है, सुबह होते ही फिर वही हावड़ा स्टेशन, जहां से वह कितने अरमान ले कर ट्रेन में बैठी थी और आज...

बीचबीच में वह बाथरूम जाना भी नहीं भूलती. कभी वह अपने को धिक्कारती भी है और कभी ससुराल वालों पर गुस्सा भी करती है. मगर उन का भी क्या दोष? वह अपने को समझाना चाहती है. हमारे यहां इस व्यसन को बड़ी बुरी दृष्टि से देखा जाता है. मगर इस के लिए इतना बड़ा दंड? कम से कम सनत को तो कुछ पूछना चाहिए था... प्रगतिशीलता का कुछ भी तो खयाल किया होता उन्होंने.

और अब उस का आक्रोश केंद्र सनत बन गया. इतने दकियानूस आदमी के साथ कैसे गुजारा होता? मगर... वह कांप उठी. यह परित्यक्ता का जीवन...कैसे गुजारा होगा?

शीला टूटने लगी अंदर से. उस ने

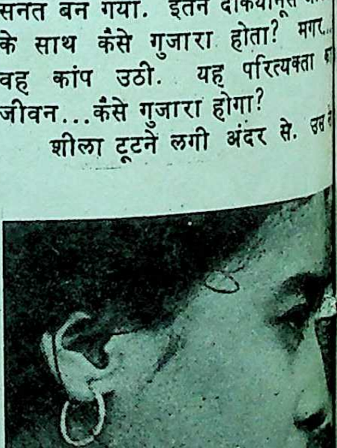

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खिड़की से सिर टेक दिया और आंखें मूंद लीं. हवा के झोंके उस के सिर से टकराते रहे. वह बहुत कुछ सोचती रही, सोचती रही और टूटती रही. उस क्षण तो वह और भी टूट गई, जब उसे सीता का खयाल आया. उन्हें भी तो संदेह का शिकार बनना पड़ा था. उसे अपनी बगल में बैठा अनंत लक्ष्मण का प्रतिरूप लगा जो शीला रूपी सीता को वन भ्रमण के बहाने जंगल में हमेशा के लिए छोड़ने जा रहा है.

चिंता और झपकियों में ही रात कट गई. पलकें खुलते ही जहां सूर्य की प्रथम किरणों की झलक मिली, उसे वहीं हावड़ा स्टेशन का भी दर्शन हो गया.

टैक्सी में बैठ जाने के बाद अनंत ने धीरे से फुसफुसा कर कहा, "मैं तुम्हें छोड़ने आ गया, भाभी, मगर कोशिश ऐसी करना कि भैया को तुम्हें लेने आना पड़े."

शीला ने कोई जवाब नहीं दिया. टैक्सी चलती रही. फिर वही परिचित सड़कें, जानीपहचानी बिल्डिगें, वही सब कुछ, वहीं...मगर...

दरवाजे पर टैक्सी रुकते ही अनंत ने शीला का सूटकेस उस के हाथ में थमा दिया और अपना किडबैग कंधे पर डाल लिया.

दरवाजा खोलते ही सिलिया ने आश्चर्य से मुंह बा दिया. उसे शीला का चेहरा देख कर ही जैसे सब कुछ पता चल गया था. तभी उस ने पूछ लिया, "और कौन है?"

सदके हजार चांद...

ऐसी अंधेरी रात के
सदके हजार चांद,
शरमाने वाला जिस में
सरक आए डर के पास.
—आरजू लखनवी

"अनंत."

ऊपर पहुंच कर सिलिया ने शीला को बताया कि वहां तो कोई भी नहीं है.

लक्ष्मण भी सीता को बिना बताए ही चला गया था. शीला ने दूसरा विषय उठा दिया, "डैडी अभी सो ही रहे हैं?"

"हां. मगर तुम शायद बिलकुल नहीं सोईं?"

"तुम्हारा अनुमान ठीक है, आंटी!"

"मगर क्यों?"

"तुम्हारी बात नहीं मानी थी न," और शीला ने फफकफफक कर सब कुछ सुना दिया.

"चल, पहले नहाधो ले."

सिलिया से प्रो. सुरेंद्रनाथ ने सब कुछ सुन लिया था, फिर भी युवा बेटी से जवाबतलब करना उन्हें ठीक नहीं लगा. मगर उस कारण को जानने की तीव्र उत्कंठा उन के अंदर घुमड़ उठी कि शीला ने धूम्रपान करना क्यों सीखा.

उन्होंने इस बाबत सिलिया से ही पूछताछ की. यों तो कुछकुछ सिलिया को याद था, फिर भी उस ने शीला से बातों ही बातों में जान लिया कि यह लत उसे क्यों पड़ी.

सिलिया ने जो कारण प्रोफेसर साहब को बताया, उस से उन्हें अपनेआप पर ही क्षोभ हुआ. हृदय मंथन के बाद उन्होंने यही निष्कर्ष निकाला कि सारा दोष उन का ही है.

वह अतीत की स्मृतियों में खो गए. तब शीला तीन बरस की थी. उस की मां के मरने के बाद उन्होंने जो एकाकीपन का अनुभव किया था, उस की पूर्ति के लिए एक साधन की जरूरत थी. उन्होंने एक साधना शुरू कर दी. फिर तो वह अपने शोधकार्य में इतने डूब गए कि कालिज से आने के बाद अध्ययन कक्ष में ही उन्हें शांति मिलती. अध्ययन कक्ष ही उन का शयन कक्ष बन गया. खाना तो सिलिया के कहने पर खा लेते, मगर सोना कभी आधी रात के बाद, कभी

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहानी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक दत्त सुमन

लौटती बहारें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दिनों बाद अचानक अपने सामने जानापहचाना चेहरा देख कर अजय से कुछ बोलते न बना और वह अतीत की धुंधली यादों में बुरी तरह उलझ गया.

जून का महीना था. आग बरस रही थी. अजय रूमाल से अपना पसीने से भीगा चेहरा पोंछता घर की तरफ चला जा रहा था. जानलेवा गरमी के कारण उस की साइकल भी मानो जवाब दे रही थी.

एकाएक उस की मुट्ठियां भिंचने लगीं, साइकल की रफ्तार धीमी होती गई और वह सड़क की बाईं ओर पेड़ के नीचे खड़ी एक युवती को देखने लगा, जो व्याकुल सी सड़क पर दूर तक देख रही थी. उस के समीप ही एक अटैची और एक बिस्तर पड़ा था. वह किसी वाहन की तलाश में लगती थी. अजय साइकल से नीचे उतर पड़ा था. अब वह धीरेधीरे युवती की ओर बढ़ रहा था.

युवती ने भी अजय को देख लिया था इसलिए उस के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी, पर एकाएक उस की मुद्रा गंभीर हो गई थी. जाने कब उस के होंठ फड़के थे, ''आप...''

''हां, शीतल, मैं अजय हूं,'' वह बड़ी कठिनाई से कह पाया, ''मगर डर था, कहीं तुम पहचानने से...''

''ऐसा कैसे हो सकता है?'' वह बोली और उस ने अजय को ऊपर से नीचे तक देखा, ''पर, आप यहां...''

''हां, शीतल, मैं यहीं रहता हूं तब से,'' वह धीमे स्वर में बोला, ''पर आश्चर्य है कि तुम...''

''मैं डाक्टर बन गई हूं,'' वह बोली, ''हमारे अस्पताल की ट्रस्ट के देश भर में कई अस्पताल हैं. सब डाक्टरों की यहां मीटिंग थी. उसी सिलसिले में एक सप्ताह से यहां हूं.''

''एक सप्ताह से?'' अजय चौंका, ''और बिना मिले ही लौट रही थीं?''

''मेरे पास आप का पता ही कहां था?'' वह शिकायत के लहजे में बोली, ''मुझे तो इतना भी पता नहीं था कि आप यहां रहते हैं. कभी पत्र तक नहीं लिखा.''

अजय ने एकटक उसे देखा. कुछ विशेष अंतर नहीं आया था उस में. वही पुरानी पसंद. मेल खाता साड़ीब्लाउज, जूड़ा और माथे पर साड़ी के रंग की बिंदिया. होंठों पर हलकी सी लिपस्टिक की परत.

''मुझ से बिना मिले ही चली जाओगी?'' अजय ने चाहतपूर्ण दृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसे देखा, "क्या थोड़ाबहुत समय नहीं दे सकोगी?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अवश्य दे सकूंगी," वह तपाक से बोली, "मैं आप से मिले बिना कभी न जाती यदि मुझे इतना भी ज्ञात होता कि आप यहां हैं. मैं पता खोज लेती."

अजय का चेहरा गुलाब की भांति खिल उठा.

अजय ने उस का बिस्तर उठा कर कैरियर पर रख लिया. शीतल अटैची उठा कर अजय के साथ हो ली. दोनों चुप. बस, पलट कर या कनखियों से एकदूसरे को देख लेते. उन के मस्तिष्क में उस समय अनगिनत प्रश्न उठ रहे थे.

दोनों कंपनी बाग में आ पहुंचे तो अजय ने बिस्तर उतार कर नीचे रख दिया और घास पर बैठ गया. उस के सामने ही शीतल बैठ गई.

"अब सुनाओ, शीतल, जीवन कैसा गुजर रहा है?"

"आप सुनाइए, मेरा तो गुजर ही रहा है."

"तुम बहुत बदल गई हो."

"मैं? गलत कहते हैं आप."

"नहीं. देखो न, पहले तुम सदा 'तुम' कह कर बात करती थीं. उस समय कितना अपनापन होता था. लेकिन इस बारबार के 'आप' ने कितनी दूरियां पैदा कर दी हैं?"

"ठीक कहते हैं आप, लेकिन पांच वर्ष पूर्व जो कुछ हम थे, वह आज नहीं हैं," वह एकटक अजय की आंखों में देखने लगी, पर देर तक पलकें स्थिर न रह झपक ही गईं, "अब हमारे रास्ते अलग हो चुके हैं. आप की मंजिल भी बदल चुकी है. लेकिन आप आज भी मेरे लिए माननीय हैं."

अजय चुप रहा.

"आप सुनाइए, वह कैसी हैं," वह मुसकराने का प्रयत्न करने लगी, "बहुत भाग्यवान रही होंगी जिन्हें आप का साथ प्राप्त हो गया है."

"हूं..." वह केवल इतना ही बोला.

"बच्चे कितने हैं?"

"एक लड़का है."

शीतल मुसकरा दी, "आप कितने भाग्यवान हैं! कई बार इच्छा होती थी कि उन्हें देखूं, पर आप का पताठिकाना नहीं था. वरना कभी चुपके से आ कर देख जाती."

अजय गुमसुम सा बैठा उस की बातें सुन रहा था.

"क्या मिला सकोगे उन से? मैं आप का बच्चा देखना चाहती हूं."

अजय देर तक कुछ सोचता रहा, फिर एकाएक बोल उठा, "चलो!"

"वह बुरा तो नहीं मानेंगी कि किसे उठा लाए आप?"

"इस ओर से तुम बेपरवा रहो," वह कुछ बुझे स्वर में बोला.

दोनों उठे और सड़क तक आए. एक साइकल रिक्शा पर सामान रख कर शीतल उस में बैठ गई और अजय उस के साथसाथ साइकल चलाने लगा.

रास्ते भर दोनों एकदूसरे से कुछ नहीं बोले. शीतल का मन अब धड़कने लगा था. वह अजय की पत्नी का काल्पनिक चित्र अपने मानसपटल पर बना रही थी. कई प्रश्न उसे झिंझोड़ रहे थे. क्या उसे यह अच्छा लगेगा? पति की प्रेमिका को देख कर वह जल न उठेगी?

गरमी की वजह से महल्ले के लगभग सभी घरों के किवाड़ बंद थे. रिक्शा एक साधारण से मकान के सामने आ कर रुका. अजय ने उस का भाड़ा चुकाया.

शीतल फटीफटी आंखों से महल्ले को परखने लगी. मकानों की बनावट आधुनिक न थी. जगहजगह कूड़ाकरकट बिखरा था. महल्ला पिछड़ा हुआ था और यहां के निवासियों को गंदगी से घृणा नहीं थी.

अजय ने जेब में से चाबी निकाल कर ताला खोला और द्वार खोल कर उस की ओर देखने लगा, "आओ, शीतल!"

वह अंदर प्रवेश कर गई तो अजय उस का सामान उठा लाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक कमरा था और एक रसोई, जिस के साथ ही शौचालय. शीतल कमरे का जायजा लेने लगी. अजय ने बढ़ कर मेज पर पड़ा फोटोजड़ित फ्रेम उठा कर अलमारी में रख दिया. शायद वह उसे शीतल से छिपाना चाहता था, पर वह उस की दृष्टि से छिप न सका. कमरे में एक ही बिस्तर था. वह भी कुरसी पर. सलीके से बिछा न था. कहीं कोई बरतन उलटा पड़ा था तो कहीं कोई चप्पल. कुरसी पर कुछ कपड़ों का ढेर लगा था, जिन्हें अजय ने लपक कर उठाया और शीतल की ओर बैठने के लिए कुरसी बढ़ा दी.

"शायद तुम्हें यह सब अच्छा न लगे, पर..."

अपने प्रेमी अजय की पत्नी को देखने की इच्छा मन में दबाए शीतल उस के घर जा पहुंची...लेकिन वहां जा कर वह एक अजीब ही मुसीबत में फंस गई...

उस का वाक्य पूर्ण भी न हो पाया था कि एक बच्चा दौड़ता हुआ अंदर आया लेकिन द्वार की चौखट पर ठिठक कर रुक गया. वह आश्चर्य से कभी शीतल और कभी अजय को देख रहा था.

"आ जाओ, बेटा!" अजय ने कहा और बच्चा सहमा सा उस के पास आ गया. अब वह कनखियों से शीतल की ओर देख रहा था, "शीतल, यह मेरा विजय है."

शीतल गौर से उस की ओर देख रही थी. उस के वस्त्र मैले थे और हाथ-पांव धूल से भरे. शीतल ने संकेत से उसे पास बुलाया तो वह अजय के कहने पर उस के पास चला गया. वह उसे गोद में ले कर प्यार करने लगी.

अभी तक वह विजय की मां से मिल नहीं पाई थी. वह कहां है? कब आएगी? कई प्रश्न उसे कचोट रहे थे. उसे आश्चर्य हो रहा था कि साफसुथरा जीवन जीने वाला अजय इस गंदे वातावरण में कैसे फंस गया था.

"मैं चाय बना कर लाता हूं," वह बोला, "कहो तो शिकंजवी बना लाऊं."

"नहीं, आप कष्ट न करें. उन्हें आ लेने दें."

लेकिन अजय उठ कर जा चुका था और वह सोच रही थी, 'कैसी औरत है अजय की पत्नी, जो बच्चे को साफसुथरे कपड़े भी नहीं पहना सकती?'

स्टोव को पंप चलाते अजय को पांच वर्ष पूर्व की घड़ियां रहरह कर कचोट रही थीं.

वह उन दिनों बी. ए. का छात्र था. शीतल डाक्टरी पढ़ रही थी. वह अपने मातापिता की एक मात्र संतान थी. अवसर पा कर वह अजय के यहां आ जाती थी और घंटों बैठी रहती थी. अजय चाय बहुत स्वादिष्ट बनाता था जिसे वह चुस्कियां लेले कर पीती थी.

शीतल के पिता को जिस रोज उन के प्रेम का सुराग मिला, उन्होंने शीतल पर कई पाबंदियां लगा दीं. उन्होंने उस के लिए लड़का भी ढूंढ़ना शुरू कर दिया.

शीतल जहां अपने मातापिता का दिल नहीं दुखाना चाहती थी, वहां प्यार को भी बलिदान नहीं करना चाहती थी. वह तुरंत अजय से मिली और उस ने उस से कोई हल निकालने को कहा.

अजय से मिल कर वह घर लौटी तो उस का सामना क्रुद्ध पिता से हुआ, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह जीते जी अजय को इस घर में नहीं घुसने देंगे और शीतल के लिए अजय के साथ विवाह का खयाल करना भी अपने साथ धोखा करना होगा.

एक दिन अजय का शीतल के पिता से सामना हुआ तो वह उस पर बरस

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पड़े, "सौ बात की ,एक बात है. अपनी खैर चाहता है तो यहां से निकल जा. तू शीतल को कभी नहीं पा सकेगा.

"मगर, पिताजी, हम दोनों आप के आशीर्वाद से जीवन भर का साथ निभाना चाहते हैं."

"आशीर्वाद!" और पिताजी का तेज हाथ अजय पर बरस पड़ा. शीतल को ऐसे व्यवहार की आशा कभी नहीं थी. वह दौड़ी हुई आई तो उन का हाथ रुका. अजय शीतल की ओर देखने लगा. वह बड़ी कठिनाई से बोली, "पिताजी, आप ने यह क्या किया?"

"बकवास बंद कर," वह गरजे, "इसे बोल कि मेरी नजरों से परे हो जाए."

शीतल सहमी सी नजरों से अजय को देखने लगी और जब पिता की आग्नेय दृष्टि उस पर पड़ी तो वह पीछे हट गई.

"ठहरो, शीतल! आज फैसला हो कर रहेगा. मेरा साथ दोगी या अपने पिताजी का?"

शीतल ने बारीबारी दोनों की ओर देखा, फिर बोली, "मैं क्या करूं...कुछ भी तो समझ नहीं पा रही...अजय, मैं पिताजी का साथ दूंगी और तुम्हारा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भी..."

पिताजी का चेहरा विकृत हो उठा और वह गरजे, "मेरा साथ न भी दोगी तो भी मैं तुझे रास्ते पर लाना जानता हूं." और फिर अजय की तरफ मुड़े, "अब तू यहां से निकल जा."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजय खिन्न मन से घर लौट आया. शीतल कभी विद्रोह न कर सकेगी, यह वह जानता था.

"नहीं जाओगी न, मां? अब मैं नहीं जाने दूंगा." विजय की हठ सुन कर शीतल ने स्नेहातुर हो उस से कहा, "मैं अब नहीं जाऊंगी, बेटे."

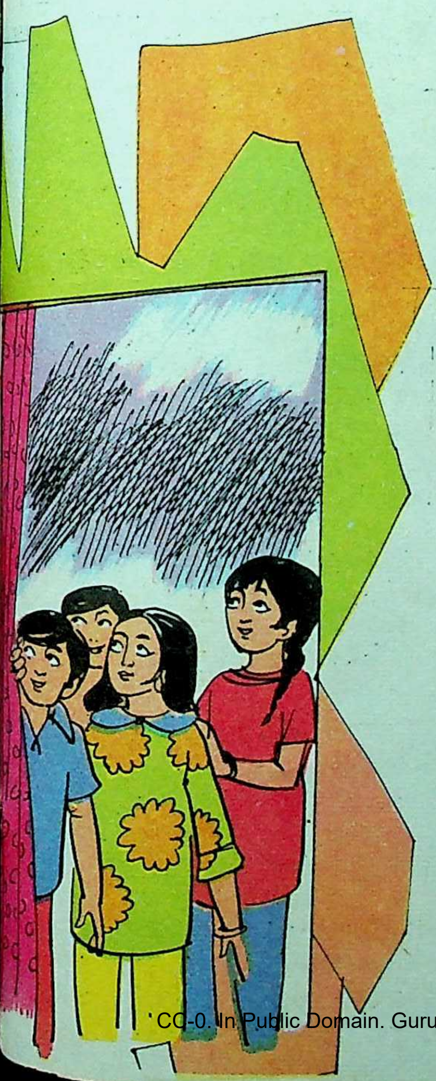

एक सप्ताह तक वह शीतल से न मिल सका. वह घर में कैद कर दी गई थी. वह मन पर काबू न पा सका और पुनः उस के घर पहुंचा. इस बार शीतल के पिता ने उस से पहले से भी बुरा व्यवहार किया जिसे शीतल सहन न कर सकी. उस के मन में पिता के प्रति विद्रोह की चिनगारी फूट पड़ी. वह अब उस के अपमान का बदला अवश्य लेगी. वह दौड़ती हुई बाहर आई. पिता ने उसे देखा तो अजय पर अधिक जोर से बरसने लगे. वह चीखी, "अजय, क्यों पत्थर बन सब सहन कर रहे हो? इसलिए कि यह मेरे पिता हैं? नहीं. अपनी रक्षा करो."

"शीतल..." वह बोला.

"हां, यदि अपनी रक्षा नहीं कर सकते तो यहां मत आना. अब चले जाओ. इन का दिल पत्थर है. यह नहीं पसीजेगा."

"मैं चला जाऊं?"

"हां, चले जाओ," वह चिनगारियों से भरी दृष्टि पिता पर फेंक कर बोली, "और कभी इधर मत आना. यह ऐसे हमें नहीं मिलने देंगे."

आज वही शीतल पांच वर्ष के लंबे अंतराल के बाद उस के घर बैठी थी.

"बाबूजी, चाय उबल रही है," विजय के स्वर ने उसे चौंका दिया. उस ने लपक कर स्टोव बंद किया और कपों में चाय डाल कमरे में लौट आया. सामने अपनेआप में खोई बैठी शीतल को देख कर वह बोला, "किस सोच में डूब गई हो? चाय तो पियो."

शीतल ने गहरा श्वास छोड़ा, हाथ बढ़ा कर कप लिया और चुस्कियां लेते हुए कहा, "आज चाय उतनी स्वादिष्ट नहीं बनी जितनी कि..."

"वक्तवक्त की बात है. अब तो जीवन का सारा उत्साह ही जाता रहा."

"क्यों ऐसी निराशापूर्ण बातें करते हैं आप?"

वह चुप रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अभी तक आप की...मेरा मतलब है विजय की मम्मी नहीं दिखाई दीं,'' शीतल ने फिर मौन तोड़ा तो अजय एकटक उसे देखने लगा.

''शीतल, अभी तक तुम कुछ भी नहीं समझ सकीं. तो सुनो. मेरा घरबार जो कुछ भी है, वह मैं और विजय हैं.''

''और आप की पत्नी?'' शीतल ने चौंकते हुए कहा.

''वह नहीं रही. विजय के जन्म पर ही वह चल बसी,'' अजय ने कहा, ''अच्छा हुआ कि वह मर गई. मैं उसे एक रोज भी दिल की गहराई से प्यार न कर सका क्योंकि मेरा मन कहीं और जुड़ा था. कहां? यह तुम समझती हो. विजय ने अपनी मां की सूरत नहीं देखी. इसलिए वह हर औरत को अपनी मां समझता है और मैं भी कह देता हूं कि 'तेरी मां मुझ से रूठ कर चली गई है. एक रोज आ जाएगी'. मैं अभी नन्हे मन को ठेस नहीं पहुंचाना चाहता. बड़ा हो कर स्वयं समझ लेगा कि वह मातृहीन है.''

शीतल गंभीर मुद्रा में बोली, ''ओह, तो यह बात है!''

''हां, शीतल, तुम से ठोकर खा कर मैं अपना सब कुछ गंवा बैठा हूं. मैं ने उसी दिन शहर छोड़ दिया था. यहां आ कर भी मन उचाट रहा. एक मित्र ने सुझाया कि शायद कोई औरत आ कर मेरा जीवन संवार दे. उस ने मुझे विवाह के लिए प्रेरित किया. ऐसा निर्णय लेने से पहले मैं ने तुम्हें कई पत्र लिखे, पर तुम ने उत्तर तक नहीं दिया. जानता हूं, तुम विवश थीं. दोष नहीं देता तुम्हें.'' फिर कुछ रुक कर बोला, ''विजय दिन भर पड़ोसियों के सहारे रहता है, अपनी मां के लिए रोता है. कहां से इसे मां ला कर दूं?''

''सच, मैं ने आप का जीवन क्या से क्या बना दिया!''

थोड़ी देर बाद अजय उठा और सब्जी के लिए थैला ले कर कमरे में से बाहर निकल गया. शीतल दूर तक उसे साइकल घसीटते देखती रही. जब वह आंखों से ओझल हो गया तो उस का मन बरबस ही भर आया. एकाएक कुछ सोच कर वह कुरसी से उठ खड़ी हुई. उस ने किवाड़ की दरार में से झांकते हुए विजय को जा पकड़ा, ''क्या देख रहा है, विजय?''

''तुम मेरी मां हो न?''

शीतल ने उसे छोड़ दिया. उस का मन तीव्रता से धड़कने लगा था, मानो विजय ने उस की संपूर्ण सत्ता को झकझोर कर रख दिया हो.

विजय अब उस के सामने आ कर खड़ा हो गया, अबोध भाव से बोला, ''मां, तुम बाबूजी को क्यों सताती हो? बाबूजी कहते हैं कि तुम रूठ कर चली गई थीं. अब आ गई हो न. अब मत जाना.''

शीतल की आंखें नम हो गईं. उस ने पूछा, ''विजय, तेरी मां की तसवीर है?''

''क्यों नहीं? वह रही मेज पर,'' कहता हुआ वह रुक गया, ''अरे, यहां से कौन ले गया?''

वह मेज के पास गया और अलमारी खोल कर देखने लगा. फिर उस ने फ्रेम में जड़ी तसवीर शीतल की ओर बढ़ा दी.

शीतल फटीफटी आंखों से फ्रेम में जड़ी अपनी ही तसवीर को देखने लगी. तभी विजय बोला, ''मां, बाबूजी तुम्हारी तसवीर के सामने देर तक बैठे रहते हैं. कभीकभी तो रोने लगते हैं. मां, अब उन्हें छोड़ कर मत जाना. छोड़ के तो नहीं जाओगी न, मां?''

''लेकिन, बेटे, मैं तेरी मां...''

तभी अजय बाजार से आ गया. शीतल ने तसवीर अलमारी में रख दी.

अजय ने प्रवेश किया तो कमरे की दशा ही बदली हुई थी. बिस्तर सलीके से बिछा था. कमरे में झाड़ पोचा लगा था. बरतन साफ कर के तरतीब से सजा

(शेष पृष्ठ 128 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पाकेट बुक्स के नए प्रकाशन

सितारा (ऐतिहासिक उपन्यास: आनंदसागर 'श्रेष्ठ')

रियासत नौरंगपुर के मालिक की बेटी परिस्थितियों के चक्कर में पड़ कर सितारा बन बैठी उस के मन में एक आग जल रही थी...

एक दिन सितारा शाही रक्कासा से नादिरशाह के दिल की मलिका बन बैठी. फिर उस ने दिल्ली में कत्ले आम बंद कराने के लिए अपनी जिंदगी की हर खुशी कुरबान कर दी...दिल्ली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया रोमांचकारी उपन्यास.

रु. 4.00 डाक खर्च रु. 1.50

शीशे की दीवार (उपन्यास: रमेश गुप्त)

एक स्त्री और एक पुरुष रात को कमरे में अकेले हों, फिर वे पतिपत्नी भी हों तो भावनाओं के खिंचे तार ढीले पड़ जाते हैं. मदमाती रात की खुशबू उन के आपसी खिंचाव को कम कर के एक हो जाने का संदेश देती है जिस का वे विरोध नहीं कर सकते. लेकिन अनुराधा और अनुराग की जिंदगी इस का अपवाद सिद्ध हुई. उन के बीच शीशे की एक अभेद्य दीवार थी...रमेश गुप्त का दांपत्य जीवन की व्याख्या करने वाला लघु उपन्यास.

रु. 4.00 डाक खर्च रु. 1.50

बच्चों के मुख से (संपादक: विश्वनाथ)

कहते हैं हिंदी में शुद्ध हास्य की कमी है. लेकिन यह पुस्तक इस का अपवाद सिद्ध होगी, क्योंकि इस में दिए गए हास्य के मूल स्रोत आप के अपने बच्चों जैसे नन्हे-मुन्ने हैं, जिन की भोली बातें सुन कर आप हंसे बिना नहीं रह सकते.

रु. 4.00 डाक खर्च रु. 1.50

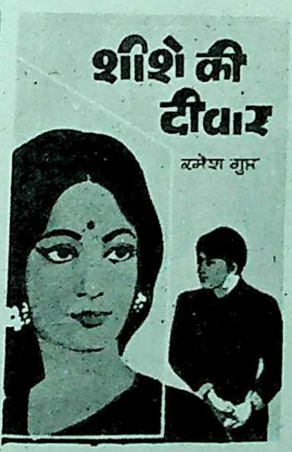

तीनों पुस्तकें एक साथ मंगानें पर डाक खर्च की विशेष छूट

कृपया अपने आर्डर की 25% राशि अग्रिम भेजें.

वितरक: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरी याद गहरी है

ग्रीष्म की चढ़ती दुपहरी है,
और तेरी याद गहरी है.

इक मुलायम गंध का अहसास
भोर की दूर्वा कुंआरी छू गई.
उंगलियों के लम्स फिर से याद आए
वह पखेरू की चहक कुछ कह गई.
बाद मुद्दत के लगी हर सू
आहटों की इक कचहरी है.
और तेरी याद गहरी है.

फिर शिराओं में सुलगने सा लगा
नरम होंठों का कोई भूगोल,
जैसे सहमे झुंड हिरनों के
सुन मिठूली बांसुरी के बोल.
पांव आ कर गड़ी मेरे कहीं
कील फिर कोई इकहरी है.
और तेरी याद गहरी है.

—लक्ष्मीनारायण 'शोभन'

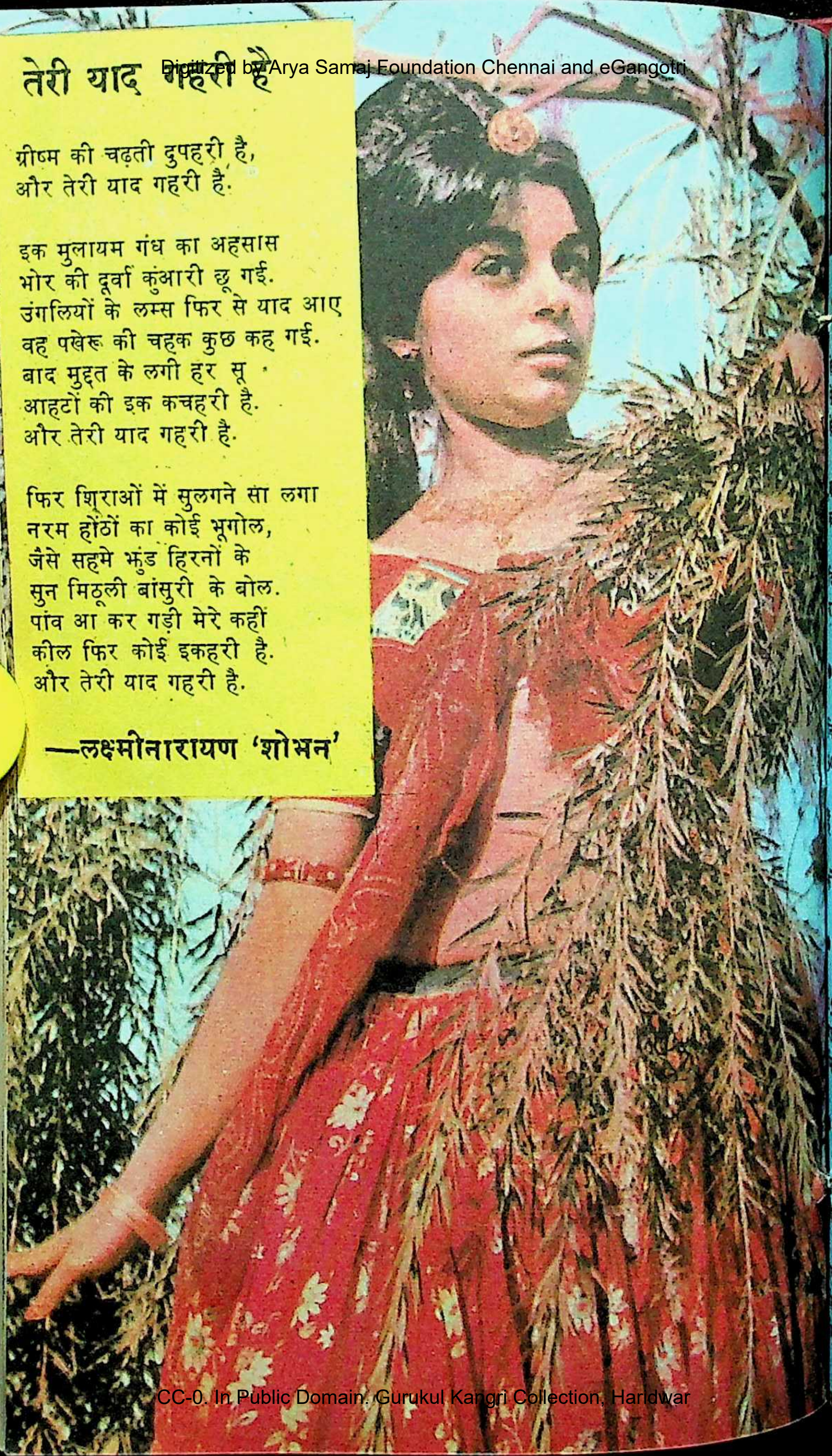

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री सत्यप्रकाश अग्रवाल, अलीगढ़, हैं.

दूध पिया और प्रतियोगिता से बाहर

क्राइस्टचर्च में आयोजित एक प्रतियोगिता के तीसरे दौर में भाग न ले सकने के कारण भारत के जूनियर चेंपियन राधेश्याम को लाइट फ्लाइवेट के कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा. इस का कारण उन के शरीर का वजन था, जो तीसरे दौर के पूर्व निर्धारित 48 किलोग्राम से दो ग्राम अधिक पाया गया.

श्री राधेश्याम की आयु 16 वर्ष है. पहली तोल में उन का वजन 10 ग्राम अधिक निकला. उन्होंने दौड़ कर अपने सिर के लंबे घुंघराले बाल मुंड़वा डाले. लौट कर जब वह फिर तराजू पर चढ़े तो उन का वजन 48 किलो दो ग्राम निकला.

आस्ट्रेलियाई टीम के मैनेजर की आपत्ति पर उन्हें प्रतियोगिता से अलग कर दिया गया. भारतीय मैनेजर ने कहा कि राधेश्याम को रात में खाना नहीं खाने को कहा गया था पर शायद उस ने दूध पी लिया, जिस से उस का वजन बढ़ गया.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : आनंदकुमार जैन, कटनी)

स्त्रियों की गिरती संख्या

मध्य प्रदेश में गत 50 वर्षों में स्त्रियों की जनसंख्या पुरुषों की तुलना में निरंतर घटती जा रही है. यदि जनसंख्या की यही प्रवृत्ति बनी रही तो आगामी 50 वर्षों में प्रति 1000 पुरुषों के अनुपात में लगभग 900 स्त्रियां ही होंगी.

आजकल प्रति 1000 में से 59 पुरुष ऐसे हैं जिन के लिए स्त्रियां नहीं हैं अर्थात प्रदेश में प्रति 1000 पुरुषों के अनुपात में महिलाओं की संख्या 941 ही है.

प्रदेश में महिलाओं की कमी का प्रभाव यह है कि प्रदेश में अविवाहित पुरुषों की संख्या 79 लाख है जब कि अविवाहित महिलाएं 60 लाख 80 हजार ही हैं.

—भास्कर, भोपाल (प्रेषक : राजेंद्रकुमार सोनी, भोपाल)

छोटी सी भूल

लीबिया के विदेश मंत्री नाफास का वायुयान कराची से लाहौर के लिए उड़ा तो 5 मिनट बाद उन्हें याद आया कि वह चश्मा वहीं कहीं भूल आए हैं. चश्मे के लिए वायुयान वापस लौट कर कराची हवाई अड्डे पर उतरा मगर फिर भी चश्मा नहीं मिला और वह बगैर चश्मे के लाहौर रवाना हुए.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : दिनेशचंद्र पारे, खानचंदवा)

विचित्र खेल

इंगलैंड के ग्रैंडलफोर्ड नामक स्थान की 11 वर्षीया लड़की जूली ने पिछले नवंबर में खेलखेल में एक लिफाफे पर अपना नामपता लिख कर उसे तेज हवा में उछाल दिया. बाद में इस लिफाफे ने उसे मुफ्त अमरीका यात्रा का निमंत्रण दे डाला.

पिछले फरवरी में अमरीका के कैलीफोर्निया निवासी एक दंपति का जब उसे पत्र मिला तो जूली के आश्चर्य का ठिकाना न रहा. इस दंपति ने पत्र में उसे लिखा था कि तुम्हारा नामपता लिखा लिफाफा हमें अटवालेर की एक सड़क पर पड़ा मिला. तुम अमरीका की यात्रा पर आओ. सारा खर्च हम देंगे.

—जनयुग, नई दिल्ली (प्रेषक : सत्यप्रकाश अग्रवाल, अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआयना एक परीक्षा केंद्र का

एकांकी

रोहिणी कांत

(तीसचालीस विद्यार्थी परीक्षा भवन में मौजूद हैं. कुछ बाहर से भीतर आ रहे हैं और कुछ भीतर से बाहर जा रहे हैं. किसीकिसी सीट पर तो एक के स्थान पर दोदो विद्यार्थी बैठे हैं. कुछ तो कुरसियों के बजाए डेस्कों पर ही आसन जमाए हैं. हाल में जबरदस्त हलचल व हल्लागुल्ला है.)

(मुख्य दरवाजे की बगल में एक बहुत बड़ा तख्त है, जिस पर एक मेज तथा चारपांच कुरसियां हैं. वहां सुपरिटेंडेंट, डिप्टी सुपरिटेंडेंट और असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट मौजूद हैं. मेज उत्तर पुस्तिकाओं, प्रश्नपत्रों के लिफाफों तथा अनेक फाइलों से भरी है. असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट फाइलें उलटने में बड़ी तत्परता से व्यस्त हैं.)

सुपरिटेंडेंट : बच्चो, अब अपनीअपनी सीट पर बैठ जाइए और शोर बंद कर दीजिए. सब लोग अपनेअपने डेस्क देख लीजिए, अपनीअपनी जेबें टटोल लीजिए. कहीं गलती से परीक्षा संबंधी कोई पुरजा आप के पास न हो. यदि हो तो उसे फाड़ कर फेंक दीजिए या अपने सुपरवाइजर साहब को सौंप दीजिए. आप के पास कोई भी अवांछित सामग्री नहीं होनी चाहिए.

(इस बीच लगभग सभी परीक्षार्थी अपनीअपनी सीटों पर बैठ चुके हैं तथा

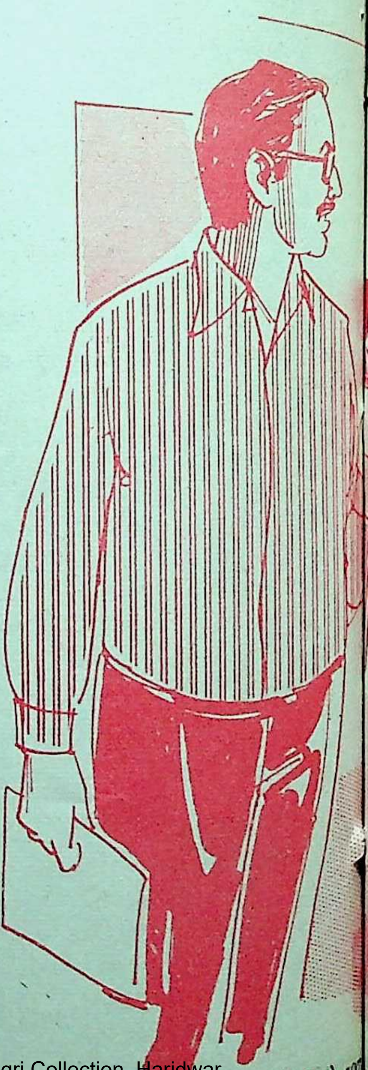

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चपरासी उन्हें उत्तरपुस्तिकाएं बांट रहे हैं. एक लड़का अपने डेस्क में से गाइड निकाल कर पीछे वाले को दिखाता है, फिर वापस डेस्क में रख लेता है. एक लड़की रूमाल निकाल कर झूठमूठ ही अपनी नाक पर फेरती है, जिस के ऊपर प्रश्नों के उत्तर बड़े बारीक अक्षरों में लिखे हुए हैं. एक और लड़का अपनी जेबों में हाथ डालडाल कर नोट्स के पन्ने तुड़ेमुड़े रूप में बाहर निकालनिकाल कर देखता है और फिर यथास्थान रख लेता है.)

सुपरिटेंडेंट : मिस्टर कश्यप, कृपया यहां आइए. आप भी तशरीफ ले आइए, मिस्टर इकबालसिंह.

पात्र परिचय

मिस्टर भल्ला : डिप्टी रजिस्ट्रार
कश्यप, इकबाल सिंह, मेनका } सुपरवाइजर
बचन, महेश } छात्र
सुपरिटेंडेंड, असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट आदि.
हुक्मी : चपरासी
स्थान : परीक्षा भवन

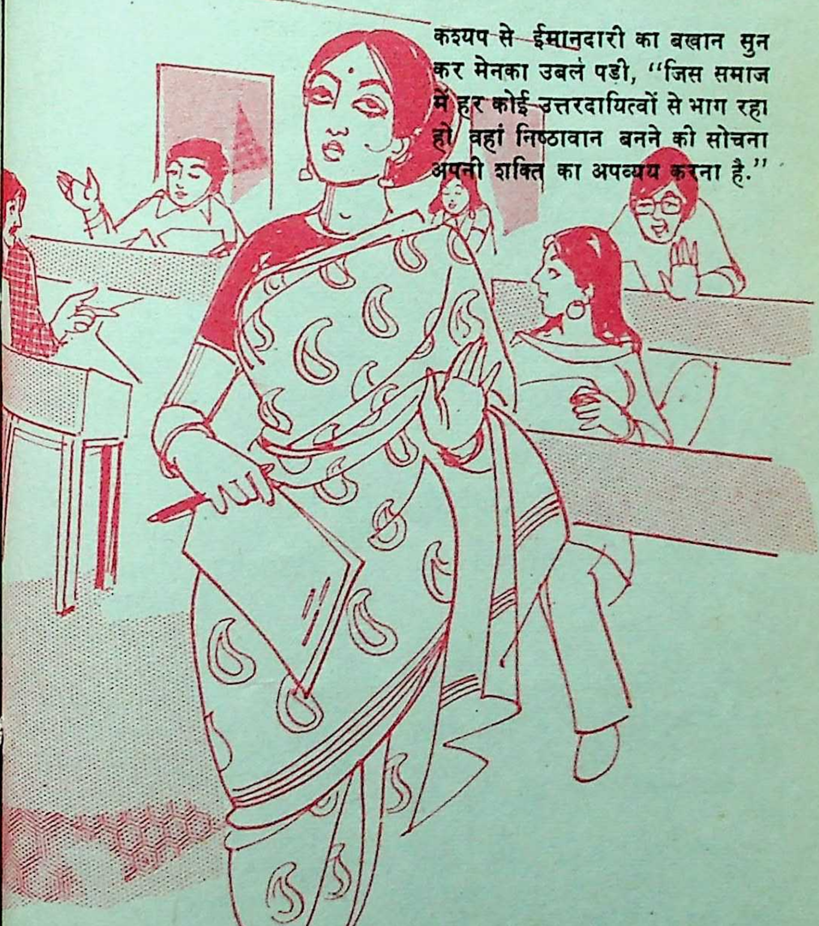

कश्यप से ईमानदारी का बखान सुन कर मेनका उबल पड़ी, "जिस समाज में हर कोई उत्तरदायित्वों से भाग रहा हो वहां निष्ठावान बनने की सोचना अपनी शक्ति का अपव्यय करना है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दोनों सुपरवाइजर मेज के पास आते हैं.)

सुपरिंटेंडेंट : आप लोगों ने सब परीक्षार्थियों के रोल नंबर चैक कर लिए?

(कश्यप और इकबालसिंह एकदूसरे की ओर देखते हैं.)

इकबालसिंह : जी, हां. वह तो हम रोज ही कर लेते हैं.

(कश्यप मुसकराता है.)

सुपरिंटेंडेंट : वह तो ठीक है लेकिन आज और अधिक गौर से चैक कर लीजिए. देखिए, कोई गलती न रह जाए. और हां, यह भी ध्यान रखिए कि कोई भी परीक्षार्थी अपनी सीट के अलावा और किसी सीट पर न बैठे.

इकबालसिंह : जी, यह ध्यान तो हम रोज ही रखते हैं.

(कश्यप मुसकराता है.)

सुपरिंटेंडेंट : फिर भी आज अधिक ध्यान रखिए.

कश्यप : ज़ी, बहुत अच्छा.

(दोनों चलने लगते हैं.)

सुपरिंटेंडेंट : अरे भई, यह प्रश्नपत्र भी तो लेते जाइए.

(दोनों प्रश्नपत्र लेते हैं.)

सुपरिंटेंडेंट : कृपया, एक बात और सुनते जाइए. यह खयाल रखिएगा कि कोई भी परीक्षार्थी एकदूसरे से बातें न करे, न उठ कर एकदूसरे के पास जाए और न बाहर से कोई पुरजापरचा मंगवाए.

इकबालसिंह : जी, यह खयाल तो हम रोज ही रखते हैं.

(कश्यप मुसकराता है.)

सुपरिंटेंडेंट : यह तो मैं जानता हूं, मिस्टर सिंह! लेकिन आज जरा ज्यादा ध्यान दीजिएगा. अरे, हां, मिस मेनका नहीं आईं अभी?

इकबालसिंह : जी, बस, आ रही होंगी.

सुपरिंटेंडेंट : अच्छा, ऐसा करिए आप लोग कि जब तक मिस मेनका न आएं, तब तक के लिए उन की कतारों को भी आप दोनों बांट लीजिए.

कश्यप : जी, वह तो हम रोज...

(खुद ही दांतों तले जीभ दबाता है. तब दोनों वापस जाने के लिए मुड़ते हैं.)

कश्यप : मिस्टर सिंह, यह क्या गोरखधंधा है? आज तो सब कुछ ही बदलाबदला नजर आ रहा है.

इकबालसिंह : हां, यार! बिलकुल वैसा हो रहा है, जैसा दसपंदरह साल पहले हुआ करता था. कुछ समझ नहीं आ रहा कि मामला क्या है?

कश्यप : एक बात और बड़े आश्चर्य की है, मिस्टर सिंह. आज तो सीनियर सुपरिंटेंडेंट साहब भी पधारे हुए हैं. बड़ी मुस्तैदी से गेट पर खड़े हैं. कुछ मामला गड़बड़ लगता है.

इकबालसिंह : और तो और, आज तो पुलिस वाले भी चौकन्ने हो कर चारों तरफ गश्त कर रहे हैं. रोज तो धूप में बैठे बीड़ियां फूंकते रहते थे. लेकिन आज एक काम बड़ा खराब हुआ, मिस्टर कश्यप.

कश्यप : क्या?

इकबालसिंह : मैं तो होम मिनिस्टरी से वादा कर के आया था कि पेपर शुरू करा कर वापस आ जाऊंगा, फिर हम बाजार चलेंगे. वह तो मुझे कच्चा चबा जाएगी.

कश्यप : आज तो वाकई न जाने किस झमेले में फंस गए? अरे, हां, मिस्टर सिंह, आज क्या इंस्पेक्शन होने वाला है?

इकबालसिंह : इस दूरदराज बस्ती में किसे आना है इंस्पेक्शन के लिए? अपने घर में बैठ कर ही रिपोर्ट लिख देंगे, इंस्पेक्टर साहब.

कश्यप : चलो, देखा जाएगा. अब तो पहले रोल नंबर चैक कर लें. सुपरिंटेंडेंट साहब भेड़िए की तरह हमारी ओर ही ताक रहे हैं.

(दोनों जल्दीजल्दी रोल नंबर चैक करना शुरू करते हैं. तभी मुसकराती हुई मिस मेनका प्रवेश करती हैं. रोज की तरह बड़ी लापरवाही से चहलकदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिप्टी रजिस्ट्रार मुआयने के बहाने परीक्षा केंद्र में न पहुंचते तो क्या उन्हें अध्यापकों की असलियत मालूम हो पाती?

करती हुई वह अपनी कतारों की ओर बढ़ती हैं.)

सुपरिटेंडेंट : मिस मेनका, जरा एक मिनट...

मेनका (नमस्ते कर के आश्चर्य के लहजे में) : जी, फरमाइए.

सुपरिटेंडेंट (मेज पर रखे टाइमपीस की ओर देख कर) : मिस मेनका, बात यह है कि आप थोड़ा समय पर ही आ आया करें.

मेनका : जी, मैं तो रोज ही समय पर आती हूं.

सुपरिटेंडेंट : वह तो ठीक है, मिस मेनका. मेरा मतलब है कि आज आप को थोड़ा जल्दी आ जाना चाहिए था.

मेनका : क्यों, सुपरिटेंडेंट साहब (मुसकरा कर) आज कोई विशेष बात है क्या?

सुपरिटेंडेंट : नहीं, नहीं, मिस मेनका. मैं तो यह कहना चाह रहा था कि आप को समय से थोड़ा पहले ही आना चाहिए. अच्छा, खैर, आप चलिए. और हां, आप की दोनों कतारों के रोल नंबर चैक करने का काम मैं ने मिस्टर इकबालसिंह और मिस्टर कश्यप को सौंपा था. अब आप देख लीजिए कि कोई भी परीक्षार्थी अपनी सीट न बदले.

मेनका : लेकिन, सर, वे पिछली दोनों कतारें तो हैं ही नेताओं के लड़कों की. उन में तो वे पहले दिन से ही अपनी मरजी से बैठ रहे हैं. अब तो आप सीटिंग प्लान लड़कों के बैठने के बाद बनवाया करें. इस से प्लान बनाने वाले को भी बड़ी सहूलियत रहेगी.

सुपरिटेंडेंट : वह भी देख लेंगे. आप आज तो किसी तरह ठीक करा दीजिए.

मेनका : बड़ा मुश्किल है, सर. सर, देखती हूं.

(मेनका तेज चाल से अपनी कतारों के बीच पहुंचती हैं.)

मेनका (एक लड़के से) : मिस्टर बचन! आप यहां कैसे बैठ गए? आप की सीट तो वह है, जिस पर अविनाशजी विराजमान हैं. आप अपनी सीट पर चलिए.

बचन : मगर, मैडम, मेरी सीट तो यही है. मैं रोज इसी पर बैठता हूं. (धीमी आवाज में) बात यह है, मैडम, कि मेरे आगे बैठी मिस बुलबुल ढेर सारा याद कर के आती हैं. उन से मुझे बड़ी मदद मिलती है.

मेनका : आज तो आप को अपनी सीट पर ही बैठना होगा, मिस्टर बचन! सुपरिटेंडेंट साहब का हुक्म है. मैं मजबूर हूं.

बचन : मगर, मैडम, मेरा तो बेड़ा गरक हो जाएगा. मुझे तो कुछ भी याद नहीं है.

मेनका : अच्छा, आप थोड़ी देर के लिए आ जाइए, फिर वहीं बैठा दूंगी.

(बचन और अविनाश अपनी सीटें बदलते हैं. इसी प्रकार कश्यप और इकबालसिंह भी कई परीक्षार्थियों की सीटें बदलवाते हैं. तभी एक घंटी की आवाज आती है. तीनों सुपरवाइजर पेपर बांटने शुरू करते हैं.)

सुपरिटेंडेंट : कोई पेपर के बिना तो नहीं रह गया? कृपया अपने हाथ उठाइए.

(कोई हाथ नहीं उठाता. सारे हाल में रोज की तरह भुनभुनाहट आरंभ हो जाती है.)

सुपरिटेंडेंट : अब, बच्चो, बातें बंद कर दीजिए. मिस्टर बचन, अब चुप हो जाइए. (पास खड़े कश्यप से) अपनी कतार के बच्चों को चुप कराइए, मिस्टर कश्यप.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कश्यप : लेकिन, सर, इतना तो रोज ही...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपरिटेंडेंट : ठीक है, मगर आज तो नहीं होना चाहिए. क्या समझे?

कश्यप : जी, समझ गया.

(कश्यप तेजी से अपनी कतारों के बीच चला जाता है.)

बचन : मैडम, पानी मंगा दीजिए.

मेनका : पानी पीपी कर कोसोगे क्या पेपर सैटर को? (चपरासी से) हुक्मी, पानी पिलाओ इन लोगों को, जो जितना पीना चाहे. तुम ने तो अच्छों-अच्छों को पानी पिलाया हुआ है?

(परीक्षार्थी अपनेअपने सिर उठा कर मिस मेनका की ओर देखते हैं तथा मुसकराते हैं. हुक्मी दोनों हाथों में पानी के गिलास लिए आता है.)

बचन (हुक्मी से गिलास लेते हुए) : गिलास के साथ यह कागज भी ले जाना. कैंटीन में बैठे विक्रम को दे देना. वह साथ ही तुझे मसाला दे देगा.

(हुक्मी हलके से सिर हिलाता है.)

एक लड़की (पास वाली से) : क्या बात है? आज तो साहब बड़े सक्रिय हो रहे हैं. रोज तो फाइल से सिर नहीं उठाते थे.

दूसरी लड़की : आज सीनियर सुपरिटेंडेंट जो आए हुए हैं.

(एक लड़का डेस्क में से गाइड निकाल लेता है तथा खोल कर घुटनों पर रख लेता है.)

कश्यप (लड़के के पास जा कर दबी जबान में) : अरे, यह क्या गजब कर रहे हो, महेश? तुम अपने साथ हमारा भी भट्ठा बिठवाओगे क्या?

महेश (दबी आवाज में) : सर, यह तो मैं रोज ही करता हूं.

कश्यप (दबी जबान में) : वह तो ठीक है, लेकिन आज तो मत करो.

महेश : सर, आज क्या बात है?

(कश्यप महेश की ओर आंख तरेरता है. महेश गाइड डेस्क के अंदर रख देता है.)

(सीनियर सुपरिटेंडेंट, जो संस्था के प्रिंसिपल हैं, हाल में प्रवेश करते हैं.)

सीनियर सुपरिटेंडेंट (सुपरिटेंडेंट से) : क्यों, मिस्टर भगत, सब कुछ ठीक है न? चपरासी खबर लाया है कि मिस्टर भटनागर इस बस से आ गए हैं, यहां पहुंचने ही वाले हैं.

सुपरिटेंडेंट : सर, कौन से भटनागर?

सीनियर सुपरिटेंडेंट : अरे, वही—जी. एम. एन. के. प्रिंसिपल, जो पिछले साल भी इंस्पेक्टर बन कर आए थे.

सुपरिटेंडेंट : अच्छा, अच्छा. वह नाटे से, जो काफी मोटे शीशे का चश्मा लगाते हैं.

सीनियर सुपरिटेंडेंट : बिलकुल वही. (खिड़की में से गेट की ओर देखते हैं) लो, वह आ गए. आओ, बाहर चल कर उन को ले आएं.

(दोनों तेजी से बाहर निकल जाते हैं. चंद क्षणों के बाद मिस्टर भटनागर के साथ अंदर प्रवेश करते हैं. तीनों आदमी सीधे तख्त पर चढ़ जाते हैं तथा कुरसियों पर सवार हो जाते हैं.)

भटनागर : कहिए, मिस्टर भगत. कैसा चल रहा है?

भगत : जी, सारा काम बड़े अच्छे ढंग से चल रहा है.

सीनियर सुपरिटेंडेंट : भटनागर साहब, मिस्टर भगत बड़े योग्य आदमी हैं. मजाल है जो इन की सुपरिटेंडेंटशिप में एक पत्ता भी खड़क जाए.

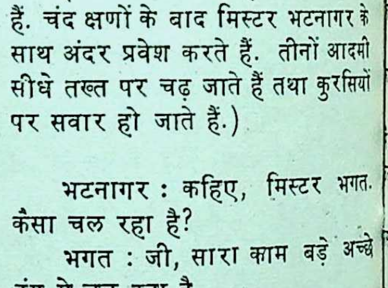

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भटनागर : क्यों नहीं, क्यों नहीं.

भगत : भटनागर साहब, यह तो हमारे सीनियर सुपरिंटेंडेंट साहब का व प्रशासन है. अगर हमें अपने यहां एक भी केस यूनिवर्सिटी को रिपोर्ट हीं करना पड़ा है तो उस का कारण में आप की उपस्थिति ही है.

भटनागर : क्यों नहीं, क्यों नहीं.

(भटनागर अपने ब्रीफकेस में से कुछ जात निकालता है तथा पूछताछ शुरू र देता है. सुपरिंटेंडेंट व असिस्टेंट रिंटेंडेंट भी अपनीअपनी फाइलें खोल ते हैं तथा विचारविमर्श शुरू कर देते सीनियर सुपरिंटेंडेंट साहब उठ कर में चहलकदमी करने लगते हैं. थोड़ी बाद वापस आ कर फिर अपनी कुरसी बैठ जाते हैं.)

बचन (मेनका से) : मैडम, यह बला टलेगी?

मेनका : टल जाएगी. तुम अपना म तो करो.

बचन : अपना काम क्या करूं, म? मिस बुलबुल के पास से आप ने दिया और हुक्मी...

मेनका : तो हुक्मी से मंगाया है ला. लो, वह आ गया.

(हुक्मी अंदर आता है. लेकिन वह सीनियर सुपरिंटेंडेंट के पास चला ता है तथा उन के कान में कुछ कहता)

सीनियर सुपरिंटेंडेंट : आइए, मिस्टर भटनागर, नाश्ता कर लें. आप का काम पूरा हो गया?

भटनागर (कागज समेटते हुए) : जी, हां. बस, मैं जरा हाल का एक राउंड लगा लूं.

(तख्त से उतर कर हाल में एक चक्कर लगाता है तथा ब्रीफकेस उठा कर सीनियर सुपरिंटेंडेंट के साथ बाहर निकल जाता है.)

इकबालसिंह (सुपरिंटेंडेंट से) : सर, मुझे एक बड़े जरूरी काम से घर जाना था.

सुपरिंटेंडेंट : अरे भाई, घर तो मुझे भी जाना है, लेकिन भटनागर साहब को नाश्ता तो कर लेने दीजिए. हो सकता है, नाश्ते के बाद वह फिर यहां आ धमकें.

(एक घंटा समाप्त होने की घंटी बजती है. हुक्मी दौड़ा हुआ अंदर आता है, तथा मिस्टर भगत के कान में कुछ कहता है. मिस्टर भगत का चेहरा खुशी से चमक उठता है. वह डिप्टी सुपरिंटेंडेंट को कुछ कह कर हाल से बाहर हो जाता है. डिप्टी सुपरिंटेंडेंट भी उस के पीछेपीछे गायब हो जाता है.)

इकबालसिंह (कश्यप से) : अच्छा, मिस्टर कश्यप, मैं तो चलता हूं. श्रीमतीजी खाने के लिए इंतजार करती होंगी.

(हाल से बाहर चला जाता है.)

मेनका (कश्यप के पास आ कर) : मिस्टर कश्यप, आइए, जरा कैंटीन तक चलें. एकएक प्याला चाय ही ले लें.

हसीनों को छेड़ा है किस कदर?

तुम एक रह गए हो हमारी निगाह में,
सब नाजनी हमारी नजर से उतर गए.

✦

हम ने भी इन हसीनों को छेड़ा है किस कदर?
ऐसा भी कोई है जो हमें कोसता न हो.

—रियाज खैराबादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तो चक्कर काटकाट कर थक गई हूं.

कश्यप : आप को आदत नहीं है न इसी लिए. आप कैंटीन हो आइए, मैं यहीं ठहरता हूं.

मेनका : क्यों, आप क्यों नहीं चलेंगे? हमारे असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट मिस्टर दीनानाथ तो यहां बैठे ही हैं.

कश्यप : नहीं, मेरी इच्छा नहीं है चाय पीने की. आप हो आइए.

मेनका (मुसकरा कर) : मैं खूब समझती हूं आप की अनिच्छा को, मिस्टर कश्यप. आप विश्वविद्यालय के आठ रुपए नमक हलाल बन कर लेना चाहते हैं. मगर एक बात याद रखिए, मिस्टर कश्यप, हमारी परीक्षा प्रणाली इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि आप जैसे दोचार व्यक्तियों से सुधरने वाली नहीं है.

कश्यप : मैं आप से एकदम सहमत हूं, मिस मेनका. जो कुछ यहां हो रहा है और रोज होता है, उसे मैं रोक नहीं सकता. लेकिन अपनी अंतरात्मा कहती है कि जिस काम के लिए यूनिवर्सिटी हमें पैसे दे रही है, हमें वह ईमानदारी से करना चाहिए.

मेनका : अपनीअपनी राय है, मिस्टर कश्यप. मेरा मत है कि जिस समाज में सभी लोग अपनेअपने उत्तरदायित्वों से भाग रहें हों, वहां निष्ठावान बनने की चेष्टा अपनी शक्ति का अपव्यय है. खैर, मैं अभी पांच मिनट में आती हूं.

(मिस मेनका हाल में से बाहर चली जाती हैं. उसी समय बचन और अविनाश अपनीअपनी सीटें बदल लेते हैं और भी कई विद्यार्थी सीटें बदलने लगते हैं.)

कश्यप : यह आप क्या कर रहे हैं, मिस्टर बचन? आप अविनाश की सीट पर क्यों आ गए हैं?

बचन : सर, यह मेरी ही सीट थी. मैडम ने मुझे जबरदस्ती उठा दिया था.

(अनेक विद्यार्थी इधरउधर ताकझांक व पूछताछ में संलग्न हो जाते हैं.)

कश्यप : देखिए, बातें बंद करिए आप लोग. अपनाअपना काम करिए. मिस्टर, आप सारस की सी गरदन आगे बढ़ा कर क्या देखने की कोशिश कर रहे हैं? आप के लिए दूरबीन मंगवाऊं?

असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट (कश्यप के पास आ कर) : मैं अभी आ रहा हूं, मिस्टर कश्यप. जरा शौचालय तक जा रहा हूं.

(हाल से बाहर चला जाता है. अकेला कश्यप पूरे हाल में घूमता, उत्तर-पुस्तिकाएं बांटता तथा परीक्षार्थियों के दुष्प्रयत्नों को रोकने की कोशिश करता हुआ दिखाई पड़ता है. तभी डिप्टी सुपरिंटेंडेंट के साथ एक नया व्यक्ति प्रवेश करता है.)

डिप्टी सुपरिंटेंडेंट (कश्यप से) : मिस्टर कश्यप, आप हैं विश्वविद्यालय के डिप्टी रजिस्ट्रार मिस्टर भल्ला. मुआयना करने आए हैं इस परीक्षा केंद्र का.

कश्यप (हाथ मिला कर) : बड़ी खुशी हुई आप से मिल कर.

भल्ला : बहुतबहुत शुक्रिया. कहिए, आप के अन्य साथी कहां चले गए?

कश्यप : जनाब, सीनियर सुपरिंटेंडेंट साहब तो इंस्पेक्टर साहब के साथ चले गए थे. सुपरिंटेंडेंट साहब भी शायद उन के साथ ही गए हैं. मिस्टर इकबालसिंह को कोई उन के घर से बुलाने आ गए थे. शायद उन की पत्नी की तबीयत अचानक खराब हो गई है. मिस मेनका बहुत थक गई थीं, सो एक प्याला चाय पीने कैंटीन गई हैं.

भल्ला : लेकिन यहां तो क्लर्क साहब भी नजर नहीं आ रहे हैं और हमारे असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट भी...

कश्यप : वह दो मिनट के लिए शौचालय तक गए हैं.

भल्ला : तो इस का मतलब यह हुआ कि इम्तिहान का सारा काम आप के सिर पर चल रहा है.

कश्यप : जी, नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है. अपनाअपना काम सभी लोग कर रहे हैं. यह तो एक इत्तिफाक ही है कि आप तशरीफ लाए हैं तो यहां मेरे अलावा और कोई भी नहीं है.

भल्ला : मिस्टर कश्यप, अपने सह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्मियों के पक्ष में जो कुछ आप कह रहे हैं, उस के लिए मैं आप की प्रशंसा करता हूं. वैसे मुझे इस केंद्र के सभी हालात डिप्टी साहब ने बता दिए हैं. इसलिए आप की पानी पर मलाई जमाने की कोशिश बेकार है. मगर हां, डिप्टी साहब आप के जबरदस्त प्रशंसक हैं तथा मैं ने अपनी आंखों से भी देख लिया है. आप के निष्ठापूर्ण कार्य को देखते हुए मैं इस केंद्र के स्टाफ को आज ही इस कार्य से मुक्त कर रहा हूं, मगर...

कश्यप : मगर एक बात है, जनाब, इस प्रकार स्टाफ को कार्यमुक्त करने से ही परीक्षा की समस्याएं समाप्त नहीं हो जाएंगी. ये समस्याएं हमारी शिक्षा प्रणाली तथा परीक्षा प्रणाली के निरर्थक व निरुद्देश्य होने के परिणाम हैं.

मल्ला : मैं आप की बात से सौ फीसदी सहमत हूं, मिस्टर कश्यप. हम लोग बहुत जल्दी इन प्रणालियों में परिवर्तन कर रहे हैं. किंतु यह कार्य आज ही नहीं हो सकेगा. आज तो उन लोगों को ही कार्यमुक्त किया जा सकेगा जो अपने उत्तरदायित्व से भाग रहे हैं.

कश्यप : जनाब, मैं तो यह समझता हूं कि जो लोग. अपने काम में कोताही कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ लिया है कि इस काम में शक्ति लगाना शक्ति का अपव्यय मात्र होगा.

भल्ला : मैं आप के तर्क से कतई

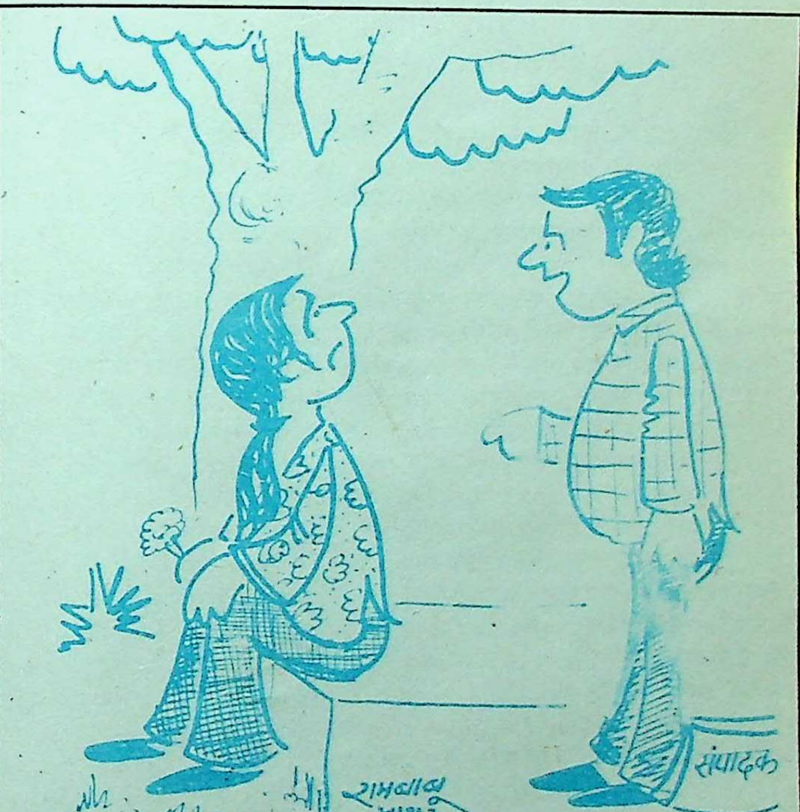

"प्रिये, मेरे प्यार में कोई कमी नहीं आई है, लेकिन कागज की कमी को देखते हुए मैं ने 'प्रेम पत्र' लिखने में तीस प्रति शत की कमी कर दी है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सहमत नहीं हूं, मिस्टर कश्यप. मैं आप के कार्य से आश्वस्त हूं. मुझे मालूम है कि एक पूरा परीक्षा केंद्र एकदो व्यक्तियों के निष्ठापूर्ण कार्य से नहीं चलाया जा सकता. फिर भी आप जो कुछ कर सकते हैं, वह तो कर रहे हैं. यदि आप के अन्य मित्र भी पूरी शक्ति व ईमानदारी से यह कार्य चलाना चाहते तो क्या यह कार्य सुचारू रूप से न चलता?

कश्यप : यह परीक्षा प्रणाली समय से तो निश्चय ही पिछड़ गई है, जनाब! लेकिन हां, सामूहिक प्रयत्न से इसे अभी और खींचा जा सकता है.

(दो घंटे पूरे होने की घंटी बजने लगती है.)

भल्ला : अच्छा, मिस्टर कश्यप, इस केंद्र का सुपरिंटेंडेंट मैं आप को नियुक्त कर रहा हूं. मुझे आप से अच्छा और कोई आदमी नजर नहीं आ रहा है.

कश्यप : जी, मुझे! मैं इस योग्य नहीं हूं. आप डिप्टी साहब को यह पद दीजिए.

भल्ला : आप का यह सुझाव आप के ऊंचे चरित्र को परिलक्षित करता है. अभी मैं इसे ही असली रूप देता हूं, लेकिन मुझे भविष्य में आप का ध्यान रहेगा.

(परदा गिरता है.) ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरितामुक्ता रिप्रिंट सेट नं. 2

ईश्वर, आत्मा और पाप–डा. अ. मथाई, **कितना महंगा धर्म**–सखा बोरड़, **कितना महंगा धर्म : आलोचनाओं का उत्तर**–सखा बोरड़, **राम कथा व सीता चरित्र**–रामशरण सिंह, **सताई गई नारी**–उपेंद्र नाथ राय, **सरिता और हिंदू समाज; तुलसी साहित्य अनुवादों की सफल नुमाइश के सिवा क्या है?**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **तुलसी साहित्य, आलोचनाओं का उत्तर**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **रावण**–अविनाश, **हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?**–प.क. पुट्टूस्वामी, **राम चरित मानस के अविश्वसनीय प्रसंग**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **राम चरित मानस के असंगत स्थल**–गंगासहाय 'प्रेमी', **श्रीकृष्ण**–म. प्र. दीक्षित, **गीता : कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्मप्रचार**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **क्या कौमार्य रक्षा दकियानूसी है?**–कंचन, **कृष्ण और राधा**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **श्रीमद्भागवत्**–गंगासहाय 'प्रेमी', **भागवत और भूगोल**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **समाजवाद बनाम स्वतंत्रता**–कुमार काश्यप, **कामायनी**–सुदर्शन चोपड़ा, **हिंदू विवाह पद्धति, पुत्रेष्टि यज्ञ**–बसंत चटर्जी, **तुलसीदास और हिंदू समाज**–सुदर्शन चोपड़ा, **हिंदी साहित्य का गलत इतिहास**–सुदर्शन चोपड़ा, **धनुषयज्ञ**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **कृष्ण और गोपियां**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **क्या समाजवाद अनिवार्य है?**–बसंत चटर्जी, **हमारे देव मंदिर**–कुमार काश्यप, **विवाहपूर्व यौन संबंध**–अणिमा, **श्रीकृष्ण अपने जीवन की संध्या में, कितना महंगा धर्म**–(निर्णय), **कृष्ण और कुब्जा**–गंगासहाय 'प्रेमी,' **हमारे पालतू जानवर**–शशिभारत व्होरा, **प्रेम पत्र न लिखिए**–शकुंतला, **डायरी न लिखिए**–शकुंतला.

सेट नं. 2 का मूल्य पांच रुपए. मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. वी. पी. पी. भेजना संभव नहीं.

दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चित्रावली

● मछलीमछली कैसी मछली! आस्ट्रेलिया के दो शौकिया मछुहारे पाल ग्रेब्ज और चार्ल्स जैक्सन [illegible] विशालकाय हरे रंग की आरा मछली को फंसी हुई देख कर खुशी से उछल पड़े. क्योंकि इस से पहले उन्होंने इतने बड़े आकार की मछली कभी नहीं देखी थी, जिस की लंबाई 16½ फुट और वजन एक हजार पौंड से भी अधिक हो. (चित्र में) अपने शिकार के साथ ग्रेब्ज और जैक्सन.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

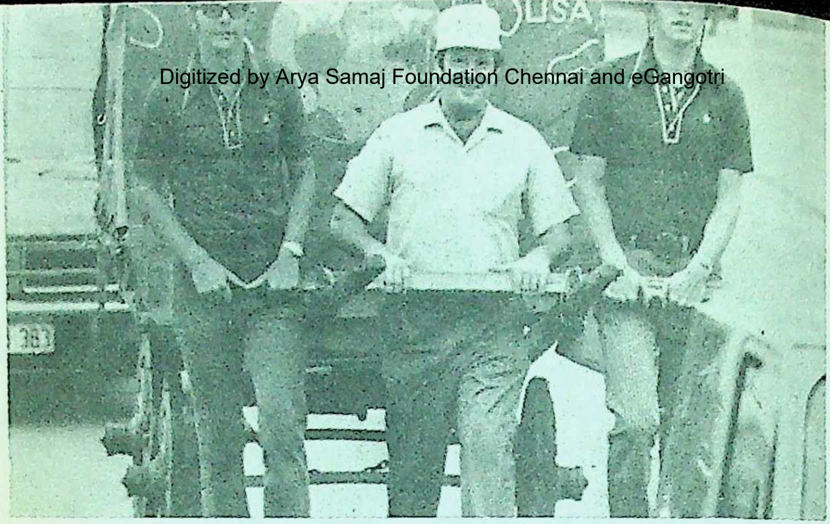

● चल पड़े देशदेश ..शहरशहर...गलीगली पैदल! संसार के लोगों का ध्यान 'संयुक्त राष्ट्र बाल आपतकालीन कोष' की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से डेव और जान नाम के दो भाई संसार की यात्रा करने जून, 1970 में निकल पड़े. उन्होंने अपनी गाड़ी पर 'यूनीसेफ' लिखा और स्वयं ही गाड़ी को चलाने लगे. अक्तूबर, 1972 में जब वे अफगानिस्तान पहुंचे तो लुटेरों ने उन्हें घेर लिया. लुटेरों ने जान को मार डाला तथा डेव को बुरी तरह जख्मी कर दिया. डेव ने 4 महीने तक अमरीका में रह कर अपना इलाज करवाया और अपने दूसरे भाई पीटर के साथ वह फिर अफगानिस्तान आया. अब ये दोनों भाई बिना खच्चर की गाड़ी को ले कर आस्ट्रेलिया पहुंचे हैं. चित्र में (बाएं) पीटर, (दाएं) डेव तथा (बीच में) खच्चर की जगह उन का एक मित्र रान फारचून आस्ट्रेलिया की सड़कों पर अपने उद्देश्य को पूरा करने जा रहे हैं.

● घर नहीं तो क्या तंबू तो है : संसार के अन्य बड़े देशों की भांति इंगलैंड में भी रहने की समस्या दिनबदिन विकराल होती जा रही है. यहां तक कि लोग सड़कों पर तंबू लगा कर उस में रहने लगते हैं. एसेक्स निवासी लेस्ले और सफुलर युवतियों के सामने रहने की समस्या पैदा हुई तो उन्होंने 15 फुट के घेरे में एक तंबू लगा लिया और उस में रहने लगीं. बच्चों को पढ़ा कर स्कूल से थकीमांदी लौटी इन दोनों अध्यापिकाओं को शुरू में तो अपने इस नए घर में कैंपिंग का आनंद आया लेकिन कुछ समय बाद आधुनिक सुविधाओं के होते हुए भी तंग जगह उन्हें अखरने लगी. तभी तो वे हफ्ते के पांच दिन तंबू में रह कर छुट्टी के दिन अपनेअपने घर जा कर बिताती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

● माडल या मंत्री? टोरो की राजकुमारी एलिजाबेथ ने अब माडलिंग करना छोड़ दिया है और राजनीति [illegible] युगांडा के राष्ट्रपति ईदी अमीन ने एलिजाबेथ को विदेश मंत्री बना कर युगांडा की राजनीति को एक नया मोड़ दिया है क्योंकि वहां पर अभी तक कोई महिला मंत्री पद पर नहीं थी. एलिजाबेथ ब्रिटेन से विधि में स्नातक है. इस ने काफी समय तक लंदन में माडलिंग की. विदेश मंत्री बनने से पहले वह काहिरा में युगांडा की राजदूत तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में युगांडा की प्रतिनिधि भी रह चुकी है.

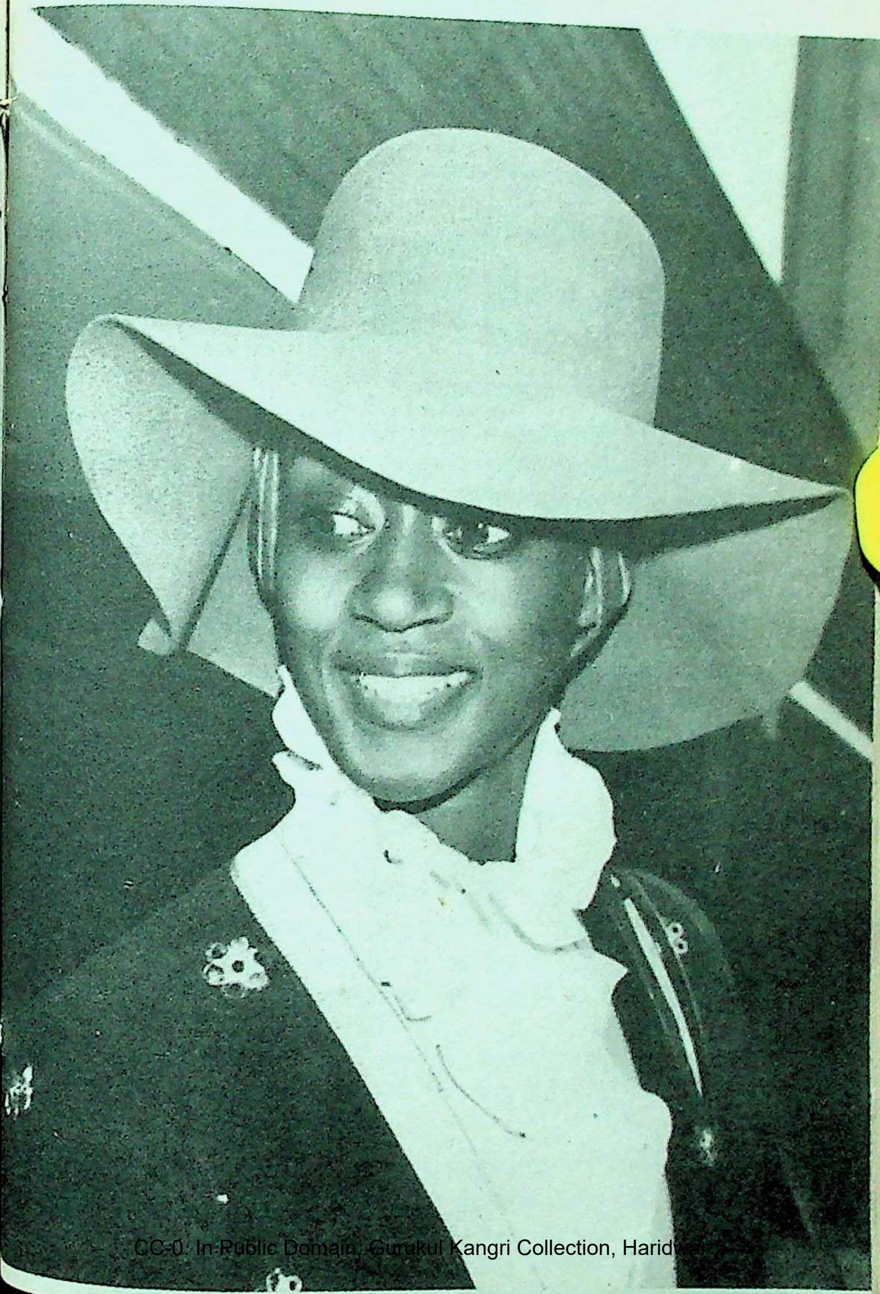

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विश्व पाकेट बुक्स की तीन नई पुस्तकें

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवां फेरा (उपन्यास : प्रेमलता बहादुर)

हर लड़की को किसी लड़के के साथ जिंदगी में सात फेरे लेने होते हैं. इस लिहाज से इसे एक साधारण बात कहा जा सकता है. लेकिन इस साधारण बात के साथ एक असाधारण बात और जुड़ी हुई है कि वह सात फेरे किस के साथ ले?

यौवन की देहरी पर पहुंची एक आधुनिक लड़की की समस्याओं का समाधान पेश करने वाला आधुनिक युग का उपन्यास.

मूल्य रु. 4.00 डाक व्यय रु. 1.50

रेगिस्तान के रंगीन फूल (उपन्यास : रमेश गुप्त)

अपने बीमार पिता, बूढ़ी मां और गैरजिम्मेदार भाई की जिंदगी का बोझ ढोतेढोते अंजु थक गई थी...उस की नसनस इस भारी बोझ के तले दब कर चटक गई थी...

...एक कार्यशील नारी की संघर्षमय जिंदगी का रोचक इतिहास.

रु. 4.00 डाक खर्च 1.50

रोजविला की कहानी (उपन्यास : आनंदसागर 'श्रेष्ठ')

सात साल पहले हुई एक सनसनीखेज हत्या का सुराग लगाने इंसपेक्टर आनंद काशीपुर पहुंचा तो नई उलझनों में फंस गया. हत्या की जिस कड़ी को वह अपने हाथ में लेता वही उस के लिए अपने चारों ओर एक अजीब वातावरण छोड़ जाती...

जानेमाने उपान्यासकार आनंदसागर 'श्रेष्ठ' का एक सनसनीखेज उपन्यास जो आप को रोमांच के अनोखे वातावरण में ले जा कर आश्चर्यचकित कर देगा.

मूल्य रु. 4.00 डाक व्यय रु. 1.50

तीनों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की विशेष छूट

कृपया अपने आर्डर की 25% राशि अग्रिम भेजें.

मिलने का पता :

दिल्ली बुक कंपनी एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1

हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति, नई दिल्ली की ओर से सन 1972 में प्रकाशित हिंदी की सात मौलिक पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार दिया गया है. यह समिति पिछले कई सालों से हिंदी में लिखी पुस्तकों को दो विभिन्न विषयों पर पुरस्कार देती आ रही है. उन में से एक विषय तो साहित्य है और दूसरा विषय कौन सा है?

(क) अर्थशास्त्र
(ख) राजनीतिशास्त्र
(ग) दर्शनशास्त्र

देश विदेश के बारे में आप को कितनी जानकारी है?

हम यहां राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि विभिन्न विषयों पर सामान्य ज्ञान के कुछ प्रश्न दे रहे हैं. हर प्रश्न के साथ तीन उत्तर हैं जिन में से एक ठीक है. अगर आप के सभी उत्तर ठीक हैं तो आप का ज्ञान उत्तम है. अगर आप के आधे से भी अधिक उत्तर ठीक हैं तो आप का ज्ञान सामान्य है. अगर आप के आधे से भी अधिक उत्तर गलत हैं तो आप को अपना ज्ञान बढ़ाने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है.

2

न्यूजीलैंड में आयोजित दसवें राष्ट्रमंडलीय खेलों में इंगलैंड ने सब से ज्यादा स्वर्ण पदक जीते थे. सब से अधिक ताम्र पदक जीतने वाला कौन सा देश था?

(क) कनाडा
(ख) आस्ट्रेलिया
(ग) न्यूजीलैंड

3

लोकप्रिय कलाकार संजीवकुमार ने हिंदी फिल्म 'कोशिश' में सर्वोत्तम कलाकार का दूसरी बार 'भरत पुरस्कार' जीता है. उसे पहला 'भरत पुरस्कार' सन 1971 में किस फिल्म में मिला था?

(क) खिलौना
(ख) दस्तक
(ग) आशीर्वाद

4

विश्व भर में सब से पहले किस देश ने परिवार नियोजन कार्यक्रम की सरकारी तौर पर शुरुआत की?

(क) स्वीडन
(ख) भारत
(ग) चीन

5

केंद्रीय ईंधन अनुसंधान संस्थान आजकल कोयले को तरल ईंधन में परिवर्तन करने पर खोज कर रहा है. इस का संचालन केंद्र कहां खोला गया है?

(क) गोलगोरा (बिहार)
(ख) भोपाल (मध्यप्रदेश)
(ग) गंजाम (उड़ीसा)

6

सरकारी क्षेत्र में चलने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारतीय जहाजरानी निगम ने हाल ही में विश्वेश्वरैया और विवेकानंद नामक दो विदेशी तेल टैंकर प्राप्त किए हैं. इन में से पहला सोवियत रूस का बना है. दूसरा कहां बना है?

(क) नार्वे
(ख) नीदरलैंड
(ग) जापान

7

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित की गई एक निर्देशिका के अनुसार विदेशी पर्यटकों के लिए सब से महंगी राजधानी टोकियो है. सब से सस्ती कौन सी राजधानी है?

(क) पेरिस
(ख) न्यूयार्क
(ग) लंदन

8

आठवें अंतर्राष्ट्रीय कृषि फिल्म समारोह में भारत ने पांच वृत्त चित्रों पर पुरस्कार जीते थे. यह समारोह किस देश में आयोजित हुआ था?

(क) रोम
(ख) पेरिस
(ग) बर्लिन

9

क्राइस्ट चर्च में आयोजित दसवें राष्ट्रमंडलीय खेलों में भाग लेने वाले 41 देशों की उद्घाटन परेड में भारतीय ध्वज किस खिलाड़ी ने उठाया था?

(क) चंद्र नारायनन
(ख) मुनि स्वामी वेनु
(ग) राधेश्याम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

सूडान के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री सादक अल महदी को किस अपराध में गिरफ्तार किया गया है?

(क) कम्युनिज्म के प्रचार में
(ख) राष्ट्रपति न्यूमेरी की सरकार के विरोध में
(ग) अवैध रूप से धन इकट्ठा करने में

11

विश्व मुक्केबाज संघ, होनोलुलु ने किस खिलाड़ी को '1973 का मुक्केबाज' घोषित किया है?

(क) जार्ज फोरमैन
(ख) जो फ्रेजियर
(ग) केन नार्टन

12

सरकारी सूत्रों के अनुसार पंजाब के होशियारपुर जिले में सीलिका रेत का विशाल भंडार मिला है. सीलिका रेत का प्रयोग निम्न किस वस्तु को बनाने में किया जाता है?

(क) सीमेंट
(ख) कांच
(ग) खाद

उत्तर : (1) ग, (2) ख, (3) ख, (4) ख, (5) क, (6) ग, (7) ग, (8) ग, (9) ख, (10) ख, (11) क, (12) ख. ●

उड़ते कीड़ों पर नियंत्रण

उड़ते कीटों पर नियंत्रण के लिए एक गैर रासायनिक प्रणाली के पांच नमूने तैयार किए गए हैं. इस प्रणाली के द्वारा कीटों को लुभाया जाता है और तब मार डाला जाता है. इस प्रकार घरेलू मच्छरों के खात्मे के लिए भी यह बड़ी उपयोगी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्पिरीन

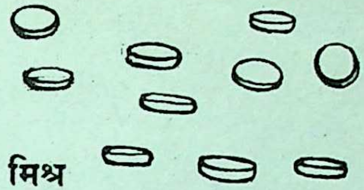

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

बिना सोचेसमझे एस्पिरीन का अंधाधुंध प्रयोग कितना घातक होता है!

सन 1968 में एकाएक, एक दिन विश्व के प्रमुख समाचार पत्रों में सुर्खी आई, 'व्योम यात्री असामान्य रोग से पीड़ित.' समाचार के अनुसार व्योम-यात्री जान बुल को श्वास लेने में कठिनाई तो थी ही, वह शीघ्र हांफने लगते थे. डाक्टरों के अनुसार उन्हें सामान्य अस्थमा रोग न था वरन् वह एस्पिरीन असहिष्णुता से पीड़ित थे.

एस्पिरीन असहिष्णुता अर्थात एस्पिरीन को बरदाश्त न कर सकना, असामान्य स्थिति है. सामान्यतया एस्पिरीन का उपयोग सर दर्द, ज्वर तथा जोड़ों के दर्द को कम करने के लिए किया जाता है. सर दर्द तथा ज्वर में इस का उपयोग तो आम है. और चूंकि यह औषधि परचून वाले से ले कर दवा विक्रेता तक, बिना डाक्टर के नुस्खे के मिल सकती है, अतः इस का उपयोग खास कर स्त्रियां ऐसे करती हैं जैसे कि शक्कर, नमक या चाय का.

इधर कुछ वर्षों से इस औषधि के दुष्प्रभाव समाचारपत्रों तथा चिकित्सा संबंधी पत्रिकाओं की सुर्खी बन गए हैं. इन दुष्प्रभावों में चमड़ी पर खारिश हो जाना, अस्थमा तथा मल में खून जाना मुख्य हैं.

एस्पिरीन का इतिहास

सन 1763 में एक अंगरेज एडवर्ड स्टोन ने खोज की कि 'शरपत' की छाल के 'सार' का उपयोग ज्वर कम करने के लिए हो सकता है. किंतु उपरोक्त सार का अधिक उपयोग न हुआ. सन 1860 में ज्ञात हुआ कि 'सार' का प्रमुख अंग सालिसिलिक अम्ल है. सन 1874 में यह महत्त्वपूर्ण खोज हुई कि सोडियम सालिसिलेट में ज्वर नाशक गुण तो है ही, साथ ही जोड़ों के दर्द में भी लाभदायक है. किंतु इस का स्वाद खराब था तथा लेने वाले को उल्टी हो जाती थी.

सन 1893 में जरमन वैज्ञानिक हरमान ड्रेसर ने एसिटाइल सालिसिलिक अम्ल का निर्माण किया. इस में सोडियम सालिसिलेट के सब गुण तो थे, किंतु दुर्गुण न थे. इस को बेयर कंपनी ने एस्पिरीन के नाम से बाजार में बेचना शुरू किया. एक अनुमान के अनुसार आजकल विश्व भर में करोड़ों किलो एस्पिरीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष भर में बिक जाती है.

सर्वप्रथम सन 1920 में एस्पिरीन के दुष्प्रभाव सामने आए. किंतु काफी समय तक एस्पिरीन के दुष्प्रभाव केवल चिकित्सकों को ही ज्ञात रहे और सामान्य जनता इन से अनजान रही. इन दुष्प्रभावों में एस्पिरीन जनित अस्थमा मुख्य है. यह रोग तुरंत न हो कर, दवा खाने के 15 मिनट से तीन घंटे बाद तक होता है और दवा बंद कर देने पर भी बना रहता है.

'एस्पिरीन असहिष्णुता' बच्चों को नहीं होती, किंतु 13 वर्ष की आयु के बाद कभी भी हो सकती है. यह किसी को कभी भी हो सकती है. इसे न तो सामान्य एलर्जी परीक्षणों से ज्ञात किया जा सकता है, न ही एलर्जी नाशक औषधियों से दूर किया जा सकता है क्योंकि यह एस्पिरीन से एलर्जी होने के फलस्वरूप नहीं होता है.

इस का संभावित कारण शरीर में मेटाबोलिक अव्यवस्था का उत्पन्न होना है. शरीर के जीवित अंगों में लगातार रासायनिक परिवर्तन होते रहते हैं जिसे मटाबोलिज्म कहते हैं. इस क्रिया में अव्यवस्था हो जाने के कारण 'एस्पिरीन असहिष्णुता' हो जाती है.

जिन व्यक्तियों की नाक बारबार बंद हो जाती है या जो साइनस संक्रमणता से पीड़ित होते हैं, अथवा जो अस्थमा पीड़ित होते हैं, उन्हें एस्पिरीन असहिष्णुता हो जाती है. पित्ती रोग से पीड़ित होने वाले, एस्पिरीन के फलस्वरूप, इस रोग से शीघ्र पीड़ित हो जाते हैं.

किंतु संभवतः सब से भयंकर दुष्प्रभाव मल के साथ खून का जाना है. एक खोज के अनुसार चूंकि एस्पिरीन रक्त के थक्के बनने की क्रिया में बाधक बन जाता है अतः रक्त बह निकलता है. इस बह निकले रक्त की मात्रा एक दो चम्मच से कई लिटरों तक हो सकती है. यदि पेट में कोई अन्य रोग है या शराब अधिक पी गई है तो एस्पिरीन अधिक दुष्प्रभावकारी हो जाती है. यदि रोगी की पहले से ही रक्त थक्का क्रिया दोषपूर्ण है तो एस्पिरीन उसे और अधिक खराब कर देती है.

एस्पिरीन से लाभ

यदि एस्पिरीन को भोजन, दूध या जल के साथ लिया जाए तो उस के दुर्गुण कम हो जाते हैं. अतः इन के साथ ही उसे लिया जाना चाहिए. यदि एक ओर एस्पिरीन रक्त थक्का न बनने दे कर रक्त प्रवाहित कर देती है, जिस से खून की कमी और शीघ्र थकान हो सकती है तो दूसरी ओर इस दोष का लाभप्रद उपयोग भी हो सकता है.

आप संभवतः जानते हैं कि कारोनेरी धमनी तथा मस्तिष्क की रक्त वाहिकाओं में रक्त के थक्के बन जाते हैं, जिस से रक्त की आवश्यक मात्रा हृदय तथा मस्तिष्क तक नहीं पहुंच पाती, फलस्वरूप दिल का दौरा जैसे घातक रोग हो जाते हैं. अतः यह संभव है कि यदि एस्पिरीन की निश्चित मात्रा नियमबद्ध रूप से ली जाए तो रक्त थक्का नहीं बनेगा. और रक्त थक्का बनने के फलस्वरूप उत्पन्न रोगों के दुष्प्रभाव कम हो जाएंगे. किंतु यह लाभ केवल उन को

सरिता मुक्ता विकास योजना

सरिता मुक्ता विकास योजना के अंतर्गत सरिता मुक्ता के 48 अंक बिना कुछ खर्च किए पढ़िए (इन का मूल्य 96 रुपए होता है.)

इस योजना के अंतर्गत जमा राशि केवल 750 रुपए है जो 3 किस्तों में जमा कराई जा सकती है. यह राशि 6 महीने के नोटिस पर लौटाई जा सकेगी.

चैक या ड्राफ्ट इस पते पर भेजें :

दिल्ली प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड,
दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होगा जिन की रक्त थक्का क्रिया ठीक प्रकार से कार्य कर रही है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्पिरीन का कार्य

शरीर में एस्पिरीन किस प्रकार कार्य करती है? यद्यपि यह अभी भी अनुसंधान का विषय है, किंतु जो कुछ भी ज्ञात हुआ है उस के अनुसार एस्पिरीन एसिटाइल सालिसिलिक अम्ल के रूप में शरीर की तमाम कोशिकाओं में पेट तथा छोटी आंत की सहायता से फैल जाती है. इन कोशिकाओं में एस्पिरीन सालिसिलिक तथा एसेटिक अम्लों में टूट जाती है. एसेटिक अम्ल सेरम प्रोटीन जैसे एलबुमिन प्रोटीन से बंध जाता है. कुछ ऐसी औषधियां होती हैं जो एलबुमिन प्रोटीन से ऐसे जुड़ जाती हैं कि आवश्यक स्थान पर पहुंचने पर वे प्रोटीन से अलग हो नहीं पाती हैं अर्थात उन औषधियों का उपयोग समाप्त हो जाता है और वे अपना कार्य नहीं कर पातीं.

शरीर में एक प्रोस्टग्लांडिस नाम का हारमोन सदैव संश्लेषित होता रहता है. यह हारमोन फेफड़े, आंत, गर्भाशय तथा रक्त नलिकाओं को फैला तथा सिकोड़ सकता है. यह हारमोन शरीर के लगभग हर तंतु में होता है तथा ज्वर एवं सूजन उत्पन्न कर सकता है. एस्पिरीन शरीर में प्रवेश कर इस हारमोन के संश्लेषण में रुकावट डालती है और ज्वर कम होने लगता है. अब ऐसे प्रयोग चल रहे हैं जो एस्पिरीन की इस लाभकारी क्रिया को बढ़ाएंगे किंतु दुष्प्रभावों को दूर करेंगे.

किंतु जब तक ऐसी औषधि बाजार में न आए, तब तक ऐसे रोगियों को, जिन्हें खून जाता हो, एस्पिरीन नहीं लेनी चाहिए, गर्भवतियों को गर्भ के प्रथम तीन महीनों तथा अंतिम सप्ताहों में एस्पिरीन नहीं लेनी चाहिए. एस्पिरीन के दुष्प्रभाव से कुरचित बच्चे उत्पन्न हो सकते हैं.

एस्पिरीन का प्रमुख गुण ज्वर कम करना है. आश्चर्य की बात यह है कि यह बुखार तो कम करता है, किंतु इस से तापमान सामान्य से नीचे नहीं जाता.

एस्पिरीन सर दर्द, दांत व जोड़ों के दर्द तथा मोच में लाभकारी है, किंतु यह पेट के दर्द या मरोड़ और कालिक दर्द में नहीं ली जानी चाहिए. जुकाम में भी यह लाभप्रद नहीं है. सब से मुख्य बात यह है कि यह दवा लाभकारी तो अवश्य है किंतु इस के दुष्प्रभाव भी भयंकर हैं. अतः जब मन चाहे तब नहीं लेनी चाहिए. ●

एक हजार व्यक्तियों द्वारा रोज आत्महत्या

जेनेवा में हुई विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक सभा में बताया गया कि कम से कम प्रति दिन एक हजार व्यक्ति आत्महत्या करते हैं और लगभग दस हजार व्यक्ति रोज ऐसे प्रयास करते हैं.

स्वास्थ्य संगठन ने अधिकाधिक आत्महत्या निरोधक केंद्र खोलने का आह्वान किया है. संगठन ने कहा है कि अधिकांश ऐसे मामलों में लोग अपने इरादे पहले ही प्रकट कर देते हैं या एक बार आत्महत्या के प्रयास में असफल होने के बाद वह व्यक्ति पुनः कोशिश करता है. आत्महत्याएं प्रायः तरुण व्यक्ति ही करते हैं. इस के पीछे प्रियजनों की मृत्यु, एकांतवास, बीमारी, मानसिक असंतुलन, शराब और नशेबाजी आदि कारण हैं.

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह भी कहा है कि जब एक व्यक्ति आत्महत्या का प्रयास करता है तो पिछली बार अपने को बचाने के लिए पुकार लगाता है. कम से कम 10 हजार व्यक्तियों में से एक तो ऐसा करता ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रिय कैसे बनें?

स्वभाव से तुनकमिजाज, अवसरवादी और अशिष्ट

चाहे आप एक नौकरीपेशा व्यक्ति हों, चाहे व्यवसायी हों या फिर विद्यार्थी हों, पुरुष हों या नारी, आप का सदैव प्रयास यही रहता होगा कि लोग आप को पसंद करें. आप जिन मित्रों के साथ रहते हैं, जिन के संपर्क में आते हैं उन पर आप के व्यक्तित्व की छाप हमेशा बनी रहे और अन्य लोग भी आप से मधुरतम संबंध बनाने को उत्सुक रहें. एक ओर आप की लोकप्रियता आप की आदतों एवं पारिवारिक गुणों पर निर्भर करती है तो दूसरी ओर कुछ ऐसे मानव चरित्र के निर्माण के गुणों पर भी आधारित है जो जन्मजात नहीं होते, अपितु ग्रहण किए जाते हैं.

यदि आप के चेहरे पर मुंहासे हों, दानेदार गढ़े हों या चेहरे की बनावट अच्छी न हो, जो आप को किसी के सामने खुल कर प्रकट होने देने में बाधक हों, तो अपनी इस कमी को भूल कर शिष्टाचार का व्यवहार अपनाइए. शिष्टाचार रूप की क़मी को पूरा कर देता है. वही व्यक्ति सब से सुंदर है, जो अपने शिष्टाचार से दूसरों पर विजय पा लेता है. बिना शिष्टाचार के सुंदरता का कोई मूल्य नहीं है. मिराबो एक कुरूप व्यक्ति था. किंतु उस का शिष्टाचार सर्वश्रेष्ठ था. यही कारण था कि वह बहुत लोकप्रिय हुआ. लोगों को उस से बातचीत करते समय उस की कुरूपता का ध्यान ही न रहता था. जो व्यक्ति प्रसन्न मन है, हंसमुख है और अपने संपर्क में आने वाले मित्रों से, परिचितों से, शिष्टाचार का व्यवहार करता है वह शीघ्र ही लोकप्रिय हो जाता है. जिस स्थान पर शिष्टाचारी व्यक्ति रहता है वहां आनंद की तरंगें उठने लगती हैं, जिस क्षेत्र में वह कदम आगे बढ़ाता है, उस क्षेत्र का मुकुट बन जाता है. अतएव मनुष्य की वाणी ही उस की वीणा है. शब्दों का अच्छा या बुरा प्रयोग उसे अच्छा या बुरा बना सकता है.

जब आप किसी व्यक्ति से बातचीत करें तो सामने वाले व्यक्ति की बात को बड़े गौर से ध्यान दे कर सुनें. क्योंकि सामने वाला व्यक्ति अपनी बात को महत्त्व पाते देख कर आप की बात को भी ध्यान

लेख : जयंतीलाल भंडारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

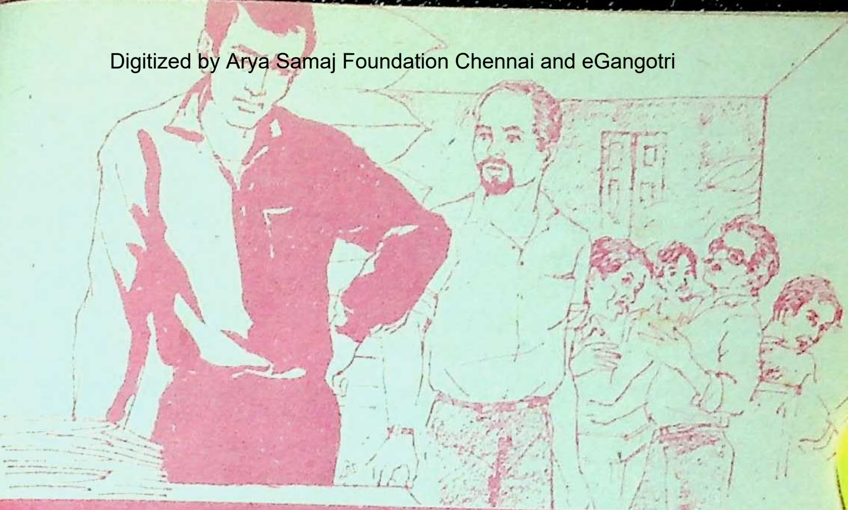

हो कर भी क्या आप लोकप्रिय होना चाहते हैं?

से सुनेगा. अपनी बात कहते समय सामने वाले व्यक्ति के चेहरे को देखिए, भावों को पढ़िए और रुचिपूर्ण विषय पर ही बात करिए. अपनी बात को लंबेचौड़े अरुचिपूर्ण ब्योरों में न डालते हुए सरल व दिलचस्प रूप में प्रस्तुत करें. अकसर देखा जाता है कि कुछ लोग बड़ी धीमी आवाज में गुनगुनाते हुए बोलते हैं, कुछ लोग चिढ़ कर बोलते हैं, तो कुछ बारबार मुंह पर हाथ रखते हैं, जिस से सामने वाला व्यक्ति बात को स्पष्ट रूप से नहीं सुन पाता. अत: अपनी हर बात को सुनिश्चित रूप से कहिए. यदि बातचीत के मध्य आप का सामने वाले व्यक्ति से मतभेद हो जाए तो चतुराई से काम लीजिए और कहिए, "श्रीमानजी, मैं आप के इस कथन से असहमत हूं. वास्तविकता तो यह है कि..." ऐसे स्नेहशील वाक्य जादू सा असर करेंगे एवं सामने वाला व्यक्ति आप की बात को अधिक गौर से सुनेगा.

लोकप्रिय बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि आप के पास बातचीत के विविध विषयों का पर्याप्त संग्रह हो. अपनी बात व्यक्ति विशेष व स्थान विशेष के अनुरूप बदलनी चाहिए. यदि कोई व्यक्ति विवाह वेला में शहनाइयों की गूंज के बीच अधिक समय तक देहावसान व श्मशानघाट की बात करे तो वह बेतुकी मालूम देती है. कुछ लोग वार्तालाप करने में हिचकिचाते हैं और यह कह कर कि मुझे समय नहीं है कन्नी काट लेते हैं. इस का कारण यह हो सकता है कि वे वार्तालाप में शीघ्र ही शरमा जाते हैं या घबरा जाते हैं. इस विषम परिस्थिति से पार पाने के लिए समाचारपत्रों के संपादकीय, नियमित स्तंभ, लेख एवं प्रथम पृष्ठ के समाचार विशेष लाभप्रद होते हैं. वार्तालाप के समय इस ज्ञान का उपयोग अपनी बात का प्रतिपादन करने के लिए किया जाना चाहिए.

दूसरों के गुण

लोकप्रियता पाने के लिए स्वयं में नहीं, दूसरों में गुणों की खोज की जानी चाहिए. यदि आप के किसी मित्र में या संपर्क में आने वाले व्यक्ति में कुछ कमियां हों तो उन कमियों का बारबार जिक्र नहीं किया जाना चाहिए. इस की बजाए उस की अच्छाइयों को खोज कर यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिए कि वह क्यों और कितना अच्छा व्यक्ति है. यदि आप प्रशंसा चाहते हैं तो दूसरों की भी प्रशंसा कीजिए. उन के सद्कार्यों पर उन्हें बधाइयां दीजिए. यदि आप आदर चाहते हैं तो दूसरों को भी आदर दीजिए. आप के द्वारा दिया गया आदर, प्रशंसा एवं बधाइयां कभीकभी दूसरों के दिल में आप के प्रति अच्छे एवं सहयोगात्मक विचारों के बीज बो देते हैं. किंतु बातचीत में प्रशंसा के लिए अतिशयोक्ति का प्रयोग न करें. साथ ही झूठी प्रशंसा का भी सहारा न लें. अन्यथा असत्य एवं बढ़ीचढ़ी प्रशंसा से दूसरे व्यक्ति की नजरों में आप की बातें अप्रभावशाली व महत्त्वहीन हो जाएंगी. केवल प्रशंसा के बजाए दूसरे व्यक्ति को समझ कर उस में दिलचस्पी लेना और उस का सहायक बनना विश्वास अर्जित करने का श्रेष्ठ साधन है.

एक अस्पताल में एक नर्स नौकरी के लिए आई. अस्पताल के प्रमुख ने प्रारंभिक पूछताछ के बाद उसे नौकर रख लिया. इस के बाद उन्होंने उस अस्पताल के व्यवस्थापक से संपर्क किया जहां वह पहले कार्य करती थी. वहां से यह बताया गया कि वह नर्स न तो मरीजों की उचित देखभाल करती है और न ही समय की पाबंद है. जब दूसरे दिन वह नर्स काम पर आई तो अस्पताल के प्रमुख ने उस से कहा कि कल मैं ने तुम्हारे पुराने अस्पताल व्यवस्थापक से संपर्क किया था. उन्होंने मुझे बताया कि तुम न तो समय की पाबंद हो और न ही मरीजों की उचित देखभाल करती हो. किंतु मुझे ये दोनों बातें कपोलकल्पित लगती हैं. क्योंकि तुम आज भी बिलकुल समय पर आई हो. निश्चित ही तुम मरीजों की भी उचित देखभाल करती होगी. अस्पताल के प्रमुख के इस कथन का नर्स पर गहरा प्रभाव पड़ा और वह समय, लगन व ईमानदारी से काम करने लगी. इसी भांति आप किसी फुरसत के समय अपने मानसपटल पर उन व्यक्तियों की तसवीरें बनाइए जो सदैव आप के संपर्क में आते हैं. उन के दुर्गुणों को छोड़ कर अच्छाइयों पर विचार कीजिए. और जब अगली बार वे संपर्क में आएं तो उन को इज्जत दीजिए तथा निष्कपट रूप से प्रशंसा के दो बोल भी बोलिए. हो सकता है, आप की प्रशंसा और इज्जत देने से उन्हें प्रेरणा मिले और वे अपनी कमियों को दूर कर एक योग्य व्यक्ति बनने का प्रयास शुरू कर दें.

गलती के लिए क्षमा

यदि क्रोध में आ कर आप ने किसी का तिरस्कार कर दिया है या आप की कोई बात दूसरे को बुरी लग गई है तो आधुनिक व्यावहारिक जगत की आत्मा 'सारी' का लाभ उठाइए. दूसरे व्यक्ति से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगनी ही चाहिए. यदि आप के दिल के किसी कोने में यह धारणा है कि दूसरे व्यक्ति से क्षमा मांगने में आप की प्रतिष्ठा कम होगी तो इसे दिल से निकाल दीजिए. दुनिया में वही व्यक्ति कीर्ति अर्जित करता है जो नम्रता को अपना कर अपनी गलतियों के लिए क्षमा याचना करता है. अपनी गलती के प्रति क्षमा याचना कोई साधारण कार्य नहीं है. मान लीजिए, आप किसी दफ्तर में कार्य करते हैं. दफ्तर में किसी मुद्दे पर आप ने क्रोध में आ कर किसी साथी को कटु वचन कह दिए, जो कहने नहीं चाहिए थे. इस कारण आप का मनमुटाव हो गया. दफ्तर में आप के बारे में कानाफूसी होने लगी. अवसरवादी लोग इधरउधर उलटीसीधी बातें करने लगे. अब आप को अपने साथी से बोलने में हिचकिचाहट अनुभव होने लगी.

ऐसे समय में आप समझदारी से काम लीजिए. उचित समय का चुनाव कर स्पष्ट शब्दों में मित्र के घर जा कर या एकांत में क्षमा याचना कीजिए. कहीं ऐसा न हो कि आप अपने मित्र से उस समय क्षमा याचना करने जाएं जिस समय वह मानसिक उलझनों में लिप्त हो, पारिवारिक झंझटों से घिरा हुआ हो या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तेज बुखार में तप रहा हो. ऐसे समय यदि आप को आशातीत परिणाम न मिले Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri तो बुरा न मानते हुए लौटते समय धन्यवाद जरूर कीजिए. क्षमा याचना एक ऐसा गुण है जा मनुष्य के महत्त्व को और अधिक बढ़ा देता है.

आए दिन आप को अपने परिचितों एवं रिश्तेदारों को पत्र लिखने पड़ते हैं. पत्रव्यवहार के द्वारा प्रेम व सद्भावना के संबंध बनाए जा सकते हैं. किंतु पत्रव्यवहार की कटु एवं तीखी भाषा रागद्वेष को जन्म दे सकती है. अत: लिखते समय अपने मूड को देखिए. यदि मूड ठीक नहीं है तो कुछ समय बाद स्वस्थ मस्तिष्क से ही लिखें. पत्र लिखते समय आप यह कल्पना कीजिए कि मैं पत्र प्राप्तकर्ता से बातचीत कर रहा हूं और बातचीत का उस पर क्या प्रभाव पड़ रहा है! कुशल पत्रव्यवहार की आत्मा इस बात में है कि आप अपनी ही रामकथा कहने के बजाए पत्र पाने वाले व्यक्ति के विषय में अवश्य लिखें.

यदि आप किसी संस्था के प्रधान हैं और किसी सांस्कृतिक या भाषण कार्यक्रम में अतिथि वक्ता को बुलाना चाहते हैं तो आप को चाहिए कि आप एक अनुग्रह युक्त पत्र लिखें, जिस में यह बताएं कि आप उन्हें ही क्यों बुलाना चाहते है? संस्था के सदस्यों ने उन का कहांकहां भाषण व प्रशंसा सुनी है? साथ ही अपनी संस्था की संक्षिप्त जानकारी भी भेजनी चाहिए. चाहे अतिथि को दिया गया पत्र हो या परिचित को दिया गया पत्र, लिफाफे पर सुंदर अक्षरों में नाम व पता लिखा जाना चाहिए. इस के अलावा नाम के बाद सम्मानसूचक शब्द—डाक्टर, प्राध्यापक, एम. काम., एल. एल. बी., साहित्यरत्न जैसा भी हो, अवश्य लिखना चाहिए.

इन गुणों का व्यावहारिक प्रयोग आप को लोकप्रिय बना सकता है. किंतु यदि आप अपने क्षेत्र को विस्तृत नहीं करना चाहते हैं, सीमित रखना चाहते हैं तो मित्र प्रिय बनिए, कालिज एवं स्कूल प्रिय बनिए, दफ्तर प्रिय बनिए. इन के अलावा जैसी भी आप की स्थिति हो वैसे ही लोकप्रिय बनिए. ●

मिर्जा गालिब की कविताओं का संग्रह

'दीवान-ए-गालिब'

मिर्जा गालिब की शायरी अपने अद्वितीय साहित्यिक स्तर, भाषा सौंदर्य और रसपूर्णता के कारण पिछली एक सदी से बहुचर्चित है. लेकिन कलाम गूढ़ होने के कारण इस के तरहतरह के अर्थ निकाल लिए जाते है. हिंदी पाठकों को फारसी या उर्दू का ज्ञान न होने के कारण शेरों को समझने में बड़ी कठिनाई होती है. इसलिए हिंदी में पहली बार प्रत्येक शेर के साथ भावार्थ भी दिया गया है ताकि पाठक गालिब की कविता का पूरा रसास्वादन कर सकें.

मूल्य 8 रुपए
डाक खर्च 2 रुपए

वी. पी. पी. से मंगाने के लिए 4 रु. अग्रिम भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी, एम-१२, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा से पहले

बिना समझे कुछ प्रश्न र...कर व...
में सफलता प्राप्त क...जा

रेडियो पर मनपसंद गाने सुनने का समाप्त नहीं, खेल के मैदान सूने हो गए, सिनेमा तथा मनोरंजन के अन्य स्थानों से विद्यार्थियों की भीड़ गायब—इस का मतलब है कि परीक्षा का समय आ गया. ऐसे समय में कुछ हिकमती छात्र मुख्य अध्यापकों से निकटता बढ़ा कर आने वाले सवालों की टोह पाने की कोशिश में लग जाते हैं. इधर किताबों की दुकानों पर परीक्षा पथप्रदर्शक, सफलता की कुंजी तथा अनेक विषयों पर सरल अध्ययन जैसी पुस्तकों की बाढ़ आ जाती है.

परीक्षा रूपी भूत के भय से आतंकित आज के छात्र घटिया किस्म की बाजारू किताबों के फेर में पड़ कर और भी भटक जाते हैं. ऐसी स्थिति में परीक्षा आज के अच्छे और बुरे, सब प्रकार के छात्रों के लिए एक मुसीबत बन जाती है. परंतु सावधान हो कर यदि सामान्य बुद्धि से काम लिया जाए तो यही मुसीबत एक मजेदार खेल बन जाएगी. वास्तव में परीक्षा कोई मुसीबत नहीं लाती बल्कि गौरव प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान करती है.

आत्मविश्वासी बनें

किसी भी परीक्षा को अचानक सिर पर आ गई मुसीबत नहीं समझना चाहिए. यह तो एक ऐसा मौका है जो आप को अपना कौशल दिखलाने का सुअवसर देता है. अतः कुछ समय पहले से ही परीक्षा के स्वागत की तैयारी करें, तब आप अच्छे करतब दिखलाने में सफल होंगे. इस प्रसंग में निम्नलिखित सुझाव परीक्षार्थियों को प्रेरणा देंगे, जिस से वे अच्छे नंबर प्राप्त करने में सफल होंगे.

अपनेआप को कमजोर समझ कर भाग्य के भरोसे छोड़ देना सब से बड़ी भूल है. भाग्य और परीक्षा दो अलगअलग चीजें हैं. याद रखें कि परिश्रमी को ही भाग्य का सहारा मिलता है. अपनी मेहनत पर भरोसा रखें. जो पढ़ें, शांत और स्थिर चित्त से समझ कर पढ़ें. आवश्यक चीजें पढ़ें, पर 'आवश्यक' के फेर में पड़ कर 'अनावश्यक' चीजों को छोड़ देने की बेवकूफी न करें. हां, अपनी सूझबूझ से कुछ अनावश्यक चीजों को छोड़ा जा सकता है.

प्रायः देखा जाता है कि परीक्षा के निकट आने पर विद्यार्थी किसी विषय को समझने की कोशिश न कर के उसे रट कर याद करना चाहते हैं. यह तरीका गलत है. आप आजमा कर देखें, रट कर याद की गई चीज से समझ कर याद की गई चीज बराबर अच्छी और ठीक होती है. जिस चीज को एक बार समझ लिया गया हो, उस का उपयोग उचित रूप में कई तरह से किया जा सकता है, पर रट ली गई चीज में यह लाभ नहीं होता.

सावधानी और धैर्य से काम लें

कुछ विद्यार्थी परीक्षा के आरंभ में बुरी तरह घबरा जाते हैं, विशेषकर लड़कियों पर यह बात ज्यादा लागू होती है. प्रायः देखा गया है कि प्रश्नपत्र मिलते ही उन के हाथ कांपने लगते हैं और आंखों में आंसू आ जाते हैं. यह सब अधीरता की निशानी है. अपने ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरोसा रखें और धैर्य से काम लें तो ऐसी घबराहट न होगी. घबराहट के कारण अच्छे विद्यार्थी भी बड़ी भूलें कर बैठते हैं. ऐसी स्थिति से बचने का एक उत्तम तरीका यह है कि परीक्षा भवन में समय से पहले पहुंचें और वहां बैठ कर अपने को स्थिर कर लें.

प्रश्नोत्तर लिखना कैसे आरंभ करें?

परीक्षा भवन में कापी मिलते ही पहले उस पर अपना रोल नंबर, विषय, वर्ग, तिथि आदि साफसाफ लिखें. प्रश्न-पत्र मिलने पर उसे ध्यान से पूरा पढ़ लें. फिर यह निश्चित करें कि कितने प्रश्नों का उत्तर देना है. जो प्रश्न आसान मालूम हो और जिसका उत्तर सब से अच्छा बन पड़े, उसे ही शुरू में करें. आरंभ करने से पहले एक बार फिर समझ लें कि सवाल क्या है. फिर उसी के अनुरूप जवाब लिखें.

यह बात सिद्धांत रूप में याद रखें कि जितने प्रश्नों का उत्तर मांगा गया है, उतनों का ही उत्तर दें. जरूरत से ज्यादा प्रश्नों का उत्तर लिख देना या अनिवार्य प्रश्नों को छोड़ देना—ये दोनों काम

प्रश्न रकर क्या परीक्षा प्राप्त जा सकती है?

लेख
•
राधाकांत भारती

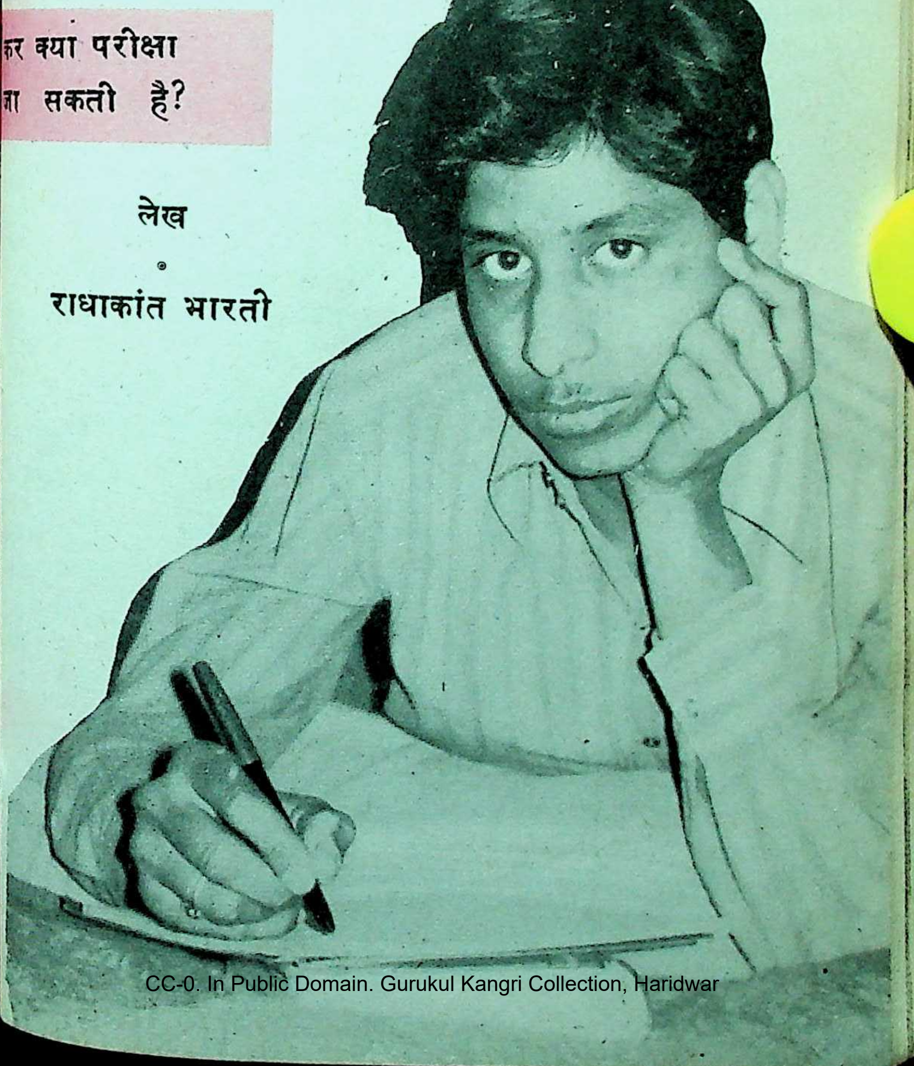

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गलत हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी विषय के प्रश्नों का उत्तर देते हुए यह ध्यान रखें कि जो कुछ पूछा गया है, वही बताया जाए. स्पष्ट और विचारपूर्ण उत्तर पर ही अच्छे नंबर मिलते हैं. विषय से अलग हट कर अनर्गल बातें लिखने की भूल कभी मत करें. कुछ छात्र सवाल का ठीक जवाब न लिख कर इधरउधर की बातें लिख देते हैं. कुछ छात्र, इस के विपरीत, अपने को ज्यादा काबिल दिखलाने के फेर में कठिन और दुरूह शब्दों का इस्तेमाल करते हैं. परीक्षार्थी को अपनी परीक्षा की कापी में इस प्रकार की शरारतें नहीं करनी चाहिए, क्योंकि हर परीक्षक अपने विषय का माहिर व अनुभवी शिक्षक होता है. बेकार की भ्रामक बातें लिख कर धोखे से अधिक नंबर प्राप्त कर लेने की कुचेष्टा करना मूर्खता है.

लिखित परीक्षा

आजकल ज्यादातर परीक्षाएं लिख कर ली जाती हैं. अत: परीक्षाओं में लिखने की गति और साफसुथरी लिखावट का विशेष महत्त्व है. लिखावट को जल्दबाजी में घसीट कर अस्पष्ट और भद्दी मत बनाएं. साथ ही सुंदर अक्षर बनाने के फेर में अपनी गति भी मंद न होने दें. लिखते समय बराबर यह ध्यान रहे कि आप के द्वारा लिखी गई बातों को पढ़ने के बाद ही नंबर दिए जाएंगे.

प्रत्येक सवाल का जवाब लिखते हुए समय का ध्यान रखना भी जरूरी है. शुरू में ही प्रश्नों को देख कर समय निश्चित कर लें. ऐसा कर लेने पर सवाल छूट जाने का डर नहीं रह जाता. परीक्षा में कुछ प्रश्नों का उत्तर दे कर बाकी को छोड़ देने की आदत गलत है. ऐसा कर के परीक्षार्थी नंबर प्राप्त करने के आधार को स्वयं समाप्त कर डालता है. अत: परीक्षा में हर अनिवार्य प्रश्न का उत्तर लिख देना ही सफलता का रहस्य है.

जब उत्तर लिखने का कार्य पूरा हो जाए तो लिखी गई बातों को एक सरसरी निगाह से जांच लें. उत्तर जल्दी लिखने की हड़बड़ी में प्राय: विरामचिह्न आदि छूट जाते हैं. परीक्षा में इन छोटी भूलों के लिए भी नंबर कटते हैं. अत: इन्हें सुधार लेना चाहिए. इस प्रकार अपने ऊपर विश्वास रख कर सावधानी से दी गई परीक्षा निश्चय ही अच्छा फल देगी. ●

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बसट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?

निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगीराज

(बाल उपन्यास)

दूसरा संस्करण

कपटी बंदर और उस के धूर्त साथी लोमड़ और गीदड़ ने भक्ति के नाम पर अपना कपटजाल फैला कर नंदबवन के भोलेभाले जानवरों को खूब लूटा.

लेकिन समाज सेवक भालू ने उन के कपट जाल की सारी पोलपट्टी खोल दी और महाराज शेर के दरबार में उन्हें अपनी करनी की सजा मिल गई.

सुशील कपूर का यह बाल उपन्यास 'योगीराज' आप के बच्चों का मनोरंजन तो करेगा ही, साथसाथ पाखंडियों से सावधान रहने की शिक्षा दे कर उन्हें जीवन में आगे चल कर ठगे जाने से बचाएगा.

मूल्य : 1.50 रुपया. डाक खर्च : 25 पैसे

1.75 रु. का मनीआर्डर भेज कर आज ही
अपने बच्चों के लिए एक प्रति मंगाएं.

मिलने का पता :

दिल्ली बुक कंपनी

एम. 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री बसंतकुमार त्रिवेदी 'बसंत', बिलासपुर, हैं.

● कालिज में गणतंत्र दिवस पर एक नेता का भाषण था. भाषण की समाप्ति पर नेता ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, "मेरे युवा दोस्तो! आज के ऐतिहासिक दिन प्रण करें कि आज से आप सिगरेट नहीं पिएंगे, शराब नहीं छुएंगे, नशीली दवाओं का सेवन नहीं करेंगे और रातें इधरउधर नहीं बिताएंगे."

छात्रगण बोले, "प्रतिज्ञा करते हैं कि हम यह सब नहीं करेंगे."

"और समय आने पर देश के लिए जान दे देंगे"

"अजी, दे देंगे, ऐसी नीरस जिंदगी का हम करेंगे भी क्या?" छात्र चिल्लाए.

——मदनमोहन भार्गव, [illegible]

● "विना जूते उतारे आप मंदिर में नहीं आ सकते." मंदिर के नए पुजारी ने एक भक्त को रोकते हुए कहा.

"किंतु मैं ने जूते पहने ही कहां हैं?"

"तो पहन कर आइए. नियम तीन के अनुसार कोई भी व्यक्ति विना जूते उतारे मंदिर में नहीं आ सकता."

● एक असफल अभिनेत्री ने एक असफल अभिनेता के सम्मुख प्रस्ताव रखा, "क्यों न हम दोनों मिल कर स्टेज पर एक कार्यक्रम प्रस्तुत करें."

अभिनेता ने कहा, "विचार तो अच्छा है पर हम करेंगे क्या?"

"पहले परदा उठेगा, मैं एक गीत पेश करूंगी, परदा गिरेगा. फिर परदा उठेगा, मैं एक नृत्य पेश करूंगी," अभिनेत्री ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "परदा गिरेगा और फिर से जब परदा उठेगा तो मैं सितार पर एक राग पेश करूंगी और..."

"पर इस में मैं कहां क्या करूंगा?" अभिनेता ने पूछा.

"क्यों? क्या परदा अपनेआप उठेगागिरेगा?"

——बसंतकुमार त्रिवेदी 'बसंत,' बिलासपुर

● "तो तुम्हारी नौकरी छूट गई."

"हां."

"क्यों?"

"मेल नहीं हुआ."

"किस में? तुम में और मालिक में?"

"नहीं, कैश बुक और कैश में."

● एक स्त्री दूसरी से कह रही थी, "मेरा लड़का इतना सीधा है कि मैं कभी कभी ही उस पर हाथ उठाती हूं, वह भी केवल आत्मरक्षा के लिए."

——अनुराग आनंद, लखनऊ

● प्रोफेसर : पीछे बैंचों पर बैठे विद्यार्थी कृपया नोट्स का लेनदेन बंद कर दें.
लड़का : सर, ये नोट्स नहीं हैं, ताश के पत्ते हैं. हम ब्रिज खेल रहे हैं.
प्रोफेसर : [illegible] कोई बात नहीं.

——[illegible] अरोड़ा, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुब्बारों की उड़ानें

लेख

•

लिखमीचंद खत्री

ा में उड़ते हुए पक्षियों को देख मानव की भी हवा उड़ने की इच्छा जाग्रत . किंतु हलकी हवा में ी वस्तु का तैरना कैसे व हो सकता है?

इस दिशा में प्रथम कदम ारों का निर्माण है. गुब्बारों में ड्रोजन और हीलियम गैसें भरी ी हैं, जो हवा से हलकी होती हैं. कारण गुब्बारा ऊपर उठता है. गुब्बारों के निर्माण के संबंध में सर्व- 1755 में जोजेफ गोलयन ने यह न रखा था कि कपड़े या चमड़े के े थैले बनाए जाएं और उन में कोई गैस भर दी जाए जिस से उन के लिए उड़ना संभव हो सके. इसी समय एक गैस की खोज की गई जो हवा से सात गुना विरल थी. इस का श्रेय हैनरी कैवेंडिश नामक एक रसायनज्ञ को दिया जाता है. इस गैस का नाम हाइड्रोजन रखा गया.

1782 की बात है. फ्रांस में लिओन के समीप आनोने में दो भाई, जोजेफ और एतिन मोंगोलफिए रहते थे. वे कागज का व्यवसाय करते थे. एक दिन उन्होंने बादलों की एक टुकड़ी को आकाश में तैरते हुए देख कर सोचा कि यदि इसी प्रकार की कोई गैस किसी थैले में भर दी जाए तो उस के लिए भी हवा

आकाश में ऊंचाई पर उड़ते हुए गुब्बारों का वैज्ञानिक रहस्य क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में तैरना संभव हो सकता है. तभी धुएं को ऊपर उठते हुए देख कर उन्होंने इसी को अपने कागज के लिफाफों में भर दिया. ये लिफाफे ऊपर उठने लगे तो उन के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा. वे अब अपने प्रयोगों में लगन से जुट गए.

1783 में उन्होंने अपने प्रयोगों का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन किया. कागज का सौ फुट परिधि का एक पुतला बनाया गया, जिस का भार 500 पौंड था. इसे 35 फुट ऊंचे एक खंभे के साथ बांध दिया गया. पुतले के नीचे एक छेद था. छेद के नीचे सूखी घास और लकड़ियां जलाई गईं. परिणामस्वरूप धुआं पुतले में प्रविष्ट हो गया और उस ने एक बड़े गुब्बारे का रूप धारण कर लिया. गरम हवा के भर जाने के कारण गुब्बारा ऊपर उठने लगा. 10 मिनट से भी कम समय में वह 6 हजार फुट की ऊंचाई तक पहुंच

7 जनवरी, 1785 को ब्लांशार और जैफरीज ने एक वायु गुब्बारे द्वारा इंगलिश चैनल को पार किया...

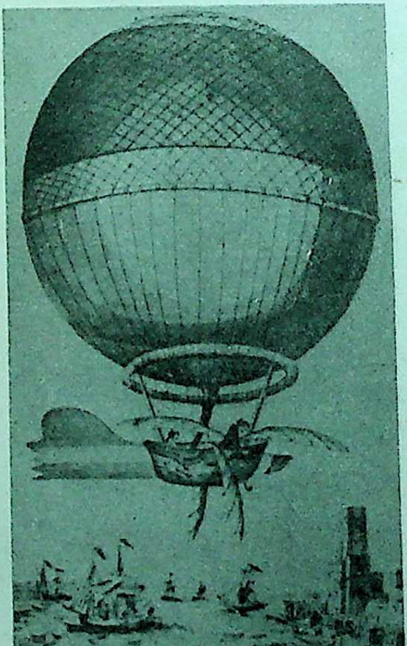

गया. ऊपर की ठंडी वायु का एक झोंका उसे आड़ी दिशा में 7668 फुट तक ले गया. बाद में वह पृथ्वी पर उतर आया.

गुब्बारे में हाइड्रोजन गैस

इन प्रयोगों की सफलता से प्रेरित हो कर पेरिस की साइंस अकादमी ने दोनों भाइयों को पेरिस आने का बुलावा भेजा. राबर्ट भाइयों को, जो गणित संबंधी औजारों के निर्माता थे, भौतिकी-वेत्ता चार्ल्स की देखरेख में एक गुब्बारा बनाने की आज्ञा दी गई. पहले तो मोंगोलफिए के प्रयोग का ही अनुकरण किया गया. बाद में चार्ल्स ने सुझाव दिया कि सिल्क के गुब्बारे बनाए जाएं और उन में हाइड्रोजन गैस भरी जाए. 23 अगस्त, 1783 को यह प्रयोग मोंगोलफिए के निरीक्षण में किया गया. इस गुब्बारे की परिधि 105 फुट थी. यह 3 हजार फुट ऊपर गया और 45 मिनट तक वायु में रहने के बाद 15 मील दूर जा कर गिरा.

19 सितंबर, 1783 को फ्रांस के सम्राट के अनुरोध पर मोंगोलफिए भाइयों ने वर्सेल्स से एक अग्नि गुब्बारे में पहली बार एक भेड़, एक बत्तख और एक मुरगे को उड़ाया. इस गुब्बारे में लचीली टहनियों से बनाई गई एक टोकरी लटकाई गई, जिस में ये तीनों जीव रखे गए थे. लगभग एक बजे गुब्बारे को गरम वायु से भरना शुरू किया गया. इसे भरने में आठ मिनट का समय लगा. ... के बाद वह ऊपर उठा और दो मील दूर जा कर गिरा. इस के बाद अगले गुब्बारे में एक कैदी को भेजने का निश्चय किया गया. इस प्रकार के गुब्बारे को 'अग्नि गुब्बारा' कहा जाने लगा.

रोजए नामक एक साहसी युवक को यह अच्छा नहीं लगा कि हवा में सब से पहले उड़ने का श्रेय एक कैदी को मिले. यह सोच कर उस ने स्वयं को इस के लिए प्रस्तुत किया. 15 अक्तूबर, 1783 को इस साहसी युवक ने 60,000 घन फुट आयतन के एक गुब्बारे में लगभग ... फुट ऊपर जा कर हवाई उड़ान के ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हास में सर्वप्रथम उड़ने का सम्मान प्राप्त किया. उस ने बंदी गुब्बारे का प्रयोग किया था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21 नवंबर, 1783 को रोजए ने अपने एक साथी के साथ 76 फुट ऊंचे और 46 फुट व्यास के एक अग्नि गुब्बारे में पहली हवाई यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न की. ये दोनों आकाश में 300 फुट ऊंचाई पर लगभग साढ़े पांच मील तक उड़े, जिस में उन्हें 25 मिनट लगे. गुब्बारे को गरम वायु से भरने के लिए उस के नीचे एक क्रेट में सूखी घास और तिनके जलाने की व्यवस्था थी.

गैस के गुब्बारे

इन सफलताओं के पश्चात इन का स्थान गैस गुब्बारों ने ले लिया. प्रथम दिसंबर, 1783 को चार्ल्स और राबर्ट ने एक गैस गुब्बारे में उड़ान की. गैस गुब्बारे में यह पहली उड़ान थी.

जून, 1784 में पहली बार एक महिला ने एक अग्नि गुब्बारे में लिओन से उड़ान भरी. इस महिला का नाम श्रीमती तिबल था.

ग्रेट ब्रिटेन में पहली बार 25 अगस्त, 1784 को जेम्ज टाइटलर ने एडनबरा से उड़ान की. उस ने 40 फुट ऊंचा और 30 फुट व्यास का एक अग्नि गुब्बारा प्रयोग किया जो 350 फुट ऊपर गया था. मोंगोलफिए के गुब्बारों की तरह इस में विरल गैस दोबारा भरने की कोई व्यवस्था नहीं थी. अतः वह शीघ्र ही नीचे आ गया था.

इंगलैंड में पहली सफल उड़ान इटली निवासी लुनार्डि ने वायु गुब्बारे में की थी. 15 सितंबर, 1784 को मूरफील्ड्स के आर्टिलेरी मैदान से उस ने उड़ान की थी. मैदान में दर्शकों के प्रवेश पाने के लिए पांच शिलिंग, एक गिनी और आधी गिनी के टिकट लगाए गए थे. दो बज कर पांच मिनट पर गुब्बारा ऊपर उठा और तीन बज कर 30 मिनट पर मिम्मस के दक्षिण में उतर गया. इस उड़ान में लुनार्डि के साथ एक कुत्ता, एक बिल्ली

सन 1784 में फ्रांस में गरम हवा का गुब्बारा यात्रियों सहित उड़ान भरता हुआ...

और एक कबूतर था. कबूतर तो उड़ गया था, बिल्ली को वहां छोड़ना पड़ा, जहां वह पहली बार उतरा था और कुत्ता अंत तक उस के साथ रहा. 25 मील की यात्रा के बाद चार बज कर 20 मिनट पर लुनार्डि वेअर के समीप उतरा.

16 अक्तूबर, 1784 को एक ख्याति-प्राप्त फ्रांसीसी युवक ने कबूतरों के एक जोड़े और उन के फेफड़ों पर ऊपर की वायु का प्रभाव जानने के लिए एक अंगरेज डाक्टर शैलडन के साथ उड़ान की. इस युवक का नाम ब्लांशार था. इस दिशा में वह अधिक सफल नहीं हुआ.

7 जनवरी, 1785 को ब्लांशार ने एक अमरीकी डाक्टर जैफरीज के साथ एक वायु गुब्बारे में डोवर से कैले तक उड़ान कर के इंगलैंड और यूरोप के बीच का समुद्र पार कर के अपूर्व साहस का परिचय दिया. यह यात्रा बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोखिमपूर्ण थी. एक स्थान पर तो अधिक भार के कारण गुब्बारा तीव्र गति से नीचे आने लगा था. अपने को बचाने के लिए उन को अपने वस्त्र और शराब की बोतलें नीचे गिरानी पड़ीं. इस प्रकार भार कम कर के उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी. इस साहस से ब्लांशार बहुत लोकप्रिय हो गया. दुर्भाग्य से 1808 में हेग से उड़ान करते समय वह गिर पड़ा और उस की मृत्यु हो गई.

अमरीका में सर्वप्रथम 28 नवंबर, 1783 को जेम्स विलकाक्स ने गुब्बारे से उड़ान की थी. प्रो. राबर्ट्सन ने 1804 में उड़ान की. जरमनी में डाक्टर भुंगयस ने कई सफल उड़ानें कीं.

गुब्बारे का युद्ध में प्रयोग

मानव ने जब गुब्बारे की सहायता से सफलतापूर्वक उड़ानें कर लीं तो उस का ध्यान इस का प्रयोग युद्ध में करने की ओर गया.' तब सैनिक पर्यवेक्षण और सेना संबंधी सूचनाएं प्राप्त करने के लिए गुब्बारों का प्रयोग होने लगा.

सर्वप्रथम बेलजियम के युद्ध में सेना संबंधी सूचनाएं प्राप्त करने के लिए 26 जून, 1794 को कैप्टन कुतले ने इस से कई उड़ानें कीं. फ्रांसीसी सेना को इस से विजय पाने में काफी सहायता मिली. जरमनी के हैनरी काक्सवाल ने 1848 में बर्लिन में बंदी गुब्बारों की सहायता से सैनिक पर्यवेक्षण और विस्फोटक पदार्थ फेंकने का सफल प्रदर्शन किया. 1870 के फ्रांस और जरमनी के युद्ध से पूर्व उस ने जरमन सैनिकों को गुब्बारों के संबंध में शिक्षा दी थी. इस युद्ध के कारण पेरिस की नाकाबंदी होने पर फ्रांस वालों ने गुब्बारों की सहायता से सिविल सर्विस का संचालन किया था. इन की सहायता से 100 मुख्य नेता शहर से बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाए गए थे. इस के अतिरिक्त 400 संदेशवाहक कबूतर भी भेजे गए थे.

उस समय गुब्बारों को युद्ध के प्रयोग में लाना बड़ा खतरनाक था. प्रचंड वायु में इन पर नियंत्रण न रख सकना आदि कठिनाइयां थीं. इन को सुलझाने के लिए 1897 में एक जरमन अफसर, फान पारस फाल ने एक विशेष प्रकार की आकृति वाले 'ड्रेशन' नामक पतंग गुब्बारे का आविष्कार किया. पतंग गुब्बारे का प्रयोग 1914-18 के युद्ध में किया गया. 1944-45 में जापान ने भी अमरीका पर बम गिराने के उद्देश्य से 9,000 गुब्बारे आकाश में छोड़े थे लेकिन वह इस अभियान में सफल नहीं हो सका क्योंकि इस की जानकारी अमरीका को मिल गई थी.

आजकल इन का प्रयोग अधिकतर मौसम संबंधी जानकारी प्राप्त करने तथा तत्संबंधी अनुसंधान करने के लिए किया जाता है. कहींकहीं पर लोग गुब्बारे को मनोरंजन या खेल के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं. हाल ही में, 25 जनवरी, 1974 को भोपाल में 'डेफोडिल-2' नामक गरम हवा के गुब्बारे में उलियान नाट और फेलिक्स पाल ने लगभग 44 हजार फुट ऊंचा उड़ कर एक नया विश्व रिकार्ड कायम किया. उन्होंने भोपाल से उड़ान भरी थी और वहां से 120 मील दूर पिपरिया में उतरे थे. ●

रिश्वत की लाटरी

भारतभूमि में स्थित कालीकट के एक स्कूल में अध्यापक के पद की नियुक्ति के लिए 6,000 रुपए रिश्वत देनी पड़ती है. एक पद के लिए छः उम्मीदवार थे और सभी 6,000 रुपए देने के लिए तैयार थे. अंत में चिट डाल कर फैसला किया गया कि किस की रिश्वत स्वीकार की जाए. और 'सफल' उम्मीदवार को नियुक्त कर लिया गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डाली हरसिंगार की

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मादक आंखों में पढ़ डाली,
हम ने भाषा प्यार की.
भीतर से इकरार की,
बाहर से इनकार की.

बंद किवाड़ों की झीरी से,
सूनी राह निहारना.
इंतजार में चोटी के बल,
कभी खोलना बांधना.
और दृष्टि के टकराते ही,
नजर चुराना प्यार की.

कागज के चेहरे पर मेरा,
लिखना नाम और काटना.
घंटों दर्पण आगे रख कर,
अपना रूप निहारना.
इस को क्या कहते हैं, बोलो
डाली हरसिंगार की!

—अखिलेश 'अंजुम'

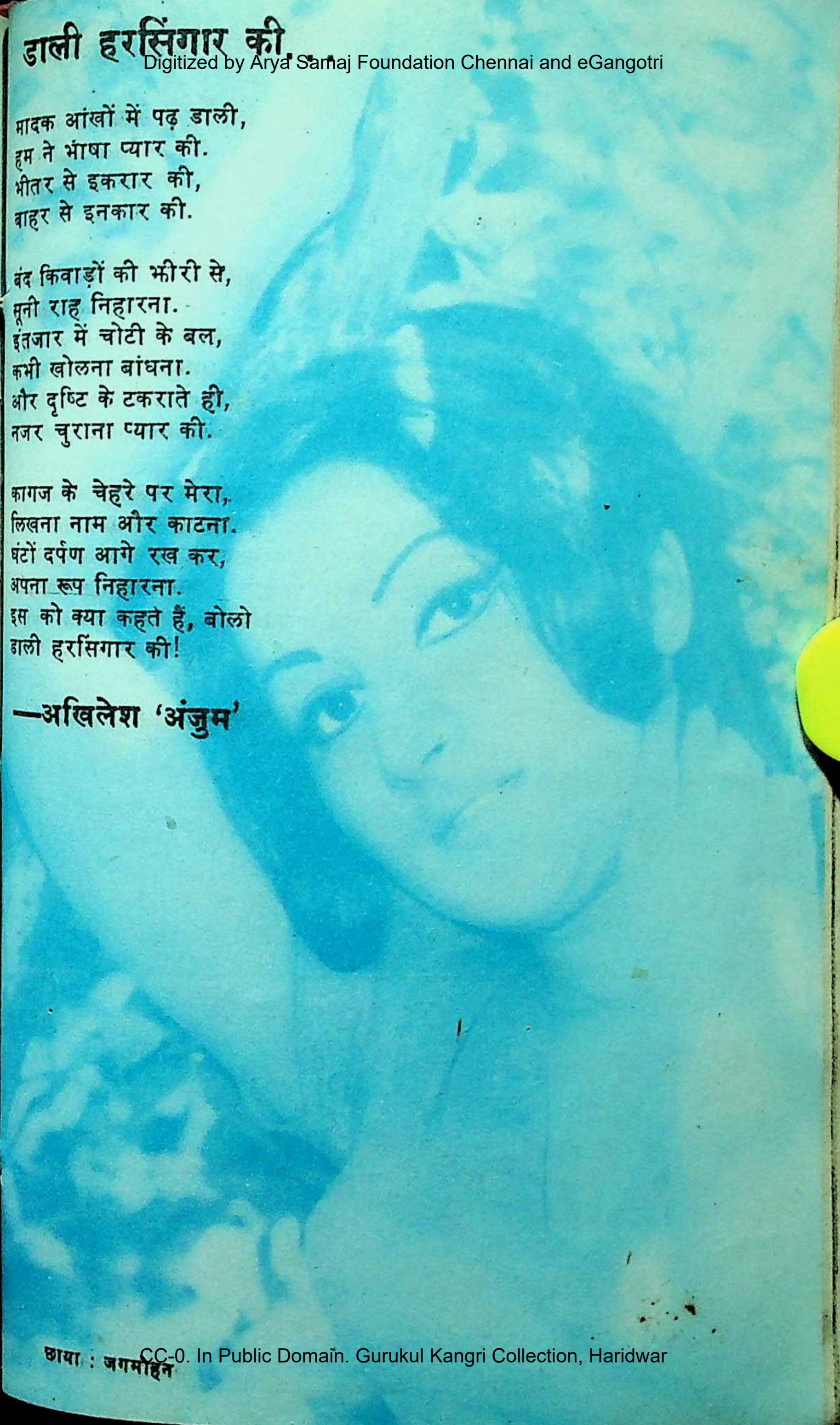

छाया : जगमोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांव वाले परेशान थे कि जितेंद्र जैसे नेक आदमी के पूरे परिवार को मौत के घाट उतार कर अपराधी ने आखिर उस से किस बात का बदला लिया है?

रहस्यपूर्ण हत्या

कलकत्ता के निकट हुगली जिले में एक छोटा सा गांव है कानागढ़. जितेंद्र घोष इसी गांव में रहते थे. उन की डेरी दूरदूर तक मशहूर थी. दूध सप्लाई करने का उन का धंधा ऐसा चल निकला था कि कुछ ही वर्षों में उन की गणना धनी व्यक्तियों में होने लगी सादे रहनसहन, स्वभाव से कंजूस और लकीर के फकीर होने के कारण उन्होंने अपनी संचित पूंजी भी घर ही में रख छोड़ी थी.

कानागढ़ से कुछ मील दूर पुराना जंगल था, जिस में गहरा नाला था. गांव वाले दूसरे गांव में अकसर उस पगडंडी से आयाजाया करते थे, जो जंगल के बीच से हो कर निकलती थी. एक दिन प्रातः जब गांव के कुछ लोग उस पगडंडी से जा रहे थे तो उन्हें नाले में किसी व्यक्ति का शव पड़ा दिखाई दिया. वे लोग नाले में नीचे उतरे और यह देख कर उन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वह शव जितेंद्र घोष का था. इस समाचार से गांव भर में तहलका मच गया.

निकटवर्ती थाने में शव बरामद होने की सूचना दी गई. कुछ ही देर में पुलिस अधिकारी कुछ सिपाहियों के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए. शव का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने पर पुलिस अधिकारी को बाईं कनपटी पर गहरे घाव दिखाई दिए. नाले की पूरी छानबीन की गई किंतु वहां अन्य कोई सुराग न मिल सका. शव को डाक्टरी जांच के लिए भेजने के बाद पुलिस अधिकारी जितेंद्र के घर वालों से पूछताछ करने के लिए गांव पहुंचे.

गांव के किनारे बना जितेंद्र घोष का दो मंजिला मकान दूर से ही बंद दिखाई दिया. मकान के सभी दरवाजे और खिड़कियां इस तरह बंद थीं जैसे वह कई दिनों से बंद पड़ा हो. यह दृश्य देख कर सभी लोग अचरज में पड़ गए. मकान का चक्कर लगाते हुए अचानक पुलिस अधिकारी को अंदर से किसी व्यक्ति के कराहने की आवाज सुनाई दी. गांव वालों ने भी इस बात की पुष्टि की कि कल तक जितेंद्र का परिवार गांव में ही था. सामने के दरवाजे पर बंद ताला तोड़ कर जब पुलिस अधिकारी गांव वालों के साथ मकान में घुसे तो वहां का भयानक दृश्य देख कर सभी के रोंगटे खड़े हो गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

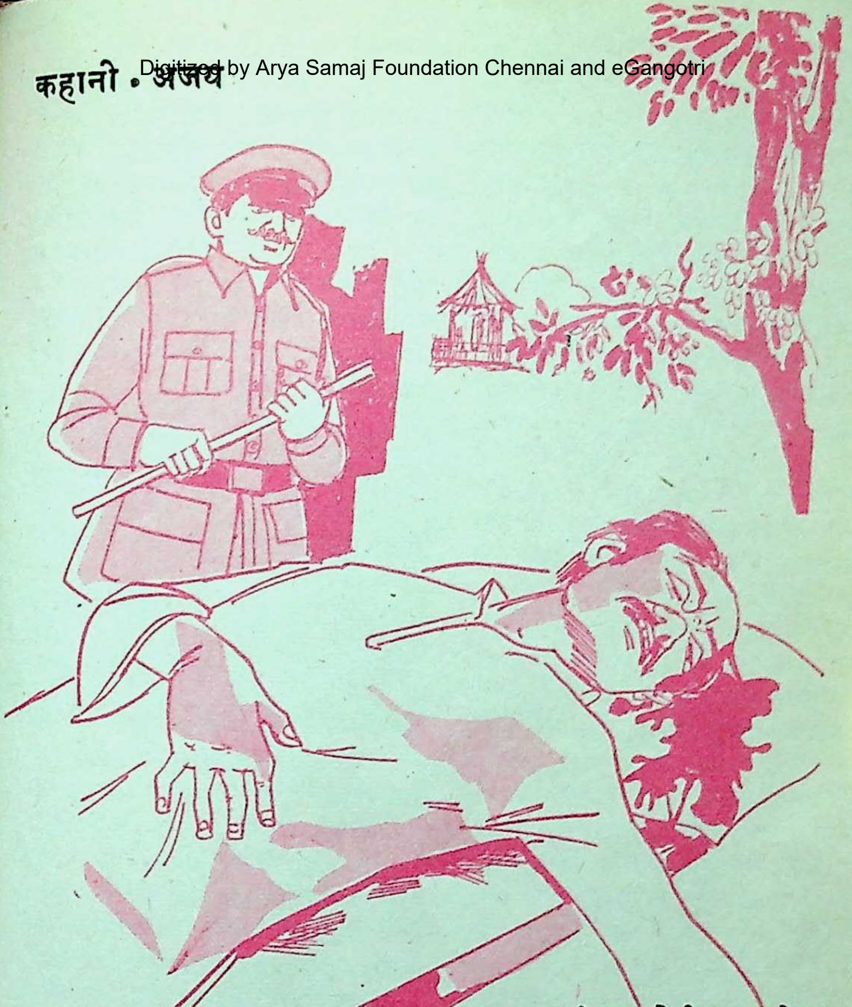

शव का पूरी तरह निरीक्षण करने पर पुलिस अधिकारी को बाईं कनपटी पर गहरे घाव दिखाई दिए...

अंदर के कमरे में जितेंद्र की पत्नी, लड़की और दो लड़के चारपाई पर खून से लथ-पथ मरे पड़े थे. दो अन्य लड़के बगल में ही अधमरे से कराह रहे थे. इन दोनों लड़कों को इलाज के लिए तुरंत अस्पताल ले जाया गया, किंतु गंभीर रूप से घायल होने के कारण पुलिस अपराधियों के बारे में उन से कोई पूछताछ न कर सकी.

जितेंद्र के अलावा उस के मकान से कुल मिला कर 4 शव बरामद हुए थे. जिन दो घायल लड़कों को अस्पताल भेजा गया था उन में से एक की अवस्था 13 वर्ष और दूसरे की 6 वर्ष की थी. दोनों की चिंताजनक हालत देखते हुए उन से अपराधियों के बारे में सही तथ्य मालूम हो सकने की कोई संभावना नहीं जान पड़ती थी. सब से आश्चर्यजनक बात यह थी कि जितेंद्र की पत्नी और लड़की जो गहने पहने थीं उन्हें किसी ने हाथ भी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाया था. यह समझ में न आता था कि एक साथ पूरे परिवार की हत्या के पीछे क्या रहस्य है.

जितेंद्र के मकान की पूरी छानबीन करने पर 25 हजार रुपए के पोस्टल सर्टिफिकेट, सोने के गहने, 10 हजार रुपए नकद और 40 गिन्नियां बरामद हुईं. मकान में इधरउधर बिखरे हुए सामान को देख कर इस बात का संकेत मिलता था कि अपराधियों ने हत्या के बाद कुछ ढूंढ़ने का प्रयत्न अवश्य किया है. फिर भी इतनी बड़ी धनराशि बरामद हो जाने के बाद हत्या के उद्देश्य के बारे में कोई निश्चित बात समझ में न आती थी. एक अन्य आश्चर्यजनक बात यह थी कि जितेंद्र की वृद्धा माता गायब थीं और उन का कोई पता न लग रहा था. परिवार में एक मात्र वही शेष बची थीं और इस आशा से कि संभवतः उन से इस भयंकर अपराध के बारे में कोई सुराग मिल जाए पुलिस ने बड़ी सरगरमी से उन की खोज शुरू कर दी. पुलिस अधिकारी ने दूसरे दिन मकान की फिर से छानबीन करने का निश्चय किया. मकान के पिछवाड़े पशुओं के लिए भूसे का ऊंचा ढेर लगा था. भूसा हटाते ही पुलिस अधिकारी की इस रहीसही आशा पर भी पानी फिर गया. जितेंद्र की वृद्धा माता का शव भूसे के ढेर में दबा पड़ा था. अब परिवार में कोई भी ऐसा व्यक्ति जीवित न बचा था जो इन हत्याओं के बारे में कोई संकेत दे सकता.

जितेंद्र के पड़ोसी मंडल से इन हत्याओं के बारे में बातचीत करते हुए पुलिस अधिकारी ने कहा, "आप वर्षों से पड़ोस में रह रहे हैं. क्या जितेंद्र या उन के परिवार वालों के चालचलन से कोई अनुमान लगाया जा सकता है?"

"नहीं, साहब, मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है. जितेंद्र कंजूस अवश्य थे पर उन के स्वभाव और चालचलन में ऐसा कोई दुर्गुण न था, जिस का संबंध पूरे परिवार की हत्या से जोड़ा जा सके."

"हूं," कुछ क्षण रुक कर पुलिस अधिकारी ने पूछा, "क्या कभी उन से किसी का लड़ाईझगड़ा हुआ था? मेरा मतलब है किसी से मुकदमेबाजी या कोई दुश्मनी की बात तो सुनने में नहीं आई?"

"जहां तक मुझे मालूम है जितेंद्र बड़े दब्बू स्वभाव के थे. उन के साथ किसी से लड़ाईझगड़ा होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती. मैं ने तो आज तक कोई ऐसी बात नहीं सुनी."

बहुत दौड़धूप करने के बाद कासिम की कोठरी को कूड़े के ढेर के पास जा कर

"अच्छा, आप यह बताइए कि आखिरी बार आप ने जितेंद्र को कब देखा था?" पुलिस अधिकारी ने पूछा.

कुछ देर सोचने के बाद श्री मंडल ने कहा, "परसों शाम को जब मैं शहर से लौट रहा था तब मैं ने जितेंद्र को दूध बांटने शहर की तरफ जाते हुए देखा था?"

शहर में जितेंद्र के सभी ग्राहकों से पूछताछ की गई जिस से यह पता चला कि दो दिन पूर्व तक वह दूध बांटने शहर गया था.

बुंदेल बाजार में चाय की एक दुकान थी, जहां जितेंद्र दूध पहुंचाता था. कभी-कभी दुकान के मालिक श्री दास के आग्रह पर जितेंद्र वहां चाय पीने के बहाने कुछ देर रुक भी जाता था. श्री दास से पुलिस अधिकारी ने पूछा, "जितेंद्र आप के यहां आखिरी बार कब आया था."

"परसों शाम तक वह दूध देने यहां आया था. कल अचानक उस के न आने की वजह से हमारी दुकान बंद ही रही. बिना दूध के चाय कैसे बनती?" दास ने उत्तर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या वह अकेले ही दूध देने आते थे?" पुलिस अधिकारी ने दूसरा प्रश्न किया.

"नहीं, कभीकभी उन का नौकर भी साथ में रहता था. परसों शाम को जब वह दूध ले कर आए तो मेरी दुकान पर कुछ देर बैठे भी थे. इसी बीच उन का नौकर कासिम भी आ गया. चाय आदि पीने के बाद वे दोनों कपड़ा खरीदने दूसरी दुकान पर चले गए."

कासिम के बारे में यह सूचना मिलते

अंत में जितेंद्र के नौकर तलाशी ली जाने लगी... पुलिस अधिकारी क्यों रुके?

ही उस का पता लगाना आवश्यक हो गया था. जांच करने वाले पुलिस अधिकारी को केवल दो संभावनाएं जान पड़ती थीं—या तो जितेंद्र के साथ कासिम की भी हत्या कर दी गई है या उसे इस हत्याकांड की कुछ जानकारी अवश्य होगी. कासिम का पता लगाने के लिए जंगल का चप्पाचप्पा छान डाला गया किंतु न तो उस का शव बरामद हो सका और न उस के बारे में कोई निश्चित जानकारी ही मिल सकी. इस सब जांचपड़ताल से केवल इस बात की पुष्टि होती थी कि दो दिन पूर्व जितेंद्र और कासिम एक साथ बाजार गए थे.

कानागढ़ से बुंदेल बाजार के रास्ते में एक अन्य गांव था, जहां कुछ लोग जितेंद्र को जानते थे. पुलिस अधिकारी ने उस गांव में भी जितेंद्र के बारे में पूछताछ करने का निश्चय किया. यह मालूम होने पर कि इस गांव के नारायण नामक एक व्यक्ति से जितेंद्र के अच्छे संबंध थे, पुलिस अधिकारी ने नारायण से पूछा, "क्या तुम्हें जितेंद्र के बारे में कोई जानकारी है?"

"दो दिन पूर्व मैं ने उन्हें पैदल बाजार से लौटते हुए देखा था. मैं ने उन से यह भी कहा था कि रात में जंगल के रास्ते से हो कर आनाजाना ठीक नहीं है. इस पर जितेंद्र ने मुझे उत्तर दिया था कि वह अकेला नहीं है."

"क्या उस समय जितेंद्र के साथ कोई था?"

"हां, उस का नौकर कासिम उस के साथ था और मैं ने उन दोनों को जंगल के रास्ते से गांव लौटते हुए देखा था."

नारायण की बातचीत से जितेंद्र और उस के नौकर के बाजार साथसाथ लौटने की पुष्टि होती थी. फिर कासिम का कोई पता नहीं लग पाना ऐसी गुत्थी थी, जिस का सुलझाना आसान न था.

जितेंद्र और उस के परिवार वालों की हत्या का पता लगाने के लिए अभी जांचपड़ताल चल ही रही थी कि गांव में एक अन्य सनसनीखेज घटना हो गई. जितेंद्र के पड़ोसी श्री मंडल ने थाने में सूचना दी कि उन के नौकर को किसी ने घायल कर दिया है और उस की हालत बड़ी चिंताजनक है. इस नौकर की बाईं कनपटी पर ही घाव थे और उसे बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुंचाया गया. इस नई वारदात से गांव के लोगों में तरहतरह की अफवाहें फैलने लगीं. मृतकों तथा घायल सभी व्यक्तियों की बाईं कनपटी पर ही घाव होने से इस बात का संकेत मिलता था कि इन सभी हत्याओं के पीछे किसी एक ही व्यक्ति का हाथ है. इतना ही नहीं, हत्या करने का हथियार भी सभी मामलों में एक जैसा ही जान पड़ता था. गांव वालों को यह पक्का विश्वास था कि कासिम की भी हत्या कर दी गई है और इसी कारण उस का कोई पता नहीं लग पा रहा है.

जितेंद्र का नौकर कासिम जिस कोठरी में रहता था उस की तलाशी लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर पुलिस को आखिरकार एक महत्त्वपूर्ण सुराग मिल ही गया. कमरे के एक कोने में कूड़े के ढेर के नीचे खून से रंगा हुआ बघनखा बरामद हुआ. वैज्ञानिक जांच के लिए उसे तुरंत कलकत्ता की पुलिस प्रयोगशाला में भेजा गया, जहां इस बात की पुष्टि हो गई कि उस में मनुष्य का रक्त लगा है.

इन सब घटनाओं से पुलिस का संदेह कासिम पर बढ़ गया. यह सही था कि जितेंद्र के मकान से गहने और रुपए चोरी नहीं गए थे किंतु संभवतः इतने व्यक्तियों की हत्या करने के बाद अपराधी घबराहट में गहनों और रुपयों को ढूंढ़ने में असफल रहा. अनुमानतः पकड़े जाने के भय से वह तुरंत भाग निकला होगा.

कासिम के बारे में पुलिस को यह मालम हुआ कि उस के कुछ रिश्तेदार कलकत्ता में रहते हैं. जांचपड़ताल करने पर इस बात की भी पुष्टि हो गई कि दो दिन पूर्व कासिम कलकत्ता गया था. उस के सभी रिश्तेदारों के यहां तलाशी ली गई किंतु कासिम को न पकड़ा जा सका. पुलिस को यह जानकारी अवश्य मिल गई कि वह उड़ीसा का रहने वाला है. कासिम को पकड़ने के लिए उस के सभी रिश्तेदारों के घरों पर कड़ी निगरानी रखी जाने लगी. कुछ दिन बाद कासिम का उड़ीसा लिखा हुआ एक पत्र उस के चचेरे भाई के यहां आया जो पुलिस के हाथ लग गया. इस पत्र में कासिम ने लिखा था कि वह जो कपड़े छोड़ आया है उन्हें हर तरह से सुरक्षित रखा जाए. उस के चचेरे भाई के घर की फिर से तलाशी ली गई और इस बार पुलिस को वह झोला मिल गया, जिस में कासिम के कुछ कपड़े तथा अन्य वस्तुएं थीं. कपड़ों की वैज्ञानिक जांच करने पर यह सिद्ध हो गया कि उन पर खून के दाग हैं. लिखावट के विशेषज्ञ ने इस बात की पुष्टि कर दी कि पत्र की लिखावट कासिम की है.

अपराधी कासिम को तुरंत गिरफ्तार करना आवश्यक था. इस के लिए कलकत्ता पुलिस के कुछ अधिकारी उड़ीसा भेजे गए, जहां कासिम को गिरफ्तार करने के लिए उस के गांव में पूछताछ की गई. पुलिस को यह मालूम हुआ कि वह भेस बदल कर इधरउधर घूमताफिरता रहता है. उस को पकड़ने के लिए सभी स्थानों पर पुलिस का जाल बिछाने में देर न लगी.

अंत में दो महीने के बाद धर्मशाला रेलवे स्टेशन पर उसे छद्म भेस में गिरफ्तार कर लिया गया. कासिम के विरुद्ध जितेंद्र के पूरे परिवार की हत्या करने के अपराध में मुकदमा चलाया गया. पुलिस द्वारा प्रस्तुत वैज्ञानिक सबूतों के आधार पर उसे न्यायालय ने फांसी की सजा दी. ●

इक हुस्न नजर आता है...

देख कर उन को, नजर में यह असर होता है,
जिस तरफ देखिए इक हुस्न नजर आता है.
—नातिक लखनवी

✦

"मेरा दिल आ गया है इक हसीं पर,"
यह सुनना था कि वो बोले, "हमीं पर."
—हफीज जौनपुरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात का फैसला

फिनलैंड की एक युवती का परिचय वहां गए हुए एक भारतीय यात्री से हुआ... और फिर बाद में वह पछताती ही रही कि काश उसे पहले ही यह सब कुछ मालूम हो जाता!

"**स्टाकहोम** तो मैं स्वयं चल कर आप को दिखा सकती हूं. मैं एक बार वहां हो आई हूं."

मैं ने उत्तर दिया, "दूर विदेश के अकेले यात्री के लिए इस से बढ़ कर और क्या हो सकता है कि तुम साथ चलो."

फिनलैंड की उस युवती का नाम माएआ लेएना ल्युल्यु था, लेकिन हम उसे माया कहेंगे.

तीन दिन माया के परिवार का स्नेहपूर्ण आतिथ्य उपभोग करने के पश्चात मुझे अपनी अनंत सी यात्रा में फिर आगे बहना पड़ा. माया को उसी समय तुरकु कालिज में विशिष्ट शिक्षा के लिए भरती होने जाना था. उस ने कहा. "मैं तुरकु में आप से मिलूंगी और वहीं से हम दोनों स्टाकहोम चलेंगे."

फिर कुछ क्षण सोच कर बोली, "यदि किसी कारणवश आप से न मिल सकूं तो अपने होटल में आप को मेरी चिट्ठी रखी हुई मिलेगी."

चिट्ठी का नाम सुन कल्पना के पुष्पित उपवन में मुझे ठेस लगी. यूरोप के उन जनसघन शहरों में मेरी वही अवस्था थी जो रोबिनसन क्रूसो की जन-हीन द्वीप में—दोनों ही निःसंग. यूरोप में अंगरेजी विरले ही कोई जानता है. इसी से मुझे इशारों से या दो दिन की सीखी टूटीफूटी उन की भाषा से काम निकालना पड़ा. इसलिए जब कोई अंगरेजी बोलने वाला मिल जाता तो मुझे वही उन्माद भरा आनंद होता, जो वाणी पाने पर गूंगे को मिलता होगा. माया लंदन में एक वर्ष रह आई थी, इसलिए खूब अच्छी अंगरेजी बोलती थी. अपने शहर लोइमा में वन कृषि प्रदर्शनी में उस ने सोमवार को मुझे ढूंढ निकाला था, और वह इस कारण कि पिछले शनिवार को एक जिप्सी औरत ने उस की हथेली

[illegible] मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

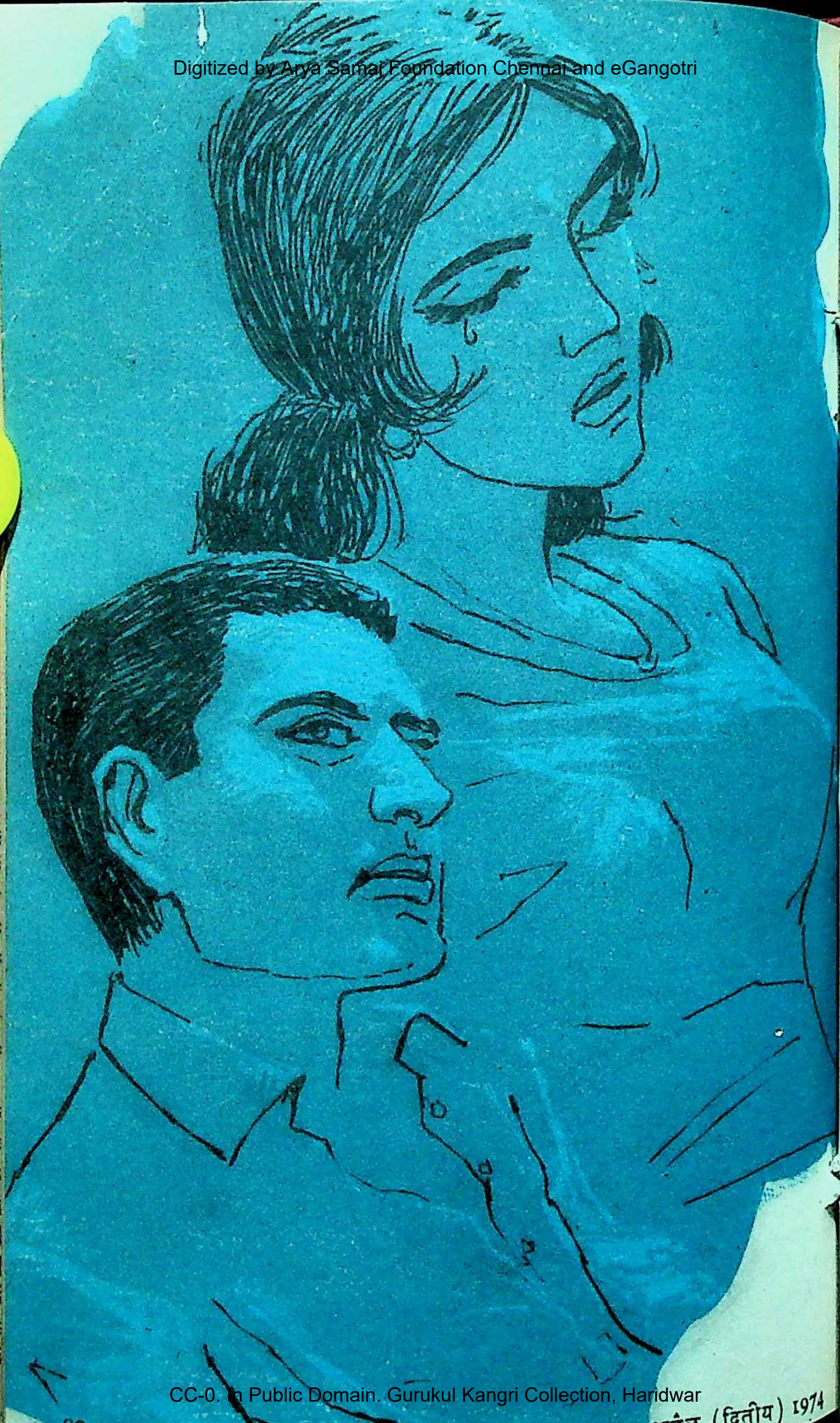

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख कर कहा था, "सोमवार को एक विवाहित विदेशी भद्र पुरुष से तुम्हारी मुलाकात होगी.' बोलने भर को ही किसी का मिल जाना मेरी परिस्थिति में आशीर्वाद था. पर माया तो इस भाव से मिली जैसे दो अनन्य मित्र सो कर जगे हों, न कि आठ हजार मील फासले के नितांत अपरिचित विदेशी संयोगवश...

आक्सफोर्ड वनविज्ञान विद्यार्थियों का एक दल फिनलैंड गया हुआ था. मैं भी यूरोप में अन्यान्य देशों का शिक्षा पर्यटन करतेकरते फिनलैंड पहुंच उन लोगों के साथ सम्मिलित हुआ था. लोइमा नाम के एक छोटे शहर में वनसंपत्ति तथा कृषि की एक प्रदर्शनी लगी हुई थी. फिनलैंड में वन उस देश का सर्वप्रधान धन है. हम लोग प्रदर्शनी देखने के लिए निमंत्रित हुए थे. उसी में चलतेचलते ठीक अपने पीछे मैं ने अंगरेजी बोली सुनी. सुनते ही चौंक कर घूम गया. देखा, एक सुंदर युवती बहुरंगा राष्ट्रीय लिबास पहने मेरे पीछेपीछे आ रही है और अपने से कम उमर वाले एक लड़के के साथ जरूरत से ज्यादा जोरजोर से अंगरेजी में बातें कर रही है. इस देश में दो व्यक्तियों को आपस में अंगरेजी बोलते देख मुझे इतना आश्चर्य और आनंद हुआ कि शिष्टाचार का विचार भूल मैं झट उस युवती की ओर घूम गया और पूछा, "क्या आप अंगरेजी जानती हैं?"

युवती सलज्ज भाव से हंसती हुई मेरी बगल में आ गई और बोली, "हां, थोड़ी बहुत जानती हूं."

फिर हम दोनों साथसाथ चलने लगे. मैं ने पूछा, "आप ने अंगरेजी कहां सीखी?"

"मैं लंदन में एक वर्ष रह आई हूं, वहीं अंगरेजी सीखी. वहां मैं ने एक भारतीय महिला को देखा था, ओह, कितनी सुंदर थी वह, और उस के केश कितने लंबे और काले थे! वह दिन मैं कभी न भूलूंगी जब मेरी आंखों को उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था."

"आप जरा देर के लिए मेरे घर चले चलिए," माया ने आग्रह किया लेकिन मेरी लाचारी सुन कर उस का चेहरा एकदम मुरझा गया

कुछ अरसे के बाद एक ऊंचा दालान मिला. सीढ़ी पर चढ़ भीतर जा कर प्रदर्शित वस्तुओं को देखना था. मैं उलझन में पड़ा कि माया को अनिमंत्रित साथ कैसे ले जाऊं, और छोड़ कर जाना तो मुश्किल था. इसी लिए सब लोगों के चले जाने के बाद भी मैं माया के साथ नीचे खड़ा रहा.

मेरी समस्या देख कर एक उच्च पदाधिकारी मेरे पास आए और हंसते हुए अंगरेजी में बोले, "आप अपनी तरुणी मित्र के साथ भीतर जा सकते हैं."

हम दोनों कुछ शरमाए, कुछ हंसे, और साथसाथ भीतर चले गए. वहां माया ने अंगरेजी में मुझे समझासमझा कर सब चीजें दिखाईं. मेरे अन्य मित्र, जो दिखलाने वालों की दुर्बोध अंगरेजी की दलदल में धंसतेउठते थे, मुझ से ईर्ष्या करने लगे.

इस के पश्चात जलपान का निमंत्रण था. वहां तो माया का जाना कहने पर भी उचित न होता, इसलिए हम दोनों बाहर ही कुछ दूर खड़े रहे. मैं ने उस का फोटो खींचा और माया ने मुझे अपने नाम का कार्ड दिया. वह आग्रह करने लगी, "आप मेरे घर चले चलिए. मेरे मांबाप आप को देख कर बड़े प्रसन्न होंगे."

मैं ने उत्तर दिया, "जाने की इच्छा तो बहुत है, लेकिन अभी तुरंत मेरे साथी लोग निकल आएंगे और उन के साथ बस से तुरकु जाना पड़ेगा. मैं सरकारी दौरे पर हूं, दल से अलग नहीं हो सकता."

पर माया आग्रह करती ही रही, "यदि किसी तरह चल सकते तो बड़ा अच्छा होता. दोचार मिनट के लिए ही सही. मेरा घर यहां पास ही है."

मैं ने नितांत लाचारी प्रकट की. माया का मुखकमल देखतेदेखते मुरझा गया. अंत में मैं ने कहा, "तुरकु में मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी दौरा समाप्त हो जाएगा. तब तुम चाहो तो मैं एकदो दिन के लिए लौट कर आ सकता हूं.

माया प्रफुल्लित हो उठी. हर्ष और स्नेह भरे आग्रह से बोली, "जरूर आइएगा. . .जरूर, जरूर." फिर एक हलकी सी निश्वास ले कर बोली, "मैं तो भारतवर्ष को केवल मानचित्र से ही जानती हूं."

तुरकु से दो दिन के बाद मैं ने चिट्ठी लिखी : "यदि आने को कहो तो मैं आ सकता हूं. गाड़ी परसों सुबह वाली ठीक होगी."

दूसरे दिन शाम को होटल लौट कर अपने कमरे में आया तो मेज पर रखा हुआ कागज का एक टुकड़ा मिला. उस पर लिखा था : "लोइमा से टेलीफोन संवाद : चिट्ठी मिली—अपार आनंद हुआ. आप अवश्य आइए. स्टेशन पर मिलूंगी.

—माया ल्युल्यु"

मेरी दुस्सह निर्जनता एकाएक संगीतमयी हो गई. होटल के क्लर्क का लिखा हुआ कागज का टुकड़ा मेरी स्वर्गनिधि बन गया. उसी के सहारे सोया, उसी को देखने फिर सुबह उठा.

रेलगाड़ी लोइमा स्टेशन के नजदीक पहुंची तो मैं गरदन निकाल माया को ढूंढ़ने लगा. पर माया कहीं न दिखी. गाड़ी आ कर खड़ी हो गई, फिर भी मैं डब्बे में ही बैठा रहा. मेरा गंतव्य स्थान तो लोइमा न था, माया थी. भरी आशा इस तरह खाली होने लगी जैसे घड़े में बड़ा सा छेद हो गया हो. आशा के दुस्साहस के लिए अपने पर क्रूर हंसी भी आई.

खैर, गाड़ी छूटने वाली थी, मैं अनिश्चित अवस्था में उतर पड़ा. सूटकेस हाथ में ले जैसे ही मैं ने प्लेटफार्म पर पैर रखा कि माया अपनी उसी बहुरंगी पोशाक में झपटी हुई न जाने कहां से आ पहुंची और सूटकेस मेरे हाथ से छीन लिया.

सूटकेस भारी था. मैं ने जोर दिया कि मुझे लौटा दो या मजदूर कर लो. पर माया ने एक न सुनी. बोझ से झुकी हुई सूटकेस के साथ टैक्सी पर मुझे ले गई.

जब टैक्सी चली तो उस ने सलोने सलज्ज भाव से कहा, "मैं यह पोशाक बहुत कम पहनती हूं. आज इसलिए पहनी कि प्रथम दिन आप ने मुझे इसी लिबास में देखा था. डरी कि कोई और कपड़े पहनूं तो शायद आप मुझे पहचान ही न पाएं." यह कह उस ने अर्द्धनत नेत्रों से मेरी ओर देखा.

थोड़ी देर बाद माया बोली, "स्टेशन तो मैं बड़ी देर की आई हुई हूं. लेकिन जब गाड़ी आई तो मैं छिप गई. दिल धड़कने लगा कि यदि आप न आए तो? अपनी दुस्साहसी आशा पर लाज भी लगने लगी. पर अब आप को उतरते देखा तो दौड़ी आई."

घर आलीशान था. चाय के बरतन सारे चांदी के थे. बैठकघर में आसाइश सरंजाम और उन के बीच गमले में छत को छूता हुआ एक बड़ा पौधा., चाय उस ने अकेले बिठा कर पिलाई. उस के बाद मुझे अपने कमरे में ले गई और बोली, "यही आप का शयनागार होगा. आप की चीजें मैं ने यहीं रख दी हैं. यह मेरा कमरा है. मैं मां के साथ रह जाऊंगी."

मैं ने कृतज्ञता के साथ असमंजस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिले स्वर में पूछा, "तुम्हें असुविधा न होगी?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, नहीं. खाली कमरे सी कई हैं, पर आप इसी में रहें. बल्कि आप ही को कुछ कष्ट हो सकता है, क्योंकि मैं ने अपने कपड़ेलत्ते और शृंगार की चीजें यहीं छोड़ रखी हैं."

मैं ने हंसतेहंसते कहा, "मुझे और कोई तकलीफ न होगी, लेकिन लालच संभालने का कष्ट अवश्य होगा. ये सभी लुभावनी चीजें साधु पुरुष को भी चोर बना देंगी."

माया मुसकराई. अद्‌भुत मुसकान थी! आनंद जैसे उस के लोचनों से उमड़ रहा हो. कुछ विश्राम के पश्चात मांबाप के साथ मुझे अपने खेत दिखाने ले गई—शहर से पांच मील दूर. यहां भी बिजली और टेलीफोन थे. खेतों के बीच मनोरम वाटिका थी और उस में छोटा सा, लकड़ी का बना हुआ एक सुंदर विश्रामघर. आइसक्रीम और फल हम लोगों ने विश्रामघर में बैठ कर खाए. फिर मांबाप अपने धंधे में लग गए. माया ने कहा, "चलिए, हम लोग बाग में घूमें."

घूमघाम कर लकड़ी की बैंच पर हम दोनों बैठे.

पाइन वृक्ष की नुकीली पत्तियों के बीच से उत्तर सीमांत का नीला आकाश छनछन कर उतर रहा था. माया भारत-वर्ष के विषय में बहुतेरी बातें पूछती रही. वह कीमती जड़ाऊ कंगन पहने हुए थी, उन पर मेरा ध्यान गया. माया ने एक कंगन कलाई से निकाल मेरे हाथ पर रख दिया देखने के लिए, फिर बातों में भूल गई.

मैं ने चुपके से कंगन को जेब में डाल लिया.

शाम तक भी उसे खोए कंगन का ध्यान नहीं आया. मेरे याद दिलाने पर वह चौंक उठी और समझा, कहीं और खो आई है. अंत में मैं ने कहा, "जादू से कंगन निकाल दूंगा."

कंगन मिलने पर उलटपलट कर वह देखने लगी कि यही उस का कंगन है या कोई और. आश्चर्य में कृतज्ञता प्रकट करना भी भूल गई. लेकिन जब जादू का रहस्य मालूम हुआ तब मुसकराई और धन्यवाद दिया.

बाग में बैठी माया ने बातोंबातों में पूछा था, "क्या आप विवाहित हैं?"

बातों के दौरान मैं ने झट उत्तर दिया था, "नहीं."

माया मेरी ओर इस तरह देखने लगी थी जैसे मैं ने कोई पहेली सामने रख दी हो.

पीछे जब मैं ने सच्ची बात बताई तो माया स्नेह की मूर्ति बन आनंद से हंस पड़ी, "मैं जादू के द्वारा हमेशा से जानती रही हूं कि आप विवाहित हैं. केवल

किसी ने न पूछा...

सौ टुकड़े हो गया न सुनी हम ने पर सदा,
क्यों कर न जी को भाए, अदाए शिकस्ते दिल?
—अख्तर

✦

किसी ने मोल न पूछा दिले शिकस्ता का,
कोई खरीद के टूटा प्याला क्या करता?
—आतिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम दाम में

उच्च कोटि का साहित्य

विश्व पाकेट बुक्स

नीली आंखों के दायरे

आनंद सागर श्रेष्ठ

शौकत महल, जो बाहर से जितना बड़ा था उतना ही भीतर से भी विशाल और रहस्यपूर्ण था. फिर जब इस शौकत महल के मालिक की बड़े ही नाटकीय ढंग से हत्या कर दी गई तो महल का रहस्य और भी गहरा हो गया आखिर यह हत्या किसने की? रहस्यों से भरपूर एक रोमांचक उपन्यास

मूल्य रु. 2

डाक खर्च अतिरिक्त

लायड्स बैंक डकैती

तपन घोष

इंसान के हाथों होने वाले अपराधों की सच्ची कहानियों का संकलन, जिसकी जघन्यता दिल हिला कर रख देती है. कल्पना के जोर पर पेश किए जाने वाले अपराधों की मनगढ़ंत घटनाओं से कोसों दूर यह वास्तविक घटनाएं रहस्य रोमांच की काल्पनिक अपराध कथाओं से कहीं ज्यादा सनसनीखेज व रोचक हैं.

मूल्य रु. 2

डाक खर्च अतिरिक्त

अंतरिक्ष के पार

कैलाश साह

मानव निर्मित कंप्यूटर हैरोकोल्ट-7 जिसने पृथ्वी की अंतरिक्ष के पार मानव सभ्यता का बीजारोपण करने के अकल्पनीय काम का बीड़ा उठाया और अपने सिद्धान्तों को कार्यरूप देने में वह सफल भी हो गया. लेकिन इस महान शक्तिशाली 'सर्वज्ञ' को भी मानव के हाथों मात खानी पड़ी. आखिर था तो वह एक कंप्यूटर ही.

मूल्य रु. 2

डाक खर्च अतिरिक्त

आज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही सोच रही थी कि जिप्सी औरत गलत कैसे बताएगी.

रात को भोजन के उपरांत हम दोनों अहाते की फुलवारी में घर के आसपास टहलने लगे. आकाश में चांद न था, पर एक अपूर्व कोमलांगिनी आभा मायामंत्र की तरह दिगंत पर बिछी हुई थी. पृथ्वी के उत्तर सीमांत पर इन दिनों प्रकृति का एक विचित्र हृदयग्राही अभिनय होता है. ग्रीष्म काल की चंद्रहीन रात्रि में एक अवर्णनीय अर्द्धअवगुंठित ज्योति सरस कविता की तरह जड़चेतन को भरमाती रहती है. यह पुलकित रहस्यमयी कांति कानों में चुपके से जैसे कुछ कह जाती हो. दिल गुमराह हो जाता है, हृदय मानो अपना लंगर तोड़ रसअंबर में मंडराने लगता है.

माया धीरेधीरे पता नहीं क्या कहती जा रही थी. और उस प्रवाह में मैं ने भी कुछ कह दिया होगा. माया ने झट मेरी उंगलियों को दबा कर धीरे से कहा, ''जोर से न बोलिए, मां सुन लेंगी. उन के कान सांप के हैं.''

मुझे आश्चर्य हुआ कि इन सर्द मुल्कों में भी, जहां सांप का नामोनिशान नहीं, वहां भी यह कहावत मशहूर है.

पीछे चिट्ठियों में माया ने लिखा था : ''आप के कमरे में बैठी चिट्ठी लिख रही हूं. खिड़की खुली हुई है, सामने नदी के ऊपर हलका कुहरा झूम रहा है. वही भरमाने वाली अनुपम सांवली द्युति छिटकी हुई है. आप की ही बातें याद आ रही हैं. और आप को सुन कर आश्चर्य होगा कि आप की कितनी स्मृतियां मैं ने जमा कर रखी हैं. सुनिएगा? भारतवर्ष के डाक टिकट तो आप को याद होंगे. आप के कमरे में बैठ भारतवर्ष से आई हुई चिट्ठियों से छुड़ाछुड़ा कर मैं ने ब्रूच-केस में रखे थे. और चीजें ये हैं : आप के पिए हुए सिगरेटों के अवशिष्ट, आधी जली दियासलाई की तीलियां, आप के फाड़े हुए कागज के टुकड़े और आप का एक कंघा.''

खैर, तो तुरकु की बात कहने जा रहा था. तुरकु होटल में माया न मिली, उस की चिट्ठी ही मिली. उसी दिन की चिट्ठी थी—तुरकु में ही लिखी हुई. लिखा था : ''अनिवार्य कारणों से मुझे लोइमा अभी लौट जाना पड़ रहा है. आज आप आएंगे और आज सुबह ही मैं लौटी जा रही हूं. क्षमा कीजिएगा. मेरी एक प्रार्थना स्वीकृत होगी? पिरकु दुकान में मैं आप के लिए एक छोटा सा स्नेहोपहार रख आई हूं. आप जा कर कृपया उसे ले लें. मुझे निराश न कीजिएगा.''

मैं ने ट्रंक टेलीफोन द्वारा माया से बातें कीं. कहा कि यदि लौट कर आ जाओ तो मैं एक दिन और ठहर जाऊं. पर माया ने प्रेमविह्वल कंठ से संपूर्ण विवशता बताई. मुझे अकेले ही स्टाकहोम जाना पड़ा. वहां से नार्वे इत्यादि होता हुआ मैं आक्सफोर्ड लौटा.

आधे रास्ते बर्लिन से ही मैं ने चिट्ठी लिखी अपनी निराशा और आश्चर्य प्रकट करते हुए. ''शायद न आने का मुख्य कारण था मुझ पर तुम्हारा अविश्वास...यदि यह बात है तब तो सारा दोष मेरा ही है और मैं अपने को इस के लिए क्षमा नहीं कर सकता. पर तुम उस छोटे से अरसे में कैसे समझ सकती थीं कि व्यक्तिगत मैं जैसा भी होऊं, मैं तुम्हारे प्यारे देश में और तुम्हारे सामने भारतवर्ष की समुच्च सभ्यता और आध्यात्मिक गौरव का दूत सदृश था, वह भारतवर्ष जिस के विषय में तुम निश्वासों के बीच कहा करतीं—हर रोज मैं कल्पना में वहां जाया करूंगी और हर रात सपनों में—तब यह किस तरह संभव था कि...''

आक्सफोर्ड पहुंचने के बाद और भी चिट्ठियां आईं. माया ने कुछ दिन के बाद लिखा : ''इतने दिनों से जो छिपाए बैठी थी अब न छिपा सकूंगी. उस दिन मैं आप से मिलने तुरकु गई थी, और काम तो लोकरीति था. एक दिन तो कमनीय प्रतीक्षा की सुखलहरी में बीता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर जिस दिन आप को पहुंचना था उस से पहली रात जैसे सहसा मेरी आतंक-सरिता जम कर बरफ हो गई. मैं चिंता की मूर्ति बन सारी रात बेकस बैठी रही. कभी सोचती, मिलूंगी और साथ जाऊंगी, अवश्य जाऊंगी. फिर तुरंत जैसे कोई गहरी खाई दिखा कर हाथ खींच लेता. आप हंसें नहीं क्योंकि मैं रो रही हूं...

"मैं आत्मविश्लेषण करने बैठी. सारा तुरकु सो रहा था. मेरे कमरे की बिजली भी नींद की मारी हुई थी. रात के दो बजे थे. मैं ने सोचा, यह मानना ही पड़ेगा कि इस अपरिचित परदेशी की ओर मैं कुछ दुर्बल हो गई हूं. यह भी ठीक है कि मेरे अंतर में लालसा झांकने लगी थी कि यदि संभव हो आप से भी स्नेह का प्रतिदान पाऊं. ऐसी परिस्थिति में मैं स्वयं अपने से डरी. यदि कोई ऐसी बात हो जाए जिस के लिए हम दोनों आजीवन पश्चात्ताप करें...

"तीन बजे होंगे. मैं ने टैक्सी मंगाई और सुबह होने के पहले ही लोइमा लौट आई. सुबह तक ठहरने का भी भरोसा अपने पर नहीं रहा.

"मैं उस समय आप को कितना समझ सकी थी. मैं ने रीति के अनुसार आप को वैसा ही समझा था जैसे साधारणतः यूरोप निवासियों को देखती हूं. इन पर पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता.

"पर इस समय आप के भावव्यवहार तथा आप की बातों को सोचसोच कर, इन का विश्लेषण कर, आप को जितना जान गई हूं इस का एक अंश भी उस समय यदि जानती होती तो निर्भय हो मैं मनशरीर सर्वांग को आप की सुरक्षा में अमानत रख देती...

"मैं आजीवन अपने को उस रात के फैसले के लिए क्षमा न करूंगी. पर अब तो केवल पश्चात्ताप ही रह गया है." ●

विवाह और सुखी जीवन

मूल्य : ३.५० (डाक खर्च अतिरिक्त)

सरिता, मुक्ता के स्थायी ग्राहकों से केवल २.५० रु.
मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च माफ.

विवाह से पहले आप को क्या जानना चाहिए? पतिपत्नी एकदूसरे को समझने में कहां गलती करते हैं? और पारिवारिक शांति, सुख और सफलता की कुंजी क्या है?

इस पुस्तक में सुखी पारिवारिक जीवन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहज, सरल भाषा और रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है. यह पुस्तक दांपत्य जीवन की उलझी गुत्थियों को सुलझाने और टूटते परिवारों को बचाने में सहायक सिद्ध होगी.

दिल्ली बुक कंपनी, एम-१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने भी उतारी एक तसवीर

छाया : धर्मनाथ प्रसाद, कलकत्ता

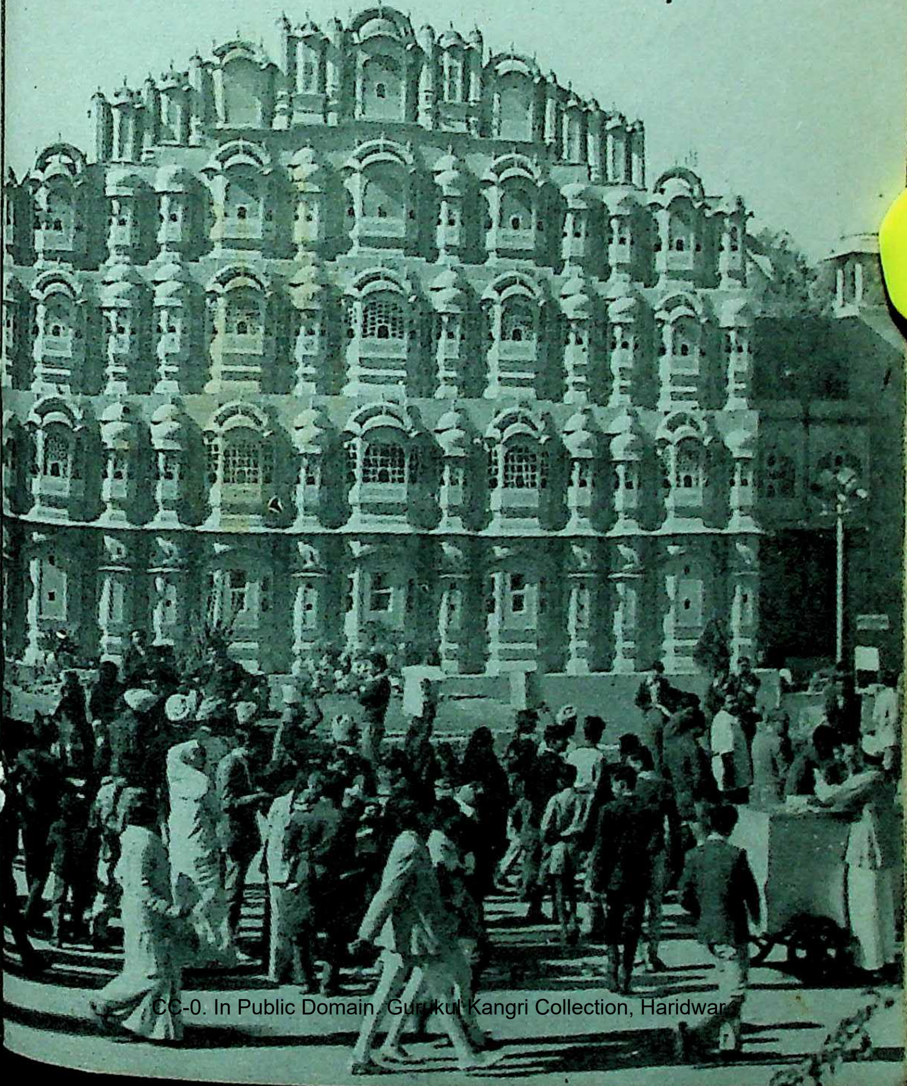

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

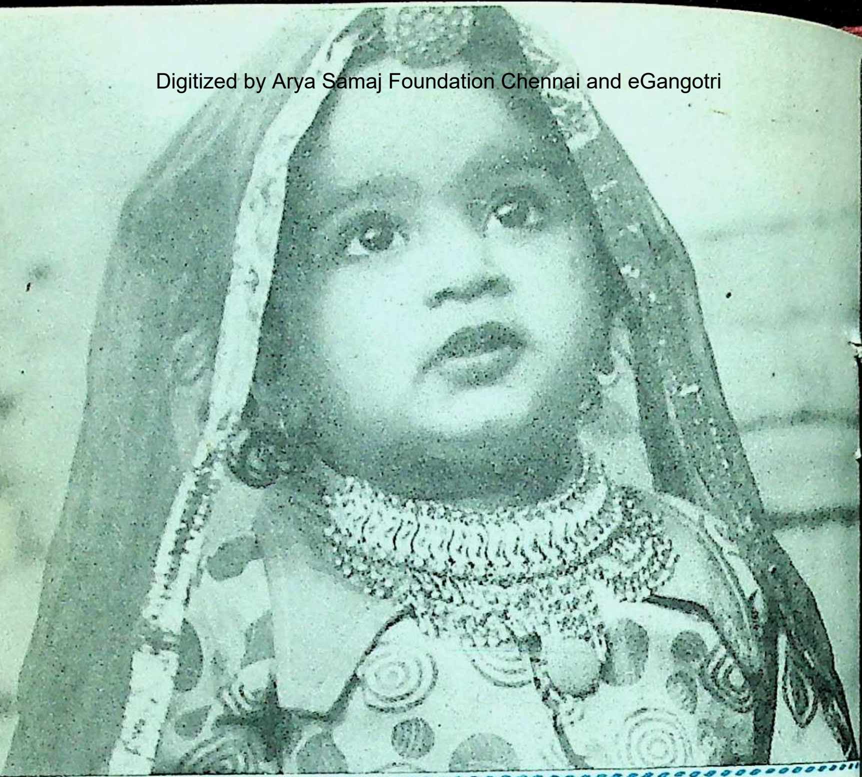

छाया : सरोज शर्मा, श्रीगंगानगर

क्या आप को फोटोग्राफी का शौक है? तो क्यों नहीं मुक्ता के पाठकों को अपने फोटोग्राफ दिखाते? मुक्ता के इस स्तंभ में नियमित रूप से शौकिया फोटोग्राफरों के फोटोग्राफ प्रकाशित किए जाएंगे.

फोटोग्राफ का कोई भी विषय हो सकता है. प्रत्येक प्रकाशित फोटोग्राफ पर 10 रु. पुरस्कार स्वरूप दिए जाएंगे. फोटोग्राफ का आकार 6″ × 8″ से कम नहीं होना चाहिए. प्रिंट ग्लासी हो. अस्वीकृत फोटोग्राफ पता लिखा टिकट लगा लिफाफा साथ आने पर ही वापिस किए जाएंगे.

अपने फोटोग्राफ इस पते पर भेजिए :

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

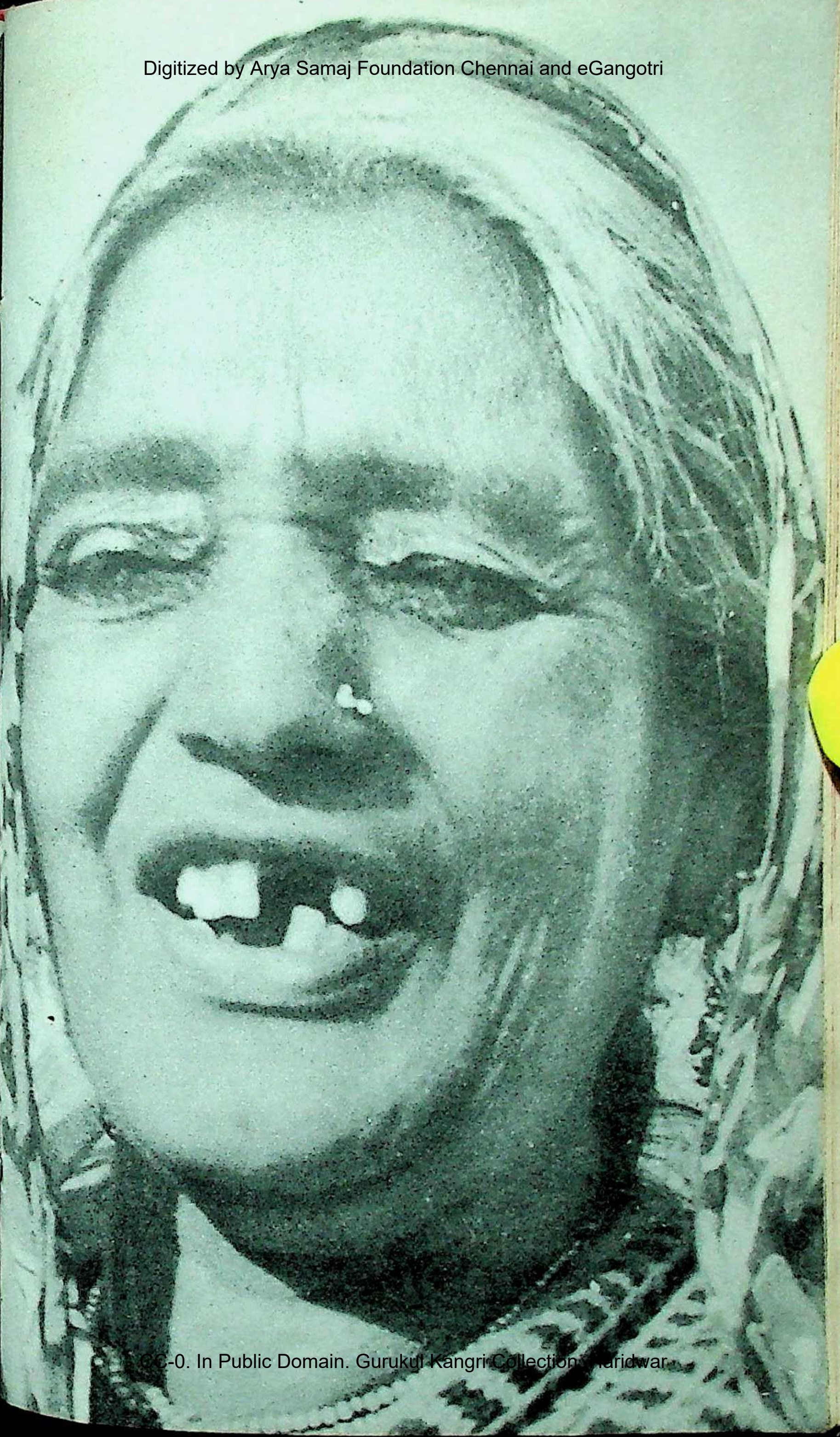

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● मेरी आयु 15 वर्ष है. शादी जल्दी करने की न इच्छा है, न संभावना. पर मैं स्वयं को संयमित नहीं रख पाता. हर समय दिमाग में कामोत्तेजक बातें आती हैं और उन का समाधान अप्राकृतिक ढंग से होता है. वीर्य निष्कासन से अधिक हानि है या रोकने से? मुझे इस तरह के चिंतन से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

—शशिधर खां 'शशि', डेंगालपाड़ा

● मैं 16 वर्षीय दसवीं कक्षा का छात्र हूं. कच्ची उमर में काम भावनाओं से परिचित हो गया. अब हर समय दिमाग में लड़की ही रहती है. काम विह्वलता के इस अंधेरे से निकलने का उपाय बताइए?

—संजयकुमार, मुजफ्फरपुर

इस सब से बचने का एक ही उपाय है, इस की उपेक्षा. हर समय यही सब सोचने या चिंता करने से आदत पकने लगती है. आप अश्लील व कामुक साहित्य न पढ़ कर अच्छा साहित्य पढ़ें, हाबियों व खेलकूद में व्यस्त रहें. अच्छे मित्रों की संगति में रहें. व्यस्तता व चिंतन की दिशा मोड़ने से आप को अवश्य लाभ होगा. साथ ही अधिक चाय व गरम चीजों के सेवन से बचिए. रात का भोजन हलका व सोने से दो घंटे पूर्व लीजिए. कब्ज न होने दें. आप को अंतर मालूम होगा. फिर भी कभीकभी वीर्यपात हो जाए तो उस से कोई हानि नहीं, यह सोच कर चिंता छोड़ दीजिए. इस चढ़ती उमर में यह शरीर की एक स्वाभाविक क्रिया है, इसलिए उत्तेजना के बाद रोकने के बजाए उत्तेजना से बचना ही श्रेयस्कर होगा.

● मैं बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा हूं. जब आठवीं में पढ़ती थी तभी एक लड़के से संबंध हुआ. उस ने मुझे धोखा दे कर छोड़ दिया. अब 18 वर्ष की होने पर भी मासिक धर्म शुरू नहीं हुआ है. क्या उसी कारण? मुझे हर समय इस की चिंता लगी रहती है. क्या करूं?

—क. ख. ग., पटियाला

उस कारण से तो मासिक धर्म जल्दी प्रारंभ हो जाना चाहिए था. वैसे भी प्रारंभ की यह अवधि 12 से 18 के बीच ही होती है. पर कभीकभी अत्यधिक चिंता से भी मासिक धर्म रुक जाता है. आप अनजान उमर की भूल को व धोखा देने वाले को मन से निकालने का प्रयत्न कर के चिंता मुक्त होइए, मासिक धर्म शुरू हो जाएगा. न हो तो किसी लेडी डाक्टर से संपर्क कीजिए.

● मैं 22 साल की विधवा हूं. सासससुर का व्यवहार मेरे साथ ठीक नहीं है. मैं दोबारा विवाह कराना चाहती हूं पर अपनी अन्य विधवा बहनों की तरह पुनर्विवाह की इच्छुक होने पर भी लोकलाज के कारण मुंह से यह बात निकाल नहीं सकती. कृपया कोई सुझाव दीजिए.

—क. ख. ग., नागपुर

सासससुर तो शायद कोई अपवाद रूप में ही बहू के पुनर्विवाह का समर्थन करेंगे. इस मामले में आप को पीहर के किसी समझदार व हितैषी रिश्तेदार को अपने पक्ष में लेना होगा. उन की सहायता से किसी पत्रपत्रिका में विज्ञापन दे कर आप अपने योग्य साथी को तलाश कर सकती हैं. 'सरिता' ऐसे प्रस्तावों का स्वागत कर वैवाहिक विज्ञापनों की दर में 50 प्रति शत छूट देती है. आप चाहें तो हमारी इस सेवा से भी लाभ उठा सकती हैं. रही लोकलाज की बात, तो पुरानी सड़ीगली परंपराएं साहसपूर्ण कदम उठाने से ही टूटेंगी, भीतर ही भीतर घुटते रहने से नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● मैं बी. ए. फाइनल का छात्र हूं. मेरी उमर 20 साल है. उच्च अध्ययन का विचार रखता हूं. पर घर वाले शीघ्र विवाह कर देना चाहते हैं. परिवार के रिवाज के अनुसार शादी से पहले लड़की नहीं देखी जा सकती. जब कि मैं मुक्त विवाह का समर्थक हूं, वह भी पैरों पर खड़ा होने के बाद. क्या करूं? —राजेंद्र, इंफाल

पढ़ाई समाप्त कर आत्मनिर्भर होने के पूर्व आप कदापि विवाह न करें. इस मामले में दृढ़ता से काम लेने पर ही ये रिवाज बदल सकते हैं. फिर समय आने पर आप को विवाह पूर्व लड़की पसंद करने की भी इजाजत मिल जाएगी.

● मैं 19 वर्षीय भारतीय वायु सैनिक हूं, पर अभी भी बचपना शेष है. घूमने-फिरने, पिक्चर देखने, गप्पें लड़ाने का शौकीन हूं. खेल और अभिनय में नियमित भाग लेने के बावजूद मित्रों में लोकप्रिय नहीं हो पाता, अतः मानसिक रूप से परेशान रहता हूं. क्या करना चाहिए? —राजेश, बंगलौर

आप ने जिसे बचपना कहा है, वह किशोरावस्था का स्वभाव है. हां, अब आप किशोर से तरुण हो गए हैं. अतः स्वयं में कुछ गंभीरता तो लानी होगी. हो सकता है आप की बातूनी आदत व प्रदर्शनप्रियता से ही लोग आप से दूर भागते हों. हर समय अपनी ही हांकने के बजाए आप दूसरों को सुनने की भी आदत डालिए. आत्मकेंद्रित होने के बजाए दूसरों में भी कुछ रुचि लीजिए. अच्छे मित्र प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है.

● मेरी उमर 22 वर्ष है. शादी 10 वर्ष पूर्व हो गई थी. संतान के रूप में तीनों लड़कियां हैं. पत्नी की आयु 20 वर्ष है. वह स्वस्थ भी है. तीनों बार लड़की होने का क्या कारण हो सकता है? आगे के लिए कोई उपाय बताइए? —क. ख. ग., सरदार शहर

लड़के या लड़की की उत्पत्ति अभी इच्छानुसार संभव नहीं हो पाई है. यह इतनी जटिल प्रक्रिया है कि अभी तक की सारी वैज्ञानिक खोज इस संबंध में अधूरी है. फिर भी इलाज से कुछ प्रति शत सफलता की संभावना हो सकती है. आप अपना सामान्य स्वास्थ्य व शक्ति बढ़ाइए और अपनी जांच भी कराइए. चौथी बार तैयारी के बाद भी सफलता न मिले तो केवल एक लड़के की लालसा में संतान की संख्या बढ़ाते जाना बुद्धिमानी नहीं होगी. आदमी अपने अच्छे कामों से ही नाम पैदा करता है, पुत्रों से नहीं. आप लड़कियों को ही अच्छी शिक्षा दे कर योग्य बनाइए.

● मैं अपनी जिंदगी से ऊब कर संन्यास लेना चाहती हूं. क्या आप किसी ऐसे आश्रम का पता बता सकते हैं, जहां एक लड़की सारे मोहबंधन तोड़ ईश्वर में लीन हो सकती है? वैसे मैं एक उच्च घराने की एम. ए. पास लड़की हूं, धनदौलत, आराम, किसी बात की कमी नहीं. बस, नहीं मिला है तो प्यार. मैं सब को प्यार करती हूं, पर मुझे—? कृपया मेरी समस्या का समाधान कीजिए. —मंजु, जबलपुर

आप के इस कथन में कुछ अतिशयोक्ति लगती है कि आप सब को प्यार करती हैं. यदि सचमुच ऐसा है तो आप को भी सब से प्यार मिलना चाहिए. प्रतिदान न मिले तब भी यह सोच कर निराशा को दूर भगाइए कि ऐसा केवल आप के साथ ही नहीं हुआ. दुनिया में और भी लोग हैं जो प्यार के अभाव में जीते हैं, फिर भी जीवन को प्यार करते हैं और संघर्ष कर के अपनी राह आप निकालते हैं. आप के पास तो साधन हैं. स्वयं से बाहर जा साधनहीनों की ओर देखिए, उन की सहायता कीजिए और उन से अपने लिए प्यार जुटाइए. किसी आश्रम में जाने की आप की उमर नहीं है, न ही आज के औसत आश्रम किसी नवयुवती के लिए खतरे से खाली हैं, वे आप को और अधिक भटका सकते हैं. ईश्वरोपासना घर पर कीजिए व आसपास के दीनदुखियों में ही ईश्वर के दर्शन करिए. इस तरह मन स्थिर हो जाने के बाद अपने योग्य साथी की तलाश कर विवाह कर लीजिए.

—नीरजा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी फिल्में : चोरी

मौलिक चिंतन के नाम पर हमारे निर्माताओं के पास

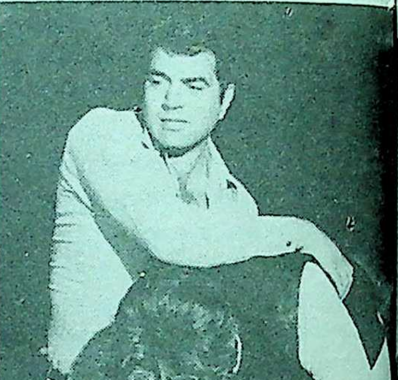

'जुगनू' में धर्मेंद्र और प्राण : निर्माता प्रमोद चक्रवर्ती ने 'जुगनू' में विदेशी फिल्मों से अनेक दृश्य चुराए.

पिछले दिनों एक फिल्म बनी थी : 'खूनखून'. यह फिल्म देश के अनेक सिनेमाघरों में दिखाई गई और खूब चली यानी 'हिट' हुई. निर्माता ने खूब पैसा कमाया. लेकिन फिल्में देखने वाले अब केवल हिंदी फिल्में ही नहीं देखते, वे अकसर विदेशी फिल्में भी देख लेते हैं. दर्शकों ने फिल्म 'डर्टी हैरी' भी देख ली और रहस्य खुला कि 'खूनखून' फिल्म 'डर्टी हैरी' की कार्बन कापी है. खबर 'डर्टी हैरी' के निर्माता तक भी पहुंची और देखतेदेखते मामला बंबई की अदालत तक चला गया. अदालत ने फैसला दिया कि फिल्म 'खूनखून' सचमुच ही 'डर्टी हैरी' की नकल है. 'खूनखून' के निर्माता से कहा गया कि वह 'डर्टी हैरी' के निर्माता को दंड के तौर पर 30 हजार रुपए दे.

बंबई की अदालत के इस फैसले से 'खूनखून' के निर्माता दुखी होने के बजाए खुश ही हुए होंगे. जिस उद्योग में करोड़ों का वारान्यारा हो, एकएक सैट पर लाखों रुपए खर्च हो जाते हों, सहनायक या सहनायिका को भी हजारों-लाखों रुपए देने पड़ते हों, वहां किसी निर्माता को दंड के तौर पर 30 हजार रुपए देने पड़े तो कौन सी बड़ी रकम निकल गई? जहां तक देश की प्रतिष्ठा का सवाल है, उस की भला किसे चिंता है?

'खूनखून' के निर्माता

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक : लता पंत

और सीनाजोरी

केवल विदेशी फिल्मों की भोंडी नकल ही क्यों रह गई है?

अन्य फिल्म प्रदर्शित हुई है : 'मनोरंजन'. फिल्म के निर्देशक हैं शम्मी कपूर. पाठकों को जान कर आश्चर्य होगा कि यह फिल्म एक विदेशी फिल्म 'इरमा ला दाउस' की नकल है, नकल ही नहीं बल्कि कार्बन कापी. बताया जाता है कि इस में दृश्य भी वैसे के वैसे ही उड़ा लिए गए हैं.

फिल्म 'मनोरंजन' का किस्सा अपने-आप में कम दिलचस्प नहीं है. करीब दस साल पहले 'इरमा ला दाउस' भारतीय सेंसर के सामने पेश हुई थी किंतु तब

(बाएं) 'बावर्ची' में राजेश खन्ना और मनीषा : 'माई मैन गाड फ्राई' की नकल (नीचे) 'मनोरंजन' में जीनत और संजीव 'इरमा ला दाउस' का हिंदी रूपांतरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे भारत में प्रदर्शन की अनुमति नहीं मिली थी. 'मनोरंजन' बनाने वालों ने शायद यही सोचा होगा कि अब यह फिल्म भारत में कभी नहीं आ पाएगी इसलिए उन्होंने इस की मनमानी नकल शुरू कर दी. समय बदलने के साथ ही सैंसर का रवैया भी कुछ नरम हुआ. इसी कारण इस फिल्म को पिछले दिनों भारत में प्रदर्शन की अनुमति मिल गई और कई छविगृहों में यह फिल्म सफलतापूर्वक चली.

बंबई के जिन फिल्मी पत्रकारों ने 'मनोरंजन' की शूटिंग देखी, उन में से कुछ ने यह रहस्योद्घाटन भी कर दिया कि यह फिल्म 'इरमा ला दाउस' की नकल है. लेकिन 'मनोरंजन' के निर्माता को कोई परेशानी नहीं हुई. फिल्म का निर्माण जारी रहा. इस फिल्म में 'इरमा ला दाउस' के जैक लैमन की भूमिका दो बार भरत पुरस्कार विजेता संजीवकुमार ने और शर्ले मैकलीन की भूमिका 'दम मारो दम' अभिनेत्री जीनत अमान ने निभाई. किंतु जहां 'इरमा ला दाउस' में पुलिस को भ्रष्ट दिखाया गया है, वहां 'मनोरंजन' में पुलिस की भूमिका ही नहीं रखी गई क्योंकि सैंसर बोर्ड भारतीय पुलिस को भ्रष्ट दिखाने की अनुमति नही देता.

यह हालत है 'खूनखून' और 'मनोरंजन' के निर्माता की. लेकिन बंबई फिल्म उद्योग के लिए यह निर्माता कोई अपवाद नहीं है. सच तो यह है कि हमारी हिंदी फिल्मों की दुनिया के लिए ऐसी वारदातें अब आम बात हो चली हैं.

फिल्मों की चोरी : अपराध नहीं

जैसेजैसे हिंदी फिल्मों का इतिहास पुराना होता जा रहा है और हर साल बंबई तथा मद्रास में तैयार होने वाली फिल्मों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है, वैसेवैसे यह रहस्य खुलता जा रहा है कि हमारा फिल्म उद्योग चोरी और सीनाजोरी के सिद्धांत पर चल रहा है. इंद्रसेन जौहर जैसों का तो डंके की जोर पर कहना है कि किसी विदेशी फिल्मों से अच्छे दृश्य या कथावस्तु ले लेना अपराध नहीं है.

एक जमाना था जब हिंदी फिल्मकार विदेशी फिल्मों से प्रेरणा तो लेते थे किंतु चोरी करना उन के ईमान को कबूल न था. लेकिन आज के फिल्मकार प्रेरणा पर विश्वास नहीं करते और वे विदेशी फिल्मों को वैसा का वैसा ही उड़ा लेते हैं. बस, केवल परिवर्तन होता है तो इतना ही कि कथावस्तु को भारतीय संदर्भ दे दिया जाता है यानी उस का भारतीयकरण कर दिया जाता है और विदेशी पात्रों की जगह भारतीय अभिनेताओं व अभिनेत्रियों को भर दिया जाता है. कहीं-कहीं तो अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को किसी बहाने विदेश यात्रा करा भार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय संदर्भ भी गायब कर दिया जाता है और दृश्य तथा स्थितियां भी विदेशी ही फिट कर दी जाती हैं ताकि दर्शकों को कुछ विदेश दर्शन भी हो जाए और निर्माताओं का उद्देश्य भी पूरा हो जाए.

विदेशी फिल्मों या कथावस्तुओं से प्रेरणा लेना बुरी बात नहीं है किंतु चोरी तो निश्चय ही एक अपराध है. प्रेरणा और चोरी दो अलगअलग शब्द हैं और पिछले जमाने के फिल्मकार दोनों शब्दों का अंतर भलीभांति जानते थे. इसी कारण मूक सिनेमा के जन्मदाता दादा साहब फाल्के ने साफ तौर पर स्वीकार किया था कि उन्हें 'कृष्ण जन्म' जैसी धार्मिक और पौराणिक फिल्में बनाने की प्रेरणा 'बर्थ आफ क्राइस्ट' को देख कर मिली थी. इसी तरह अरदेशीर ईरानी ने स्वीकार किया था कि उन्हें 'आलम-आरा' बनाने की प्रेरणा हालीवुड की फिल्म 'शो बोट' देख कर मिली थी.

फिल्मकार : प्रेरणा का चक्कर

आज के फिल्मकार प्रेरणा के चक्कर में नहीं पड़ते क्योंकि प्रेरणा प्राप्त कर के एक अच्छी फिल्म बनाने में प्रतिभा और समय की जरूरत होती हैं. आज के फिल्मकारों में से अधिकांश के पास न

'नमक हराम' में राजेश खन्ना और अमिताभ बच्चन : 'द बैकेट' की हिंदी अनुकृति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रतिभा है, न समय. उन्हें तो दर्शकों की बढ़ती हुई मांग का [illegible] कर के जल्दी से जल्दी फिल्में बनानी और पैसा कमाना होता है. यह स्थिति केवल निर्माता-निर्देशकों के साथ ही नहीं है बल्कि संगीत देने वालों, हीरोहीरोइनों के लिए भांति-भांति के वस्त्र तैयार करने वालों आदि फिल्म से संबद्ध तमाम लोगों के साथ है. राहुलदेव बर्मन, ओमप्रकाश नैयर, शंकर-जयकिशन आदि ने अपनी अनेक धुनें पश्चिमी फिल्मों से चुराई हैं. राहुलदेव बर्मन के पिता सचिनदेव बर्मन को तो चोरी के लिए विदेशी धुनों को सुनने की भी जरूरत नहीं पड़ती. वह बंगाल के लोकगीतों की धुनों को सीधे अपना घोषित कर के बंबइया फिल्मों में पेश कर देते हैं. उन बेचारों का कसूर भी क्या है? जब कथावस्तु, सैट, दृश्यों आदि की चोरी हो रही है तो ये तो केवल संगीत की ही चोरी कर रहे हैं.

पिछले कुछ वर्षों की अनेक फिल्में हालीवुड और पश्चिम की अनेक सफल फिल्मों की खुले आम की गई चोरी हैं. उदाहरण के लिए, फिल्म 'पगड़ी' अंगरेजी फिल्म 'इट हैप्पंड आन द फ़िफ्थ एवन्यू' की नकल है. इस फिल्म की नकल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाबी' में डिंपल और ऋषि कपूर : 'लव स्टोरी' से प्रभावित?

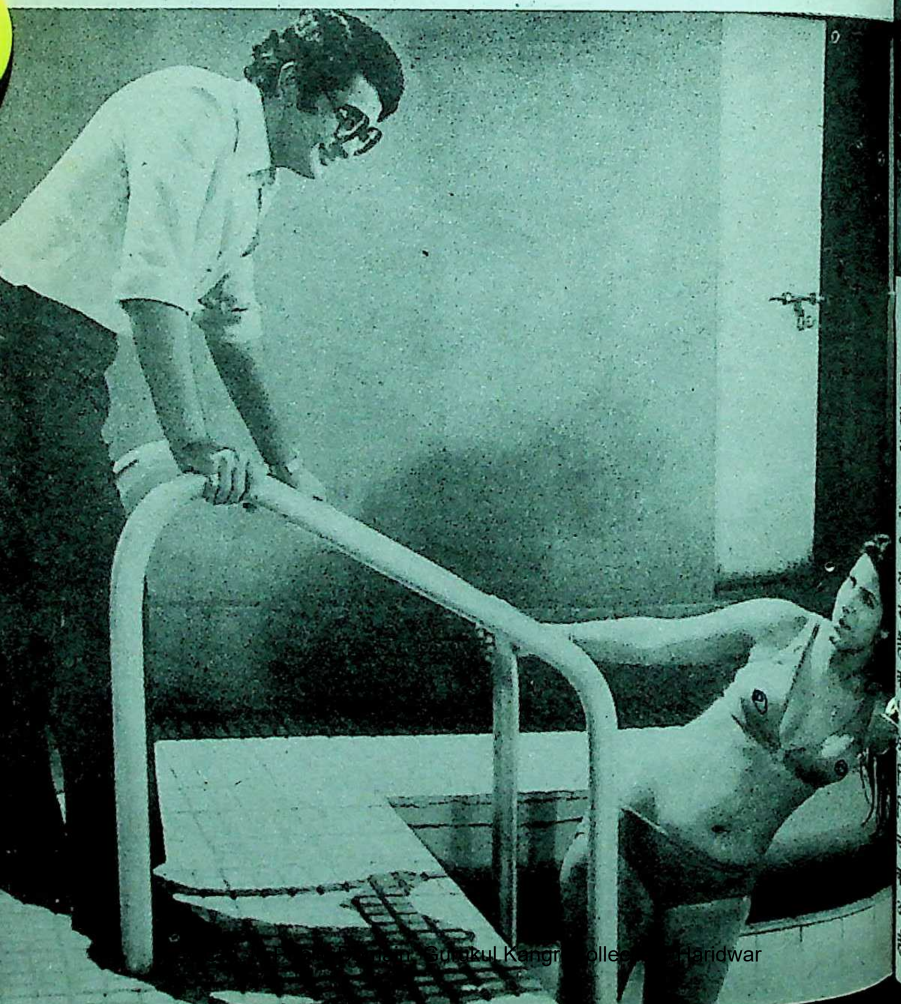

'कोशि

एक न
हाल ही
नाम से
इ
नकल
'बाबी'
यह पि
रीकी
है. दोन
कहानी
शिका
जो पूरे
विदेशी
किसी
चोरी
कई सा
असल
ही में प्र

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कोशिश' में असरानी और जया : 'हैप्पीनेस आफ अस अलोन' का गुलजार संस्करण.

एक नहीं, दोदो बार हुई है. दूसरी बार हाल ही में इसे 'दिल, दौलत और दुनिया' नाम से बनाया गया.

इसी तरह 'लव्स आफ कामन' की नकल है 'जादू.' राज कपूर की फिल्म 'बाबी' के बारे में कहा जा रहा है कि यह फिल्म बहुत हद तक सुप्रसिद्ध अमरीकी फिल्म 'लव स्टोरी' से प्रभावित है. दोनों की कहानी किशोर प्रेम की कहानी है. 'दाग,' 'रास्ते का पत्थर,' 'शिकारी,' 'जुगनू' आदि अनेक फिल्में हैं जो पूरे या आंशिक तौर पर किसी न किसी विदेशी फिल्म की अनुकृति हैं. इन में से किसी फिल्म में विदेशी फिल्मों के दृश्य चोरी किए गए हैं तो किसी में कहानी. कई साल पहले बनी फिल्म 'कुंदन' दरअसल 'ला मिजरेबल्ज' की चोरी थी. हाल ही में प्रदर्शित 'दाग' फिल्म 'सनफ्लावर' की नकल है.

गुलजार की सफलता का रहस्य

इधर कुछ समय से जनाब गुलजार को एक सफल निर्देशक के रूप में बड़ी ख्याति मिली है. इस का मुख्य श्रेय है उन की दो फिल्मों 'कोशिश' और 'परिचय' को. इन दो फिल्मों ने गुलजार को बंबई फिल्म उद्योग में एक सूझबूझ वाला सफल निर्देशक बना दिया है और कई निर्माता अपनी फिल्मों का निर्देशन कराने के लिए उन के घर के चक्कर लगाते रहते हैं. अभिनेत्री राखी तो उन की इस सूझबूझ से इतनी प्रभावित हुई कि उस ने गुलजार से शादी ही रचा डाली. यही नहीं, भारत सरकार ने इन फिल्मों के लिए गुलजार को पुरस्कार भी दे डाला.

वस्तुतः फिल्म 'कोशिश' जापानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

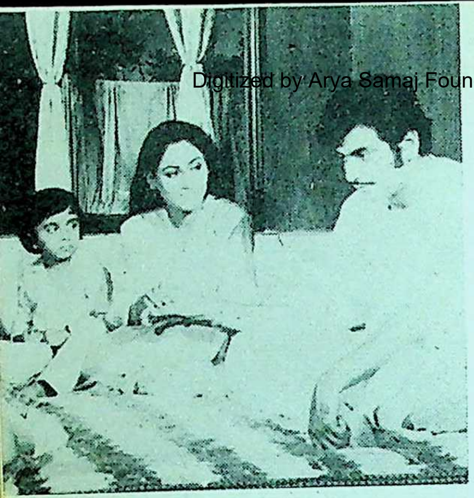

'परिचय' में जया और जितेंद्र : 'साउंड आफ म्यूजिक' से चोरी.

फिल्म 'हैप्पीनेस आफ अस अलोन' की नकल है और 'परिचय' फिल्म 'साउंड आफ म्यूजिक' की चोरी है. चोरी की तो क्या हुआ, गुलजार ने हिंदी फिल्म उद्योग में अपनी प्रतिभा का सिक्का तो बैठा ही दिया है. हां, गुलजार के बारे में हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि 'नकल के लिए अकल' वाला मुहावरा उन पर खरा उतरता है. जहां हिंदी फिल्म उद्योग के अधिकांश फिल्मकार विदेशी फिल्मों की भोंडी नकल करते हैं, वहीं गुलजार बड़ी अकल और कलात्मकता के साथ नकल करते हैं. इसलिए भारत सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया तो बुरा नहीं किया.

सुप्रसिद्ध निर्देशक हृषिकेश मुखर्जी ने हाल ही में सुप्रसिद्ध नाटक पर बनी फिल्म 'द बैकेट' की नकल पर 'नमक हराम' फिल्म बनाई है. इसी भांति 'द विजिट' को 'सुनहरा संसार' के नाम से बनाया जा रहा है.

इधर जब से भारत सरकार ने देश में हालीवुड की फिल्मों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगाया है, बंबइया निर्मातानिर्देशकों की चल निकली है. उन्हें हालीवुड की सफल फिल्मों को वैसे का वैसा ही उतार देने का अब कोई डर नहीं क्योंकि जब दर्शक हालीवुड की फिल्में ही नहीं देख पाएंगे तो निर्मातानिर्देशकों के पकड़ में आने का डर ही कहां रह गया?

पूछा जा सकता है कि जब हालीवुड की फिल्में भारत में आ ही नहीं रही हैं तो उन की नकल भला कैसे हो सकती है. सवाल महत्त्वपूर्ण है किंतु उत्तर कठिन नहीं है. हमारे फिल्मकार आए दिन, कभी शूटिंग करने, कभी लोकेशन देखने और कभी किसी अन्य बहाने से विदेशों की यात्राएं करते रहते हैं, विदेशों में हालीवुड की या अन्य अनेक देशों की फिल्में देखने पर कोई प्रतिबंध नहीं और देख कर नकल करना कोई ज्यादा कठिन नहीं. इस के अलावा चोरी करने के लिए तो ये फिल्में बंबई में छिपे तौर पर लाई भी जाती हैं. साथ ही ऐसी विदेशी फिल्मी पत्रपत्रिकाएं भी बाजारों में बिकती हैं जिन में फिल्मों की पूरी पटकथा सचित्र छपती है. बंबइया फिल्मकारों को एक बार पटकथा मिल जाए तो चोरी करने में भला उन्हें क्या कठिनाई होगी?

चोरी और सीनाजोरी के इस मामले को अनसुलझा नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए. चोरी करने वाले निर्माताओं और निर्देशकों के खिलाफ कड़ी कारर-वाई की जानी चाहिए. तीसचालीस हजार रुपए का जुर्माना कड़ी कारवाई नहीं माना जा सकता. ऐसे निर्मातानिर्देशकों के खिलाफ कम से कम तस्करी कानून तो लागू किया ही जा सकता है. कुछ और भी कारवाइयां की जा सकती हैं. इस तरह के निर्माताओं और निर्देशकों पर कुछ साल तक फिल्में बनाने पर प्रतिबंध लगाया जा सकता है, जैसे बेईमानी कर के चुनाव लड़ने वालों पर दोबारा चुनाव लड़ने के लिए कईकई साल तक की पाबंदी लगा दी जाती है. साथ ही सैंसर बोर्ड व पुरस्कार समितियों में ऐसे योग्य व्यक्ति रखे जाने चाहिए जो न केवल निर्भीक हों, बल्कि उन्हें देशविदेश की फिल्मों की अच्छी जानकारी हो ताकि वे चोरी को तत्काल पकड़ कर निर्माता-निर्देशकों को उचित सजा दिला सकें ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● कालिज खुलने के कुछ महीने बाद मेरी सहेली की शादी हो गई. वह बहुत ही खूबसूरत थी. उस के आगेपीछे लड़के घूमते ही रहते थे.

एक दिन कक्षा में जाते समय पास से गुजरते हुए एक मनचले ने कह दिया, "हाय! इतनी खूबसूरत लड़की किसे मिली होगी."

"तुम्हारे जीजाजी को." मेरी सहेली का जवाब था.

लड़के की हालत देखने लायक थी. **—मिथिलेश गुप्ता, इलाहाबाद**

● बड़ौदा में 14 वर्ष से कम उमर की लगभग 30 स्कूल की छात्राओं ने 21 फरवरी, 1974 को राज्य परिवहन की एक बस का अपहरण कर लिया.

पुलिस के अनुसार बस में बैठने के बाद इन लड़कियों ने ड्राइवर को बाध्य किया कि वह उन्हें सैर कराए. ड्राइवर कुछ देर तक तो उन्हें घुमाता रहा और फिर निकट की एक पुलिस चौकी पर बस ले जा कर खड़ी कर दी.

पर युवा अपहरणकर्त्ता पुलिस से भी नहीं डरीं और बस से उतरने से इनकार कर दिया. अंततः पुलिस को बाध्य हो कर ड्राइवर से कहना पड़ा कि वह उन लड़कियों को मांडवी के निकट उन के गंतव्य स्थान पर छोड़ आए.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : बलदेव न., मद्रास)

● एक बार हम कुछ सहेलियां बाजार में सामान खरीदने के लिए घूम रही थीं. हम लोगों के साथ लड़कियों का एक और ग्रुप था. उस ग्रुप के पीछे कुछ मनचले लड़के काफी देर से घूम रहे थे. तंग आ कर उन में से एक लड़की ने पूछा, "आप लोग इतनी देर से हमारे पीछेपीछे क्यों घूम रहे हैं?"

लड़कों में से एक ने जवाब दिया, "हम भी सामान खरीदने के लिए घूम रहे हैं."

इस पर उस हाजिरजवाब लड़की ने कहा, "मिस्टर, ये लड़कियां बिकाऊ नहीं हैं, जो आप इतनी देर से हम लोगों के पीछे घूम रहे हैं."

इतना सुनना था कि उन बेचारे लड़कों के चेहरों का रंग ही उड़ गया और वे शर्मिंदा हो कर भाग खड़े हुए. **—सावित्री गुप्ता, लखनऊ**

● मैं अपनी एक सहेली के साथ बस में सफर कर रही थी, सामान भी अधिक था. तीन की सीट पर दो हम व एक लड़का बैठा था. जब कंडक्टर टिकट देने आया तो लड़के ने टिकट के लिए हमारी तरफ इशारा कर दिया.

मैं तो एकदम घबरा गई पर मेरी सहेली ने तीन टिकट ले लिए. जब बस स्टाप आया तब मेरी सहेली ने उस लड़के से सामान उठवाने के लिए सहायता मांगी. उस ने सब सामान लड़के पर लाद दिया. थोड़ा सा सामान हमारे पास रह गया. थोड़ी दूर जाने पर सहेली ने धीरे से मेरे कान में कहा, "चलो, अच्छा हुआ, थोड़े से बस के किराए में ही कुली मिल गया." लड़के ने सुन लिया पर वह चुप रहा और सारा सामान घर के दरवाजे पर ही छोड़ कर भाग गया. **—मीना शुक्ला, बड़ौदा** ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

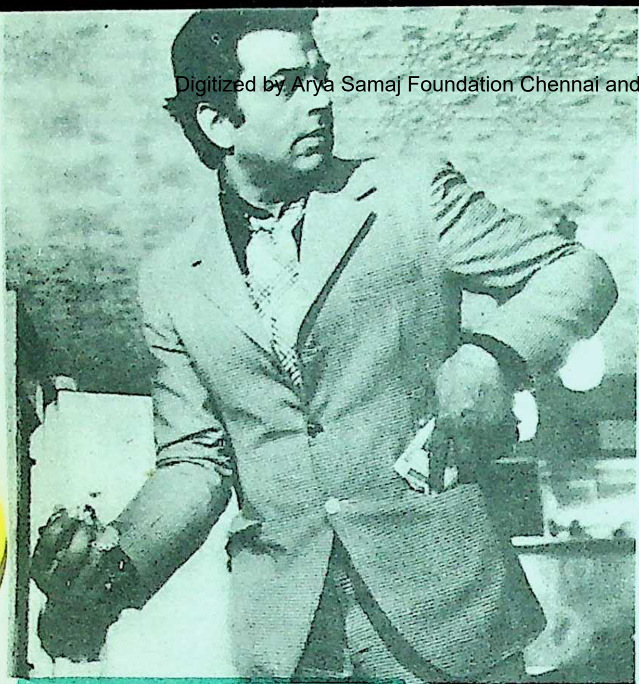

(बाएं) अजीत शर्मा (धर्मेंद्र) तिजोरी तोड़ कर चोरी करता है और उसे कैद की सजा हो जाती है.

(सामने) सेठ प्रेमचंद की बेटी रेखा (रेखा) अजीत शर्मा (धर्मेंद्र) से प्रेम करती है और वह इस विषय में अपनी सहेली (जयश्री टी.) से बात भी करती है.

पखवाड़े की फिल्म

कहानी किस्मत की

निर्माता अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म 'कहानी किस्मत की' में कोई नयापन नहीं है. इस की एक ही विशेषता है—घटनाओं में तीव्र गति. दूसरी रील में ही फिल्म उस गति को पकड़ लेती है, जिस में आम फिल्में मध्यांतर के बाद जा कर पहुंचती हैं. इस के बाद भी अंत तक निर्देशक ने इस गति को मंद नहीं होने दिया है और घटनाएं तीव्र गति से घटती चली गई हैं.

फिल्म के आरंभ में ही अजीत शर्मा (धर्मेंद्र) अपने पिता (अभि भट्टाचार्य) के साथ एक तिजोरी तोड़ता है. परिणामस्वरूप पुलिस द्वारा पीछा किए जाने का दृश्य बड़ी तेजी से चलता है और इस के साथ ही फिल्म गति पकड़ जाती है.

फिल्म की एक अन्य विशेषता है कि कहानी के सभी पुरुष पात्र अपराधी हैं. यहां तक कि नायक भी एक चोर है. फिल्म में कोई भी आदर्श पुरुष पात्र नहीं रखा गया. यही कारण है, हर पात्र कोई न कोई अपराध करता चला गया है और अंत तक यह कड़ी जुड़ती चली गई है.

लेखक क. अ. नारायण ने नायक अजीत शर्मा (धर्मेंद्र) को एक चोर दिखाया है किंतु इस रूप में भी उसे गौरवशाली रूप दे गया है और बलपूर्वक दर्शकों की सहानुभूति उस के साथ जोड़ गया है. उसे एक तिजोरी तोड़ने के लिए उकसाया जाता है. वह अपने काम में यानी तिजोरियां तोड़ने में इतना निपुण है कि उस तिजोरी का पूरा इतिहास बता देता है और यह भी बता देता है कि उसे संसार में केवल तीन व्यक्ति ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोल सकते हैं. एक तिजोरी का निर्माता, दूसरा तिजोरी का मालिक और तीसरा व्यक्ति वह स्वयं है. इस प्रकार अजीत शर्मा को एक उच्च कोटि का चोर सिद्ध कर के एक असाधारण व्यक्ति बना दिया गया है.

हमारी फिल्मों में आजकल यह प्रवृत्ति जोर पकड़ती जा रही है कि अपराधी पात्रों को गौरवशाली चित्रित किया जाता है. बुरे पात्रों को सम्मानजनक रूप देना निंदनीय है. फिल्मों में बढ़ते हुए शराब के दृश्य भी इसी प्रवृत्ति का परिणाम हैं. क्या हमारे निर्माताओं के पास प्रस्तुत करने को और कुछ नहीं रह गया?

चोरी के अपराध में अजीत शर्मा को कैद की सजा हो जाती है. वह बाहर आता है तो एक शरीफ आदमी बन चुका होता है. पर इस बार वह एक अमीर व्यक्ति प्रेमचंद (अजीत) के चंगुल में फंस जाता है. वह प्रेमचंद की बेटी रेखा (रेखा) से प्यार भी करने लगता है (यह हमारे नायक का जन्मसिद्ध अधिकार है. वह भले ही भूखों मरता हो, किसी अमीर आदमी की बेटी से प्यार जरूर करता है.)

फिल्म में एक अन्य व्यक्ति कर्मसिंह (अर्जुन हिंगोरानी) है. वह प्रेमचंद के कुछ रहस्य जानता है, जिन के बल पर वह उसे ब्लैकमेल करता है. प्रेमचंद अजीत को कर्मसिंह के घर से तिजोरी तोड़ कर रुपए और कागजात उड़ा लाने को कहता है. अपराध न करने की सौगंध खाने के बावजूद अजीत यह काम कर देता है. उधर कर्मसिंह की हत्या हो जाती है. हत्या के अपराध में अजीत को फांसी की सजा हो जाती है. अजीत शर्मा जेल से भाग निकलता है और अंत में सिद्ध कर देता है कि वास्तविक हत्यारा प्रेमचंद था.

फिल्म में एक डाक्टर (भारतभूषण) भी है. बाद में पता चलता है कि वह अपनी पत्नी का हत्यारा था और रेखा का असली बाप भी वही था. अपने ससुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की लाखों की जायदाद हथियाने के लिए प्रेमचंद ने रेखा को डाक्टर से छीन लिया था और पत्नी की हत्या का रहस्य खुल जाने के डर से डाक्टर प्रेमचंद के हाथों में खेलता रहा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार सिद्ध हो जाता है कि लेखक नारायण ने अपनी कहानी के सभी पुरुष पात्रों को किसी न किसी प्रकार अपराधी रूप दे दिया है. अपवाद केवल पुलिस और एक व्यक्ति है—हास्य कलाकार राजेंद्रनाथ. अजीत शर्मा के मित्र के रूप में वह केवल विदूषकी कारनामों से उस की सहायता करता है.

सभी पात्र अपराधी होने के कारण प्रेम दृश्यों को छोड़ कर हर घटना किसी नए अपराध को ले कर आती है. लेकिन किसी भी घटना में कोई नवीनता नहीं है. फिल्म की हर घटना को अन्य फिल्मों में किसी न किसी रूप में खोजा जा सकता है. लेखक नारायण अपने पुराने फारमूले यानी जुड़वां भाइयों की कहानी से दूर जरूर हटा है, पर फार्मूलावाद से नहीं बच सका.

फिल्म की नायिका रेखा (रेखा) कहानी का महत्त्वपूर्ण अंग होते हुए भी महत्त्वहीन बनी रही है. एकदो प्रेम दृश्यों को छोड़ कर उस की कोई उपयोगिता नहीं रही. अपने भारीभरकम शरीर के साथ वह अब नायिका के भी उपयुक्त नहीं रही. अभिनय तो उसे आता ही नहीं. फिर भी कुछ फिल्मों की सफलता के कारण निर्माता उसे लेने को तैयार हो जाते हैं.

फिल्म के आरंभ में दिखाया है कि अपने ससुर की दौलत के लालच में सेठ प्रेमचंद रेखा को अपनी बेटी के रूप में पालता है. जब प्रेमचंद नन्ही रेखा को ले कर ससुर के पास पहुंचता है तो वह आखिरी सांस गिन रहा होता है. लेकिन उस के बाद ससुर का क्या बना यह रहस्य ही रहने दिया गया है. रेखा जवान हो जाती है, प्रेमचंद को वह पिता समझती है. लेकिन अंत तक प्रेमचंद का चरित्र उलझाए रखा गया है. यह पता नहीं चलता कि वह रेखा को हृदय से बेटी समझता है या नहीं. अगर समझता है तो क्यों नहीं अपनी संपत्ति उस के लिए बलिदान कर देता? अगर उसे बेटी नहीं समझता तो उसे रास्ते से हटा कर संपत्ति क्यों नहीं हड़प लेता? दरअसल लेखक ने कहानी को उलझाने के लिए चरित्रों को भी उलझा दिया है. वे सतही से हो गए हैं.

कहानी की यह भी विशेषता है कि उस में कहीं कोई रहस्य नहीं रखा गया है. जहां भी कोई रहस्य की बात आई है उसे झट खोल दिया गया है. केवल घटनाओं के बल पर रोचकता बनाए रखी गई है. यही कारण है कि आम दर्शक को कहानी समझने के लिए दिमाग पर जोर नहीं देना पड़ता.

कर्मसिह (अर्जुन हिंगोरानी) अपनी एक प्रेमिका से प्रेम में व्यस्त. यहीं कहीं अजीत शर्मा भी छिपा सब कुछ देख रहा होगा.

...ngri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

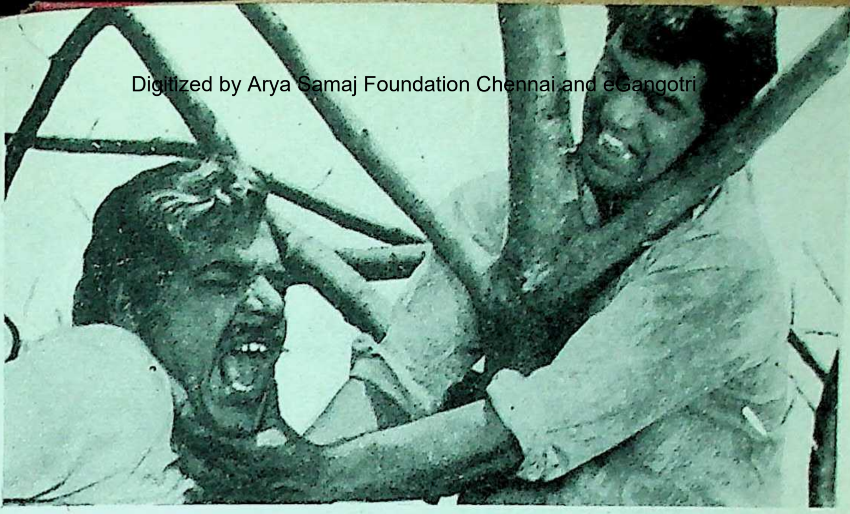

कहानी के अंत में वही मारधाड़ : अजीत शर्मा (धर्मेंद्र) और सेठ प्रेमचंद (अजीत) परस्पर उलझे हुए.

कहानी नायकप्रधान है और धर्मेंद्र फिल्म में छाया हुआ है. अजीत शर्मा की भूमिका एक आम भूमिका है लेकिन अपने प्रभावी व्यक्तित्व के कारण धर्मेंद्र उसे प्रभावपूर्ण बना गया है. अजीत की भूमिका की विशेषता यह है कि उसे ऊंची जगहों से छलांग लगानी पड़ी है. यह काम किसी डबल ने किया होगा और दर्शकों की प्रशंसा धर्मेंद्र लूट गया है.

प्रेमचंद के रूप में अजीत का काम भी प्रशंसनीय है. निर्माता अर्जुन हिंगोरानी ने कर्मसिंह की भूमिका स्वयं निभाई है. उस का अभिनय बहुत अच्छा नहीं है पर वह इस भूमिका में खलता भी नहीं है.

नई अभिनेत्री आशू के साथ पलंग का दृश्य अनावश्यक होते हुए भी फिल्म में बड़ी कुशलता से डाला गया है. नायक अजीत शर्मा चोरी के लिए कर्मसिंह के फ्लैट में आता है. तभी एक लड़की भी आ जाती है और अजीत छिप जाता है. कर्मसिंह और वह लड़की प्रेम में व्यस्त हो जाते हैं. यहां अजीत शर्मा जिस प्रकार समय काटता है, रोचक बन पड़ा है.

गीत राजेंद्र कृष्ण ने लिखे हैं और चल निकलने वाले हैं. कल्याणजी आनंदजी ने मधुर धुनें दी हैं. फिल्म का मधुर संगीत विशेष रूप से उल्लेखनीय है और फिल्म की बाक्स आफिस सफलता में उस का विशेष योगदान है. गीतों को सुंदर रूप में फिल्माया नहीं गया.

पटकथा निर्देशक हिंगोरानी व कहानी लेखक नारायण ने मिल कर लिखी है और साधारण है. स. म. अब्बास के संवाद चुस्त हैं. किशोर रेगे की फोटोग्राफी सुंदर है.

निर्मातानिर्देशक हिंगोरानी ने पहले 'कब, क्यों और कहां?' फिल्म बनाई थी और वह सफल रही थी. अंधविश्वासी हिंगोरानी ने लगता है उसी सफलता से प्रभावित हो कर ही इस बार भी फिल्म का नाम ऐसा रखा है जिस के तीन शब्दों के आरंभ में 'क' आए. यह एक शुद्ध अपराध फिल्म है और किस्मत वाली इस में कोई बात नहीं है. केवल एक गीत "कहानी किस्मत की..." फिल्म में जरूर बारबार आया है. यह फिल्म बाक्स आफिस पर पहली फिल्म से भी अधिक सफल रही है, इसलिए निर्माता हिंगोरानी संभवत: अपनी अगली फिल्म का नाम भी ऐसा ही रखे जिस में तीन शब्दों के आरंभ में 'क' आए. ●

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदे के आगे के पीछे

पूना संस्थान स्वशासी संस्था बनेगी

सरकार ने निर्णय किया है कि पूना के फिल्म एवं टेलीविजन प्रशिक्षण संस्थान को स्वशासी संस्था बना दिया जाए और इस पर से सरकारी नियंत्रण हटा लिया जाए. इस समय यह संस्थान केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन है.

जस्टिस खोसला जांच समिति ने अपनी सिफारिश में कहा था कि संस्थान को स्वशासी रूप में अपनी इच्छानुसार कार्य करने दिया जाए और इसे मंत्रालय का केवल एक कार्यालय मात्र न बना दिया जाए.

इस समिति की सिफारिश पर ही सरकार ने उक्त कदम उठाने का निर्णय किया है.

भारतीय समिति कानून के अंतर्गत सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पूना संस्थान की प्रबंध सत्ता एक स्वतंत्र समिति को सौंप देगा. इस का प्रबंध दोहरी प्रबंध पद्धति के अनुसार होगा. इस में एक समिति होगी और दूसरी प्रशासी परिषद होगी.

समिति और परिषद के लिए सदस्य ऐसे व्यक्ति चुने जाएंगे जिन का फिल्म, कला और सांस्कृतिक क्षेत्र में विशेष स्थान

विनोद मेहरा : उभरता कलाकार

विनोद मेहरा ने मैनेजमेंट का कोर्स किया लेकिन परिस्थितियां उसे फिल्म क्षेत्र में ले आईं. सब से पहले उस ने फिल्म 'एक थी रीता' में काम किया लेकिन पहले प्रदर्शित हुई 'परदे के पीछे'. फिल्म तो नहीं चली, विनोद मेहरा चल निकला. फकीरचंद मेहरा की फिल्म 'लाल पत्थर' में उसे छोटी सी भूमिका मिली, जिस में उस ने दर्शकों को प्रभावित किया.

शक्ति सामंत की 'अनुराग' फिल्म से विनोद बड़े कलाकारों की श्रेणी में आ गया. इस फिल्म में मौसमी के साथ उसे भी लोकप्रियता मिली. 'हिफाजत' में आशा सचदेव और 'तीन चोर' में जाहिदा के साथ वह नायक बना. 'आरोप' फिल्म में उस ने अपनी अभिनय क्षमता का अच्छा परिचय दिया है. 'दो फूल' में महमूद के साथ उस ने हास्य भूमिका निभाई.

शीघ्र ही उस की 'निर्दोष' आदि फिल्में प्रदर्शित होने वाली हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

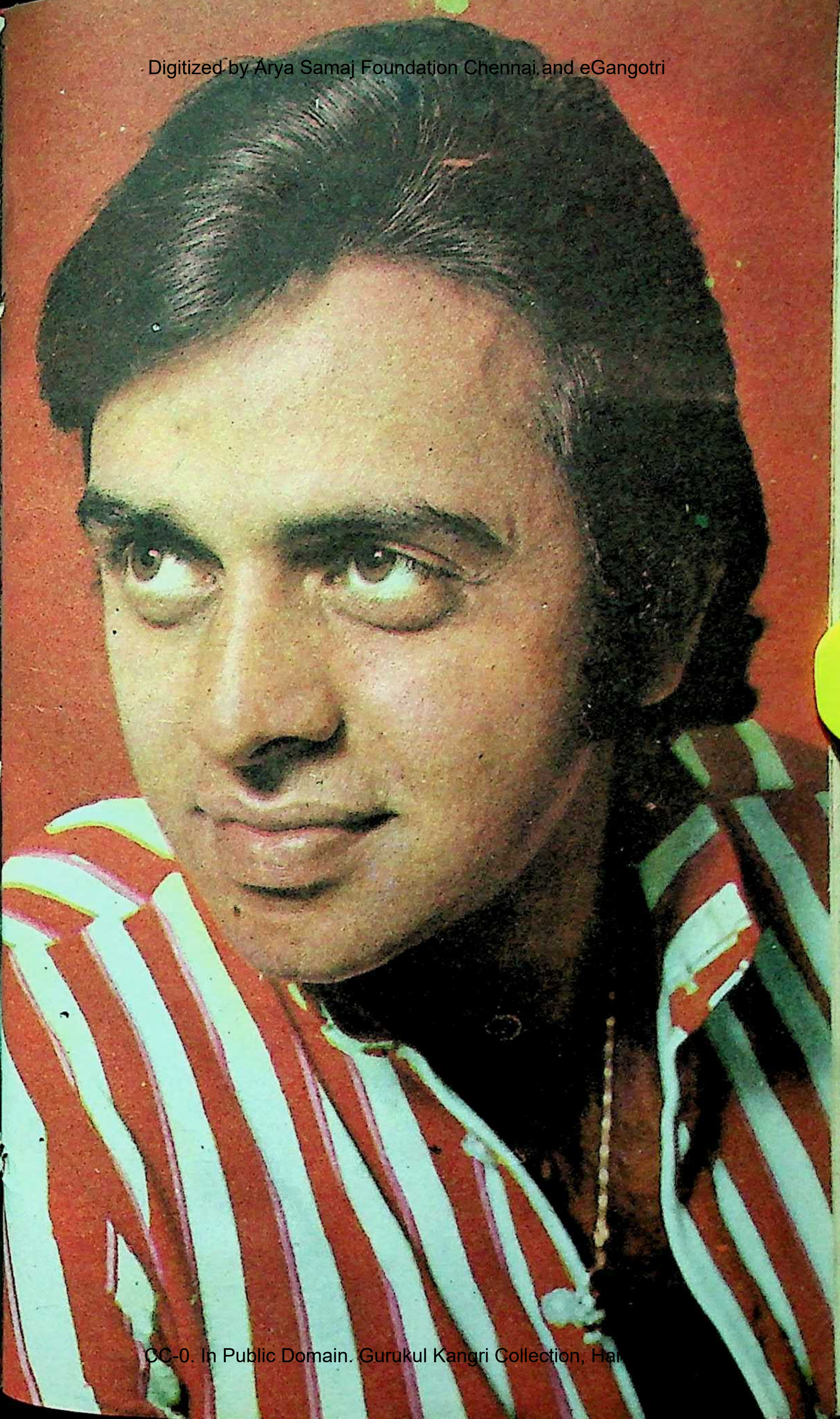

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Har

होगा और इन क्षेत्रों की जिन्हें पूरी जानकारी होगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार के उक्त निर्णय का स्वागत किया जाना चाहिए. वास्तव में सरकारी तंत्र के अधीन कोई भी संस्था कितनी भी सुचारु रूप से चल रही हो, अंत में लालफीताशाही और भाईभतीजावाद का शिकार हो ही जाती है. अब जब कि फिल्म के प्रशिक्षण की नित्य नई संस्थाएं खुल रही हैं, धीरेधीरे संभव है, पूना संस्थान का महत्त्व कम हो जाता. उस के पूर्व ही सरकार ने उसे स्वशासी बना कर बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है. अच्छा हो अगर सरकार अन्य क्षेत्रों में भी सरकारीकरण का भूत उतार फेंके और देश को अपनी गति से प्रगति करने में सहायक बने, बाधा न बने.

पाकिस्तान में सहगल सोसाइटी

लाहौर में एक दैनिक समाचार पत्र 'मशरिक' में छपे समाचार के अनुसार पाकिस्तान में प्रसिद्ध संगीतकार एवं गायक कुंदनलाल सहगल की स्मृति में 'सहगल सर्कल' नाम से एक संगठन की स्थापना की गई है. भारत विभाजन से पहले श्री सहगल लाहौर में भी काफी अर्से तक रहे थे. पाकिस्तान के सहगल प्रेमियों ने उक्त संगठन की स्थापना कर के गायक के प्रति अपने प्रेम एवं सम्मान का प्रदर्शन किया है.

पाकिस्तान के अनेक कवि, लेखक व बुद्धिजीवी भारी संख्या में इस संगठन के सदस्य बने हैं. इस में सहगल के अनेक पुराने प्रशंसक भी सम्मिलित हुए हैं.

इस संगठन के संयोजक पाकिस्तान के एक प्रसिद्ध प्रकाशक एवं लेखक श्री मजहरुद्दीन अजहर हैं. श्री अजहर पिछले कई वर्षों से सहगल की बरसी मनाते चले आ रहे हैं.

संगठन की एक बैठक में श्री अजहर ने सुझाव दिया कि अगले वर्ष सहगल की 75वीं वर्षगांठ पर सहगल प्रेमियों की एक अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस बुलाई जाए, जिस में भारत से भी प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाए.

पाकिस्तान एक इसलामी देश है. शायद सहगल एक मात्र हिंदू है, जिस के प्रति वहां की जनता के हृदय में प्रेम एवं सम्मान है. सहगल के स्वर का जादू अभी टूटा नहीं है. अच्छा हो अगर भारत में ऐसे ही संगठन की स्थापना की जाए, जिस के माध्यम से दोनों देशों की जनता को एकदूसरे के निकट आने का अवसर मिले.

कुंदनलाल सहगल : संगीत का जादूगर.

विजयंतीमाला की नई नृत्यनाटिका

पिछले दिनों बंबई के षण्मुखानंद हाल में प्रसिद्ध अभिनेत्री एवं नर्तकी विजयंतीमाला ने अपनी नई नृत्यनाटिका 'संत सक्खू' प्रस्तुत की. सक्खूबाई की गिनती महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संतों में की जाती है. सक्खूबाई की कठिन भूमिका को स्वयं विजयंती माला ने प्रस्तुत किया. स्मरण रहे विजयंतीमाला दक्षिण भारतीय है और मराठी नृत्यमंच पर उस का अवतरण विशेष महत्त्व रखता है.

प्रसिद्ध गायिका वाणी जयराम ने नाटिका में कुछ मराठी गीत प्रस्तुत किए हैं. वाणी जयराम भी दक्षिण भारत से संबंध रखती है. मंच की प्रकाश व्यवस्था और अन्य सज्जा का उत्तरदायित्व मनमोहन जोशी ने बड़े सुंदर रूप में निभाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

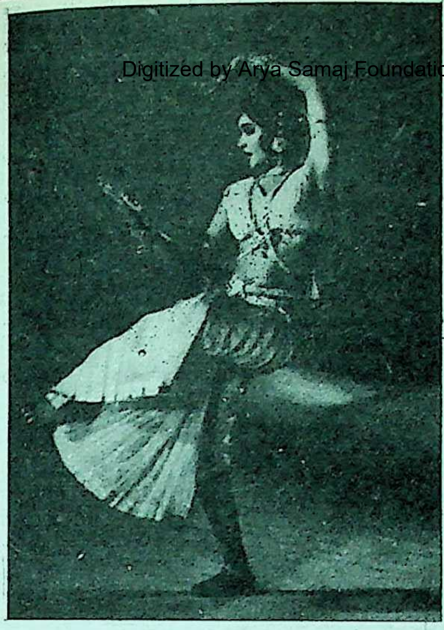

विजयंतीमाला : फिल्मों से संन्यास के बाद भी सक्रिय.

पात्रों के लिए मराठी वेशभूषा की तैयारी शालिनी शाह द्वारा की गई. ये दोनों गुजराती हैं. इस प्रकार गैरमराठी व्यक्तियों द्वारा एक सफल मराठी नृत्य नाटिका का प्रस्तुतीकरण प्रशंसनीय प्रयास कहा जाना चाहिए.

नाटिका में सहयोगी पात्रों की भूमिकाएं विजयंती के 'नाट्यालय' की छात्राओं ने कीं. स्मरण रहे, इन दिनों विजयंतीमाला 'नाट्यालय' नाम से एक नृत्य केंद्र का संचालन कर रही है, जिस में नृत्य की शिक्षा दी जाती है. 'संत सक्खू' का प्रस्तुतीकरण 'नाट्यालय' के भवन के लिए धन जुटाने के लिए किया गया था और एक लाख पचहत्तर हजार रुपए इकट्ठे हुए.

खुशी की बात है कि फिल्म का क्षेत्र त्याग कर भी विजयंती अकर्मण्य नहीं हुई और समाज निर्माण में अपना सहयोग दे रही है. दक्षिण भारतीय हो कर उस ने हिंदी फिल्मों में काम किया, एक पंजाबी से शादी की और अब मराठी नृत्य नाटिका प्रस्तुत कर के उस ने सिद्ध कर दिया है कि वह संकीर्ण भी नहीं है.

अमरीकी सहयोग से रूसी फिल्म

अमरीका और रूस के परस्पर सहयोग से बनने वाली पहली फिल्म का निर्माण इसी वर्ष के दौरान आरंभ हो जाएगा. यह एक संगीत प्रधान फिल्म होगी और यह मौरिस मेंटरलिंक की कहानी 'द ब्ल्यू बर्ड' पर आधारित होगी.

उपरोक्त नाटक पिछले 65 वर्षों से मास्को आर्ट थिएटर में अत्यंत लोकप्रिय रहा है. इस पर चालीस वर्ष पहले भी एक फिल्म बनाई जा चुकी है.

अमरीका की चहुंमुखी उन्नति से विश्व के लगभग सभी देश विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उन्नति के लिए लाभ उठा रहे हैं. रूस और चीन भी समयसमय पर अमरीका से लाभ उठाने में कोई अपमान नहीं समझते. लेकिन एक हम हैं कि राजनीति की दलदल में फंस कर हर बात में अमरीका को कोसना ही हमारा ध्येय रह गया है. हमें रूस में हर बात अच्छी नजर आती है और अमरीका में हर बात बुरी नजर आती है.

फिल्मों के क्षेत्र में भी हम रूस के अधिक नजदीक आते जा रहे हैं और अमरीका से दूर होते जा रहे हैं. रूसी फिल्मों की भारतीय मार्कीट में कोई मांग नहीं है, फिर भी हम उन का आयात करते हैं. रूस से मिल कर फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन देते हैं. अमरीका और इंगलैंड की फिल्मों की हमारे यहां मांग है पर उन पर हम नए से नए प्रतिबंधों के शिकंजे कसते जा रहे हैं.

एक समझदार देश का कर्त्तव्य होता है कि वह राजनीति की दलदल में न फंस कर सदा अपने हित का ध्यान रखे. आज जब कि रूस भी अमरीका के सहयोग से फिल्में बनाने को तैयार हो गया है, हमें भी इस विषय में अपनी नीति पर नए सिरे से विचार करना चाहिए और अमरीकी तकनीकी उन्नति से लाभ उठाने की हर संभव प्रयत्न करना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नए टेलीविजन केंद्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण उपमंत्री श्री धर्मवीर सिन्हा ने लोक सभा में एक वक्तव्य में बताया कि सरकार पांचवीं योजना के दौरान अनेक नए टेलीविजन केंद्र स्थापित करेगी. भावी केंद्र मद्रास, कलकत्ता, लखनऊ और जालंधर में होंगे. लखनऊ केंद्र के साथ कानपुर में भी प्रसारण केंद्र स्थापित किया जाएगा. कलकत्ता के साथ खड़गपुर और आसनसोल में भी प्रसारण केंद्र होंगे. जालंधर के साथ कसौली में भी प्रसारण केंद्र रखा जाएगा. इस प्रकार इन केंद्रों के कार्यक्रमों को अधिक दूर तक प्रसारित किया जा सकेगा.

इन के बाद अगली योजना में पटना, कटक तथा हैदराबाद में भी टेलीविजन केंद्र स्थापित किए जाएंगे. इन केंद्रों के कार्यक्रमों को 18 अन्य प्रसारण केंद्रों की सहायता से प्रसारित किया जाएगा. इन क्षेत्रों में कार्यक्रमों को उपग्रहों की सहायता से प्रसारित करने का प्रयोग किया जाएगा.

'दो नंबर के अमीर' कौन?

'प्रभात' के बाद निर्माता रामदयाल ने समाज में फैले भ्रष्टाचार को ले कर 'दो नंबर के अमीर' फिल्म का निर्माण किया है. फिल्म में ऐसे लोगों की कहानी है जो अनैतिक धंधों से रातोंरात अमीर बन जाते हैं. निर्माता रामदयाल के अनुसार दो नंबर के अमीर वे हैं जो अनैतिक साधनों द्वारा धन कमा कर अमीर बने हैं. फिल्म का संबंध उस धन से नहीं है, जिसे कर चोरी द्वारा बचाया जाता है और जिसे आम तौर पर दो नंबर का या काला धन कहा जाता है.

रवि (साजिद) एक गरीब परिवार का नवयुवक है जिस पर उस की मां

'दो नंबर के अमीर' में साजिद और जया कौशल्या.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सौदा' के एक दृश्य में योगिता बाली और मदन पुरी.

(पूर्णिमा) और बहन सुनीता (जया कौशल्या) के पोषण का उत्तरदायित्व है. एक धनी व्यक्ति धनपतराय (कमल कपूर) की आधुनिक सभ्यता में पली लड़की हेमा (आशा सचदेव) रवि के प्रति आकर्षित होती है. दोनों में प्यार हो जाता है और दोनों विवाह के लिए तैयार हो जाते हैं.

हेमा का पिता गरीब रवि से विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता. पिता के विरोध के बावजूद हेमा रवि से विवाह कर लेती है. रवि भी कुछ बुरे लोगों के चक्कर में फंस जाता है लेकिन अंत में उन लोगों का रहस्य खोल कर सब को जेल भिजवा देता है.

इस फिल्म में साजिद, आशा सचदेव, पद्मा खन्ना, इंद्रसेन जौहर, अवतारकृष्ण हंगल, कमल कपूर, उर्मिला भट्ट, जलाल आगा, पूर्णिमा, रूपेशकुमार आदि कलाकार काम कर रहे हैं.

मुकुल एंटरप्राइसेज के बैनर में बनने वाली फिल्म के निर्देशक हैं श्री शिनाय. इंदीवर के गीतों को सपन जगमोहन ने संगीतबद्ध किया है. और छायाकार हैं पूना फिल्म एवं टेलीविजन इंस्टीट्यूट से प्रशिक्षित प्रमोद मित्तल.

'सौदा' का निर्माण

ओबराय इंटरनेशनल के झंडे तले फिल्म 'सौदा' का निर्माण कार्य गतिपूर्वक चल रहा है. फिल्म का निर्देशन अमरकुमार कर रहा है. मुख्य कलाकार हैं : विनोद खन्ना, योगिता बाली, मदनपुरी और सुलोचना. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र एक फिल्म

प्रिय मित्र, श्री चूहड़मलजी,
शुभ दिन!

आप का पत्र यथासमय मिल गया था, पर समयाभाव के कारण पत्र न लिख सका. आशा है, आप मेरी इस उदासीनता को अन्यथा नहीं लेंगे.

हां तो, डियर, आप ने लिखा है कि आप कर्मशियल कम कलात्मक फिल्म बना रहे हो, जैसे सोफा कम बेड होता है. ठीक है, कलाविहीन फिल्म कैसी? पर व्यवसाय को भी नहीं भूलना चाहिए. हमारा धर्म उस पतिव्रता वेश्या की तरह होना चाहिए, जो अपने पति के साथ कभी बेवफाई नहीं करती. इसलिए दर्शक की नजर और हवा का रुख देख कर फिल्म बनाना. आप को याद होगा, आप की पिछली फिल्म ने अच्छा कलेक्शन दिया था. आप का कर्ज धुलने के साथ मेरी कालिमा भी धुल गई थी. किंतु उस के पहले वाली दो फिल्में बराबर धोखा दे गई थीं. अतः फिल्म किस टाइप की होनी चाहिए, यह आप अच्छी तरह समझ सकते हैं. कर्मशियल कम कलात्मक फिल्म बना कर कहीं ऐसा न हो कि इस फिल्म का भी वही हश्र हो.

मेरे विचार से हिंदी फिल्म के लिए कहानी कोई माने नहीं रखती. इसलिए गीत, संगीत और नृत्य पर अधिक ध्यान केंद्रित करना और एक कव्वाली अवश्य रखना. कव्वालियों वाली फिल्में इधर फिर चलने लगी हैं. गीतों की भाषा कामुक, उत्तेजक और चुभने वाली होनी चाहिए. भारतीय जनता पहले भी सेक्स प्रिय थी और आज भी है. यह बात दूसरी है कि पहले उस के साथ शृंगार रस का संबोधन जुड़ा हुआ था. इस के अतिरिक्त अपनी फिल्मों में सेक्स अपील दिखाने के लिए महंगाई और गरीबी का सहारा लिया जा सकता है. जैसे हीरोइन एक मध्यम वर्गीय परिवार की सदस्या है और उस का प्रेमी एक संपन्न परिवार का. हीरोइन के पास सिर्फ एक साड़ी है जो इस महंगाई और अभाव के युग में संभव है, जिसे उस ने धो कर अरगनी पर सुखाने के लिए डाल दिया है.

अब एकांत दिखाने के लिए परिवार की दूसरी सदस्या, एकमात्र उस की मां को किसी रिश्तेदार के यहां भिजवा दीजिए और साड़ी धो कर सुखाने का कारण यह बता दीजिए कि सुबह उसे अपने प्रेमी के साथ मार्निंग शो देखने जाना है. अब कैमरे को उस की खाट के पास ले जाइए और उस की देह पर 'आन' कर दीजिए. गरीब हीरोइन के पास शरीर पर ब्रेजरी तथा अंडरवियर के सिवा और हो भी क्या सकता है? और यदि इस से भी अधिक यथार्थवादी दृश्य दिखाना चाहते हो तो उसे ब्रेजरी एवं अंडरवियर से भी मुक्त किया जा सकता है. पहले कैमरा उस की बैक पर रखिए और जब वह करवट बदले तो फ्रंट पोज एक्सपोज कर लीजिए.. अगर सेंसर बोर्ड आप का लोहा न माने तो नाम बदल देना. 'गरीबी' गरीब के लिए भले अभिशाप हो किंतु वह हम फिल्म वालों के लिए वरदान बन सकती है, बशर्ते हम उस का उपयोग करने की बुद्धि रखते हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वितरक का मित्र फिल्म निर्माता के नाम

सफल फिल्म बनाने संबंधी कुछ विचित्र फारमूले.

उदाहरण के लिए फिल्म का नाम है 'गरीब की कन्या.' गरीब की कन्या के पास पांच गज की साड़ी तथा तीन गज का पेटीकोट कहां से आएगा? बस, चुन लीजिए इस रोल के लिए एक गुदाज बदन वाली लड़की और उसे बोल्ड तथा विद्रोही स्वभाव की बता कर एक दिन विद्रोह पर आमादा कर दीजिए : सहेलियों सहित सड़क पर निर्वस्त्र प्रदर्शन. साथ में उपदेश के रूप में उस के तथा उस की सहेलियों के हाथों में एकएक तख्ती पकड़ा दीजिए, जिस पर लिखा हो 'बचत करो, नैसर्गिक बनो.' अगर 'गरीबी' और 'अभाव' के दो शब्द और जोड़ दिए जाएं, 'क्रांति' तथा 'इंकलाब' तथा इन चारों को आपस में गड्डमड्ड कर सेक्स अपील दिखाने का माध्यम बना दिया जाए तो अगले 50 वर्षों तक इस संबंध में विकल्प ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी. इस तरह कैबरे डांसर पर होने वाले भारी खर्च से भी मुक्ति मिल जाएगी और अपना उद्देश्य भी पूरा होता रहेगा.

पत्र लिखतेलिखते एक और सीन याद आ गया है. हीरोइन एक परित्यक्ता है, किंतु पति द्वारा नहीं, प्रेमी द्वारा. प्रेमी की यह बेवफाई उस से सहन नहीं होती जिस से उस के भावुक हृदय पर इतना आघात पहुंचता है कि उस पर जबतब पागलपन का दौरा पड़ने लगता है. (विशेषकर उस समय जब उस की शादी की बात चलती है और कोई दूसरा पुरुष उस के सामने लाया जाता है.) अब उस के सामने एक पुरुष लाइए जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजर पड़ते ही वह पहले चीखती है, फिर एकएक कर अपने कपड़े फाड़ कर फेंकने लगती है. है न यह लाजवाब यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक दृश्य? इस पर सेंसर की कैंची उठने का सवाल ही नहीं पैदा होता. यह दोहा आप ने भी सुना होगा :

''नारि, पौधा, कूपजल औ बरगद की छांव,
गरमी में सर्दी करें, सर्दी में गरमाय.''

सो, नारी को वैसे भी ठंड नहीं लगती. मैं तो कहूंगा कि वह कवि बड़ा नासमझ था जिस ने इस गीत की ईजाद की :

मुझ को ठंड लग रही है,
मुझ से दूर तू न जा.

हमें पूरी उम्मीद है कि हमारे इस आर्थिक अभियान में हमारी सरकार भी हमें अवश्य सहयोग प्रदान करेगी क्योंकि बचत उस का मुख्य उद्देश्य है. अगर भारत की नारी समाज साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, सलवार, ओढ़नीदुपट्टा (बाप रे, बाप, कितना बोझ है यह सब!) त्याग कर 'बिकनी' और 'ब्रे' में आ जाए तो बाहर से रूई का आयात भी बंद और अन्न की समस्या भी हल समझो. इस तरह विदेशी मुद्रा की बचत के साथ, आज जिन खेतों में रूई पैदा की जाती है, उन में गेहूं और चना की खेती होने लगेगी.

यह सब आप को इसलिए लिख रहा हूं कि इन्हीं शब्दों से आप नारी की नग्नता का औचित्य सरकार और सेंसर के सामने सिद्ध कर सकते हैं.

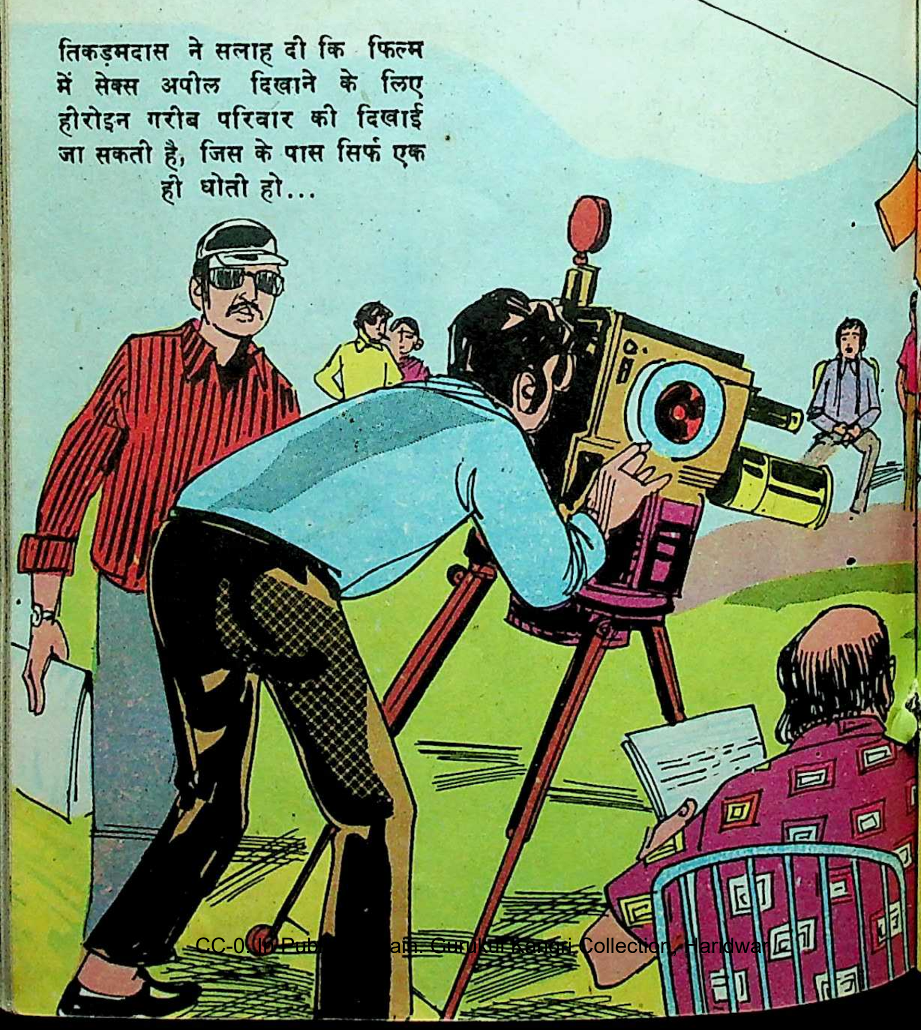

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन को अपनी बात समझाते समय बीचबीच में आधुनिक सामाजिक क्रांति का बोध बारबार कराते रहिएगा, नहीं तो वे भारतीय सभ्यता व संस्कृति की आड़ में आप के सब किएकराए पर पानी फेर देंगे.

एक बात और. तुम ने लिखा है है फिलम आधी से अधिक बन चुकी है और अब स्टार कास्ट बदलने से बजट बढ़ जाएगा. अगर आप मेन करेक्टर नहीं बदल सकते तो कम से कम गीत तो चटकीले लिखवा ही सकते हो, जैसे :

चुनरिया उड़ती जाए रे,
नजरिया मिलती जाए रे,
कमरिया खुलती जाए रे.

याद रखो. फिल्म विद्या ज्ञानवर्धन नहीं, एक मनोरंजन है और नौटंकी तथा रामलीला से अच्छा मनोरंजन हमारे देश में सिर्फ रामलीला है. रामलीला में सेक्स अपील की बहुत कम गुंजाइश है. अतः एक सीन रासलीला का भी डाल देना. पर इतना ध्यान रखना, गोपियों का सामूहिक नृत्य या चीरहरण का दृश्य अवश्य होना चाहिए, अकेली राधा से काम नहीं चलेगा.

आप का और हमारा भी यह प्रयत्न होना चाहिए कि भारतीय जनता की बुद्धि रामलीला, रासलीला और नौटंकी से ऊपर न उठने पाए, नहीं तो बिजनेस ट्रेंड बदलना पड़ेगा. फिर फिल्मों की कहानियां वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक और आर्थिक तथा सामाजिक क्रांति के अनुरूप लिखवानी पड़ेंगी और इस तरह दिमाग खर्च करना पड़ेगा. अभी तक तो रामायण के पन्नों, महाभारत के पृष्ठों और विदेशी जूठन से काम चल जाता है.

अभीअभी दिमाग में एक नई सिचुएशन याद आई है. क्यों न हीरोइन को त्रिकोणात्मक प्रेम में फांस दिया जाए और उस के दोनों प्रेमी उस के शरीर को ही पाना चाहते हों. इस तरह जब एक उसे एकांत में ले जा कर उस के वस्त्र उतार रहा होता है तो दूसरा पहुंच कर उसे बचाता है किंतु उस के प्रथम प्रेमी को भगा कर वह भी उसी काम में लग जाता है. इतने में प्रथम प्रेमी अपने एक साथी सहित पुनः आ धमकता है जो दूसरे प्रेमी का भी मित्र तथा हीरोइन का पुराना चाहने वाला होता है. फिर तीनों मिल कर हीरोइन को वस्त्रविहीन करने में जुट जाते हैं क्योंकि तीनों का उद्देश्य एक ही होता है. यदि यह सीन इस फिल्म में नहीं चिपक जाता तो इसे एडीशनल सीन के रूप में एक्स्पोज कर लेना और एक बार फिर एडीटिंग टेबल पर ट्राई कर के देखना, नहीं तो अगली फिल्म में काम आएगा.

आप का,
करोड़ीमल तिकड़मदास ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुएं की दीवार

(पृष्ठ 41 का शेषांश)

सुबह से कुछ पहले और कभी वह भी नहीं.

अकसर उन्हें शीला को अपने पास ही सुलाना पड़ता. जब वह रोतेरोते अपनी मां के लिए जिद पकड़ लेती तो प्रोफेसर साहब को ही उसे चुप कराना पड़ता. पिता का स्नेहिल स्पर्श शीला के आंसू सोख लेता, पर उन के अंदर का अश्रुस्रोत तीव्र वेग से प्रवाहित हो उठता और शुरू हो जाता अंतरमंथन जिस पर आवरण डालने का प्रयास वह सिगरेट के लंबेलंबे कश खींच कर करते. उस वक्त सिगरेट ही उन की जीवनसंगिनी होती.

धुएं के छल्ले के बीच शायद वह शीला की मां की चिता के उस धुएं को याद करते जो आकाश की ओर उठता गया था. उन का ध्यान तब टूटता जब किलकारियां मारती शीला धुएं के छल्ले को अपने मुंह में ले कर उन के गले से चिपट जाती. उन्हें यह बहुत अच्छा लगता. वह शीला को हंसाने के लिए उस का मुंह खोल कर अपने मुंह का धुआं भर देते. वह कभी खांसती, कभी हंसती और कभी उन से सिगरेट ही मांग बैठती और एक अबोध बालिका की अनुचित मांग दुलार के वशीभूत हो कर पूरी कर दी जाती. हालांकि सिलिया इस के लिए आपत्ति उठाती, पर प्रोफेसर साहब इस मामले को महत्त्व नहीं देते.

अब शीला ने मांग कर सिगरेट पीने के बजाए चुरा कर पीना शुरू कर दिया. सिलिया द्वारा पकड़े जाने पर वह उस के गले से चिपट जाती और उसे अपनी मीठी बातों में भुला लेती. जवान होते-होते वह एकदम धूम्रपान की आदी हो गई.

सिलिया उस के भविष्य के प्रति आशंकित थी, मगर उस के पास कोई चारा नहीं था. न वह प्रोफेसर साहब को बता सकती थी, न शीला को ही रोक सकती थी क्योंकि शीला ने उसे ऐसा मंत्र पढ़ा दिया था जिस को काटना उस के बूते के बाहर था. चिकित्सा के बहाने उस का धूम्रपान चलता रहा.

प्रोफेसर साहब ने सनत को पत्र लिख कर शीला की गलती के लिए अपने को दोषी ठहराते हुए यह आश्वासन दे दिया कि शीला उसी घर में जाएगी, पर अभी नहीं, एकाध साल बाद, जब वह इस बुरी आदत को छोड़ चुकी होगी.

उन्होंने ठीक एक साल बाद पुनः सनत को पत्र लिखा कि वह आ कर शीला को ले जाए.

परंतु प्रथम मिलन की रात में शीला के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उस ने सनत को फकाफक धुआं छोड़ते देखा.

उस की जिज्ञासा को ताड़ते हुए सनत ने स्पष्ट किया, "हालांकि तुम से मेरा कोई पूर्वपरिचय नहीं था, फिर भी तुम से जुदा होने के बाद, जाने क्यों, मैं एकाकीपन का अनुभव करने लगा था. तभी तुम्हारे पिताजी का पत्र मिला. तुम्हारी मां के मरने के बाद एकाकीपन से पिंड छुड़ाने के लिए उन्होंने शोध कार्य के अलावा सिगरेट को भी अपने अधूरे जीवन का एक अंग बना लिया था और..."

"यानी आप यह बताना चाह रहे हैं कि डैडी ने मेरी आदत को आप के पास ट्रांसफर कर दिया है," परिहास था शीला के स्वर में.

"सिर्फ आदत ही नहीं, तुम्हें भी तो ट्रांसफर किया है मेरे पास."

"हां, अपनी जानिब तो आप ने मुझे ट्रांसफर कर ही दिया था."

"हालांकि यह मुझ पर कटाक्ष है, फिर भी मैं इस के लिए शर्मिंदा हूं. वैसे उस परिस्थिति में तुम्हारा यहां से चला जाना ही हमारे लिए लाभदायक हुआ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप मुझ से पूछ तो सकते थे."

"पूछताछ पर मात लो, हमारे बीच शंका की कोई दीवार नहीं रहती. मगर परिवार वालों के बीच गांठ सख्त न हो जाए, यही सोच कर मैं ने तुम्हारा यहां से चला जाना ही ठीक समझा."

शीला जाने क्या सोचने लगी.

उस के चिबुक को उंगली के स्पर्श से तनिक ऊपर उठाते हुए सनत ने मंद मुसकान के बीच कहा, "तुम यह क्यों नहीं समझतीं, शीला, दूरी ही तो पास आने की सीढ़ी है."

> **परिस्थिति की अनुकूलता**
>
> पुरुषार्थहीन पुरुष को विपत्तियां आक्रांत कर लेती हैं. विपत्तियों से आक्रांत होने पर उस की भावी उन्नति रुक जाती है जिस से उस का गौरव नष्ट हो जाता है. गौरव नष्ट होने पर राज्यश्री के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता.
>
> —भारवि
>
> ✦
>
> पुरुषार्थ परिस्थितियां को अपने अनुकूल बनाने में है.
>
> —महात्मा गांधी

"हां, अगर नहीं टूटी तो..."

"तुम अब भी खफा हो?"

"साल भर की मानसिक यातना कितनी कष्टकर थी, इस का अंदाजा आप को नहीं हो सकता."

"ठीक यही शब्द मैं भी दोहरा सकता हूं, शीला!"

शीला चादर पर पड़ी सलवटों को ठीक करने लगी थी. जाने क्याक्या सोच रही थी वह.

उस की गतिविधियों को लक्ष्य करते हुए सनत ने सब कुछ स्पष्ट कर दिया, "यातना की आग में तप कर जहां तुम खरा सोना बनने का प्रयास कर रही थी वहीं मैं अपने स्तर से नीचे गिरने लग था. मैं ने झूठ का सहारा लिया यानी चिकित्सा का बहाना बना कर सिगरेट पीना शुरू कर दिया. घर वालों को यह बताना चाह रहा था कि शीला ने भी किसी मजबूरी की वजह से ही धूम्रपान करना शुरू किया होगा."

"नहीं, मैं ने किसी चिकित्सा के बहाने से नहीं बल्कि..."

"मुझे तुम्हारे डैडी के पत्र से सब कुछ मालूम हो गया था," सनत ने बीच में ही रोक दिया उसे, "और उन के आश्वासन पर मैं निश्चित हो गया था. फिर भी मुझे अपने घर का माहौल ठीक करना था."

"कहीं मेरी सुप्त इच्छा को उभारने के लिए तो आप ने धूम्रपान करना शुरू नहीं किया? और अगर ऐसी बात है, तो भी मुझे दुख नहीं; आप सिगरेट पी सकते हैं."

"अगर ऐसा ही सोचती हो तुम, तो साफ सुन लो—मुझे भी तुम्हारे धूम्रपान से दुख नहीं होगा."

"मैं तो अब करने से रही."

"तो मेरा भी यह अंतिम कश है," और सनत ने जलती हुई सिगरेट का टुकड़ा और सिगरेट का पैकेट खिड़की से बाहर फेंक दिया.

"आप को मेरे लिए सिगरेट छोड़ने की जरूरत नहीं."

"मैं तुम्हारे लिए नहीं; आने वाली पीढ़ी के लिए सिगरेट छोड़ रहा हूं."

शीला के चेहरे पर न समझा जाने वाला भाव उभर आया.

"हां, शीला! अपने डैडी को सिगरेट पीते देख कर तुम ने भी खेलखेल में सिगरेट पीना शुरू कर दिया. क्या मैं भी वही गलती करूं कि मुझे धूम्रपान करते देख हमारी संतान..."

और वाक्य पूरा होने से पहले ही शीला ने अपनी हथेलियों से अपना सुर्ख चेहरा छिपा लिया था. आने वाली पीढ़ी का अर्थ उस की समझ में आ गया था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

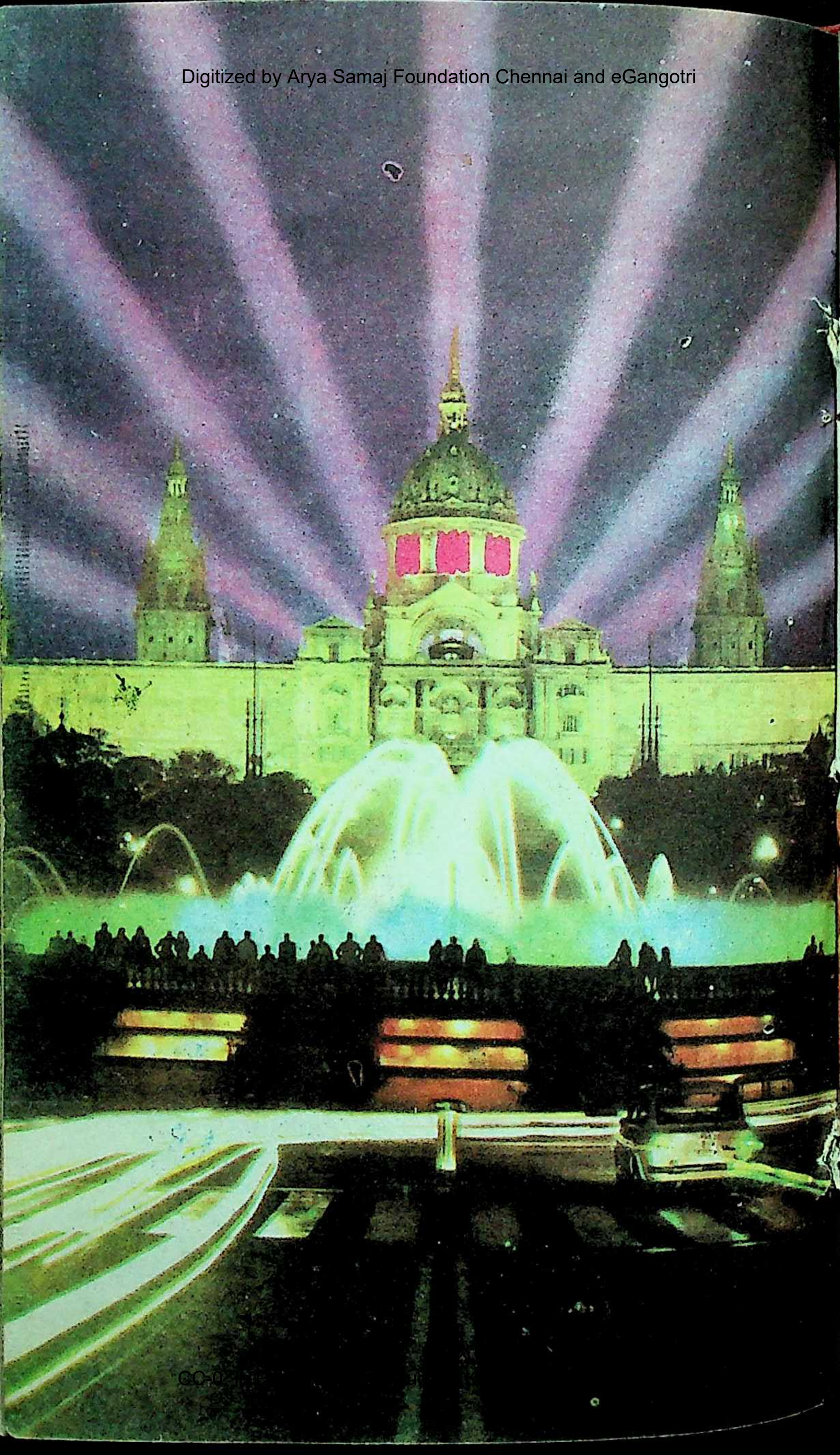

CC-0

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारसीलोना

आकर्षक पर्यटनस्थल

111468

स्पेन के पूर्वी हिस्से में बसा 30 लाख की आबादी वाला नगर बारसीलोना रोमन इतिहास जितना ही पुराना है. भूमध्य सागर के दक्षिणपूर्वी किनारे पर स्थित यह विश्वप्रसिद्ध बंदरगाह विश्व को रेशम, ऊन, कागज और शराब निर्यात करता है.

इस शताब्दी में दो बार इस का नाम सुर्खियों में आया है. एक बार 1938 में गृह युद्ध के दौरान विद्रोही ताकतों ने तत्कालीन सरकार का तख्ता पलटने की

(बाएं) मोंटैज्विच पहाड़ी पर बने महल का रंगीन फव्वारा, (नीचे) एक संग्रहालय में रखा कला का एक नमूना—ईसा और उस की मां. (दाएं) स्पेन के प्राचीन वैभव की याद दिलाने वाला एक राजकीय गार्ड.

मुहिम यहां संपन्न की थी और दूसरी बार 1971 में पहले विश्व कप हाकी मेले के आयोजन के समय.

गोथिक शैली का गिरजाघर, 15वीं शताब्दी में बने संत युलालिया के मजार की कांच कला जहां बारसीलोना को ऐतिहासिकता प्रदान करते हैं, वहां प्लाजा द पैलोसियो और प्लाजा रियल की चहल-पहल इस की व्यापारिक और औद्योगिक साख के सबूत हैं.

Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटती बहारें

(पृष्ठ 48 का शेषांश)

दिए गए थे. वह शीतल को देखने लगा जो मुसकरा रही थी, "काश! शीतल, कल फिर तुम यहां अचानक आ सको. यह कमरा फिर उसी गंदगी का शिकार हो जाएगा जिसे तुम ने बाहर फेंका है."

शीतल ने सब्जी व रोटी बनाने का काम अजय को न करने दिया. जब वह रोटियां सेंक रही थी, अजय ने कहा, "अरे, शीतल, मैं भी कितना खुदगर्ज हूं. इतना भी नहीं पूछा कि तुम्हारे पति क्या करते हैं. अवश्य कोई डाक्टर या इंजीनियर ही होंगे. पिताजी का क्या हालचाल है?"

वह चुपचाप रोटियां सेंकती रही.

"तुम्हारी चुप रहने की आदत, लगता है, वह महाशयजी भी नहीं छुड़ा सके."

"जो कुछ आप देख रहे हैं, बस यही मेरा जीवन है."

"मतलब?"

"आप की जल्दबाजी की वजह से ही मैं इस हालत में पहुंची हूं. उस रोज पिताजी का रूप देख कर मेरा मन विद्रोह कर उठा था. मैं ने आप को पिताजी को ललकारने को कहा था, पर आप लौट गए. मैं उसी वक्त आप के मकान पर पहुंची, पर आप मकान छोड़ चुके थे. मैं ने आप की बहुत खोज की, पर आप मेरे जीवन से निकल गए. मैं घर वापस नहीं गई. मैं प्रतीक्षा करने लगी कि आप कभी तो लौटेंगे, पर पांच वर्ष बीत गए, आप न आए. पिताजी कई बार मेरे पास आए. मैं पहले तो उन से मिली, पर बाद में उन से मिलना भी छोड़ दिया. उन्होंने आप को मुझ से अलग किया था और मैं ने उन की बेटी को उन से अलग कर दिया. वह अपने किए पर पछता रहे हैं. मैं ने उन का विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दिया है."

शीतल की गाड़ी रात आठ बजे छूटती थी. रात का भोजन तैयार करते-करते उसे सात बज गए. वह अजय की मनपसंद आसमानी रंग की साड़ी और आसमानी ब्लाउज पहन कर केश संवार रही थी. कुरसी पर गुमसुम बैठा अजय उसे देख रहा था.

"चुप क्यों हैं आप? कुछ बोलते क्यों नहीं?"

"क्या बोलूं, शीतल? जाने दिल कैसा हो रहा है. जैसे प्राण अभी मुंह के रास्ते बाहर निकल जाएंगे."

शीतल ने पलट कर अजय को देखा, मानो कह रही हो, उस की भी हालत ऐसी ही है.

"एक बात कहूं?" वह बोली, "यदि बुरी न लगे तो."

"आज तक ऐसा हुआ है कभी?" वह बोला.

"अधिक सोचा न करें और विजय की कुछ चिंता करें. उस का जीवन संवारने की कोशिश करें. वरना उस का भविष्य बिगड़ जाएगा."

"मुझे तो कुछ समझ नहीं आता, तुम्हीं कुछ सुझाओ."

वह अपनी अटैची बंद करती हुई बोली, "आप को विवाह कर लेना चाहिए."

"विवाह?" उस ने दोहरा दिया, "यह तुम कह रही हो, शीतल?"

"हां, इसी में आप की भलाई है," वह बोली, "इसी में विजय का भविष्य छिपा है, जिस की आप को चिंता करनी ही होगी ताकि मां आ कर उसे नया जीवन प्रदान कर सके."

अजय एकटक उसे देखने लगा.

"मेरा खयाल है, अब चलना चाहिए. सात बज चुके हैं," शीतल बोली और उस ने अपनी अटैची उठा ली.

"शीतल, विजय की बात तो अधूरी ही रह गई."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"वह तो मैं ने कह दिया है न."

"शीतल! एक बात कहूं? बुरा तो न मानोगी?"

"नहीं," उस ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"विजय को ऐसी मां चाहिए जो उस का भविष्य संवार दे, उसे नया जीवन प्रदान करे. यह काम तुम ही क्यों नहीं करतीं? मेरा मतलब है..."

"जी, मैं..." उस के हाथ में पकड़ी अटैची कांप सी गई.

"मां, कहां जा रही हो?" एकाएक विजय ने प्रवेश किया, "फिर बाबूजी से रूठ कर जा रही हो? नहीं, मां! बाबूजी बहुत रोते हैं. अब मत जाओ. मैं नहीं जाने दूंगा. मां, देखो, मेरे दोस्त तुम्हें मिलने आए हैं. सब कहते हैं, तेरी मां देखेंगे."

शीतल ने पलट कर द्वार की ओर देखा. चौखट पर पांचसात बच्चे खड़े एकटक उस की ओर देख रहे थे.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय की बांहों का घेरा उस की टांगों पर कसता जा रहा था. शीतल ने अजय की ओर देखा जो आशापूर्ण दृष्टि से शीतल को देख रहा था. वह उस का निर्णय सुनने को खड़ा था. उस के चेहरे पर कई रंग आजा रहे थे.

बच्चे उस के पास आ कर रुक गए थे. विजय कह रहा था, "नहीं जाओगी न, मां? मैं नहीं जाने दूंगा अब."

शीतल की मुट्ठी खुल गई और अटैची नीचे गिर पड़ी. उस ने लपक कर विजय को गोद में ले लिया और कस कर सीने से भींच लिया, "नहीं जाऊंगी, बेटे!"

वह कदम उठाती हुई अजय के पास जा रुकी और उस ने अपना सिर उस के सीने पर टिका दिया. ●

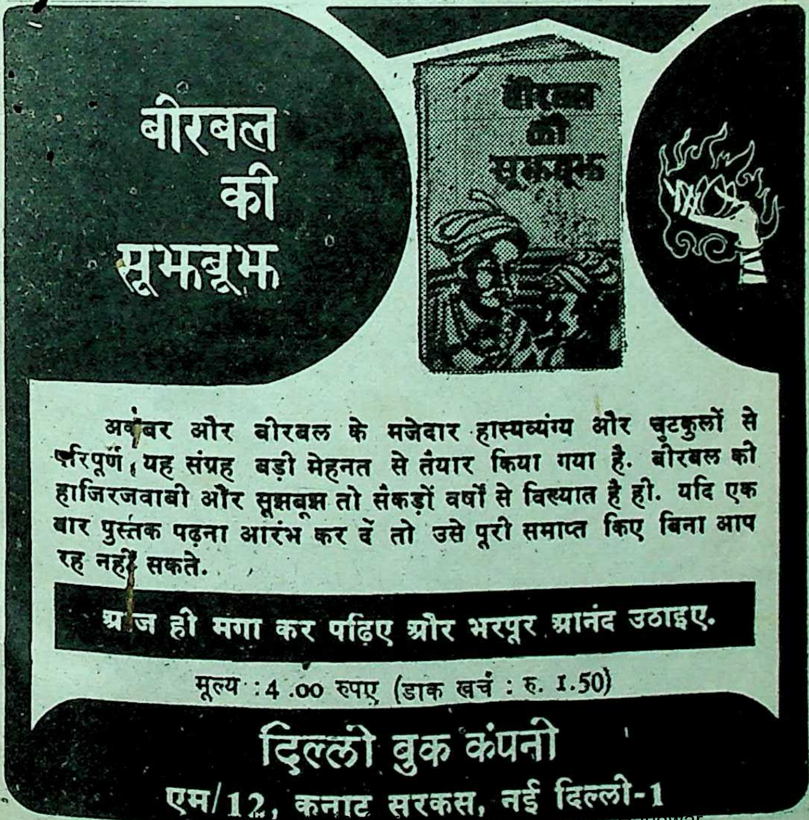

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • सुभाषिणी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलात्मक बैग

आजकल तरहतरह के सुंदर 'शापिंग बैग' बाजार में मिलते हैं. पर अपने हाथ की कला का जो संतोष है, वह खरीदे गए बैग में कहां! यहां एक ऐसा बैग बनाने की विधि दी जा रही है जो सुंदरता के साथ कलात्मक शैली को भी अपने में समेटे है.

सामग्री

बड़े पने की 'टेपेस्ट्री' सादा या फूलों वाले प्रिंट में 35 सेंटीमीटर. इस के मुख्य

सिर्फ आकर्षक ही नहीं, उपयोगी भी...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

W923
31.6195

Compiled
1999-2000

111468

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar